प्रकाशक
जयकृष्णदास हरिदास गुप्तः,
चौखम्बा-संस्कृत-सीरिज आफिस,
पो० बाक्स नं० ८ बनारस।

JAYA KRISHNA DAS HARI DAS GUPTA
The Chowkhamba Sanskrit Series Office.
P. O. Box 8, Banaras.

मुद्रक
विद्याविलास प्रेस,
बनारस
वि० सं० २००८

प्रकाशक
जयकृष्णदास हरिदास गुप्तः,
चौखम्बा-संस्कृत-सीरिज आफिस,
पो० बाक्स नं० ८ बनारस।

JAYA KRISHNA DAS HARI DAS GUPTA
The Chowkhamba Sanskrit Series Office.
P. O. Box 8, Banaras.

मुद्रक
विद्याविलास प्रेस,
बनारस
वि० सं० २००८

भूमिका

'आयुर्वेद-प्रदीप' की रचना तुलनात्मक दृष्टि से विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों की पुस्तकों, चिकित्सा सम्बन्धी पत्र पत्रिकाओं तथा चिकित्सकों की सम्मतियों के आधार पर की गई है, क्योंकि स्वतंत्र भारत में आयुर्वेद को नवीन आधारों पर वृद्धिशील बनाने के लिये हमारे शासकगण तत्परता तथा तल्लीनता से कार्य में संलग्न हैं। अतः आयुर्वेद-प्रदीप तुलनात्मक दृष्टिकोण से विद्यार्थी तथा चिकित्सक दोनों वर्गों के लिये अत्युत्तम लाभप्रद होगी।

'आयुर्वेद-प्रदीप' में आयुर्वेद का इतिवृत्त, जिसमें आयुर्वेद की उत्पत्ति, प्रसार तथा सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धतियों का जनक होना सिद्ध है, सप्रमाण वर्णित है। इसके अतिरिक्त तुलनात्मक दृष्टिकोण को रखते हुये शरीर रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान, शरीर के मार्ग, त्रिदोषविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली; औषधि सम्बन्धी ज्ञातव्य बातें, मूलद्रव्य के प्रतिनिधि द्रव्य, व्याधि परीक्षा, नवीन चिकित्सकोपयोगी साधारण शिक्षा, संयोग-विरुद्ध-द्रव्य, व्यवस्थापत्र-निर्देश, मात्रा-निर्धारण-विधि, द्रव्यों की संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी नामावली; व्याधियों की नामावली तथा उनकी चिकित्सा और परीक्षित आयुर्वेदिक तथा एलोपैथिक योगों, पेटेण्ट औषधियों तथा सूचियों का एवं पथ्यापथ्य विमर्श, पथ्यनिर्माण, फलप्रकरण, व्यवहारायुर्वेद तथा विषविज्ञान, परिचर्या, शल्य तथा शालाक्य की व्याधियों एवं स्त्री तथा बालरोगों की चिकित्साओं का भी सविस्तर वर्णन हैं। विकृति विज्ञान, नाड़ी विज्ञान, अन्तःस्रावी ग्रंथि विज्ञान तथा व्याधि क्षमता आदि का भी वर्णन सम्यक् रीति से किया गया है।

'आयुर्वेद-प्रदीप' की रचना में श्री० डा० जगदीशशरण शर्मा एम, बी०, बी०, एस०, आचार्य अचलधर त्रिवेदी, आचार्य देवानन्द शुक्ल तथा आचार्य राजमणि शर्मा प्रभृति विद्वानों ने लेखन में बहुत योग दिया है तदर्थ उन विद्वानों का तथा आचार्य गंगासहाय पाण्डेय का भी मैं बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने सम्पादन का भार उठा मेरे कार्य को सुगम बनाया।

मैं इसके प्रकाशक श्री जयकृष्णदास जी गुप्त को कोटिशः धन्यवाद देता हूँ, कि इस परिवर्तनशील युग के प्रवाह में प्रवाहित हो आयुर्वेद को नवीनतम आधारों पर तुलनात्मक दृष्टि से परिपूर्ण पुस्तकों का स्वल्प मूल्य में प्रकाशन कर आयुर्वेद जगत के प्रसार में सहायक हो रहे हैं। मुझे इस पुस्तक के लिखने में जिन २ ग्रन्थों से सहायता मिली है उनके लेखकों का मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ।

—राजकुमार द्विवेदी

प्रमाण-ग्रन्थ

LIST OF BOOKS CONSULTED.

संस्कृत

काश्यप संहिता
चरक संहिता
सुश्रुत संहिता
वागभट संहिता
शार्ङ्गधर संहिता
चक्रदत्त
भावप्रकाश
योगरत्नाकर
भैषज्यरत्नावली
रसेन्द्रसारसंग्रह
रसयोगसागर
रसतरंगिणी
भारत भैषज्य रत्नाकर
सिद्धयोग संग्रह
सिद्ध भैषज्य मणिमाला
नाड़ीविज्ञान
त्रिदोष विज्ञान
परिभाषा प्रदीप
द्रव्यगुण विज्ञान
सचित्र आयुर्वेद
धन्वन्तरी
प्राणाचार्य

आदि आदि।

English.

Anatomy by Grey
Physiology by Halliburton
Materia Medica by Ghosh
Text book of Medicine by Price
,, ,, ,, by Taylor
,, ,, ,, by Savil
Diseases of Eye by May & Worth
Clinical Method by Hutchinson
Surgery by Rose and Carless
Midwifery by Jellet
,, by Ten Teachers
Diseases of Women by Ten Teachers
Antiseptic
Medical Journal
Index of Treatment by Various Writers
Medical Jurisprudence and Toxicology by Modi

etc., etc.,

विषयसूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
उपाण्डशोथ	२१७	मेदोरोग	२९३
गलगण्ड	२१८	उदरावरण शोथ	२९५
अजीर्ण	२१९	स्वेदाधिक्य	२९७
ग्रंथि	२२४	अग्निरोहिणी	२९९
पूयमेह	२२६	फुफ्फुसावरण शोथ	३०१
वातरक्त	२३०	कर्कट सन्निपात, फुफ्फुस प्रदाह	३०२
शिर शूल	२३५	पूयात्मक वृक्क शोथ	३०५
हिक्का	२४१	पूयमयता	३०६
योषापस्मार	२४४	राजयक्ष्मा	३०८
रक्तपित्त	२४६	मूसिकदंश ज्वर	३२०
नासारक्तस्राव	२५०	आमवात ज्वर	३२१
यकृत की व्याधियाँ	२५१	बाल शोष	३२७
सामान्यज्वर	२५२	गृध्रसी	३३१
वातज्वर	२५७	नपुसकता	३३४
पित्त ज्वर	२५८	उरुस्तम्भ	३४०
कफ ज्वर	२५९	वन्ध्यत्व	३४१
वात-पित्त ज्वर	२६१	फिरंग	३४४
वात-कफ ज्वर	२६२	उपदंश	३४८
पित्त-कफ ज्वर	२६६	गर्भाशयिक असवृत्ति	३५१
सन्निपात ज्वर	,,	मूत्रकृच्छ्र	,,
सन्धि शोथ	२६९	मूत्राघात	३५५
काला-आजार	२७०	श्लीपद	३५७
कुष्ठ	२७१	गुल्मरोग	३५९
विषम ज्वर	२७३	प्लीहा की व्याधियाँ	३६२
रक्त-प्रदर	२७८	आन्त्रिक ज्वर	३६४
पेशीशूल	२८०	हृदयोत्तेजक औषधियाँ	३६७
पेशीशोथ	२८१	गलगण्ड या थायरायड ग्रंथि की व्याधियाँ	३६८
वृक्कशोथ	२८२	दाह रोग	३७१
मूत्रविषता	२८४	तृषा	३७२
वातनाडी शूल	२८७	वमन	३७३
नाडी दौर्बल्य	२९१	रक्तपित्त	३७६
नाडी शोथ	२९३		

प्राच्य-पाश्चात्य

आयुर्वेद-प्रदीप

AYURVEDIC & ALLOPATHIC GUIDE

'आयुर्वेद इतिवृत्त'

(History of Ayurveda)

संसार में प्रचलित चिकित्साप्रणालियों में सबसे पुरातन आयुर्वेद चिकित्सा-प्रणाली है। इससे प्राचीन अन्य कोई भी प्रणाली जैसे एलोपैथी (Allopathi), होमियोपैथी (Homaeopathi) आदि नहीं है। यह सर्व सम्मति से सिद्ध है।

आयुर्वेद की प्राचीनता में बहुत ही मत वैभिन्य है। इसकी उत्पत्ति का कोई निश्चित समय नहीं ज्ञात हो सका है। आयुर्वेद का वर्णन वेदों में मिलता है, इस कारण आयुर्वेद की उत्पत्ति वेदों के सदृश ही अनादि मानी जाती है।

ब्रह्मा ने संसार के प्राणियों को नाना प्रकार की व्याधियों से पीड़ित देख कर उनके उपकार के लिये दक्षप्रजापति को आयुर्वेद की शिक्षा दी। ब्रह्मा से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त कर दक्षप्रजापति ने अश्वनीकुमारों को आयुर्वेद का ज्ञान कराया। ये दोनों भ्राता आयुर्वेदिक चिकित्सा में इतने कुशल तथा सिद्धहस्त थे, कि देवताओं तक की चिकित्सा करते थे। इनकी चिकित्साप्रणाली तथा कार्य कौशल्य को देख देवराज इन्द्र मुग्ध हो गये और उन्होंने स्वयं दोनों भ्राताओं से आयुर्वेद का अध्ययन किया।

इन्द्र से महर्षि आत्रेय और आत्रेय से अग्निवेश, भेल, जतूकर्ण, पराशर, क्षार-पाणि और हारीत नामक ऋषियों ने आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की और उन्होंने आयुर्वेद में पारंगत होकर अपने अपने नाम से पृथक् पृथक् ग्रन्थों की रचना की।
(अ० ह्र०)

आचार्य चरक ने इन्ही अग्निवेश महर्षि द्वारा रचित संहिता के आधार पर

'चरक' नामक ग्रंथ का निर्माण किया, जो आधुनिक काल में चिकित्सा के लिये सर्वोत्तम ग्रंथ कहा जाता है।

आचार्य चरक के पश्चात् सुश्रुत का स्थान है। सुश्रुत विश्वामित्र के पुत्र थे। उन्होंने काशीराज दिवोदास जो धन्वन्तरि के अवतार थे, उनसे आयुर्वेद का अध्ययन कर 'सुश्रुत' नामक ग्रंथ की रचना की। सुश्रुत ने अपने ग्रंथ में शल्य-शालाक्य की चिकित्सा पर विशेष ध्यान दिया है अतः सुश्रुत ग्रंथ शल्य-शालाक्य चिकित्सा के लिये अधिक प्रसिद्ध है।

आचार्य चरक और सुश्रुत के पश्चात् वाग्भट का काल प्रारम्भ हुआ। महाभारत के समय में आचार्य वाग्भट महाराज युधिष्ठिर के प्रधान चिकित्सक थे, ऐसा कुछ लोगों का कहना है। उस समय वाग्भट ने चरक और सुश्रुत के रचित ग्रंथों के आधार पर 'अष्टांगहृदय' नामक ग्रंथ रचा। 'अष्टांगहृदय' की महत्ता सूत्रों के लिये अधिक है। अतः समकक्ष होनेसे चरक, सुश्रुत और वागभट ये तीनों 'वृद्धत्रयी' कहे जाते हैं।

वाग्भट के पश्चात् उत्तरोत्तर माधवाचार्य, भावमिश्र, शार्ङ्गधर आदि विद्वानों का काल हुआ। माधवाचार्य ने ईसा की बारहवी सदी में 'माधवनिदान' नामक सर्वोत्तम ग्रंथ का निर्माण किया। भावमिश्र काशी के निवासी थे और चौदहवीं सदी में जब कि पुर्तगीज भारतवर्ष में पदार्पण किये उसी समय उन्होंने 'भावप्रकाश' नामक ग्रंथ लिखा। जिसमें फिरंग आदि नवीन व्याधियों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

आयुर्वेद की प्राचीनता केवल उपर्युक्त बातों से ही नही सिद्ध की जाती अपितु इसके प्राचीनत्व के विषयमें पाश्चात्य विद्वानो ने भी अपनी अपनी सम्मति दी है जिनके नाम तथा मत आगे दिये जाते हैं।

रायली साहब (Sir Royallee) का मत है कि आयुर्वेद अरब और यूनान वालों से भी बहुत पहले का है। एक अरबी ग्रंथ 'उयुल उल' में लिखा हुआ है कि आठवी सदी मे बगदाद की राजसभा में भारतीय चिकित्सक आयुर्वेद की शिक्षा देते थे।

अरब से आयुर्वेद का प्रचार यूरोप में हुआ क्योंकि सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोपीय चिकित्सा का मूल अरब की चिकित्साप्रणाली थी। इस उल्लेख से रायली साहब के मत तथा आयुर्वेद की प्राचीनता दोनों की पुष्टि हो जाती है।

ईशा के चार शताब्दी पूर्व दिग्विजयी सिकन्दर जो यूरोप का सर्वोच्च

बहादूर था, अपनी सेना की चिकित्सा के लिये भारतीय चिकित्सकों को नियुक्त किया और उनका बहुत ही सम्मान करता था।

ईरान के खलीफा हारु रशीद अपनी चिकित्सा के लिये भारतीय चिकित्सक को रखते थे।

अरस्तू और अफलातून नामक चिकित्सकों ने भारतीय चिकित्सकों से ही चिकित्सा की शिक्षा ग्रहण की थी।

उपर्युक्त प्रमाणों से आयुर्वेद की उत्पत्ति तथा प्राचीनता की पुष्टि हो जाती है।

आधुनिक काल के उपलब्ध तथा मान्य ग्रंथों के आधार पर यदि आयुर्वेद के काल का निर्णय किया जाय तो आयुर्वेद को अनादि कहना ही उचित होगा।

ब्रह्मा ने विश्व रचना में प्राणियों की उत्पत्ति के पूर्व ही आयुर्वेद की रचना की। "अनुत्पाद्येव प्रजा आयुर्वेदमेवाग्रेऽसृजत्"। (सुश्रुत)

सृष्टि से पूर्व आयुर्वेद की रचना उसी प्रकार सम्भव है जिस प्रकार बालक की उत्पत्ति के पूर्व स्तन्य की उत्पत्ति हो जाती है। 'बालकस्योत्पत्तेः पूर्वं स्तन्योद्गमनमिव सृष्टेः प्रथमतः आयुर्विज्ञानं स्वरसतोऽपि सम्भवति'। (काश्यप संहिता)

विकासवाद के पण्डितों ने भी लिखा है कि सृष्टि रचना में जीवोत्पत्ति के पूर्व औषध तथा वनस्पति आदि की रचना हुई।

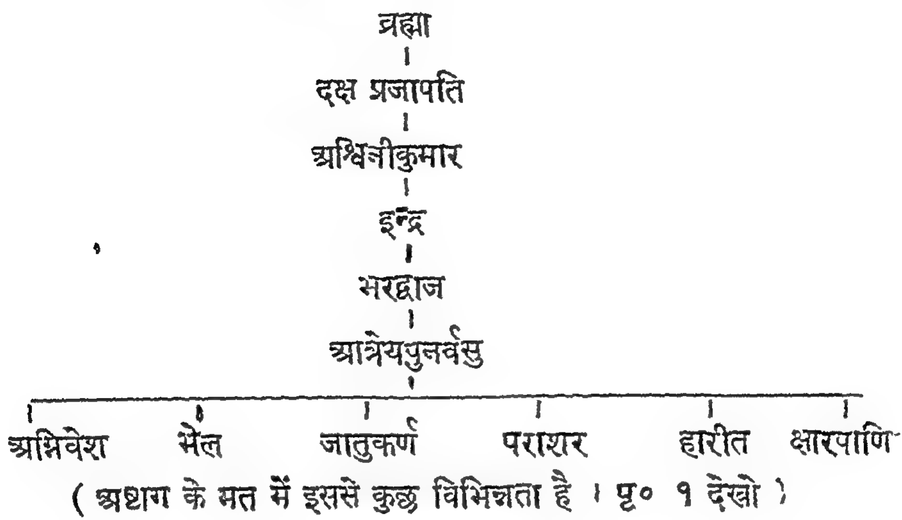
इस प्रकार यह स्वयं लक्षणों से ही सिद्ध है कि यह आयुर्वेद अत्यन्त प्राचीन अनादि काल से चला आ रहा है। "सोऽयमायुर्वेदः शाश्वतो निर्दिश्यते, अनादित्वात् स्वभावसंसिद्धलक्षणत्वात्।" (चरक)

आयुर्वेद का प्रादुर्भाव अथर्ववेद से हुआ है। अतः अथर्ववेद का उपांग आयुर्वेद को मानते हैं। "आयुर्वेदमष्टांगमुपाङ्गमथर्ववेदस्य।" (सुश्रुत)

प्राचीन काल में आयुर्वेद का बहुत विस्तृत विवरण था। उसमें केवल मानव की चिकित्सा का ही वर्णन नहीं था अपि च हाथी, घोड़ा, गौ, पशु, पक्षी तथा वृक्ष, लता आदि जितने ही उद्भिज थे सभी की चिकित्सा का वर्णन था। किन्तु बारम्बार विदेशियों के आक्रमणों के कारण ग्रंथ लुप्त प्राय हो गये। जो अवशिष्ट रह गये उनमें इनका स्थल स्थल पर वर्णन मिलता है।

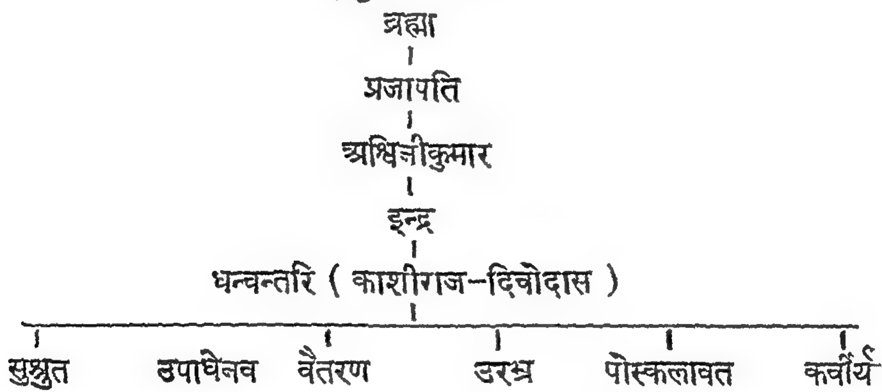
चरक, सुश्रुत तथा काश्यपसंहिता के अनुसार आयुर्वेद की परम्परा अधो लिखित है।

चरक परम्परा।

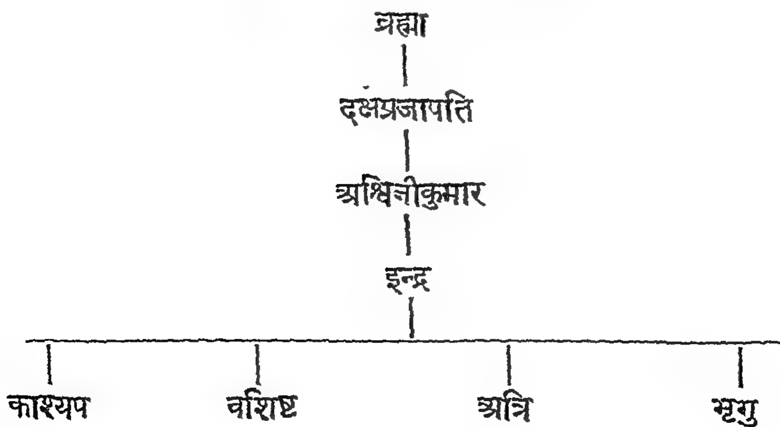


(अष्टाग के मत में इससे कुछ विभिन्नता है । पृ० १ देखो)

सुश्रुत परम्परा



काश्यपसंहिता परम्परा



जो कुछ भी हो सभी आचार्य एकमत से ब्रह्मा को आयुर्वेद का आदि गुरु मानते हैं। अतः इसमें सन्देह नही कि आयुर्वेद अनादि तथा अनन्त नहीं है।

आधुनिक युग में आयुर्वेद का विकास बुद्ध काल के बीच अर्थात् ६०० बी. सी. और ८०० ए. डी के समय में हुआ है क्योंकि उस समय चरक, सुश्रुतादि बहुत से भारतीय आयुर्वेदिक लेखक विद्यमान थे। यह सुतरां सिद्ध है कि विश्व की आधुनिक चिकित्सा प्रणाली भारतीय आयुर्वेद की ही देन है।

विदेशियों में सर्वप्रथम आयुर्वेद का अध्ययन ग्रीस तथा मिश्र देश के लोगों ने किया था। ग्रीस देश में चिकित्सा शास्त्र का जन्मदाता हिपोक्रीटस (Hyppocrates) नामक विद्वान माना जाता है। काश्यपसंहिता में यह वर्णित है कि हिपोक्रीटस को उसके पिता ने भारत में शिक्षा ग्रहण के लिये भेजा था। इसके अतिरिक्त ग्रीस देश से दो अन्य चिकित्सक मेगास्थनीज (Magasthenes) तथा केशियश (Ktesias) नामक क्रमशः लगभग ३०० बी. सी. तथा ४०० बी. सी. में उत्तरीय भारत में आये थे। उन्होंने यहॉं आयुर्वेद के प्रत्यक्ष शरीर-शास्त्र (Dissection) का अध्ययन किया तथा ग्रीस में उसका प्रचार किया जैसा कि होर्नले (Hornley) नामक विद्वान ने स्वयं स्वीकार किया है— "We have no direct-evidence of the practice of human dissection in Hyppocrates school, but now of the visit, about 400 B. C. of ktesias to India the alternative conclusion of a dependence of greek anatomy on that of India cann't be simply put aside"

होर्नले यह भी स्वीकार करते हैं कि छठवी शताब्दी (बी. सी.) के प्रारम्भ-काल मे आत्रेय तथा सुश्रुत का भारतीय आयुर्वेदीय विद्यालय वर्तमान था।

यह विश्व के सम्पूर्ण जातियों का मत है कि भारतवर्ष सर्वप्रथम सभी देशों से सभ्य तथा ऐश्वर्यवान् था। इसकी सभ्यता का प्रकाश संसार मे फैल रहा था। इसके ऐश्वर्य तथा विकास को देख कर ही विदेशियों का आक्रमण हुआ। जिसमे प्रथम सिकन्दर (Alexander) का आक्रमण ३२३ बी. सी. मे हुआ था। किन्तु इसके पूर्व ही पिथेगोरस, (Pythagoras) नामक विद्यार्थी ६०० बी. सी. मे भारतीय शिक्षाकेंद्र मे शिक्षाग्रहण करने के लिये आया था।

विश्व की सम्पूर्ण जातिया यह मानती हैं कि भारत के विकास की जहां समाप्ति

होती है वहा विश्व के अन्य देशों का विकास प्रारम्भ होता है। भारत के स्वर्ण युग की समाप्ति कौरव तथा पाण्डव के युद्ध के पश्चात् हुई है। यह युद्ध आज से लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व हुआ था।

डाक्टर मैकडानल (Dr. Macdonell) तथा डा० कीथ (Dr Kaeith) का कथन है कि उस समय "भारतीय चिकित्सा तथा शल्य विज्ञान अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था"

महाभारत के भीष्म पर्व अध्याय १२१ मे स्पष्ट वर्णन है कि उस समय भारतीय शल्य शास्त्र ने कितना उच्च स्थान प्राप्त किया था—

उपातिष्ठन्नथो वैद्याः शल्योधारणकोविदाः। नानोपकरणैर्युक्ताः कुशलैः साधुशिक्षिताः॥

जिस समय भीष्म शरशय्या पर पड़े थे उस समय उनके शरीर से शर शिखरों को निकालने के लिये शर निकालने मे दक्ष सुशिक्षित तथा सम्पूर्ण उपकरणों से युक्त चिकित्सक बुलाये गये थे।

रामायण मे शवसंरक्षण विधि का स्पष्ट वर्णन है—

""सन्ति मे कुशला वैद्यास्त्वभितुष्टाश्च सर्वशः"। वा. रा. २-१०-३०

जिस समय राजादशरथ का देहावसान हुआ था उस समय उनकी अन्त्येष्टि क्रिया के लिये भरत जी को केकय देश बुलाने के लिये दूत भेजा गया। केकय देश जाने आने मे १५ दिन का समय लगता था। ऐसी स्थिति मे शव को कैसे सुरक्षित रखा जाय ताकि वह सड़ न सके। इस लिये चिकित्सक लोग शव सरक्षण के लिये बुलाये गये। तव मंत्रियो ने राजा दशरथ के शव को तैल पूर्ण पात्र मे रख कर, राजपुरुष चिकित्सक के आज्ञानुसार कार्य सम्पादन किये।

"तैल्यं द्रोण्या तदाऽऽमात्या संवेश्य जगतीपतिम्।
राज्ञः सर्वाण्यथादिष्टाश्चक्रुः कर्माण्यन्तरम्॥" (वा० रा०)

उपर्युक्त कथन के अनुसार यह स्पष्ट है कि उस काल मे भी भारतीय ऐसे रासायनिक द्रवों, अम्लो तथा स्पिरिट आदि का निर्माण करना जानते थे जिनमे शव को कई दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता था।

पाश्चात्य विज्ञान की उत्पत्ति ग्रीक तथा रोमनविज्ञान से हुई है, ऐसा आधुनिक पाश्चात्य वैज्ञानिक मानते हैं। किन्तु उपर्युक्त वर्णन से यह सिद्ध हो चुका है कि ग्रीक तथा रोमन का विज्ञान भारतीय विज्ञान की देन है। आँग्ल देशवासियों ने (Europeans) अरव देशवासियों की हस्तलिपि से वहुत कुछ आवश्यकीय

वातों को सीखा है। डा० पी० सी० राय (Dr P. C. Roy), ने अपने भारतीय रसायन शास्त्र नामक पुस्तक से स्पष्ट वर्णन किया है कि अरव निवासी भारत में आकर चिकित्साशास्त्र का अध्ययन किया करते थे। उन्होंने दसवीं शताब्दी के मध्य की वातों का उल्लेख करते हुये लिखा है कि कालिफस (Caliphs), हारुन और मन्सूर (Harun and Mansur) के आज्ञानुसार भारतीय चिकित्साशास्त्र तथा द्रव्य, गुण आदि का अरवी भाषा में अनुवाद किया गया था। फ्लुज़ेल (Fluzel) नामक विद्वान ने अपनी पुस्तक किताव-एल-फिहिरिस्त (Kitab-al-Fihrist) में उल्लेख किया है कि सुश्रुत का अनुवाद अरवी भाषा में किया गया है। इसके अतिरिक्त यह भी उल्लेख मिलता है कि उस समय भारत तथा अरव निवासियों में इतनी घनिष्ठता थी कि अरव के क्षात्र भारत में शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे, तथा भारतीय चिकित्सक अरव में चिकित्सा कार्य के लिये सादर बुलाये जाते थे। जैसा कि किताव-एल-फिहरिस्त में वर्णित है कि मन्ख (Mankh) नामक भारतीय चिकित्सक ने हारुन-अर-रशिद (Harun-ar-Raschid) को एक घातक व्याधि से मुक्त किया था तथा वह वहीं राजकीय आतुरालय में चिकित्सक के स्थान पर नियुक्त कर दिया गया। उस समय मुसलमान विद्यार्थियों में यह दृढ भावना सी वन गई थी कि उनका विषय तव तक समाप्त नहीं होता जव तक वे भारत में आकर अध्ययन न कर लें। जैसा कि आधुनिक काल के भारतीयो में विदेशगमन की भावना उत्पन्न हो गई है। हारुन-अर-रशिद (Harun-Ar-Raschid) वगदाद का राजा था। उसका शासन काल ७८६ से ८०८ A. D तक था। उस समय भारत में विजयनगर तथा अरव मे वगदाद विद्या का केन्द्र था।

अतः इन उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि आधुनिक काल का पाश्चात्य विज्ञान भारतीय विज्ञान की ही देन है। आज भी चरक तथा सुश्रुत का अनुवाद अरवी तथा आँग्ल भाषा से उन उन देशों में वर्तमान है। भारतीय आयुर्वेद का प्रसार वौद्ध काल में वौद्ध भिक्षुकों द्वारा सिंहल द्वीप तिब्वत तथा मंगोलिया आदि में हुआ। परन्तु इतना मानना होगा कि वौद्ध काल मे शारीर शास्त्र तथा शस्त्र चिकित्सा का ह्रास अवश्य हुआ।

पाश्चात्य विद्वान हैस (Haas) सुश्रुत के काल को १२ वी शताब्दी, जोन्स विलसन (Jones wilson) नवम तथा दसवीं शताब्दी तथा अन्य विद्वान

पॉचवी तथा चौथी शताब्दी मानते हैं । किन्तु यह निश्चित है कि सुश्रुत काल चौथी शताब्दी के पश्चात् का नही हैं जैसा कि मैकडोनल (Macdonell) महोदय लिखते हैं·—

Susruta seems to have lived not later than the fourth century A. D., as the Bower manuscript contains passages not only parallel but verbally agreeing with passages in the works Charak and Susruta.

डोरोथिया कैप्लिन (Dorothea chaplin) धन्वन्तरि के काल का निर्धारण हिपोक्रेटिस से १२ शताब्दी पूर्व करते हैं। वे लिखते हैं कि जिस बात को स्वयं धन्वन्तरि ने १२ शताब्दी पूर्व लिखा है उसी को हिपोक्रेटिस ने बाद में लिखा है।

ब्रियन ब्राउन (Brian Brown) नामक विद्वान लिखते हैं कि १५०० तथा ५०० के बीच भारतीय विद्वान धर्म, विज्ञान, कला, संगीत तथा चिकित्सादि में इतना आगे बढ़े हुये थे कि संसार की कोई भी दूसरी जाति उनके सम्मुख खड़ी होकर इन विषयों में उन्हें पराजित कर सके।

मिस्टर कोल्ब्रुक (Hr colebrooke) लिखते हैं कि·—

"The Hindoos were teachers and not learner's"

भारतीय शिक्षक थे न कि विद्यार्थी।

मोनियर विलियम्स लिखते हैं कि:—

"Is not the case that the earliest elements of civilization and enlightenment have always originated in the East, and spread from the East to the West—not from the West to the East."

कहने का तात्पर्य यह है कि सभ्यता तथा प्रकाश का प्रादुर्भाव सर्वदा पूर्वीय प्रदेशों में हुआ है तथा उनका प्रसार पूर्व से पश्चिम को होता है न कि पश्चिम से पूर्व को।

कोनिस्वर्ग (Konigsberg) विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डायज़ (Diaz) ने स्वयं भारतीय चिकित्सा सिद्धान्तों को ग्रीक के चिकित्सा पद्धति से पृथक् किया है।

वर्लिन के डाक्टर हर्श्वर्ग (Dr. Hirschberg) का कथन है कि;—

"The whole plastic surgery in Europe had taken its

new light when these cunning devices of Indian work became known to us. The transplanting of sensible skin flaps is also an entirely Indian Method

इसके अतिरिक्त वर्लिन के डाक्टर साहब का कथन है कि लिंगनाश (Cataract), का पृथक्करण सर्व प्रथम भारतीय चिकित्सकों ने ही आविष्कार किया था जब कि अन्य जातियां पूर्णरूप से अज्ञान में थी।

"The art of cataract couching was entirely unknown to the Greeks, the Egyptian or any other nation."

डाक्टर हर्षवर्ग का पुनः कथन है किः—

"The Indians knew and practised ingenous operations, which always remained unknown to the Greeks, and which even we Europeans only learnt from them whith surprise in the beginning of this century."

भारतीय चिकित्सक प्रशंसनीय शल्य कर्मों को सर्वदा करते थे, जिसको ग्रीस वासियों ने नहीं सीख पाया। यहाँ तक कि हम आँग्ल देशवासी भी इस शताब्दी के प्रारम्भ में उनका बहुत ही विचित्र तथा महत्व पूर्णता के साथ अध्ययन किया।

पाण्डीचेरी के भूतपूर्व डाक्टर ह्युलेट (Huillet) लिखते हैं कि आधुनिक काल की प्रचलित टीका (Vaccination) पद्धति को आयुर्वेद के भूतपूर्व चिकित्सक धन्वन्तरि, जो हिपोक्रेटिस से पूर्व थे, भलीभाँति जानते थेः—

"Vaccination was known to a physician Dhanvantari who flourished before Hippocrates,"

आगे डाक्टर वाइज (Dr. Wise) लिखते हैं:—

"The ophthalmic and obstetric and other operations have been practised for ages in India and our modern surgeons have been able to barrow from them (Hindoos) the operation of rhinoplasty."

भारतीय चिकित्सक नेत्र तथा अन्य प्रसूति शल्य कर्म बहुत काल से करते रहे हैं। हमारा आधुनिक काल का नासासन्धान (Rhinoplasty) नामक शस्त्र-कर्म भी भारतीय चिकित्सकों की देन है।

डोरोथिया कौप्लिन नामक एक विद्वान के कथन में ही भारतीय आयुर्वेद की प्राचीनता, महत्ता तथा वैज्ञानिकता स्वयमेव सिद्ध हो जाती है—

"Our medical system came originally from the Hindu through Arabia. The Hindu medical works contain no names that denote a foreign origin European medicine down to the seventeenth century was practically based upon that of the Hindu...... ..Let us take a glance at the suintarity of names used in Hindu anatomy with the modern nominclature of the West. The division of the brain into—

शिरोब्रह्म (Shirobrahm) cf Cerebrum (सेरिब्रम)
शिरोबिलम (Shirobilgma) cf. Cerebellum (सेरिबेलम)
हृद या हृद (Hrid or hrith) cf heart (हार्ट)

Thus may we see that the Hindu System is neither crude nor quackis, but perhaps the most scientific of all treatments, still containing enough fresh information as regards Europe, to make the fortune of some enterprising doctor."

हमारी चिकित्सा पद्धति का जन्म भारतीय चिकित्सा पद्धति से अरबवालों के द्वारा हुआ है। भारतीय चिकित्सा मे ऐसा एक भी नाम नही मिलता जिससे उसे विदेशीय नाम दिया जाय । यूरोपीय चिकित्सा १७ वी शताब्दी के पश्चात् भी भारतीय प्रणाली पर अवलम्बित थी। यदि हम भारतीय तथा पश्चिमी शरीर शास्त्र के नामों पर ध्यान देते हैं तो स्पष्ट व्यक्त होता है कि पश्चिमी नाम भारतीयों की देन है जैसा ऊपर मस्तिष्क के विभागो मे प्रदर्शित किया गया है । इस प्रकार से हमलोग देख सकते हैं कि भारतीय चिकित्सा पद्धति न तो अप्रगल्भ है और न झूठी, बल्कि आधुनिक काल मे प्रचरित सम्पूर्ण चिकित्सा प्रणालियों मे पुरातन तथा वैज्ञानिक है।

इसी प्रकार से अभी बहुत ही उदाहरण है जिनसे यह स्पष्टतया सिद्ध हो जाता है कि आयुर्वेद सम्पूर्ण चिकित्सापद्धतियो का जनक है।

शरीररचना तथा क्रियाविज्ञान

चिकित्सा का मुख्य स्तम्भ शरीररचना तथा शरीरक्रिया कहा जाता है। जब तक हम शरीर की रचना तथा उसके विभिन्न अवयवों के स्थान और कार्य का भलीभाँति ज्ञान नहीं रखते तब तक हम सफल चिकित्सा नहीं कर सकते। अतः सर्व प्रथम यहाँ हम शरीररचना तथा क्रिया का संक्षिप्त वर्णन कर देना उचित समझते हैं।

मानवशरीर मुख्यत. दो पदार्थों से मिलकर बना है। प्रथम ठोस पदार्थ है, जिसे अस्थि (Bone) कहते हैं और जो शरीर को धारण कर उसके रूप को देता है। द्वितीय कोमल पदार्थ है जिसे मास (Muscles) कहते हैं और जो अस्थि के ऊपर चढा रहता है तथा शरीर के कार्य में सहायक होता है।

अस्थि (Bone)

अस्थि स्थिर और कठोर होती है। यह दो प्रकार के धातुओं से बनती है। एक सघन तंतु (Compact tissue) और दूसरा शुषिर तंतु (Cancellous tissue), अस्थि में कठोरता चूने (Calcium) के कारण आती है। अस्थि पर दो आवरण चढ़े होते हैं। एक बाहर की ओर होता है जिसे बाह्यावरण वा अस्थि-धरा कला (Periosteum) कहते हैं। दूसरी अन्तरावरण वा मज्जाधरा कला (Endosteum) कहलाती है।

अस्थियों में सूक्ष्म सूक्ष्म छिद्र दिखलाई देते हैं जिनमे से रक्त प्रणालियाँ प्रवेश पाकर अस्थियों का पोषण करती हैं।

बाल्यावस्था में अस्थियाँ (Bones) कोमल और संख्या मे अधिक होती हैं जो युवावस्था में कठोर और संख्या में कम हो जाती हैं।

अस्थियाँ कई प्रकार की होती हैं। प्राचीन आचार्यों ने कपाल, रुचक, तरुण, वलय तथा नलक नामक पाँच प्रकार माने हैं और आधुनिक आचार्य अस्थि तथा तरुणास्थि (Cartilage) नामक दो प्रकार मानते हैं।

अस्थियों की संख्या मे भी विभिन्न आचार्यों के विभिन्न मत हैं। चरकादि ऋषि कुल ३६० तथा सुश्रुत आदि केवल ३०० मानते हैं। आजकल अस्थियों की संख्या केवल २०६ मानी जाती है।

अस्थियों की तालिका

शास्त्रीय नाम	आँग्ल भाषा के नाम	उच्चारण	संख्या
अंगुल्यस्थि	Phalanges	फैलेंजेज	१४
पादांगुलिमूलशलाका	Metatarsals	मेटाटार्सल्स	५
पादकूर्चास्थियाँ	Tarsal Bones	टार्सल वोन्स	७
जंघास्थियाँ	Leg	लेग	२
जानु	Patella	पैटिला	१
ऊरु	Femur	फेमर	१
बाहु की अंगुलियाँ	Phalanges	फैलेंजेज	२४
करांगुलिमूल शलाकायें	Metacarpals	मेटाकार्पल्स	५
पाणिकूर्चास्थि	Carpal Bones	कार्पल वोन्स	८
प्रकोष्ठास्थि	Hand	हैन्ड	२
प्रगण्डास्थि	Humerus	ह्यूमरस	१
कशेरुक	Vertebra	वर्टिब्रा	२४
त्रिकास्थि	Sacrum	सेक्रम	१
अनुत्रिकास्थि	Coccyx	काक्सिक्स	१
श्रोणिफलक	Innominate	इन्नामिनेट	२
उर फलक	Sternum	स्टर्नम	१
अक्षकास्थि	Clavicles	क्लैविकिल्स	२
अंसफलक	Sternum	स्टर्नम	२
पर्शुकायें	Ribs	रिव्स	२४
कण्ठास्थि	Hyoid	हायड	१
कपालास्थि	Head	हेड	४
शंखप्रदेश	Temporal	टेम्पोरल	२
जतूकास्थि	Sphenoid	स्फेनायड	१
झर्झरास्थि	Ethmoid	इथमायड	१
गण्डास्थियाँ	Malar bones	मेलरवोन्स	२
ऊर्ध्वहन्वस्थि	SuperiorMaxillary	सुपीरियर मैक्वजलरी	२
अधोहन्वस्थि	Inferior Maxillary	इन्फीरियर मैक्जिलरी	१

शास्त्रीय नाम	आँग्ल भाषा के नाम	उच्चारण	संख्या
ताल्वस्थि	Palate Bones	पैलेट बोन्स	२
नाशास्थि	Nasal Bones	नेजल बोन्स	२
शुक्तिकास्थि	Inferiorterbenated	इन्फीरियरटर्बिनेटेड	२
सीरिकास्थि	Vomar	वोमर	२
अश्रुकास्थि	Lacrymal	लैक्रिमल	२
कर्णास्थियाँ	Earbones	ईयर बोन्स	६

क्रिया—अस्थियाँ शरीर को रूप देती हैं तथा मास को धारण किये रहती हैं। यदि अस्थियाँ न होती तो शरीर मास के लोथड़े सदृश,पड़ा रहता उसका कोई रूप न होता।

सूक्तियाँ (Cartilage)

रचना—तरुणास्थियों वा सूक्तियों (Cartilage) की रचना अस्थि सदृश ही है किन्तु तरुणास्थियों में सघन वस्तु की अल्पता रहती है तथा इसमें रक्तनलिकायें प्रविष्ट नहीं होती । तरुणास्थियाँ अस्थियों के संगम स्थान पर तथा कोमल और लचकीले अवयवों में पाई जाती हैं।

क्रिया—सन्धियों को आवृत्त करना तथा दो अस्थियों को परस्पर सम्बन्धित करना और सम्बन्धित अवयव के स्थितिस्थापकत्व में सहायक होना।

सन्धियाँ (Joints)

परिभाषा—दो वा दो से अधिक अस्थियों के संगम स्थान को सन्धि कहते हैं।

प्रकार—(१) गतिशील (Movable Joints)

(२) गतिहीन (Immovable)

शाखा, हनु और कटि की सन्धियाँ गति शील होती हैं तथा शेष सब सन्धियाँ गति हीन वा स्थिर (Fixed) होती हैं।

सन्धियाँ तरुणास्थियों से आवृत्त रहती हैं तथा सम्बन्धित अस्थियों के बीच में श्लेष्मधर कलापुटक (Synovial membrane) पड़ा रहता है ताकि अस्थियाँ परस्पर रगड़ खाकर टूट न जाय । सन्धियाँ स्नायु रज्जु (Ligaments) से बँधी रहती हैं ताकि स्थानच्युत न हो जाय।

क्रिया—सन्धियाँ शरीर को मोड़ने में सहायक होती हैं। जिसके कारण प्राणी अपने कार्य का सम्पादन भलीभाँति कर सकता है।

मांस पेशियाँ (Muscles)

रचना—मांसपेशिया सूत्राकार तथा कोषाकार दो ततुंओं से वनी हैं। रचना के अनुसार इनके दो विभाग किये गये हैं।

(१) **ऐच्छिक** (Voluntary —यह पेशी लम्बे लम्बें सूत्रों से वनती है जो अस्थि पंजर पर वाहर की ओर होती हैं। इनका उदय मासल सूत्रों में तथा अवसान कण्डरा के रूप में होता है। ये आवरणो से आवृत्त होती हैं जिसे उत्तान तथा गम्भीर प्रावर्णी (Superficial and deep fascia) कहते हैं।

(२) **अनैच्छिक** (Involuntary):—यह पेशी गोलाकार सूत्रों से वनी होती हैं जो अस्थि पञ्जर के नीचे आशयों का निर्माण करती है। इसकी कार्यप्रणाली अनवरत अनैच्छिक रूप से होती है।

मासपेशियों का पोषण उनके अन्दर प्रविष्ट की हुई रक्तनलिकाओं से होता है।

संख्या—प्राचीन शास्त्रज्ञों ने पेशियों की कुल संख्या ५०० तथा आधुनिक शास्त्रज्ञों ने कुल ४०० वतलाया है।

ऐच्छिक पेशियों की तालिका

अंग नाम	संख्या
शिर तथा मुखमण्डल	८२
ग्रीवा	८१
मध्यशरीर	१११
उर्ध्वशाखा	९८
निम्नशाखा	१०८

काय—शरीर मे गति उत्पन्न करना, शरीर की सुन्दरता को वनाये रखना। कार्य करने में सहायक होना।

त्वचा (Skin)

शरीर के सवसे ऊपर जो आवरण होता है उसे त्वचा कहते हैं। यह छोटे छोटे कोषाणुओं (Cells) के परस्पर संयोग से वना है। आयुर्वेद में त्वचा की उत्पत्ति त्रिदोषों से पकाये हुये शुक्रशोणित द्वारा है। प्रधानतया त्वचा दो प्रकार की होती है।

(१) वाह्यत्वचा (Epidermis) (२) अन्तस्त्वचा (Dermis)

पुनः इन दोनों के पृथक् पृथक् विभाग किये जाते हैं जो मिलकर सात होते हैं ।

वाह्यत्वचा (Epidermis)

(१) अवभासिनी (Horney Leyer)

(२) लोहिता (Stratum Lucidum)

(३) श्वेता (Stratum granulosum)

(४) ताम्रा (Malpighian Layer)

अन्तस्त्वचा (Dermis)

(१) वेदिनी (Papillary Layer)

(२) रोहिणी (Reticular Layers)

(३) मासधरा (Subcutaneous tissue)

त्वचा में स्वेद (Sweat) और वसा की ग्रन्थियाँ स्थित होती हैं जो क्रमशः पसीना और वसा का श्राव करती रहती हैं ।

कार्य (Action)—

(१) शरीर की वाहरी आक्रमणकारियों से रक्षा करना ।

(२) शारीरिक ताप को समुचित रूप में स्थिर रखना ।

(३) श्वास प्रश्वास का कार्य करना ।

(४) रक्त को शुद्ध करना ।

(५) संज्ञा का वहन करना ।

(६) विपत्याग करना ।

कलायें (Fascia)

कलायें शरीर के कोमल अंगों को आवृत्त करती हैं । इनकी संख्याये सात हैं । ये चादर के आकार की स्वच्छ और पतली होती हैं ।

(१) मासधरा कला (Deep fascia)

(२) रक्तधरा कला (Endothelial lining of the blood vessels)

(३) मेदोधरा कला (Omentum)

(४) श्लेष्मधरा कला (Synovial membrane)

(५) पुरीषधरा कला (Mucous membrane of the colon and rectum)

(६) पित्तधरा कला (Mucous membrane of the small intestine)

(७) शुक्रधरा कला (Mucous membrane of the vesiculae seminalis etc.)

धातु तथा उनके मैल

जो वस्तु शरीर को स्वस्थ रखने मे सहायक होते हैं उन्हे धातु कहते हैं । ये संख्या मे सात होते हैं ।

धातु	मैल
(१) रस (Chyle)	लाला और अश्रु
(२) रक्त (Blood)	रंजक पित्त
(३) मास (Muscles)	कान का मैल
(४) मेद (Fat)	जीभ, दॉत, वगल और शिश्न का मैल
५) अस्थि (Bone)	नख, लोम
((६) मज्जा (Bone marrow)	नेत्रों का कीचड़, मुख की स्निग्धता
(७) शुक्र (Spermatozoon)	मुहासे दाढ़ी, मूँछ

उपधातु—उपर्युक्त धातुओं के द्वारा जो वस्तुयें वनती हैं उनको उपधातु कहते हैं। उपधातु भी सख्या में सात होते हैं ।

धातु	उपधातु
(१) रस (Chyle)	दूध (Milk)
(२) रक्त (Blood)	रज (Menstruation)
(३) मास (Muscles)	वसा (Fat)
(४) मेद (Fat)	पसीना (Sweat)
(५) अस्थि (Bone)	दंत (Tooth)
(६) मज्जा (Marrow)	वाल (Hair)
(७) शुक्र (Sperm)	ओज (Vitatily)

मर्म

परिभाषा:—शिरा, स्नायु, सन्धि, मांस तथा अस्थियाँ जहॉ एक साथ मिलते

हैं उस स्थान को मर्म कहते हैं। ये मर्म आत्मा के आधारभूत हैं। इनमें आघात लगने से तत्काल प्राण चला जाता है।

प्रकारानुसार	मर्मसंख्या	स्थानानुसार	मर्मसंख्या
(१) मांस मर्म	११	(१) दोनों पांव में	२२
(२) शिरा मर्म	४१	(२) दोनों हाथों में	२२
(३) स्नायु मर्म	२७	(३) छाती और कुक्षि में	१२
(४) अस्थि मर्म	८	(४) पृष्ठ में	१४
(५) सन्धि मर्म	२०	(५) ग्रीवा तथा उसके ऊर्ध्वभाग में	३७

भयंकरता के आधार पर मर्म* संख्या

(१) सद्यः प्राणहर	१९
(२) कालान्तर में प्राणनाशक	३३
(३) विकल करने वाले	४४
(४) वेदनादायक	८
(५) विशल्य	३

आशयों का वर्णन

आयुर्वेद शास्त्र में सात आशयों का वर्णन आता है।

(१) **वाताशय**—शरीर में वायु का मुख्य दो अधिष्ठान कहा जाता है :—

(अ) उदानवायु का स्थान फुफ्फुस है। 'उदानवायोराधारः फुफ्फुसः' शार्ङ्गधर

(ब) चरक महोदय इसी वायु को पक्वाशय मे बतलाते हैं। उनका कहना है कि 'पक्वाशयो विशेषेण वातस्थानम्'।

आधुनिक काल में वाताशय से वातसंस्थान (Nervous System) को ग्रहण करते हैं क्योंकि वायु का जो कार्य आयुर्वेद में वर्णित है वह आधुनिक काल के वातसंस्थान (Nervous System) के कार्यों से मिलता-जुलता है।

वात संस्थान (Nervous System)

प्रकृति का यह नियम है कि जो वस्तु जितनी ही कोमल तथा आवश्यकीय

---

* मर्मों का विशद वर्णन चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित 'मर्मविज्ञान' नामक पुस्तक में देखिये।

होती है, उसकी सुरक्षा का उतना ही समुचित तथा सुव्यवस्थित प्रबन्ध होता है। वात संस्थान (Nervous System) से ही शरीर के सम्पूर्ण अंगप्रत्यंग तथा आशयादि अपने अपने कार्यों में संलग्न किये जाते हैं तथा उनका नियमन होता है। अतः इसकी महत्ता को देखते हुये प्रकृति ने इसकी सुरक्षा के लिये अस्थि गुहा का निर्माण किया है। यह गुहा शिर से लेकर त्रिक तक फैली हुई है।

वर्णन की सुविधा को ध्यान में रखकर वातसंस्थान (Nervous System) को निम्न भागों में विभक्त किया जाता है।

(१) मस्तिष्क (Brain)
(२) सुषुम्नाकाण्ड (Spinal Cord)
(३) नाड़िया (Nerves)

मस्तिष्क (Brain)

मस्तिष्क कपाल नामक अस्थि कोटर में रहता है। यह वात-तन्तुओं (Nervous tissues) तथा नाड़ी कोषाणुओं (Nerve cells) द्वारा निर्मित होता है। सम्पूर्ण वातसंस्थान (Nervous System) अस्थिमय गुहा के अतिरिक्त तीन आवरणों से आवृत होता है। सबसे ऊपर के आवरण को, जो अस्थि से सम्बन्धित होता है, वराशिका (Duramater) तथा मध्य आवरण को सिरारिका (Arachnoid) और अन्तरावरण जो मस्तिष्क के बाह्य पृष्ठ से सम्बन्धित होता है चिनाशुक (Piamater) कहते हैं।

स्थित्यनुसार मस्तिष्क के भाग (Parts of the Brain)

(१) अग्रमस्तिष्क (Fore brain)
(२) मध्यमस्तिष्क (Mid brain)
(३) पश्चात् मस्तिष्क (Hind brain)

सुषुम्नाकाण्ड (Spinal Cord) के अतिरिक्त नाड़ी संस्थान का सम्पूर्ण भाग कपाल गुहा में स्थित होता है। सुषुम्नाकाण्ड (Spinal Cord) पृष्ठवंश में कशेरुकाओं द्वारा निर्मित गुहा में स्थित होती है। मस्तिष्क (Brain) में चार गुहायें होती हैं जिनमें से तीन बृहत् मस्तिष्क (Cerebrum) या अग्रमस्तिष्क में तथा एक लघुमस्तिष्क (Cerebellum) या पृश्चात् मस्तिष्क में होती है।

बृहत् मस्तिष्क में स्थित गुहायें—

(१) ब्रह्मगुहा (Ist ventricle)

(२) त्रिपथगुहा (Lateral ventricles)

लघुमस्तिष्क की गुहा—

(३) प्राग गुहा (4th ventricle)

उपरोक्त चारों गुहायें एक प्रकार के लसिकामय तरल से भरी रहती हैं जिसे ब्रह्मवारि (Cerebrospinal fluid) कहते हैं। यह वारि मस्तिष्कगत चाप Blood Pressure को स्थिर रखती है।

मस्तिष्क का ऊपरी भाग धूसर वर्ण का चक्राग (Convolutions) और सीतांग (Fissures) युक्त होता है। इसी भाग मे शरीर के विभिन्न केन्द्र स्थित होते हैं। मध्य भाग श्वेत होता है जो समतल होता है।

सुषुम्ना (Spinal cord)

सुषुम्नाकाण्ड मस्तिष्क का वह भाग है जो कपालास्थि के महाविवर (Foramen Magnum) से निकलकर त्रिक प्रदेश तक कशेरुक गुहा में फैली होती है। इस पर भी मस्तिष्क सदृश ही तीन आवरण होते हैं। यह भी धूसर और श्वेत पदार्थों से निर्मित होती है किन्तु इसमें श्वेत पदार्थ बाहर की ओर और धूसर पदार्थ अन्दर की ओर स्थित होते हैं। सुषुम्ना के अन्दर एक छिद्र होता है जो सुषुम्नाशीर्षक (Medulla Oblongata) से होता हुआ लघुमस्तिष्क (Cerebellum) के प्राण गुहा (Fourth Ventricle) से सम्बन्धित होता है, जिसमें ब्रह्मवारि (Cerebrospinal fluid) भरा होती है।

नाड़ियाँ (Nerves)

नाड़ी, कई नाड़ी कन्दाणुकों (Neurons) के मिलने से बनती है। एक नाड़ी कन्दाणुक (Neuron) में एक अक्षकतन्तु (axon), एक नाड़ी कोषाणुकी (Nerve cell) तथा कई उर्णातन्तु (Dentrites) होते हैं।

नाड़ियों के प्रकार—

(१) **संज्ञावाही** (Sensory)—यह ज्ञान का वहन करती है। इसका प्रान्तीय भाग (Nerve Endings) चर्म तथा आशयों में होता है। ये मस्तिष्क को सूचना पहुंचाती है।

(२) **चेष्टावाही** (Motor):—इनका प्रारम्भ मस्तिष्क से होता है। इनका सम्बन्ध आशयों और सन्धि स्थानो से होता है। ये मस्तिष्क से आज्ञा

लाकर आशयों और सन्धियों को देती हैं। जिसके फलस्वरूप शरीर में चेष्टायें होती हैं।

मस्तिष्क से १२ जोडे नाडियों का प्रादुर्भाव होता है। जो शरीर के विभिन्न अङ्गों को जाती हैं। इनकी संक्षिप्त व्याख्या नीचे की जाती है—

(१) **घ्राण नाड़ी** (Olfactory nerve):—यह नाड़ी सूक्ष्म सूत्रों द्वारा नाशापटल पर फैलकर गन्ध को ग्रहण करती है।

(२) **दृष्टि नाड़ी** (Optic nerve)—यह नेत्र के कृष्णमण्डल (Retina) पर फैलकर प्रतिबिम्ब (Shadow) की सूचना मस्तिष्क को देती रहती है।

(३) **नेत्र चेष्टनी नाड़ी** (Oculomotor nerve):—नेत्र के गति से सम्बन्धित रहती है।

(४) **कटाक्षिणी नाड़ी** (Trochlear nerve):—यह भी नेत्रों के गति से ही सम्बन्धित रहती है।

(५) **त्रिधारा नाड़ी** (Trigeminal Nerve)—यह बहुत ही बड़ी नाड़ी है जो तीन शाखाओं मे विभक्त होकर मुखमण्डल तथा शिर पर फैली होती हैं।

(६) **नेत्र पार्श्विकी नाड़ी** (Abducent nerve).—इस नाड़ी का भी सम्बन्ध नेत्र से होता है।

(७) **वक्त्र नाड़ी** (Facial nerve):—इस नाड़ी का सम्बन्ध मुखमण्डल की मासपेशियों से होता है।

(८) **श्रुति नाड़ी** (Acoustic nerve):—इस नाड़ी की शाखायें कर्णगुहा मे फैली होती हैं जो श्रवण का कार्य करती हैं।

(९) **कण्ठरासनी नाड़ी** (Glossopharyngeal nerve):—इस नाड़ी का सम्बन्ध जिह्वा और कण्ठ की पेशियों से होता है, जिनमें इसी नाड़ी के कारण चेष्टायें होती हैं।

(१०) **प्राणदा नाड़ी** (Vagus nerve).—इस नाड़ी का सम्बन्ध स्वरयन्त्र (Larynx), फुफ्फुस (Lungs), हृदय (Heart), आमाशय (Stomach) और आन्त्रों (Intestines) से होता है।

(११) **नागिनी नाड़ी** (Accessory nerve):—ग्रीवा की कुछ मांसपेशियों से सम्बन्धित होती है।

(१२) **जिह्वासूलिनी** (Hypoglossal):—यह जिह्वा के नीचे फैलकर जिह्वा की पेशियों का सञ्चालन करती है।

सौषुम्निक नाड़ियाँ (Spinal nerves)

सुषुम्नाकाण्ड (Spinal cord) से ३१ जोडे नाड़ियाँ निकलकर शरीर के विभिन्न अङ्गों को जाती हैं। ये नाड़ियाँ पृष्ठवंश के वायें और दक्षिण पार्श्व में कशेरुक छिद्रों से निकलती हैं।

सौषुम्निक नाड़ियों की संख्या विभाग

(१) ग्रीवा (Neck) में	८
(२) पीठ (Back) में	१२
(३) कटि (Lumbar region) में	५
(४) त्रिक (Sacral) में	५
(५) अनुत्रिक (Coccygeal) में	१

वात संस्थान के कार्य

(१) शरीर के प्रत्येक अंग-प्रत्यङ्गों पर अधिकार रखना।

(२) शारीरिक अंग-प्रत्यङ्गों को कार्यों में लगाना।

(३) प्रत्येक अंग-प्रत्यंग के कार्यों में परस्पर सहयोग स्थापित रखना।

(४) शरीर में चेष्टा उत्पन्न करना।

(५) शरीर की रक्षा करना।

पित्ताशय—चरक ने पित्ताशय को आमाशय कहा है जैसा कि उनका कथन है—"आमाशयो विशेषेण पित्तस्थानम्"।

आधुनिक काल में पित्ताशय से पित्ताशय (Gall Bladder) युक्त यकृत (Liver) और अग्न्याशय (Pancreas) समझते हैं। इसका कारण यह है कि पित्त से ही भोज्य पदार्थ पचता है तथा रक्त रंजित होता है। जो दोनों मतों से सिद्ध है। अतः पित्ताशय से पित्ताशय युक्त यकृत तथा अग्न्याशय ही मानना युक्तिसंगत होगा।

(२) पित्ताशय (Gall Bladder)

पित्ताशय, यकृत (Liver) के दक्षिण पिण्ड के नीचे एक खात में थैली के

आकार का होता है। यह ३-४ इञ्च लम्बा होता है। इसमें यकृत प्रणाली (Hepatic duct) और पित्ताशयिक नलिका (Cystic duct) द्वारा आया हुआ पित्त एकत्रित रहता है। भोजन के पाक के समय यह संचित पित्त पित्तनलिका (Biliary duct) द्वारा पक्वाशय (Duodenum) में जाता है।

यकृत् (Liver)

यकृत, उदर गुहा (Abdominal Cavity) के ऊर्ध्व भाग में पर्शुकाओं के नीचे, मध्य रेखा के दोनों ओर लाल रंग का, पिण्ड के रूप में फंसा होता है। इसका अधिकांश भाग मध्य रेखा से दक्षिण तथा अल्प भाग मध्य रेखा के वाम-पार्श्व में स्थित होता है। कई व्याधियों में यह आकार में बढ़ जाता है। इसका भार करीब २$\frac{१}{२}$ सेर होता है।

यकृत के कार्य

(१) कार्बोहाइड्रेट, वसा और प्रोटीन का पाचन करना।

(२) पित्त का निर्माण करना।

(३) विषों को नष्ट करना।

(४) रक्त का निर्माण करना।

अग्न्याशय (Pancreas)

यह छत्ते के आकार की एक ग्रन्थि होती है, जो रचना में लालाग्रन्थि सदृश होती है। यह अग्नि रस का उद्रेचन करती है जो पक्वाशय (Duodenum) में जाकर पचन में सहायक होता है।

(३) श्लेष्माशय

प्राचीन विद्वानों ने श्लेष्मा का स्थान वक्ष को माना है जैसा आचार्य चरक जी लिखते हैं कि—

'उरो विशेषेण श्लेष्मास्थानम्।'

अधुनिक काल में उसमें स्थित अंग फुफ्फुस (Lung) को श्लेष्मा का स्थान मानते हैं।

फुफ्फुस का वर्णन (Lungs)

फुफ्फुस (Lung) वक्ष गुहा में मध्य रेखा के दोनों ओर एक एक स्थित है। दक्षिण फुफ्फुस, वाम फुफ्फुस की अपेक्षा अधिक चौड़ा और कम लम्बा होता है। दक्षिण फुफ्फुस में ३ खण्ड तथा वाम फुफ्फुस में केवल दो खण्ड होते हैं।

फुफ्फुसों की रचना कोषों से हुई है। इसी कारण देखने में ये स्पञ्ज के सदृश ज्ञात होते हैं। ये कोष वायुकोष कहलाते हैं। ये नीचे की ओर प्रसारित होते हैं जिसे आधार (Base) कहते हैं और ऊपर की ओर संकुचित होते हैं जिसे शिखर (Apex) कहते हैं। पुरुषों के फुफ्फुस, स्त्रियो के फुफ्फुस की अपेक्षा भार में अधिक होते हैं। युवावस्था मे उनका रंग स्लेटी होता है। फुफ्फुस पर दो पर्त का एक आवरण होता है जिसे फुफ्फुसावरण (Pleura) कहते हैं। यह पर्शुकाओं के अस्थि-पंजर के मध्य पड़ा होता है।

फुफ्फुस के कार्य—

(१) श्वास-प्रश्वास करना।

(२) प्राणवायु का ग्रहण करना तथा कार्बन डाइआक्साइड (Corbondi-oxide) का त्याग करना।

(३) रक्त को शुद्ध करना।

(४) विष का त्याग करना।

(४) रक्ताशय

सुश्रुत ने यकृत और प्लीहा को रक्त का स्थान माना है। जैसे—'शोणितस्य-स्थानं यकृत्प्लीहानौ'।

आधुनिक काल के शरीर-शास्त्रज्ञ भी रक्ताशय यकृत (Liver) और प्लीहा (Spleen) को ही मानते हैं। क्योकि इनमें रक्त एकत्रित रहता है जो आवश्यकतानुसार शरीर में जाता है।

यकृत का वर्णन पित्ताशय में किया जा चुका है।

प्लीहा (Spleen) का वर्णन

प्लीहा (Spleen) शरीर के मध्य रेखा के वाम पार्श्व मे आमाशय (Stomach) के अधः तथा वाम वृक्क (Left Kidney) के ऊर्ध्व भाग में नवीं से ग्यारहवी पर्शुकाओं के पीछे स्थित है। इसकी रचना छोटे-छोटे कंदो से हुई है। यह ५ इञ्च लम्बी, ३ इञ्च चौड़ी और ५॥ इञ्च मोटी होती है। कई व्याधियों में इसके आकार में वृद्धि हो जाती है। इसमे रक्त-प्रणालियों के जालक फैले होते हैं।

प्लीहा के कार्य—

(१) श्वेत कणो (Colourless blood Corpuscles) का निर्माण।

(२) नष्ट, भ्रष्ट रक्त के रक्त-कणों को एकत्रित कर हीमोग्लोबीन को पृथक करना।

(३) यूरिक एसिड (Uric acid) का निर्माण करना।

(४) रक्त का संचय करना।

(५) रक्त-कणों का निर्माण करना।

(५) आमाशय

जहां पर अपक्व अन्न एकत्रित रहता है उसे आमाशय कहते हैं। उभयमतानुसार आमाशय (Stomach) एक ही स्थान को मानते हैं।

आमाशय का वर्णन (Discription of Stomach)

आमाशय शरीर की मध्य रेखा के वाम पार्श्व में पर्शुकाओं के (अधः) पीछे एक थैले के आकार का स्थित है। यह ऊपर की ओर अन्नप्रणाली (Oesophagus) और अधः की ओर पक्वाशय (Duodenum) से सम्बन्धित होता है। यह तीन वृत्तियों (Coats) से बना होता है। (१) बहिर्वृत्ति (Serous Coat) यह उदरावरण की होती है। (२) मासल वृत्ति (Muscular Coat) यह स्वतन्त्रपेशी तन्तुओं से बनी होती है। (३) आभ्यन्तरीवृत्ति (Mucous Coat) यह स्थूल कला की बनी होती है। आमाशय में उर्ध्व तथा अधः की ओर क्रमशः हार्दिक (Cardiac) तथा मुद्रिका (Pyloric) दो द्वार होते हैं। यह लगभग ६ इञ्च लम्बा और ३-४ इञ्च चौड़ा है।

कार्य—

(१) आम्लिकरस (Hydrochloric acid) को बनाना।

(२) आमाशयिकरस (Gastric juice) को बनाना।

(३) भोजन को पचा कर दूध सदृश तरल बनाना।

(४) जीवाणुओं का नाश करना।

(६) पक्वाशय

पक्वाशय उस स्थान को कहते हैं जहाँ पर भोज्य पदार्थ का पाक होता है। प्राचीन आचार्यों ने आधुनिक काल के क्षुद्रान्त्र और बृहदान्त्र दोनों को पक्वाशय कहा है। जिनका वर्णन नीचे किया जाता है।

क्षुद्रांत्र (Small Intestine) का वर्णन

क्षुद्रान्त्र कोमल मांस सूत्रों से बनी हुई लगभग १२ फुट लम्बी एक नलिका

है जो नाभि के चारों ओर गुच्छे के रूप में पड़ी रहती है। यह ऊपर की ओर आमाशय के मुद्रिका द्वार (Pyloric orifice) से तथा नीचे की ओर बृहदान्त्र (Large intestine) के उण्डुक (Caecum) नामक भाग से मिला होता है। ये आंत्रवंधनियों (Mesentries) से बंधी होती हैं ताकि उछलने-कूदने में स्थानान्तरित न हो जायँ।

क्षुद्रांत्र के ३ भाग—

(१) ग्रहणी (Duodenum)

(२) मध्यान्त्र (Jejunum)

(३) शेषान्त्र (Ileum)

ग्रहणी—आमाशय के मुद्रिका द्वार से प्रारम्भ होती है। इसकी लम्बाई करीब १ फीट होती है। इसी भाग में पित्ताशय से पित्त तथा अग्न्याशय से अग्नि रस आता है जो आमाशय के अपक्व पदार्थ का पाचन करते हैं। इसके पश्चात् मध्यान्त्र प्रारम्भ होती है जो दस-बारह फीट लम्बी होती है। उसके पश्चात् शेषांत्र प्रारम्भ होकर उण्डुक तक समाप्त होती है।

क्षुद्रांत्र भी आमाशय सदृश ही निर्मित है। यह अंकुरिका युक्त होती है।

बृहदांत्र (Large Intestine)

यह दक्षिण वंक्षणोत्तरिक प्रदेश से प्रारम्भ होकर गुदनलिका का रूप ग्रहण कर समाप्त होती है। यह लगभग ५ फीट लम्बी होती है। इसकी रचना भी क्षुद्रांत्र सदृश होती है। इसमें अंकुरिकायें नहीं होती।

वर्णन की सुविधा के लिए इसके ६ भाग किये जाते हैं:—

(१) **उण्डुक** (Caecum)—यह बृहदात्र का प्रथम भाग है जो एक थैले के आकार में करीब चार अङ्गुल चौड़ा दक्षिण वंक्षणोत्तरिक प्रदेश में स्थित होता है। इसके अग्रभाग मे एक कपाट होता है जिसे संदंशकपाटिका (Ileo Caecal valve) कहते हैं। उण्डुक के अधः भाग मे एक पतली नलिका करीब २ से ६ इञ्च लम्बी लगी होती है जिसे उण्डुकपुच्छ (Appendix) कहते हैं। यह पुच्छ कभी-कभी सूज जाती है जिसको आंत्रपुच्छ शोथ (Appendicitis) कहते हैं।

(२) **आरोही बृहदांत्र** (Ascending Colon):—यह ऊपर की

ओर यकृत के अधः तल तक जाता है । इस तल के पश्चात् यह अनुप्रस्थ दिशा में मुड़ जाता है ।

(३) **अनुप्रस्थांत्र** (Transverse colon).

(४) **अवरोही वृहदांत्र** (Descending colon).

(५) **कुण्डलिका** (Sigmoid colon):—यह वृहदांत्र का शेष भाग है जो मध्यरेखा के वाम अधिवस्तिक प्रदेश में स्थित होती है । यह अधः की ओर गुदनलिका से मिलती है ।

(६) **गुदनलिका** (Rectum):—यह कुण्डलिका से प्रारम्भ होती है । इसमे मांसपेशियो की चक्राकार ३ या ४ वलिया होती हैं जो गुदा का संकोचन कर मल रोकने मे सहायक होती हैं ।

आंत्रों के कार्य—

(१) क्षुद्रान्त्र अपक्व पदार्थ का पाचन करती है ।

(२) क्षुद्रान्त्र पक्व पदार्थों मे स्थित रस का शोषण कर यकृत में भेजती है ।

(३) क्षुद्रांत्र मल को पृथक् करती है ।

(४) वृहदान्त्र जल का शोषण करती है ।

(५) वृहदान्त्र मल का त्याग करती है ।

(७) मूत्राशय

मूत्राशय से वस्ति तथा वृक्क दोनो को समझना चाहिए ।

वृक्क (Kidney) का वर्णन—

वृक्क (Kidney) मूत्र निर्मापक यन्त्र है । ये उदर गुहा मे पृष्ठवंश के दोनो ओर ग्यारहवी और बारहवी पर्शुकाओ के समीप स्थित हैं । दक्षिण वृक्क वाम वृक्क की अपेक्षा कुछ नीचे होता है । इनके ऊपर मुर्गे के कलगी सदृश अधिवृक्क (Suprarenal) नामक रचना होती है । ये छोटे-छोटे कन्दो से निर्मित होती हैं । इनके भीतर रक्त प्रणालियो तथा मूत्र प्रणालियों के जाल बिछे होते हैं । प्रत्येक वृक्क से एक एक मूत्र प्रणाली (ureter) निकल कर वस्ति (Bladder) से मिल जाती है । प्रत्येक प्रणाली लगभग १० या बारह इञ्च लम्बी होती है । वृक्क ४ इञ्च लम्बे, २½ इञ्च चौड़े और १½ इञ्च मोटे होते है ।

कार्य—(१) रक्त से यूरिया और यूरिक एसिड को पृथक् करना ।
(२) मूत्र का निर्माण करना ।
(३) रक्त का छानना ।

मूत्राशय (Bladder)

वस्तिगुहा मे भगास्थि सन्धि के पीछे एक थैला के आकार मे पड़ा होता है । वस्ति के पीछे मलाशय होता है । इसके दोनों पार्श्व में एक एक मूत्र-नलिका (Ureter) लगी होती है । यह भी आमाशय सदृश ३ पर्तों का बना होता है । इससे मूत्र प्रसेक (Urethra) नामक नलिका लगी होती है जिससे मूत्र बाहर निकलता है ।

(८) गर्भाशय

स्त्रियों में गर्भाशय नामक एक आशय पुरुष की अपेक्षा अधिक होता है ।

गर्भाशय (Uterus)

गर्भाशय वस्तिगुहा में मूत्राशय के पीछे तथा मलाशय के सामने स्थित होता है । इसका उर्ध्व भाग प्रसारित होता है जिसे गर्भाशय शिखर (Fundus) कहते हैं । मध्य भाग भी प्रसारित है जो शरीर (Body) कहलाता है । निम्नभाग संकुचित है जिसे गर्भाशय ग्रीवा (Cervix) कहते हैं ।

गर्भाशय ग्रीवा के दो मुख होते हैं, एक अन्तः की ओर होता है जिसे अंतःद्वार (Internal Os) और दूसरा बाहर की ओर होता है जिसे बहिर्द्वार कहते हैं ।

गर्भाशय के दोनों पार्श्वों में डिम्बग्रंथि (Ovary) से दो प्रणालिया डिम्ब-प्रणाली (Fallopion tube) नाम की आ कर लगती हैं जिनसे डिम्ब का आगमन गर्भाशय मे होता है ।

गर्भाशय-ग्रीवा नीचे की ओर योनि (Vagina) भित्ती से लगी होती है । गर्भाशय में एक बूंद तरल प्रविष्ट होने का स्थान होता है । गर्भावस्था में इसकी मासपेशियाँ प्रसारित होकर अपने आयाम को बढ़ा लेती है ।

गर्भाशय आठ बन्धनियों द्वारा बंधा होता है । यह ३ इञ्च लम्बा, २ इञ्च चौड़ा और १ इञ्च मोटा होता है । यह भी ३ पर्तों से बना होता है ।

'रक्तवहसंस्थान' (Circulatory System)

रक्तवह संस्थान में हृदय (Heart), धमनियां (Arteries) शिरायें (Veins), तथा केशिकायें (Capillaries) आदि रचनायें सम्मिलित हैं ।

इन उपरोक्त रचनाओं के सहयोग से शरीर के सम्पूर्ण रचनाओं को भोज्य-पदार्थ मिलता है तथा उनके मलों का त्याग होता है।

हृदय (Heart)

हृदय (Heart) स्वतन्त्र तथा ऐच्छिक दोनों मांस सूत्रो से बना है। शिशु जब गर्भाशय में ४ मास का होता है तभी से हृदय गति करने लगता है और मरने तक अनवरत करता रहता है। कभी भी एक मिनट भी आराम नही लेता। यह वक्ष प्रदेश में, मध्य रेखा के वाम पार्श्व में, वाम फुफ्फुस के कोटर मे स्थित होता है। यह आकार मे एक कलमी आम सदृश होता है जिसका आधार ऊपर की ओर और शिखर नीचे की ओर होता है। यह दूसरी से ५वीं पर्शुकाओं के बीच स्थित होता है। इसके दक्षिण तथा वाम दो भाग होते हैं। पुनः इन दोनों भागों का उर्ध्व तथा अधः दो भाग हो जाता है। इस प्रकार से हृदय मे ४ कोष हो जाते हैं जो क्रमशः परस्पर भित्ती तथा कपाटों द्वारा पृथक होते हैं। हृदय के दोनों पार्श्वों के उर्ध्व कोषों को अलिन्द (Auricles) तथा दोनों पार्श्वों के अधः कोषो को निलय (Ventricles) कहते हैं।

दक्षिण पार्श्व के अलिन्द (Auricle) और निलय (Ventricle) के मध्य द्विपत्रक (Mitral Valves) तथा वाम पार्श्व के अलिन्द और निलय के बीच त्रिपत्रक कपाट (Tricuspid Valves) होते हैं जो एक ही पार्श्व में खुलते है।

हृदय के दक्षिण अलिन्द (Auricle) मे महाशिरायें (Venacava) प्रविष्ट होती हैं तथा वामालिन्द (Left auricle) से महाधमनी (Aorta) का उद्भव होता है।

शिरा (Vein)

आयुर्वेद में शिरायें (Veins) सात सौ होती हैं जो रसादि धातुओं का वहन करती हैं। आधुनिककाल की शिरायें शरीर के सम्पूर्ण भागो से रक्त लेकर हृदय मे लाती हैं। शिराओं में अल्प मास सूत्र होते है जिससे इनकी भित्ती बहुत ही पतली होती है।

धमनी (Arteries)

आयुर्वेद में धमनियाँ (Arteries) २४ बतलाई गई हैं। ये नाभि-

स्थान से निकल कर दस अधः की ओर दस उर्ध्व की ओर तथा चार पार्श्वों मे जाती हैं ।

आधुनिक काल के विद्वानों का कथन है कि धमनियों की दीवाल दृढ़ होती है क्योंकि उनकी भित्तियों मे मास-सूत्रों की अधिकता होती है। ये हृदय से रक्त लेकर शरीर के विभिन्न भागों मे वितरित करती है ।

रक्त का वर्णन (Blood)

रक्त एक तरल पदार्थ है जिससे शरीर के सम्पूर्ण तन्तुओं को भोज्य पदार्थ मिलता है । इसमें निम्न वस्तुयें मिलती हैं:—

(१) तरल (Plasma)
(२) रक्त-कणिकायें (Blood Platelets)
(३) रक्त-कण (Red corpuscles)
(४) श्वेत-कण (White corpuscles)
(५) फाइब्रीन (Fibrin)

रक्त लाल रंग का होता है । एक स्वस्थ मनुष्य मे लाल रक्त कणों की संख्या प्रति मीलीमीटर ५० लाख तथा स्वस्थ स्त्रियों मे ४५ लाख होती है । श्वेत रक्तकण ८ हजार तथा रक्तकणिकायें ६ सौ होती हैं । रक्त का आपेक्षिक घनत्व १०५५ से १०६२ होता है तथा उसकी प्रतिक्रिया क्षारीय होती है ।

रक्त परिभ्रमण (Blood Circulation)

शरीर के सम्पूर्ण तंतु में जिस प्रकार से रक्त पहुंचता है उसे रक्त परिभ्रमण कहते हैं ।

रक्तपरिभ्रमण के प्रकार

(१) वृहद् रक्तपरिभ्रमण (Greater Circulation)
(२) लघु या फुफ्फुसीय रक्तपरिभ्रमण (Lesser Circulation)

वृहद् रक्त परिभ्रमण (Greater circulation)

सम्पूर्ण शरीर का अशुद्ध रक्त अधरा महाशिरा (Inferior Venacava) तथा उत्तरा महाशिरा (Superior Venacava) द्वारा हृदय के दक्षिण अलिन्द मे आता है, जब अलिन्द (Auricle) संकोच करता है तो द्विपत्रक कपाट (Mitral Valves) खुल जाता है और रक्त दक्षिण निलय (Ven-

tricle) मे प्रविष्ट करता है। अब निलय (Ventricle) संकोच करते हैं और अलिन्द प्रसारित होते हैं जिसके फलस्वरूप उनके मध्य के कपाट बन्द हो जाते हैं और रक्त पुनः वापस नही लौटने पाता बल्कि फुफ्फुसीया महाधमनी (Pulmonary arteries) द्वारा फुफ्फुस में शुद्ध होने के लिये चला जाता है। फुफ्फुस से शुद्ध होने के पश्चात् रक्त पुनः फुफ्फुसीया शिराओ (Pulmonary veins) द्वारा हृदय के वाम अलिन्द मे प्रविष्ट करता है। अलिन्द जब संकोच करता है तब त्रिपत्रक कपाट (Tricuspid valve) खुल जाता है और रक्त निलय में चला जाता है। फिर निलय के संकोच तथा अलिन्द के प्रसारण के परिणाम स्वरूप शुद्ध रक्त महाधमनी (Aorta) मे चला जाता है। यह रक्त उर्ध्वगा (Ascending) तथा अधरा (Descending) महाधमनी में जाकर शरीर के सम्पूर्ण भागो का पोषण करता है। इस पूरी क्रिया मे केवल १५ सेकेण्ड लगता है।

'रसायनी' (Lymphatics)

रसायनिया अतिसूक्ष्म और कोमल प्रणालिया होती हैं जो शरीर मे रस (Lymph) का वहन करती हैं। ये प्रणालिया नख, लोम, त्वचा और स्रक्तियो के अतिरिक्त सम्पूर्ण शरीर मे उपस्थित होती है। ये श्वेत रङ्ग की ढीलीढाली ग्रंथीयुक्त होती हैं। इनकी भित्तिया पारदर्शक होती हैं।

रस प्रकार—(१) लसिका या शुद्ध रस (Lymph)
(२) पायस (Chyle)

रसवाहिनिया सम्पूर्ण शरीर से लसिका को लाकर रसकुल्या (Lymphatic duct) नामक बड़ी प्रणाली में छोड़ती हैं। यह संख्या मे दो होती है। एक वामा रसकुल्या तथा दूसरी दक्षिण रसकुल्या कहलाती है। वामा रसकुल्या (Thoracic duct) के मूल में एक प्रसारित रसाधारिका होती है जिसे रस प्रपा (Cisterna chyli) कहते हैं। यह रसप्रपानामक प्रणाली ऊपर को क्रमशः संकुचित होते होते महाप्राचीरा के अधःतल मे वामा रसकुल्या (Thoracic duct) में परिणित हो जाती है। रसप्रपा प्रथम तथा द्वितीय कटिकशेरुक के सम्मुख तथा महाधमनी के पीछे करीब ४ अंगुल लम्बी, दो अंगुल चौड़ी तथा ऊपर की अपेक्षा नीचे मोटी होती है।

कार्य—शरीर के पोषक पदार्थों को रक्त में मिलाना ।

रसग्रंथियाँ (Lymphatic Glands)

ये ग्रन्थियां सेम के बीज के आकार की रसायनी से लगी हुई संख्या में असंख्य होतीहै। इन ग्रंथियो मे रक्त प्रणालियों तथा नाड़ियों के जाल फैले होते हैं। इन ग्रंथियो मे रसायनिया दो विभागों में विभक्त हो जाती हैं । एक ग्रन्थि-प्रवेशनी तथा दूसरी ग्रन्थि-निर्गता कहलाती है । ये ग्रन्थिया शारीरिक क्षमता के ह्रास होने पर वृद्धि को प्राप्त होकर व्याधि के आक्रमण की सूचना दे देती है ।

कार्यः—

(१) श्वेत रक्तकणों (White Blood Corpuscles) का निर्माण ।

(२) शरीर में प्रविष्ट विषों को नष्ट करने का प्रयत्न करना ।

मुखगह्वर का वर्णन (Oral cavity)

मुख गह्वर में स्थित रचनायें—

(१) दो ओष्ठ (Two Lips)
(२) दो कपोल (Two cheeks)
(३) दो दन्तवेष्ट (Two Gums)
(४ दन्त (Teeth)
(५) जिह्वा (Tongue)
(६) तालु-मण्डल (Palate)
(७) गल-तोरणिका (Fauces)
(८) उपजिह्विका (Tonsils)
(९) अधिजिह्विका (Epiglottis)
(१०)लालाग्रंथियाँ (Salivary glands)
(११) ग्रसनिका (Pharynx)
(१२) अन्ननलिका (Oesophagus)
(१३) स्वरयन्त्र (Larynx)
(१४) श्वासनलिका (Trachea)

ओष्ठ (Lips)

ओष्ठ पेशी, मेद और रसायनी के जालकों से बना है । इसका बहिर्भाग त्वचा से तथा आभ्यन्तरिक भाग श्लैष्मिक कला से ढका रहता है । ऊर्ध्व (Upper) तथा अधः (Lower) नामक दो ओष्ठ होते हैं। जहा दोनों ओष्ठ मिलते हैं उस स्थान को कोण कहते हैं । यह मुख के आन्तरिक रचनाओं की रक्षा करता है तथा शब्दोच्चारण में सहायक होता है

[illegible]eks)

कपोल भी ओ[illegible] [illegible]ा होता है । यह भी

चर्म से तथा आभ्यन्तरिक भाग में श्लैष्मिक कला (Mucous membrane) द्वारा आच्छादित होता है । कपोल में कर्णमूलिक स्रोत (Parotid duct) नामक दो प्रणालियाँ खुलती हैं जिनसे लाला निकला करता है जिससे कपोल स्निग्ध रहता है ।

(३) दन्तवेष्ट (Gums)

उर्ध्व तथा अधः नामक दो मासल दन्तवेष्ट होते है जो ओष्ठ से आच्छादित रहते हैं । दन्तवेष्ट दृढ़ स्नायु सूत्रों से बने होते हैं जो दन्त को धारण करते हैं ।

(४) दन्त (Teeth)

दन्त जीवन के लिये अति ही उपयोगी हैं । अतः इसका विस्तृत वर्णन आवश्यकीय होता है ।

दन्तभेद—(१) अस्थाई या दुग्धदन्त (Milk teeth)

(२) स्थाई दन्त (Permanent teeth)

अस्थाईदन्त (Temporary teeth) दात ६ वें या ७ वें मास से निकलना प्रारम्भ होते हैं तथा १½ वर्ष की आयु तक सब निकल आते हैं । ये संख्या में बीस होते हैं ।

अस्थाई दन्तोद्गम की तालिका

दाँतों के नाम	अंग्रेजी नाम	उच्चारण	काल
नीचे के अतः. कर्तनक	Lower Incisors	लोअर इन्सीजर	६-९ मास तक
ऊपर के चारों कर्तनक	Upper ,,	अपर ,,	८-१० ,, ,,
नीचे के वाह्य कर्तनक	Lower outer	लोअर आउटर ,,	१२-१४ ,, ,,
अगले चार पूर्व चर्वणक	Anterior premolars	एण्टीरियर प्रीमोलर्स	१२-१४ ,, ,,
भेदक	Canine	केनाइन	१६-२० ,, ,,
पिछले पूर्व चर्वणक	Posterior premolars	पोस्टीरियर प्रीमोलर्स	२०-२४ ,, ,,

स्थाईदन्त (Permanent teeth)—ये दात उत्पत्ति के ६ वें वर्ष से निकलने आरम्भ होते हैं और २५वें वर्ष तक की आयु में पूरे निकल आते हैं । इनकी संख्या ३२ होती है ।

स्थाई दाँतों के उद्गम की तालिका

दांतों के नाम	अंग्रेजी नाम	उच्चारण	काल
प्रथम चर्वणक	1st Premolar	फस्ट प्रीमोलर	६ वर्ष
कर्तनक	Incisors	इन्सीजर्स	७-८ वर्ष
पूर्व चर्वणक	Anterior Premolars	एण्टीरियर प्रीमोलर्स	९-१० ,,
भेदक	Canine	केनाइन	११-१२ ,,
द्वितीय चर्वणक	2nd Premolar	सेकेण्ड प्रीमोलर	१२-१३ ,,
तृतीय ,,	3rd ,,	तृतीय ,,	१७-२५ ,,

यह कोई आवश्यक नही है कि सम्पूर्ण बच्चों में दांत निश्चित समय में ही निकलें। किसी किसी में ६ मास से पूर्व तथा किसी किसी में ९ मास के पश्चात् भी निकलते हैं। ऐसे ही स्थाई दन्तोद्गम में भी विभिन्नता होती है।

कर्तनक (Incisors):—ये मध्य के दो दाँत होते हैं।

भेदक (Canine):—कर्तनक के वाद तथा उसके पास होता है।

पूर्वचर्वणक (Premolars):—भेदक के वाद तथा उससे लगा हुआ पूर्वचर्वणक होता है।

दाढ़े (Molars):—चर्वणक के पश्चात् दाढ़े होती हैं।

दांतों के ३ भाग—

(१) **शिखर** (Crown):—यह दन्तवेष्ट (Gums) से बाहर निकला होता है।

(२) **ग्रीवा** (Neck):—यह शिखर और मूल के मध्य सँकुचित भाग होता है।

(३) **मूल** (Root):—यह हनु की अस्थियों से लगा होता है।

दाँत तीन पदार्थों से मिलकर वना होता है। एक श्वेत तथा कठिन भाग होता है जिसे आइवरी (Ivory) कहते हैं। दूसरा चमकता हुआ शिखर से ग्रीवा तक चिपका हुआ होता है जिसे दन्तावरण (Enamel) कहते हैं। तीसरा एक पतला आवरण होता है जो दन्तमूल से लगा होता है जिसे सिमेण्ट (Cement) कहते हैं। दांतों के मूल के शिखर पर एक छिद्र होता है जिसमें से रक्तवाहनियाँ और नाड़ियाँ प्रविष्ट होती हैं।

कार्य—भोज्य पदार्थ को सूक्ष्मातिसूक्ष्म कर निगलने के योग्य वनाना।

जिह्वा (Tongue)

यह पेशियों से बनी होती है जो आवरण से आवृत्त होती है। इस पर स्वादांकुर निकले होते हैं। इसका अग्र संकुचित और पश्चात् प्रसारित होता है।

कार्य—(१) भोज्य पदार्थ के चर्वण में सहायता करना।

(२) शब्दोच्चारण करना।

(३) स्वाद का ज्ञान करना।

तालु मण्डल (Palate)

तालु, मुख के छत को बनाता है जिसके दो भेद होते हैं। एक कठिन तालु (Hard Palate) और दूसरा कोमल तालु (Soft Palate) कहलाता है। आगे की ओर कठिन तालु होता है जो अस्थि पत्रकों से बना होता है। पीछे की ओर कोमल तालु होता है जो मास और स्नायु तंतुओं से बना होता है। दोनों तालु एक आवरण से ढके होते हैं।

कोमल तालु के पिछले भाग में मध्यरेखा पर गलशुण्डिका (Uvulae) नामक एक रचना लगी होती है जो तालु के कार्य में सहायक होती है।

गल-तोरणिका (Fauces)

गलतोरणिका जिह्वा-तालुका पेशियों से बनी होती है जो गलशुण्डिका से प्रारम्भ होकर इसके दोनों ओर तोरणाकार फैली होती है।

उपजिह्विका (Tonsils)

गलबिल द्वार के दोनों ओर बैर की गुठली के सदृश दो ग्रन्थियाँ हैं जिन्हें उपजिह्विका (Tonsils) कहते हैं। ये बनावट में लसिका ग्रन्थि सदृश होती हैं।

कार्य—उद्रेचन द्वारा गलबिल द्वार की रक्षा करना।

अधिजिह्विका (Epiglottis)

यह जिह्वा मूल से लगी हुई, स्वर-यन्त्र के ऊपर एक तरुणास्थिमय ढक्कन है जो अन्नादि के निगलने के समय श्वास मार्ग को बन्द कर लेती है।

लालाग्रन्थियाँ (Salivary Glands)

ये संख्या में चार होती हैं। मुख-गह्वर में यत्र-तत्र स्थित हैं। ये पतली, चिकनी लाला का स्राव करती हैं। यह रस, अन्न का क्लेदन एवं चर्वण करने में सहायक होता है, मुख को तर रखता है और बोलने में सहायक होता है।

ग्रसनिका (Pharynx)

यह अन्ननलिका के शिखर पर स्थित मासकलामयी, रचना स्वरयन्त्र के पीछे स्थित होती है। यह कण्ठ संकोचनी पेशियों से बनी होती है जिसका अन्तः भाग कला से आच्छादित होता है। यह निगलने के समय नासा के अधः द्वार को बन्द रखती है ताकि भोज्य पदार्थ नासा द्वार से बाहर न आजाय।

अन्नप्रणाली (Oesophagus)

अन्नप्रणाली लगभग ६ इञ्च लम्बी, एक इञ्च मोटी स्वतन्त्र मांसपेशी द्वारा निर्मित नलिका होती है जो छठवी ग्रीवाकशेरुक से आरम्भ होकर ग्यारहवें पृष्टकशेरुक तक जाती है। इसका ऊर्ध्व द्वार ग्रसनिका से तथा अधः द्वार महाप्राचीरा का भेदन कर आमाशय से मिला होता है। यह नलिका श्वासनलिका (Trachea) के पीछे स्थित होती है। इसके अन्तः पृष्ट पर श्लेष्मश्रावी ग्रंथियों से युक्त आवरण होता है। जिससे इसका अन्तः पृष्ट सदैव गीला रहता है।

कार्य—(१) भोजन को मुख गुहा से आमाशय में ले जाना।

स्वरयन्त्र (Larynx)

स्वरयन्त्र अवटुका (Thyroid) आदि ९ तरुणास्थियों के मिलने से बनता है। यह ऊपर की ओर कण्ठास्थि तथा नीचे की ओर श्वासनलिका से मिला होता है। स्वरयन्त्र की तरुणास्थियाँ, पेशियों और स्नायु जालकों से बंधी होती हैं। यह गले के सम्मुख भाग में श्वासनलिका के शिखर पर स्थित होता है।

कार्य—(१) स्वरयन्त्र में जब वायु प्रविष्ट होता है तब स्वर उत्पन्न होता है।

(२) भोजन को श्वासनलिका में जाने से रोकना।

श्वासप्रणाली (Trachea)

श्वासनलिका तरुणास्थियों की बनी हुई छः अङ्गुल लम्बी और करीब ¾ इञ्च मोटी होती है जो अवटुका से प्रारम्भ होकर वक्ष के बीच में होती हुई पञ्चम पृष्ट कशेरुका के सम्मुख दो भागों में विभक्त होकर दोनों फुफ्फुसों में प्रविष्ट करती है। इसके आभ्यन्तर पृष्ट पर लोमवत रचना होती है जो विजातीय पदार्थों को फुफ्फुस में नहीं प्रविष्ट करने देती। श्वासनलिका की दक्षिण शाखा, वाम शाखा की अपेक्षा छोटी होती है।

जननेन्द्रियाँ (Reproductive Organs)

प्रजनन संस्थान में मुख्य दो ग्रन्थियाँ होती हैं जो गर्भोत्पादन के प्रधान साधन

हैं। ये पुरुषों में अण्ड (Testis) तथा स्त्रियों में डिम्बग्रंथी (Ovaries) के नाम से प्रसिद्ध हैं। पुरुषों की ग्रन्थियाँ उदर से बाहर तथा स्त्रियों की ग्रंथियाँ गर्भाशय के दोनों पार्श्वों में स्थित बस्ति गुहा में होती हैं। गर्भाधान (Fertel'zation) का साधन पुरुषों में शिश्न (Penis) और स्त्रियों में गर्भाशय (Uterus) होता है।

पुरुषों के प्रजनन अङ्ग—

(१) शिश्न (Penis)
(२) अण्ड (Testis)
(३) शुक्रवाहिनी (Ductus Deferentia)
(४) शुक्रप्रपिका (Vasiculate Seminales)
(५) पौरुषग्रन्थी (Prostate Gland)

शिश्न (Penis)

शिश्न पुरुष जाति में मैथुन का साधन होता है जो मूत्र प्रणाली (Urethra) को भी धारण किये रहता है। यह लम्बा दण्डाकार तीन पेशियों से बना होता है जो उत्तेजितावस्था में तीन धार युक्त हो जाता है। ये पेशियाँ दृढ स्नायुओं द्वारा बधी होती हैं। शिश्न को बनाने वाली पेशियाँ अधः की ओर भगास्थि सन्धि के दोनों ओर बंधी होती हैं, इनके मध्यरेखा में मूत्र प्रषेकधरा (Corpus Spongiosum) नामक स्पंजवत रचना होती है जो मूत्र मार्ग को धारण करती है। मूत्र प्रषेकधरा पेशी का अग्रिम भाग शिश्नमुण्ड या मणि (Glans Penis) कहलाता है जो छत्राकार होकर शिश्ननिर्मापक पेशियों के अग्रिम भाग को आच्छादित करता है।

शिश्नमुण्ड पतली, मृदुल और लाल रङ्ग की कला से आच्छादित रहता है जिसमें सूक्ष्म ग्रथियाँ होती हैं जो चिकने रस का स्राव करती हैं। शिश्नमुण्ड के पीछे स्थित खात को शिश्न कण्ठिका (Cervix of Glans) कहते हैं। इसको आवृत्त करने वाली शिथिल, कोमल त्वचा को शिश्नच्छदा (Prepuce) कहते हैं। शिश्नमुण्ड, शिश्नसेवनी (Frenum) द्वारा दो भागों में विभक्त होता है जिसके सम्मुख बाहर की ओर मूत्रप्रषेक द्वार (External Urinary Meatus) होता है।

अण्ड (Testis)

अण्ड नामक दो ग्रन्थियाँ, अण्डकोष (Scrotum) में स्थित होती हैं। अण्डकोष शिथिल चर्म तथा स्थूल कलामय आवरण होता है। अण्ड अण्डबन्धनियों द्वारा बंधे होते हैं।

कार्य—(१) शुक्र को उत्पन्न करना।
(२) ओज को उत्पन्न करना

उपाण्ड (Epidydimis)

यह अण्ड के पार्श्व में अर्धचन्द्राकार रचना होती है, जो शुक्रवह नलिकाओं से बनी होती है।

शुक्रवाहिनियाँ (Ductus Deferentia)

ये उपाण्ड से निकली हुई मास तथा स्नायु सूत्रों से बनी हुई नलिकायें होती हैं जो वस्ति द्वार तक जाती हैं। इनके पार्श्वों में शुक्रप्रपिकायें होती हैं।

कार्य—(१) शुक्र को अण्ड से वस्तिद्वार तक ले जाना।

शुक्रप्रपिकायें (Vesiculate Seminalis)

ये स्पंज के सदृश चार अङ्गुल लम्बी, वस्ति पृष्ट में तिरछी पड़ी होती हैं। इनका मुख शुक्रवाहिनी के मुख से मिला होता है। इन दोनों के सम्मिलित द्वार को शुक्रप्रेषकद्वार कहते हैं जो मूत्रप्रेषक के पास होता है।

कार्य—ब्रह्मचर्यावस्था में शुक्र को संचित रखना।

पौरुषग्रंथि (Prostate Gland)

यह ग्रन्थि वस्तिद्वार को तथा मूत्रप्रषेकद्वार को घेरी रहती है। इसकी भी रचना स्पञ्जवत् होती है। यह दश या बारह मुखों द्वारा मूत्रप्रषेक के अन्दर खुलती है। वृद्धावस्था में कभी कभी इसकी वृद्धि हो जाती है जिससे मूत्रत्याग में बाधा उत्पन्न होती है।

कार्य—यौवन में कामोत्तेजना के समय चिकने तरल का स्राव करना।

स्त्रियों के प्रजनन अंग (Female Reproductive Organs)

स्त्रियों में वाह्य तथा आभ्यन्तर नामक दो प्रजनन अग होते हैं।

वाह्यप्रजनन अग—

(१) (Vagina)—भग या योनि वाह्य अवयवों के साथ अपत्यपथ को भग या योनि कहते हैं।

(२) बृहद्भगोष्ठ (Labia Majora) (५) भगालिन्द (Vestibule)
(३) लघुभगोष्ठ (Labia Minora) (६) भगद्वार (Vaginal Orifice)
(४) भगशिश्निका (Clitoris) (७) भगाञ्जलिका (Fourchette)

अन्तः प्रजनन अंग*—

(१) योनिपथ (Vaginal Canal)
(२) गर्भाशय (Uterus)
(३) बीज कोष (Ovaries)

ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन

शब्द, स्पर्श रूप, रस और गंध को ग्रहण करने वाली ५ ज्ञानेन्द्रियाँ होती है।

(१) श्रवणेन्द्रिय (Organ of Hearing)
(२) स्पर्शनेद्रिय (Skin, Organ of Touch)
(३) दर्शनेन्द्रिय (Organ of Vision)
(४) रसनेन्द्रिय (Organ of Taste)
(५) घ्राणेन्द्रिय (Organ of Smell)

श्रवणेन्द्रिय (Organ of Hearing)

शिर के दोनों पार्श्व में शंखास्थि से लगे हुए दो श्रवण यंत्र होते हैं जिन्हें कर्ण (Ear) कहते हैं। कर्ण से सुनने का काम होता है।

कर्ण के भाग—(१) वाह्यकर्ण External Ear)
(२) मध्यकर्ण (Middle Ear)
(३) अन्तः कर्ण (Internal Ear)

वाह्यकर्ण कर्णपाली या शष्कुली (Pinna) से प्रारम्भ होकर श्रुतिपटह (Tympanic Membrane) तक फैला हुआ है। श्रुतिपटह (Tympanic Membrane) के पीछे से प्रारम्भ होकर तुम्बिका (Labyrinth) तक मध्य कर्ण तथा उसके पश्चात् अन्तः कर्ण होता है।

मध्य कर्ण (Middle ear) तीन अस्थियों की एक विशिष्ट रचना होती है जो श्रुतिपटह से सम्बन्धित होती है। जब वायु की तरंगें श्रुतिपटह पर आती हैं तब ये अस्थिया उस तरंग को अन्तःकर्ण मे पहुँचाती हैं।

* **नोटः**—स्त्रियों के प्रजनन अंगों का वर्णन हमारे 'प्रसूति-तन्त्र' में देखिये।

अस्थियों की नामावली—

(१) मुद्गर (Malleus)
(२) अंकुश (Incus)
(३) रकाब (Stapes)

मध्यकर्ण में कण्ठ से श्रवणनलिका (Eustachian Tube) आकर खुलती है। रकाब (Stapes) का अन्तिम भाग अन्तःकर्ण से मिला होता है।

अन्तःकर्ण में अस्थिमय एक विचित्र रचना होती है, जिसके भिन्न भिन्न भाग होते हैं। एक शंखाकार भाग होता है जिसे श्रुतिशम्बूक (Cochlea) कहते हैं। दूसरा तुम्बिकाकार भाग होता है जिसे तुम्बिका (Vestibule) कहते हैं। तीसरा अर्धचन्द्राकार तीन रचनायें होती हैं जिन्हें शुण्डिका (Semi-circular canals) कहते हैं। इस अस्थिमय रचना के अन्दर तद्वत् कलामय रचना पड़ी होती है जिसमें अर्ध तरल पदार्थ भरा होता है। यही श्रुतिनाड़ी (Auditory nerve) आकर फैली होती है जो शब्दतरंगों को मस्तिष्क में ले जाती है। मध्य तथा अन्तःकर्ण शङ्खास्थि के भीतर एक कोटर में स्थित होते हैं।

स्पर्शेन्द्रिय (Skin)

त्वक् (चर्म) का वर्णन पूर्व में किया जा चुका है।

दर्शनेन्द्रिय (Organ of Vision)

अग्रिम कपालास्थि के अक्षिकोटर (Orbital Fossa) में कपोताण्डवत दो नेत्र गोलक पड़े हुये हैं, इन गोलकों की रक्षा के लिये श्लैष्मिककला (Conjunctiva) तथा चर्म के दो (Lids) आवरण पड़े हैं। नेत्रपुटक (Lids) के अग्रिम भाग पर लोम जमे होते हैं जिन्हें अक्षिलोम (Eyelash) कहते हैं।

बाहर से भीतर की ओर नेत्र गोलक के विभिन्न भागों का नामावली—

(१) बहिर्वृत्ति (External-tunic of the eye-ball)
(अ) स्वच्छ मण्डल (Cornea) (ब) शुक्ल वृत्ति (Sclera)
(२) मध्यवृत्ति (Vascular-tunic)
(अ) तारामण्डल (Iris) (स) सन्धानमण्डल (Ciliary Body)
(ब) कनीनक (Pupil) (द) कर्बुरवृत्ति (Choroid)
(य) ताल (Lens)

(३) अन्तर्वृत्ति (Retina)

(अ) सान्द्रजलधानी (Vitreous Humour)

(ब) पीतबिम्ब (Yellow-spots)

नेत्र गोलक की वहिर्वृत्ति सौत्रिक तंतुओं की मध्यवृत्ति रक्त नलिकाओं की और अन्तर्वृत्ति नाड़ी तन्तुओं की बनी होती है। नेत्र गोलक को उचित स्थिति में रखने के लिये कई मांसपेशियां लगी होती हैं।*

रसनेन्द्रिय (Organ of Taste)

मुख-गह्वर के वर्णन में रसनेन्द्रिय का वर्णन किया जा चुका है।

घ्राणेन्द्रिय (Organ of Smell)

घ्राणेन्द्रिय ऊर्ध्व ओष्ठ से लगी हुई ऊपर की ओर होती है। इसके वहिर्नासा (Outer nose) और आभ्यन्तर्नासा (Inner nose) नामक दो भाग होते हैं।

वहिर्नासा में नासामूल (Root) नासापृष्ठ (Dorsum), नासापक्ष (Sides), नासाग्र (Tip), नासापुटक (Circumference of nose), नासाविवर (Nares), नासानालिक (Alae Nasi) तथा नासागुहा (Nasal canal) नामक रचनायें होती हैं।

अन्तर्नासा में नासाच्छद (Roof of the nose), नासाभूमि (Floor of nose), मध्यप्राचीर (Medial wall), वहिर्प्राचीर (Lateral wall) नासाग्रद्वार (Anterior nares) और नासापश्चिम द्वार (Posterior nares) नामक रचनायें होती हैं।

नासा, स्थूक्ति तथा मांसल भागों से बनी है। इसके अन्तःभाग पर लोम उगे होते हैं जो वायु के धूलि तथा जीवाणुओं को श्वास-प्रश्वास द्वारा अन्दर जाने से रोकते हैं। इसी भाग पर घ्राणनाड़ी की शाखा-प्रशाखायें फैली हुई हैं जिनसे गन्ध का ज्ञान होता है। अन्तःभाग में छोटी छोटी ग्रन्थियां होती हैं जो स्राव करके नासा को स्निग्ध बनाये रखती हैं।

जब हम श्वास-प्रश्वास में नासिका से वायु अन्दर को खींचते हैं तब वह

---

* नोटः—दर्शनेन्द्रिय के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी के लिये हमारी लिखित 'नेत्र रोग विज्ञान' नामक पुस्तक का अध्ययन करें।

वायु नासिका में फैली हुई रक्तवहा केशिकाओं की उष्मा से शारीरिक ताप पर आ जाती है ।

शरीर की कुछ विशिष्ट अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ—

(१) अवटुका-ग्रन्थि	(Thyroid gland)
(२) बालग्रन्थि	(Thymus)
(३) उपवटुका	(Parathyroid)
(४) अधिवृक्क	(Supra-Renal)
(५) पीयूष-ग्रन्थि	(Pituitary gland)
(६) डिम्ब ग्रन्थि	(Ovary)

(१) अवटुकाग्रन्थि (Thyroid gland)

यह ग्रन्थि ग्रीवा के सम्मुख भाग में श्वास-नलिका के दोनों ओर होती है जो परस्पर सेतु नामक रचना से जुड़ती है। यह सौत्रिक-सूत्रों के आवरण से आवृत्त होती है । ये सूत्र ग्रन्थि में प्रविष्ट होकर ग्रन्थि को भिन्न २ कोष्टों में विभाजित कर देते हैं, जिनमें एक श्वेत पारदर्शी गाढ़ा पदार्थ भरा होता है । इन्हीं कोषों से इस ग्रन्थि का प्रभाकारी उद्रेचन उत्पन्न होकर रक्त में मिलता रहता है। बढ़ जाने पर यह ग्रन्थि बाहर से दिखलाई देती है ।

अवटुका ग्रन्थि के उद्रेचन का प्रभाव शरीर पर बहुत ही अधिक महत्त्व रखता है । साम्यावस्था के अतिरिक्त इस ग्रंथि की कार्यहीनता और कार्याधिक्य दोनों में शरीर पर बहुत ही भयानक प्रभाव पड़ता है ।

कार्यहीनता का प्रभाव

(१) शारीरिक वृद्धि बन्द हो जाती है या अवस्थानुसार अल्प होती है ।

(२) मस्तिष्क की शक्तियों का विकास अल्प होता है ।

(३) जिह्वा बड़ी होती है जो मुँह से बाहर निकली रहती है ।

(४) सर्वदा लाला स्राव होता रहता है ।

(५) टांगें छोटी होती हैं ।

(६) शरीर पर बाल अल्प होते हैं तथा चर्म शुष्क रहता है ।

(७) चेहरा शरीर की अपेक्षा बड़ा और फूला होता है ।

(८) नाक चिपटी और नथुने चौड़े होते हैं ।

(९) दन्तोद्गम देर से होता है ।

(१०) बच्चों के युवा होने पर जननेन्द्रियों का विकास नही होता।

कार्याधिक्य का प्रभाव—

(१) ग्रन्थि के आकार मे विकास हो जाता है जिससे दूर से दिखलाई देती है।

(२) नेत्र गोलक बाहर निकल आते हैं जिससे चेहरा भयानक मालूम होता है।

(३) हृदय की गति में वृद्धि हो जाती है।

(४) नाड़ी प्रति मिनट १०० से १६० बार चलने लगती है।

कार्य—

(१) खटिक और वसा के सात्मीकरण में सहायता करना।

(२) शरीर में उत्पन्न होने वाले विषों को नष्ट करने में सहायता करना।

(३) यकृत की सहायता करना।

(४) लैंगिक ग्रन्थियों (अण्ड, डिम्ब आदि) पर उत्तेजक प्रभाव करके उनको कार्यक्षम्य बनने में सहायता करना।

बालग्रन्थि (Thymus)

यह ग्रन्थि भी ग्रीवा में होती जिसका सम्बन्ध जननेन्द्रियों से होता है। युवावस्था आते आते यह ग्रन्थि नष्ट हो जाती है। कार्य पूर्णरूप से ज्ञात नहो है।

उपवटुकाग्रंथि (Parathyroid)

यह ग्रन्थि ग्रीवा में अवटुका के नीचे स्थित होती है। यह ग्रन्थि अवटुका ग्रन्थि से उत्पन्न हुए विषों का नाश करती है।

अधिवृक्क (Supra-Renal)

यह ग्रन्थि वृक्क के ऊपर स्थित होती है। यह ग्रन्थि एड्रेनलीन (Adrenalin) नामक पदार्थ बनाती है जो शरीर के लिए अति ही उपयोगी है। जब इस ग्रन्थि में विकार हो जाता है तब शरीर पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है।

विकार का प्रभाव—

(१) शरीर दुर्बल हो जाता है।

(२) रक्त-भार कम हो जाता है।

(३) प्राणी उत्साह हीन हो जात है।

(४) मस्तिष्क की शक्ति कम हो जाती है।

(५) वमन होने लगता है।

(६) चर्म ताम्र वर्ण का हो जाता है।

कार्य— (१) एड्रेनलीन (Adrenalin) का बनाना।

पीयूषग्रंथि (Pituitary Gland)

यह ग्रंथि अण्डावत् होती है जो जतूकास्थि के खात में पड़ी रहती है। यह ⅓ इंच लम्बी, ½ इञ्च चौड़ी और ¼ इञ्च मोटी होती है। इसके, अग्रिम (Anterior) और पश्चिम (Posterior) नामक दो भाग होते हैं। यह शरीर के लिये बहुत ही उपयोगी ग्रंथि है। यदि इस ग्रंथि को काट कर निकाल दिया जाय तो शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। यह एक स्राव उत्पन्न करती है जिसे पिच्युट्रीन (Pituitrin) कहते हैं। इस ग्रंथि के दोनों भागों का शरीर पर भिन्न भिन्न प्रभाव पड़ता है। अग्रिम भाग के कुछ भाग को निकालने से शरीर में स्थूलता आजाती है, जननशक्ति क्षीण हो जाती है और मैथुन शक्ति का ह्रास हो जाता है। जब इसके उद्रेचन में वृद्धि हो जाती है तब शरीर की सम्पूर्ण अस्थियां लम्बी चौड़ी हो जाती हैं। मुखमण्डल की लम्बाई चौड़ाई बढ जाती है। पश्चिम भाग पिच्युट्रीन (Pituitrin) का स्राव करता है जिसको शरीर में प्रविष्ट करने से निम्न प्रभाव होता है।

पिच्युट्रीन (Pituitrin) का प्रभाव—

(१) शारीरिक रक्त-भाराधिक्य, क्योंकि रक्तनलिकायें संकुचित हो जाती हैं।

(२) गर्भाशयिक मांसपेशी में संकोचनाधिक्य।

(३) वृक्क के रक्त-नलिकाओं का प्रसाराधिक्य।

(४) मूत्रराशि वृद्धि।

(५) दुग्धोत्पत्ति की अधिकता।

(६) हृदय को शक्ति देना।

डिम्बग्रंथि (Ovary)

ये संख्या में दो होती हैं जो दाहिने और बायें वस्ति गुहा में स्थित होती हैं। जिस प्रकार से पुरुषों में पुरुषत्व उत्पन्न करने के लिये शुक्रग्रंथियाँ आवश्यक हैं उसी प्रकार स्त्रियों में स्त्रीत्व को उत्पन्न करने के लिये डिम्बग्रंथियाँ आवश्यक है। इनको निकाल देने से मासिकधर्म बन्द हो जाता है।

शरीर के मार्ग—

(१) नाशिका (Nose) में—२

(२) कर्ण (Ear) में—२

(३) मुख (Mouth) में—१

(४) लिंग (Penis) में—१

(५) गुदा (Rectum) में—१

स्त्रियों में तीन मार्ग अधिक होते हैं

(६) योनि (Vagina) में—१

(७) स्तन (Mammary gland)-२

त्रिदोष-विज्ञान—

आयुर्वेद शास्त्र त्रिदोष-विज्ञान में ही निहित है। अतः आयुर्वेद में पूर्ण पारंगत होने के लिये यह आवश्यक होता है कि त्रिदोष को भलीभाति जाने।

त्रिदोष की नामावली—

(१) वात (२) पित्त (३) कफ

त्रिदोष नाम पड़ने का कारण—शरीर के धातु और मल इन्हीं तीनों वात, पित्त और कफ से दूषित होते हैं, इसीलिये इन्हें त्रिदोष कहते हैं। इनका पृथक् पृथक् वर्णन आगे किया जाता है।

वात—

वात का स्वरूप—वात, रुक्ष, सूक्ष्म, चंचल, हलका, शीतल और रजोगुण युक्त होता है। शरीर की सारी क्रियायें वात से ही होती हैं। वायु की अनुपस्थिति में प्राणी क्षणभर भी जीवित नही रह सकता। प्राणिमात्र में वायु, रस, रक्त, वीर्यादि को यत्र-तत्र ले जाता है और मल-मूत्र का त्याग कराता है। यह योगवाही होता है जिस प्रकार से वाहरी वायु बादलों को यत्र-तत्र ले जाता है उसी प्रकार शरीर के अन्दर वात भी दोषों और धातुओं को स्वेच्छानुसार यत्र-तत्र ले जाता है क्योंकि वात के अतिरिक्त सभी गतिहीन होते हैं। कहा है—

पित्तं पंगु कफः पंगुः, पंगवो मलधातवः।
वायुना यत्र नीयन्ते, तत्र गच्छन्ति मेघवत्॥

वात के प्रकार—

(१) उदानवायु (२) प्राणवायु (३) समानवायु
(४) व्यानवायु (५) अपानवायु

भिन्न-भिन्न वायु के स्थान तथा कार्य—

उदानवायु—यह कण्ठ में रहता है और शब्द की उत्पत्ति करता है।

प्राणवायु—यह हृदय में रहकर प्राण को धारण करता है।

समानवायु—यह आमाशय और पक्वाशय में रहकर अन्न का पाचन करता है।

व्यानवायु—यह सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त है और शरीर की सम्पूर्ण क्रियाओं को करता है।

अपानवायु—यह वायु मलाशय में रहकर मल, मूत्र, शुक्र, गर्भ और आर्तव का आवश्यकतानुसार त्याग करता है।

वातदूषित के कारण—रुक्ष, हलका और शीतल पदार्थों का अति सेवन करना, अत्यधिक शारीरिक श्रम करना, अत्यधिक वमन तथा विरेचन होना, मल, मूत्र, छींक, तथा जंभाई आदि वेगों का रोकना, उपवास करना, आघात लगना, चिन्ता करना, रात्रि-जागरण, अत्यधिक स्त्री-सम्भोग, ऊँट, घोड़ा, हाथी आदि की अधिक सवारी करना आदि।

दूषित वात के लक्षण—शरीर में वेदना, प्यास का अधिक लगना, जभाई आना, कम्प होना, शरीर की रुक्षता, शूल, मुख का कसैला स्वाद होना, नींद का न आना, मल का सूख जाना, मल का कम निकलना, उदासी, शरीर में शिथिलता, स्मरणशक्ति का ह्रास, तन्द्रा आदि।

शान्ति के उपाय—

तेल का सारे शरीर में मर्दन करना, स्वेदन करना, गेहूँ, मूँग, घी, लहसुन, मुनक्का, आवला, हरड़, मिश्री, चीनी, गाय का दूध, सेंधानमक, पक्का ताड़, आम और मीठा अनार का सेवन करने से वायु शांत होता है।

पित्त—

पित्त का स्वरूप—पित्त, द्रव, तीक्ष्ण, पीला तथा कटु और अम्लरस युक्त होता है।

पित्त के भेद—

(१) आलोचक
(२) साधक
(३) रंजक
(४) भ्राजक
(५) पाचक

भिन्न भिन्न पित्त के स्थान तथा कार्य—

आलोचकपित्त—यह नेत्रों में रहता है और देखने का काम करता है।

साधकपित्त—यह हृदय में रहता है। यह स्मरणशक्ति में वृद्धि करता है।

रंजकपित्त—यह यकृत और प्लीहा में रहता है तथा रसको रक्त में परिणित करता है।

भ्राजकपित्त—यह सम्पूर्ण शरीर और चर्म में रहता है तथा कान्ति उत्पन्न करता है।

पाचकपित्त—यह आमाशय और पक्वाशय में रहता है तथा पाचन का कार्य करता है।

पित्त दूषित होने का कारण—अति उष्ण पदार्थों का सेवन करना, खट्टे, नमकीन तथा दाह कारक पदार्थों का सेवन करना, तिल, तेल, कुलथी, सरसों, अलसी का सेवन करना, दही, मट्ठा, कांजी, शराब और खट्टे फलों का भक्षण करना, अत्यधिक धूप सेवन, क्रोध करना, अत्यधिक परिश्रम करना आदि से पित्त कुपित होता है।

दूषित पित्त के लक्षण—शरीर मे दाह होना, नाक, आँख तथा मुख से धूआँ सा निकलता ज्ञात होना, खट्टी डकार आना, शरीर पर लाल लाल चकत्तों की उपस्थिति, स्वेदाधिक्य, नेत्रों के सामने अँधेरा छाना, चर्म तथा नेत्र का वर्ण पीला होना, दस्त पतला होना, मल, मूत्र का वर्ण भी पीला हो जाता है।

दूषित पित्त की शान्ति का उपाय—शीतल क्रिया करनी चाहिये, विरेचन देना चाहिये, केले तथा कमल के पत्तों पर सुलाना चाहिये, चन्दन का लेप करना चाहिये, ठण्डी ठण्डी हवा देनी चाहिये, कुटकी, निशोथ, पित्तपापड़ा, त्रिफला, शतावरी देना चाहिये, मुनक्का, केला, आँवला, अनार, छुहारा, परवल, करेला, कुम्हड़ा, पुराना चावल का भात, गेहूँ, मिश्री, चीनी, घी, दूध, मक्खन, मूंग, जौ, चना, मसूर आदि खाने को देना चाहिए।

कफ—

कफ का स्वरूप—कफ, श्वेत वर्ण, शीतल, स्निग्ध, पिच्छिल, गुरु और मधुर रस युक्त होता है।

कफ के प्रकार—

(१) स्नेहन
(२) रसन
(३) अवलम्बन
(४) क्लेदन
(५) श्लेष्मण

विभिन्न कफ के स्थान और कर्म—

स्नेहन कफः—यह शिर में रहता है और सम्पूर्ण इन्द्रियों को स्निग्ध रखता है।

रसन कफः—यह कण्ठ में रहता है और रस का ज्ञान कराता है।

अवलम्बन कफः—यह हृदय में रहता है और धारण का काम करता है।

क्लेदन कफ—यह आमाशय में रहकर अन्न को गीला करता है।

श्लेष्मण—यह सन्धियों में रहता है और उनको परस्पर संघर्षण से बचाता है।

कफ के दूषित होने का कारण—शीतल, स्निग्ध और गुरु पदार्थों का सेवन करना, दिन में अत्यधिक सोना, निट्ठल्ले बैठा रहना, दूध, दही, तिल, चावल, उड़द, गेहूं, सिंघाड़ा, अमरूद, ककड़ी, कशेरू, मास, चरबी, ईख, गाजर, कन्द आदि के अति सेवन से कफ दूषित होता है।

दूषित कफ के लक्षण स्निग्धता, गुरुता, शोथ, कण्डू, मुख का स्वाद मीठा होना, लालास्रावाधिक्य, मन्दाग्नि, मल, मूत्र, और नेत्र का श्वेत होना, मल गाढ़ा तथा अधिक होना है, शीत लगता है, निद्राधिक्य।

दूषित कफ की शान्ति का उपाय—तीक्ष्ण वमन और विरेचन कराना, मैथुन, परिश्रम, व्यायाम मद्यसेवन, धूम्रपान, जागरण, रूक्ष, उष्ण, कटु, तिक्त और कषाय रसयुक्त द्रव्यों का भोजन कफ को शान्त करता है। इनके अतिरिक्त अञ्जन, नस्य मर्दन, सवारी पर चलना, गरम जल, गरम दूध पीना, त्रिफला, चना, मूंग, लहसुन, प्याज, बैंगन, नीम, निशोथ और कुटकी का सेवन कराना हितकर है।

पारिभाषिक शब्दावली—

त्रिदोषः—(१) शारीरिक त्रिदोष (२) मानसिक दोष

(१) शारीरिक त्रिदोष	(२) मानसिक दोष
(क) वात	(क) रज
(ख) पित्त	(ख) तम
(ग) कफ	

दूष्य या धातु—रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।

मल—मूत्र, मल, स्वेद, एवं नासा स्राव, ष्ठीवन, कर्ण-किट्ट आदि की मल संज्ञा है। इन्हे किट्ट भी कहते हैं।

पञ्चवायु—प्राण, उदान, व्यान, समान और अपान।

पञ्चपित्त—साधक, आलोचक, रञ्जक, पाचक और भ्राजक।

पञ्चकफ—स्नेहन, रसन, अवलम्बक क्लेदन और श्लेष्मण।

अग्नि—तीक्ष्ण, मन्द, सम और विषम।

दोषों की त्रिगति—ऊर्ध्व, अधः, तीर्यक्।

त्रिवर्ग—धर्म, अर्थ, काम ।

त्रिफला—हर्रा, बहेड़ा, आवला ।

त्रिमद—चीतामूल, मोथा और वायविडङ्ग ।

त्रिकटु—सोंठ, पीपल, मरीच ।

त्रिजात या त्रिसुगन्ध—तेजपत्ता, दालचीनी और बड़ी इलायची ।

चतुर्जात—बड़ी इलायची, तेजपत्ता, दालचीनी और नागकेशर ।

चतुर्भद्रक—गुरुच, सोंठ, अतीस और नागरमोथा ।

चतुराम्ल—इमली, अनार, बैर और थैकल (कपित्थ) ।

पञ्चाम्ल—इमली, अनार, बेर, थैंकल और जम्बीरी नीबू ।

पञ्चकोल—चाभ, चित्रक, सोंठ, पीपल और पीपलामूल ।

पञ्चगव्य—दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोमय ।

पञ्चपित्त—मयूर, रोहित मछली, सुअर (वराह), छाग और महिष ।

स्वल्प पञ्चमूल—गोखरु, छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया, सरिवन और पीठवन ।

वृहत्पञ्चमूल—श्योनाक, गम्भारी, पाटला, गणिकारिका और बेल ।

तृणपञ्चमूल—कुश, काश, शर, दर्भ और ईक्षु ।

क्षीरीवृक्ष—वट, पीपल, गुल्लर, पाकड़ और वेतस ।

लवण—सैन्धव ।

द्विलवण—सैन्धव और सौर्वचल ।

त्रिलवण—काला, सैंधव और सौर्वचल ।

चतुर्लवण—काला, सैंधव, सौर्वचल और सामुद्र ।

पञ्चलवण—काला, सैंधव, सौर्वचल, सामुद्र और औद्भिद ।

अष्टवर्ग—जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, मेदा, महामेदा, ऋद्धि और वृद्धि ।

मधुरवर्ग—जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीरकाकोली. मुलेठी, जीवन्ती, मुगानी और माषाणी ।

दशमूल—गोखरु, छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया, सरिवन, पिठवन, श्योनाक, गम्भारी, बेल, पाटला और गणिकारिका ।

कंटक पञ्चमूल—शतमूली, करौंदा, नीलझांटी, गोक्षुर और कालिया कण्डा ।

पञ्चपल्लवः—बेल, नीबू, आम, जामुन, और कैथ ।
चतुर्बीजः—मेथी, अजवाइन, जीरा, कालाजीरा ।
षड्डूषणः—सोंठ, पीपल, मरीच, पीपलामूल, चव्य और चित्रक ।
मिश्रपञ्चकः—गुगुल, सोहागा, मधु, घी और चिरमिटी ।
सप्तधातुः—सोना, चांदी, सीसा, यशद, ताम्र, लौह और वंग ।
सप्तउपधातुः—अभ्रक, नीलाथोथा, मैनसिल, हरताल, खपरिया, स्वर्णमाक्षिक और सुरमा ।

अष्ट मूत्रः—गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट, घोड़ी और गधा का ।
अष्ट दुग्धः—गाय, भैंस, भेड़ी, बकरी, हथिनी, ऊँटनी, घोड़ी और गधी का ।
तेरह वेगः—मल, मूत्र, शुक्र, वमन, छींक, डकार, जभाँई, भूख, प्यास, निद्रा, आँसू, श्वास और अधोवायु ।
चिकित्सा चतुष्पादः—वैद्य, औषधि, सेवक और रोगी ।
षट्रसः—मीठा, खट्टा, कड़वा, कसैला, नमकीन और तिक्त ।
एकादश इन्द्रियाँः—आंख, नाक, कान, जिह्वा चर्म, मुख, हाथ, पैर, उपस्थ, गुदा तथा मन ।

पंचज्ञानेन्द्रियाँः—आँख, नाक, कान, जिह्वा और चर्म ।
पंचकर्मेन्द्रियाँः—मुख, हाथ, पैर, उपस्थ और गुदा ।
त्रिविध अहंकारः—राजस, तामस और सात्विक ।
षोडशविकारः—दश इन्द्रियाँ, पञ्चमहाभूत और उभयात्मक मन ।
पञ्चतन्मात्रायेँः—रूप, गन्ध, शब्द, रस और स्पर्श ।
पञ्चमहाभूतः—पृथ्वी, जल, पावक, आकाश और वायु ।
चौबीस तत्वः—पञ्चतन्मात्रायेँ, पञ्चमहाभूत, ग्यारह इन्द्रियाँ, अव्यक्त, महान और अहंकार ।

गुडूच्यादिगणः—गुरुच, चन्दन, धनियाँ, पद्मकाष्ठ और नीम की छाल ।
आमलक्यादिगणः—आंवला, हरीतकी, पीपल और पीपलामूल ।
पिप्पल्यादिगणः—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, पीपल, मरीच, इलायची, अजवाइन, इन्द्रयव, अकवन, जीरा, सरसों, हींग, बच, अतीस, विडंग, कुटकी, बभनेठी, बड़ीनीम ।

वचादिगणः—वच, अतीस, मोथा, हरीतकी, देवदारु और नागकेशर।

पटोलादिगणः—पटोलपत्र, चन्दन, रक्तचन्दन, गुरुच, अकवन, कुटकी और मुर्वा।

मुस्तकादिगणः—मोथा, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, आँवला, बहेड़ा, कूठ, कुटकी, अतीस, अकवन, बच, इलायची, भेलावा, सत्यानासी, बड़ा करौंदा और चीतामूल।

एलादिगणः—इलायची, तगरपादुका, कूठ, जटामांसी, गन्धतृण, वाला, गुग्गुल, केशर, नागकेशर, खस, देवदारु, राल, घण्टापाटला, अगुरु, प्रियंगु, तेजपत्ता, दालचीनी, रेणुक, नखी और सेहुंड।

मेकबर्नीज़ प्वाइन्ट (Mc Burney's point):—यह स्थान नाभि से दक्षिण अनामिकास्थि के ऊर्ध्व अग्रिम तोरणिका (Right anterior superior iliac spine) तक खींची जानी वाली रेखा पर तोरणिका से २ इञ्च दूरी पर स्थित है।

फाउलर्स पोजिशन (Fowler's Position):—रोगी के शय्या के सिरहाने (Head) को १८ से २० इञ्च ऊँचे रखने की स्थिति को कहते हैं।

ट्रेंडेलेन्बर्ग की स्थिति (Trendelenburg's Position):—रोगी का जंघा और पैर टेबुल के किनारे पर लटकता रहता है, और नितम्ब थोड़ा उठा होता है, तथा रोगी पीठ पर लेटता है।

वालकर की स्थिति (Walcher's Position):—इस स्थिति में रोगी का नितम्ब टेबुल के किनारे पर होता है तथा जंघे (Legs) लटकते रहते हैं, और रोगी पीठ पर लेटा रहता है।

नी एल्बो स्थिति (Knee Elbow Position):—रोगी घुटने और केहुनी (Elbow) पर झुका रहता है, और शिर हाथ पर रहता है।

हण्टर की रेखा (Hunter's line):—उदर सीवनी (Linea alba) को कहते हैं।

ओषधि सम्बन्धी ज्ञातव्य बातें

(१) चिकित्सक को उचित है कि चिकित्सा में व्यवहृत होने वाली ओषधियों को उत्तम स्थान से श्रेष्ठ समयों में मंगावें, जिससे वे सर्वगुण सम्पन्न हों।

(२) कम्पनियों को ओषधियोंका व्यवहार निर्भयतापूर्वक नहीं करना चाहिये।

(३) कम्पनियों की बनाई हुई ओषधियों पर विश्वास नहीं करना चाहिये; क्योंकि धनोपार्जन की लालसा से वे उत्तम ओषधियों का निर्माण नहीं कर सकती।

(४) सड़ी, गली वा कीड़ों से खाई हुई, अधिक समय से निर्मित ओषधियों का सर्वदा त्याग करना चाहिये।

(५) ओषधि बनाने वा रखने का स्थान स्वच्छ तथा प्रकाश पूर्ण होना चाहिये। ओषधि निर्माण के स्थान में सम्पूर्ण आवश्यक सामग्रियां होनी चाहिये।

(६) निर्माणशाला में चिकित्सक तथा ओषधि निर्माता (Compounder) के अतिरिक्त किसी को नहीं जाने देना चाहिये।

(७) ओषधि के सम्पूर्ण द्रव्यों पर स्वच्छ तथा सुन्दर अक्षरों में उसका नाम और द्रव्य की मात्रा लिखी होनी चाहिये।

(८) विष-पूर्ण ओषधि सर्वदा पृथक् और बंद आलमारी में रखनी चाहिये तथा उस पर विष (Poison) नामक शब्द अंकित रहना चाहिये, ताकि बिना आवश्यकता के उसका प्रयोग न हो सके।

(९) सीमित काल तक व्यवहार होने वाली ओषधियों का व्यवहार उसकी अवधि के समाप्ति के पश्चात् नहीं करना चाहिये।

(१०) ओषधियों के निर्माण तथा केविल आदि में सदा सावधानी तथा शीघ्रता से कार्य करना चाहिये।

(११) ओषधि का घोल पूर्ण रूप से स्वच्छ जल में बनाकर स्वच्छ शीशी में, जिसपर उसकी मात्रा आदि अंकित हो, रखना चाहिये।

(१२) मर्दन तथा नेत्र रोग की ओषधियों को नीली शीशियों में रखना चाहिये।

(१३) रोगी को ओषधि सेवन तथा पथ्य के नियमों को स्पष्ट शब्दों में भली प्रकार, पूर्णरूप से समझा देना चाहिये।

(१४) ओषधि निर्माणमें आने वाली सामग्रियोंको सर्वदा स्वच्छ रखना चाहिये।

(१५) ओषधि कार्य के लिये मोटी मूल वाले वृक्षों की छाल तथा छोटी और पतली जड़ वाले वृक्षों का सर्वांग लेना चाहिये।

(१६) शास्त्रीय योगों में ओषधि अंग का स्पष्ट वर्णन न होने पर ओषधि की जड़ लेनी चाहिये, ओषधि की मात्रा का निर्देश न होने पर समान मात्रा में लेनी चाहिये, पात्र के निर्देशाभाव में मिट्टी का पात्र, ओषधि सेवन के काल के निर्देशाभाव में प्रातःकाल तथा द्रव्याभाव में जल समझना चाहिये।

(१७) एक ही योग में एक ही ओषधि की पुनरोक्ति होने पर उस ओषधि को दुगुनी मात्रा में लेनी चाहिये।

(१८) केवल लवण के स्थान पर सेंधा नमक तथा केवल चन्दन के स्थान पर रक्तचन्दन लेना चाहिये।

(१९) ओषधि के कार्यों में निम्न पदार्थों के अतिरिक्त सभी पदार्थों को नया लेना चाहिये।—गुड़, घी, शहद, चावल, पान, पीपल और काँजी।

(२०) चीते की जड़, सूरन का कंद, त्रिफले का फल, खैर का सार, क्षीरी वृक्ष की छाल, नीम तथा अडूसे का पत्ता, धाय का फूल तथा कंटकारी सर्वांग ओषधि में व्यवहार किया जाता है।

(२१) मिक्श्चर (Mixture) निर्माण में सर्व प्रथम टिंचर तथा स्प्रिट आदि डालनी चाहिये उसके पश्चात् शर्बत (Syrup) तथा अन्त में विषैली ओषधियाँ जैसे संखिया (Arsenic), कुचिला-सत्व (Strychnine) तथा एकोनाइट (Aconite) आदि।

(२२) योग में वर्णित ओषधि की अनुपस्थिति में उसका प्रतिनिधि लेना चाहिये। विभिन्न ओषधियों के प्रतिनिधियों की तालिका नीचे दी जाती है—

मूलद्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य	मूलद्रव्य	प्रतिनिधिद्रव्य
चित्रक	दन्ती वा चिरचिड़ी का क्षार	मौलसरी	नीला वा रक्त कमल
		लक्ष्मणा	मयूर-शिखा
धमासा	जवासा	तगर	कूट
पोष्करमूल	कूठ	नीलकमल	कुमुदनी
चव्य	पीपलामूल	चमेली के फूल	लौंग
बावची	चक्रमर्द का बीज	मदार दुग्ध	मदारपत्र का स्वरस
दारुहल्दी	हल्दी	रसोत	दारुहल्दी
कलिहारी	कूट	आमाहल्दी	बावची
भिलावा	चीता (चित्रक)	अरहर	मसूर

मूलद्रव्य	प्रतिनिधिद्रव्य	मूलद्रव्य	प्रतिनिधिद्रव्य
भारंगी	कण्टकारी की जड़	घी	ताजा दूध
कालानमक	सौवर्चल नमक	माठा	दही
ईख	नरसल	चिरायता	चन्दन
मुलहठी	धाय का फूल	चोपचीनी	उशवा
नखी	लौंग फूल	जमालगोटा	रेंडी
कस्तूरी	कंकोल	तज	दालचीनी
कंकोल	चमेली का फूल	तालमखाना	ताल मिश्री
कपूर	सुगंध मोथा	तिल	अलसी बीज
केशर	कुसुम का नया फूल	पित्तपापड़ा	सनाय
सफेद चन्दन	कपूर या रक्तचन्दन	पीपलामूल	मीठा बालछड़
अतीस	मोथा	पोस्ता	अफीम
हरड़	आमला	रेंडी तेल	जैतून तेल
मेदा, महामेदा	शतावरी	इन्द्रजौ	जायफल
जीवक	विदारीकंद	कचूर	अंजीर
काकोली	असगंध	कालादाना	इन्द्रायन की जड़
ऋद्धि	वाराहीकंद	गोखरू	खीरा, ककड़ी बीज
अखरोट	चिरौंजी	लोबान	मुस्तगी
अगर	दालचीनी, लौंग	शहद	पुराना गुड़
अंगूर	मुनक्का	मिश्री	सफेद खांड
अजवायन	कालाजीरा	सुवर्ण	स्वर्णमाक्षिक
अजमोदा	खुरासानी अजवायन	चाँदी	रौप्यमाक्षिक
अंजीर	मुनक्का	स्वर्णभस्म	कान्तलोह भस्म
अदरख	कालीमिर्च	चाँदीभस्म	कान्तलोह भस्म
अनन्नास	सेव	मुक्ता	सीप
ईसबगोल	बिहीदाना	कान्तलोह	तीक्ष्णलोह
असगंध	कूट	हीरा	मूँगा
नीलाथोथा	मुरदा	बकरी दुग्ध	गाय का दुग्ध
पन्ना	मूँगा	स्त्री दुग्ध	गधी का दुग्ध

व्याधि-परीक्षा (Case taking)

चिकित्सा-शास्त्र में औषधि देने से पूर्व परमावश्यक होता है कि व्याधि की निश्चिति (निदान) सम्यग् रीति से स्पष्टतया हो जाय। जब तक व्याधि-परीक्षा नहीं होती तब तक चिकित्सा में सफलता पाना असम्भावी होता है। अतः चिकित्सक तभी कुशल हो सकता है जब कि वह व्याधि-परीक्षा में निपुण हो। यहाँ पर संक्षिप्त रीति से व्याधि परीक्षा-विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

चिकित्सा संसार में व्याधि परीक्षा की नाना प्रकार की पद्धतियाँ प्रचलित हैं, किन्तु सभी पद्धतियों का लक्ष्य एक ही होता है। यहाँ कुछ आचार्यों का मत उद्धृत किया जाता है:—

'चरक'—

"त्रिविधं खलु रोगविशेषज्ञानं भवति।" तद्यथा आप्तोपदेशः प्रत्यक्षमनुमानञ्चेति॥

'चरक' भगवान तीन प्रकार से रोग की परीक्षा करने का आदेश करते हैं। पहला-आप्तोपदेश, दूसरा प्रत्यक्ष तथा तीसरा अनुमान से।

'वाग्भट'—

दर्शनस्पर्शनप्रश्नैः परीक्षेताथ रोगिणम्।
रोगं निदान प्राग्रूप लक्षणोपशयाप्तिभिः॥

'वाग्भट' का मत आधुनिक काल की प्रणाली से मिलता जुलता है। 'वाग्भट' का आदेश है कि व्याधियों की परीक्षा अष्टविधि से करनी चाहिये। पहला-दर्शन, दूसरा-स्पर्शन, तीसरा-प्रश्न, चौथा-रोग के कारण, पांचवाँ-पूर्वरूप, छठवाँ-रूप, सातवाँ-उपशय और आठवाँ-सम्प्राप्ति को जान कर। अन्यत्र अधोवर्णित अष्टविध रोग परीक्षा-विधि का वर्णन किया गया है:—

गदाक्रान्तस्य देहस्य स्थानान्यष्टौ परीक्षयेत्।
नाडी मूत्र मल जिह्वा शब्द स्पर्श दृगाकृतिम्॥

रोगी व्यक्ति के रोग परीक्षा के समय निम्न आठ स्थानों की परीक्षा करनी चाहिये:—

(१) नाड़ी (Pulse)	(५) शब्द (Voice)
(२) मूत्र (Urine)	(६) स्पर्श (Touch)
(३) मल (Stool)	(७) नेत्र (Eye)
(४) जिह्वा (Tongue)	(८) आकृति (Face)

नाड़ीपरीक्षा—

स्थिरचित्तः प्रसन्नात्मा मनसा च विशारदः ।
स्पृशेदंगुलिभिर्नाड़ी जानीयाद् दक्षिणकरे ॥

चिकित्सक को चाहिये कि रोगी की नाड़ी देखते समय प्रसन्न मन से चित्त को एकाग्र करके अपने तीन अंगुलियों से रोगी के दाहिने हाथ की नाड़ी की परीक्षा करे।

त्यक्तमूत्रपुरीषस्य सुखासीनस्य रोगिणः ।
अन्तर्जानुकरस्यापि सम्यक् नाड़ी परीक्षयेत् ॥

अब रोगी के स्थिति का वर्णन किया गया है कि जब रोगी मल, मूत्र का त्याग कर सुख से बैठा हो उस समय उसके दक्षिण हाथ को जानुओं के बीच में रख कर भलीभाँति नाड़ी की परीक्षा करनी चाहिये।

नाड़ी देखने से हमें रोगी के शारीरिक स्थिति का ज्ञान हो जाता है; विशेषतः हृदय का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त वात, पित्त, कफ, द्वन्द्व तथा त्रिदोष और व्याधियों के साध्यासाध्यता का ज्ञान होता है।

यहाँ पर अवस्थानुसार नाड़ी स्पन्दन की प्रति मिनट संख्या लिखी जाती है।

सामान्य नाड़ी स्पन्दन की तालिका—

अवस्था	संख्या प्रति मिनट
जन्म से प्रथम वर्ष के अन्त तक	११० से १४० प्र० मि०
दूसरे वर्ष से ८ वें वर्ष तक	९० से ११५ ,, ,,
आठवें ,, से १५ वें ,, ,,	८० से ९० ,, ,,
सोलहवें ,, से ६० वें ,, ,,	७० से ७५ ,, ,,
६० वर्ष से ऊपर	६० से ६५ ,, ,,

परिश्रमोपरान्त तथा भोजनोपरान्त नाड़ी की स्पन्दन संख्या में वृद्धि हो जाती है, तथा निद्रावस्था में स्पन्दन संख्या न्यून हो जाती है।

प्रति मिनट ताप, नाड़ी और श्वास-प्रश्वास के सम्बन्ध की तालिका—

प्रति मिनट	ताप (Temperature)	नाड़ी (Pulse)	श्वास-प्रश्वास (Respiration)
प्रति मिनट	९४°F	८०	१८
,,	१००°F	१००	२२
,,	१०५°F	१५०	३४

मूत्र परीक्षा (Urine test)

नाड़ी परीक्षा के पश्चात् मूत्र परीक्षा (Urine Test) की बारी आती है। मूत्र परीक्षा, विशेषतः प्रमेहादि व्याधियों में की जाती है। इन व्याधियों में मूत्र परीक्षा के अतिरिक्त अन्य और कोई साधन नहीं है जो इनकी उपस्थिति का भलीभांति स्पष्टतया ज्ञान करा सकें।

स्वस्थ व्यक्ति के मूत्र का रंग भेक या भूसा सदृश (Straw-Colour) होता है। एक स्वस्थ व्यक्ति २४ घण्टे में १½ सेर मूत्र राशि का त्याग करता है। साधारणतः मूत्र की प्रतिक्रिया आम्लिक होती है और उसमें तलछट नहीं बैठता किन्तु कुछ व्याधियों में रंग, राशि, तथा प्रतिक्रिया में परिवर्तन तथा तलछट (Sediment) की उपस्थिति हो जाती है।

मूत्र के वर्ण में परिवर्तन की दशायें—

वाताधिक्य में:—नीला, श्वेत तथा किञ्चित् पीत वर्ण होता है।

पित्ताधिक्य में:—अत्यधिक उष्ण तथा पीत वर्ण का होता है।

कफाधिक्य में:—श्वेत, शीतल तथा चिकना होता है।

त्रिदोषाधिक्य में:—कृष्ण, रक्त और धूमिल वर्ण का उष्ण होता है।

फास्फेट की उपस्थिति में:—मूत्र में श्वेत वर्ण की तलछट मिलती है।

यूरिया (Urea) के उपस्थिति में:—मूत्र में ईंटे के चूर्ण सदृश पदार्थ की उपस्थिति होती है।

वृक्कशोथ में:—मूत्र का वर्ण हरे (Greenish) रंग का होता है।

भयानक वृक्कशोथ या दुर्जल ज्वर (Black-water fever) में— मूत्र का रंग कृष्ण वर्ण होता है।

कुछ ओषधियाँ ऐसी हैं, जिनको खाने से मूत्र और मल के रंग में परिवर्तन हो जाता है जैसे मुसब्बर (Rhubarb)।

मूत्र राशि में वृद्धि की अवस्थायें—

(१) वर्षा तथा शीत ऋतु।
(२) तरल पदार्थों का अति सेवन।
(३) उदक मेह (Diabetes Insipidus)
(४) स्वेदावरोध (A sudden check of perspiration)

मूत्रराशि में ह्रास की अवस्थायें—

(१) ग्रीष्मऋतु
(२) ज्वर (Fever)
(३) स्वेदाधिक्य (Perspiration)
(४) अतिसार (Diarrhoea)
(५) वमनाधिक्य (Vomiting)
(६) विसूचिका (Cholera)
(७) जलोदर (Ascites)
(८) पाण्डु (Anaemia)
(९) शर्करा मेह (Diabetes Malletus)
(१०) विरेचन की अधिकता (Purgative)

मूत्र की तैल परीक्षा—रोगी को प्रातः काल उठाकर प्रथम और अन्तिम धार के अतिरिक्त बीच के धार के मूत्र को एक शीशे के स्वच्छ बर्तन में एकत्रित करना चाहिये। पुनः प्रकाश में रखकर मूत्र में तेल की बूंद डालकर देखना चाहिये।

वातव्याधि में तेल की बूंद पेशाब पर तैरा करती है और रूक्ष तथा कृष्ण वर्ण की दिखलाई देती है।

पित्तव्याधि में तेल की बूंद डालते ही पेशाब में बुलबुले उठने लगते हैं। कफज रोगों में तेल की बूंदें पेशाब में मिल जाती हैं और कीचड़ सदृश व्यक्त होती हैं।

मूत्र में तेल की बूंद डालने से यदि बूंद फैल जाय तब तो साध्य और यदि न फैले, बूंद ही रह जाय तब असाध्य समझना चाहिये।

मलपरीक्षा (Stool Examination)

साधारणतः मल, भूरे रंग (Brown) का बंधा हुआ व अर्ध ठोस होता है। किन्तु वाताधिक्य में मल गाँठदार, रूक्ष और ईषत् कृष्णवर्ण का होता है। पित्ताधिक्य में पीले या हरे रंग का पतला होता है। कफाधिक्य में श्वेत वर्ण का चिकना और अधिक राशि में त्यक्त होता है। इनके अतिरिक्त व्याधियों के अनुसार मल की दशा का वर्णन किया जा रहा है।

मल की तालिका—

व्याधि नामावली	मल की दशा।
अजीर्ण	बदबूदार
अतिसार (Dysentary), अर्श (Piles) भगन्दर (Fistula), मलाशयिक विषार्बुद (Rectal cancer)	रक्त मिश्रित मल (Bloody)
यकृत् की कार्य अक्षमता,	मृत्तिका सदृशवर्ण (clay coloured)
शिशुओं में दुग्धपानाधिक्य	मट्ठा सदृश(Curdy)
प्रवाहिका (Diarrhoea)	झागदार (Frothy)
स्फीत कृमि (Thread worms)	आमदार (Mucous), पतला
शोष (Ricket)	,, ,, ,,
तीव्र कोष्ठबद्धता (Bad canstipation)	,, ,, गांठयुक्त
आन्त्रिक ज्वर (Enteric fever)	मटर के जूस सदृश (Pea soup), पूय, तथा रक्त मय मल।
आंत्र विद्रधि (Intestinal abscess)	पूय युक्त मल।
आंत्रिक रक्तस्रावाधिक्य (Intestinal Haemorrhage)	अलकतरा सदृश मल (Tarry)।
पित्तावरोध (Obstruction of bile)	श्वेत रंग (White colour)
बिस्मथ (Bismuth), लौह (Iron) भक्षण,	मल कृष्ण वर्ण (Black coloured)
विसूचिका (Cholera)	माण्ड सदृश (Rice water)
संग्रहणी (Enteritis, sprue)	अपक्वान्न की उपस्थिति (Undigested food)

जिह्वा परीक्षा (Tongue Examination)

जिह्वा (Tongue) केवल पचन संस्थान (Alimentary System) की व्याधियों को नहीं बतलाती, बल्कि नाडी संस्थान (Nervous system) के व्याधियों को बतलाती है। अतः यह आवश्यक होता है, कि प्रत्येक रोगियों के जिह्वा की परीक्षा की जाय।

वातव्याधि में जिह्वा संज्ञा-हीन, रूक्ष, खुरदुरी या विदार युक्त होती है। पैत्तिक व्याधियों में जिह्वा रक्त वर्ण, दाहयुक्त और कण्टकों से व्याप्त होती है। कफज व्याधियों में स्थूल, श्वेत, कण्टकयुक्त और लाला से व्याप्त होती है। त्रिदोष में जिह्वा

कृष्ण वर्ण की और मलयुक्त होती है। यकृत, प्लीहा, कोष्ठबद्धता आदि व्याधियों में जिह्वा व्रण युक्त हो जाती है।

जिह्वा की स्थिति को देखकर निम्न व्याधियों का अनुमान किया जा सकता है।

जिह्वा की स्थिति	व्याधियों की नामावली
शुष्क (Dry)	रात्रि जागरण, शारीरिक तरल स्रावाधिक्य (Excessive loss of fluid from body), वातिक क्षीणता (Nervous Prostration)।
मलयुक्त शुष्क (Coated dry)	पचन संस्थान की तीव्र विषमयता।
भेक वर्ण, शुष्क और मलयुक्त जिह्वा	नाड़ी संस्थानगत व्याधियों से पीड़ित व्यक्ति (Nervous people)
शुष्क, अंकुरयुक्त	मुख से श्वास प्रश्वास लेने वाले व्यक्तियों में।
मलयुक्त या अंकुर युक्त (Coated or furred)	ज्वर (Fever), पचन संस्थान विकृति (Diseas of the alimetary system), वृद्धि की हुई उपजिह्विका (Enlarged tonsils), नाड़ीशूल (Neuralgic pain), दुग्धाहार।
प्रतिसारित (Flabby)	पाण्डु (Anaemia), वृक्कशोथ (Bright's disease) अग्निमांद्य (Dyspepsia)।
गम्भीर, रक्तवर्ण, स्निग्ध, चिकनी और चमकती हुई।	प्रमेह (Diabetes)
नीली या ईषत् कृष्ण	हृदय की व्याधियाँ (Heart diseases)।
अंकुर (Papillae) युक्त, रक्तवर्ण, गतिहीन	अग्निमांद्य (Dyspepsia), मद्यपी (Drunkards)
गतिहीन (Immobile) या आंशिक गतिशील	वात (Paralysis)
व्रणयुक्त (Ulcerated)	दूषितदंत (Decayed teeth), अग्निमांद्य, फिरंग (Syphilis)
कटी हुई (Bitten), फटी, विदीर्ण और फूली हुई	अपस्मार (Epilepsy), धनुस्तम्भ (Tetanus) आमाशय (Stomach) की तीव्र व्याधि।
पीली (Yellow)	यकृत् (Liver) के विकार।

शब्द (Voice) परीक्षा—वातव्याधियों से पीड़ित रोगियों का शब्द घरघराहट के साथ होता है। पैत्तिक रोग में स्पष्ट बोलता है। कफ से पीड़ित रोगी

का शब्द भारी हो जाता है । मन्द-भाषी, घरघर शब्द करने वाला, नासिका से बोलने वाला रोगी असाध्य होता है ।

स्पर्श (Skin) परीक्षा—वातरोगी का शरीर शीतल, रुक्ष । पैत्तिक रोगी का शरीर उष्ण । कफज रोगी का शरीर शीतल, चिपचिपा तथा पानी से भींगा सदृश भारी होता है ।

ज्वर में चर्म उष्ण (Hot), शुष्क (Dry) और रुक्ष (Rough) होता है । स्थानिक स्वेदाधिक्य, स्थानिक शोथ (Inflammation) का द्योतक होता है । आकस्मिक तीव्र स्वेदाधिक्य रोगी की असाध्यता का द्योतक है ।

नेत्र (Eye) परीक्षा—वात रोगों में नेत्र भयानक, रुक्ष, चञ्चल, धूम्रवर्ण के स्थिर होते हैं । पित्त रोग में नेत्र, पीले, नीले, रक्तवर्ण के, उष्ण और चमकते हुए होते हैं । कफ रोग में नेत्र, ज्योतिहीन, श्वेत, जलपूर्ण होते हैं ।

त्रिदोष में नेत्र, तन्द्रा, मोहयुक्त, व्याकुल, श्यामवर्ण, रुक्ष, भयानक और रक्त वर्ण के होते हैं ।

यदि नेत्र प्रसारित (Dilated) हों तो आमाशय तथा आंत्र के क्षोभ के साथ साथ मस्तिष्क (Brain) के क्षोभ को समझना चाहिये ।

यदि नेत्र संकुचित (Contracted) हों तो नेत्र नाड़ी के क्षोभ जन्य शोथ समझना चाहिये ।

यदि रोगी नेत्र फाड़-फाड़ कर देखता हो तो प्रलाप (Delirium) का द्योतक समझना चाहिये ।

कामला (Jaundice) में, नेत्रपीतवर्ण का हो जाता है ।

जब नेत्र, बाहर को निकले हों, चमकते हों या रक्त वर्ण हों, तो मस्तिष्क की रक्ताधिक्यता (Congestion of the Brain) तथा हृदय की व्याधि का द्योतक समझना चाहिये

रक्ताल्पता (Chlorosis) में नेत्र श्वेत रंग का हो जाता है ।

आकृति परीक्षा—(Facial Expression)—वात कोपसे शरीर रुक्ष, तथा स्तब्ध होता है । पित्त कोप से पीत वर्ण, रक्त वर्ण तथा उष्ण होता है, और कफ कोप से भारी, स्निग्ध और फूला हुआ होता है ।

यदि आकृति धुंधली सेक रंग की तीक्ष्ण नासाग्र युक्त, धंसे नेत्र मय हो तो मृत्यु अवश्यम्भावी समझना चाहिये ।

ज्वर तथा कोष्ठबद्धता से पीड़ित व्यक्ति की आकृति उदास तथा आंख नीले वर्ण की होती हैं।

श्लैष्मिक सन्निपात (Pneumonia) का रोगी श्वास खींचने का प्रयत्न करता है।

उपरोक्त आठ प्रकार की परीक्षाओं को उभयमतानुसार सम्पन्न करने के पश्चात् निम्न प्रकार से परीक्षा की जाती है। अब सांस्थानिक (Systematic) परीक्षा प्रारम्भ होती है। सांस्थानिक परीक्षा करने में भी मतवैषम्य पाया जाता है कुछ विद्वान नाड़ी संस्थान (Nervous system) की सर्व प्रथम परीक्षा करते हैं तथा कुछ विद्वान् पचन संस्थान (Digestive System) की परीक्षा करते हैं। चाहे जो भी हो अधिकतर विद्वानों की राय है कि सर्वप्रथम दूषित संस्थान (Affected System) की ही परीक्षा करनी चाहिये। संस्थानों (Systems) की परीक्षा निम्नांकित क्रम तथा विधि से की जाती है।

(१) रोगी की मुख्य व्यथा (Main complaint) तथा समय (Period):—रोगी को सबसे अधिक क्या कष्ट है और कितने समय से जैसे—उदरशूल, ५ दिनों से।

(२) रोगी का पारिवारिक इतिहास (Family History):—रोगी तथा रोग से सम्बन्धित बातों को ही पूछना चाहिये।

(३) रोगी का पूर्वकालिक इतिहास (Past History):—भूतकाल में व्याधि से सम्बन्धित कारणों को पूछना।

(४) वर्तमान इतिहास (Present History)

(अ) व्यवसाय (Occupation)—व्यवसाय का केवल नाम नहीं पूछना चाहिये बल्कि क्या काम करता है।

(ब) व्यसन (Habits):—क्या? कितनी मात्रा?

(५) सांस्थानिक परीक्षायें (Systematic Examinations)

(१) पचन संस्थान (Digestive system)

(२) रक्तवह संस्थान (Circulatory system)

(३) श्वासप्रश्वास संस्थान (Respiratory system)

(४) मूत्रवह संस्थान (Urinary system)

(५) नाड़ी संस्थान (Nervous system)

(६) प्रयोगशाला परीक्षा (Chemical Examination)

(७) लक्षण (Symptoms)

(८) रोगनिश्चिति (Diagnosis)

(९) चिकित्सा (Treatment)

'नवीन चिकित्सकोपयोगी साधारण शिक्षा'—

(१) पूर्व वर्णित व्याधि—परीक्षा विधि से रोगी के व्याधि का बहुत ही सावधानी तथा विस्तारपूर्वक परीक्षा करनी चाहिये; क्योंकि इससे आप रोग निश्चिति भली प्रकार कर सकते हैं।

(२) रोग निश्चिति के पश्चात् चिकित्सा की विधियों को निश्चित करना चाहिये।

(३) अपने निश्चित चिकित्सा विधि को रोगी तथा रोगी के अभिभावक के कथनानुसार कभी भी परिवर्तन नही करनी चाहिये।

(४) अपनी चिकित्सा प्रणाली को निश्चित करते समय रोगी के सामाजिक (social), मानसिक तथा शारीरिक स्थिति पर ध्यानपूर्वक पूर्ण विचार कर लेना चाहिये।

(५) ऐसी चिकित्सा प्रणाली को कभी भी नहीं निश्चित करनी चाहिये, जो रोगी के शक्ति के बाहर हो, बल्कि साधारण से साधारण हो।

(६) रोगी के औषधि का व्यवस्थापत्र (Prescription) बहुत बड़ा नही होना चाहिये।

(७) उन्हीं औषधियों का व्यवहार करना चाहिये; जो शास्त्र तथा अनुभवी चिकित्सकों द्वारा लाभदायक सिद्ध की जा चुकी हों, तथा जिनके गुण, कर्म तथा दोष को आप भली भाँति जानते हों।

(८) नवीन तथा लच्छेदार शब्दों में विज्ञापन की गई औषधियों का तब तक व्यवहार नहीं करना चाहिये जब तक उनके कार्यों तथा दोषों से आप पूर्ण परिचित न हो जायँ।

(९) चिकित्सा तथा पथ्य के विषय में रोगी से सहानुभूति नहीं रखनी चाहिये, वल्कि अपने आदेश पर दृढ़ रहना चाहिये। थोड़ी भी सहानुभूति से अधिक हानि हो सकती है।

(१०) ओषधि सेवन तथा पथ्य के नियमों को साधारण भाषा में रोगी को भली भांति समझा देना चाहिये।

(११) असाध्य व्याधियों को साध्य बनाने का कभी भी प्रयत्न नहीं करिये।

(१२) गर्भवती (Pregnant), बालक (Children) और वृद्धों की उपद्रवयुक्त व्याधियां असाध्य होती हैं; अतः इनकी चिकित्सा नही करनी चाहिये।

शरीर में ओपधि प्रविष्ट करने के मार्ग—

(Administration of Drugs in the Body)

रोग निश्चित के पश्चात् ओषधि दान का समय आता है। अब रोगानुसार निश्चित करना पड़ता है कि किस प्रकार से ओषधि प्रविष्ट करना उचित होगा। जैसे चर्म रोग में बाहर चर्म पर लगाना। संज्ञाहीनता की अवस्था में सूचीवेध अवलम्बन आदि आदि।

यहाँ पर भिन्न भिन्न मार्गों की तालिका दी जाती है।

(१) **मुख** (Mouth)—दन्तमंजन, चूर्ण, घोल, मुख प्रक्षालक, लेप (Paints)।

(२) **ग्रसनिका** (Pharyax):—गण्डूष (Gargles), लेप प्रधमन (Insufflations)।

(३) **आमाशय तथा आंत्र** (Stomach and intestine):—मिश्रण (Mixtures), गोलियाँ (Pills), चूर्ण (Powders)।

(४) **गुदा** (Rectum):—वस्ति (Enemas), लवणोदक घोल (Saline solution), गुदवर्ती (Suppositories), मलहर (Ointments).

(५) **नासिका** (Nose):—नस्य (Snuffs), प्रधमन (Insufflation), सिंचन (Douches), सूंघाना (Inhalations).

(६) **स्वरयंत्र** (Larynv):—लेप, प्रधमन, वाष्प लेना।

(७) फुफ्फुस (Lungs):—बफारा लेना (Inhalations), धूम्र-पान, सूचीवेध।

(८) मूत्र प्रणाली (Urethra):—सिंचन (Irrigation), पिचकारी (Injections); बूजी (Bougies)।

(९) वस्ति (Bladder):—सिंचन, पिचकारी।

(१०) गर्भाशय (Uterus):—सिंचन, पिचकारी।

(११) योनि (Vagina):—सिचन, लेप, पिचकारी, पिचु (Pessaries)।

(१२) नेत्र (Eyes):—बूंद, मलहर, लेप, सिंचन चूर्ण, अधोवर्त्म सूची (Sub-Conjunctival injections)

(१३) कर्ण (Ear):—बूंद (Drops), घोल (Lotions), मलहर, प्रधमन।

(१४) फुफ्फुसावरण (Pleura):—तरलाविक्य को रोकनार्थ सूचीवेध।

(१५) हृदयावरण (Pericardium):— „ „ ।

(१६) रक्त प्रणाली (Blood vessels)

(१) शिरा (Vein):—ओषधि, लवणोदक, रक्त (Blood)

(२) धमनी (artery):—रक्तप्रदान।

(१७) त्वचागत (Skin):—लेप, सेंक, मरहम, स्नान, विद्युत्,।

(१८) अधस्त्वक (Sub-cutaneous):—सूची (Injection)।

(१९) मांसपेशीगत (Intra-muscular)—सूची („)।

(२०) सुषुम्नागत (Intra-spinal):—सूची („)।

संयोग-विरुद्ध द्रव्य-

(Incompatible Drugs)

ओषधि दान के पूर्व यह समझना आवश्यक होता है, कि किन किन द्रव्यों को एक साथ मिलाकर दिया जा सकता है; तथा किन किन द्रव्यों को एक साथ नहीं मिलाया जा सकता है। क्योंकि परस्पर संयोग विरुद्ध द्रव्यों को एक साथ मिला देने से एक तीसरी मारक वस्तु तैयार हो जाती है; जिससे प्राणीमात्र को भयानक हानि उठानी पड़ती है। अतः यहां उन द्रव्यों का वर्णन करना आवश्यक जाना गया है।

संयोग विरुद्ध द्रव्यों की तालिका

मुख्य द्रव्य	संयोग-विरुद्ध द्रव्य
दूध (Milk)	मछली (Fish), मांस (Meat), नमक (Salt), खटाई, मधु।
मछली (Fish)	खाँड, मिश्री, चीनी, गुड़ और मधु।
केले का फल	मट्ठा, दही तथा बेल का फल।
उष्ण जल	शहद, भिलावा
घी	कांसे के बरतन में दस दिन तक रखा घी विषवत् हो जाता है, बराबर मधु के साथ विषवत् होता है।
खीर	खिचड़ी
संखिया तथा संखिया लवण (Arsenic & its Salts)	मरक्यूरिक क्लोराइड(Mercuric chloride), मैग्निसिया (Magnesia), लाइमवाटर (Lime water), एस्ट्रिजेण्ट टिंचर (Astringent Tincture)
ब्रोमाइड (Bromide)या आयोडाइड (Iodides)	कलोमल (Calomel), स्प्रिट नाइट्रोसी इथरिस (Spirit nitrous Etheris), पोटेसियम क्लोरेट (Potassium chlorate), तीव्राम्ल (Strong acids)।
क्लोरेट्स (Chlorates)	सलफर (गन्धक) (Sulphur), क्रीयोजोट (Creosote), सुगर(Sugar), आयोडीन (Iodine), कार्बोलिक एसिड (Carbolic acid), सैलिसिलिक एसिड (Salicylic acid) , टैनिक एसिड (Tannic acid)
पोटेशियम परमाग्नेट (Potassium Permanganate)	ग्लीसरीन (Glyserine), अल्कोहल (Alcohol)
क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate)	क्षार (Alkalies) तथा अलकलाइन कार्बोनेटस (Alkaline carbonates)।
एसिड हाइड्रोक्लोरिक (Acid Hydrochloric)	लेड (Lead), सिलवर साल्ट्स (Silver salts), क्षार, तथा क्षार के कार्बोनेट।
सल्फुरिक एसिड (Sulphuric acid)	लेड (Lead) और केल्शियम (Calcium) के लवण, क्षार तथा उसके कार्बोनेट।

टैनिक एसिड (Tannic acid)	मिनरल एसिड (Mineral acid), एण्टिमनी के लवण (Antimony salts), लेड (Lead), सिल्वर (Silver), अल्कलीज, अल्कलायड (Alkloids), जिलेटीन (Gelatin), साल्टस आफ आयरन (Salts of iron) ।
लाइकर अमन एसीटास (Liq. Ammon Acetas)	सोडा (Soda) और इसके कार्बोनेट्स (Carbonates) पोटास (Potash), अम्ल (Acids), लाइमवाटर (Lime water), लेड और सिल्वर के लवण (Lead and silver salts)
फास्फोरिक एसिड (Acid Phosphoric)	कैल्शियम के योग (Calcium preparations), सोडा कार्बोनेट (Soda carbonate)
हाइड्रोसायनिक एसिड डिल (Hydrocyanic acid Dil)	सिल्वरसाल्ट (Silver salt), कापर (Copper), लौह (Iron), रेड आक्साइड आफ मर्करी (Rep oxide of mercury) और सल्फाइड्स (Sulphides)
फुलस (Alum)	अल्कलीज (Alkalies) और अल्कलाइन कार्बोनेट (Alkaline carbonate)
अमनकार्ब (Ammon carb)	ब्रोमाइड (Bromide), क्लोरीन (Chlorine), फेनल्स (Phenols), क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate), मरक्यूरिक कम्पाउण्ड (Mercuric compound), आयोडीन (Iodine)
अमनक्लोराइड (Ammon chloride)	लेड और सिल्वर (Silver) के लवण (Salts), क्षार (Alkalies)
बिस्मथ सबनाइट्रट (Bismuth Subnitrate)	सोडाबाई कार्ब (Soda bicarb), पाट आयोडाइड (Pot Iodide)
कैलोमल (Calomel)	क्षार (Alkalies) और इनके कार्बोनेट (Carbonate) के घोल, ब्रोमाइड (Bromide), साइनाइड (Cynide), हाइड्रोसायनिक एसिड (Hydrocyanic acid), आयोडाइड्स (Iodides) ।
सिन्कोना के योग (Cinchona preparations)	अमोनिया (Ammonia), जिलेटिन (Gelatin), मेटैलिक साल्ट (Metalic salts)
डिजिटेलिस (Digitalis)	सिंकोना (Cinchona), लेडएसिटेट (Lead Acetate), क्षार (Alkalies), लोह (Iron), तीव्राम्ल (Strong acids)

अर्गट (Ergot)	टेनिकएसिड (Tannic acid) तथा मिलित मिश्रण ।
फेरी एट अमन साइट्रास (Ferri et Ammon citras)	फिक्स्ड अल्कलीज (Fixed alkalies), मिनरल एसिड्स (Mineral acids), वेजिटेबुल एस्ट्रिंजेण्ट (Vegetable astringents)
फेरी एट कीनीन साइट्रास (Ferri et Quinine citras)	क्षार और उनके कार्बोनेट, टेनिक एसिड (Tannic acid), वेजिटेबुल एस्ट्रिंजेन्ट्स (Vegetable astringents)
हाइड्राजिरी परक्लोर (Hydrarg. Perchlor)	क्षार तथा उनके कार्बोनेट, लाइमवाटर, लेडएसिटेट, अल्बुमिन (Albumine), पाट आयोडाइड (Pot. Iodide), सोप्स (Saops), टारटर एमेटिक (Tartar emetic), टेनिकएसिड (Tannic acid)
इपिकैकुआन्हा (Ipecacuanha)	लेड लवण (Lead salts), वेजिटेबुल एसिड्स (Vegetable acids), मर्करी (Mercury)।
लेड एसिटेट (Lead acetate)	अम्ल (Acid), अल्बुमिन, अल्कलीज, कार्बोनेट, क्लोराइड, क्रोमेट (Chromate), साइट्रास (Citras) आयोडाइड (Iodides), फास्फेट (Posphate) सोप (Soap), सल्फेट (Sulphate), टारट्रेट (Tartrate), टेनिन (Tannin)
मुसिलेज एकाशिया (Mucilage Acacia)	अलकोहल, बोरेक्स (Borax), आयरन (Iron), लेड सबएसिटेट (Lead subacetate), सल्फुरिक एसिड (Sulphuric acid)
मेगनिशिया (Magnesia)	अम्ल (Acids)
मैगसल्फ (Magsulphas)	अल्कलाइन कार्बोनेट (Alkaline Carbonate), लाइमवाटर (Lime water), लेड एसिटेट (Lead Acetate), सिल्वर नाइट्रेट (Silver nitrate)
आपियम (Opium)	अलकलीज (Alkalies), कार्बोनेट (Carbonate), लाइमवाटर (Lime water), लेड साल्ट (Lead Salt), आयरन (Iron), मर्करी (Mercury), लाइकर आर्सेनिकलिस (Liqr arsenicalis), वेजिटेबुल एस्ट्रिंजेण्ट (Vegetable astringents) जिंक (Zinc
पाट ब्रोमाइड (Pot bromide)	एसिड (Acids), एसिड साल्ट (Acid salt), मेटेलिक एसिड (Metalic acid), स्ट्रिक्नीन (Strychnine)

पोटैशियम आयोडाइड (Potassium iodide)	बिस्मथ सबनाइट्रेट (Bismuth subnitrate), कैलोमल (Calomel), लेड (Lead), मर्करी साल्ट (Mercury salts), सिल्वर (Silver)
क्वीनीन सल्फ (Quinine sulph)	अल्कलीज (Alkalies), कार्बोनेट (Carbonate)
अल्कलाइन सैलिसिलेट (Alkaline salycilate)	अम्ल (Acid), फेरिक साल्ट (Ferric salt), स्प्रिट इथरिस नाइट्रोसी (Spirit Etheris nitrosi)
स्प्रिट ईथरिस नाइट्रोसी (Spirit Aetheris nitrosi)	इमल्शन (Emulsions), फेरीसल्फ (Feri sulph) एन्टीपायरीन (Antipyrine), गैलिक एसिड (Gallic acid), पाट आयोडाइड (Pot Iodide), टिंचर गायेकम् (Tr. Guaiacum), टेनिक एसिड (Tannic acid)
टिंचर फेरी परक्लोर (Tr Ferri perchlor)	अल्कलीज (Alkalies), कार्बोनेट (Carbonate), कैल्शियम कार्बोनेट (Calcium Carbonate), मैगनेशियम (Magnesium), म्युसिलेज (Mucilage)
जिंक वलेरियनेट (Zinc valerianate)	अम्ल (Acid), कार्बोनेट (Carbonate), मेटैलिक साल्ट (Metallic salt), टेनिन (Tannin)
क्रोमिक एसिड (Chromic acid)	ग्लीसरीन (Glycerine), ईथर (Ether), तीव्र अल्कोहल (Strong alcohol)

'व्यवस्था-पत्र-निर्देश'
(Writing of Prescription)

औषधियों के गुण तथा संयोग-वैषम्य (Incompatibility) को जानने के पश्चात् व्यवस्थापत्र लिखने की विधि जानना आवश्यक होता है, जिसका निर्देश नीचे किया गया है।

एक उत्तम व्यवस्थापत्र में निम्नाङ्कित ५ बातों का होना आवश्यक है:—

(१) लेखनविधि या शीर्षक (Superscription):—व्यवस्थापत्र के सब से ऊपर चिह्न आर (R/) लिखा जाता है, जिसके अर्थ होते हैं—कृपया ग्रहण कीजिये (Take thou)।

(२) व्यवस्थापत्र का गात्र (The Inscription):—इस भाग में औषधियों के नाम तथा मात्राओं का निर्देश होता है। इसके निम्न भाग होते हैं:-

(अ) **आधार (Basis):**—प्रधान औषधि ।

(ब) **सहायक (Adjuvant):**—प्रधान औषधि के सहायक द्रव्य ।

(स) **सुधारक (Corrigent):**—अन्य द्रव्यों के विषैले प्रभाव को ठीक करने वाला ।

(द) **पूरक (Vehicle):**—व्यवस्थापत्र को पूर्ण करने वाला ।

(३) निर्देश (Subscription):—औषधि निर्माण करने वाले (dispenser) को आदेश करना; जैसे मिश्रण बनाना (Mist), गोली बनाना (Pilula) आदि ।

(४) आदेश (Signature):—औषधि के विषय में रोगी को आदेश किया जाता है, कि दिन में ३ बार खाइये या जल मिलाइये आदि । यह आदेश मातृभाषा में या आँग्लभाषा में लिखा जाता है ।

(५) अन्त (End):—इसमें व्यवस्थापक (Prescriber) का नाम और तिथि लिखी जाती है, जो व्यवस्थापत्र के अन्त मे होता है। रोगी का नाम सब से ऊपर लिखा जाता है ।

व्यवस्थापत्र का उदाहरण

रोगी का नामः—सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय ।

(१) शीर्षक (Superscription)	R/
(२) गात्र (Inscription)	कीनीन सल्फ—२ ग्रेन (आधार) एसिड सल्फुरिक डिल — ८ बूद (सहायक) सिरप लेमनिस—२० बूंद (सुधारक) एका क्लरोफार्म—१ औंस (पूरक)
(३) निर्देश (Subscription)-	मिश्रण बनाइयें । ६ मात्रा बनाइये ।
(४) आदेश (Signature)	१ औंस दिन में ३ बार ।

तिथि—८-८-४९

व्यवस्थापक का नाम
मोहनराम

बच्चों का व्यवस्थापत्र

(Prescription for Children)

बच्चों के व्यवस्थापत्र में वहुत ही सावधानी तथा कौशल्य की आवश्यकता होती है। नवीन चिकित्सकों के सहायतार्थ यहा पर कुछ आवश्यक बातों का निर्देश किया जाता है।

(१) ओषधियों की मात्रायें अवस्थानुसार होनी चाहिये।

(२) मिश्रण (Mixture) की मात्रा एक वा दो रुपये से अधिक नही होनी चाहिये।

(३) ओषधियां स्वादुहीन या मधुर स्वादु की होनी चाहिये।

(४) बच्चों को गोलियां नही देनी चाहिये, वल्कि चूर्ण के रूप में मधु, दूध वा जल के साथ देना चाहिये।

(५) मिश्रण (Mixture) में शरवत (Syrup) मिलाकर देना चाहिये।

मात्रा-निर्धारण-विधि

(१) अवस्थाः—२० वर्ष से लेकर ६० वर्ष तक के व्यक्तियों को पूरी मात्रा दी जाती है। बच्चों की मात्रा युवा व्यक्तियों की अपेक्षा अवस्थानुसार अल्प होती है, जिसके निर्धारण की विधि अधोलिखित है;—

अवस्था ÷ अवस्थ + १२

६ वर्ष की अवस्था के बच्चों की मात्रानिर्धारण विधिः—

$६ \div ६ + १२ = \frac{६}{६+१८} = ३ = \frac{१}{३}$

अर्थात् पूरे मात्रा का $\frac{१}{३}$ भाग देना चाहिये।

यदि पूरी मात्रा ३ रत्ती का हो तो ६ वर्ष के बच्चे को १ रत्ती देनी चाहिये।

(२) जाति (Sex):—पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको कुछ कम मात्रा देते हैं।

(३) आयाम (Size) तथा भार (Weight):—दुवले, पतले व्यक्तियों की अपेक्षा शक्ति शाली, स्थूल तथा स्वस्थ व्यक्तियों में वड़ी मात्रा देते हैं।

(४) सहन शक्ति (Tolerance):—कुछ व्यक्ति किसी ओषधि के वड़ी मात्रा को सहन कर जाते हैं तथा कुछ उसी ओषधि की छोटी मात्रा से भी कष्ट पाने लगते हैं; अतः मात्रा निर्धारण मे सहन शक्ति का भी ध्यान रखना चाहिये।

(५) जलवायु (Climate):—शीतकाल में उष्ण तथा उष्णकाल में ठण्डी ओषधियों का व्यवहार करना चाहिये, क्योंकि इन ऋतुओं में वड़ी मात्रा का व्यवहार हो सकता है।

द्रव्योंकी संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी नामावली

संस्कृत	हिन्दी	अँग्रेजी
(अ)		
अक्षोट	अखरोट, पहाड़ी पीलु	वालनट (Walnut)
अगस्त्य, मुनिपुष्प	अगस्त	सिसबेनिया ग्राण्डिफ्लोरा (Sesbania Grandiflora)
अग्निमन्थ	अरणी, गनियारी	प्रीमना इण्टेग्रीफोलिया (Premna intergrifolia)
अंकोट	अंकोल, ढेरा	एलेञ्जियम लेमार्की (Alangium Lamarkii), एलेंजियम् हेक्सापेटेलम (Alangium Hexapetalum)
अजमोदा	अजमोदा	सिलेरी सीड (Selery seed)
अजकर्ण, शालभेद	बड़ा शाल	इण्डियन कोपल (Indian copal), वटेरिया इण्डिका (Vateria Indica)
अञ्जन	कालासुरमा	ब्लैक एण्टिमनी (Black Antimony), एण्टीमनी सल्फुरेटम (Antimony Sulphuratum)
अतसी	तीसी, अलसी	लीनसीड (Linseed)
अतिविष, शृङ्गी	अतीस	एकोनाइट कार्डेटम (Aconite cordatum)
अपराजिता	अपराजिता, कोयल	क्लीटोरिया टरनेटिया (Clitoria Ternetea)
अपामार्ग	लटजीरा, चिचिढी	एकीरेंथिस एस्पेरा (Achyranthes Aspera)
अभ्रक, वज्र	अभरक, अबरक	माइका (Mica)
अम्लवेत	अमलवेंत	कामन सोराल (Common soral)
अम्लिका, चुक्रा	इमली, तिन्तिडी	टेमरिण्डस इण्डिका (Tamarindus Indica)
अरिमेद	वबुरी	अकासिया फार्नेसियाना (Acacia Farnesiana)
अरिष्टक	रीठा	सैपिण्डश ट्रीफोलिएटस (Sapindus Trifoliatus)
अर्कपुष्पी	अन्धाहुली	होलोस्टीमा रीडी (Holostemma Rheedii)

संस्कृत	हिन्दी	अँग्रेजी
अशोक	अशोक	जोनेशिया अशोका (Jonesia Asoka)
अश्मभेद	पाषाणभेद, पथरचूर	कोलियस एरोमेटिकस (Coleus Arometicus)
अश्वगन्धा	असगन्ध	विथेनिया सोम्नीफेरा (Withania Somnifera)
अश्वत्थ	पीपलवृक्ष	फिकसरिलिजिओसा (Ficus Reliosa)
असन	विजयसार, आसना	इण्डियन किनो ट्री (Indian Kino tree)
अस्थिसंहारी	हड़जोड़	विटिस क्वाड्रैंगुलरिस (Vitis quadiangularis)
अहिफेन	अफीम	ओपियम (Opium)
(आ)		
आकाशवल्ली	अमरबेल	कासकुटेरीफ्लेक्सा (Cascutareflexa)
आम्रगन्धि हरिद्रा	आमाहल्दी	कर्कुमा अमाडा (Curcuma Amada)
आम्र	आम	मैंगो ट्री (Mango tree)
आढकी	अरहर	पीजन पी (Pigeon pea), कैजेनस इण्डिकस (Cajanus Indicus)
आम्रातक	आमड़ा	स्पोण्डियस मैंगिफेरा (Spondias Mangifera)
आरग्वध	अमलतास	पर्जिंग कैसिया (Purging cassia)
आर्द्रक	अदरख, आदी	जिंजर रूट (Ginger root), जिंजिबेर आफिसिनेली (Gingeber Officinale)
आलुक	आलू	डिओस्कोरिया बल्बिफेरा (Dioscorea Bulbifera), पोटैटो (Potato)
आलूबुखारा	आलूबुखारा	चेरी प्लम (Cherry Plum)
(इ)		
इक्षु	ईख	सुगर केन (Sugar cane), सैकेरम आफिसिनेरम (Saccharum Officinarum)
इंगुद	हिंगोटी	डेलील (Delil)
इन्द्रनील	नीलम, नीलमणि	सैफिरस (Saffirus)
इन्द्रयव	कुटज, इन्द्रजव	होलेरिना एण्टीडिसेण्टरिका (Holarrhena Antidysenterica)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
(उ)		
उदुम्बर	गूलर	फिकसग्लोमरेटा (Ficusglomerata)
उपकुञ्चिका	छोटी इलायची	कार्डेमम (Cardamum)
उशीर	खस	एण्ड्रो पोजन स्कैरोसस (Andro Pogon squarrosus)
(ए)		
एरण्ड तैल	रेंडी का तेल,	कैस्टर आयल (Castor oil)
एलीयक	एलुवा, कृष्ण बोल मुसब्बर	एलू सोकोट्रीना, (Aloe socotrina)
(ऐ)		
ऐन्द्रवारुणी	इनारुन	कोलोसिंथ (Colocynth)
(ओ)		
ओण्ड्रपुष्प	अड्हुल, जपाकुसुम	शू फ्लावर (Sheo Flower)
(क)		
कुकुन्दर	कुकुरौंदा	ब्लुमिया लैसिरा (Blumea Lacera)
ककुभ	अर्जुन	अर्जुन (Arjuna)
कंकोष्ट,	मुरदासंख	लेड आक्साइड (Lead oxide), प्लम्बाई आक्साइड (Plumbi oxide)
कङ्गु	कांगुन	पापावर डुबियम (Papaver Dubium)
कचट	चौराई साग	एमेरैंथस स्पाइनोसस (Amaranthus Spinosus)
करीर	करील	कैपेरिस एफिला (Capperis Aphylla)
कटुतुम्बी	तितलौकी	लेजेनेरिया वल्गेरिस (Lagenaria Vulgaris)
कक्कोल	कबाबचीनी	क्यूबेब्स (Cubebs)
कटफल	कायफल	मिरिका नागी (Myrica Nagi)
कटुवी	कुटकी	पिक्रोरिजा कुरोआ (Picrorhiza Kurrooa)
कण्टकारी	कटेरी, भटकटैया	सालेनम जैंथोकार्पम (Salanum Zanthocarpum)
कदम्ब	कदम	एंथोसेफेलस कदम्ब (Anthocephalus Cadamb)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
कपर्दक	कौड़ी	कोवरीज़ (Covories)
कपित्थ	कैंथ	उड एपुल (Wood Apple)
कपिकच्छु	केंवाच	म्युक्युना प्रुरिएन्स (Mucuna Pruri-ens)
कमल	कमल	लोटस (Lotus)
करमर्द	करोंदा	केरिसा कोरण्डास (Carisa Corandes)
कर्कटी	ककड़ी	कुकुम्बर (Cucumber)
कर्कोटकी	खेकसा	मोमोर्डिका कोचिचिनेन्सिस (Momo-rdica Cochinchinensis)
कर्चूर	कचूर	करकुमा जेड़ोरिया (Curcuma Zedoa-ria)
कर्पूर	कपूर	कैम्फर (Camphor)
कलाय	मटर	पी (Pea)
कलिहारी	कलिहारी	ग्लोरिओसा सुपर्बा (Gloriosa Superba)
मृगनाभि, कस्तूरी	कस्तूरी	मुश्क (Musk)
काकनासा	कौवा ठोंढी	सोलेनम इण्डिकम (Solanum Indi-cum)
काकमाची	मकोय	सोलेनम निग्रम (Solanum Nigrum)
काञ्चनार	कचनार	वाहिनिया वेरिगेटा (Bauhinia Variegata)
कान्तलोह	लोह	आयरन (Iron), फेरम (Ferum)
काम्पिल्लक	कवीला	क्रोटन पंक्टेटस (Croton Punctatus)
कारवेल्ल	करेली	मामोर्डिका केरेंशिया (Momordica Charantia)
कारवेल्ली	करैली	मेमोर्डिका म्युरिकेटा (Memordica Muricata)
कार्पासी	कपास	काटन प्लाण्ट (Cotton Plant), गाशिपियस हर्बेकम (Gossypium Herbaccum)
कुश	कुशा	एण्ड्रोपोगान नारडायडिस (Andropogon Nardaides)
कलिन्द	तरबूज, हिरमाना	वाटरमिलन (Water Melon)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
कास	कास	सैक्चरम स्पाण्टेनियम (Saccharum Spantaneum)
कासमर्द	कसौंदी	कैसिया आक्सिडेण्टलिस (Cassia occidentalis)
कासीस	कसीस, हीराकस	फेरीसल्फ (Fer y sulph)
कांस्य	कांसा	ह्वाइटब्रास (White Brass), ह्वाइटकापर (White copper)
किरात	चिरायता	चिरायता (Chirota), जेंशियन चिरेता (Jentiana Chireta)
किंकिरात	बबूल, कीकर	एकेसिया ट्री (Acacia Tree), एकेसिया अरेबिका (Acacia Arabica)
कुंकुम	केसर	सैफ्रान (Saffron)
कुटज	कूड़ा	होलेरिना एण्टीडिसेण्टरिका (Holarrhena Antidysenterica)
कुटन्नट	मोथा	मोथा (Motha)
कुन्द	कुन्द	जैस्मिनम प्युबेसेन्स (Jasminum Pubescens)
कुन्दुरु	कुन्दुरु	गमरेजिन (Gum Resin)
कुपीलु	कुचला	स्ट्रिकनास नक्सवोमिका (Strychnos Nuxvomica)
कुमारी	घीकुवार, कारपाठी	एलू बार्बेडेंस (Aloe Barbedense)
कुमुद	कुमुद	निम्फीया लोटस (Nymphæa Lotus)
कुष्ठ	कूट	कोस्टस रूट (Costus Root), सॅसुरियालैपा (Sansuria Lappa)
कूष्माण्ड	पेठा, कोहड़ा भूरा	पम्पकीन (Pumpkin)
कुष्माण्डी	कोहड़ा	गोर्ड (Gourd), कुकुर्बिटा मैक्सिमा (Cucurbita Maxima)
कृष्णसारिवा	कालीसर	इक्नोकारपस फ्रूटेसेन्स (Ichnocarpus Frutescens)
कृष्ण तिल	तिल काला	सिसेमम इण्डिकम (Sisamum Indicum), सिसेमम नाइजर सीड्स (Sisamum Nigar Seeds)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
केतकी	केवड़ा	पोण्डेनस फासीकुटेरिस (Pondanus Fascicutaris)
केम्बुल	कोबी	कैबेज (Cabbage)
कोकिलाक्ष	तालमखाना	हाइग्रोफिला स्पाइनोसा (Hygrophila Spinosa)
कोद्रव	कोदोधान	कोद्रा (Kodra), पासपेलम सेराबिकुलेटम (Paspalum Serabiculatum)
कोशाम्र	छोटा आम	स्कलीचेरा ट्राइजुगा (Schleichera Tryjuga)
क्रमुक	सुपारी, कसैली	बेटल नट पाम (Betal nut Palm)
क्षुद्रखर्जूर	खजूर	वाइल्ड डेट (Wild date), फोनिक्स माण्टेना (Foanix Montena)
(ख)		
पिण्ड खजूरी	पिण्ड खजूर	फानिक्स डेक्टीलिफ्रा (Foenix Dactylifera)
खटी	खड़ियामट्टी	चाक (Chalk)
खदिर	खैर	एकेसिया केटेच्यु (Acacia Catechu)
खर्पर	खपरिया, थोथा	जिंक सल्फाइड (Zinc Sulphide)
खसबीज	पोस्तादाना	पापी सीड्स (Poppy Seeds)
(ग)		
गजपिप्पली	गजपीपल, चव्यफल	सिण्डेप्सस आफिसिनलिस (Scindapsus officinalis)
गण्डाख्य	साम्भरनोन	साल्ट (Salt)
गंधक, गंधपाषाण	गन्धक	सल्फर (Sulphur)
गम्भारी	खम्भारी	मेलिना अरबोरिया (Gmelina Arborea)
गवेधुका	गर्गारी	कोइक्स बारबेटा (Coix Barbata)
गर्गरा	गागर मछली	लोडस गेगोरा (Lodus Gagora)
गाजर	गाजर	कैरट रूट (Carrot Root)
गारुत्मत, मरकत	पन्ना	इमेराल्ड (Emerald)ट, मैरेगोलस (Smaragolus)
गुग्गुलु	गुगल	इण्डियन डेलियम (Indian Dellium)
गुड़	गुड़ (मीठा)	ट्रिकिल (Treacle)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
गुडूची	गुरुच, गिलोय	काकुलस कार्डिफोलियस (Coculus Cordifolius), टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया (Tinospora Cordifolia)
गुन्द्र	गोंद पटेर, हाथीघास	एलिफैण्ट ग्रास (Elephant-Grass)
गैरिक	गेरु मिट्टी	रेड चाक (Red Chalk), बोलरुब्रा (Bole Rubra)
गोक्षुर	गोखरू	ट्रिबुलस टेरीस्ट्रिस (Tribulus Terrestris)
गोजिह्वा	वनगोभी	एलिफैण्टोप्सर्स स्कैवर (Elephantopsers Scaber)
गोधूम	गेहूं	ह्वीट (Wheat)
गोरोचन	गोरोचन	बोस्टा रूस (Bosta Rous), गालस्टोन बिजूर (Gallstone Bijoor)
गौरसर्षप	सरसों	सिनैप्सिस एल्बा (Sinapsis alba)
(घ)		
घृत	घी	क्लेयरिफाइड बटर (Clarified Butter)
(च)		
चक्रमर्द	चकवड़, पमार	केसिया अब्टुसिफोलिया (Cassia obtusifolia)
चन्द्रशूर	चनसुर, चन्दशूर	कामन क्रेस (Common Cress), लैपेडियम सेटिवा (Lapedium Sativa)
चन्दन	चन्दन	सैण्डल उड (Sandal wood)
चव्य	चाभ, चव	पिपर चाब (Piper Chaba)
चाम्पेय	चम्पा	मिचेलिया चम्पेका (Michelia Champaca)
चिञ्चु	चंचु शाक, खेतपात	कारकोरस फैसिकुलरिस (Corchorus Fascicularis)
चित्रक	चीता	प्लम्बैगो आरिकुलेटा (Plumbago ouriculata)
चीनकर्पूर	चीनियाकपूर	सिनोमोनम कैम्फोरा (Cinomonum Camphora)
(छ)		
छिक्कनी	नकछिकनी, छिकनी	सेण्टिपेडा आर्बिकुलरिस (Centipeda Orbicularis)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
(ज)		
जटामांसी	जटामांसी	स्पाइक नार्ड (Spike Nard)
जलकुम्भी	जलकुम्भी	पिस्टिया स्ट्रैटिओटस (Pistia Stratiotes)
जलपिप्पली	जलपीपल	पर्पिल लाइपा (Purple Lippa)
जातिपत्री	जावित्री	मायरिस्टिका फ्रैग्रेंस (Myristica Fragrans)
जातिफल	जायफल	मायरिस्टिका मैलेबेरिका (Myristica Malabarica)
जीवन्ती	जीवन्ती	डेण्ड्रोबियन मैक्री (Dendrobinn Macrae)
ज्योतिष्मती	मालकांगनी	स्टाफ ट्री (Staff tree)
(ट)		
टकण	सोहागा	बोरैक्स (Borax), सोडा बाईबोरास (Soda Biboras)
(त)		
तगर	तगर	वलेरियेना हार्डविकि (Valeriana Hardwickii)
तण्डुलीय	चौराई	एमेरेन्थस स्पाइनोसस (Amaranthus Spinosus)
तमाल	तमाल	गार्सिनिया मोरिला (Garcinia Morilla)
तमालपत्र	तेजपात	सिनेमोमम तमाल (Cinnamomum Tamala)
ताम्बूल	पान	बेटल लीफ (Betel Leaf)
ताम्र	ताम्बा	कापर (Copper), कुप्रम (Cuprum)
ताल	ताड़	पाम ट्री (Palm Tree)
तालीसपत्र	तालीशपत्र	टेक्सस बैक्केटा (Taxus Baccata)
तिक्तबिम्बी	कडुतरोई	सिफेलेण्ड्रा इण्डिका (Cephalanddra-Indica)
तिन्दुक	तेंदू	एबोनी (Abony)
तुणी	महानिम	टून (Toon)
तुत्थ	तूतिया	कापर सल्फेट (Copper Sulphate), ब्लूस्टोन (Blue Stone)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
तुम्बरु	तेजबल	जेथॉक्सीलोन एलेटम (Zenthoxylon Alatum)
तुलसी	तुलसी	होली बेसील (Holy Basil)
तूत	शहतूत	मोरस इण्डिका (Morus Indica)
करञ्ज	दिठौरी	पोंगेमिया (Pongamia)
तेजोवती	तेजबल	टूथेक ट्री (Toothache Tree)
त्रपुस	खीरा	कुकुम्बर (Cucumber)
त्रायमाण	त्रायमान	फिकस हेटेरोफिला (Ficus Heterophylla)
त्वक	तज	सिनेमन बार्क (Cinnamon Bark)
(द)		
दमनक	दौना	आर्टीमेसिया वल्गेरिस (Artimesia Vulgeris)
दशांगुल	खरबूजा	मीलन (Melon)
दाड़िम	अनार	पोमेग्रेनेट (Pomegranate)
दारुसिता	दालचीनी	सिनेमन बार्क (Cinnamon Bark)
दारुहरिद्रा	दारुहल्दी	बारबेरी (Barbery)
दुग्ध	दूध	मिल्क (Milk), लैक्टस (Lactus)
दुग्धिका	दूधिया	यूफर्बिया पाइलीव्युफेरा (Euphorbia pilolufera)
देवदाली	देवदाली	ब्रिस्टली ल्युफा (Bristly Luffa)
देवदारु	देवदार	हिमालयन सीडर (Himalayn cedar)
द्राक्षा	दाख, मुनक्का	ग्रेप्स (Grapes), रेजिन्स (Rasins)
द्रोणपुष्पी	गूमा, गोमा	ल्युकस लिनिफोलिया (Lucas Linifolia)
द्वीपान्तरवचा	चोपचीनी	चाइनारूट (China root), स्माइलेक्स चाइना (Smilax China)
(ध)		
धत्तूर	धतूर	डटुरा स्ट्रैमोनियम (Datura Stramonium)
धन्वन	धामिन	ग्रेविया टिलिएफोलिया (Grewia Tiliafolia)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी
धव	धाय	कोनोकार्पस लैटिफोलिया (Conocorpus Latifolia)
धातकी	धाय काफूल	उडफोर्डिया फ्लोरीबण्डा (Wood fordia Floribunda)
धान्यक	धनियाँ	कोरिएण्ड्रम सीड्स (Coriandrum Seeds)
(न)		
नख	नखी	शेल (Shell)
नवनीत	माखन, मक्खन	बटर (Butter), ब्युटीरम (Butyrum)
नागदन्ती	नागदमन, नागदवन	आर्टिमेसिना वल्गेरिस (Artimesina Vulgaris), इण्डियन वर्म उड (Indian Worm wood)
नागपुष्पा	नागकेशर	मेसुवा फेरिया (Mesua ferrea), केब्रास सैफोरान (Cabras Saforon)
नारंगी	नारंगी	ओरेंज (Orange), साइट्रस आरेण्टियम (Citrus Aurantium)
नारिकेल	नारियल, गरी	कोकोनट पाम (Coconut Palm)
निम्ब	नीम	मार्गोसा (Morgosa, Nimb tree)
निम्बूक	कागजी नीबू	लेमन (Lemon), साईट्रस एसिडा (citrus acida)
निष्पाव	राजशिम्बू बीज	लेब्लाब वल्गेरिस (Lablab Vulgaris)
नीलदूर्वा	नीलीदूब, गमघास	क्रीपींग साइनोडान (Creeping Cynodan)
नीली	नील	कामन इण्डिगो (Common Indigo)
नीवार	तिन्नी	पानिकम इटैलिकम (Panicum Italicum)
शिरीष	सिरस, शिरीष	एल्बिजिया लैबेक (Albizzia Labbeck)
शाल	साखु, सखुआ	साल ट्री (Sal tree)
(प)		
पट्ट शाक	पटुवा, पटुवा साग	कार्कोरस ओवेटोरियस (Corchorus Ovitorius)
पटोल	परवर	सिस्टडुला (Sestadula), ट्रिकोसेंथस (Trichosanthus)

पतंग	बक, पतंग	सैपेन उड (Sappan wood)
पनस	कटहर	जैक फ्रूट ट्री (Jack Fruit Tree), एण्टि-एरिना टाक्सीकेरिया (Antiaria Toxicaria)
परूषक	फालसा	ग्रीविया एसियाटिका (Greevia Assiatica)
पर्पट	पित्तपापड़ा, दवन पापड़ा	जस्टिसी प्रेकेरेबंस (Justici Pracarabans)
पलाण्डु	प्याज	ओनियन (Onion), एलियम सीपा (Allium Cipa)
पलाश	पलाश	ब्युटिया फ्राण्डोसा (Butea Frondosa)
पलाशी	कपूरकचरी	हेडिशियम स्पाइकेटम (Hedichium Spicatum)
पाटला	पाडल	स्टेरियोस्पर्मम स्वेवियोलेंस (Stereospermum Suaveolens)
पाठा	पाठा, पुरईन पाती	परेरा रूट (Parera root)
पाताल गरुडी	जल जमुनी, फरीदबूटी	कोकुलस विलोसस (Coculus Villosus)
पारद	पारा	मर्करी (Mercury), हाइड्राजिरम (Hydrargyrum)
पारसीक यवानी	खुरासानी अजवाइन	हायोसाइमस निगर (Hyoscyamus Nigur)
पारिभद्र	जलनीम	एरिथ्रिना इण्डिका (Erythrina Indica)
पारिश	पारीस पीपल	हिबिस्कस (Hibixus)
पालक्य	पालक शाक	स्पाइनेज (Spinage)
पित्तल	पीतल	ब्रास (Brass)
पिप्पलीमूल	पिपरामूल	पीपररूट (Piper Root)
पिप्पली	पीपर	लोंग पीपर (Long pepper)
पीलु	पीलु, झल	साल्वेडोरा पार्सिका (Salbadora Persica)
पुत्रजीव	पितौंजिया	राक्सब्युर्हि (Roxburghii)
पुदीना	पुदीना	मेंथा सिल्वेस्ट्रिस (Mentha Sycvestris)
पुष्करमूल	पोखरमूल	इनुला रेसोमोसा (Inula racemosa)
पुष्पराग	पुखराज	टोपाज (Topag)
पृश्निपर्णी	पिठवन	यूरेरिया लेगेपोइडस (Uraria Lagapoides)

पोतकी	पोय	बेसिला एल्बा (Basella Alba)
प्रवाल	मूगा	रेडकोरल (Red Coral), कोरेलियम रूब्रम् (Coralium Rubrum)
प्रसारिणी	गधाली	पाडेरिया फुटिडा (Paderia Foetida)
प्राचीनामलक	पानी आँवला	फ्लैकोर्टिया कैटेफ्रेक्टा (Flacourtia Cataphracta)
प्रियंगु	प्रियंगु	अग्लेना राक्सबर्घियना (Aglaina Rox Burghiana)
प्रियाल	चिरौंजी	बुचेनेनिया लैटिफोलिया (Buchanania Latifolia)
प्लक्ष	पाकड़	फिकस इन्फेक्टोरिया (Ficus Infectoria)
(फ)		
फलेन्द्र	बड़ी जामुन	जाम्बुल ट्री (Jambul tree), यूजिनिया जाम्बुलान (Eugenia Jambolana)
(ब)		
बकुल	मौलसिरी	सुरिनेम मेड्लर (Surinam Medlar)
बदर	बेर	प्लम (Plum)
बन्धूक	दुपहरिया	पेण्टापेटिस फिसिया (Pantapetes Phaencea)
बला	बरियरा	सेडा कार्डिफोलिया (Ceda Cardifolia)
बहुला	बड़ी इलायची	लार्ज कार्डेमम (Large cardamum)
बहुवार	लिसोड़ा	सिबेस्टीन (Sebesten), कार्डिया मिक्सा (Cardia Myxa)
बालक	सुगन्धवाला	पेवोनिया ओडोरेटा (Pavonia Odorata)
बालुका	रेत, बालू	सैण्ड (Sand), सिलिका (Silica)
बिम्बी	कुन्दुरु	काक्सीनिया इण्डिका (Coccinia Indica)
बिल्व	बेल	इगिल मार्मेलस (Aegle Marmelos)
बीजपूर	चकोतरा	साइट्रस डेकुमेना (Citrus Decumana)
बीजपूर (मातुलुंग)	बिजोरा नीबू	साइट्रस एसिडा (Citrus acida)
बृहती	बनभण्टा, बड़ीकटेरी	सालेनम इण्डिकम (Salanum Indicm)
बृहन्ती	जमालगोटा	क्रोटन टिग्लियम (Croton Tiglium)
बृहद्दन्ती	बड़ी दन्ती	जेट्रोफा (Jatropha)
बोल	हीरा बोल	मिर्ह (Myrrha)

ब्राह्मी	ब्राह्मी	हाइड्रो कोटाइल एसिआटिका (Hydro Cotyle Asiatica)
(भ)		
भंगा	भांग, विजया	कैनेबिस इण्डिका (Canabis Indica), इण्डियन हेम्प (Indian Hemp)
भार्गी	भारंगी, बभनेटी	क्लीरोडेन्ड्रम सिरेटस (Clerodendrum Serratum)
भद्रमुंज	सरपत	सैकेरम आरुण्डिनेसीयम (Saccharum Arundinaceum)
भल्लातक	भेलावा	सेमीकार्पस एनाकार्डियम (Semicarpus Anacardium)
भूतृण	शरवाण, गंधतृण	एण्ड्रोपोजन साइट्रेटस (Andropogon Citratus)
भूमिसह	सागवन	टेक्टोना ग्रैण्डिस (Tectona grandis)
भूम्यामलकी	भूई आमला	फाइलैंथस नाइरूरी (Phyllanthus Niruri)
भूर्जपत्र	भोजपत्र	बर्च (Birch), बेटुलायुटिलिस (Betulautilis)
भृङ्गराज	भंगरैया, भांगरा	एक्लिप्ट एल्बा (Eclipta Alba)
(म)		
मंकुष्ठ	मोथी	फेसिओलस एकोनाइट फेलियस (Phaseolus Aconite Felius)
मखान्न	मखाना	यूरियेली फेराक्स (Euryale Ferox)
मञ्जिष्ठा	मजीठ	रुबिया कार्डिफोलिया (Rubia Cordifolia)
मण्डूर	मण्डूर,	मण्डूर (Mondoor)
मदनक	मोम	यलो वेक्स (Yellow Wax)
मदन	मैनफल	रेण्डिया डुमेटोरम (Randia Dumetorum)
मधु	शहद	हनी (Honey)
मधूक	महुवा	बेसिया लैटिफोलिया (Bassia Latifolia), इलूपा ट्री (Elloopa Tree)
मनोगुप्ता	मैनसिल	आर्सेनिक सल्फेडम (Arsenic Sulphadum)

मयूर शिखा	मोरशिखा	सिलोसिया क्रिस्टेटा (Celosia Cristata)
मरिच	काली मरिच	ब्लैक पीपर (Black Peper)
मरुवक	मरुवा	स्वीट मार्जोरम (Sweet Marjoram)
मलयू	कठूमर	फिकस हिस्पाइडा (Ficus Hispida)
मसूर	मसूर	लेण्टिल (Lentil)
महाकोशातकी	नेनुवा, बड़ी तरोई	लुफा इजिप्टिका (Luffa Aegyptica)
महानिम्ब	बकायन	इण्डियन लिलाक (Indian Lilac)
मीठानिम्ब	मीठानिम्ब	मुरिया कोर्निजी (Murya Kornji)
महाभरीवचा	कुलञ्जन	जिंजिबर जिरम्बेट (Zingiber Zirumbet)
माचिका	कुडुम	हिबिस्कस कैनेबिनस (Hibiscus cannabinus)
माणिक्य	मानिक	रुबी (Ruby)
माधवी	बसन्ती	क्लस्टर्ड हिप्टेज (Clustered Hiptage)
मानक	मानकन्द	एलोकेसिया इण्डिका (AlocasiaIndica)
मार्कण्डिका	सनाय	कण्ट्री सीना (Country Senna)
माष	उड़द	फेशिओलस रेडिएटस (Phaseolus Radiatus)
माषपर्णी	जंगली उड़द	टिरेनंस लेबियलिस (Teramnus Labialis)
मांस	मांस	मीट (Meat), फ्लेश (Flesh)
मिष्टनिम्बू	शरबती नीबू	स्वीट लेमन्स (Sweet Lemons)
कर्मरंग	कमरख	गूज बेरी ट्री (Goose Berry Tree)
मिष्टतुम्बी	लौकी, कद्दू	कुकुरबिटा लैजिनेरिया (Cucurbita Lagenaria)
मुचुकुन्द	मुचकुन्द	टेरोस्पर्मम स्युपर फोलियम (Pterospermum super folium)
मुण्डी	गोरखमुण्डी	स्फीरेन्थस इण्डिकस (Sphaeranthus Indicus)
मुद्गपर्णी	जंगली मूंग	फैसियोलस ट्रिलोबस (Phaseolus Trilobus)
मुशली तालमूली,	मूसली	क्लोरोफिटम आरण्डिनेसियस (Chlorophytum Arundinaceum)
मुस्तक	मोथा	साइपेरस रोटण्डस (Cyparus Rotundus)

मूर्वा	मूर्वा	स्वीट मार्जोराम (Sweet Marjoram)
मेथिका	मेथी	फेनुग्रीक (Fenugreek)
मेथिका (वन)	जंगली मेथी	ट्रिफोलियम इण्डिकम (Trifolium Indicum)
मेषशृंगी	मेढाशिङ्गी	जिनेमसिल्वेस्ट्री (Gynnemasylvestre)
मोचफल	केला, कदली	प्लान्टेन (Plantain)
मोचरस	सेमर का गोंद	गम-आफ सिल्क काटन ट्री (Gum of Silk cotton Tree)
मौक्तिक	मोती	पर्ल (Pearl)
(य)		
यवक्षार	जवाखार	पोटेशियम कार्बोनेट (Potassium Carbonate)
स्वर्जिकक्षार	सज्जीखार	सोडा कार्बोनेट (Soda Carbonate)।
सूर्यक्षार	सोरा	पोटेशियम नाइट्रास (Potassium nitras)
यवानिका	अजवायन	अजोवान (Ajowan)
यव	जौ	बार्ली (Barley)
यवनाल	ज्वार	ज्वार (Jwar)
यवासा	जवासा	अल्हेगी मौरोरम (Alhagi Maurorum)
दुरालभा	हिंगुआ	फैगोनिया अरेबिका (Fagonia Arabica)
यष्टीमधु	मुलेठी	ग्लिसराइजा ग्लैब्रा (Glyoyrrhiza glabra)
यशद	जस्ता	जिंक (Zinc)
यूथिका	जूही	जैस्मिनम आरिकुलेटम (Jasminum Auriculatum)
(र)		
रक्तचन्दन	लालचन्दन	रेडसैण्डल उड (Redsandal wood)
रक्तपुनर्नवा	लालगदहपुर्ना	बोर्हिविया डिफ्यूजा (Boerhaevia Diffusa)
रक्तशालि	लालचावल	रेड राइस (Red Rice)
रक्तापामार्ग	लालचिचिड़ी	रेड एचिरैंथिस एस्पेरा (Red Achyranthes Aspera)
रजत	चान्दी, रूपा	सिल्वर (Silver), आर्जेण्टिकम (Arganticum)

रसांजन	रसवत	वारबेरिस आरिस्टेटा (Barberis Aristata)
रसोन	लहसुन	गर्लिक रूट (Garlic Root)
राजकशेरुक	छोटा कसेरु, चिचोड़ा	साइपरस एस्क्यूलेण्टस (Cyperus Esculentus)
राजकोशातकी	तरोई	लुफा एक्युटैंगुला (Luffa Acutangula)
राजादन	खिरीन, खिरनी	माइमुसोप्स हेक्सेड्रा (Mymusops Hexadra)
राजावर्त	लाजवत	लैपिस लौजुली (Lapis Lazuli)
राजिका	राई	ब्रैसिका जून्सिया (Brassica Juncea)
राल	राल	यलोरेजिन (Yellow Resin)
रास्ना	रसना	इनुला रैसिमोसा (Inula Racemosa)
कण्टकरंज	कट कलेजा	बोण्डूक नट (Bonduc nut)
रोहितक	रोहेड़ा	अमूरा रोहितुका (Amorra Rohituka)
(ल)		
लकुच	बड़हर	एंटियारिस लकूचा (Antiaris Lakoocha)
लघ्वीदन्ती	जमालगोटा	रूट आफ क्रोटन ट्री (Root of Croton Tree)
लज्जालु	छुईमुई, लजालु	माइमोसा पुडिका (Mimosa pudica)
लताकस्तूरी	मुष्कदाना	हाइबिस्कस आबेलमोस्कस (Hibiscus Abelmoschus)
लवङ्ग	लौंग	क्लव्ज (Cloves)
लवली	हरफारौरी	फाईलैंथस डिस्टिकस (Phylanthus Distichus)
लाक्षा	लाह, लाही	लाक (Lac)
लामज्जक	गुलाबकांटा	एण्ड्रोपोजन इवरन्कुसा (Andropogon Iwarancusa)
लोनी	नोनिया शाक	पोर्च्युलेकाक्वाड्रिफिडा (Portulacaquadrifida)
लोनी (बृहत)	बड़ी नोनी	पार्च्युलेका ओलेरेशिया (Portulaca Olerecea)
चांगेरी	चांगेरी	इण्डियन सोरेल (Indian Sorrel)

लौह	लोहा	आयरन (Iron), फेरम (Ferrum)
(व)		
वंश	बांस	बम्बू (Bamboo)
वंशलोचन	वंशलोचन	बम्बू मैन्ना (Bamboo Manna)
वंग	रांगा	टिन (Tin), स्टेनम (Stanum)
वचा	वच, घोड़वच	एकोरस कैलेमस (Acorus Calamus)
वट	बरगद	बेनियन ट्री (Banyan tree), फिकस बंगालेन्सिस (Ficus Bengalensis)
वटपत्री	पाषाणभेदी	सैक्सिफ्रैग एलाइगुटेटा (Saxifrag Al-igutata)
वत्सनाभ	मिठा विष, वच्छ-नाग, मिठा तेलिया	एकोनाइट (Aconite)
वन्दा	वन्दा	विस्कम एल्बम (Viscum Album)
वन्ध्याकर्कोटकी	बांझ खेखसा	मोमोर्डिका डायोका (Momordica Dioca)
वरुण	वरना	क्रेटिवा रेलिजिओसा (Crateva Relig-iosa)
बर्वरी	वनतुलसी	कामनस्वीट बेसिल (Cammon sweet Basil)
वाकुची	बकुची	सोरेलिया कारिलिफोलिया (Psoralea Corylifolia)
वाताद	बादाम	अलमण्ड (Almond)
वारि	जल	वाटर (Water), एक्वा (Aqua)
वाराहीकन्द	वाराहीकन्द	डायोस्कोरी सटिवा (Dioscorea Sativa)
गोधा	गोह	गोह (Goha)
वार्षिकी	मोगरा	जस्मिनम साम्बेक (Jasminum Sa-mbac)
वासक	अडूसा	आधाटोडा वासिका (Adhatoda Vasika)
वासन्ती	नेवारी, वसन्ती	जेस्मिनम आर्बेरीसिना (Jasminum Arberescena)
वास्तूक	वथुआ	चेनोपोडियम एल्बम (Chenopodium Album)

विकङ्कत	रामबबूर	फ्लैकोर्सिया रैमोंञ्चि (Flacourtia Ramontchi)
औषर	खारी नोन	सोडियम कार्बोनास (Sodium Carbonas)
विडङ्ग	बाभीरंग	एम्बेलिया राइब्स (Ambalia Ribes)
विभीतक	बहेडा	टर्मिनेलिया बेलैरिका (Terminalia Belerica)
वीरण	खस	एण्ड्रोपोजान स्क्वरोसस (Andropogon Squarrosus)
वृक्षाम्ल	तिन्तिडिक	गारसिनिया इण्डिका (Garcinia Indica)
वृद्धदारक	विधारा	आर्जिरिया स्पेसियोसा (Argyreia Speciossa)
वृन्ताक	भण्टा, बैंगन	ब्रिंजिल (Bringle)
वेल्लन्तरी	वीरतरु	डाइक्रोस्टेचिस सिनेरिया (Dichrostachys Cinerea)
वैदुर्य	लहसुनिया मणि	कैट्स आई (Cats Eye Stone)
(श)		
शंख	शंख	कांक (Conch)
शंखपुष्पी	शंखाहुली	कैनस्कोरा डेकुसेटा (Canscora Deccusata)
शणपुष्पी	सनई	क्रोटैलैरिया वेरुकोसा (Crotalaria Verrucosa)
शतपुष्पा	सोवा	डिल सीड्स (Dill Seeds)
शतमल्ल	सखिया	आर्सेनिक् आक्साइड (Arsenic Oxide)
शतपत्री	गुलाब	रोज (Rose)
शतावरी	सतावर	आस्पैरेगस रेसिमोस (Asparagus Racemos)
शमी	सफेद कीकर	स्पंज ट्री (Spunge Tree)
शरपुंखा	सरफोंका	पर्पिल टेफ्रोसिया (Parple Tephiosia)
शर्करा	खाण्ड	सुगर (Sugar)
शल्लकी	सलैया	बोस्वेलिया सेरेटा (Boswellia Serrata)
शशः	खरहा	हेयर (Hare)
शाखोट	सिहोड़	स्ट्रेब्लस आस्पर (Streblus Asper)

शाल	सालु	साल ट्री (Sal Tree)
शालपर्णी	सरिवन	डेस्मोडियमगंगेटिकम (Desmodium gangeticum)
शालफल	शालगाछ	साल ट्री (Sal tree)
शालभेद	बड़ाशाल	वटेरिया इण्डिका (Vateria Indica)
शालि	धान	राइस (Rice)
शाल्मली	सेमर	सिल्क काटन ट्री (Silk Cotton tree)
शिग्रु, शोभाञ्जन	सहिजन	ड्रम स्टिक (Drum stick)
शितिवार	सिरियारी	ब्लेफरीज एड्यूलिस (Blepharies Edulis)
शिम्बी	सेम	ब्लैक सीडेड डोलिकस (Black Seeded Dolichos)
शिरीष	सिरस, शिरीष	आल्बिज्जिया लेब्बेक (Albizzia Labback)
शिलाजतु	शिलाजीत	आस्फाल्ट (Asphalt), आस्फाल्टम पंजाबीनम (Asphaltum Punjabinum)
शिलापुष्प	छरिला	पारमेलिया परलेटा (Parmelia Perleta)
शिंशपा	सीसम	सिसू ट्री (Sisoo Tree)
शुक्लार्क	सफेद मदार	कैलोट्रोपिस प्रोसिरा (Calotropis Procera)
रक्तार्क	लाल मदार	कैलोट्रोपिस जाइगेंशिया (Calotropis Gigantia)
शुक्ल एरण्ड	रेंडी	कैस्टर आयल प्लाण्ट (Caster oil Plant)
शुक्ल जीरक	सफेद जीरा	क्यूमिनम साइमिनम (Cuminum Cyminum)
कृष्ण जीरक	काला जीरा	कारम कारुई (Carum Carui)
स्थूल जीरक	मंगरइल	नाइजेला सेटिवा (Nigella Sativa)
अरण्य जीरक	करजीरी	प्युर्पल फ्लीबेन (Purpale Fleabane)
शुण्ठी	सोंठ	जिंजिबेर आफिसिनेली (Zingiber Officinale)
शृंगाटक	७	ट्रैपाबिस्पिनोसा (Trapa Bispinosa)

शृंगी	काकड़ासिङ्गी	पिस्टेसिया इण्टिजिगिमा (Pistacia Integemma)
श्वेतखदिर	खैर, कत्था	कटेच्यु (Catechu)
श्यामाक	सांवा	पैनिकम फ्रुमेण्टेसियम (Panicum Frumentaceum)
श्यामात्रिवृत	काली निशोथ	ट्रिवृत (Trivrita)
श्रीवास	गन्धविरोजा	ओलियो रेजिन (Oleo Rasin)
श्वेतनिशोथ	निशोथ	टर्बेथ रूट (Turbeth Root)
श्वेत पुनर्नवा	सफेद गदहपुरना	ट्रिएंथिमा पेण्टैण्ड्रा (Trianthema Pantandra)
श्वेतकरवीर	सफेद कनइल	नेरिम ओडोरम (Nerim odorum)
रक्तकरवीर	लाल कनइल	,, ,, (,, ,,)
पीतकरवीर	पीली कनइल	,, थिवैर्सी (,, Thebaci)
श्वेत गुञ्जा	घुंघची	एब्रस प्रिकैटोरियस (Abrus Precatorius)
रक्तगुञ्जा	,,	,, ,, (,, ,,)
श्वेत मारिष	सफेद मरसा शाक	एमेरेण्टस पेनिकुलेटस (Amarantus Paniculatus)
रक्तमारिष	लालमरसा	एमेरेण्टस गैंजिटिकस (Amarantus-Gangetious)

(स)

संस्वेदज	कुकुरमुत्ता, सांप की छतरी	म्यूश्रुम (Mushroom)
सप्तपर्ण	छतिवन	आल्स्टोनिया (Alstonia)
स्वर्णमाक्षिक	सोनामाखी	फेरीसल्फुरेटम (Ferry sulphuretum)
सिन्दूर	सेंदुर	रेड लेड (Red Lead)
समुद्रफेन	समुद्रफेन	क्युटिल फिस बोन (Cutle Fish Bone)
सरल	चीढ	पाइनस लांगिफोलिया (Pinnas Longifolia)
सर्पाक्षी	सरहटी	मोंगूज प्लाण्ट (Mongoose Plant)
स्थलकमलिनी	स्थल कमल	आयोनिडियम सफ्फ्रूटिकोसम (Ionidium Suffrutioosam)
सामुद्रलवण	समुद्रीनोन	साल्ट (SeaSalt)

सैन्धव	सेंधानमक	सोडियम क्लोराइडम (Sodium Chloridum)
सौवर्चल नमक	कालानोन	ब्लैक साल्ट (Black Salt)
सावरलोध्र	लोध	सिम्प्लोकस रेसिमोसा (Symplocos Racemosa)
सिता	चीनी	प्योरिफाइड सुगरकैण्डी (Purified Sugarcandy)
सितोपला	मिश्री	,, ,, ,,
सिन्दूवार	सम्भालु	वाइटेक्स ट्रिफोलिया (Vitex Trifolia)
सिह्लक	शिलारस	लिक्विड एम्बर (Liquid Amber)
सीसक	शीशा	लेड (Lead), प्लम्बम (Plumbum)
सुदर्शन	सुदर्शन	टिनोस्पोरा टोमेण्टोसा (Tinospora Tomentosa)
छुहारा	छुहारा	डेट पाम (Date-Palm)
सुवर्ण	सोना	गोल्ड (Gold), आरम (Ourum)
सुवर्चला	हुरहुर	वाइल्ड मस्टर्ड (Wild Mustard)
सेव	सेव	एपुल (Apple)
सेहुण्ड	थूहर, सेंहुड	प्रिक्ली पीयर (Prickly Pear), यूफोर्बिया नेरिफोलिया (Euphorbia Nerifolia)
सातला	पीले दूध का सेहुण्ड	एकेसिया कान्सिना (Acacia Concina)
सैरेयक	कटसरैया श्वेत	बारलेरिया ग्रेण्डिफ्लोरा (Barleria Grandiflora)
कुरवक	,, लाल	बारलेरिया सिलिएटा (Barleria Ciliata)
आर्तगल	,, नीली	बारलेरिया क्रिस्टेटा (Barleria Cristata)
सोमलता	सोमलता	मून प्लाण्ट (Moon Plant)
सौभाग्य	सोहागा	बोरेक्स (Borax)
सौराष्ट्री	गोपीचन्दन	एलुमिनम सिलिकेट (Aluminum Silicate)
स्पृक्का	असवरग	ट्रिफोलियम आफिसियनली (Trifolium Officinale)

स्फुटिका	फिटकिरी	एलम (Alum)
स्योनाक	सोनापाठा	आरोक्जिलम इण्डिकम (Oroxylum Indicum)
स्वर्णजाति	चमेली	स्पैनिश जेस्मिन (Spanish Jasmine)
(ह)		
हंसपदी	लाललज्जालु	मैडेन हेयर (Maiden Hair)
हपुषा	हाऊबेर	जूनिपर (Juniper)
हरिचन्दन	हरिचन्दन	सैण्टेलम फ्लोनम (Santalum Flonum)
हरिताल	हरताल	यलो आर्सनिक (Yellow arsenic)
हरिद्रा	हल्दी	टर्मेरिक (Termeric)
हरीतकी	हरड़	चेब्युलिया (Chebulia)
हिंगुल	सिंगरफ, हिंगुल	मर्करी सल्फ्यूरेट (Mercury Sulphurate)
हिंगुपत्री	बहुफली	कार्कोरस एण्टिकोरस (Corchorus Antichorus)
हिलमोचिका	हुरहुर	एन्हाइड्रा फलैन्क्टस (Enhydra Flanctus)
हीरक	हीरा	डाइमण्ड (Diamond)
हीवेर	सुगन्धबाला	पेवोनिया ओडोरेटा (Pavonia Odorata)
(क्ष)		
क्षार	खार	अल्कलीज (Alkalies)
क्षुद्रान्त्रीरस	आँतों के अन्दर का रस	सकस एण्टरिकस (Succus Enitericus)
क्षीवन्ती	बड़ी जीवन्ती	डेण्ड्रोबियम मैक्री (Dendrobium Macrae)
आकारकरभ	अकरकरा	पैलेटरी रूट (Pallatory Root)
पुष्पाञ्जन	पुष्पाञ्जन	जिंक आक्साइड (Zinc Oxide)
कांच	शीशा, कांच	ग्लास (Glass), ग्लेसम (Glesum)
सूर्यकान्त	चकमक शीशा	मेग्नीफाइंग ग्लास (Magnifying glass)
मुक्ताशुक्ति	सीप	शेल फिश (Shell Fish)

जलशुक्ति	जल सीप	शेल (Shell)
पेरोज	फिरोजा, पिरोजा	टर्कोयस (Turkois)
चुम्बक	चुम्बक	मैग्नेट (Magnate)
राजमाष	बोरा, बोड़ा,	चायनीज डालीकस (Chinese Dolicus)
निष्पाव	राजशिम्बिका बीज	लैब्लब वल्गेरिस (Lablab Vulgaris)
चणक	चना	ग्राम (Gram)
त्रिपुट	खेसारी	चिक्लिंग वेच (Chickling Vetch)
तिल	तिल्ली	सिसेमम इण्डिकम (Sisamum Indicum
अकाय	मक्का	मेज़ (Maize)
पोतकी	पोय	बेसिला एल्बा (Basella Alba)
कालशाक	नरिचा, करेमु	कारकोरस कॅप्सुलरिस (Corchorus Capsularis)
कलम्बी	कलम्बी या करेमु शाक	आइपोमिया एक्वेटिका (Ipomia Aquatica)
पट्टशाक	पटुए का शाक	कर्कोरस आलिटोरिस (Corchorus Alitoris)
चिचिण्डा	चिचिंड़ा	स्नेक गार्ड (Snake Gourd) ट्रिकोसेंथिस एंग्वाइना (Trichosanthes Anguina)
रक्तालु	अरुई	आलोकेसिया एण्टिकोरम (Alocasia Antiquorum)
मूलक	छोटीमूली	रेडिस (Radish)

'व्याधियों की नामावली' (Names of Diseases)

व्याधियों के प्रकार

(१) औपसर्गिक (Infectious)

(२) अनौपसर्गिक (None Infectious or General diseases)

औपसर्गिक की व्यवस्था

जो व्याधियाँ परस्पर संसर्ग से वा दूषित जल, वायु तथा खाद्य पदार्थों के सेवन से उत्पन्न होती हैं, उन्हें औपसर्गिक (Infectious) व्याधि कहते हैं। जैसे विसूचिका (Cholera), रोहिणी (Diphtheria), आदि।

व्याधि प्रसारक वस्तु तथा उनसे होने वाली व्याधियों की तालिका

व्याधि प्रसारक वस्तु	व्याधियां
वायु (Air)	राजयक्ष्मा (Phthisis), श्लैष्मिक ज्वर (Influenza), रोहिणी (Diphtheria), माता (चेचक) (Smallpox), काली खाँसी या कुक्कर खाँसी (Whooping cough), वायव्य अग्नि रोहिणी (Pneumonic Plague), रोमान्तिका (Measles), और आमवात (Rheumatism), पाषाण गर्दभ (Mumps).
जल (Water)	आन्त्रिक ज्वर (Enteric fever या Typhoid), अतिसार (Dysentary), प्रवाहिका (Diarrhoea), विसूचिका (Cholera).
भोजन (Food)	आन्त्रिक ज्वर या मोतिझरा (Typhoid), उपान्त्रिक ज्वर (Para Typhoid), अतिसार (Dysentary), प्रवाहिका (Diarrhoea), विसूचिका (Cholera).
दुग्ध (Milk)	राजयक्ष्मा (Phthisis), आंत्रिक ज्वर (Typhoid), उपांत्रिक ज्वर (Para-Typhoid), अतिसार (Dysentary), प्रवाहिका (Diarrhoea), विसूचिका (Cholera), माल्टा ज्वर (Malta fever), लोहित ज्वर (Scarlet Fever).
मक्खी (Flies)	आंत्रिक ज्वर (Typhoid), उपांत्रिक ज्वर (Para Typhoid), अतिसार (Dysentary), प्रवाविका (Diarrhoea), विसूचका (Cholera).
मच्छर (Mosquitoes)	विषम ज्वर (Malaria), पीत ज्वर (Yellow Fever), दण्डक ज्वर (Dengue Fever).
चूहे (Rats)	अग्निरोहिणी या प्लेग (Plague), मूंसिकदंश ज्वर (Rat-bite Fever)
खटमल	कालाजार (Kala-azar), पुनरावर्तक ज्वर (Relapsing Fever)
जूँ (Louse)	पुनरावर्तक ज्वर (Relapsing Fever)

औपसर्गिक व्याधियाँ
(Infectious Diseases)

व्याधिनाम	संचय काल (In. P.)	विस्फोट समय (T. E)	विस्फोटकाल (D. E.)	संक्रमण काल (I. P,)	पृथकत्व काल (Q. P.)
(१) माता (Small pox)	१०से१४ दिन	ज्वर के तीसरे दिन से प्रारम्भ	२ से ३ सप्ताह तक	६ सप्ताह	सम्पूर्ण खुरण्डो (Scabs) के गिर जाने के पश्चात् ४९ दिन तक
(२) स्वकमसूरिका (Chicken pox)	४ दिन	ज्वर के दूसरे दिन से प्रारम्भ	७ दिन तक	३ सप्ताह	व्याधिप्रारम्भसे२१दिनतक
(३) रोमान्तिका (Measles)	१० दिन	ज्वर के चौथे दिन से प्रारम्भ	९से१०दिनतक	२० दिन	कास तथा दाने के लुप्त होने पर व्याधि के प्रारम्भ से १८ दिन तक
(४) विसूचिका (Cholera)	कुछ घण्टों से ६ दिन	—	—	अतिसार के पूर्णबंद होने से ७ दिन	१२ दिन तक
(५) आन्त्रिकज्वर (Typhoidfever)	१४ दिन	ज्वर के चौथे दिन से प्रारम्भ	२० दिन	६ सप्ताह	—
(६) रोहिणीज्वर (Diphtheria)	५ दिन	—	—	६ सप्ताह	सम्पूर्ण लक्षणों के लुप्त होने पर ६ सप्ताह
(७) श्लैष्मिकज्वर (Influenza)	३ से ४ दिन	—	—	ताप तथा नासास्राव शान्ति के पश्चात् ३ दिन	५ दिन

औपसर्गिक व्याधियाँ
(Infectious Diseases)

व्याधिनाम	संचय काल (In P)	विस्फोट समय (T E)	विस्फोटकाल (D E)	संक्रमण काल (I, P.)	पृथक्करण काल (Q P)
(८) पाषाणगर्दभ (Mumps)	१४से२१दिन	—	—	८ सप्ताह	सम्पूर्ण शोथ लुप्त होने के पश्चात् २१ दिन
(९) कूकर खाँसी या काली खाँसी (Whooping cough)	१० दिन	—	—	६ सप्ताह	कास बंद होने के पश्चात् ४२ दिन
(१०) अग्निरोहिणी (Plague)	२ से ८ दिन	—	—	१ मास	२१ दिन
(११) लोहितज्वर (Scarlet fever)	६ दिन	ज्वर के दूसरे दिन	५ से १० दिन	६ सप्ताह	सम्पूर्ण लक्षणों के शांत होने के पश्चात् ६ सप्ताह
(१२) पुनरावर्तकज्वर (Relapsing fever)	२ से १२ दिन	—	—	—	अन्तिम आक्रमण के पश्चात् ११ दिन तक
(१३) दण्डक ज्वर (Dengue)	३ से ६ दिन	५ वें दिन	२ से ८ दिन	—	७ दिन
(१४) विसर्प (Erysipelas)	७ दिन	ज्वर के दूसरे दिन	अनिश्चित काल	—	व्याधि समाप्ति के बाद १२ दिन तक

संक्रामक रोगों से बचने के साधारण उपाय

(१) संक्रमित व्यक्ति से दूर रहना।

(२) संक्रामक रोगों के प्रसार के समय रोगों का टीका ले लेना।

(३) संक्रमित व्यक्ति को अलग तथा स्वच्छ वायुदार कमरे में रखना।

(४) संक्रमित व्यक्ति के व्यवहरित वस्तुओं को यदि बहुमूल्य न हों तो नष्ट कर देना तथा बहुमूल्य वस्तुओं को पूर्णरूप से विसंक्रमित करके रखना।

(५) संक्रमित व्यक्ति के मूत्र तथा थूक को बंद रखना चाहिये तथा उन्हें जला देना चाहिये वा जमीन में गाड़ देना चाहिये।

(६) खाने पीने की वस्तुओं को सदा ढका रखना चाहिये।

अब विभिन्न व्याधियों से बचने के विशिष्ट उपायों का वर्णन पृथक पृथक किया जा रहा है।

विसूचिका (Cholera)

आजकल भारतवर्ष में विसूचिका का प्रकोप महामारी (epidemic) के रूप में बहुत ही भयानकता के साथ हो रहा है, प्रतिवर्ष लाखों व्यक्ति इस महामारी के शिकार हो रहे हैं। अतः इसके विषय में विशद रूप से जानना अति आवश्यक है।

विसूचिका कामा बैसिलस (Comma Bacillus) नामक सूक्ष्म जीवाणु से उत्पन्न होता है, जो रोगी के मल और वमन में उपस्थित होते हैं। ये जीवाणु एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक खाने पीने की वस्तुओं में होकर पहुँचते हैं। इनका प्रसार घरेलू मक्खियों द्वारा होता है। मक्खियों का यह स्वभाव होता है, कि ये बहुत खाने वाली होती है और जिन वस्तुओं पर बैठती हैं वही खाना ढूढ़ने लगती हैं। जब ये रोगी के त्यक्त मल और वमन पर बैठती हैं तो उस व्यक्ति के जीवाणु इसके पैर और पंखों में लग जाते हैं और जब अन्य स्थान पर भोज्य सामग्रियों पर बैठती हैं तो वही जीवाणु इस भोज्य पदार्थ को दूषित कर देते हैं और विसूचिका (Cholera) उत्पन्न कर देते हैं।

विसूचिका प्रसार का दूसरा साधन जल है। अज्ञानतावश जब रोगी के मल मूत्र तथा वमन से दूषित वस्त्र को कूए पर साफ करते हैं, तो उसके छींटे कूएं के जल में पड़ते हैं और उनके साथ जीवाणु कूए में चले जाते हैं, जिससे जल दूषित होकर व्याधि जनक हो जाता है।

विसूचिका से बचने के उपाय

(१) विसूचिका (Cholera) का टीका लगवा लेना चाहिये।

(२) महामारी के दिनों में खाद्य पेय की वस्तुओं को गरम, गरम खाना चाहिये।

(३) कुओं में ब्लीचिंग पाउडर (Bleaching-powder) या पोटाश परमागनेट (Potass permangnate) डालकर जल को विसंक्रमित कर लेवे।

(४) महामारी के दिनों में बाजार की खुली रखी हुई मिठाइयों तथा पूड़ियों का त्याग करना चाहिये।

(५) हरे, कच्चे या सड़े गले फल या साग नहीं खाना चाहिये।

(६) महामारी के समय अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिये।

(७) महामारी के समय तीव्र विरेचन नहीं लेना चाहिये।

(८) महामारी के समय उपवास हानिकारक होता है; अतः उस समय खाली पेट नहीं रहना चाहिये।

(९) खाद्य, पेय की समस्त वस्तुओं को सर्वदा ढक कर रखना चाहिये।

(१०) संक्रमित व्यक्ति को पृथक घर में रखना चाहिये।

(११) संक्रमित व्यक्ति की व्यवहृत वस्तुओं को यथायोग्य उबालकर या हाइकोल (Hycol) या सायलीन (Cyllin) के घोल से विसंक्रमित कर देना चाहिये।

(१२) रोगी के कमरे तथा पाखाने को हाइकोल (Hycol) या सायलीन (Cyllin) के घोल से धो देना चाहिये।

(१४) रोगी के मल मूत्र तथा वमन को मीजन में गाड़ देना चाहिये या जला देना चाहिये।

(१५) मकान कच्चा हो तो उसके फर्श पर चूना छिड़कवा देना चाहिये।

(१६) रोगी के मल आदि से दूषित वस्त्र को कूएं पर नहीं साफ करना चाहि।

(१७) सार्वजनिक कूएं पर एक कहार पानी निकालने के लिये निश्चित कर देना चाहिये। जिससे उसके सिवा कोई दूसरा व्यक्ति कुएं से पानी न निकाल सके, ऐसा करने से जल दूषित नहीं होगा; जिससे व्याधि प्रसार नहीं हो सकता।

जल विसंक्रामक द्रव्यों की नामावली

(१) पोटाश परमाग्नेट (Potass permangnate):—यह

कूएं के जल को विसंक्रमित (Disinfect) करने के लिये ½ ग्रेन प्रति गैलन की शक्ति में व्यवहृत किया जाता है अर्थात् जिस कुएं में ६ फीट जल है उस कुएं में १ औंस या ½ छटॉक पोटाश एक बाल्टी पानी में घोलकर कुएं में डालकर खूब हिला देते हैं ताकि सम्पूर्ण जल में पोटाश भली भाँति मिल जाय।

(२) ब्लीचिंग पाउडर (Bleaching powder):—इसकी शक्ति पोटाश परमाग्नेट (Ptass permangnate) की अपेक्षा कम होती है। एक कुएं के लिये जिसमें ६ फीट गहरा जल है २ औंस या १ छटॉक पाउडर (Powder) की आवश्यकता होती है।

(३) स्फटिका (Alum):—यह अल्प राशि जल को विसंक्रमित करने के लिये बहुत ही उत्तम होता है। एक गैलन (Gallon) में ६ ग्रेन स्फटिका की आवश्यकता होती है।

(४) निर्मली—यह जल में मिश्रित गन्दगी को काटकर तल में बैठा देती है।

(५) क्विकलाइम (Quicklime):—एक गैलन (Gallon) जल के लिये २ औंस चूर्ण (Lime) की आवश्यकता होती है। इसका उपयोग अल्प राशि के जल को विसंक्रमित करने के लिये होता है।

इनके अतिरिक्त क्लोरीन गैस (Chlorine gas), सिलिण्डर (Cylinders), सोडियम हाइपोक्लोराइट (Sodium Hypochlorite), फ्री आयोडीन (Free Iodine) आदि भी जल को विसंक्रमित करने के लिये व्यवहृत होते हैं।

अग्निरोहिणी या प्लेग (Plague)

यह रोग महामारी के रूप में बहुत ही भीषणता के साथ फैलता है। इससे भी आधुनिक काल में बहुत ही मृत्यु देखी जाती है। यह अधिकतर शीतकाल में होता है, जो ग्रीष्मकाल के प्रखर रोशनी तथा भीषण गरमी में लुप्त हो जाता है।

प्लेग एक प्रकार के जीवाणुओं से उत्पन्न होता है, जिसको बैसिलस पेष्टिस (Bacillus pestis) कहते हैं। इस व्याधि का प्रधान लक्षण तीव्र ताप तथा लसिका ग्रन्थियों का शोथ है। इसके जीवाणु एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पिस्सू या वायु द्वारा जाते हैं। ये पिस्सू चूहों पर होते, जब चूहों को प्लेग हो जाता है तब वे मरने लगते हैं और ये पिस्सू अपना खाना ढूढ़ने के लिये मनुष्यों पर आक्रमण करते हैं और व्याधि उत्पन्न हो जाती है।

प्लेग साधारणतः २ प्रकार का होता है । एक ग्रंथि प्रकार (Bubonic Type) तथा दूसरा श्लैष्मिक प्रकार (Pneumonic Type) । श्लैष्मिक प्रकार (Pneumonic Type) रोगी के थूक के सूख जाने पर वायु द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचता है । यह प्रकार बहुत ही भयानक होता है ।

प्लेग से बचने का उपाय—

(१) महामारी के समय प्लेग (Plague) का टीका लगवा लेना चाहिये । इससे कम से कम ६ मास तक क्षमता रहती है ।

(२) अनाज आदि को ढक कर रखना चाहिये, ताकि चूहे न रह सकें।

(३) गोदाम पक्का होना चाहिये ।

(४) चूहे दानी का व्यवहार करना चाहिये या बेरियम कार्ब की गोली का व्यवहार करना चाहिये । ऐसा करने से चूहे घर छोड़ कर भाग जायेंगे ।

(५) जिस मकान या गॉव में प्लेग फैल गया हो उस गॉव को छोड़ कर बाहर छप्पर में रहना चाहिये ।

(६) सब जगह सूर्य प्रकाश जाने देना चाहिये और वस्तुओं को सूर्य प्रकाश में सुखा लेना चाहिये, क्योंकि प्लेग के जीवाणु अल्प गर्मी से ही मर जाते हैं ।

(७) घर में लोहवान वा नीम की पत्ती जलाना चाहिये ।

(८) संक्रमित व्यक्ति को पृथक रखना चाहिये ।

(९) मकान के फर्स को जीवाणु नाशक द्रव्यों से धुलवाना चाहिये ।

(१०) पैर में ऊँचे ऊँचे मोजे पहिनना चाहिये, क्योंकि पिस्सू ४ से ५ इञ्च तक उछल सकते हैं, अतः मोजे पहिनने से पिस्सूओं के काटने का भय कम रहता है ।

माता (Small Pox)

यह शैशव काल में होने वाली अति भयानक औपसर्गिक महामारी है । इसमें मृत्यु के अतिरिक्त अन्धता तथा कुरूपता अधिक होतीहै । इसके धब्बे जीवन पर्यन्त रहते हैं । यह संक्रामक व्याधि है जो वायु, तथा दूषित वस्त्रों से फैलती है । यह युवावस्था में भी होती है । इसकी तीव्रता तथा भयानकता हर अवस्था में एक सी ही होती है ।

मसूरिका (Small Pox) के जीवाणु का अभी तक ज्ञान नहीं हो पाया है ।

मसूरिका से बचने का उपाय

(१) टीका लेना। माता का टीका दो बार अवश्य लगवा लेना चाहिये। एक जब बच्चा ६ मास के अन्दर रहे तब; दूसरा १२ साल के अन्दर तक। ऐसा करने से माता के आक्रमण का भय दूर रहता है। यदि कदाचित आक्रमण हो भी जाता है तो तीव्रता कम होती है।

(२) घर में धूप, लोहवान आदि जलाना चाहिये।

(३) घर को साफ सुथरा रखना चाहिये।

(४) रोगी से पृथक् रहना चाहिये।

(५) रोगी व्यक्ति के सम्पर्क में रहने वाली वा उससे व्यवहृत होने वाली वस्तुओं का त्याग करना चाहिये।

(६) रोगी के वस्त्रों को सर्वदा उबालकर विसंक्रमित कर लेना चाहिये।

(७) रोगी को अलग हवादार तथा स्वच्छ कमरे में रखना चाहिये।

(८) रोगी के सम्पर्क में किसी को नहीं जाने देना चाहिये।

(९) पिड़िका से दूषित वस्त्र को यदि वे मूल्यवान न हो तो जला देना चाहिये अन्यथा अन्य प्रकार से विसंक्रमित कर लेना चाहिये।

इसी प्रकार रोमान्तिका (Measles), कुकुर खाँसी या काली खाँसी (Whooping Cough), रोहिणी (Diphtheria) तथा श्लैष्मिकक ज्वर (Influenza) आदि संक्रामक व्याधियों में भी स्वस्थ बालक को रुग्ण बालक से पृथक् रखना चाहिये। रुग्ण बालक के व्यवहृत खिलौने, तौलिया, वस्त्र तथा वर्तनों को स्वस्थ बालक के सम्पर्क में नहीं लाना चाहिये; क्योंकि ये व्याधियाँ वायु द्वारा अधिक प्रसारित होती हैं और इनके जीवाणु लाला, नासास्रावादि में रहते हैं, जिसके व्यवहार से व्याधि उत्पन्न हो जाती है। इसके अतिरिक्त स्वस्थ बच्चे को व्याध्यनुसार वैक्सीन (Vaccine) का टीका लगवा लेना चाहिये। इससे शरीर में क्षमता अधिक हो जाती है और व्याधि होने की सम्भावना दूर हो जाती है।

आन्त्रिक ज्वर (Typhoid Fever)

आन्त्रिक ज्वर (Typhoid fever), वैसिलस टाइफोसस (Bacillus Typhosus) नामक जीवाणुओं से होने वाला रोग है। यह बहुत भयानक व्याधि होती है, जिसमें क्षुदान्त्रों में दाने पड़ जाते हैं। इसका विशिष्ट लक्षण तीव्र

प्रकार का दीर्घ कालिक ज्वर के साथ साथ शरीर पर लाल रंग के दानों का निकलना होता है। इसमें विशिष्ट रंग का अतिसार भी होता है।

आंत्रिक ज्वर के जीवाणु, रोगी के मल, मूत्र, थूक तथा रक्त में मिलते हैं; अतः यह व्याधि दूषित खाद्य पेय के द्वारा संक्रमित होती है। यह बहुत ही भयानक व्याधि होती है इसका अत्यधिक आक्रमण शहरों में देखा जाता है। इसमें मृत्यु संख्या भी अधिक होती है।

आंत्रिक ज्वर से बचने का उपाय

(१) आंत्रिक ज्वर (Typhoid) का टीका लगवा लेना चाहिये, जिसे टाइफाइड वैक्सीन (Typhoid Vaccine) कहते हैं।

(२) जल को विसंक्रमित करके पीना चाहिये।

(३) कच्चे हरे शाक, सड़े, गले फलों का त्याग करना चाहिये।

(४) संक्रमित व्यक्ति को पृथक हवादार कमरे में रखना चाहिये।

(५) रोगी के मल मूत्र को गाड़ देना चाहिये वा जला देना चाहिये।

(६) रोगी के मल, मूत्र से दूषित वस्त्र को उबाल देना चाहिये।

(७) खाद्यपेय की वस्तुओं को गरम गरम व्यवहार में लाना चाहिये।

(८) घर के फर्स को जीवाणु नाशक द्रव से धुल देना चाहिये।

(९) कच्चे फर्स पर चूना छिड़क देना चाहिये वा ताजी मिट्टी डाल देनी चाहिये।

राजयक्ष्मा (Phthisis)

राजयक्ष्मा औपसर्गिक तथा अनौपसर्गिक नामक दोनों व्याधियों में आता है। औपसर्गिक (Infectious) व्याधि इस लिये कहलाता है, कि इसका प्रसार श्वास प्रणाली द्वारा, रोगी के छींक और थूक में उत्सर्गित जीवाणुओं के संक्रमण से होता है। अनौपसर्गिक इस कारण कहलाता है, कि भोज्य पदार्थ के अभाव में कार्याधिक्यता के कारण शारीरिक ह्रास होने लगता है। अतः इसको दोनों में समावेश कर सकते हैं।

राजयक्ष्मा (Phthisis) नामक व्याधि बैसिलस ट्यूबरकुलोसिस (Bacillus Tuberculosis) नामक जीवाणुओं से उत्पन्न होता है। ये जीवाणु रुग्ण व्यक्ति के सम्पर्क में रहने वाले व्यक्तियों को सीधे वायु द्वारा पहुँचते हैं। दूसरा प्रकार यक्ष्मी गाय के दुग्ध को पीने वाले व्यक्तियों को भी दुग्ध द्वारा होता है। अतः करणानुसार यह व्याधि दो प्रकारों में विभक्त हो जाती है।

राजयक्ष्मा के दो प्रकार

(१) श्वास—प्रश्वास प्रकार (Respiratory Type)

(२) मौखिक प्रकार (Bubonic Type)

वैसिलस टयूवरकुलोसिस (Bacillus Tuberculosis) नामक जीवाणु के प्रधान होते हुए भी इस व्याधि के अन्य सहायक कारण भी प्रधान माने जाते हैं; क्योंकि ये सहायक कारण ही जीवाणु के प्रगल्भ तथा विकास के लिये क्षेत्रोत्पन्न करते हैं। जब तक हम स्वस्थ रहते हैं तब तक ये जीवाणु शरीर में वर्तमान रहते हुये भी रोगोत्पत्ति नही करते; किन्तु अन्य प्रधान सहायक कारणों से शारीरिक शक्ति ह्रास होते ही इनको विकसित होने का क्षेत्र मिल जाता है और ये शरीर पर अपना अधिकार जमा लेते हैं। अतः यह नितान्त आवश्यक समझ पड़ता है, कि उस प्रधान सहायक कारण का यहाँ उल्लेख किया जाय।

राजयक्ष्मा के प्रधान सहायक कारण

(१) जनसमुहाधिक्यवास (Over crowding)।

(२) दूषित वायुमण्डल में रहना।

(३) धूयें, गैस तथा रुई के कारखाने के बंद कमरों में कार्य करना।

(४) भोज्य पदार्थ की अल्पता।

(५) पोषक पदार्थ के अभाव में कार्याधिक्य।

(६) नम और शीलमय स्थान में वास।

(७) अत्यधिक मद्यपान।

(८) मधु मेह।

(९) स्त्रियों मे बहुप्रजाता तथा दीर्घ कालिक शिशुपान द्वारा क्षीणता।

राजयक्ष्मा से बचने के उपाय

(१) स्वच्छ वायुमण्डल मे रहना।

(२) धूयें तथा गैस में काम नही करना।

(३) यक्ष्मा से पीड़ित गौ के दुग्ध पान का निषेध।

(४) मद्य निषेध।

(५) पोषक पदार्थों का भक्षण करना।

(६) शक्ति से अधिक काम नही करना चाहिये।

(७) यक्ष्मा से पीड़ित व्यक्ति को पृथक रखना चाहिये तथा उसके सम्पर्क में किसी को नहीं आने देना चाहिये।

(८) यक्ष्मा पीड़ित व्यक्ति से सम्भाषण नही करना चाहिये नही तो उसके छींक और थूक में उत्सर्गित जीवाणुओं के आक्रमण का भय रहेगा।

(९) यक्ष्मी के वस्त्रों को सर्वदा उबाल कर विसंक्रमित करते रहना चाहिये।

(१०) उसके कफ (बलगम) को कार्वोलिक घोल में रखना चाहिये और उसे जमीन में गड़वा देना चाहिये।

(११) यक्ष्मी के कमरे मे स्वस्थ व्यक्ति को नही सोना चाहिये।

(१२) यक्ष्मी माता को चाहिये कि वह अपने शिशु को स्तन पान न कराये।

विषमज्वर (Malaria)

विषमज्वर (Malaria) नामक औपसर्गिक व्याधि एनाफ्लीज(Anaflies) नामक मच्छर की स्त्री जाति के काटने से उत्पन्न होती है। यह व्याधि मारक कम तथा कष्ट दायक अधिक होती है। यह अधिकतर वर्षाकाल के समाप्ति के दिनों में अधिक होती है।

विषमज्वर (Malaria) का प्रधान लक्षण शीत पूर्वक ज्वर का चढना और पसीना देकर ज्वर का दो २ घटे वाद उतर जाना है।

एनाफ्लीज की स्त्री मच्छर जब किसी रुग्ण व्यक्ति को काटती है तो रक्त चूसती है उस समय वह अपने सुण्ड में विषमज्वर के जीवाणुओं को साथ ले आती है और जब वही मच्छर किसी स्वस्थ व्यक्ति को काटती है, तो वे जीवाणु स्वस्थ व्यक्ति के रक्त में प्रविष्ट पाकर व्याधि को उत्पन्न करते हैं। यहां यह ध्यान रखना चाहिये कि ये मच्छर जिस प्रकार के जीवाणु को शरीर में प्रविष्ट करते हैं उसी प्रकार के ज्वर उत्पन्न हो जाते हैं। अतः जीवाणु के आधार पर विषमज्वर के कई प्रकार हो जाते हैं, जैसे दैनिक, तृतीयक, चतूर्थक आदि।

विषमज्वर के प्रकार

(१) दैनिक (Quotidian)—नित्यप्रति ज्वर आता है और नित्यप्रति उतर जाता है।

(२) तृतीयक (Tertian)—ज्वर का दूसरा आक्रमण एक दिन के अन्तर से होता है।

(३) चतूर्थक (Quartan)—ज्वर का आक्रमण प्रत्येक दो दिन के अन्तर से होता है।

विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं को तालिका

व्याधि नामावली	जीवाणु नामावली
(१) दैनिक (Quotidian)	लैवेरनिया मलेरिया (Laverania Malaria)
(२) तृतीयक (Tertian)	प्लाज्मोडियम वाइवैक्स (Plasmodium Vivax)
(३) चतुर्थक (Quartan)	प्लाज्मोडियम मलेरिया (Plasmodium Malaria)
(४) घातक मलेरिया (Malignant Malaria)	प्रीकाक्स (Praecox)

मलेरिया से बचने के उपाय

(१) वासस्थान के आस पास के घास, कूड़े-करकट को नष्ट कर देना चाहिये ।

(२) वास स्थान के सन्निकट के छोटे मोटे बरसात के जल से भरे हुये, गढ़े को मिट्टी से पाट देना चाहिये और बडे हों तो पानी निकाल देना चाहिये ताकि उसके जल मे मच्छर अण्डे न दे सके जिससे उनकी वृद्धि हो ।

(३) तालाबों के किनारे किनारे पशु दौड़ा देने चाहिये, जिससे मच्छर नष्ट हो जाते हैं । जल में पेट्रोलियम या किरासन तेल डाल देना चाहिये । ऐसा करने से जल स्थित मच्छर के अण्डे नष्ट हो जायेगें ।

(४) रात को सोते समय हाथ, पैर तथा खुले अग पर शुद्ध सरसों का तैल लगाकर सोना चाहिये ।

(५) मसहरी का व्यवहार करना चाहिये ।

(६) पास में धूआँ करके सोना चाहिये इससे मच्छर पास नहीं आते ।

(७) मलेरिया के दिनों में क्वीनीन (Quinine), पैलुड्रीन (Paludrin) तथा एटब्रीन (Atabrin) आदि का व्यवहार प्रतिषेध के रूप में करना चाहिये ।

पुनरावर्तक ज्वर (Relapsing fever)

पुनरावर्तक ज्वर (Relapsing Fever) जूं के काटने से उत्पन्न होता है । जब रुग्ण व्यक्ति को काटते हैं तो अपने साथ रोगोत्पादक जीवाणु को लाते हैं और स्वस्थ व्यक्ति को काटते समय इस जीवाणु को जिसका नाम स्पायरोकीटारि-

करेन्टिस (Spirochaeta Recurrentis) है, रक्त में प्रविष्ट कर देते हैं और व्याधि उत्पन्न हो जाती है। जिसका प्रधान लक्षण वारम्वार ज्वर का आना है।

पुनरावर्तक ज्वर से बचने का उपाय

(१) स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(२) वालों को साबुन से साफ कर कंघी करना चाहिये।

(३) वस्त्रों को उबालना चाहिये।

(४) रोगी व्यक्ति के सम्पर्क में नही रहना चाहिये।

औपसर्गिक व्याधियों में व्यवहृत सांकेतिक शब्द

सांकेतिक शब्द	पूर्ण शब्द	हिन्दी उच्चारण	अर्थ
In P.	Incubation Period	इंकुवेशन पीरियड	संचय काल
T. E.	Time of Eruption	टाइम आफ इरप्सन	विस्फोट का समय
D. E.	Duration of Eruption	ड्यूरेशन आफ इरप्सन	विस्फोट काल
I. P.	Infectious Period	इन्फेक्शश पीरियड	संक्रमण काल
Q. P.	Period of Quarantine	पीरियड आफ क्वारेन्टिन	पृथकत्व काल

साधारण व्याधियों की नामावली

(Names of General Diseases)

व्याधियों के अँग्रेजी नाम	उच्चारण	हिन्दी नाम
A		
Abdominal Injuries	एब्डामिनल इजूरीज	औदरीय आघात
Abortion	एबार्सन	गर्भच्युति
Abscess	एब्सेस	विद्रधि
Achylia	एकाइलिया	अग्निमांद्य
Acidosis	एसिडोसिस	आम्लियता
Acne	एक्नी	मुख दूषिका

Acoria	एकोरिया	उन्माद
Acromegaly	एक्रोमेगली	देवकाय
Acroparaesthesia	एक्रोपेरीस्थिसिया	रात्रिकालिक वेदना
Actinomycosis	एक्टिनोमाइकोसिस	वाल्मिकी, मदुरापाद
Adenoids	एडिनायड्स	कण्ठशालूक
Aerophagia	एयरोफेजिया	उद्गार
Agoraphobia	एगोरेफोबिया	भय
Albuminuria	अल्बुमिनुरिया	शुक्ली मेह
Alcoholism	अल्कोहलिज्म	मदात्यय
Alopecia	एलोपेशिया	खालित्य
Amenorrhoea	एमिनोरिया	नष्टार्त्तव
Anaemia	एनिमिया	पाण्डु
Chlorosis	क्लोरोसिस	हलीमक (कुम्भकामला)
Anaemia Pernicious	एनिमिया परनिसस	घातक पाण्डु
Anasarca	एनासारका	कायिक शोथ
Aneurysm	एन्यूरिज्म	धमनी प्रसार
Angeiometa	एन्जियोमेटा	शिरार्बुद
Angina Ludovici	एन्जाइना ल्युडोविसी	ग्रैवेयिक अधस्त्वक शोथ
Angina pectoris	एन्जाइनापेक्टोरिस	हृच्छूल
Ankylostomiasis	एकिलोस्टोमिएसिस	अंकुश कृमि
Antepartum Haemorrhage	एण्टीपार्टम हीमोरेज	प्रसव प्राक् रक्तस्रावाधिक्य
Anthrax	एन्थ्राक्स	घातक सपूय पिडिका
Anal Abscess	एनल एब्सिस	गुद विद्रधि
Anal Papillomata	एनल पैपिलोमेटा	गुदार्बुद
Anal fissure	एनल फिसर	भगंदर
Aphasia	एफासिया	मूकत्व
Apoplexy	एपोप्लेक्सि	सन्यास
Appendicitis	एपेण्डिसाइटिस	आंत्रपुच्छ शोथ
Arterio-Sclerosis	आर्टिरियो स्क्लीरोसिस	धमनीदार्ढ्यं
Ascites	एसाइटिस	जलोदर
Asphyxia	एसफिक्सिया	श्वासावरोध
Arthritis	आर्थ्राइटिस	सन्धिशोथ

Anuria	एनुरिया	मूत्राघात
Amblyopia	एम्ब्लीओपिया	अन्धता
Ague	एगु	विषमज्वर
Anaesthesia	एनिस्थिसिया	सञ्ज्ञानाश
Anorexia	एनोरेक्सिया	अरुचि, क्षुधानाश
Apthas	एप्थस	मुखपाक
Aphonia	एफोनिया	स्वरभंग
Asthma	एज्मा	श्वास
Astigmatism	एस्टिग्मेटिज्म	नेत्रवैकल्प
Atheroma	एथिरोमा	धमनी प्रसार
B		
Bacilluria	वैसिलुरिया	मूत्र में जीवाणुमयता
Backache	वैक एक	कटिशूल
Baldness	वाल्डनेस	इन्द्रलुप्त
Balanitis	वैलेनाइटिश	शिश्नमणिशोथ
Baths	बाथ्स	स्नान
Bed sore	वेड सोर	शय्याव्रण
Beri-Beri	बेरी बेरी	वातवलासक ज्वर
Black-water Fever	ब्लैकवाटर फीवर	कृष्णजल ज्वर, दूषित विषम ज्वर या काल मेह
Bladder Rupture	ब्लैडर रप्चर	बस्ति विदार
Bilharzia	बिल्हर्जिया	रक्तमेह
Biliary Fistula	बिलियरी फिस्चुला	पित्ताशयिक नाडीव्रण
Birth Palsy	बर्थ पाल्सी	शैशव कालीन वात
Blepharitis	ब्लेफ्राइटिश	पक्ष्मशोथ
Blood poisoning	ब्लड प्वायजनिंग	रक्तविषता
Boils	ब्वायल्स	पिड़िका
Borborygmi	बारबोरिज्मि	पेट की गड़गड़ाहट
Bradycardia	ब्रैडिकार्डिया	हृदयावरोध
Breast Inflammation	ब्रेस्ट इन्फ्लमेशन	स्तन शोथ
Breast Tumours	ब्रेस्ट टयूमर	स्तनार्बुद
Bromidrosis	ब्रोमाइड्रोसिस	स्वेदाधिक्य
Bronchiectasis	ब्रोंकिएक्टेसिस	श्वासनलिका प्रसार

Bronchitis	ब्रोंकायटिश	कास
Broncho-Pneumonia	ब्राकोन्युमोनिया	कर्कट सन्निपात
Bruises	ब्रूजेज	आघात (कुचल जाना)
Bubo	बवो	जंघार्बुद
Burns	बर्नस	दग्ध
Biliary Colic	बिलियरी कालिक	पित्ताशयिक शूल
Bacillary Dysentery	वैसिलरी डिसेन्टरी	ज्वरातिसार
Braight's Disease	ब्राइट्स डिजीज	वृक्कशोथ
Biliousness	बिलियसनेस	पित्ताधिक्य
C		
Cancer	कैंसर	विषार्बुद
Calculus	कैलकुलस	अश्मरी
Carbuncle	कार्बंकिल	प्रमेहपिड़िका
Cardiac diseases	कार्डियक डिजिजेज	हृदयरोग
Cataract	कैटैरैक्ट	लिंगनाश
Cerebrospinal fever	सेरिबो स्पाइनल फीवर	मस्तिष्क-सौषुम्निक ज्वर
Cellulitis	सेलुलायटिस	अधस्त्वक शोथ
Cerebral Haemorrhage	सेरिब्रल हिमोरेज	मस्तिष्कगत रक्तस्राव
Cerebral Irritation	सेरिब्रल इर्रिटेशन	मस्तिष्क क्षोभ
Chalazion	कैलेजियन	लगण
Chancroid	सैंक्रायड	फिरंग का अर्बुद, जननेन्द्रीय व्रण (फिरंगज, उपदंशज)
Chicken-Pox	चिकेन पाक्स	रोमान्तिका
Chilblains	चिलब्लेन्स	अलसक
Cholangitis	कोलैंजायटिश	पित्तनलिका शोथ
Chordee	कार्डी	शिश्नशोथ
Cholecystitis	काली सिस्टायटिश	पित्ताशय शूल
Cholelithiasis	काली लिथिएसिस	पित्ताश्मरी
Cholera	कालरा	विसूचिका, हैजा
Chorea	कोरिया	ताण्डव ज्वर
Chyluria	काइलुरिया	पिष्टमेह
Cirrhosis of Liver	सिरोसिस आफ लिवर	यकृत क्षय
Claw-foot	क्ला	विकृत पाद

Cleft-Palate	क्लीफ्ट पैलेट	खण्डतालु
Colic	कालिक	शूल
Colitis	कालोयटिश	आंत्र शोथ
Collapse	कोलैप्स	अवसाद
Coma	कामा	मूर्छा
Common Cold	कामन कोल्ड	प्रतिश्याय
Compound Fracture	कम्पाउण्ड फ्रैक्चर	संयुक्त भग्न
Conjunctivitis	कञ्जक्टिवाइटिश	नेत्राभिष्यंद
Congestion	कांजेशन	रक्ताधिक्य
Condyloma	काण्डिलोमा	फिरंग जन्य अर्बुद
Constipation	कांस्टिपेशन	कोष्ठबद्धता
Contracted Pelvis	काण्ट्रैक्टेट्पेल्विस	सकुंचित बस्ति
Convulsions	कानवल्जन्स	आक्षेप
Corn	कार्न	कदर
Corneal Ulcar	कार्नियल अल्सर	सव्रणशुक्ल
Cough	कफ	कास
Cramp	क्रैम्प	अकड़न
Cretinism	क्रिटिनिज्म	बावना
Croup	क्राउप	स्वरयंत्र शोथ
Cystitis	सिस्टायटिश	मूत्राशय शोथ
Cachexia	कैकेक्सिया	क्षीणता
Caries	कैरीज	अस्थि क्षीणता
Carious tooth	कैरियस टूथ	दन्त कोटर, कृमिदन्त
Catalepsy	केटालेप्सी	मांसस्थ
Catarrh	कटार	प्रतिश्याय
Corneal opacity	कार्निल औपेसिटी	माडा, अव्रण शुक्र
Coryza	कोरिजा	प्रतिश्याय
Cyanosis	सायनोसिस	नीलिमा

D

Dacryocystitis	डैक्रोसिस्टायटिश	पूयालस
Dandruff	डेण्ड्रफ	अरुंषिका
Deaf	डीफ	बाधिर्य

Delirium	डिलिरियम	प्रलाप
Dengue	डेंग्यु	दण्डक ज्वर
Dental Caries	डेन्टल केरिज	दंतकोटर
Dermatitis	डर्मेटायटिस	चर्मशोथ
Diabetes	डायेबिटीज	मधुमेह
Diarrhoea	डायरिया	प्रवाहिका
Dilatation of Stomach	डायलेटेशन आफ स्टमक	आमाशय प्रसार
Diphtheria	डिफ्थीरिया	रोहिणी
Diplegia	डाइप्लेजिया	सर्वांग घात
Dislocation	डिशलोकेशन	सन्धिच्युति
Dropsy	ड्प्सी	शोथ
Drowned	ड्रोण्ड	जलमग्न
Duodenal Ulcer	ड्युडेनल अलसर	पक्वाशयिक व्रण परिणाम शूल
Dysentery	डिसेण्टरी	अतिसार
Dysmenorrhoea	डिसमेनोरिया	कष्टार्तव
Dyspareunia	डिसपेरुनिया	मूलाधारशूल
Dyspepsia	डिस्पेप्सिया	अग्निमांद्य
Dyspnoea	डिस्निया	श्वासकष्ट
Debility	डेबिलिटी	दौर्बल्य, असम्यता
Dentetion	डेण्टिशन	दन्तोद्गम
E		
Ear-ache	ईयर एक	कर्णशूल
Eclempsia	एक्लेम्प्सिया	गर्भाक्षेपक
Ectropion	एक्ट्रोपियान	पक्ष्म कोप
Eczema	एक्जमा	पामा, गज चर्म
Elephantiasis	एलिफेण्टायसिस	श्लीपद
Embolism	एम्बोलिज्म	अन्तः शल्यता
Empyema	एम्पाइमा	पूयात्मक फुफुसावरण शोथ
Emphysema	इम्फिसिमा	वायुकोष विस्तार
Encephalitis	इंसिफेलायटिश	मस्तिष्क शोथ
Endocarditis	इण्डोकार्डायटिश	हृदयान्तरावरण शोथ
Endometritis	इण्डोमेट्रायटिश	गर्भाशयान्तरकला शोथ
Enlarged spleen	इन्लार्ज्ड स्प्लीन	प्लीहा वृद्धि

Enteric fever	इण्टरिक फीवर	आंत्रिक ज्वर
Enteritis	एण्टरायटिश	आंत्र शोथ, ग्रहणी
Entropion	एण्ट्रोपियान	पक्ष्म कोप
Enuresis	एन्यूरेसिस	मूत्राधिक्य
Epididymitis	एपिडिडिमायटिस	उपाण्ड शोथ
Epilepsy	एपिलैप्सि	अपस्मार
Epiphora	एपिफोरा	अश्रुस्रावाधिक्य
Epistaxis	एपिस्टैक्सिस	नाशारक्तस्राव (नकसीर)
Eructation	इरक्टेशन	उकाराधिक्य
Erysipelas	इरिसिपेलस	विसर्प
Exophthalmic Goitre	एक्जाफ्थैल्मिक गायटर	गलगण्ड
Erythema	एरिथिमा	अरुणिमा
F		
Facial Paralysis	फेसियल पेरेलसिस	अर्दित
Facial Spasm	फसियल स्पाज्म	अर्दित
Fever	फीवर	ज्वर
Fibroid	फाइब्रायड	सौत्रिकार्बुद
Fibrositis	फाइब्रोसाइटिज	सौत्रिक शोथ
Filariasis	फाइलेरिएसिस	श्लीपद
Fistula	फिस्चुला	नाड़ीव्रण
Fistula in Ano	फिस्चुला इन एनो	भगन्दर
Flatulance	फ्लैचुलेंस	आध्मान
Fracture	फ्रैक्चर	अस्थिभग्न
Furunculosis	फरंकुलोसिस	पिड़िका
G		
Gall stone	गाल स्टोन	पित्ताश्मरी
Gangrene	ग्रैंग्रीन	कोथ
Gastralgia	गैस्ट्रेल्जिया	आमाशयशूल
Gastric ulcer	गैस्ट्रिक अलसर	आमाशयिक व्रण
Gastritis	गेस्ट्रायटिश	आमाशय शोथ
Glands	ग्लैण्ड्स	ग्रंथियाँ
Giddiness	गिडिनेस	भ्रम

Glanders	ग्लैण्डर्स	दूषित प्रतिश्याय
Glaucoma	ग्लाकोमा	अनन्तवात
Glycosuria	ग्लाइकोज़ूरिया	इक्षुमेह
Goitre	ग्वाटर	गलगण्ड
Gonorrhœa	गोनोरिया	पूयमेह
Gonorrhœal Iritis	गोनोरियल आइरायटिश	पूयमेह जन्य तारामण्डलशोथ
Gout	गाउट	वातरक्त (गठिया)
Gravel	ग्रैवेल	सिक्तामेह
Gum Boil	गम ब्वायल	दन्तविद्रधि
Gunshot wound	गनशाट उण्ड	बन्दूक की गोलीजन्यक्षत
Glossitis	ग्लासायटिश	जिह्वाशोथ
General Paralysis	जेनरल पैरेलसिस	सर्वांग घात
Gingivitis	जिंजिवायटिश	दन्तवेष्ट शोथ
H		
Hæmatemesis	हिमेटिमेसिस	रक्त वमन
Haematuria	हीमेचुरिया	रक्तमेह
Haemoglobinuria	हिमोग्लोबिनुरिया	हारिद्र मेह
Haemophilia	हिमोफीलिया	रक्ततारल्य
Haemoptysis	हिमोप्टिसिस	रक्तष्ठीवन
Haemorrhage	हिमोरेज	रक्तस्रावे
Haemorrhoids	हिमोरायड्स	अर्श
Hair	हेयर	बाल
Hay Fever	हे फीवर	औषधगंध ज्वर
Hallux	हैलुक्स	चक्रपाद
Hare Lip	हेयर लिप	खण्डौष्ठ
Headache	हेडेक	शिरःशूल
Heart Disease	हार्ट डिजीज	हृदय रोग
Hemiplegia	हेमिप्लेजिया	अर्धांगवात
Hepatic Abscess	हिपेटि एब्सेस	यकृतविद्रधि
Heat Stroke	हीट स्ट्रोक	दाह
Herpes Zoster	हर्पिज जोस्टर	मकड़ी, कक्षा
Hepatitis	हिपेटायटिश	यकृत शोथ
Hernia	हर्निया	आंत्रवृद्धि

Hiccough	हिक्कफ	हिक्का
Hordeolum	हार्डियोलम	उत्संगिनी (बिलनी)
High Blood-Pressure	हाइ ब्लडप्रेसर	रक्त चापाधिक्य
Hydrocele	हाइड्रोसील	जल वृषण
Hydrocephalus	हाइड्रोसिफेलस	शिरस्तोय
Hydrophobia	हाइड्रोफोबिया	जलसत्रास
Hydrotherapy	हाइड्रोथिरैपी	जलक्रिया विज्ञान
Hydrothorax	हाइड्रोथोरेक्स	उरस्तोय
Hyperidrosis	हाइप रड्रोसिस	स्वेदाधिक्य
Hypnotism	हिप्नाटिज्म	निद्रालु
Hysteria	हिस्टिरिया	योपापस्मार
Hectic Fever	हेक्टिक फीवर	प्रलेपक ज्वर
Hemicrania	हेमीक्रैनिया	अर्धावभेदक
Hook-worms	हुकवर्मस	अकुंशकृमि
Hyperaemia	हाइपरिमिया	रक्ताधिक्य
Hyperemesis	हाइपरएमेसिस	वमनाधिक्य
Hyperpyrexia	हाइपरपाइरेक्सिया	तापाधिक्य
Hypertrophy	हाइपरट्राफी	अतिवृद्धि
I		
Ichthyosis	इक्थियोसिस	त्वकशोप (चर्म का शुष्क होना)
Idiocy	इडिओसी	मंद बुद्धि
Impetigo	इम्पेटिगो	दूपित विस्फोट
Impotence	इम्पोटेंस	नपुसकत्व
Incontinence of urine	इंकाटिनेन्स आफ यूरिन	मूत्रकृच्छ्र, अनैच्छिकमूत्रोत्सर्ग
Indigestion	इण्डाइजेशन	अजीर्ण
Infantile Paralysis	इन्फेण्टाइल पैरेलसिस	शैशवकालीनघात
Influenza	इन्फ्लएजा	श्लैष्मिकज्वर
Insanity	इन्सैनिटी	पागलपन, उन्माद
Insomnia	इन्सोम्निया	निद्रानाश
Intestinal obstruction	इण्टस्टाइनल आब्स्ट्रक्सन	आंत्रावरोध
Intestinal wound	इन्स्टाइनल उण्ड	आंत्रिकक्षत
Intracranial Haemorrhage	इन्ट्राक्रैनियल हीमोरेज	मस्तिष्कगत रक्तस्राव

Iritis	आयरायटिस	तारामण्डलशोथ
Intussusception	इण्टससेप्सन	आंत्रसम्मूर्छन
Itch	इच	कण्डू
Ischiorectal Abscess	इस्चियोरेक्टल एब्सेस	गुदकुकुन्दर विद्रधि
Intestinal Colic	इण्टेस्टाइनल कालिक	आंत्रशूल
J		
Jaundice	जाण्डिस	कामला
Jaw	जा	हनु
Joints	ज्वाइण्टस	सन्धि
K		
Kala-azar	कालाजार	कालाजार
Keratitis	केराटायटिस	कृष्णमण्डलशोथ
L		
Lacrymation	लैक्रिमेशन	अश्रुश्रावाधिक्य
Laryngitis	लेयरिंजायटिश	स्वरयंत्र शोथ
Laryngeal obstruction	लेयरिंजियल आब्स्ट्रक्शन	स्वरयंत्रावरोध
Lead Palsy	लेडपालसी	शीशविपज घात
Lens	लेंस	ताल उन्नतोदरकाच
Leprosy	लेप्रोसी	कुष्ठ
Lactation	लैक्टेशन	दुग्धकाल
Leucorrhoea	ल्युकोरिया	श्वेत प्रदर
Leukaemia	ल्युकिमिया	श्वेताणु वृद्धि
Locomotor Atexy	लोकामोटर एटैक्सी	स्खालित्य
Lumbago	लुम्बैगो	कटिशूल
Lymphadenoma	लिम्फेडिनोमा	ग्रंथ्यार्बुद
Leucoderma	ल्युकोडर्मा	श्वेतकुष्ठ (किलास)
Labour pain	लेबर पेन	प्रसवकालिक वेदना
Lock-Jaw	लाक जा	हनुस्तम्भ
M		
Malaria	मलेरिया	विषम ज्वर
Malta Fever	माल्टा फीवर	माल्टाज्वर
Mammary Abscess	मेमरी एब्सेस	स्तनविद्रधि
Massage	मसाज	मर्दन

Measles	मिजिल्स	रोमान्तिका
Mastitis	मेस्टायटिश	स्तनशोथ
Mediterranean Fever	मेडिटरेनियन फीवर	सामुद्रिक ज्वर
Megrim	मेग्रिम	शिरःशूल
Migrain	मिग्रेन	शिरःशूल
Meningitis	मेनिजायटिश	मस्तिष्कावरणशोथ
Menopause	मेनोपाज	नष्टार्तव
Menorrhagia	मेनोरेजिया	आर्तवस्रावाधिक्य
Metrorrhagia	मेट्रोरेजिया	आर्तवस्राव कालाधिक्य
Menses	मेंसेज	आर्तव
Mental Disease	मेंटल डिजीज	मस्तिष्क रोग
Mitral Disease	माइट्रल डिजीज	हृदय के द्विपत्रकगत व्य।
Movable kidney	मूवेबुल किडनी	गतिशील वृक्क
Mumps	मम्प्स	पाषाण गर्दभ
Myalgia	माएल्जिया	पेशीशूल
Myocarditis	मायोकार्डायटिश	हृदय शोथ
Myelitis	मायेलायटिश	सुषुम्नाशोथ
Mole	मोल	तिल
Miscarriage	मिसकैरेज	अकालप्रसव
Melaena	मेलिना	रक्तमिश्रित मल
Marasmus	मैरेस्मस	मांसक्षय
Mania	मेनिया	उन्माद
Myopia	मायोपिया	निकट दृष्टि
Myelomata	मायलोमेटा	अस्थिमज्जार्बुद
N		
Nephritis	नेफ्रायटिश	वृक्कशोथ
Neuralgia	न्यूरेल्जिया	नाडीशूल
Neurasthenia	न्यूरेस्थिनिया	नाडीदौर्बल्य
Neuritis	न्यूरायटिस	नाडीशोथ
Neuromata	न्यूरोमेटा	नाड्यार्बुद
Nightmare	नाइटमेयर	स्वप्न
Noma	नोमा	मुखपाक
Nausea	नासिया	मिचली

Nervousness	नर्वसनेस	उद्विग्नता
Nystagmus	निस्टैग्मस	वक्र दृष्टि
Night-sweat	नाइ स्वीट	रात्रिस्वेद
O		
Obesity	ओवेसिटी	स्थूलता, मेदोवृद्धि
Odontomata	ओडोण्टोमेटा	दन्तार्बुद
Oesophageal Obstruction	ईसोफेजियल आव्स्ट्रक्शन	अन्नमार्गावरोध
Onychia	ओनिकिया	चिप्प
Ophthalmia Neonatorum	अफ्थेल्मियान्यूनेटोरम	कुकूणक
Opium poisoning	ओपियम प्वायजनिंग	अहिफेन विष
Oral Sepsis	ओरल सेप्सिस	मुखगुहाका संक्रमण
Orbital Cellulitis	आर्बिटल सेलुलायटिस	क्लिष्टवर्त्म
Orchitis	आर्कायटिस	अण्डशोथ
Osteo-Arthritis	आस्टिओ आर्थ्रायटिस	अस्थि सन्धि शोथ
Osteomalacia	आस्टिओमैलेसिया	अस्थिशोष
Osteomata	आस्टियोमेटा	अस्थ्यार्बुद
Osteomyelitis	आस्टियोमायलायटिश	अस्थिमज्जाशोथ
Otitis Media	ओटायटिस मीडिया	मध्यकर्णशोथ
Ovaritis	ओभरायटिस	डिम्बग्रन्थिशोथ
Oedema	इडिमा	शोथ
Otorrhoea	ओटोरिया	कर्णश्राव
Ozoena	ओजीना	पीनस
Oriental sore	ओरिएण्टल सोर	पुराण व्रण
Omphalitis	ओम्फेलायटिस	नाभिपाक
P		
Palmar Abscess	पामर एब्सेस	करतलिका विद्रधि
Palpitations	पाल्पिटेशन	स्पन्दनाधिक्य, हृद्द्रव
Pannus	पैनस	शिराप्रहर्ष
Paratyphoid Fever	पैराटाइफाइड फीवर	उपांत्रिक ज्वर
Parotitis	पैराटायटिस	कर्णमूलिकग्रन्थि शोथ, पाषाणगर्दभ
Palsies	पाल्सिज	घात
Papillomata	पैपिलोमेटा	पद्मिनी कण्टक

Paraphimosis	पैराफाइमोसिस	पर्वर्तिका
Paraplegia	पैरप्लेजिया	एकांगघात
Parosmia	पैरास्मिया	विकृतगंध
Pain	पेन	वेदना
Pediculosis	पेडिकुलोसिस	जूं का आधिक्य
Pemphigus	पेंफिगस	विस्फोट
Pericarditis	पेरिकार्डायटिश	वाह्यहृदयावरणशोथ
Pellagra	पेलेग्रा	त्वग्दाह
Periostitis	पेरी आस्टायटिश	अस्थ्यावरण शोथ
Peripheral Neuritis	पेरिफरल न्यूरायटिश	वोह्यनाड़ी शोथ
Peritonitis	पेरिटोनायटिश	उदरावरणशोथ
Pernicious Anaemia	परनिसस एनिमिया	घातक पाण्डु
Perspiration	पर्स्पायरेशन	स्वेदाधिक्य
Pertussis	परटुसिस	काली खाँसी
Pharyngitis	फेरिंगजायटिश	ग्रसनिकाशोथ
Phlebitis	फ्लेबायटिश	शिराशोथ
Phimosis	फाइमोसिस	निरुद्धप्रकश
Phosphaturia	फास्फेचुरिया	पिष्टमेह
Phthisis	थायसिस	राजयक्ष्मा
Piles	पाइल्स	अर्श
Pityriasis	पिटिरिएसिस	दारुणक
Plague	प्लेग	अग्निरोहिणी
Plantar Abscess	प्लाण्टर एब्सेस	अङ्गुल्यास्थि व्रण
Placenta praevia	लेसेण्टाप्रीविया	विकृत अपरा
Pleurisy	प्लुरिसी	फुफ्फुसावरणशोथ
Pleurodynia	प्लुरोडिनिया	फुफुसावरणशूल
Plumbism	प्लाम्बाइज्म	शीशविष
Pneumonia	न्यूमोनिया	श्लैष्मिक सन्निपात, श्वसनकसन्निपात
Poliomylitis	पालिओमायलायटिश	शुषुम्नाशोथ
Polypus	पालिपस	नाशार्श
Polyuria	पालीयुरिया	बहुमूत्र
Postpartem Haemorrhage	पोस्ट पार्टम हीमोरेज	प्रसवोत्तररक्तस्रावाधिक्य

Prolapse	प्रोलेप्स	भ्रंश
Proctitis	प्रोक्टायटिश	गुदशोथ
Prostatitis	प्रोस्टेटायटिश	पौरुषग्रंथि शोथ
Pruritus	प्रुरिटस	कण्डु
Psoriasis	सोरायसिस	अपरस
Ptosis	टोसिस	वातहत पक्ष्म
Puerperal Sepsis	प्युर्परल सेप्सिस	प्रसवकालिक संक्रमण
Pterygium	टरिजियम	अर्म
Ptyalism	टायलिज्म	लालास्रावाधिक्य
Pulmonary Abscess	पल्मोनरी एब्सेस	फुफुस विद्रधि
Puerperal Fever	प्युर्परल फीवर	सूतिका ज्वर
Purpura	परपुरा	मण्डल
Pustule	प्युस्चुल	पूययुक्तपिड़िका
Pyelitis	पायलायटिस	पूयात्मकवृक्क शोथ
Pyaemia	पयमिया	पूयसयता
Pyorrhoea Alveolaris	पायरिया एल्विओलरिस	दन्तवेष्टक
Pyonephrosis	पायोनेफ्रोसिस	पूयात्मक वृक्क
Pyrosis	पयरोसिस	लालाधिक्य, मिचली
Pyuria	पायुरिया	पूययुक्त मुत्रत्याग (पूयमेह)
Pyrexia	पाइरेक्सिया	ताप
Q		
Quinsy	क्विनिस	तुण्डकेरी
R		
Rabies	रैबिज	जलसंत्रास
Rash	रैश	चकत्ते
Relapsing Fever	रिलैप्सिंग फीवर	पुनरावर्तक ज्वर
Renal Calculus	रेनल कैल्कुलस	वृक्काश्मरी
Rate Bite Fever	रैट बाइट फिवर	मूसिकदंश ज्वर
Renal Colic	रेनल कालिक	वृक्कशूल
Retention of Urine	रिटेंशन आफ युरिन	मूत्राघात
Rheumatism	रुमेटिज्म	आमवात
Rhinitis	रायनायटिस	नाशाप्रदाह
Rheumatoid Arthritis	रुमेटायड आर्थायटिश	आमवातज सन्धिशोथ

Ranula	रैनुला	उपजिह्विका
Ricket	रिकेट	फक्करोग
Ringworm	रिंगवर्म	दद्रु
Round-worm	राउण्ड वर्म	मण्डलकृमि

S

Salivation	सैलाइवेशन	लालाधिक्य
Salpingitis	सलपिन्जायटिश	डिम्बप्रणाली शोथ
Scabies	स्कैबीज	कण्डू
Scald	स्काल्ड	तरल दग्ध
Scalp-wound	स्काल्प उण्ड	मूर्धा-क्षत
Sciatica	सियाटिका	गृध्रसी
Scarlet Fever	स्कारलेट फीवर	लोहित ज्वर
crofula	स्क्रोफुला	कण्ठमाला
Scurvy	स्कर्वी	शीताद
Septicaemia	सेप्टिसीमिया	जीवाणुमयता
Shock	शाक	स्तब्धता
Small pox	स्माल पाक्स	मसूरिका
Sexual Impotence	सेक्सुवल इम्पोटेंस	नपुन्सक
Skin Disease	स्किनडिजीज	चर्मरोग
Spasm	स्पाज्म	आक्षेप
Spermatorrhoea	स्पर्मेटोरिया	शुक्रमेह
Sprain	स्प्रेन	मोच
Sleeplessness	स्लीप्लेसनेस	निद्रानाश
Spinal Abscess	स्पाइनल एब्सेस	सौष्मिक विद्रधि
Strain	स्ट्रेन	दबाव
Sterility	स्टेरिलिटि	वन्ध्यत्व
Stiffneck	स्टिफनेक	ग्रीवादार्ढ्य
Stomatitis	स्टोमेटायटिश	मुखपाक
Stone	स्टोन	अस्मरी
Stye	स्टाई	अंजनामिका
Suffocation	सफोकेशन	श्वासावरोध
Sunstroke	सनस्ट्रोक	लू, अंशुघात (आतप दग्ध)
Suppression of urine	सप्रेशन आफ यूरिन	मूत्राघात

Sycosis	साइकोसिस	अरुंषिका
Syphilis	सफिलिस	फिरंग
Snake-Bite	स्नेक	सर्पदंश
Summer Diarrhoea	समर डायरिया	ग्रीष्मकालिक प्रवाहिका
Sprue	स्प्रू	ग्रहणी
Sore	सोर	व्रण
Syncope	सिंकोपी	मूर्च्छा
Suppuration	सपुरेशन	पूयोत्पत्ति
Sub Involution of Uterus	सब इन्वोल्युशन आफ यूटरस	गर्भाशयिक असंवृत्ति
Synovitis	साइनोवायटिश	सन्ध्यावरण शोथ
Swelling	स्वेलिंग	शोथ
Strangulation	स्ट्रैंगुलेशन	अवबद्धता
T		
Tachycardia	टेकिकार्डिया	द्रुत हृद्गति
Tabes Dorsalis	टेब्स डार्सल	खालित्य
Talipes	टैलिप्स	वक्रपाद
Tape-Worm	टैप वर्म	स्फीतकृमि
Teeth Extraction	टीथ एक्स्ट्रैक्शन	दन्तोत्कर्षण
Testicle	टेस्टिकिल	अण्ड
Tetanus	टीटैनस	हनुस्तम्भ, धनुस्तंभ
Thread worm	थ्रेड वर्म	स्फीत कृमि
Thrombosis	थ्रम्बोसिस	रक्तस्कन्दन
Thrush	थ्रस	मुखपाक
Thyroiditis	थायरायडायटिश	अवटुकाग्रंथि शोथ
Tic	टिक	नाडीगत्याधिक्य
Tinnitus	टिनिटस	कर्णनाद
Tonsilitis	टान्सिलायटिस	तुण्डिकेरी
Trachoma	ट्राकोमा	पोथकी
Trichiasis	ट्रिकिएसिस	पक्ष्मकोप
Tuberculosis	ट्यूबरकुलोसिस	क्षय
Tooth-ache	टूथ-एक	दन्तशूल
Torticollis	टार्टिकोलिस	ग्रीवास्तम्भ

Tumour	ट्यूमर	अर्बुद
Typhlitis	टिफ्लायटिश	उण्डुक पुच्छशोथ
Typhoid	टाइफाइड	आंत्रिक ज्वर
Typhus	टाइफस	अन्वांत्रिक ज्वर, तंद्रा ज्वर
Tenesmus	टेनिस्मस	मरोड
Tertian	टर्शियन	तृतीयक
Tetany	टिटैनी	आक्षेप
Toxaemia	टाक्सीमिया	विषमयता
Tremors	ट्रेमर्स	कम्प
Tympanitis	टिम्पेनायटिश	आध्मान
U		
Ulcer	अल्सर	व्रण
Uraemia	यूरिमिया	मूत्रविषता
Urethra	यूरेथ्रा	मूत्रप्रणाली
Urethritis	यूरेथ्रायटिश	मूत्रमार्ग शोथ
Urticaria	युर्टिकेरिया	शीतपित्त
Uterine Inertia	यूटराइन इनर्सिया	गर्भाशयिक शिथिलता
Uterus	यूटरस	गर्भाशय
V		
Vagina	वेजाइना	योनि
Vaginitis	वेजाइनायटिश	योनि शोथ
Varicella	वेरिसिला	त्वकमसूरिका
Varicocele	वेरिकोसील	शिरावृद्धि
Varicose Vein	वेरिकोज वेन	शिरागुच्छ
Variola	वेरिओला	मसूरिका
Vertigo	वर्टिगो	स्खालित्य, भ्रम
Vomiting	वोमिटिंग	वमन
Venereal Disease	वेनरलडिजीज	मैथुन जन्य व्याधि
Vulvitis	वल्वायटिश	भगशोथ
W		
Wart	वार्ट	त्वगार्बुद
Wound	उण्ड	क्षत
Whitlow	ह्विटलो	अंगुलिव्रण

Whooping cough	हूपिंग कफ	कुकुर खाँसी, काली कास
Worms	वर्म्स	कृमि
Wry Neck	राई नेक	ग्रीवा स्तम्भ
X		
Xerosis	क्जीरोसिस	नेत्र शोष
Y		
Yaws	याज	जृम्भा
Yellow Fever	यलो फीवर	पीतज्वर

व्याधियों की चिकित्सा

(Treatement of diseases)

व्याधियों की मुख्य दो चिकित्सा

(१) साधारण (General) (२) विशिष्ट (Special)

साधारण चिकित्सा

साधारण चिकित्सा (General Treatment)—जो चिकित्सा सम्भवतः प्रत्येक व्याधिमें प्रयुक्त की जाती हो उसे साधारण चिकित्सा कहते हैं। जैसे, आराम (Rest) आदि।

प्रकार—

(१) व्याध्यानुसार रोगी को आराम देना।

(२) रोगी को शान्ति के साथ पृथक् रखना।

(३) रोगी को स्नान कराना।

(४) वस्ति (५) गण्डूष (६) मर्दन

स्नान—

स्नान (Baths)—सम्पूर्ण शरीर को या शरीर के किसी एक भाग को किसी तरल या वाष्प (Vapour) के सम्पर्क में रखने को स्नान (Bath) कहते हैं।

प्रकार—

(१) साधारण (General):—जब सपूर्ण शरीर तरल (Liquid) या वाष्प (Vapour) के सम्पर्क में आता है तब उसे साधारण स्नान (General Bath) कहते हैं।

(२) स्थानिक (Local)—जब शरीर का कोई एक विशिष्ट अंग सम्पर्क में आता है तब उस स्नान को स्थानिक (Local Bath) कहते हैं।

स्नान के भेद (Kinds of Baths)

(१) ठण्ड स्नान (Cold Bath) (३) वाष्प स्नान (Vapour Bath)
(२) उष्ण स्नान (Hot Bath) (४) औषधि स्नान (Medicated Bath)

ठण्ड स्नान (Cold Baths)

ठण्ड स्नान में प्रयुक्त होने वाले तरल का तापमाप ५०° से ६०° F से अधिक नहीं होना चाहिए।

ठण्ड स्नान से लाभ—

(१) शरीर से शक्ति प्रदान करता है।

(२) क्षुधा (Digestion), सात्मीयकरण (Metabolism) और शारीरिक भार की वृद्धि करता है।

(३) ज्वर में ताप को खींचकर तन्तु परिवर्तन (Tissue Changes) को कम करता है।

(४) ज्वर के उपद्रवों (Complications) को दूर रखता है। अतः इसका आश्रय तीव्रताप (Hyperpyrexia), आमवात (Rheumatism), आन्त्रिक ज्वर (Typhoid), टाइफस (Typhus), और श्वशनक सन्निपात (Pneumonia) तथा विसर्गीय ज्वर (Remittent Fever) में लेना चाहिये।

अत्यधिक स्नान से हानि—

(१) शैथिल्यता (Depresson)

(२) क्षुधानाश (Anorexia)

(३) अवसाद।

शीत स्नान की विधियाँ (Ways of Cold Bath)

(१) शीत जल सिंचन (Cold Affusion)—इस विधि का आश्रय मूर्छित व्यक्ति को पुनः चेतनावस्था में लाने के लिये किया जाता है। अतः इसका प्रयोग विशेषतः मूर्च्छा (Syncope), निद्रालु विष (Narcotic poisoning), आक्षेप (Convulsions), आतप (Sunstroke) और योषापस्मार (Hysteria) में किया जाता है। इस विधि में एक वार ही १० से २० सेर जल व्यक्ति के शरीर पर उड़ेलते हैं।

(२) नदी स्नान (River Bath)—यह तालाब, तथा घड़े आदि के स्नानों से अधिक उत्तेजक होता है। नदी में तैरने के लाभ—

(अ) क्षुधा वृद्धि होती है (Stimulate digestion)

(ब) सस्थानों मे शक्ति आती है। (स) मास पेशियां दृढ होती है।

(३) शीत कटि स्नान (Cold Hip-Bath)—इस विधि मे व्यक्ति एक नाद

(Tub) में कटि पर्यन्त जल भरकर बैठता है। इस स्नान से शीत स्थान की प्रणालियाँ तथा आन्त्र प्रथम संकोच करती है और पुनः प्रसारित होती हैं। जल में बैठकर व्यक्ति इन अंगो का मर्दन करता है। यह विधि आंत्र और स्नायु के व्याधियों के लिये उपयोगी है।

(४) शीतपाद स्नान (Cold Foot-Bath):—इस विधि में पैर को शीतल जल से तर करते हैं। इससे संस्थानो में उत्तेजना आती है और पाद शक्ति शाली होते हैं। यह स्नान आर्तवकाल (Menstrual Period) में त्याज्य है।

(५) शीतल वस्त्रावगुंठन— Cold Wet-Sheet-Pack) —इस विधि में व्यक्ति को एक पलंग पर, जिस पर दो कम्बल बिछे हैं और उन कम्बलों पर एक ठण्डे जल मे भीगा हुआ चादर बिछा है, नग्न कर लिटा देते है। लिटाते समय ध्यान रखते हैं कि बाहु प्रसारित हो। एक पार्श्व के चादर को व्यक्ति के गात्र और शाखाओं पर लपेट देते हैं। इसी प्रकार दूसरे पार्श्व के अर्धशरीर को चादर के अवशिष्ट भाग से ढक देते हैं। ढकने के पश्चात् पादतल के नीचे उष्ण जल से भरे बोतल को तथा शिर पर बर्फ से भरे थैले को रखते हैं। इसके पश्चात् व्यक्ति को कम्बलों से पूर्ण रूप से आवृत्त कर देते हैं। आवरण केवल ग्रीवा तक ही रखते हैं। मुखमण्डल को खुला रखते हैं। थोड़े देर तक ठण्ड मालूम होता है फिर अत्यधिक स्वेद निकलने लगता है और रोगी को प्रसन्नता व्यक्त होने लगती है, क्योंकि यह ताप, प्रलाप (Delirium) और क्षोभ (Irritability) को कम करता है। आधा या एक घण्टे के पश्चात् आवरण को पृथक करके रोगी के शरीर को शुष्क वस्त्र से भली भांति मल देना चाहिये।

शीतल-वस्त्रावगुंठन दो प्रकार का होता है, एक कायिक (General) दूसरा स्थानिक (Local)।

(६) आइस बैग (Ice Bag) —इस विधि मे रबर के थैले में बर्फ भरकर शिर, वक्ष और उदर पर रखते है। इससे ताप कम हो जाता है और स्थानिक शोथ चला जाता है।

(७) शीतल सेंक (Compress) —शीतल जल मे जिसका तापक्रम ५०° से ६०° F होता है, वस्त्र को भली भाँति डुबो कर निचोड़ देते हैं फिर इस वस्त्र को दूषित भाग पर रखकर फलालेन के टुकड़े से ढक देते हैं। इस वस्त्र को प्रत्येक घण्टे पर बदलते रहते है। इसका व्यवहार श्वसनक सन्निपात (Pneumonia) के आरम्भ में, उदरावरण शोथ (Peritonitis), तथा आंत्र पुच्छ शोथ (Appendicitis) की वेदना को दूर करने के लिये किया जाता है।

(८) अंगोछना (Sponging):—इसका व्यवहार ताप को कम करने के लिये किया जाता है। इसका विशेष व्यवहार आंत्रिक ज्वर (Typhoid Fever) में किया

जाता है। एक पलंग पर कम्बल बिछा कर रोगी को नग्न लिटाकर दूसरे कम्बल से ढक देते हैं तथा उसके पैर के नीचे उष्ण जल की बोतल रखते हैं। शीतल जल में एक कपड़ा भिगोकर निचोड़ देते हैं और इसी कपडे से शरीर के एक एक अंग को पोंछते हैं। सर्व प्रथम मुख और ग्रीवा को पोंछते हैं। पोंछते समय यह ध्यान रखते हैं कि ऊपर से नीचे को पोंछते हैं। सम्पूर्ण अग को एक बार पोंछने के पश्चात् पुनः शिर से पोंछना प्रारम्भ करते हैं। उचित रूप में सम्पूर्ण शरीर को पोंछने के पश्चात् शरीर को शुष्क कर देते हैं। शुष्क करने के पश्चात् एक कम्बल से ढक देते हैं। इसी समय रोगी के ताप को देख लेते हैं, फिर एक घण्टे तक शान्ति से पड़े रहने देते हैं और एक घण्टे के बाद पुनः तापक्रम लेते हैं। अंगोछने से तापक्रम कम से कम ४°F कम होता है। इस कार्य में व्यवहृत होने वाले जल का तापक्रम करीब ६०°F होना चाहिये।

(९) शीतल वस्ति (Cold Douche):—इस विधि में शरीर के किसी एक भाग पर जल का एक धार तीव्रता के साथ छोड़ा जाता है।

शीतल वस्ति (Cold Douche) का स्थान

(क) शिर (Head):—शिर पर उस दशा में धार डालते है जब कि रोगी मद्य तथा निद्रालु विषों के कारण मूर्च्छित हो जाता है।

(ख) मेरुदण्ड (Spine):—शुक्रमेह (Spermatorrhoea), अपस्मार और साधारण दौर्बल्य में मेरुदण्ड पर जल का तीव्र धार छोड़ा जाता है।

(ग) यकृत (Liver) और प्लीहा (Spleen)—इनके वृद्धि में इस विधि का व्यवहार किया जाता है।

(घ) योनि (Vagina):—श्वेत प्रदर (Levcorrhoea) में योनि में वस्ति कर्म करते हैं।

(ङ) गुदा (Rectum):—कोष्ठबद्धता तथा रक्तस्राव में वस्ति व्यवहार करते हैं।

(१०) ठण्ड घोल (Freezing Mixture):—यह लघु शस्त्र कर्म और चिरकालिक आमवात (Chronic Rheumatism) में लाभदायक होता है। यह शून्यता को उत्पन्न करता है। यदि चर्म के सम्पर्क में अधिक काल तक रखा जाय तो चर्म पर फफोले पड़ जाते हैं।

घोल निर्माण—

वर्फ चूर्ण (Powdered Ice)—२ भाग

साधारण लवण (Common Salt)—१ भाग

(११) वर्फ मर्दन (Ice Rub)—उच्च ताप को कम करने के लिये रोगी को एक वस्त्र पहिना कर चारपाई पर कम्बल बिछा कर लिटा देते हैं और एक एक अंग पर वर्फ के छोटे छोटे टुकड़े को कपड़े में बांध मलते हैं। यह क्रिया ३, ४ मिनट तक

की जाती है। इस क्रिया को करने के समय रोगी के शिर पर बर्फ का थैला तथा पांव के नीचे उष्ण जल की बोतल रखते हैं।

उष्ण स्नान (Hot bath) प्रकार—

(१) औषधीय (Medicated)

(२) अनौषधीय (Non Medicated)

स्थान—

(१) कायिक (General)

(२) स्थानिक (Local)

उष्ण स्नान का गुण—

(१) यह स्थानिक रक्त परिभ्रमण (Circulation) को उत्तेजित करता है और आन्तरिक अंगों के रक्त-परिभ्रमण को कम कर आंत्रशूल, पित्ताशयशूल, तथा वृक्क-शूल (Renal colic) को दूर करता है।

(२) ग्रंथियों के स्राव में वृद्धि कर मूत्र-विषता (Uraemia) को दूर करता है।

(३) तंतुओं को शिथिल करके मूत्र मार्गसंकीर्णता तथा ऐंठन को नष्ट करता है।

(४) मांस पेशियों के ऐंठन (Spasm) को दूर करता है।

(५) चर्म को कोमल करता है और वसा के स्राव को तरल करता है। अतः चर्म रोगों में लाभप्रद होता है।

चेतावनी—

(१) स्नान के पश्चात् तुरन्त शीघ्रता के साथ शरीर शुष्क कर देना चाहिये।

(२) रोगी को आवृत्त कर गरम बिस्तर पर सुलाना चाहिये।

(३) उष्ण दुग्ध तथा उष्ण जल पान कराना चाहिये।

उष्ण स्नान की विधियाँ—

(१) किंचित उष्णस्नान (Tepid Bath):—इस विधि का उपयोग तापाधिक्य तथा वैकल्यावस्था (Restlessness) में करते हैं। इसमें प्रयुक्त होने वाले तरल का तापक्रम ८५° से ९५°F तक होता है। यह ज्वर नाशक है।

(२) गरम स्नान (Warm Bath):—इसका उपयोग ज्वर तथा तीव्र शोथज संक्रमण जैसे कास, श्वसनक सन्निपात आदि में किया जाता है। इसका तापक्रम ९५° से १००°F होता है।

(३) उष्ण स्नान (Hot Bath):—इस विधि में तरल का तापक्रम १००° से १०६°F होता है, जो उपरोक्त स्नानों से अधिक शक्तिशाली होता है।

(४) उष्ण कटिस्नान (Hot-hip-Bath):—यह समस्त आर्तव विकार तथा मूत्राशय शोथ को नष्ट करता है।

(५) राजिका स्नान (Murtard Bath):—उष्ण जल में सरसों मिलाकर कटिपर्यन्त स्नान करने से नष्टार्तव का आर्तव शीघ्रता के साथ पुनः संचालित हो जाता है ।

(६) उष्ण पादस्नान (Hot Foot Bath):—प्रतिश्याय, शिरःशूल, नासारक्त-स्राव (नकशीर) (Epistaxis), शैशवकालीन आक्षेप (Infantile Convulsion) तथा नष्टार्तव को दूर करता है ।

(७) उष्ण जल से प्रोंछन (Hotwater ssponging):—इसका व्यवहार श्लैष्मिक ज्वर (Influenza) में शिरःशूल, प्रतिशाय को कम करने के लिये करते हैं । इससे शिर, ग्रीवा और शंख प्रदेश को पोछते हैं ।

(८) उष्णवस्ति (Hot douche):—प्रसवोत्तर रक्तस्राव (Post Partum Haemorrhage) को बंद करने के लिये गर्भाशय में उष्ण जल को प्रविष्ट करते हैं ।

औषधिस्नान (Medicated bath)'

परिभाषा—जब शीतल या गरम जल में औषधद्रव्य मिला दिया जाता है तब उसे औषध स्नान (Medicated Bath) कहते हैं ।

प्रकार

(१) गंधक स्नान (Sulphur Bath):—१ गैलन जल में पोटेसियम सल्फाइड (Potassium Sulphide) को १।४ औंस की मात्रा में घोलकर स्नान करते हैं ।

(२) क्षारीय स्नान (Alkaline Bath):—एक गैलन जल में सोडियमकार्बोनेट (Sodium Carbonate) को १।४ औंस की मात्रा में घोलकर स्नान कराते हैं ।

(३) लवण स्नान (Salt Bath):—एक गैलन जल में साधारण लवण (Sodium Chlorinde) या समुद्र लवण को २ छटाँक से ४ छटाँक की मात्रा में घोलकर स्नान कराते हैं ।

(४) बोरिकाम्ल स्नान (Acid Boric bath):—एक गैलन उष्ण जल में १ छटाँक बोरिक एसिड (Boric acid) को घोल कर स्नान के कार्य में प्रयुक्त करते हैं ।

(५) अम्ल स्नान (Acid Bath):—२ गैलन जल में १ औंस नाइट्रो-हाइड्रो-क्लोरिक तन्वाम्ल (Acid Nitro-Hydrochloric dilute) मिलाकर कार्य में प्रयुक्त करते है ।

(६) राजिका स्नान (Mustard Bath):—राजिका को उष्ण जल में मिलाने के पूर्व शीत जल में अत्यन्त पीस लेते हैं, फिर १।२ ड्राम प्रति गैलन के हिसाब से मिलाकर स्नान में व्यवहार करते हैं ।

(७) निम्ब स्नान (Neem Bath):—नीमके पत्ती का क्वाथ बनाकर जल मिश्रित कर स्नान के कार्य में प्रयुक्त करते हैं ।

(८) सामुद्र स्नान (Sea Bath):—समुद्र में नाना प्रकार के लवण मिले होते हैं अतः चर्म रोगों में अत्यधिक लाभप्रद होता है।

(९) चोकर स्नान (Bran Bath):—२ सेर चोकर को १ गैलन जल में मिलाकर स्नान कार्य में प्रयुक्त करते हैं। यह चर्म क्षोभ को नष्ट करता है।

गुण—

(१) सभी ओषधि स्नान चर्म प्रभृत रोगों को नष्ट करने के लिये व्यवहृत होते हैं। केवल अम्ल स्नान यकृत की व्याधियों को नष्ट करता है।

शीत तथा उष्ण स्नान में प्रयुक्त होने वाले तापक्रम की तालिका

नाम स्नान (Bath)		तापक्रम (Temperature)	
हिन्दी नाम	अंग्रेजी नाम	हिन्दी	अंग्रेजी
ठण्डा स्नान	कोल्ड बाथ (Cold Bath)	४०°–६५° फारनहाइट	40°to 65°F
शीत स्नान	कूल बाथ (Cool Bath)	६५° से ७५° „	65°to 75°F
किंचित गरम स्नान	टेपिड बाथ (Tepid Bath)	८५° से ९५° „	85°to 95°F
गरम स्नान	वार्म बाथ (Warm Bath)	९५° से १००° „	95°to 100°F
उष्ण स्नान	हाट बाथ (Hot Bath)	१००° से ११०° „	100°to 110°F
उत्युष्ण स्नान	वेरी हाट बाथ (Very Hot Bath)	११०° से १२०° „	110°to120°F

'वाष्प स्नान' (Vopour Bath)

विधिः—रोगी को पलंग पर या बेत से बुनी हुई कुर्सी पर बिठा देते हैं और उसे एक या दो कम्बल ओढ़ा देते हैं, किन्तु शिर को खुला रखते हैं। पलंग या कुर्सी के नीचे साधारण जल या औषध मिश्रित जल को खौलाते हैं। इससे जो वाष्प निकलता है वह रोगी को लगता है।

प्रकार—

(१) स्टीम स्नान (Steam Bath)

(२) रसियन स्नान (Russian Bath)

(३) टर्किस स्नान (Turkish Bath)

स्टीम स्नान (Steam Bath):—उपरोक्त विधि से किया जाता है।

रसियन स्नान (Russian Bath):—इस विधि से आर्द्रवाष्प से शरीर को सिञ्चित करते हैं, किन्तु इस स्नान से हृदय प्रभावित हो जाता है। अतः यह हानि प्रद होता है।

टर्किस स्नान (Turkish Bath):—अत्यधिक जल पान के पश्चात् रोगी शुष्क वायु वाले कमरे में प्रविष्ट करता है, जिसका तापक्रम ११०° से १३०°F होता है। जब स्वेद स्वतंत्रता के साथ निकलने लगता है, तब दूसरे कमरे में प्रविष्ट करता है, जिसका तापक्रम १५०° से २०० F तक होता है। इसमें यह कुछ मिनटों तक रहता है। फिर ठण्डे जल की वस्ति (Cold douche) के पश्चात् ठण्डे जल में स्नान करता है। इन क्रियाओं के पश्चात् रोगी, नाडी के स्वाभाविकावस्था में आने तथा चर्म के शुष्क होने तक शान्ति से सोया रहता है। अन्त में उसके शरीर में सुरा का मर्दन करके आराम करने के लिये छोड़ देते हैं।

वाष्प स्नान के गुण

(१) उष्ण स्नान सदृश कार्य और गुण होता है।

(२) ये स्नान आमवात (Rheumatism), वातरक्त (Gout), विषमज्वर (Malaria), वृक्क रोग (Renal diseases) तथा चर्मरोगों (Skin diseases) में लाभदायक होते हैं।

वाष्प स्नान के तापक्रम की तालिका

नाम स्नान			तापक्रम	
हिन्दी	अंग्रेजी	उच्चारण	हिन्दी	अंग्रेजी
गरम वाष्प स्नान	Warm Vapour Bath	वार्म वैपर बाथ	१००° से ११५° फारन हाइट	100° to 115° F
उष्ण वाष्प स्नान	Hot Vapour Bath	हाट वैपर बाथ	११५° से १४०° फारन हाइट	115° to 140° F

सेंक (Fomentation)

प्रकार—

(१) शुष्क (Dry) (२) आर्द्र (Moist)

पुनः दो प्रकार

(१) शीतल सेंक (Cold Compress or Fomentation)

(२) उष्ण सेंक (Hot Fomentation)

शुष्क सेंक में प्रयुक्त होने वाली वस्तुयें:—पत्थर, लवण (Salt), सिक्ता (Sand) उष्ण जल की बोतल और चोकर (Bran)।

आर्द्र सेंक में प्रयुक्त होने वाली वस्तुयें:—वस्त्र, जल।

शुष्क सेंक विधि (Dry Fomentation)

पत्थर को अग्नि पर सहने योग्य गरम करके स्थानिक सेंक करते हैं तथा

लवण, सिक्ता तथा चोकर आदि को एक कपड़े में बाँध अग्नि पर गरम कर सेंक करते हैं।

उष्णजल के बोतल (Hot water bag) के सेंक की विधिः—एक रबर की थैली होती है, जिसमें उष्ण जल भर कर बन्द कर देते हैं; तथा उसके ऊपर वस्त्र लपेट देते हैं। अब इसको सेंक करने के स्थान पर रखते हैं। इसका आजकल अत्यधिक व्यवहार किया जाता है। यह उदर शूल, मूत्रावरोध तथा अवसाद को दूर करता है।

आर्द्र सेंक (Moist Fomentation)

जल को खूब खौलाते हैं। इस खौलते या शीतल जल में वस्त्र के दो गद्दे डाल देते हैं। जब ये गद्दे भली भाँति भींग जाते हैं; तब एक को सदंश से एक मोटे तौलिया में रख खूब निचोड़ते हैं, ताकि उसमें का सम्पूर्ण जल निकल जाय। जल निकाल देने के पश्चात् इस गद्दे को दूषित स्थान पर रखते हैं; फिर इस पर मोटा वस्त्र तथा रूई की गद्दी रखकर बाँध देते हैं। बीस या ३० मिनट बाद फिर इस गद्दी को बदल कर दूसरी उष्ण गद्दी बाँधते हैं।

शीतल सेंक के लाभ

वेदना नाशक होता है। अतः इसका व्यवहार श्लैष्मिक सन्निपात (Pneumonia) आंत्रपुच्छ शोथ तथा उदरावरण की वेदना में होता है।

उष्ण सेंक के लाभ

(१) वेदना नाशक होता है।

(२) पूय को शीघ्र उत्पन्न करता है।

(३) उष्ण सेंक (Hot Fomentation):—मोच (Sprain), छिन्न क्षत (Bruises), ऐंठन (Cramps), यकृत शूल (Hepatic colic) तथा वृक्क शूल (Renal colic) में प्रयुक्त होता है।

टरपेन्टाइनस्टूप (Turpentine stupes)—खौलते हुये जल में से निकाल कर कपड़े के गद्दी को जब भली भाँति निचोड़ देते हैं और फिर उष्ण गद्दे पर तारपीन तेल (Turpentine oil) के कुछ बूँदों को छिड़क कर सेंकते हैं, तो टरपेन्टाइन स्टूप (Turpentine stupe) कहते हैं।

शुष्क तुम्बी (Dry cupping)—एक स्वच्छ गिलास के अन्दर मेथिलेटेड स्प्रिट (Methylated spirit) को एक फाहे से भली भाँति लगा देते हैं, फिर इस गिलास के अन्दर दियासलाई लगा देते हैं, जब स्प्रिट कुछ जल जाता है; तब गिलास को पीड़ित स्थान के ऊपर उलटा रखते हैं। अब गिलास उस स्थान पर चिपक जायगा। जब सब स्प्रिट दग्ध हो जायगा तब पीड़ित स्थान के तंतु कुछ फूल जायेंगे।

गिलास को पृथक् करने के लिये गिलास के नीचे अंगुली से दबाव डालते है, ऐसा

करने से गिलास में वायु प्रविष्ट हो जाता है और गिलास स्वयं पृथक् हो जाती है।

शुष्क तुम्बी (Dry cupping) का विशेष व्यवहार उदर की व्याधियों में होता है। इस क्रिया को एक साथ ४–५ वार किया जाता है। इससे वेदना नष्ट होती है।

आर्द्र तुम्बी (Wet cupping)—शुष्क तुम्बी (Dry cupping) लगाने के पूर्व आक्रान्त स्थान के चर्म को भलीभाँति विसक्रमित (Disinfectant) करके तेज धार की चाकू से कई स्थान पर लेखन करते हैं, कि कुछ रक्त निकलने लगे, फिर शुष्क तुम्बी (Dry cupping) सदृश क्रिया करते हैं। इससे गिलास के नीचे कुछ रक्त एकत्रित हो जाता है। गिलास को पृथक् करने के पश्चात् उस स्थान को विसंक्रमित रूप से ढक देते है। यह क्रिया चर्म रोगों में विशेष की जाती है।

जलौकावचारण (Leeching)

जलौका की व्याख्या—जल है ओक (घट) जिनका उनको जलौका (Leeches) कहते हैं।

जलौका का व्यवहार राजाओं, धनिकों, बालकों, बृद्धों, भयभीत होने वालों, दुर्वलों, स्त्रियों तथा कोमल प्रकृति वाले व्यक्तियों में रक्त मोक्षण के लिये होता है।

जलौका प्रकार

(१) सविष (२) निर्विष

सविष जलौका के नाम तथा संख्या

(१) कृष्णा (२) कर्बुरा (३) अलगर्दा
(४) इन्द्रायुधा (५) सामुद्रिका (६) गोचन्दना

निर्विष जलौका के नाम तथा संख्या

(१) कपिला (२) पिंगला (३) शंख मुखी
(४) मूषिका (५) पुण्डरीक मुखी (६) सावरिका

जलौका का निवासस्थान

निर्विष जलौका पद्म, कुमुद, सौगन्धि तथा कोइन और शैवाल युक्त जलाशय में वास करती है।

सविष जलौका गन्दे, सड़े–गले तथा कीचड़ युक्त स्थान में उत्पन्न होती है।

जलौका लगाने की विधि

रोगी को बैठा या लिटा कर दूषित स्थान पर जलौका लगाते हैं। यदि दूषित स्थान व्रण रहित है, तो उस स्थान को पूर्ण रूप से स्निग्ध रहित बना लेते हैं तब जलौका लगाते हैं। यदि जलौका दूषित स्थान पर न लगे तो उस स्थान पर थोड़ा

दूध लगा देते हैं या तीव्र धार युक्त चाकू से लेखन करके किंचित रक्त बूंद निकाल कर लगाते हैं। जब जलौका अपना स्कन्ध ऊँचा करके त्वचा में प्रविष्ट करे तब समझ लेना चाहिये कि वह लग गई है। अब जलौका को आर्द्र वस्त्र से लपेट कर उसपर जल के बूंद टपकावे।

जब दंश स्थान में खुजली तथा वेदना होने लगे तब समझ लेना चाहिये, कि वह शुद्ध रक्त का चूषण कर रही है। जब शुद्ध रक्त का चूषण करने लगे तब उसे पृथक् कर लेना चाहिये। यदि रक्त के लालच से पृथक न हो तो उसके मुख पर थोड़ा सेंधव लवण छिड़क देने से अपने आप छोड़ देगी।

अब दंश स्थान के रक्त को बन्द करने के लिये उस स्थान पर शतधौत घृत लगावे या कोलोडियन (Collodion), आयरन परक्लोराइड (Iron perchloride), स्फटिका (Alum) घोल में विसंक्रमित रुई भिगोकर लगाते हैं।

जलौका का उपयोग

जलौका शोथ निवारक (Anti-Phlogistic) और रक्त संचय हारक होती है। यह स्थानिक रक्त हरण के लिये प्रयुक्त होती है। इनका उपयोग श्लैष्मिक सन्निपात (Pneumonia), फुफुसावरण शोथ (Pleurisy), हृच्छोथ (Myocarditis), हृदयावरण शोथ (Pericarditis), यकृत शोथ (Hepatitis), कर्ण शोथ (Otitis), मस्तिष्क शोथ (Encephalitis), मस्तिष्कावरण शोथ (Meningitis), सन्धि शोथ (Arthritis), तुण्डकेरी (Tonsilitis), कर्णमूलिकग्रन्थि शोथ (Parotatis), नेत्राभिष्यन्द (Conjunctivitis), तारामण्डल शोथ (Iritis), अनन्तवात (Glauchoma), शिरःशूल (Headache), विद्रधि (Abscess) और मोच (Sprain) में होता है। नेत्र रोगों तथा शिरःशूल में जलौका अपांग के समीप कनपटी पर लगाई जाती है। अन्य शोथ युक्त व्याधियों में स्थानिक प्रयोग होता है।

उपनाह स्वेद (Poultice)

मोटे चूर्ण का बना हुआ लेप होता है, जो स्थानिक शोथ को नष्ट करने के लिये प्रयुक्त किया जाता है। यह कई प्रकार का होता है, किन्तु विशेषतः दो प्रकार के उपनाह स्वेद (Poultices) व्यवहृत होते हैं।

(१) अलसी का उपनाह (Linseed Poultice):—अलसी को बारीक पीस कर चूर्ण के रूप में कर लेते हैं, फिर इस चूर्ण में उबलता हुआ जल मिलाकर चूर्ण को एक में मिश्रित कर लेते हैं, इसमें थोड़ा बोरिक पाउडर (Boric Powder) भी मिश्रित कर देते हैं। फिर लेप को मोटे कपड़े पर फैलाकर शोथ के स्थान पर रखते हैं; इसके ऊपर रुई की गद्दी रखकर बंधन (पट्टी) बाँध देते हैं। दो ३ घंटे के पश्चात् इसको पृथक कर दूसरा लेप बाँधते हैं। लेप को शुष्क होने के पूर्व ही शोथ

स्थान से पृथक् करते हैं। लेप के शुष्क हो जाने पर बेचैनी होने लगती है, और वेदना उत्पन्न हो जाती है । यदि लेप लगाने से स्थानिक त्वचा लाल हो गई हो तो उस पर वैसलीन या घी लगा देते हैं ।

वेदना नाशक बनाने के लिये इस लेप में करीब १५ बूंद टिचर ओपियम (Tr Opium) मिला देते हैं।

(२) राजिका उपनाह (Mustard Poultice):—अलसी के सदृश ही इसका भी निर्माण करते हैं; किन्तु प्रयुक्त होने वाले स्थान पर इसको लगाने के पूर्व घी लगा देते हैं क्योंकि इसमे क्षोभक शक्ति अधिक होती है । इसका व्यवहार फुफ्फुस शोथ (Pneumonia) में अधिक होता है।

केओलीन उपनाह (Kaolin-poultice)

केओलीन (Kaolin)—१ पौण्ड (½ सेर)
बोरिक एसिड (Boric acid)—२ औंस (१ छटाँक)
मिथिल सैलिसिलेट (Methyl salicylate)—४० बूंद,
आयल पिपरमिण्ट (Oil pippermint):—५ बूंद
थाइमोल (Thymol):—१० ग्रेन
ग्लीसरीन (Glycerine):—१ पौण्ड (½ सेर)
इन सब द्रव्यों को एक में मिलाकर बंद पात्र में रखते है ।

उपयोग—

(१) शोथ को दूर करना । (२) शोथ को पका कर फोड़ देना ।

निषेध—

विदीर्ण त्वचा पर उपनाह नहीं लगाना चाहिये; क्योंकि विदीर्ण त्वचा द्वारा इनका शरीर से शोषण हो जाता है।

लेप (Plaster)

निर्माण विधिः—स्निग्ध पदार्थ को जो चिपकने वाला है; एक वस्त्र पर फैलाकर चर्म पर चिपका देते हैं। यह बना बनाया भी बिकता है। इसमें औषधि मिली होती है; जिसको चर्म के सम्पर्क में लाते हैं।

प्रकार—

(१) बेलाडोना प्लास्टर (Belladona Plaster)
(२) कैथेरायडीन प्लास्टर (Cantharidine Plaster)
(३) कोलोफोनी प्लास्टर (Colophoni Plaster)
(४) प्लम्बाई प्लास्टर (Plumbi Plaster)

गुण तथा प्रयोग—

(१) वैलाडोना प्लास्टर (Belladona Plaster)—यह स्थानिक वेदना नाशक होता है। अतः इसका प्रयोग कटिशूल (Lumbago), नाडीशूल (Neuralgia) वेदना युक्त ग्रंथि (Painful glands) तथा शोथ (Swelling) में होता है।

(२) कैंथेरायडीन (Cantharidine)—यह फफोला उत्पन्न करता है; जिसे वेसिकेण्ट (Vesicant) कहते हैं।

(३) कोलोफोनी (Colophoni)—क्षत (Wound) के किनारों को परस्पर एकत्रित करने के काम में आता है।

(४) प्लम्बाई (Plumbia)—शामक (Sedative) और रक्षक (Protective) होता है।

ध्यान देने योग्य बातें

(१) लेप (Plaster) अपने स्थान से थोडा बड़ा होना चाहिये।

(२) प्लास्टर (Plaster) बीच, बीच में संकुचित नहीं होना चाहिये बल्कि पूर्ण प्रसारित हो।

(३) स्तन पर लेप (Plaster) लगाते समय प्लास्टर को गोला काटना चाहिये, तथा प्लास्टर के मध्य में चुचुक (Nipple) के लिये छिद्र कर देना चाहिये ताकि वह बाहर निकला रहे।

(४) प्लास्टर लगाने के स्थान को विसंक्रमित तथा क्षोभ रहित कर देना चाहिये।

(५) प्लास्टर को तारपीन का तेल या क्लोरोफार्म से तर करके छुड़ाना चाहिये।

लेप (Liniments)

लेप (लिनिमेण्टस् Liniments) अर्ध तरल पदार्थ होता है, जो चर्म पर मलने वा लेप करने के लिये व्यवहृत होता है।

संख्या तथा कार्य—

(१) एकोनाइट (Aconite)—स्थानिक शामक और वेदना नाशक होता है।

(२) वेलाडोना (Belladona)—तीव्र स्थानिक वेदना नाशक।

(३) ए० बी० सी० (A B C)—वेदना नाशक तथा संज्ञाहारक।

(४) कैम्फोरी (Camphorae)—स्थानिक उत्तेजक (Local Stimulant)।

(५) टेरिबिन्थ (Teribinth)—क्षोभक तथा फफोला उत्पादक।

(६) कैम्फोरी एमोनिएटम (Camphorae Ammoniatum)—फफोलोत्पादक और प्रतिक्षोभक (Counter-irritant)।

(७) टेरिबिथ एसिटिकम (Terebinth Aceticum)—तीव्र फफोलोत्पादक।

(८) सैपोनिस (Saponis)—मोच (Sprain) तथा छिन्न क्षत (Bruises) में व्यवहृत होता है। यह उत्तेजक (Stimulant) होता है।

वस्ति (Enema)

वस्ति का वर्णन—

प्राचीन काल में वस्ति गाय, भैंस, हरिण, सुअर, बकरी आदि के मूत्राशय की बनती थी। मूत्राशय को लेकर शिरा आदि साफ करके व्यवहार में लाते थे। जब उपरोक्त पशुओं का मूत्राशय नहीं मिल सकता था तब उसके अभाव में पक्षियों के चर्म का या मोटे कपड़े की वस्ति बनाते थे।

आधुनिक काल में रबर वा धातु का बना बनाया पात्र मिलता है।

नेत्र (Nozzle) का वर्णन

प्राचीन काल में नेत्र स्वर्ण, चाँदी, ताम्र, सीसा, कांसा, अस्थि, लोह, बांस, सींग तथा मणि आदि वस्तुओं का तीन उभार युक्त बनाते थे, जिसकी लम्बाई अवस्थानुसार ६ अंगुल से लेकर १२ अङ्गुल तक रहती थी। नेत्र का मूलभाग अङ्गुष्ठ के बराबर मोटा होता था तथा अग्रिम भाग कनिष्ठिकांगुलि के बराबर पतला होता था। नेत्र के छिद्र भी नेत्र के स्थूलता के अनुसार मूंग से लेकर झड़बेर के गुठली के बराबर होता था। ये नेत्र सीधे तथा चिकने होते थे।

आधुनिक काल में नेत्र धातु तथा सेलुलाइट का बना आता है लम्बाई में करीब ६ इंच के होता है। आजकल भी प्राचीन काल के नेत्र सदृश ही नेत्र का मूल भाग स्थूल और अग्रभाग तनु होता है।

वस्ति देने की विधिः

रोगी को पूर्व में मूत्र और मल का त्याग कराके एक शय्या पर वाम पार्श्व पर लिटा देते हैं। रोगी का वाम हस्त उसके शिर के नीचे होता है और दाहिना पैर उदर पर मुड़ा रहता है। रोगी का शिरहाना कुछ नीचा रहता है। आवश्यकतानुसार रोगी के नितंम्ब के नीचे तकिया भी लगा देते हैं। रोगी के गुदा तथा नेत्र (Nozzle) को ऐरण्ड तैल से स्निग्ध कर नेत्र को गुदा के अन्दर पृष्ठवंश के सहारे धीरे धीरे मृदुता के साथ प्रविष्ट करते हैं। नेत्र प्रविष्ट करने के पूर्व यह देख लेते हैं कि नेत्र का मूलभाग वस्ति से भलीभाँति सम्बन्धि है वा नहीं। नेत्र को प्रविष्ट करने के पश्चात् वस्ति को वाम हाथ से पकड कर दक्षिण हाथ से इस प्रकार दबाते है, कि वस्ति का द्रव गुदा में न तो बहुत तीव्रता के साथ और न तो बहुत मन्दता के साथ प्रविष्ट हो या पात्र को इतनी ऊचाई पर लटकाते हैं; कि द्रव की तीव्रता अधिक न होने पावे। वस्ति के सम्पूर्ण द्रवों को गुदा में नहीं प्रविष्ट करते बल्कि कुछ द्रव को पात्र में अवशिष्ट रखते हैं, ताकि वायुका प्रवेश गुदा में न हो सके।

गुदा में आधा द्रव प्रविष्ट करने पर ही यदि मल वा वायु का वेग ज्ञात हो तो नेत्र को वाहर निकाल लेना चाहिये। मल, वायु का रोगी त्याग कर ले तो अवशिष्ट द्रव को पुनः प्रविष्ट करना चाहिये। वस्ति ले चुकने पर रोगी को पीठ पर तकिये के सहारे लिटाना चाहिये। इस प्रकार लिटाने से वस्ति का वीर्य सम्पूर्ण शरीर में फैल जाता है।

प्रथम वस्ति वायु को शान्त करती है, दूसरी वस्ति पित्त को और तीसरी वस्ति कफ को अपने स्थान से खींचकर वाहर करती है। वस्ति के वापस आ जाने पर रोगी को उष्ण जल से स्नान कराकर शालि भात खाने को देना चाहिये।

वस्ति के गुण—

भलीभांति वस्ति कर्म सम्पादित होने पर शरीर पुष्ट होता है, कान्ति की वृद्धि होती है, आरोग्यता होती है और आयु बढती है।

वस्तिप्रकार—

आयुर्वेद में वस्ति के मुख्य दो प्रकार मानते हैः—

(१) अनुवासन वस्ति। (२) निरूह या अस्थापन वस्ति।

अनुवासनवस्ति

परिचयः—जिस वस्ति में घी, तैलादि चिकनी वस्तु का व्यवहार होता है उसे अनुवासन वस्ति कहते हैं।

अनुवासन के योग्य व्यक्ति

(१) रूक्ष प्रकृति वाले व्यक्ति को अनुवासन वस्ति देना चाहिये।
(२) तीव्राग्नि वाले व्यक्ति को अनुवासन वस्ति देना चाहिये।
(३) वात रोगी को अनुवासन वस्ति देना चाहिये।

अनुवासन के अयोग्य व्यक्ति

कुष्ठी, प्रमेह रोगी, मेदस्वी, उदर रोगी, अजीर्णी, उन्मादी, तृषा, शोक, भय, अरुचि, मूर्च्छा, श्वास, कास तथा क्षय रोग से पीड़ित व्यक्ति अनुवासन वस्ति के अयोग्य होते हैं।

निरूह वस्ति

परिचयः—जिस वस्ति में क्वाथ, दुग्ध तथा तैल मिश्रित करके व्यवहार होता है उसे निरूह वस्ति कहते हैं।

पर्यायः—निरूह वस्ति को 'आस्थापन वस्ति' भी कहते हैं; क्योंकि यह वस्ति दोष तथा रस आदि को यथास्थान स्थापित करती है।

मात्रा—

उत्तम मात्रा ८० तोले की, मध्यम मात्रा ६० तोले की तथा हीन मात्रा ४८ तोले की होती है।

निरूहण के योग्य रोगी

वातव्याधि से पीडित, उदावर्त, वातरक्त, विषमज्वर, मूर्च्छा, तृषा, उदर रोग, आध्मान, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, मंदाग्नि, प्रमेह, शूल, अम्लपित्त और हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को निरूह वस्ति देना चाहिये।

निरूहण वस्ति के अयोग्य व्यक्ति

अत्यन्त स्नेह पान किये हुये व्यक्ति को, उर्ध्वगामी दोष वाले व्यक्ति हो, उरःक्षत, दुर्बल, आध्मान, छर्दि, हिक्का, अर्श, कास, श्वास, गुदाके शोथ, अतिसार, विसूचिका कुष्ठ, मधुमेह तथा जलोदर से पीड़ित व्यक्ति को और गर्भिणी को निरूह वस्ति नहीं देनी चाहिये।

उत्तम अनुवासन तथा निरूह वस्ति के लक्षण

(१) मन का एकाग्र हो जाना। (२) मन में संन्तोष हो जाना।
(३) अंगों का स्निग्ध होना। (४) रोगों का नष्ट हो जाना।
(५) शरीर का हलका हो जाना।

अब आगे आधुनिक काल में प्रयुक्त होने वाले वस्ति (Enema) का वर्णन किया जायगा।

वस्ति (Enema)

परिभाषाः—मलाशय (Rectum) में गुदा के मार्ग से शरीर में तरल पदार्थ उचित यंत्र द्वारा जब प्रविष्ट किया जाता है; तब उसे वस्ति (Enema) कहते हैं।

वस्ति विधिः—पूर्व वर्णित विधि से देते हैं।

कार्यानुसार वस्ति प्रकार—

(१) कृमिनाशक वस्ति (Anthelmintic Enema):—इस वस्ति में क्वेसिया (Quessia) नामक द्रव्य का शीत कषाय (Infusion) या अतिवल लवणोदक (Hypertonic saline) को गुदा में स्फीत कृमि (Thread-worms) को बाहर निकालने के लिये प्रविष्ट करते हैं।

(२) संकोचक वस्ति (Astringent Enema):— संकोचक वस्ति का व्यवहार प्रवाहिका (Diarrhœa), मलाशयिक रक्तस्राव (Rectal Hæmorrhage) तथा आँव (Mucus) को बंद करने के लिये होता है।

(३) उत्क्लेश नाशक वस्ति (Anti-Spasmodic Enema):—जब आंत्रो में वायु भरा रहता है तथा उनमें कड़न होती है, तो उसे दूर करने के लिये तारपीन तेल (Turpentine oil), स्टार्च में हींग मिलाकर (Tr. asafetida 6 to 12 P. c. in mucilage of starch), ब्रोमाइड (Bromide) को नार्मल सेलाइन (Normal saline साधारण लवणोदक) में मिलाकर गुदा में प्रविष्ट करते है।

(४) शामक वस्ति (Sedative Enema):—इस वस्ति मे टिंचर ओपियम (Tr opium) को ३ से ६ प्रतिशत की शक्ति में स्टार्च (Starch) के घोल में मिलाकर मलाशय की वेदना को शान्त करने के लिये प्रयुक्त करते हैं।

(५) पिच्छिल वस्ति (Emollient Enema):—इस वस्ति में बृहदांत्र तथा मलाशय (Rectum) के क्षोभ को दूर करने के लिये स्टार्च (Starch), अलसी (Linseed) या वार्लि (Barly) का व्यवहार होता है।

स्टार्च को पहले थोड़े ठण्डे जल में घोल लेते हैं; फिर उसमें इतना गरम जल मिश्रित करते हैं कि वह नलिका तथा नेत्र में सुगमता के साथ गति करने योग्य हो जाय।

(६) पोषक (Nutrient-Enema):—पोषक वस्ति देने के पूर्व नित्य प्रातः काल किंचित गरम जल (Tepid water) से आंत्रो को साफ कर लेते है। पोषक वस्ति का आश्रय उस समय लेते हैं, जिस समय रोगी भोज्य पदार्थ को निगल नहीं सकता या आमाशय क्षोभ के कारण आमाशय में न रुक कर वमन हो जाता है। पोषक वस्ति (Nutrient Enema) द्वारा रोगी के शरीर में पोषक पदार्थ प्रविष्ट किया जाता है।

पोषक वस्ति (Nutrient Enema) में ग्लुकोज (Glucose) या डेक्स्ट्रोज (Dextrose) को १० प्र० शत की शक्ति में समबल लवणोदक (Normal Saline) में घोलकर बूंद बूंद करके गुदा में प्रविष्ट करते हैं। एक वार में ३-४ औंस से अधिक नहीं देते।

पोषक वस्ति (Nutrient Enema) आवश्यकतानुसार दिन में दो तीन वार प्रविष्ट किया जा सकता है।

विरेचकवस्ति (Purgative Enema)—इस वस्ति (Enema) का व्यवहार अधोआंत्र को रिक्त करने के लिये होता है।

विरेचक वस्ति में प्रयुक्त होनेवाले द्रव्य

(अ) लवण वस्ति (Salt Enema):—साधारण लवण को उचित मात्रा में जल में डाल गरम कर उचित मात्रा में विरेचन के लिये गुदा में प्रविष्ट करते हैं।

(ब) साबुन की वस्ति (Soap Enema):—साधारण कोमल साबुन को लेकर गरम जल में पूर्ण झागोत्पत्ति तक दोनों हाथों से मलते हैं, तत्पश्चात् साबुन को

अलग रखकर गरम जल को हाथ से भली भाँति मिलाते हैं, ताकि झाग कुछ बैठ जाय और साबुन पूर्ण रूप से जल में मिल जाय। अब इस जल को विरेचन के विचार से गुदा मार्ग में प्रविष्ट करते हैं।

(स) एरण्ड तैल की वस्ति (Castor-oil Enema):—साबुन की वस्ति में तैल आध छटाँक की मात्रा में मिश्रित कर प्रविष्ट करते हैं। इस वस्ति से शुष्क मल भी सुगमता के साथ बाहर आ जाता है।

(द) जैतून तैल की वस्ति (Olive oil Enema):—एरण्ड तैल सदृश इसका भी व्यवहार करते हैं।

(य) ग्लिसरीन की वस्ति (Glycerin Enema):—यह अधिकतर बच्चों को दस्त कराने के लिये व्यवहृत होता है। यह एक विशिष्ट प्रकार की पिचकारी, जिसको ग्लिसरीन सिरिंज (Glycerin Syring) कहते हैं, से मलाशय में प्रविष्ट किया जाता है। ग्लिसरीन की वस्ति देते समय ध्यान रहे कि जितनी मात्रा में ग्लिसरीन प्रविष्ट करनी हो उतनी मात्रा गरम जल भी ग्लिसरीन मे मिलाकर तब प्रविष्ट करना चाहिये। एक बार में २ से ४ ड्राम की मात्रा पर्याप्त होती है।

अवस्थानुसार विरेचक वस्ति (Purgative Enema) की साधारण मात्रा

अवस्था	मात्रा
एक युवा व्यक्ति को	१ पाइन्ट (1 Pint)
४ वर्ष के बच्चे को	४ से ६ औंस (oz.)
शिशु को	१ औंस

(र) समबल लवणोदक वस्ति (Normal Saline Enema):—गरम जल में साधारण लवण (Sodium Chloride) को घोलकर दिया जाता है। इस वस्ति (Enema) से यह लाभ होता है, कि आंत्र की कृमि (Intestinal Worms) नष्ट हो जाते हैं तथा शल्यकर्मोत्तर घात तथा अवसाद दूर होता है। इसका तापक्रम १०६° से १०८ F तक होता है; और इसको पोषक वस्ति (Nutrient Enema) की भाँति शनैः शनैः देते हैं।

(ल) विरेचन के कार्य के लिये एक विधि और कार्य में लाई जाती है; उसे गुदवर्ती (Suppository) कहते है। यह ग्लिसरीन वर्ती (Glycerin Suppository) की बनी बनाई बाजार में बिकती है जो अवस्थानुसार छोटी बड़ी होती है। घर पर भी साबुन आदि की वर्ती बनाकर विरेचन के काम में प्रयुक्त करते हैं। यह एक कोमल बत्ती के आकार की गोली और छोटी वर्ति होती है। जिसको गुदा में प्रविष्ट कर दोनों नितम्बों को दोनों हाथों से दबा रखते हैं। थोड़े समय के पश्चात्

वर्ति शारीरिक ताप से गुदा के अन्दर पिघल जाती है और विरेचन प्रारम्भ हो जाता है।

गुदवर्ती (Suppositories) का व्यवहार स्थानिक कार्य के लिये या पार्श्ववर्ती अङ्गों को प्रभावित करने के लिये जैसे गर्भाशय (Uterus), मूत्राशय (Bladder) या शोषण के पश्चात् सार्वदैहिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिये करते हैं जैसे मार्फीन की गुदवर्ती (Morphine Suppository) मलाशय तथा गर्भाशय और मूत्राशय के वेदना और क्षोभ को दूर करती है तथा निद्रा लाती है।

गुदवर्ती (Suppository) की संख्या तथा कार्य

(१) ग्लिसरीन गुदवर्ती (Glycerin Suppository):—यह सारक (Laxative) होती है।

(२) आयडोफार्म गुदवर्ती (Iodoform Suppository)—यह स्थानिक जीवाणु नाशक (Local Antiseptic) होती है।

(३) फेनल गुदवर्ती (Phenol Suppository):—जीवाणु नाशक तथा स्थानिक संज्ञा हारक (Local Anaesthetic) होती है।

(४) बेलाडोना गुदवर्ती (Belladona Suppository)—स्थानिक शामक होती है।

(५) मार्फीन गुदवर्ती (Morphine Suppository :—यह गुदवर्ती स्थानिक वेदना नाशक और निद्रालु होती है।

(६) एसिड टैनिक गुदवर्ती (Acid tannic Suppository)—स्थानि जीवाणु नाशक तथा संकोचक (Styptic) होता है।

(७) प्लम्बाई तथा ओपियम मिश्रित (Plumbicumopii):—वेदनाहारक तथा संकोचक होती है।

उत्तर वस्ति (Douche डूश)

परिभाषा:—शरीर के किसी कोष्ट को साधारण या ओषधि मिश्रित द्रव से प्रक्षालित करने को उत्तर वस्ति या डूश (Douche) कहते हैं।

वस्ति नेत्र (Nozzles)

उत्तर वस्ति का नेत्र (Nozzle) बारह अङ्गुल लम्बी तथा मध्य में कर्णिका युक्त होती है, जो मालती पुष्प के डण्ठल सदृश पतली होती है। इसका छिद्र सरसों के बीज के जाने के प्रमाण का होता है। यह पुरुषों के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

स्त्रियों के लिये उत्तर वस्ति का नेत्र (Nozzle) दस अंगुल लम्बी कनिष्टिकाङ्गुली सदृश मोटी होती है। इसका छिद्र मूग के दाने के प्रविष्ट होने के प्रमाण का होता है। यह नेत्र स्त्रियों के योनि में प्रविष्ट किया जाता है।

स्त्रियों के मूत्र मार्ग में प्रविष्ट करने के लिये इससे पतली तथा दो अङ्गुल छोटी नाजिल (Nozzle) होती है।

उत्तर वस्ति देने की विधि

निरुह वस्ति से शुद्ध तथा स्नान और भोजन किये हुये रोगी को जानु के वल बैठाकर यथा योग्य स्निग्ध तथा विसंक्रमित शलाका, स्निग्ध किये हुये शिश्न मार्ग में प्रविष्ट करते हैं। शलाका प्रवेश एकाएक न कर शनैः शनैः करते हैं। शलाका को छः अङ्गुल के प्रमाण में मूत्राशय में प्रविष्ट करते हैं, तत्पश्चात् शलाका से सम्बन्धित द्रव युक्त वस्ति को दवा कर द्रव को मूत्राशय में प्रविष्ट करते हैं। द्रव के प्रविष्ट करने के पश्चात् शलाका को शनै शनै बाहर निकलते हैं। अब प्रविष्ट किया हुआ द्रव बाहर निकलता है। जब सम्पूर्ण द्रव मूत्र मार्ग से बाहर आ जाता है तब उत्तर वस्ति उत्तम कहलाती है।

स्त्रियों में भी इसी भाँति से गर्भाशयिक तथा मूत्र प्रणाली में नेत्रों का आवश्यकतानुसार व्यवहार किया जाता है।

उत्तर बस्ति के गुण

उत्तर बस्ति से मूत्र प्रणाली तथा गर्भाशय की व्याधियाँ शान्त होती हैं।

अब आधुनिक काल में वर्णित उत्तर वस्ति (Douche) का वर्णन किया जायगा। इसके पूर्व आयुर्वेदोक्त उत्तर बस्ति का वर्णन किया गया है।

उत्तर वस्ति (Douche)

प्राचील काल में पुरुषों में जहां उत्तर वस्ति का वर्णन आया है, उसे आधुनिक काल में मूत्राशय प्रक्षालन (Bladder Irrigation) तथा शलाका (Catheter) प्रवेश कहते हैं। आधुनिक काल में उत्तर बस्ति (Douche) की नामावली अधोलिखित है।

उत्तर बस्ति (Douches) की नामावली

(१) गर्भाशयिक उत्तर बस्ति (Intra-Uterine इन्ट्रा यूटराइन डूश)
(२) योनि प्रक्षालक (Vaginal Douche वेजाइनल डूश)
(३) कर्ण प्रक्षालक (Ear Douche ईयर डूश)
(४) नेत्र प्रक्षालक (Eye Douche आई डूश)
(५) नाशा प्रक्षालक (Nasal Douche नेजल डूश)

यहाँ पर इन उपरोक्त ५ प्रकार के उत्तर बस्तियो (Douches) के अतिरिक्त शलाका प्रवेश (Catheterization) तथा मूत्राशय प्रक्षालन (Bladder Irrigation) का भी वर्णन किया जायगा; क्योंकि आयुर्वेद में इन दोनों को भी उत्तर वस्ति (Douche) के अन्तर्गत वर्णन किया गया है।

शलाका प्रवेश (Catheterization)

शलाका वर्णनः—आधुनिक काल में शलाका, धातु तथा रबर (Rubber) का बना होता है, जो विभिन्न नम्बरों का होता है। बालकों का पतला तथा पुरुषों का मोटा और बड़ा होता है। स्त्री जातियों में प्रयुक्त होने वाला शलाका पुरुष जाति की अपेक्षा स्थूल तथा सूक्ष्म होता है; क्योंकि स्त्री जाति की मूत्र प्रणाली (Urethra यूरेथ्रा) पुरुष जाति के मूत्र प्रणाली (Urethra) से सूक्ष्म तथा प्रसारित होता है।

शलाका प्रवेश की आवश्यकता

शलाका (Catheter) मूत्र मार्ग में उसी समय प्रविष्ट किया जाता है; जिस समय कोई व्यक्ति स्वतः मूत्र का त्याग नहीं कर सकता तथा मूत्राशय मूत्र से प्रसारित होकर रोगी को कष्ट दे रहा हो। यह अवस्था मूत्राशय या मूत्र मार्ग की व्याधियों में या मूत्राशय या पार्श्ववर्ती अङ्गों के शल्यकर्मोत्तर उत्पन्न होती है।

शलाका प्रवेशविधि

शलाका के भेद से शलाका प्रवेश की दो विधियाँ होती हैं।

(१) धातु (Metal) शलाका प्रवेश।

(२) रबर (Rubber) शलाका प्रवेश।

(१) धातु शलाका (Metal Catheter मेटल-कैथिटर) प्रवेशः—रोगी को शय्या या टेबुल पर पीठ पर लिटा देते हैं, तथा चिकित्सक रोगी के वाम पार्श्व में खड़ा हो जाता है। रोगी के नाभि तथा इसके ऊर्ध्व भाग को पूर्ण रूप से नग्न कर लेते हैं। रोगी के मूत्र द्वारा (Meatus) और शिश्न (Penis पेनिस) को तथा चिकित्सकके हाथ को विसंक्रमित कर लेना चाहिये। शलाका को भी विसंक्रमित करके विसंक्रमित या जीवाणु नाशक वस्तु द्वारा स्निग्ध करके चिकित्सक दक्षिण हाथ में शलाका को ग्रहण कर मूत्रमार्ग (Urethra) में प्रविष्ट करता है। शलाका प्रवेश के समय शलाका का अन्तिम भाग रोगी के वाम उरु (Left thigh) पर कुछ नीचे होता है। शलाका के अग्रिम शिरे को मूलाधार (Perineum पेरिनियम) तक प्रविष्ट करने के पश्चात् शलाका के अन्तिम शिरे को नाभि (Umblicus) की ओर से घुमाकर मध्य रेखा में लाते हैं। शिश्न को वाम हस्त से चिकित्सक पकड़े रहता है। शलाका को मध्य रेखा में लाकर थोड़ा आसानी से ऊंचा उठा देते हैं। इस प्रकार शलाका स्वयं मूत्राशय में प्रविष्ट हो जाता है।

(२) रबर शलाका (Rubber Catheter) प्रवेशः—इस शलाका को बराबर घुमते हुये दबाकर मूत्राशय में प्रविष्ट करते है। अगर शलाका का जाना किसी कारण से रुक जाय तो शलाका को कुछ पीछे खींचकर पुनः दबाव के साथ प्रविष्ट करते हैं।

इस शलाका को भी प्रविष्ट करते समय उपरोक्त विसंक्रमता तथा स्निग्धता का ध्यान रखना नितान्त आवश्यक है ।

शलाका प्रविष्ट करने के पश्चात् मूत्र एकत्रित करने के लिये रोगी के दोनों उरु (Thigh) के मध्य में एक पात्र रख देना चाहिये ।

जब मूत्र निकलना बंद हो जाय तब शलाका (Catheter) को शनैः शनैः बाहर निकाल कर उष्ण जल से प्रक्षालित कर वस्त्र से शुष्क कर रख लेना चाहिये ।

शलाका प्रविष्ट करते समय कुछ भयानक परिणाम भी शलाका जन्य होता है; जिसका वर्णन आगे किया जायगा । अतः शलाका प्रविष्ट करते समय उन भयानक परिणामों से बचने का यथासाध्य सर्वदा प्रयत्न करते रहना चाहिये ।

The Chief Danger of Catheterizatioh

शलका प्रवेश के मुख्य भयानक परिणाम

(१) अवसाद (Shock):—नोवोकेन (Novocaine) के ५ प्रतिशत शक्ति के घोल को आधे ड्राम की मात्रा में प्रविष्ट कर शलाका (Catheter) प्रविष्ट करने से अवसाद का भय जाता रहता है। अवसाद (Shock) की सम्भावना कोमल व्यक्तियों में अधिक होती है ।

(२) रक्तस्रावाधिक्य (Hæmorrhage):—मूत्राशय तथा मूत्र प्रणाली में रक्ताधिक्य (Congestion) होने तथा शलाका के खुरदुरा होने से रक्तस्राव की सम्भावना होती है । अतः शलाका चिकनी होनी चाहिये ।

(३) मिथ्यामार्ग (False Passage):—मूत्रमार्गसंकीर्णता (Stricture) मेशलाका को अधिक शक्ति से प्रविष्ट करने के कारण मिथ्यामार्ग निर्माण हो जाता है।

(४) ज्वर (Fever):—वृक्क के दूषित होने से शलाका प्रविष्ट करने पर ज्वर हो जाता है ।

(५) शोथ (Inflammation):—विसंक्रमता (Sterilization) पर ध्यान न रखने के कारण संक्रमण (Infection) फैलने से शोथोत्पन्न हो जाता है ।

मूत्राशय-प्रक्षालन (Bladder Irrigation)

यंत्र नामावली (Apparatus)

(१) ग्राहक पात्र (Irrigator, Cane या Receiver).—जिसमें (4 Pints) पाइण्ट तरल आता हो ।

(२) आठ या ९ फीट रबर नलिका (Rubbertubing)

(३) शीशा का वाई (Y) के आकार का नेत्र (Canula)

(४) मूत्र एकत्रित करने का पात्र।

(९) प्रक्षालक घोल।

प्रक्षालन विधि—

सर्व प्रथम रोगी को मूत्र त्याग करने का आदेश करते हैं। मूत्र त्याग कर लेने के पश्चात् रोगी को पीठ पर पलंग पर लिटाते हैं। तत्पश्चात रोगी के मूत्र नलिका को तथा यंत्र को विसंक्रमित कर ग्राहक (Receiver) को पलग से सर्व प्रथम २ फीट ऊँचा रखते हैं और इस ग्राहक में पोटेशियम परमांगनेट (Potassium Permangnate) के घोल को आवश्यकतानुसार विभिन्न शक्ति में (५,००० में १ से २००० में १ तक) १०४°F ताप-क्रम में भरते हैं। द्रव भरने के पश्चात् शीशेके नेत्र (केनुला Cannula) को मूत्र प्रणाली में प्रविष्ठ करते हैं। मूत्र प्रणाली में द्रव प्रविष्ट करते समय नेत्र (Cannula) के एक मार्गको अगुली द्वारा बंद रखते हैं। जब मूत्राशय पूर्ण रूपसे भर जाता है तब उसके दूसरे मार्ग को खोलकर द्रव को बाहर पात्र मे एकत्र कर लेते हैं। इस प्रकार से एक ओर से मूत्राशय मे द्रव प्रविष्ट होता है और दूसरे मार्ग से बाहर आता जाता है। द्रव प्रवेश के समय यदि रोगी की मूत्रत्याग की इच्छा हो तो प्रक्षालन बंद कर देना चाहिये। एक बार में १ से २ पाइन्ट (Pint) घोल मूत्राशय (Bladder) में प्रविष्ट करना चाहिये। मूत्राशय प्रक्षालन दस, १५ दिनों तक निरन्तर करना चाहिये। जब मूत्राशय से किसी प्रकार का स्राव न निकले उस समय प्रक्षालन बंद कर देना चाहिये। प्रक्षालन करते समय पौरुष ग्रंथि (Prostate-gland) का मर्दन करते रहना चाहिये ताकि सम्पूर्ण संक्रमित वस्तु बाहर आ जाय।

प्रक्षालन मे प्रयुक्त होने वाले घोलों की तालिका

घोल का नाम		शक्ति	
हिन्दी	अंग्रेजी	हिन्दी	अंग्रेजी
पोटेशियम परमाग्नेट	Potssium permangnate	५००० में १ से ५०० में १ तक	1 In 5000 to 1 in 500
मरक्यूरियल परक्लोराइट	Mercurial perchloride	१५००० में १ से १००० में १ तक	1 in 15000 to 1 in 1,0000
मरक्यूरियल आक्सीसाइनाइड	Mercurial Oxycyanide	१०,००० के १ से २००० में १ तक	1 in 10,000 to 1 in 2000
जिंकसल्फेट	Zinc Sulphate	१ पाइन्टमे ३० ग्रेन	30 grs to 1 pint
टैनिक एसिड	Tannic acid	१ पाइन्ट जलमें ३० ग्रेन	30 grs to 1 pint
कापरसल्फेट	Copper Sulphate	१ पाइन्ट जलमें २० ग्रेन	20 grains in 1 pint
एलम (फिटकिरी)	Alum	१ पाइण्ट जल में १ ड्राम	1 Drachm to 1 pint

गर्भाशयिक उत्तर वस्ति (Intra uterine douche)

गर्भाशय प्रक्षालन अधिकतर प्रसवोत्तर रक्तस्राव (Postpartum Haemorrhage) को रोकने के लिये किया जाता है। प्रक्षालन करने के पूर्व योनि को पूर्ण रूप से विसंक्रमित करके इसमें योनि दर्शक यत्र (Vaginal speculum वेजाइनल स्पेकुलम) लगा देते हैं; ताकि गर्भाशय ग्रीवा (Uterine cervix) भली भाँति दिखलाई देने लगे। अब नलिका को गर्भाशय ग्रीवा में प्रविष्ट कर उपरोक्त विधि से द्रव को प्रविष्ट कर गर्भाशय का प्रक्षालन करते हैं। गर्भाशय प्रक्षालन के पूर्व रोगिणी को मूत्रत्याग कर लेने का आदेश करते हैं।

गर्भाशय प्रक्षालन में प्रयुक्त होने वाले जीवाणु नाशक द्रव्य का तापक्रम कम से कम ११२° से ११८°F तक होना चाहिये।

योनि प्रक्षालन (Vaginal Douche)

योनि प्रक्षालन में वस्ति पात्र (Enemapot एनिमा पाट) ही काम में आता है, केवल इसका नेत्र दूसरा होता है, जो साधारण नेत्र (Nozzle) से लम्बा और छिद्र, युक्त होता है।

योनि प्रक्षालन विधि—

स्त्री को पलंग पर चित्त लिटा देते हैं और उसके घुटने मुडे रहते हैं। प्रक्षालन करने के पूर्व स्त्रीके वाह्यजननेन्द्री (External organs) तथा वस्ति पात्र (Enemapot) को विसंक्रमित कर लेते हैं। अब नेत्र (Nozzle) को ६ इंच योनि में प्रविष्ट करके द्रव को प्रविष्ट करते हैं। चूंकि योनि (Vagina) में सकोचक पेशियों का अभाव होता है इसलिये प्रविष्ट किया हुआ द्रव स्वतः वाहर आने लगता है। अतः इस वाहर आने वाले द्रव को एकत्रित करने के लिये रोगिणी के दोनों जघो के मध्य एक पात्र रख देते हैं। योनि (Vagina) में द्रव प्रविष्ट करते समय पात्र (Enema pot) की ऊँचाई कम से कम २ फीट होती है। योनि प्रक्षालन में मूत्राशय प्रक्षालन में प्रयुक्त होने वाले द्रव ही काम में आते हैं। इन द्रवों का तापक्रम १००° से ११०°F तक होता है।

योनि प्रक्षालन के पश्चात् स्त्री के वाह्य जननेंद्रियों को शुष्क तथा विसंक्रमित वस्त्र से पोंछ कर शुष्क कर देते हैं।

कर्ण प्रक्षालन (Ear Douche)

कुछ काल पूर्व कर्ण स्राव (Suppurative otitis Media सपुरेटिव ओटाइटिस मीडिया) में पूय को साफ करने के लिये कर्ण प्रक्षालन किया जाता था, किन्तु यह

प्रणाली दोष जनक सिद्ध हुई; क्योंकि इससे संक्रमण और अंदर की ओर बढ जाता था। अतः अब कर्णशूल में तथा कर्ण को स्वच्छ करने के अभिप्राय से ही कर्णप्रक्षालन किया जाता है।

कर्णप्रक्षालन के लिये शीशे वा धातु की बनी बनाई पिचकारी (Syringe) आती है।

प्रक्षालन विधि—

रोगी को इस प्रकार बैठाते हैं; कि उसका शिर सीधा रहे और कान पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता हो। एक सहायक द्वारा रोगी के कान के नीचे किड्नीट्रे (Kidney-tray) नामक एक पात्र लगा देते हैं जिसमें कान से लौटा हुआ द्रव आकर एकत्रित होता है। अब चिकित्सक दक्षिण हाथ में जीवाणुनाशक द्रव (बोरिक एसिड या पोटेशियम परमाग्नेट) को पिचकारी में लेकर कान के बाह्य छिद्र में पिचकारी के अग्रिम भाग को प्रविष्ट कर धीरे धीरे घोल को प्रविष्ट करता है। घोल को प्रविष्ट करते समय वाम हाथ से कर्ण पाली को पकड़ कर कुछ पीछे और ऊपर को खींचे रहता है ताकि छिद्र स्पष्ट दिखलाई देता रहे।

कर्ण प्रक्षालन के पश्चात् कान को विसंक्रमित रुई से भली भाँति साफ कर देते हैं ताकि उसके अंदर जल तथा मैल न रहने पावे। अब औषधि डालकर कान में थोड़ी सी विसंक्रमित रुई डाल देते हैं।

नेत्र प्रक्षालन (Eye Douche)

नेत्र प्रक्षालन, नेत्र प्रक्षालक यंत्र (Undine) या वस्ति पात्र (Enema pot) द्वारा होता है। यह पात्र बस्ति पात्र (Enema pot) से छोटा होता है तथा इसमें २, ३ फीट लम्बी रबर नलिका लगी होती है। इसमें शीशे का नेत्र (Nozzle) लगा होता है।

प्रक्षालन विधि—

रोगी को बैठा देते हैं और शिर को पीछे तथा दूषित नेत्र के पार्श्व की ओर थोड़ा झुका देते हैं तथा नेत्र के बाह्य पार्श्व में किडनीट्र (Kidney tray) लगा देते हैं ताकि नेत्र प्रक्षालन में प्रयुक्त होने वाला द्रव नेत्र से उसी ट्रे में आकर एकत्रित हो। प्रक्षालक पात्र एक से डेढ़ फूट की ऊँचाई पर लटकता रहता है। नेत्र को भली भाँति विस्फारित कर अन्तः कोण से द्रव को नेत्र में धीरे धीरे प्रविष्ट कर बाह्य कोण की ओर ले जाते हैं। धोने के लिये समबल लवणोदक (Normal Saline) या बोरिक एसिड (Boric acid) १ % या २ %की शक्ति में व्यवहृत करते हैं। नेत्र

प्रक्षालन के पश्चात् नेत्र को विसंक्रमित रुई से भली भाँति शुष्क कर औषध डालते हैं।

नाशा प्रक्षालन (Nasal Douche)

नासा प्रक्षालन का यंत्र भी वस्ति पात्र (Enema pot) सदृश ही होता है किन्तु इसका नेत्र (Nozzle) एक विशिष्ट प्रकार का होता है।

प्रक्षालनविधि—

रोगी को बैठा कर शिर झुका रखने तथा मुख खुला रखने का आदेश देते हैं। अब रोगी को आदेश करते है; कि एक ट्रे (Tray) अपने हनु पर लगाये रखे ताकि नाशा प्रक्षालन में प्रयुक्त हुआ द्रव लौट कर इसी ट्रे (Tay) में एकत्रित होता रहे। नासा प्रक्षालन करते समय नाशिका के एक पार्श्व के नथुने को ऊपर उठा कर नेत्र (Nozzle) को नाशामार्ग में प्रविष्ट कर द्रव जाने देते हैं। इस प्रकार से प्रविष्ट किया हुआ द्रव दूसरे नथुने द्वारा बाहर आता रहता है। जब एक प्रणाली प्रक्षालित हो जाती है; तो उसी विधि से दूसरे प्रणाली का भी प्रक्षालन करते हैं।

'जीवाणु नाशक द्रव्य' (Antiseptic Drugs)

परिभाषा:—जो द्रव्य रोगोत्पादक जीवाणुओं को नष्ट करते है या उनकी वृद्धि को रोकते हैं; उन्हें जीवाणुनाशक (Antiseptic) द्रव्य कहते हैं।

(१) बोरिक एसिड (Boric Acid)—यह सौम्य (Mild) तथा कम जीवाणुनाशक होता है। इसका व्यवहार उसी समय होता है जब तीव्र जीवाणुनाशक द्रव्य शरीर के लिये हानि कारक सिद्ध होते हैं। इसका व्यवहार साधारणतः शिशुओं में किया जाता है। इसका विशेष प्रयोग शोथ के सेंक में तथा नेत्र के शल्य कर्म में किया जाता है।

(२) बिन आयोडाइड आफ मर्करी (Biniodide of Mercury):—इसका व्यवहार चिकित्सक के हाथ तथा रोगी के चर्म को शुद्ध करने के लिये होता है। यह तीव्र विषैला होता है। इसका घोल ७० % प्र० श० मेथिलेटेड स्प्रिट (Methylated Spirit) में ५०० में १ की शक्ति का बनाया जाता है।

(३) आयोडीन (Iodine):—यह बहुत ही उत्तम जीवाणुनाशक द्रव्य होता है। आधुनिक काल में टिंचर आयोडीन (Tincture Iodine) २ से ५ प्र० श० शक्ति से शल्य कर्म के पूर्व चर्म की स्निग्धता को नष्ट करने मे भी प्रयुक्त होता है।

(४) डेटाल (Dettol)—यह स्वच्छ हल्के पीले रङ्ग का तरल होता है जो उत्तम जीवाणुनाशक है। यह चर्म तथा यन्त्रों को विसंक्रमित (Sterlization)

करने के काम में आता है।

(५) यूसरोल (Eusrol):—यह सेक (Fomentation) के कार्य में प्रयुक्त होता है। अधिक दिनों तक व्रण या क्षत के सम्पर्क में रहने पर यह रोहण क्रिया में बाधक होता है।

(६) आइडोफार्म (Iodoform):—पीले रङ्ग का तीव्र गन्धयुक्त चूर्ण होता है। इसका मुख्य व्यवहार सड़े गले तथा टी० बी० जन्य व्रणों में होता है। यह वेसिलस टयूबर कुलोसिस (Bacillus Tuberculosis) के कार्य को रोक देता है।

(७) लाइसोल (Lysol):—यह टारकोल (Tar-Coal) से बनाया जाता है। यह जल में पूर्ण रूप से घुलन शील होता है। यह दो प्रतिशत की शक्ति में योनि (Vagina) तथा बाह्यकर्ण(External Ear)के प्रक्षालन में प्रयुक्त होता है।

(८) पोटेशियम परमाग्नेट (Potassium Permangnate)—यह दाहक होता है। इसका मुख्य व्यवहार दूषित व्रणों को जीवाणुहीन करने के लिये होता है तनु घोल में इसका व्यवहार गुहाओं के प्रक्षालन के लिये किया जाता है।

(९) हाइड्रोजन परआक्साइड (Hydrogen Peroxide):—यह भी दाहक होता है जो बाजार में घोल के रूप में मिलता है। यह क्षोभक नहीं होता जिसके कारण गुहाओं में निःसन्देह छोड़ा जाता है। यह आक्सीजन (Oxygen) का त्याग करता है और झाग उत्पन्न करता है, जिसके कारण पूय तथा विजातीय द्रव्य बाहर आ जाते हैं।

(१०) पिक्रिक एसिड (Picric Acid):—यह दग्ध (Burns) में बन्धन के कार्य के लिये उपयोगी है। यह वेदना को नष्ट करता है तथा संक्रमण नहीं होने देता। दग्ध के लिये यह सर्वोत्तम तथा बहुत ही उपयोगी है।

(११) एक्रिफ्लेविन (Acriflavine) तथा प्रोफ्लेविन (Proflavine):—ये दोनों एक ही प्रकार के जीवाणुनाशक होते हैं। ये जल में स्वतन्त्रतापूर्वक घुलनशील होते हैं। ये विष रहित होते हैं तथा इनका प्रभाव शारीरिक तन्तु पर कुछ भी नहीं होता।

(१२) ब्रिलिएण्ट ग्रीन (Brilliant Green):—यह भी शारीरिक तन्तुओं के लिये होते हैं। किन्तु यह रक्त लसिका के संपर्क में आने से शीघ्र ही क्रियाहीन हो जाता है। अतः दूषित व्रणों में इसको वारंवार लगाना पड़ता है।

(१३) फरमेल्डिहाइड (Formaldehyde):—यह गृह को जीवाणुहीन करने के कार्य में प्रयुक्त होता।

व्याधियों के सिद्ध योग

गर्भपात (Abortion)

(१) जवासा	२ माशा	रास्ना	२ माशा
सारिवा	" "	मुलेठी	" "
पद्माख	" "	कमल	" "

इनको एकत्र गाय के दूध में पीसकर पिलाना चाहिये। प्रातः तथा सायंकाल। यह गर्भस्राव को बन्द करती है।

(२) बबूल छाल	२ पैसा भर	जल	८ छटाँक

इनका क्वाथ करे जब १ छटाँक जल शेष रहे तब उतार कर छान मिश्री मिला गर्भिणी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। गिरता गर्भ भी स्थिर होता है।

(३) गूलर के जड़ की छाल	१ तोला	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे जब जल ½ छटाँक शेष रहे तब छान कर गर्भिणी को पिलावे। गर्भपात बन्द होता है।

गर्भविलास तैल—

(४) विदारीकन्द	२ तोला	सिंघाड़ा का पत्ता	२ तोला
अनार का पत्ता	" "	जाती फूल	" "
कच्ची हल्दी	" "	शतावर	" "
त्रिफला	" "	नील कमल	" "
कमल	" "		

इनको एकत्र सिल पर पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	१५ छटांक	लुगदी	१८ तोला
जल	३ सेर १२ छटाँक		

इनको एकत्र लौह की कड़ाही में पाक करे जब तैल मात्र शेष रहे तब उतार छान रखे।

इस तैल को गर्भिणी के शरीर में मलते हैं। यह गर्भस्राव, गर्भशूल तथा गर्भपात को निश्चित ही नष्ट करता है। यह परीक्षित तल है।

(५) कैल्शियम लैक्टेट (Calcium Lactate) १५ ग्रेन
पोटाश ब्रोमाइड (Potash Bromide) " "
टिंचर ओपियम (Tincture opium) १० बूंद
स्पिरिट क्लोरोफार्म (Spirit Chloroform) १५ "
सीरप आरेंज (Sryup Orange) १ ड्राम
जल (Aqua) १ औंस

दिन में ३ वार, ३, ३ घण्टे पश्चात पिलाते हैं।

(६) एक्स्ट्रैक्ट वाइबर्नम प्रुनिफोलियम (Extract viburnum prunifolium) २ ग्रेन की गोली। १ गोली दिन में ३ वार जल के साथ खिलाते हैं।

(७) थायरायड एक्स्ट्रैक्ट गोली (Thyroid Extract tabt.s) $\frac{1}{10}$ से ग्रेन १ १ गोली। दिन में ३ वार जलके साथ खिलाते हैं।

(८) कैल्शियम लैक्टेट गोली (Calcium Lactate tabt) १ गोली। दिन में ३ वार जल वा दूध के साथ। यह रक्तस्राव रोधक है।

(९) अहिफेन (Opium) मौखिक वा सूची से व्यवहृत करते हैं। यह रक्तस्राव, वेदना तथा बेचैनी को शान्त करती है।

(१०) कैस्टर आयल (Castor oil) १ ड्राम गरम दूध २ छटाँक दिन में प्रत्येक ४ घण्टे पर पिलाते हैं। यह कोष्ट बद्धता, जो गर्भपात का कारण होता है, को दूर कर गर्भपात को रोकती है।

सूची—

कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium Gluconate), विटामीन ई (Vitamin E)

(११) स्थानान्तरित गर्भाशय को स्थान पर लाना।

(१२) गर्भावस्था में मैथुन, अत्यधिक परिश्रम, तथा मानसिक उत्तेजनाओं का त्याग कर देना चाहिये।

(१३) गर्भपात के लक्षण व्यक्त होते ही पलंग पर पूर्ण विश्राम करना चाहिये।

(१४) फिरंग (Syphilis) से वारम्वार गर्भपात होता है; अतः फिरंग की चिकित्सा अनिवार्य है।

अम्लपित्त (Acidosis)

(१) हरड़ चूर्ण ६ माशा शहद ६ माशा
इसके सेवन से ३ दिन में अम्लपित्त निश्चय ही शान्त होता है।

(२) हरड़ चूर्ण	६ माशा	गुड़ या मुनक्का	८ माशा

दिन में २ बार खिलाते हैं। इस औषधि के सेवन से भी अम्लपित्त ३ दिन में शान्त होता है।

(३) कूटा हुआ जौ	½ तोला	अमलतास	½ तोला
अडूसा	" "	जल	१ पाव

क्वाथ करे जब ½ छटाँक जल शेष रहे तब छान ले।

दालचीनी	२ रत्ती	इलायची	२ रत्ती
तेजपत्ता	" "	मधु	१ माशा

इन्हें उपरोक्त क्वाथ में मिला रोगी को प्रातःकाल पिलावे। इससे अम्लपित्त का वमन तुरन्त ही निश्चित शान्त होता है।

(४) गुडुच	२ माशा	परवल का पत्ता	२ माशा
नीम की छाल	" "	त्रिफला	६ "
जल	१ पाव		

इनको एकत्र एक हाड़ी में क्वाथ करे जब जल ½ छ० रह जाय तब छान शीतल कर मधु मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। यह दारुण दाहयुक्त अम्लपित्त नाशक है।

(५) मुनक्का	१ तोला	धनियाँ	१ तोला
हरड़	" "	जवासा	" "
पीपर	" "	मिश्री	" "

इनका कपड छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२ माशा। अनुपान—मधु प्रातः तथा सायंकाल खिलाते हैं।

द्राक्षागुटिका—

(६) द्राक्षा	९ तोला	हरड़	९ तोला
मिश्री	१० "		

इनको कूट पीस दो दो तोले प्रमाण की गोली बनाना। मात्रा—१ गोली। अनुपान—शीतल जल। प्रातः तथा सायंकाल।

अम्लपित्तान्तक लौह—

(७) रससिन्दूर	६ माशा	लौह भस्म	६ माशा
ताम्र भस्म	" "	हरड़ चूर्ण	" "

इन सम्पूर्ण द्रव्यों को एकत्र मिला रखना। मात्रा—१ माशा। अनुपान—मधु प्रातः तथा सायंकाल।

रसायन योग—

(८) शुद्धगन्धक	२ तोला	शुद्ध पारद	१ तोला

इनको एकत्र खरल कर निश्चन्द्र कज्जली बनाना।

त्रिफला	४ तोला	चीता	४ तोला
त्रिकटु	" "	नागरमोथा	" "
वायविडंग	" "		

इनका एकत्र कपड़ छान चूर्ण कर उपर्युक्त कज्जली में मिला रखे। मात्रा—३ से ६ माशे। अनुपान—मधु तथा घी असमान भाग में। प्रातः तथा सायंकाल।

नोट—इस रसायन योग को सेवन करने के पश्चात् शीतल जल या धारोष्ण गोदुग्ध पिलावे। यह योग अति उत्तम है।

(९) सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) १ ड्राम

मधु से प्रत्येक ३-३ घण्टे पर खिलाते हैं।

R/

(१०) सोडाबाई कार्ब	(Soda Bicarb)	२० ग्रेन
मैग कार्ब	(Mag carb)	१५ "
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth carb)	१० "
सीरप जिंजर	(Syrup ginger)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

दो तीन बार भोजनोपरान्त मौखिक।

(११) सुधा जल (Lime water) १ तोला प्रतिदिन पिलावे।

(१२) बिजोरे नीबू का रस २ तोला। सन्ध्याकाल पिलावे।

सूची—

सोडा बाई कार्ब का घोल (Soda Bicarb Solution) ५%, डेक्स्ट्रोज घोल (Dextrose solution) २½% एकत्र शिरागत प्रविष्ट करते हैं तथा स्ट्रीक्नीन (Strychnine) त्वचागत प्रविष्ट करते हैं।

पेटेण्ट—अल्कलाइन कम्पाउण्ड एफरवेसेण्ट (Alkaline Compoud effervesent) १ गोली जल के साथ भोजनोपरान्त।

नष्टार्तव (Amenorrhoea)

(१) काला तिल ३ माशा
त्रिकटु ,,
भारंगी ३ माशा
जल १ पाव

एकत्र क्वाथ करे जब १ छटाक जल शेष रहे तब छान गुड़ या शक्कर मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) मालकाँगनी १ तोला
राई या सज्जीखार ,,
विजयसार (लकड़ी) १ तोला
दूधिया वच ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३ माशा। अनुपान—शीतल जल वा कच्चा दुग्ध। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) मूली बीज १ छटाँक गाजर बीज १ छटाँक मेथी बीज १ छटाँक

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२ माशा। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल ३ व ४ दिनों तक।

(४) काला तिल ½ तोला
सोंठ २ माशा
मरीच १ ,,
पीपर २ ,,
भारंगी ४ तोला
गुड़ ½ माशा
जल १ पाव

इनका क्वाथ करे जब १ छटाँक जल शेष रह जाय तब छान शीतल कर पिलावे। प्रातःकाल। २० दिनों तक पिलाने से निश्चय ही नष्टार्तव ठीक होता है।

(५) हीरा बोल २ भाग
शुद्ध सुहागा १ ,,
कसीस १ ,,
घी में सेकी हींग ½ भाग
मुसब्बर १ ,,

इनको एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। इस चूर्ण को जटामांसी के क्वाथ के साथ खरलकर २, दो रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे। मात्रा-२ गोली। अनुपान—गरम जल। २ बार भोजनोपरान्त।

(६) कड़वी तुम्बी का बीज २ तोला
दन्ती २ ,,
बड़ी पीपर २ ,,
जवाखार २ तोला
मैनफल २ ,,
सुराबीज २ ,,

इनका कपड़छान चूर्ण करना। इस चूर्ण में २ तोला गुड़ मिलाकर इसे थूहर के दूध में पीस कनिष्ठिका अंगुली के समान बत्ती बना छाया में सुखा लेते हैं। बत्ती को गर्भाशय के मुख वा योनि में रखते हैं। यह आर्तव स्रावक है।

नोट—सुराबीज-यह शराब खिंच जाने के पश्चात् भभके में अवशिष्ट भाग है। इस वत्ती को योनि में रखने के साथ साथ नं० २ की औषधि खिलाने से विशेष लाभ होता है।

(७) खीरिन बीज की मींगी

इसे सिलपर पीस एक पतले वस्त्र में बाँध पोटली बना कई दिनों तक योनि में रखते हैं। नष्टार्तव नाशक है।

नोट—पोटली प्रत्येक दिन नवीन व्यवहृत करते हैं।

(८) इन्द्रायण की जड़

जल के साथ पीस वत्ती बना छाया में सुखाकर रखते हैं। योनि में कई दिनों तक रखते हैं। नष्टार्तव पुनः सचरित होता है।

(९) हींग	१ भाग	जवाखार	२ भाग
पीपर	२ "	दन्ती जड़	२ "
कड़वी तुम्बी	२ "		

इनका कपड़छान चूर्ण बनाना।

इस चूर्ण को सेहुंड के दूध के साथ मिला कनिष्ठिकाँगुली के प्रमाण की वत्ती बना छाया में सुखा योनि में रखते हैं। यह आर्तव स्राव को संचारित करती है।

(१०) एक्स्ट्रैक्ट फेरीसल्फ (Extract Ferrisulph)	४ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका (Ext. Nux vomica)	$\frac{3}{4}$ "
एसिड आर्सेनिकलिस (Acid Arsenicalis)	$\frac{1}{६०}$ "
एक्स्ट्रैक्ट हायोसाइमस (Ext Hyoscyamus)	उचित मात्रा

इनकी एक गोली बनाना। मात्रा—ऐसी १ गोली। ३ वार भोजनोपरान्त।

(११) टिंचर एलूज एट मार्ह (Tr. Aloes et Myrrhae)	२० बूँद
टिं० फेरी परक्लोराइड (Tr. Ferri Perchloride)	१५ "
सीरप आरेंज (Syrup Orange)	१ ड्राम
जल (Aqua)	१ औंस

दिन में ३ वार।

(१२) एक्स्ट्रैक्ट अर्गट (Ext Ergotae)	१ ग्रेन
एपियोल (Apiol)	३ "

? कैप्सुल।

दिन में तीन वार।

(१३) एक्स्ट्रैक्ट थायरायड टिकिया (Ext Thyroid Tabts) ½ ग्रेन १ गो० दिन में तीन वार। यह स्थूलताजन्य नष्टार्तव नाशक है।

(१४) पोटाश परमाङ्गनेट गोली (Potash permangnate tabts) ½-२ ग्रेन १ गो० भोजनोपरान्त। ३ वा ४ वार

(१५) एपियोल (Apiol tabts) १ ग्रेन १ गोली १५ दिनों तक दिन में ४ वार

(१६) मेन्स्ट्रोन गोली (Menstrone tabt) ५०० यूनिट १ गोली ३ वार भोजनोपरान्त।

(१७) न्यूमेन्स्ट्रोन गोली (Neo-Menstrone) १००० यूनिट १ गोली भोजनोपरान्त ३ वार।

(१८) पिलुला एलूज एट मार्ह (PilulaeAloes et Myrrha) ४ से ८ ग्रेन १ गोली भोजनोपरान्त ३ वार।

(१९) पिलुला एलूज एट फेरी (Pilula Aloes et Ferry) १ गोली भोजनोपरान्त ३ वार।

(२०) मेन्स्ट्रोन पेसरी (Menstrone Pessary) १००० यूनिट योनि में रखना चाहिये।

सूची—

ल्यूटोस्टैब (Lutostab), ओवोस्टेब (Ovostab), स्टिलबोएस्ट्राल (Stilboesterol), मेन्स्ट्रोन (Menstrone), न्यूमेन्स्ट्रोन (Neomenstrone) आदि।

पाण्डु (Anaemia)

(१) लोहभस्म १ तोला पीपर १ तोला
तिल " " मरीच " "
सोंठ " " कोल " "

इनका कपड छान चूर्ण करना। इस चूर्ण में इसके समान भाग में 'सोनामाखी भस्म' मिला खरल कर १ रत्ती प्रमाण की गोली बनाना।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु प्रातः तथा सांयकाल।

नोट—औषध सेवनोपरान्त मट्ठा पिलावे।

(२) मण्डूरभस्म २ रत्ती
असमान मधु तथा घी के साथ। सशोथ पाण्डु नाशक है।

(३) त्रिफला चूर्ण ६ माशा गुडूची चूर्ण ६ माशा
काली मरीच चूर्ण " " अनुपान—मधु। दिन में २ बार

(४) नीम के पत्त का रस १ पाव मिश्री १ छ०
प्रातः तथा सायंकाल।

(५) लोह कीट भस्म १ माशा गुड़ ६ माशा
प्रातः तथा सांयकाल ११ दिनों तक खिलाने से रोग नष्ट होता है।

नोट—लोहार की दूकान पर जहां लोहा कूटा जाता है वहाँ मैल झड़ झड़ कर गिरता है उसी मैल को लेकर अग्नि में तपा तपा गोमूत्र में बुझाकर निर्दोष कर प्रयुक्त करते हैं।

(६) लोह कीट भस्म ४ रत्ती घी ३ माशा मधु ६ माशा
दिन में १ वार। यह उदर के भयानक वेदना को भी नष्ट करती है।

(७) रेवन चीनी चूर्ण १½ माशा अनार शर्बत १ तोला
दिन में २ वार। पाण्डु की सर्वोत्तम औषधि है।

(८) मण्डूर भस्म ६ रत्ती गो घृत ४ माशा मधु ६ माशा
दिन में २ बार

(९) दशमूल क्वाथ ½ छटाँक सोंठ चूर्ण २ माशा
दिन में २ वार देना चाहिये। यह उपद्रवयुक्त पाण्डु को नष्ट करती है।

(१०) त्रिफला ९ माशा चिरायता २ माशा
गुडूची ३ " नीम छाल २ "
अडूसा जड़ की छाल २ " जल ½ सेर
कुटकी १ "

इनका क्वाथ बनावे जब ½ पाव जल शेष रहे तब छान शीतलकर ६ माशा मधु मिला पिलावे। प्रातः, तथा सांयकाल।

(११) पुनर्नवा मण्डूर ४ माशा
मट्ठा के साथ सेवन करे २ वार।

(१२) नवायस लौह २ रत्ती गोघृत ६ माशा मधु ३ माशा
प्रातः तथा सांयकाल।

(१३) व्योषादि घृत ६ माशा प्रातः तथा सांयकाल।

(१४) पुनर्नवादि तैल
सर्व शरीर में इस तैल की [illegible] से पाण्डु नष्ट होता है।

R/

(१५) फेरी अमन साइट्रास	(Ferri Ammon Citras)	१० ग्रेन
लाइकर बिस्मथ अमन साइट्रास	(Liqr. Bismuth Ammon Citras)	१ ड्राम
लाइकर आर्सेनिकलिस	(Liqr. Arsenicalis)	५ बूंद
टिंचर एलूज	(Tr. Aloes)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

ऐसी ३ मात्रा भोजनोपरान्त।

R/

(१६) फेरी एट अमन साइट्रास	(Ferri et Ammon Citras)	५ ग्रेन
स्पिरिट अमन एरोमेटिकस	(Spr. Ammon Aromaticus)	३० बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

ऐसी ३ मात्रा भोजनोपरान्त।

R/

(१७) टिंचर फेरी एसीटेटिस	(Tr. Ferri Acetatis)	१० बून्द
एसिटिक एसिड डिल	(Acetic Acid dil)	½ ड्राम
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	२ "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ "
जल	(Aqua)	१ औंस

ऐसी ३ मात्रा भोजनोपरान्त।

R/

(१८) लाइकर स्ट्रिक्नीन (Liqr. Strychnine)	५ बूंद
लाइकर फेरी परक्लोर (Liqr. Ferri Perchlore)	१० "
ग्लीसरीन (Glycerine)	३० "
इन्फ्यूजन कैलुम्बी (Infusion Calumbae)	१ औंस

ऐसी ३ मात्रा भोजनोपरान्त।

R/

(१९) टिंचर फेरी परक्लोर (Tr. Ferri Perchlore)	१५ बूंद
एसिड फास्फोरिक डिल (Acid Phosphoric dil)	१० "
टिंचर कार्डिमम को० (Tr. Cardimomi co.)	३० "
स्पिरिट क्लोरोफार्म (Spt Chloroform)	२० "
जल (Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(२०) फेरीसल्फ (Ferri Sulph) २ ग्रेन
लाइकर आर्सेनिकलिस हाइड्रोक्लोर (Liqr. Arsenicalis Hydro) ३ बूँद
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicqrb) २० ग्रेन
मैगसल्फ (Mag Sulph) १ ड्राम
जल (Aqua) १ आँस
ऐसी ३ मात्रा भोजनोपरान्त।

R/

(२१) फेरस सल्फ (Ferrous Sulph) ६ ग्राम
पोटाश कार्ब (Potash Carb) ८ "
मार्ह (Myrrh) १६ "
गम एकेशिया (Gum Acacia) १६ "
ग्लुकोज (Glucose) १५ "
स्पि० नटमेग (Spt. Nutmeg) ½ आँस
गुलाब जल (Rose water) ३ "
मात्रा—½ से १ आँस ३ बार

R/

(२२) फेरी एट क्वीनीन साइट्रास (Ferri et uinine citras) १० ग्रेन
एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल (Acid Hydrochloric dil) १० बूंद
लाइकर स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोर (Liqr. Strychnine Hydro) ३ "
स्पिरिट क्लोरोफार्म (Spt Chloroform) १६ "
जल (Aqua) १ आँस
ऐसी ३ मात्रा भोजनोपरान्त।

R/

(२३) फेरी एट अमन साइट्रास (Ferri et Ammon citras) ६ ग्रेन
साइट्रिक एसिड (Citric Acid) १० "
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) १० ग्रेन
जल (Aqua) १ आँस
ऐसी ३ मात्रा भोजनोपरान्त।

(२४) पिल फेरी (Pil Ferri) १ गोली ३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(२५) पिलुला एलूज एट फेरी (Pilula Aloes et Ferry) ४ से ८ ग्रेन १ गोली
३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

सूची—

लिवर एक्स्ट्रैक्ट (Liver Extract), हीपेराल (Heparol), हीपाल (Hepol), हीपेटाक्स (Hepatox), न्यूहीपेटाक्स (Neohepatox), क्रीनहीपार (Crenhepar), काम्बेक्स (Combex), आयरन आर्सनाइट विथस्ट्रिक्नीन (Iron arsenate with strychnine), हीमोसायटिक सीरम (Haemocytic Serum), बेटामिड (Betamed), सिपेफेरान (Cipaferron), फेरी एट आर्सनिक (Ferri et Arsenic), फास्फोटोन (Phosphoton), तथा रक्त प्रदान (Blood Transfusion)।

पेटेण्ट औषधियाँ—सिपेलान (Cipalon), फास्फोटोन (Phosphoton), हीमोग्लोबीन (Haemoglobin), ईस्टन्स सीरप (Estons Syrup), हीमोजीन (Haemogin) तथा हिपेटाक्स (Hepatox)।

शोथ (General Anqsarca)

(१) हरड़	१ तोला	चीता	१ तोला
गुरुच	,, ,,	पुनर्नवा	,, ,,
आरंगी	,, ,,	सोंठ	,, ,,
हल्दी	,, ,,	देवदारु	,, ,,
दारुहल्दी	,, ,,		

इनको एकत्र जौकुट कर रखे। इसमें से २ तोला ले पाव भर जल में क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान शीतल कर रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।

(२) श्वेत पुनर्नवा का जौकुट पंचांग ½ सेर जल ४ सेर

इनका क्वाथ करे १ सेर जल शेष रहते छान ले। इस क्वाथ में १ सेर मिश्री, १ छ० शोरा खूब मिला कपड़े से छान बोतल में रखे। मात्रा—२ तोला। प्रातः तथा सायंकाल। यह उपद्रव युक्त शोथनाशक है।

(३) पुनर्नवा	२ तोला	गुरुच	१ तोला
हल्दी	१ ,,	पाढल	१ ,,
दारुहल्दी	२ ,,	कटेरी	२ ,,
सोंठ	२ ,,	अतीस	१ ,,
पीपर	१ ,,	गोखरू	१ ,,
चीता	१ ,,		

एकत्र कपड़छान चूर्णकर रखना। मात्रा—१ माशा। अनुपान—गोमूत्र। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) श्वेत पुनर्नवा (हरा) ३ माशा निम्ब छाल (हरी) ३ माशा
परवर पत्र (हरा) ३ " गुरुच (हरा) ३ "
सोंठ ३ मा० कुटकी ३ " देवदारु ३ "
हरड़ (बड़ी) ३ " जल १ पाव
इनका क्काथ बनावे जब जल ½ छटाँक शेष रहे तब छान शीतल कर। क्काथ में ६ माशा मधु मिला पिलावे। प्रातःकाल।

(५) श्वेत पुनर्नवा का रस २ तोला मधु ६ माशा ३ वार।

(६) हरड़ १ तोला गुडूची १ तोला हल्दी १ तोला
दारुहल्दी १ " चीते की जड़ १ " भारंगी १ "
पुनर्नवा १ " सोंठ १ " देवदारु १ "
इनको जौकुट कर रखे। इनमें से २ तोला ले क्काथ करे तथा शीतल होने पर रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।

(७) गोमूत्र की भावनायुक्त मण्डूर भस्म ४ रत्ती मधु २ माशा २ मात्रा।

(८) दशमूलादि क्काथ ½ छटाँक
प्रातः तथा सायंकाल।

(९) सूखी मूली १ तोला सोंठ १ तोला पीपर १ तोला मरीच १ तोला
त्रिफला १ " दन्तीजड़ १ " चिरचिरी १ "
वायविडंग १ " नागरमोथा १ " चीते की जड़ १ "
इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२ माशा। अनुपान—बेलपत्र स्वरस, प्रातः तथा सायकाल।

(१०) शोथारिमण्डूर २ रत्ती
उष्ण जल के साथ। प्रातः तथा सायंकाल।

(११) तक्र मण्डूर ४ रत्ती
मट्ठा के साथ। प्रातः तथा सायकाल।

(१२) शुद्ध मीठा विष ३ माशा शुद्ध अफीम ३ माशा
लोहभस्म १० रत्ती अभ्रकभस्म १५ रत्ती
इन्हें एकत्र दूध के साथ खरल कर २, दो रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—दुग्ध। पथ्य—दूध तथा भात। जल का सर्वदा परित्याग।

(१३) पुनर्नवाद्य तैल
इसका सम्पूर्ण शरीर में मर्दन करे। यह शोथ नाशन में सर्वोत्तम है।

(१४) अडूसा छाल १ तोला गुरुच ½ तोला
कटेरी ½ " जल १ पाव

एकत्र क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान शीतल कर मधु मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(१५) शुष्कमूलाद्य तैल
शरीर में मर्दन करना।

R/

(१६) पाट एसीटास	(Pot Acetas)	१५ ग्रेन
पाट आयोडाइड	(Pot Iodide)	३ "
स्पि० जूनिपर	(Spt–Juniper)	३० बूँद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

दिन में ऐसी ३ मात्रा।

R/

(१७) पाट एसीटेट	(Pot Acetate)	१० ग्रेन
टि० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	७ बूँद
हेक्सामीन	(Hexamin)	१० ग्रेन
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

दिन में ऐसी ३ मात्रा।

R/

(१८) एक्स्ट्रैक्ट पुनर्नवा लिक्विडम	(Ext. Punernava Liquidum)	१ ड्राम
अमोनियम क्लोराइड	(Ammonium Chloride)	१५ ग्रेन
पाट एसीटास	(Pot Acetas)	१२ "
टि० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	७ बूँद
स्पि० जूनिपर	(Spt. Juniper)	३० "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

दिन में ऐसी ३ मात्रा

R/

(१९) यूरिया (Urea) १२ ग्रेन दिन में ३ बार।

सूचीवेध—

नेप्टाल (Neptal), डाइगाक्सीन (Digoxin), डायुरेटीन (Diuretin), मर्सलाल (Mersalyl), सेलिर्गान (Salyrgan), एसिड्रोन (Asidrone), एमाइनोफाइलीन (Aminophylline) तथा थियोफिलीन (Theophylline)

पेटेण्ट ओषधियाँ—

एमाइनोफाइलीन, कैल्शियम डायुरेटीन (Calci-Diuretin), थियोबा (Theoba), डाइरोकाल (Dirocal), थियोबिटाल (Theobital), आइडो-डाइरोकाल (Iodo-Dirocal), कार्डिएमिड (Cardiamid) तथा नेप्टाल (Neptal)

धमनी प्रसार (Aneurysm)

R/

(१) पोटेशियम आयोडाइड (Pot. Iodide) २० ग्रेन, जल (Aqua) १ औंस
३ मात्रा

नोटः—पोटेशियम आयोडाइड की मात्रा शनैः शनैः बढ़ाते हुये ३० ग्रेन तक ले जाते हैं। यह वेदना शामक है।

R/

(२) एमिल नाइट्राइट (Amyl nitrite)

R/

(३) मार्फीन (Morphine) त्वचागत।

हृच्छूल (Angina Pectoris)

(१) शृंग भस्म १ माशा उष्ण गो घृत २ माशा, ३ मात्रा।

(२) बलाद्य घृत ६ माशा से २ तोला
प्रातः तथा सायंकाल

R/

(३) एमिल नाइट्राइट (Amyl nitrite) २ से ५ बूंद
कपड़े पर छिड़क सुघांते हैं। आवश्यकतानुसार कई वार।

R/

(४) ट्रिनिटिनी गोली (Trinitini Tab) १ गोली। ३ वार।

R/

(५) मार्फिया (Morphia) त्वचागत।

R/

(६) इरिथ्राल टेट्रानाइट्रेट गोली (Erythroltetranitrate Tab.) $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन
१ गोली रात्रि में सोते समय।

R/

(७) पाट आयोडाइड (Pot Iodide) ३ ग्रेन

स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Ammon Arom.)	२० बूँद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० ,,
लाइकर नाइट्रोग्लीसरीन	(Liqr Nitroglycerine)	१ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(८) सोडियम नाइट्रेट कम्पाउण्ड गोली (Sodium nitrate Compound Tab)
१–२ गोली जल के साथ। ३ मात्रा।

R/

(९) स्ट्रिक्नीन गोली (Strychnine Tab) १ से २ गोली। प्रातः सायंकाल।

R/

(१०) थियोगार्डेनाल गोली (Theogardenal Tab) २ से ४ गोली। सायंकाल।

R/

(११) क्लीरोसील गोली (Clerosyl Tab) १ से २ गोली। सायंकाल।

जलोदर (Ascites)

(१)

पुनर्नवा	१ तोला	गुरुच	१ तोला
नीमछाल	,, ,,	परवर पत्र	,, ,,
सोंठ	,, ,,	हरड़	,, ,,
कुटकी	,, ,,	दारुहल्दी	,, ,,

इनको एकत्र जौ कुटकर २ तोला प्रमाण में ले क्वाथ करे। प्रातः तथा सायंकाल पिलाना।

(२)

दशमूल	१ तोला	बड़ी हरड	१ तोला
पुनर्नवा	,, ,,	गुरुच	,, ,,
देवदारु	,, ,,	सोंठ	,, ,,

इनको एकत्र जौ कुटकर २ तोला प्रमाण में ले क्वाथ करे। प्रातः तथा सायंकाल पिलावे।

(३) जवाखार ५ तोला सेंधा नमक ५ तोला त्रिकटु ५ तोला
इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—६ माशा। अनुपान—मट्ठा। २ वार।

(४)

देवदारु	१ तोला	असगन्ध	१ तोला
गजपीपर	,, ,,	मदार जड़	,, ,,
सहजन	,, ,,		

इनको गोमूत्र में पीस उदर पर लेप करते है। जलोदर नाशक है।

(५) लौह भस्म ४ रत्ती, मधु से। प्रातः तथा सायंकाल।

(६) बबूल छाल

इसका क्वाथ बना छान ले। फिर क्वाथ को इतना पकावे कि गोली बनाने योग्य हो जाय। अब आग से उतार ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावें। मात्रा—१ गोली अनुपान—मट्ठा। ३ बार।

R/

(७) कोपेवा रेजिन	(Copaiba Resin)	१५ ग्रेन
अल्कोहल ९० प्र०	(Alcohol 90%)	२० बूंद
पल्व ट्रैगेकैंथ को०	(Pulv. Tragacanth Co)	१५ ग्रेन
सीरप आरंज	(Syrup Orange)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(८) पल्व डिजिटेलिस	(Pulv Digitalis)	१ ग्रेन
पल्व सिला	(Palv Scilla)	" "
पिल हाइड्रार्ज	(Pill Hydrarg)	" "
एक्सट्रैक्ट हायोसाइमस	(Ext. Hyoscyamus)	" "
		३ मात्रा

श्वास (Asthma)

(१) दशमूल स्वरस २ तोला। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) दशमूल २ तोला जल १½ पाव

क्वाथ बनावे चौथाई शेष रहते उतार कर छान लेवे। इसमें पोष्करमूल चूर्ण ६ माशा मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) दशमूल क्वाथ ½ छ० जवाखार ६ रत्ती सेंधा नमक ६ रत्ती। प्रातःकाल।

(४) भांगरा स्वरस १ सेर तिल तेल १ सेर

इनको कलईदार पात्र में पकावे। पकते समय पाव-पाव भर भांगरा स्वरस तब तक मिलाता जावे जब तक स्वरस १० सेर न हो जाय। स्वरस जल कर तेल मात्र शेष रह जाय तब छान लेवे। मात्रा—६ माशा से २ तोला। ३ बार।

(५) छोटे बेल की गिरी १ पाव हरड़ ½ पाव जल ३ सेर

इनका क्वाथ करे ३ पाव जल शेष रहने पर छान लेवे।

ताजा गो घृत १ सेर क्वाथ ३ पाव

एकत्र पाक करे जब आधा क्वाथ जल जाय तब इसमें एक छटाँक काला नमक पीसकर मिलावे और पकाते रहे। सम्पूर्ण क्वाथ के जल जाने पर घी को उतार कर रख ले। मात्रा—१ तोला से २ तोला। भोजनोपरान्त।

(६) काकड़ा सिंगी २ तोला — मरीच २ तोला
छोटी पीपर ,, ,, — भटकटैया (पंचांग) ,, ,,
सोंठ ,, ,, — भारंगी ,, ,,
हरड़ छिलका ,, ,, — कूट ,, ,,
बहेड़ा छिलका ,, ,, — जटामासी ,, ,,
आँवला छिलका ,, ,, — पांचो नमक ,, ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३ से ६ माशा।
अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

सीतोपलादि—

(७) मिश्री १६ तोला — छोटी लाची २ तोला
बंसलोचन ८ ,, — दालचीनी १ ,,
छोटी पीपर ४ ,,

सबका एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—१ से २ माशा।
अनुपान—घी ६ माशा मधु–३ माशा। प्रातः तथा सायकाल।

(८) मदार की कली २ भाग पीपर १ भाग लाहौरी नमक १ भाग
एकत्र कूट पीस ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनाना। मात्रा—१ गोली ३ बार।

(९) कण्टकारी ३ माशा — अडूसा ३ माशा — सोंठ ३ माशा
छोटी पीपर ,, ,, — धाय फूल ,, ,, — पोस्ताडोड़ी ,, ,,
बबूल छाल ,, ,,

इनको एकत्र जौ कुट कर २ पाव जल में क्वाथ बनावे। १½ छटाँक जल शेष रहते उतार कर छान ले। मात्रा—१½ छ०। अनुपान—मधु २–४ माशा।
प्रातः तथा सायकाल।

(१०) आदी स्वरस १ छटाँक — प्याज स्वरस १ छटाँक
लहसुन स्वरस ,, ,, — घीकुवार स्वरस ,, ,,
मधु ,, ,,

इनको एक चीनी मिट्टी के पात्र में गाड़ रखते हैं। चौथे दिन निकाल छान बोतल मे रख लेते हैं। मात्रा—३ माशा। १५ दिन से १ मास तक पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।

(११) बंग भस्म १ रत्ती — लवंग चूर्ण १ माशा
जायफल चूर्ण १ माशा — मधु ३ ,,
प्रातः तथा सायंकाल

(१२) अभ्रक भस्म २ रत्ती पीपर चूर्ण १½ माशा मधु ३ माशा
प्रातः तथा सायकाल।

(१३) सीप भस्म ४ रत्ती आदी स्वरस २ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(१४) रस सिन्दूर १ रत्ती कंटकारी (पंचांग) चूर्ण ६ माशा मधु ६ मा०
प्रातः तथा सायंकाल

(१५) शृंग भस्म ४ रत्ती मधु ६ माशा। २ वार।

(१६) श्वास कुठार रस (रसयोगसागर) २ रत्ती पान के साथ खिलाना।

(१७) श्वासचिन्तामणि रस (भैष०) ४ रत्ती बहेड़ा चूर्ण १ माशा मधु ३ मा०
प्रातः तथा सायंकाल

(१८) महाश्वासारि लौह ४ रत्ती से ८ रत्ती मधु ६ माशा। प्रातः तथा सायंकाल

(१९) अडूसे के पत्ती का स्वरस ४ सेर
चीनी १ सेर बड़ी पीपर २½ छटाँक घी २½ छटाँक
सबको अवलेह पर्यन्त पाक करे। शीतल होने पर १ सेर मधु मिलावे।
मात्रा १-२ तोला। प्रातः तथा सायंकाल।

(२०) कनकासव १ तोला जल १-२ तोला। २ वार। भोजनोपरान्त।

R/

(२१) एड्रेनलीन हाइड्रोक्लोर (१००० में १) (Adrenalin Hydrochlorin 1 : 1000) २-५ बूंद जिह्वा के नीचे रखते हैं। आक्रमणनाशन में सर्वोत्तम है।

R/

(२२) पोटश आयोडाइड	(Potash Iodide)	२ ड्राम
वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	४ ,,
टि० हायोसाइमस	(Tr Hyoscymus)	४ ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	६ ,,
एका क्लोरोफार्म	(Agua Chloroform)	८ औंस

मात्रा—१ चिम्मच। अनुपान—जल। ३ वार। भोजनोपरान्त।

R/

(२३) टि० लोबेली ईथरिस	(Tr Lobelae Aetheris)	१५ बूंद
पाट आयोडाइड	(Pot Iodide)	५ ग्रेन
पाट ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	४ ,,
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Arom.)	२० बूंद
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	१ ड्राम
जल	(Agua)	१ औंस
		३ वार

R/

(२४) पाट आयोडाइड	(Pot Iodide)	२ ग्रेन
ट्रिनिट्रिन	(Trinitrin)	$\frac{१}{१००}$ "
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ग्रिण्डिलिया	(Liguid Ext. grindeliae)	१५ बूंद
जल	(Agua)	½ औंस
		२ मात्रा

R/

(२५) एक्स्ट्रैक्ट ग्रिण्डिलिया लिक्विड	(Ext. Grindeliae liq.)	१० बूंद
टि० लोबेलि ईथरिस	(Tr. Lobeliae Aetheris)	" "
टि० कैम्फर को०	(Tr. Camphor co.)	१५ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	" "
जल	(Agua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(२६) एज्मासील गोली (Asmasyl Tad) १–२ गोली। ३ वार

सूची—

एड्रेनलीन विथ इफेड्रीन (Adrenalin with Ephedrine), एज्मासील बी (Asmasyl B), एमाइनोफाइलीन (Aminophyllin), सोयामीन (Soamin) एड्रेनलीन (Adrenalin), क्रीसेलबीन (Crisalbine), इफेड्रीन हाइड्रोक्लोर (Ephedrin Hydrochlor), एज्मा वैक्सीन (Asthma Vaccine)।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

इफेड्रीन टेब्लेट (Ephedrine Tabts),जेफ्राल (Jephrol), गार्डेनाल (Gardenal), प्लैनेडेलीन (Planadalin), थियोगार्डेनाल (Theogardenal), एमिटाक्स (Amitox) तथा एज्माक्योर (Asthma cure)।

मूत्रगत जीवाणुमयता (Bacciluria)

(१) गोक्षुर ½ तोला पंचतृणमूल १½ तोला जल १ पाव

क्वाथ बनावे; जब जल ½ छटांक शेष रहे तब छानकर पिलावे।

प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(२) पाट साइट्रास	(Pat Citras)	१५ ग्रेन
हेक्सामीन	(Hexamin)	१० "

टि० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscymus)	३० बूंद
जल	(Agua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(३) सोडा बेंजोएट	(Soda Benzoate)	२० ग्रेन
टि० बुकु	(Tr. Buchu)	½ ड्राम
टि० हयोसाइमस	(Tr. Hyoscymus)	१५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१५ "
जल	(Agua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(४) बोरिक एसिड	१० ग्रेन	अमोनियम बेंजोएट	१० ग्रेन
हेक्सामीन	" "	जल	१ औंस
			२ मात्रा।

सूची—

हेक्सामीन (Hexamin), यूरोट्रोपीन (Urotropin), फोरामीन (Foramin) वसल्विन (Vasalvine), तथा वैक्सीन (Vaccine)।

कटिशूल (Backache)

स्त्रियों में—

R/

(१) पाट आयोडाइड	(Pot Iodide)	२० ग्रेन
पाट ब्रोमाइड	(Pot Bromide)	२० "
कोडीन सल्फ	(Codein Sulph)	१ "
टिं० काल्शिकम सेम	(Tr. Colchicum Sem)	१ ड्राम
सीरप आरेंज	(Syrup orange)	१ "
जल	(Agua)	१ औंस
		२ मात्रा

आर्तस्राव कालीन कटिशूल—

(१) दशमूल क्वाथ १ छटांक। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) त्रयोदशांग गुग्गुलु २ माशा गरम दुग्ध १ पाव। प्रातःकाल।

R/

(३) गाइकम रेजिन (Guaicum Resin) १० ग्रेन। ३ मात्रा।

R/

(४) कैफीन साइट्रास (Caffein Citras) २ ग्रेन
एस्प्रीन (Aspirin) ५ ,,
फेनासीटीन (Phenacitin) ३ ,,
कोडीन सल्फ (Codein Sulph) १ ,,
३ मात्रा

(५) असगंध चूर्ण ३ माशा मिश्री १ तोला घी २ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

श्वासनलिका शोथ (Bronchitis)

(१) अडूसा स्वरस ६ माशा साँभर नमक १ मा० मधु ६ माशा
किंचित गरम कर सेवन करना। प्रातः तथा सायंकाल।
३, ४ दिनों में अवश्य लाभ होता है।

(२) कण्टकारीमूल या पुष्प चूर्ण १ माशा छोटी पीपर का चूर्ण १ माशा
मधु ६ ,,
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) अमलतास का गुदा ½ पाव मिश्री १ पाव
एकत्र मिला एक पात्र में बंद रखे। मात्रा—१ तोला। अनुपान—जल।
प्रातः तथा सायंकाल।

(४) मरीच ४ तोला छोटी पीपर ४ तोला सोंठ ४ तोला गुड़ ८ तोला
सबको परस्पर एकत्र मिला रखना। मात्रा—१ तोला। प्रातःकाल।

(५) आदी स्वरस ६ माशा साँभर नमक १ माशा मधु ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(६) हरड़ १ तोला सोंठ १ तोला
पीपर १ ,, मरीच १ ,,
इनका कपड़छान चूर्णकर बराबर गुड मिला ६, ६ माशे की गोली बनाना।
मात्रा—१ गोली। प्रातः तथा सायंकाल।

(७) छोटी पीपर १ तोला सोंठ १ तोला कचूर १ तोला
हरड़ १ ,, पोहकरमूल १ ,, नागरमोथा ,, ,,
इनका एकत्र कपड़छान चूर्ण करना। इसमें २½ छटांक गुड़ मिला गोली बनाना। एक गोली मुख में रख चूसना। भयानक श्वास, काल शामक है।

(८) काकड़ा शिंगी १ तोला बहेड़ा (छिलका) १ तोला
सोंठ ,, ,, आँवला (,,) ,, ,,

मरीच	१ तोला	कंटकारी (पंचाग)	१ तोला
छोटी पीपर	" "	भारंगी	" "
पोखर मूल	" "	पांचो नमक	" "
हरड (छिलका)	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—गरम जल प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

(९) पीपर २ तोला मरीच २ तोला अनारदाना सूखा २ तोला

इनका कपड़छान चूर्णकर रखना। मात्रा—३ माशा।

अनुपान—जवाखार और गुड़। प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) बबूल छाल १ पाव जल २ सेर

इनका क्वाथ करे १½ पाव जल शेप रहते छान ले।

वंग भस्म	१ तोला	वहेडे छिलके का चूर्ण	४ तोला
छोटी पीपर का चूर्ण	२ "	अडूस पत्र का "	५ "
हरड़ छिलका का "	३ "	भारगी का "	६ "

इनको एकत्र २ दिनों तक बबूल क्वाथ में १२ बारह घण्टे खरल करे। फिर २ दिनों तक मधु के साथ १२, १२ घण्टे तक खरल कर ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली, अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल। रामबाण है।

(११) भुना सोहागा १ तोला कच्चा सोहागा १ तोला मरीच २ तोला

इनका कपड़छान चूर्ण कर घीकुवार के स्वरस में घोट १ रत्ती प्रमाण की गोली बना छाया में सुखाना। मात्रा—१ गोली। ३ वार।

(१२) भुना सोहागा २ रत्ती बंगला पान में रख खाना। ३ वार।

(१३) शंखभस्म ६ माशा, नागर पान के साथ खाना। २ वार।

(१४) सोना का वर्क १ नग सूखे आँवले का चूर्ण ३ माशा मधु १ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

(१५) गुरुच २ माशा मरीच ६ माशा

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

कौड़ी भस्म ५ माशा चूर्ण ११ माशा

इन्हें आदी के रस में खरल कर मरीच सदृश गोली बनावे। इसे छाया में ही सुखाते हैं। मात्रा—१ गोली। प्रातः तथा सायंकाल।

(१६) चन्द्रामृत रस (भैष०) ९ रत्ती पीपर चूर्ण ३ माशा मधु ६ माशा

प्रातः तथा सायंकाल।

(१७) कासकुठार रस २ रत्ती आदी स्वरस ½ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

(१८) कासलक्ष्मी विलास रस (योगरत्नाकर) २ रत्ती मधु ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल ।

(१९) वसन्ततिलक रस (रसेन्द्रसार संग्रह) २ रत्ती मधु ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल । महौषधि है ।

(२०) चन्दनादि तैल (चक्रदत्त) सर्वांग में मर्दन करना ।

R/

(२१) एण्टीमनी टार्ट	(Antimony Tart)	१/४ ग्रेन
पाट नाइट्रेट	(Pot. Nitrate)	४ ,,
टि० कैम्फर को	(Tr. Camphor Co.)	१० बूँद
जल	(Agua)	१ औंस

४ मात्रा ।

R/

(२२) वाइनम एण्टीमनी	(Vinum Antimony)	१० बूंद
वाइनम इपीकाक	(,, Ipecac)	,, ,,
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr Ammon Acetas)	२ ड्राम
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt Aetheris nitrosi)	१/२ ,,
सीरप लीमन	(Syrup Lemon)	१ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा ।

R/

(२३) वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	२० बूँद
स्पि० ईथरिसनाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	,, ,,
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	२ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा ।

R/

(२४) पाट आयोडाइड	(Pot. Iodide)	३ ग्रेन
अमन कार्बोनेट	(Ammon Carbonate)	,, ,,
पाट बाईकार्ब	(Pot. Bicarb)	१५ ,,
टि० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

३–४ मात्रा ।

R/

(२५) अमन कार्ब	(Ammon Carb)	५ ग्रेन
टि० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co.)	१५ बूँद
टि० सिला	(Tr. Scillae)	” ”
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(२६) अमन कार्ब	(Ammon Carb)	४ ग्रेन
वाइनम इपीकाक	(Vin Ipecac)	१० बूंद
टिं० सिला	(Tr. Scillae)	” ”
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	” ”
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१५ ”
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(२७) टि बेंजायन को०	(Tr. Benzoin Co.)	१० बूंद
वाइनम इपीकाक	(Vin. Ipecac)	८ ”
टि० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ ”
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(२८) वाइनम इपीकाक	(Vin. Ipecac)	५ बूँद
एक्स्ट्रैक्ट ग्लीसराइजा लिक्विड	(Ext Glycyrrhizae liq)	२० ”
सीरप कोडीन	(Syrup Codein)	३० ”
सीरप वसाका विथ टोलू	(Syrup Vasaka with Tolu)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(२९) अमन कार्ब	(Ammon Carb)	५ ग्रेन
सोडा बेंजोएट	(Soda Benzoate)	१५ ”
टि० सिला	(Tr. Scillae)	१५ ”

टि० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co)	१२ ग्रेन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। कफ निस्सारक है।

R/

(३०) लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ग्लीसराइजा	(Ext. glycyrrhizaeliq)	१½ ड्राम
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromat)	१५ बूँद
पाट आयोडाइड	(Pot. Iodide)	३ ग्रेन
टिं० कार्डेमम को०	(Tr. Cardam Co.)	१५ बूँद
एका क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(३१) अमन आयोडाइड	(Ammon Iodide)	३ ग्रेन
टि० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co.)	१५ बूँद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। शोथ तथा शुष्क कास नाशक है।

R/

(३२) पल्व इपीकाक	(Palv Ipecac)	१ ग्रेन
पाट नाइट्रास	(Pot. Nitras)	५ "

३ मात्रा

R/

(३३) सीरप एपोमार्फीन हाइड्रोक्लोरेट (Syrup Apomarphine Hydrochlorate) १ चिमच। प्रत्येक २, दो घण्टे पर। शुष्क कास में।

R/

(३४) इपीकाक कम सिला गोली (Ipecac Cum Scillae Tab) १ गोली।

प्रातः तथा सायंकाल।

सूची—

कोलो कैल्शियम विथ विटामिन डी (Colo-Calcium with Vitamin D), केफीन सोडियो बेंजोएट (Caffein Sodio-Benzoate), कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium gluconate), रिडाक्सन (Redoxon)।

पेटेण्ट औषधियाँ—

जेफ्राल (Jephral), रेसील (Resyl), टूसोल (Tusol), कैसेबीन (Casebin)।

हृद्-रोग (Cardiac diseases)

(१) अर्जुन का चूर्ण ६ माशा गोघृत १ तोला
२ मात्रा।

(२) पीपर २ तोला सोंठ २ तोला अनारदाना २ तोला
काला नमक २ तोला भूनी हींग १ तोला

इनका कपड़ छान चूर्ण बना नीबू के रस में खरल कर ४ रत्ती प्रमाण की गोली बना छाया में सुखा रख लेवे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) अर्जुन १ तोला वच १ तोला रास्ना १ तोला खरेटी १ तोला
गुलशकरी १ तोला हरड़ १ तोला कचूर १ तोला कूठ १ तो०
पीपर १ " सोंठ १ "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—६ माशा। अनुपान—गोघृत १ तोला। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) द्राक्षा ४ भाग मधु २ भाग घी २ भाग
प्रातः तथा सायंकाल। कुछ काल सेवन से हृदयशूल शान्त होता है।

(५) पोष्करमूल चूर्ण ३ माशा मधु ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल

(६) कलौंजी चूर्ण ३ माशा गधी दुग्ध १ छटाँक
हृदय स्पंदनाधिक्य, क्षीणतादि शीघ्र कम होती है।

(७) श्रृङ्गभस्म १ माशा गरम गो घृत ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल। घोर हृदय शूल तथा हृद्रोग नाशक है।

(८) शुद्ध पारद १ तोला शुद्ध गन्धक १ तोला
इसकी कज्जली करे।

कज्जली तथा ताम्राभस्म १ तोला
इनको एक दिन त्रिफला के क्वाथ में तथा एक दिन मकोय के रस में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—अर्जुनछाल का क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल

(९) हृदयार्णवरस (भै. र.) १ रत्ती मधु ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल

(१०) विश्वेश्वर रस (भै. र) १ रत्ती मधु ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल
नाना प्रकार की हृदय तथा फुफ्फुस की वेदना को नष्ट करता है।

R/

(११) टि० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co.)	१५ बूंद
टि० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ "
सीरप आरेंज	(Syrup Orange)	१ ड्राम
एक्वा कैम्फर	(Aqua Camphor)	१ औंस
		३ मात्रा

हृदय की धड़कन तथा शूल नाशक है।

R/

(१२) टि० एकोनाइट	(Tr Aconite)	१ बूंद
टि० डिजिटेलिस	(Tr Digitalis)	२ "
टि० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	२ "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

हृदय की धड़कन शामक है।

R/

(१३) कैफीन साइट्रास	(Caffein Citras)	३ ग्रेन
लाइकर स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोर	(Liqr Strychnine Hydro)	३ बूंदे
स्पि० क्लोराफार्म	(Spt. Chlorofrom)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

(१४) अर्जुन घृत १ तोला प्रातः तथा सायंकाल

R/

(१५) पाट एसिटास	(Pot Acetas)	१० ग्रेन
टिं डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	५ बूंद
सीरप लेमन	(Syrup Lemon)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

सूची—

कैफीन सोडियो सैलिसिलास (Caffein Sodiosalicylas) त्वचागत।
स्ट्रोफेंथीन (Strophanthin) शिरागत।
दोनों सूची तीव्र अवसाद नाशक हैं।

विसूचिका (Cholera)

(१) चिरचिरी की जड़ ६ माशा जल १ छटांक

जड़ को जल में पीसकर २ बार पिलाना।

(२) मदार के जड़ की छाल	२ तोला	आदी स्वरस	४ तोला

इनको एकत्र खरल कर रत्ती प्रमाण गोली बनावें। मात्रा—१ गोली। अनुपान—प्याज रस। आवश्यकतानुसार ½ से तीन घण्टे पर।

(३) छोटी इलाची का छिलका	१ तोला	जल	½ सेर

इनका क्वाथ करे। एक पाव जल शेष रहते छान लेवे। प्यास लगने पर थोड़ा २ पिलावे। प्यास नाशक है।

(४) बेल का गूदा	४ माशा	सोंठ	३ माशा
जायफल	३ "	जल	१ पाव

इनका क्वाथ कर रोगी को ३ वार पिलावे। विसूचिका नाशक है।

रसोनादि वटी (वैद्यजीवन)

(५) श्वेत जीरा	१ तोला	मरीच	१ तोला
सेंधानमक	" "	पीपर	" "
सोंठ	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण करना।

शुद्ध लहसुन	१ तोला	भुनी हींग	१ तोला
शुद्ध गन्धक	" "	चूर्ण	५ "

इनको नीबू स्वरस में खरल कर ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावें। मात्रा—३-४ गोली। अनुपान—जल आवश्यकतानुसार १५ मिनट से एक घण्टे पर

नोट—लहसुन को ७ दिनों तक मट्ठा में भिगोकर शुद्ध करते हैं।

हिंग्वादिवटी—

(६) भुनी हींग	१ तोला	जवाखार	१ तोला	सज्जीखार	१ तोला
सोंचर नमक	,, ,,	काला नमक	१ "	विड नमक	,, "
छोटी पीपर	,, "	पीपरामूल	१ "	चीता	,, "
कालीमरीच	" "	कचूर	" "	धनियाँ	" "
इमली	" "	दुधियावच	" "	अजमोदा	" "
पोहकरमूल	" "	सोंठ	" "	करंज गिरि	" "
स्याह जीरा	" "	हरड़	" "	पाठ	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर, फिर नीबू के रस में घोट ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावें। मात्रा—३ से ४ गोली। अनुपान—गरम पानी। आवश्यकतानुसार १५ मिनट से ½, ½ घण्टे पर। प्रथमावस्था में विशेष लाभप्रद है।

(७) बड़ी इलायची १ तोला लवंग १ तोला पीपर १ तोला
नागरमोथा " " सफेद चन्दन " " नागकेशर " "
मेंहदी " " बेर की गुठली की गिरी १ तो० धान की खील १ तो०
इनका कपडछान चूर्ण कर मिश्री मिला रखना।
मात्रा—३ माशा। अनुपान—मधु। वमन नाशक है।

(८) कलमी शोरा १ पाव जल १ पाव
१ चम्मच २ वार पिलाना। मूत्र त्यक्त होने लगता है।

(९) बृहत् शंखवटी (भै० र०) ½ से १ रत्ती मधु ३ माशा
३ वार।

(१०) मयूरपंख भस्म २ माशा पीपर चूर्ण २ माशा मधु ६ माशा
३, ४ वार। वमन निवारक है।

(११) बृहत् कस्तूरी भूषणरस (र० स०) २ रत्ती मधु ३ माशा
३ वार। शीतांग नाशक है।

(१२) चन्द्रोदय रस (र० यो०,) २ रत्ती पान रस ३ माशा
३ वार। शीतांग नाशक है।

(१३) प्रवालभस्म ४ रत्ती मधु ३ माशा
४ वार। पसीना निकलना बंद होता है।

(१४) कलमी शोरा २ तोला जल ½ पाव
इससें कपड़ा भिंगो आध घण्टे पेडू पर रखना। मूत्र त्याग कराता है।

(१५) सरसों का तैल जायफल ताम्बा
तैल में जायफल और ताम्बा घिस शरीर में मर्दन करना। ऐंठन नाशक है।

(१६) विषगर्भ तैल २ तोला तारपीन तैल ३ तोला कपूर १ तोला
इनको एकत्र मिला हाथ, पैर तथा कलाई पर ½—१ घण्टे तक मलना।
यह शीतांग को दूर कर नाड़ीगति ठीक करता है तथा ऐंठन नाशक है।

(१७) तारपीन का स्टूप लगाना। मूत्रत्याग तत्काल होता है।

(१८) सेंधानमक १ तोला घी १ तोला
एकत्र मिला सूंघना। यह हिचकी नाशक है।

(१९) भूनी कुल्थी चूर्ण
शरीर पर मर्दन करना। पसीना निकलना बंद होता है।

(२०) भूनी सोंठ चूर्ण १ छटांक सेंधानमक ½ छटाँक
शरीर पर मर्दन करना। पसीना निकलना बंद होता है।

(२१) कर्पूर रस (भैषज्य रत्नावली) ४ रत्ती मधु ३ माशा
३, ४ बार।

(२२) अहिफेनासव (शार्ङ्गधर सं०) १ से २ तोला
जल " " "
२, ३ बार। भोजनोपरान्त।

(२३) बबूलारिष्ट (शार्ङ्गधर सं०) १–२ तोला
जल १–२ "
२, ३ बार।

R/
(२४) कैल्शियम परमाग्नेट (Calcium Permangnate) ४ ग्रेन
जल (Agua) २० औंस
प्यास के समय थोड़ा थोड़ा पिलाना। प्यास नाशक है।

(२५) सौंफ ९ माशा पुदीना ७ माशा लवंग ४ फूल गुलकन्द २ तोला
चूर्ण कर एकत्र मिला रखना। मधु से सेवन करे। ३ मात्रा।

(२६) सतपुदीना १ भाग सत अजवाइन १ भाग
सत काफूर " " सत दालचीनी ¼ "
इसको एकत्र शीशी में बंद कर रखना। मात्रा—५–१० बूँद।
अनुपान—जल। दो २ घण्टे पर।

R/
(२७) पोटाश परमाग्नेट गोली (Potash Permangnate Tab) २ ग्रेन
कई बार जल के साथ।

R/
(२८) क्लोरोडीन (Chlorodyne) २० बूंद
एसिड सल्फ्यूरिक डिल (Acid Sulphuric dil) " "
टिं० कैप्सिकम (Tr Capsicum) ५ "
एका मेंथ पिप (Aqua Menth Pip) १ औंस
२–२ घण्टे पर।

R/
(२९) स्पि० क्लोरोफार्म (Spt. Chlorofrom) १ ड्राम
स्पि० अमन एरोमेटिकस (Spt Ammon. Aromat.) " "

क्लोरोडीन	(Chlorodyne)	१ औंस
जल	(Aqua)	४ "

मात्रा—१ चम्मच। ३, ४ बार।

R/

(३०) टिं० ओपियाई	(Tr. Opii)	२ ड्राम
एसिड सल्फुरिक एरोमेट	(Acid Sulphuric Aromat)	२ "

मात्रा—२० बूँद। अनुपान—जल। एक, एक वा दो, दो घण्टे पर।

R/

(३१) मैंथाल क्रिस्टल	(Menthol crystal)	१ भाग
थाइमल	(Thymol)	" "
कैम्फर	(Camphor)	" "
रूतदार चीनी	(Rogan Darchini)	३ "

इन्हें एकत्र एक शीशी में बन्द कर रखना। मात्रा—५-१० बूँद। प्रत्येक दो घण्टे पर।

R/

(३२) कोकीन	(Cocaine)	1/8 ग्रेन
जल	(Aqua)	१ चम्मच

३, ४ मात्रा। वमन नाशक है।

R/

(३३) मिस्ट पेप्सीन को० एट विस्मथ	(Mist Pepsini Co. et Bismuth)	१० बूँद
जल	(Aqua)	१ चिम्मच

४ मात्रा। आध, आध घण्टे पर। वमन निवारक है।

R/

(३४) सल्फाग्वायनाडीन	(Sulpha guanadine)	२ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

१ मात्रा

सूची—

स्ट्रिक्नीन (Strychnine), कैम्फर इन ईथर (Camphor in Ether), कैम्फर इन आयल (Camphor in Oil), मार्फीन एट एट्रोपीन (Morphine et Atropin), हाइपरटानिक सेलाइन सोलुसन (Hypertonic Saline Solution), ग्लुकोस (Glucose), एड्रेनलीन (Adrenaline), हाइपरटानिक सेलाइन को

शिरागत प्रविष्ट करते हैं। इसमें एड्रेनलीन वा ग्लुकोज को भी मिला लेना उत्तम होता है। माफर्नो एट एट्रोपीन वेदना तथा श्वास को शान्त करती है। शेष सूची अवसाद नाशक है।

प्रतिश्याय (Common Cold or Nasal Catarrh)

(१) दशमूल क्वाथ (गरम) ½ छटाँक प्रातः तथा सायंकाल।

(२) आद्री चूर्ण ३ माशा गुड़ १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) सोंठ १ तोला पीपर १ तोला
मरीच " "
इनका कपड़छान चूर्ण करे। इसमें १२ तोला गुड मिला ४ रत्ती प्रमाण की गोली बना रखना। मात्रा—१-२ गोली। अनुपान-गरम दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।

(४) आद्री स्वरस ६ माशा मधु ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(५) काला जीरा का चूर्ण इसे पोटली में बाँध सूंघना।
प्रतिश्याय नाशक है।

(६) मरीच १ तोला देवदालीफल १ तोला
कपड़छान चूर्ण कर सूंघना। प्रतिश्याय नाशक है।

(७) पीपर ३ माशा वायविडङ्ग ३ माशा
सहजनबीज " " मरीच " "
कपड़छान चूर्ण करे, फिर सिल पर जल के साथ पीस रस निकाल लेवे। इस रस को ४ से ८ बूंद की मात्रा में दोनों नथुनों में डालना।
प्रतिश्याय नष्ट होता है।

(८) वच चूर्ण इसे पोटली में बाँध सूंघना।
यह शुष्क नाशा को आर्द्र करता है।

(९) लक्ष्मीविलास रस (रसयोगसार) १ गोली
पान स्वरस १ माशा
मधु ३ "
प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम ओषधि है।

(१०) व्याघ्री तैल (शारङ्गधर संहिता) नस्य देते हैं।
पूतिनस्य भी इससे नष्ट होता है।

R/

(११) स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris nitrosi)	२० बूँद
टिं० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co.)	१५ ,,
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	३० ,,
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(१२) वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	५ बूँद
टिं० एकोनाइट	(Tr. Aconite)	३ ,,
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr Ammon Acetas)	१ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० बूँद
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(१३) पाट आयोडाइड	(Pot Iodide)	५ ग्रेन
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूँद
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromat.)	१/२ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(१४) टेरीबीन	(Terebene)	१ औंस
आयल यूकेलिप्टस	(Oil Eucalyptus)	,, ,,
कैम्फर	(Camphor)	,, ,,
मेंथल	(Menthol)	,, ,,

रुमाल पर छिड़क नस्य लेना।

R/

(१५) सोडा बाईकार्बोनेट	(Soda Bicarbonate)	१० ग्रेन
टिं० ओपियाई	(Tr Opii)	५ बूँद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा। दो, दो घण्टे पर।

R/

(१६) मेंथल	(Menthol)	५ ग्रेन
यूकेलिप्टस आयल	(Eucalyptus oil)	३० बूँद
एमीग्डेली आयल	(Amygdelae oil)	१ औंस

नाक में लगाना।

R/

(१७) मेंथल	(Menthol)	६ ग्रेन
एसिड बोरिक	(Acid Boric)	२० "
लेनोलीन	(Lanolin)	१ औंस

शुष्क नाशा में २, ३ वार लगाना।

R/

(१८) एस्पीरीन	(Aspirin)	५ ग्रेन
कैफीन	(Caffein)	२ "
फेनासिटिन	(Phenacetine)	५ "

३ मात्रा। जल से।

सूची—

एण्टी कटार्हल वैक्सीन (Anti Catarrhal Vaccine), कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium gluconate), रिडाक्सन (Redoxon)।

पेटेण्ट औषधियाँ—

नेजोटोन (Nasotone), पाइन इनहेलेण्ट (Pine Inhalant), इफेड्रीन टेब्लेट (Ephedrine tab), सालुसेप्टेसीन (Soluseptasine), एम्पायरीन कम्पाउण्ड विथ कोडीन (Empirin Compound with Codeine), एमोसिन (Emocin), कोरिजाल (Coryzol) तथा कोरिजा सेराल (Coryza-Serol)

मूत्राशय शोथ (Cystitis)

R/

(१) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicab)	२० ग्रेन
पाट साइट्रास	(Pot. citras)	" "
टिं० हायोसाइमस	(Tr Hyoscymus)	३० बूँद
इन्फ्यूजन बुचु	(Infusion Buchu)	१ औंस

३, ३ या ४, ४ घण्टे पर

R/

(२) एसिड सोडियम फास्फेट	(Acid Sodium Phosphate)	३० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस
		४ मात्रा ।

R/

(३) यूरोट्रोपीन	(Urotropine)	१० ग्रेन
एसिड सोडा फास्फेट	(Acid Soda Phosphate)	३० "
टिं० हायोसाइमस	(Tr Hyoscymus)	१० बूँद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(४) सोडा बेंजोएट	(Soda Benzoate)	२० ग्रेन
टिं० हायोसाइमस	(Tr Hyoscymus)	१० बूँद
टिं० बुचु	(Tr Buchu)	½ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० बूँद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । क्षोभ नाशक है ।

R/

(५) यूरोट्रोपीन	(Urotropine)	१० ग्रेन
टिं० बेलाडोना	(Tr Belladonna)	८ बूँद
सोडा बेंजोएट	(Soda Benzoate)	२० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

भोजन के मध्य में समान जल के साथ । मूत्रकृच्छ्र नाशक है ।

R/

(६) पाट एसीटास	(Pot Acetas)	२० ग्रेन
टिं० हायोसाइमस	(Tr Hyoscymus)	१५ बूँद
हेक्सामीन	(Hexamin)	" ग्रेन
एका मेंथ पिप	(Aqua Menth Pip)	१ औंस

भोजन के मध्य में समान जल के साथ । मूत्रकृच्छ्र नाशक है ।

R/

(७) एम एण्ड बी ६९३	(M & B 693)	१ गोली

या

सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३–४ बार।
शोथ तथा पूयनाशक है।

मूत्राशय प्रक्षालक औषधियाँ—

R/

(१) सिल्वर नाइट्रेट	(Silver Nitrate)	१–४ ग्रेन
परिस्रुत जल	(Aqua distd)	२० औंस

R/

(२) प्रोटार्गाल	(Protargol)	१½ ग्रेन
परिस्रुत जल	(Aqua Distd)	१ औंस

R/

(३) पाट परमाग्नेट	(Pot. Permangnate)	४ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

R/

(४) एसीटिक एसिड	(Acetic Acid)	२ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

R/

(५) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	२० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

सूची—

पेनिसिलिन (Penicillin), सिबेजाल (Cibazol), तथा हेक्सामीन (Hexamin), स्टैफिलोकोकस वैक्सीन (Staphylococcus Vaccine)

पेटेण्ट औषधियाँ—

निओकेट (Neokat), अमोकेट (Aumoket), एजिजेन (Agigen), केल्शियम मैण्डेलेट कम्पाउण्ड (Calcium Mandelate Compound), निजिन (Nizin), पाइलोप्योरिन (Pyelopurin), निकोसिल (Nicosil), मीथायलीनब्ल्यू (Methylene Blue), प्रोसेप्टेसीन (Proseptasine), एम एण्ड बी ६९३ (M & B 693), सिबेजाल (Cibazol), सल्फेनिलेमाइड (Sulphanilamide), सल्फाडाएजीन (Sulphadiazin), थिएजमाइड (Thiazamide)

कोष्ठवद्धता (Constipation)

(१) काला दाना	२ तोला	काला नमक	१ तोला
सनाय	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर एकत्र मिला रखना। मात्रा—२½ से ८ माशा
अनुपान—गरम जल। सायंकाल सोते समय।

नोटः—यह ओषधि बधा मल निकाल शरीर को हलका करने में सर्वोत्तम है। यह आंत्र स्थित मल को खुरच कर निकालती है। अतः इसके सेवन से किंचित वेदना होती है। वेदना की स्थिति में सौंफ चूसने से शीघ्र ही मल निकल जाता है।

(२) काला दाना	२ तोला	सोंठ	२ तोला

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२½ माशा।
अनुपान—गरम जल। सायंकाल सोते समय।

(३) एरण्ड तैल	½ छटाँक	गरम दूध	१ पाव

सोते समय।

(४) हरड़ छिलका	१ तोला	हल्दी	१ तोला
आँवला छिलका	" "	सोंठ	" "
दूधिया वच	" "	छोटी पीपर	" "
वायविडङ्ग	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण करना।

चूर्ण	७ तोला	पुराना गुड़	५ तोला
सेंधा नमक	१ "		

सब को एकत्र मिला रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—गरम जल।

नोट—इस ओषधि को प्रातः खाते है। इसके सेवन के पूर्व घी मिश्रित खिचड़ी खाना अत्युत्तम है।

(५) निशोथ	४ माशा	सोंठ	४ माशा
इन्द्रयव	" "	द्राक्षा	" "
पीपर	" "	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर मधु मिला पिलावे। प्रातः काल। यह वर्षा ऋतु के लिये योग्य है।

(६) अमलतास गुदा	५ माशा	जल	१ पाव
सोंठ	" "		

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छानकर प्रातः काल पिलावे। दस्त साफ लाता है।

(७) निशोथ	४ माशा	मुलेठी	४ माशा
जवासा	" "	द्राक्षा	" "
नागरमोथा	" "	जल	½ सेर
सफेद चन्दन	" "		

इनको जौ कूटकर क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छान मिश्री मिला सायंकाल पिलावे। शरद ऋतु के लिये उत्तम है।

(८) निशोथ	१ तोला	देवदारु	१ तोला
चित्रक	" "	वच	" "
पाठा	" "	स्वर्ण क्षीरी	" "
जीरा	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—गरम जल हेमन्त ऋतु के लिये उत्तम है।

(९) काली निशोथ	१ तोला	पीपर	१ तोला
सेंधा नमक	" "	सोंठ	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—मधु। बरसात तथा शिशिर में उत्तम है।

(१०) निशोथ चूर्ण	६ माशा	खण्ड	२ तोला

ग्रीष्मकाल में उपयोगी है।

(११) पंचसम चूर्ण (शार्ङ्गधर संहिता)

निशोथ	१ तोला	हरड़	१ तोला
काला नमक	" "	पीपर	" "
सोंठ	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—उष्ण जल सायंकाल।

(१२) इच्छाभेदीरस (रसेन्द्रसार संग्रह) १–२ गोली

अनुपान—शीतल जल। प्रातःकाल

R/

(१३) मैगसल्फ	(Mag. Sulph)	½ ड्राम
मैगकार्ब	(Mag. Carb)	१५ ग्रेन
टि० रिहाई को०	(Tr. Rhei co)	२० बूँद
टि० नक्स	(Tr Nux)	५ "
एसेंस मेंथ पिप	(Ess. Menth. Pip)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

आवश्यकतानुसार २, ३ मात्रा। आधा घण्टा भोजन के पूर्व

R/

(१४) एक्स्ट्रैक्ट कैस्केरी लिक्विड	(Ext. Cascarae Liquid)	१५ बूँद
टिं० वेलाडोना	(Tr. Belladonna)	४ "
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	५ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

रात्रि में।

R/

(१५) पल्व ग्लीसराइज़ा	(Pulv. Glycerrhyza)	१½ ड्राम
फेनाल्फथलीन	(Phenolphthalein)	२ ग्रेन

गरम दूध के साथ। सोते समय।

R/

(१६) एलायन	(Aloin)	¼ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Bella)	" "
स्ट्रिक्नीन सल्फ	(Strychnine Sulph)	१/६४ "

मात्रा—१ गोली। २ वार।

R/

(१७) फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	½ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext. Nux Vomica)	" "
एलायन	(Aloin)	" "

मात्रा—१ गोली। भोजन के पूर्व।

R/

(१८) पल्व कैप्सिकि	(Pulv Capsici)	¼ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट कैस्केरी	(Ext. Cascari)	३ "
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext Belladonna)	¼ "

मात्रा—१ गोली। आवश्यकतानुसार प्रत्येक रात्रि।

R/

(१९) एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext Belladonna)	१/६ ग्रेन
एलायन	(Aloin)	¼ "
स्ट्रिक्नीन सल्फ	(Strychnine Sulph)	१/६४ "
पल्व इपीकाक	(Pulv Ipecac)	¼ "

मात्रा—१ गोली। २ मात्रा।

R/

(२०) मैग सल्फ	(Magsulph)	३० ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph dil)	२ बूँद
लाइकर स्ट्रिक्नीन	(Liqr. Strychnine)	५ "
आयल मैंथ पिप	(Oil Menth Pip)	" "
इन्फ्यूजन सेना	(Infusion Senna)	१ औंस

३ मात्रा। जल के साथ। भोजनोपरान्त।

R/

(२१) पैरामैल (Paramal) २–४ चम्मच सोते समय

R/

(२१) पैराथाल (Parathal) १–४ चिम्मच सोते समय।

सूची—

पेरिस्टेलिन (सिबा) (Paristallin) (Ciba)

पेटेण्ट औषधियाँ—

सीरप फिग (Syrup Fig), मिल्क आफ मैग्नेशियम (Milk of Magnasium), लैक्जेटीन (Laxatine) प्रोविवान (Provivan), सोडियम सल्फेट टेब्लेट (Sodium Sulphate Tab), मैग्नेशियम सल्फेट कम्पाउण्ड टेब्लेट (Magnesium Sulphate co. Tab), टेब्लेट कैस्केरा एण्ड बेलाडोना (Tab, Cascara & Belladonna), टेब्लेट एलायन कम्पाउण्ड (Tab Aloin Compound), ग्लाइकोलेट (Glycolate), यूकोल (Eucoal), कौलैक्स (Colax), डीलैक्स (Delax), क्रीमेफीन (Cremaffin), क्रीम आफ मैग्नेशिया (Cream of Magnesia) रीगायड्स (Regoids), फ्रूट सेलाइन (Fruit Saline), तथा रिजीटैक्स (Regetax),

प्रमेह

उदकमेह (Diabetes Insipidus)

(१) धाय फूल	५ माशा	श्वेत चन्दन	६ माशा
अर्जुन छाल	" "	जल	१ पाव
ताड़ की छाल	" "		

इनका क्वाथ करे। १ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर १ तोला मधु मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

नोट—यदि क्वाथ गरमी करे तो इन ओषधियों के हिम में मधु मिलाकर व्यवहार करे।

(२) पारिजाता २ तोला जल १ पाव

क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर मधु मिला पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) नागरमोथा ५ माशा हरड़ ५ माशा कायफल ५ माशा
लोध ,, ,, जल १ पाव

क्वाथ करे। जब एक छटाँक जल शेष रहे तब छान शीतल कर १ तोला मधु मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) जामुन की गिरी का चूर्ण ३ माशा मधु १ तोला
३ मात्रा।

(५) सोमनाथ रस (रसेन्द्रसार संग्रह) २ रत्ती
मधु ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(६) वलेरियन	(Valerian)	५ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(७) एण्टीपायरीन	(Antipyrin)	८ ग्रेन
टि० वलेरियन	(Tr. Valerian)	२० बूँद
सीरप कोडीन	(Syrup Codein)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३–४ मात्रा।

R/

(८) जाम्बोलान	(Jambolon)	२ ड्रिम्मच
जल	(Water)	,, ,,
		३ मात्रा

R/

(९) पल्व जाम्बूल	(Palv Jambul)	३० ग्रेन
मधु		२ माशा
		३ मात्रा।

मधुमेह (Diabetes Mellitus)

(१) खैर ६ माशा पीपर खैर ६ माशा सुपारी ६ माशा
जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छानकर पिलावे।
प्रातः तथा सायकाल।

(२) अरणी २ तोला जल १ पाव
क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर १ तोला मधु मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) पाढल ५ तोला धमासा ५ तोला अर्जुन छाल ५ तोला
वायविडंग ५ तोला जल १ पाव
इसका क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर १ तोला मधु मिला पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।

(४) गोखरू ५ सेर जल २० सेर
क्वाथ करे। ५ सेर जल शेष रहते उतार छान ले।
क्वाथ ५ सेर मिश्री २½ सेर
इन्हें मन्द अग्नि पर चासनी बनावे। गाढा होने पर निम्न औषधियों का कपड़ छान चूर्ण डालते हैं।

सोंठ	८ तोला	पीपर	८ तोला	मरीच	८ तोला
नगकेशर	" "	दालचीनी	" "	छोटी इलाची	" "
जायफल	" "	कोह फूल	" "	खीरा बीज	" "
वंशलोचन	" "				

इन द्रव्यों के कपड़ छान चूर्ण को डाल कड़ाही को तत्काल आग पर से उतार शीतल कर रखते हैं।
मात्रा—४ तोला। प्रातः तथा सायकाल।

(५) गुड़मार १ तोला जामुन बीज १ तोला स्याहमरीच ३ माशा
चूर्ण कर रखना। मात्रा—३ माशा। अनुपान—जल। ३ मात्रा।

(६) इन्द्रवटी (भैषज्य रत्नावली) १ माशा
मधु ६ "
सेमर मूसली चूर्ण " "
प्रातः तथा सायकाल।

(७) त्रिवंग २ तोला छाया में सुखाई नीमपत्र चूर्ण १० तोला
गुड़मार चूर्ण १० तोला शिलाजीत १५ तोला सुवर्णभस्म ½ "

प्रथम शिवंग को शिलाजीत में मिलाते हैं, फिर पत्तों के चूर्ण और स्वर्ण भस्म को मिला ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनाते हैं।

मात्रा—२ गोली । अनुपान—शीतल जल । ३ मात्रा ।

R/

(८) टि० ओपियम	(Tr. Opium)	१० बूंद
लाइकर आर्सनिकलिस	(Liqr arsenicalis)	३ "
टि० कार्डेमम को०	(Tr Cardamom co.)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा ।

R/

(९) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२० ग्रेन
पाट. साइट्रास	(Pot Citras)	" "
कैल्शियम फास्फेट	(Calcium phosphate)	६ "
मैग कार्ब	(Mag Carb)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा ।

R/

(१०) एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext Nux Vomica)	१ ग्रेन
एक्ट्रैक्ट कैस्केरा	(Ext Cascara)	¼ "
कोडीन फास्फेट	(Codeine)	½ "

३ मात्रा ।

R/

(११) लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट जाम्बूल	(Liq Ext Jambul)	१ ड्राम
ग्लीसरीन ग्लीसरोफास्फ को०	(Glycerine Glycerophosphco)	" "
कोडीन फास्फेट	(Codeine)	½ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा ।

R/

(१२) पल्व ग्लीसराइजा को०	(Pulv. Glycerrhiza Co)	१२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट कैस्केरा	(Ext Cascara)	" "
कोडीन	(Codeine)	½ "
एक्स्ट्रैक्ट जेंशियन	(Ext Gentian)	१० "

३ मात्रा ।

R/

(१३) कैम्फर	(Camphor)	१ भाग
मुस्क	(Musk)	" "
ओपियम	(Opium)	४ "
मेस	(Mace)	" "

१ ग्रेन की गोली बनाना। मात्रा—१ गोली। अनुपान—पान स्वरस। ३ मात्रा।

R/

(१४) कैल्शियम आयोडाइड	(Calcium Iodide)	५ ग्रेन
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(१५) पेण्टोपान	(Pantopon)	१ ग्रेन
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(१६) यूरेनियम नाइट्रेट	(Uranium Nitrate)	२ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(१७) यूरोट्रोपीन	(Urotropine)	१५ ग्रेन

३ मात्रा।

R/

(१८) इन्सुलीन सूची	(Insulin Injection)	१० यूनिट।

इन्सुलीन सूची की चेतावनी

(१) मधुमेह के अतिरिक्त अन्य मेह में इसे प्रविष्ट करने से रोगी की निश्चित मृत्यु होती है।

(२) प्रत्येक सूची के १५ मिनट पश्चात् भोजन देना चाहिये।

(३) रात्रि में इन्सुलीन की सूची नहीं देते, क्योंकि इसके भयानक परिणाम ज्ञात नहीं होते।

(४) इसको बड़ी मात्रा में व्यवहार नहीं करना चाहिये।

इन्सुलीन के भयानक परिणाम—

(१) मूर्च्छा। (२) स्वेदाधिक्य। (३) चर्म की उष्णता।
(४) आलस्य। (५) प्रलाप। (६) आक्षेप।
(७) अवसाद। (८) मृत्यु।

अवसाद की चिकित्सा—

(१) साधारण अवसाद में जल में ½ औंस चीनी घोलकर पिलावें।

(२) तीव्रावस्था में निम्न सूची प्रविष्ट करें—

ग्लुकोज (Glucose) १० से २० प्र० शत १ सी० सी० और
पिच्युट्रीन (Pituitrin) के साथ १ मात्रा।
शिरागत प्रविष्ट करें।

मधुमेह के उपद्रव—

(१) प्रमेह जन्य संन्यास (Coma)

चिकित्सा—

(१) रोगी को दूध पर रखना चाहिये।

R/

(२) सोडा बाई कार्ब (Sodabicarb) १ चम्मच
जल (Aqua) १ औंस
प्रत्येक तीसरे घण्टे पर। ३% का सोडा बाई कार्ब का घोल २ पाइण्ट तक शिरा में प्रविष्ट करते हैं।

(२) प्रमेह पिडिका (Boils and Carbuncle)

चिकित्सा—

(१) सारिवादि लौह ४ रत्ती मधु ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(२) मकरध्वज २ रत्ती मधु ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) सारिवाद्यासव (शार्ङ्गधर सं०) २ तोला जल २ तोला
२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(४) खदिरारिष्ट (शारंगधर संहिता) २ तोला जल २ तोला
२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(५) अनन्तमूल १ तोला बड़ी हरड़ १ तोला
श्यामलता " " अडूस की छाल " "
मुनक्का " " नीम की छाल " "
त्रिवृत " " हल्दी " "
सनाय " " दारु हल्दी " "
कुटकी " " गोखरु की बीज " "

इनको जौकुट कर रखें। इसमें से २ तोला ले, पाव भर जल में क्वाथ करे, ½ छटाँक जल शेष रहने पर छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायकाल।

(६) न्यग्रोधादि चूर्ण ६ माशा मधु १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।
इसको खाने के पश्चात् त्रिफला क्वाथ पीवे।

R/
(७) ईस्ट वेक्सीन की सूची (Yeast Vaccine)
(८) दो घण्टे पर सेंक कर निम्न ओषधि लगावें:—
R/
मैगसल्फ (Mag Sulph) ४५ औंस
ग्लीसरीन (Glycerine) ५५ "
फेनल (Phenol) ½ "

(९) पूयोत्पन्न होने के पश्चात् प्रमेह पिडिका पर लम्बाई और चौड़ाई में धन (+) के आकार में गहरा चीरा लगावें तथा आधार और गुहा भित्ती को शुद्ध कार्बोलिक एसिड (Pure Carbolic Acid) से स्पर्श करे; ताकि रक्तस्राव बन्द हो जाय। गुहा में साइनाइड गाज (Cyanide gauze) भर कर पट्टी बाँध दें।
(१०) इन्सुलीन सूची (Insuline Injection)
(११) शक्ति वर्धक ओषधियों का व्यवहार।
(१२) बर्नोल (Burnol) का व्यवहार।

पेटेन्ट ओषधियां—

थिएजमाइड (Thiazamide), सालुसेप्टेसीन (Soluseptasine) मलहम, एम एण्ड बी ६९३ (M & B 693) पेसिलिन (Pencillin) प्रति तीन घन्टे पर ५० हजार से १ लाख तक।

(३) कोथ (Gangrene)

चिकित्सा—

(१) उष्ण वायु (Hot-air) सेंक।

(२) सोडियम पाइरोबोरेट चूर्ण (Sodium Pyroborate Powder) से ढक देना।

(४) कण्डू (Pruritus)

चिकित्सा—

R/

(१) थाइमोल	(Thymol)	४ ड्राम
लाइकर पोटाश	(Liqr. Potash)	७ ,,
ग्लीसरीन	(Glycerine)	६ ,,
जल	(Aqua)	१ पाइण्ट

कण्डू के स्थान पर लगावें।

R/

(२) मेंथाल	(Menthol)	२० ग्रेन
पल्व कैम्फर	(Pulv Camphor)	२५ ,,
फेनल	(Phenol)	२५ ,,
एडिपिस बेंजोएट	(Adipis Benzoat)	२ ,,

कण्डू के स्थान पर लगावें।

शुक्रमेह (Spermatorrhoea)

(१) बंग भस्म २ रत्ती इलायची चूर्ण ४ रत्ती
मधु १ तोला प्रातः तथा सायंकाल।

नोट—इसके खाने के पश्चात् निम्न ओषधि खाते हैं।

आँवला का क्वाथ ३ तोला हल्दी चूर्ण २ माशा

(२) बंग भस्म २ रत्ती तुलसी रस १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल। स्तम्भक है।

(३) बंग भस्म २ रत्ती मिश्री चूर्ण ६ माशा
मधु १ तोला

प्रातः तथा सायंकाल। शरीर पुष्टिकारक है।

(४) चाँदी भस्म ४ चावल से १ रत्ती तेजपत्ता चूर्ण १ माशा
लाची चूर्ण १ माशा दालचीनी चूर्ण " "
प्रातः तथा सायंकाल।

(५) नागौरी असगन्ध २ तोला विधारा २ तोला
कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—मिश्रीयुक्त दूध
धातु तथा शरीर पुष्ट होता है। स्थूल बनाता है।

(६) बसन्तकुसुमाकररस (र० यो० सा०) ½ से २ रत्ती
मधु ६ माशा प्रातः तथा सायंकाल।

(७) चन्द्रप्रभावटी (रसयोग०) १–२ गोली
मधु ६ माशा प्रातः तथा सायंकाल।

(८) शिलाजतु वटी (सै० र०) १ गोली
मलाई वा मक्खन के साथ। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) प्रमेहान्तक वटी (चिकित्सा चन्द्रोदय) २ गोली
मिश्री युक्त दूध से। प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) शतावर १ छटाँक सफेद मूसली १ छटाँक
तालमखाना " " काली मूसली " "
केवाँच के बीज " " गुल सकरी " "
गोखरु " " बरियरा " "
इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—धारोष्ण दुग्ध।
प्रातः तथा सायंकाल।
२१–२१ दिनों तक सेवन से धातु गाढ़ी होती है।
निषेध—इस औषधि के सेवन काल में स्त्री-प्रसङ्ग त्याज्य है।

(११) गोक्षुरादि गुग्गुलु (शा० स०) २ गोली
गोखरु क्वाथ ½ छटाँक प्रातः तथा सायंकाल।

(१२) चन्द्रकला वटी (सै० र०) २ गोली मधु १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(१३) क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	१५ ग्रेन
पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	" "
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूँद
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscymus)	½ ड्राम
एका सिनामम	(Aqua Cinnamomi)	१ औंस

सोते समय।

R/

(१४) एक्स्ट्रैक्ट वेलाडोना	(Ext. Belladonna)	¼ ग्रेन
जिंक	(Zinc)	१ "
		२ मात्रा

R/

(१५) अमन इक्थ्याल	(Ammon Ichthyol)	३ ग्रेन
		कैप्सुल से । ३ मात्रा ।

R/

(१६) सोडियम ब्रोमाइड	(Sdium Bromide)	१५ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा । भोजनोपरान्त

R/

(१७) स्टिप्टाल	(Styptol)	¾ ग्रेन
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१८) कर्न्युटिन साइट्रास	(Cornutin Citras)	०३ भाग
क्रीटा प्रिपेयरेटा	(Creta preparata)	३ "
गम ट्रैगेकैंथ	(Gum Tragacanth)	६ "
		२० गोली बनावें । मात्रा—२-४ गोली

(१९) उष्ण कटिस्नान ।

प्रवाहिका (Diarrhoea)

(१) छोटी हरड़   २ तोला   जल   १ पाव

क्वाथ बनावे । एक छटाँक जल शेष रहते छान ले ।

एरण्डतैल   २ तोला   क्वाथ   १ छटाँक

सोते समय । दस्त साफ ला, ऐंठन तथा प्रवाहिका नाशक है ।

(२) हिंग्वाष्टक चूर्ण   (भैषज्यरत्नावली)   ३ माशा, अफीम ½ रत्ती

सोते समय । प्रवाहिका नाशक है ।

नोट—नं० २ की ओषधि नं० १ के सेवन के वाद व्यवहृत करते हैं ।

(३) मोचरस चूर्ण २ माशा नागकेशर चूर्ण २ माशा
मधु ६ ,, प्रातः तथा सायंकाल।
प्रवाहिका के रक्त को बन्द करती है।

(४) जायफल १ तोला जावित्री १ तोला
लवंग ,, मोचरस ,,
बड़ की कोपल ,, शुद्ध सिंगरफ ,,
अफीम ,,

इनको पोस्ते की छालके क्वाथ में खरल कर मटर बराबर गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मिश्री का शर्बत। ३ मात्रा।
प्रवाहिका, रक्तातिसार तथा संग्रहणी नाशक है।

(५) सफेद राल चूर्ण २ माशा चीनी २ माशा
३ मात्रा

(६) अजमोदादि चूर्ण (शा० सं०) २ माशा; मट्ठा १ छटाँक
२ मात्रा।

नोट—मट्ठा का सेवन ज्वरहीनावस्था में करें।

(७) कुटजावलेह (शा० सं०) १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल

(८) रामवाण (र० सा०) २ रत्ती; शंख ४ रत्ती
मधु के साथ। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) बबूलारिष्ट (शा० सं०) २ तोला; जल २ तोला
२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(१०) एरण्ड तैल	(Castor oil)	½ छटाँक
दुग्ध	(Milk)	१ पाव
		सोते समय

R/

(११) पल्व क्रीटा एरोमेटिकस	(Pulv creta Aromaticus)	२० ग्रेन
पल्व किनो को०	(Pulv kino co)	१५ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१२) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth carb)	२० ग्रेन

एसिड हाइड्रोसायनिक डिल	(Acid hydrocynic dil)	५ बूंद
लाइकर मार्फ एसीटास	(Liqr. morph acetas)	१५ ,,
पल्व ट्रैगेकैंथ	(Pulv. Tragacanth)	१५ ग्रेन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१३) पल्व क्रीटा एरोमेट कम ओपियाई	(Pulv creta Arom. cum opii)	१५ ग्रेन
टि० कटेचु	(Tr. catechu)	३० बूंद
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt Ammon. aromate)	१० ,,
सीरप जिंजर	(Syrup ginger)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा।

R/

(१४) ओलियम रिसिनी	(Oleum ricini)	६ ड्राम
स्पि० विन गैलिक	(Spt vin gallic)	२ ,,
टि० ओपियाई	(Tr. opii)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(१५) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth carb)	१० ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	,, ,,
टि० ओपियाई	(Tr opii)	८ बूंद
मुसिलेजट्रैगेकैंथ	(Mucilage tragacanth)	१५ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

मात्रा—१ चम्मच। प्रत्येक ४ घण्टे पर,

R/

(१६) मेंथाल	(Menthol)	१ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext belladonna)	$\frac{1}{2}$,,

२–३ मात्रा। मरोड़ नाशक है।

R/

(१७) टैनेल्बिन	(Tannalbin)	१०–२० ग्रेन
		३ मात्रा।

R/

(१८) टैनिजेन (Tannigen) ८–१० ग्रेन
२ मात्रा।

R/

(१९) टैनोफार्म (Tannoform) १० ग्रेन
बिस्मथ सैलिसिलेट (Bismuth salicylate) ५ "
२ मात्रा।

R/

(२०) सल्फाग्वायनाडीन (Sulphaguanadine) २ गोली
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) १० ग्रेन
३, ४ मात्रा।

R/

(२१) स्टोवार्सोल (Stovarsol) २ गोली
भोजन के पूर्व। एक सप्ताह पर्यन्त।

पेटेण्ट औषधियां—

एण्टरोवायोफार्म (Enterovioform), एण्टरोक्वीनाल (Enteroqunol)
डायरोकीन (Diarochin)

पार्वतीय प्रवाहिका (Hill Diarrhoea)

R/

(१) लाइकर हाइड्रार्ज परक्लोर (Liqr. hydrarge perchlor) ½–१ ड्राम
२ मात्रा। भोजन से १५ मिनट पूर्व।

R/

(२) पेप्सीन (Pepsin) १२–१५ ग्रेन
२ मात्रा। भोजनोत्तर।

अतिसार (Dysentery)

(१) सुगन्धवाला	४ माशा	धनियां	४ माशा
नागरमोथा	" "	सोंठ	" "
बेलगिरी	" "	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। एक छटॉक जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सांयकाल।

यह आम, शूल तथा विबन्ध नाशक, दीपन तथा पाचन है।

(२) पाठल	१ तोला	पीपर	१ तोला
हींग	" "	पीपरामूल	" "
अजमोदा	" "	चव्य	" "
वच	" "	चीता	" "
सोंठ	" "		

इनको एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३ माशा अनुपान—सेंधानमक मिश्रित गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल। वेदना और आम नाशक है।

(३) हरड़	३ माशा	दारुहल्दी	३ माशा
वच	" "	अतीस	" "
नागरमोथा	" "	सोंठ	" "
जल	१ पाव		

इनका क्वाथ करे। एक छटाँक शेष रहते छानकर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) इन्द्रजौ	३ माशा	नागरमोथा	३ माशा
अतीस	" "	सुगन्धवाला	" "
बेलगिरी	" "	कचूर	३ "
जल	१ पाव		

इनको जौकुट कर क्वाथ करे। एक छटाँक शेष रहते छानकर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। यह चिरकालिक आमातिसार तथा रुधिर विकार नाशक है।

(५) शुद्ध कपूर	१ तोला	भुनी हींग	१ तोला
अफीम	" "	जायफल	" "

एकत्र खरल कर जल के साथ रत्ती प्रमाण की गोली बनावें। मात्रा—१ गोली। अनुपान—चावल का धोवन। प्रातः, दोपहर तथा सायंकाल। यह उदरशूल, अतिसार तथा वमन निवारक है।

(६) दशमूल क्वाथ	½ छटाँक	सोंठ चूर्ण	६ माशा

प्रातः तथा सायंकाल। अतिसार तथा तज्जन्य शोथ निवारक है।

(७) मोथा	१ तोला	लोध	१ तोला
इन्द्रजौ	" "	मोचरस	" "
धायफूल	" "	सोंठ	" "
कच्चा बेलगिरी	" "		

इनका एकत्र कपड़छान चूर्ण कर ½ प्रमाण में मिश्री मिला रखना। मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल। भयानक अतिसार नाशक है।

(८) भुना सोहागा	१ माशा	शुद्ध सिंगरफ	२ माशा
अफीम	४ ”		

इन्हें एकत्र खरल कर मरीच सदृश गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायकाल। रात्रि में अधिक दस्त होने वाले अतिसार का नाशक है। नीबू रस के साथ देने से दिन में अधिक दस्त होने वाले अतिसार को नष्ट करती है।

(९) नागरमोथा	१ तोला	कुड़े की छाल	१ तोला
सोनापाठा	” ”	आम की गुठली	” ”
धायफूल	” ”	लाजवन्ती	” ”
सुगन्धवाला	” ”	अतीस	” ”
मोचरस	” ”	सोंठ	” ”
बेलगिरी	” ”	लोध	” ”
इन्द्रजौ	” ”	पाढल	” ”

इनको एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३-६ माशा अनुपान—मधुमिश्रित चावल का धोवन। प्रातः तथा सायंकाल। गंगा के सदृश वेगवान् अतिसार का नाशक है।

(१०) शुद्ध कपूर	१ तोला	नागरमोथा	१ तोला
शुद्ध सिंगरफ	” ”	इन्द्र जौ	” ”
शुद्ध अफीम	” ”	जौ जायफल जायफल	” ”

इनका कपड़छान चूर्ण करे। चूर्ण को आदी स्वरस में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। ३ मात्रा यह दस्त, मरोड तथा गड़गड़ाहट नाशक है।

(११) सिद्धप्राणेश्वर रस (र० सा०) १ रत्ती, मधु ६ माशा प्रातः तथा सायंकाल।

(१२) अमृतार्णव रस १ गोली कण्टकारी रस १ तोला प्रातः तथा सायकाल

(१३) लौह पर्पटी (र० यो० सा०) ४ चावल से १ रत्ती बढ़ाते हैं। जीरकक्वाथ १ छटाँक प्रातः तथा सायंकाल।

(१४) स्वर्णपर्पटी (र० यो० सा०) ४ चावल से १ रत्ती तक बढ़ाते हैं। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। आध्मान, नानावर्ण का दस्त तथा संग्रहणी नाशक है।

(१५) कुटजारिष्ट (शा० सं०) २ तोला जल २ तोला २ मात्रा। भोजनोपरान्त। दुर्निवार अतिसार तथा ग्रहणी नाशक है।

(१६) महुआ की शराब	१२॥ सेर	जायफल	१ पल
अफीम	४ पल	इन्द्रजौ	" "
मोथा	" "	इलाची	" "

इनको मिट्टी के पात्र में रख मुँह बन्द कर १ मास पर्यन्त जमीन के अन्दर रखते हैं। तत्पश्चात छान कर बोतल में भर देते हैं। मात्रा—२ तोला। अनुपान—२ तोला जल। प्रातः तथा सायंकाल। भोजनोपरान्त।

नोट—अमीबा जन्य (Amaebic) तथा वैसिलसजन्य (Bacillary) दो प्रकार के अतिसार होते हैं जिनकी चिकित्सायें भी पृथक् पृथक् हैं।

वैसिलरी अतिसार (Bacillary Dysentery)

R/

(१) मैगसल्फ	(Magsulph)	१ ड्राम
सोडा सल्फ	(Soda sulph)	" "
टि० कार्ड को०	(Tr. card co.)	२० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

प्रारम्भ में प्रत्येक २ घण्टे पर। दूसरे दिन से ३ मात्रा।

R/

(२) टिं० ओपियम	(Tr. opium)	५ बूंद
टि० कैटेचु	(Tr catechu)	३० "
टिं० बेलाडोना	(Tr Belladonna)	५ "
टिं० कोटो	(Tr. coto)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

प्रत्येक ६ वें घण्टे पर।

R/

(३) सल्फाग्वायनाडीन	(Sulpha guanadine)	१ गोली
कैल्सियम	(Calcium)	" "

सोडा बाईकार्ब	(Sodabicarb)	५ ग्रेन
		३ मात्रा

R/

(४) क्लोरोडीन	(Chlorodyne)	१५ बूंद
एक्स्ट्रैक्ट कुर्ची	(Ext. kurchi)	१ ड्राम
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(५) मैगनेसियम सल्फेट कम्पाउण्ड, इफरवेसेण्ट टेब्लेट (Magnesium sulphate compound, Effervescent) १–४ ग्रेन

जल के साथ। ३ मात्रा।

पेटेण्ट ओषधियाँ

ओरार्सन (Ororsan), टोलेमाइन (Tolamine) थैला जोल फार्मो सियाजोल

अमीबिक अतिसार (Amoebic Dysentery)

(१) इस व्याधि की एक मात्र ओषधि इमेटीन (Emetine) है, जिसका वर्णन यहां विस्तार से किया जाता है।

इमेटीन मुख द्वारा नहीं प्रविष्ट करनी चाहिये; क्योंकि यह आमाशय में क्षोभ उत्पन्न करती है।

इमेटीन को त्वचागत (Hypodermicaly) प्रविष्ट करने के साथ साथ अधोलिखित ओषधि भी मुख द्वारा खिलाना अत्यावश्यक होता है, नहीं तो अतिसार का पुनः आक्रमण हो जाता है।

R/

पल्व इपीकाक	(Pulv Ipecac)	२०–३० ग्रेन
टैनिक एसिड	(Tannic acid)	१० "

रात्रि में भोजन के ३ घण्टे बाद। एक सप्ताह तक।

इमेटीन का विषैला प्रभाव

(१) यह हृदय तथा फुफ्फुस को क्षीण करती है।

(२) रक्ततारल्य हो जाता है, जिससे रक्त देर में बन्द होता है।

(३) शाखाओं तथा ग्रीवा की मांस-पेशियां क्षीण हो जाती है। अतः १२ ग्रेन की मात्रा तक प्रविष्ट करने के पश्चात् २ सप्ताह का विश्राम देकर पुनः प्रविष्ट करना चाहिये।

(४) १९ ग्रेन से अधिक नही प्रविष्ट किया जाता।

(५) रक्तातिसार प्रारम्भ हो जाता है।

इमेटीन व्यवहृत करने की दशायें

(१) अमीबिक अतिसार।

(२) अमीबाजन्य यकृत शोथ (Amoebic hepatitis)

(३) अमीबाजन्य यकृत तथा फुफ्फुस विद्रधि (Amoebic hepatopulmonary Abscess)

(४) आंत्रिकज्वर जन्य आंत्र से रक्तस्रावाधिक्य (Intestinal haemorrhage due to typhoid)।

(५) श्वास (Asthma) तथा श्वास प्रणाली शोथ (Bronchitis) में यह कफ ढीला करती है। इसको अल्प मात्रा में प्रविष्ट करते हैं।

(६) दन्तवेष्ट (Pyorrhoea Alveolaris)

R/

(२) इमेटीन बिस्मथ आयोडाइड (Emetine Bismuth iodide) २-४ ग्रेन कैप्सुल में। नित्यप्रति। ३६ ग्रेन तक देते हैं। बहुत उपयोगी है।

R/

(३) एमेबेटीन (Emebetine) ½ ग्रेन
३ मात्रा

नोट—आर्तवकाल (Menstrual period) में इमेटीन का व्यवहार नहीं करना चाहिये।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

ल्युकार्सान (Leucarsone), स्टोवार्सोल (Stovarsol), एम्बे क्विन (Embequin), स्ट्रेमेटीन (Stremetine), कार्बार्सोन गोली (Carbarsone tabts), कीनाक्सील (Quinoxyl), बिस्मथ कार्बोनेट गोली (Bismuth carbonate tabts), खारोफेन (Kharophen)।

कष्टार्तव (Dysmenorrhoea)

(१) लाल कमल की जड़	१ तोला	मौलसिरी की जड़	१ तोला
लाल कपास की जड़	” ”	लालचन्दन	” ”
कनेर की जड़	” ”	गन्धबाला	” ”

लाल जिमिकन्द	" "	जीरा	१ तोला

इनका एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—चावल भिगोया जल। प्रातः तथा सायंकाल। शूलनाशक है।

(२) पुष्यानुग चूर्ण (शा० सं०) ३ माशा मधु ६ माशा

चावल भिगोयो जल के साथ। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) सुरुकतरामसी	१० तोला	तुख्म कर्फस	१० तोला
रेवंद चीनी	" "	अजखर	" "
तगर	" "	सोया	" "
हरमल	" "	हमामा	" "
सातर	" "	पॉस की जड	" "
सौंफ	" "	उलटकम्बल की जड	४० "
अनीसून	" "	जल	८ सेर

इनका क्वाथ करे। २ सेर जल शेष रहते छान ले। इस क्वाथ को मन्द आँच पर गाढ़ा होने तक पकावे। गाढ़ा होने पर निम्न ओषधियों को मिलावे।

कूट चूर्ण	२ तोला	हीराबोल चूर्ण	३ तोला
जवशीर चूर्ण	" "	जुदंबेदस्तर चूर्ण	१ "

इन्हें उपर्युक्त लेह में मिला ४ रत्ती प्रमाण की गोली बना छाया में सुख रखे। मात्रा—२ गोली। अनुपान—जल। यह आर्तवकालीन वेदना को नष्ट कर आर्तव को ठीक समय पर लाती है।

(४) प्रदरारि लौह ४ रत्ती

अनुपान—जल में कुशमूल पीसकर। प्रातः तथा सायंकाल। वेदनानाशक तथा आर्तव स्रावक है।

R/

(५) पाट० ब्रोमाइड	(Pot Bromide)	५ ग्रेन
पाट० वाईकार्व	(Pot. Bicarb)	" "
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	३० बूँद
टिं० कैप्सिकम	(Tr Capsicum)	२० "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० "
सीरप टोल	(Syrup Tolu)	२० "
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा। जब वेदना अतितीव्र न हो।

R/

(६) फेनाजोन	(Phenazone)	१५ ग्रेन
लाइकर मार्फ हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Morph Hydro)	१० बूंद
टिं० वलेरियन	(Tr' Valerian)	२० "
सीरप आरेंज	(Syrup Orange)	½ ड्राम
एका क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

४, ४ घण्टे पर । ३ दिनों तक ।

R/

(७) पिरामिडान	(Pyramidon)	५ ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	१० "

३ मात्रा । आर्तवस्राव प्रारम्भ से ३ दिन पूर्व ।

R/

(८) कोडीन	(Codeine)	१० ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	" "
फेनासीटीन	(Phenacitine)	५ "

३ मात्रा । आर्तवस्राव प्रारम्भ से ३ दिन पूर्व से आरम्भ करे ।

R/

(९) कोडोपायरीन	(Codopyrine)	१ गोली

३ मात्रा

R/

(१०) फेनासीटीन	(Phenacitine)	५ ग्रेन
लाइकर मार्फ हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Morph Hydro)	२० बूंद
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	९ "
आरेंज सीरप	(Orange Syrup)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

सूची—

न्यु मेंस्ट्रोन (Neo Menstrone) ०. १ ग्राम से ५ ग्राम तक, ओवोसायक्लिन (Ovocyclin), ल्यूटोसायक्लिन (Leutocyclin), ओवोस्टैब (Ovostab), फिजोस्टैब (Physostab), ल्यूटियोस्टैब (Leuteostab), एण्टियोस्टैब (Anteo-stab), स्टिल्ब्योस्ट्राल (Stilboestrol) (Boots)

पैटेण्ट ओषधियाँ—

गोली स्टिलब्योस्ट्राल (Stilboestrol tabts), थायरायडग्लैण्ड गोली (Thyroidgland tabts), एम्पायरिन (Empirin), एम्पायरीन कम्पाउण्ड (Empirin Compound), एम्पायरिन कम्पाउण्ड विथ कोडीन (Empirin Compound with Codeine), आदि की गोली, एट्रोपीन (Atropine), फेनासिटीन (Phenacitin), गोली, सोनेल्जिन गोली (Sonalgin Tabts), कैफिमिडान, (Cefimidon), सिडेमान (Sedamon), फेनास्कोडीन (Phenascodin), मेन्स्ट्रोन (Menstrone) न्यूमेन्स्ट्रोन (Neomenstrone)।

अग्निमांद्य (Dyspepsia)

(१) पीपर	४ तोला	चीताछाल	१ तोला
हरड़	६ "	हींग	" "
जलपीपर	१ "	सेंधानमक	" "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर नीबू रस में खरल कर ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१-२ गोली। ४ वार।

अग्निदीपक और रसायन है।

(२) सेंधानमक	१ तोला	चव्य	४ तोला
पीपरामूल	२ "	चीताछाल	५ "
पीपर	३ "	सोंठ	६ "
हरड़	७ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३ माशा। अनुपान-उष्णजल ३ मात्रा। अग्निदीपन में परमोत्तम है।

(३) सोंठ	१ तोला	सेंधानमक	१ तोला
पीपर	" "	श्वेतजीरक	" "
मरीच	" "	कृष्ण जीरक	" "
अजमोदा	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण करे। इस चूर्ण में अष्टमांस भूनी हींग मिला रखे।

मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—उष्णजल। अग्निमांद्य में रामबाण है।

भास्करचूर्ण (शा० सं०)

(४) पीपर	८ तोला	पीपरामुल	८ तोला	धनियाँ	८ तोला
कालाजीरा	" "	सेंधानमक	" "	सोचरनमक	" "
तेजपात	" "	तालीसपत्र	" "	नागकेशर	" "

कालानमक	२० तोला	मरीच	२० तोला	जीरा	४ तोला
सोंठ	४ ”	दालचीनी	२ ”	लाची बीज	२ ”
समुद्र लवण	३२ ”	अनारदाना	१६ ”	अम्लबेत	८ ”

इनको एकत्र कपड़ छान चूर्ण कर रखे। इसे भास्कराचार्य ने बनाया था।

मात्रा—३-५ माशा। अनुपान—मट्ठा या दही का पानी। ३ मात्रा।

(५)

सेंधानमक	२ तोला	चीता छाल	२ तोला	हरड़	२ तोला
लॅवग	” ”	मरीच	” ”	पीपर	” ”
भुना सोहागा	” ”	सोंठ	” ”	चव्य	” ”
अजवाइन	” ”	सौंफ	” ”	वच	” ”

इनका एकत्र कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२-३ माशा। अनुपान—गरम जल या दही का पानी। २ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(६) अग्नितुण्डीवटी (शा० सं०) — २ गोली
मधु — ३ माशा
२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(७) हुतासन रस (रसयोगसागर) — २ गोली
आदी स्वरस — ½ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

(८) बडवानल रस (योगरत्नाकर) — १-२ गोली
आदी स्वरस — ½ तोला
प्रातः तथा सांयकाल।

(९) टंकणादिवटी — १-२ गोली
नीबू स्वरस के साथ। प्रातः तथा सांयकाल।

(१०) महाशंखवटी (भैषज्यरत्नावली) — १ गोली
अनुपान—दही के पानी के साथ। २ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(११) वृहत् अग्निमुख चूर्ण (शा० सं०) — ३ माशा
अनुपान—घी। भोजन के साथ सेवन करे। २ मात्रा।

R/

(१२)

सोडा ब्रोमाइड	(Soda Bromide)	१० ग्रेन
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	१५ ”
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

R/

(१३) पेप्सीन	(Pepsin)	२ ग्रेन
लाइकर बिस्मथ	(Liqr. Bismuth)	१५ बूंद
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	५ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
टिं० कार्ड को०	(Tr. Card Co)	२० "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(१४) लाइकर बिस्मथ अमन सइट्रास	(Liqr. Bismuth Ammon Citras)	२ ड्राम
सीरप प्रूनी वर्जिनिया	(Syrup Pruni Virg.)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

R/

(१५) लाइकर बिस्मथ	(Liqr. Bismuth)	½ ड्राम
एसिड हाइड्रोसायनिकडिल	(Acid Hydrocyanic Dil)	२ बूंद
लाइकर मार्फ एसीटेट	(Liqr Morph Acetate)	१५ "
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt Ammon Aromat)	" "
वाइनम पेप्सीन	(Vinum Pepsin)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

१ मात्रा

नोटः—१२-१५ तक की ओषधियाँ आम्लिक रस (Hcl) की अधिकता को कम कर जलन को शान्त करती हैं।

R/

(१६) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० "
टिं० कार्ड को०	(Tr. Card Co)	२० "
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।

भोजन के पूर्व।

R/

(१७) ग्लीसरीनी पेप्सीन (Glycerını pepsin) १ ड्राम
एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल (Acid Hydrochloric Dil) १५ बूंद
जल (Aqua) १ औंस

१ मात्रा। भोजनोत्तर।

R/

(१८) एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल (Acid Hydrochloric Dil) २५ बूंद
लाइकर स्ट्रिक्नीन (Liqr. Strychnine) ५ ”
ग्लीसरीन पेप्सीन (Glycerine pepsin) १ ड्राम
आयल मेंथ पिप (Oil Menth pip) ५ बूंद
जल (Aqua) १ औंस

१ मात्रा। भोजन के पश्चात् तुरन्त।

R/

(१९) पेप्सीन (Pepsin) २ ग्रेन
लाइकर आर्सेनिकलिस हाइड्रोक्लोर (Ligr. Arsenicalis Hydro) २ बूंद
टिं० नक्स वोमिका (Tr. Nux Vomica) ९ ”
जल (Aqua) १ औंस

१ मात्रा। भोजनोत्तर।

नोट—नं० १६ से १९ तक की औषधियाँ आम्लिक रस (Hcl) को बढ़ाती हैं। ये अग्निदीप्त कर अन्न का पाचन करती हैं।

R/

(२०) स्पि० अमन एरोमेटिकस (Spt. Ammon Aromatius) १५ बूंद
स्पि० ईथरिस को० (Spt. Aetheris Co.) १० ”
सोडा बाई कार्ब (Soda bicarb) ९ ग्रेन
लाइकर मार्फ हाइड्रोक्लोर (Ligr Morph Hydrochlor) ५ बूंद
एक्वा मेंथ पिप (Aqua Menth Pip) १ औंस

१ मात्रा। वेदना तथा आध्मान नाशक है।

R/

(२१) स्पि० अमन एरोमेटिकस (Spt. Ammon Aromatius) १० बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म (Spt Chloroform) ” ”
एसिड हाइड्रोसायनिक डिल (Acid Hydrocyanic dil) ” ”
टिं० कार्ड को० (Tr. Card Co) २० ”

टिं० जिंजिबेरिस	(Tr. Zingiberis)	२० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

R/

(२२) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromats)	२० बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० ”
टिं० कार्ड को०	(Tr Card Co)	२० ”
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(२३) मेंथल	(Menthol)	½ ग्रेन
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt Ammon Aromat)	२० बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० ”
टिं० कार्ड को०	(Tr. Carb Co.)	२० ”
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(२४) क्लोरोफार्म	(Chloroform)	१० बूंद
टिं० नक्स	(Tr- Nux)	५ ”
टिं कार्ड को०	(Tr. Card Co.)	२० ”
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

नोट—नं० २० से २४ तक की ओषधियाँ आध्मान को नष्ट कर अग्नि दीप्त करती हैं ।

R/

(२५) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
मैग कार्ब	(Mag Carb)	” ”
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Hmmon Aromat)	½ ड्राम
टिं० रिहाई	(Tr. Rhei)	१ ”
जल	(Aqua)	१ औंस

आवश्यकतानुसार । आम्लिक डकार, बेचैनी तथा आध्मान नाशक है ।

R/

(२६) फेरी ब्रोमाइड	(Ferri Bromide)	१ ग्रेन
क्वीनीन हाइड्रोब्रोमाइड	(Quinine Aydrobromide)	” ”
एस्ट्रैक्ट रिहाई	(Ext. Rhei)	½ ”

इनकी १ गोली बनावे २ मात्रा

नाड़ी जन्य (Nervous) अग्निमांद्य नाशक है ।

R/

(२७) पैपेन	(Papen)	२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext Nux Vomica)	⅓ ”
एक्स्ट्रैक्ट बैलाडोना	(Ext. Belladonna)	⅓ ”
एलोइन	(Aloin)	¼ ”

इनकी १ गोली बनावे । २ मात्रा । भोजनोपरान्त ।

R/

(२८) टेरीबीन (Terebene) १०–१५ बूंद

चीनी के साथ । ३ मात्रा । आध्मान नाशक है ।

R/

(२९) विटामीन बी काम्प्लेक्स (Vitamin B Complex) गोली वा सूची ।

पेटेण्ट औषधियाँ—

यूकोल (Eucoal), ग्लाइकोलेट (Glycolate), यूपेप्टीन (Eupeptine) ।

अपस्मार (Epilepsy)

(१) ब्राह्मी स्वरस १ तोला मधु १ तोला

३ मात्रा

(२) ब्राह्मी स्वरस १ तोला चूर्ण अकरकरा ३ माशा

मधु ३ माशा

प्रातः तथा सायंकाल ।

(३) पीपर	१ तोला	पीपरामूल	१ तोला	चव्य	१ तोला
चीता	” ”	सोंठ	” ”	मरीच	” ”
वायविडंग	” ”	छोटी पीपर	” ”	आँवला	” ”
हरड़	” ”	बहेड़ा	” ”	जीरा	” ”
धनियाँ	” ”	सेंधानमक	” ”	विडनमक	” ”

कालानमक १ तोला अजमोदा १ तोला करंजुआ १ तोला
इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—गरम जल
प्रातः तथा सायकाल। अपस्मार नाशन में उत्तम है।

(४) श्वेत प्याज का रस नाक में डालना तथा नेत्र में अंजन करना

(५) कड़वी तरोई इसे जल के साथ लुगदी बना कपड़े में बाँध रोगी के नाक में उसका रस २, ४ बूंद टपकावे। मूर्च्छानाशक है।

(६) महापंचगव्य घृत ६ माशा प्रातः तथा सांयकाल। अपस्मार के लिये अमृत है।

(७) वच ५ तोला कूट ८ तोला शङ्खपुष्पी ६ तोला
इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।
गोघृत ४ सेर ब्राह्मी स्वरस १६ सेर लुगदी १ सेर
कलईदार पात्र में घी अवशेष तक मंद अग्नि पर पकावे। मात्रा—१ तोला
प्रातः तथा सांयकाल। सर्वोत्तमौषधि है।

(८) नौसादर २ भाग सुबर साकुत्री १ भाग रोगन कुजद ½ भाग
इन्हें एकत्र एक शीशी में बंद रखे। आक्रमण के समय रोगी के नाक में कुछ बूंद डाले। आक्रमण शामक है।

(९) वातकुलान्तक रस (रसेन्द्रसार संग्रह) २ रत्ती
रास्ना क्वाथ १ छटाँक
प्रातः तथा सांयकाल।

(१०) हींग २ तोला सोंचर नमक २ तोला कूठ २ तोला
इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखे।
चण्डभैरव रस २ रत्ती उपर्युक्त चूर्ण २ तोला
गोमूत्र तथा घृत के साथ। प्रातः तथा सांयकाल।

R/

(११) सोडियम ब्रोमाइड	(Sodium Bromide)	१५ ग्रेन
लाइक्वर आर्सेनिकलिस	(Liqr Arsenicalis)	२ बूंद
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	८ ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(१२) टि० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	५ बूंद
पाट ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१५ ग्रेन
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । रात्रि के आक्रमण में उत्तम है।

(१३) पाट ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१५ ग्रेन
सोडा ब्रोमाइड	(Soda Bromide)	" "
लाइकर आर्सेनिकलिस	(Liqr. Arsenicalis)	२ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

R/

(१४) लुमिनाल सोडियम	(Luminal Soduim)	१ ग्रेन

१ मात्रा । आक्रमण नाशक है ।

R/

(१५) कैल्शिब्रूनेट गोली	(Calcibronate Tab)	१ गोली

२ मात्रा

R/

(१६) सोडा ब्रोमाइड	(Sodium Bromide)	१५ ग्रेन
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूंद
टि० नक्स	(Tr. Nux)	" "
पाट आयोडाइड	(Pot. Iodide)	७ ग्रेन
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

सूची—

पेटेण्ट औषधियाँ—

कैल्शिब्रूनेट (Calcibronate), हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड (Hyoscine Hydro bromide) लुमिनाल सोडियम (Luminal Sodium), फेनाबार्बिटोन गोली

(Phenabarbitone Tobts), फेनाबार्विटोन एण्ड ब्रोमाइड गोली (Phenabarbitone and Bromide Tabts), गार्डनाल सोडियम (Gardenal Sodium), रुटोनाल (Rutonal), लुपोट (Lupot), यूरोब्रोम (Urobrome), हाइडेण्टल गोली (Hydantal tabts)।

उपाण्ड शोथ (Epideiymitis)

R/

(१) कैलोमल	(Calomel)	२ ग्रेन सांयकाल

R/

(२) इक्थ्याल	(Ichthyol)	१ ड्राम
लैनोलीन	(Lanoline)	½ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	१ आँस

इनको एकत्र मिला मलहम बनाना। इसे वस्त्र पर फैला शोथ पर बाँधना।

R/

(३) रीसार्सिन	(Resoroin)	५ ड्राम
लैनोलीन	(Lanoline)	" "
ग्वायकोल	(Guaiacol)	५ "

मलहम बनाना। वस्त्र पर फैला शोथ पर बाँधना।

नोटः—नं० २ तथा ३ की औषधियाँ व्याधि की तीव्रता में व्यवहृत होते हैं।

R/

(४) एम एण्ड बी ६९३	(M & B 693)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा। शोथ नाशक है।

R/

(५) सिबेजाल	(Cibezol)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा

R/

(६) बेलाडोना मलहम	(Ung. Belladonna)	४ ड्राम
हाइड्रार्ज मलहम	(Ung. Hydrarg)	" "
इक्थ्याल	(Ichthyol)	६ "

अण्डकोष पर प्रतिदिन बाँधना। चिरकालिक शोथ में लाभप्रद है।

सूची—

कैल्शियम क्लोराइड (Calcium Chloride), ट्यूबर कुलीन (Tubrculin)

नोट—ट्यूबर कुलीन की सूची क्षयज शोथ में लाभप्रद है।

गलगण्ड (Exophthalmic Goitar)

(१) कायफल चूर्ण — गलगण्ड पर मलते हैं।

(२) जलकुम्भी १ तोला — सेंधानमक १ तोला — पीपर १ तोला
एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—१ तोला। अनुपान—जल

(३) अमलतास जड़ चावल के जल के साथ पीस गलगण्ड पर लेप करे।
गलगण्ड नाशक है।

(४) बला ½ पाव — अतिबला ½ पाव — पीपर ½ पाव
गुडूची ,, ,, — देवदारु ,, ,, — नीमछाल ,, ,,
कुरैया छाल ½ पाव
इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

(क) तिलतैल ४ सेर — जल १६ सेर — लुगदी ३½ पाव
तैल पाक करे। तैल मात्र शेष रहते छान रखले। मात्रा—६ माशा। पिलाते है।
गलगण्ड नाशन में प्रसिद्ध है।

(५) प्रियंगु ½ पाव — मुलेठी ½ पाव — कूट ½ पाव — पीपर ½ पाव
चन्दन ,, ,, — नागरमोथा ½ पाव — नीम की छाल ,, ,,
जल के साथ इन्हे पीस लुगदी बनावे।

(क) तिल तैल ४ सेर — सिहोरा की छाल का रस १६ सेर — लुगदी ३½ पाव
तैलमात्र अवशेष तक पका छान ले।
मात्रा—६ माशा
अत्यन्त बढ़ा हुआ गलगण्ड भी नष्ट होते हैं।

(६) तुम्बी तैल — इसके नस्य से गलगण्ड आराम होता है।

(७) काञ्चनार गुग्गुलु गुटिका (भैषज्यरत्नावली) — ४ माशा
हरड़ क्वाथ — ½ छटाँक
प्रातः तथा सायंकाल

R/

(८) थायरायड गोली (Thyroid Tab) ¼–२ ग्रेन — १ गोली
२ मात्रा

R/

(९) लुगाल्स आयोडीन	(Lugols Iodine)	५ बूंद
मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१०) क्वीनीन हाइड्रो ब्रोमाइड	(Quinine Hydrobromide)	२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट वेलाडोना	(Ext Belladonna)	½ "
मैगसल्फ	(Mageulqh)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(११) पाट आयोडाइड	(Pot Iodide)	५ ग्रेन
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromatius)	५ बूंद
लाइकर थायरायड	(Liqur Thyroid)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

सूची—

आयोडीन (Iodine), इन्सुलीन (Insulin)

पेटेण्ट ओषधियां—

आयोडिसिन (Iodicin), थायराक्सीन गोली (Thyroxine Tapts), डायगाक्सीन गोली (Digoxin Tab), डिजिटेलिस गोली (Digtalis Tabts)।

अजीर्ण (Gastritis)

(१) पीपर १ तोला सोंठ २ तोला।

कपडछान चूर्ण कर बराबर गुड़ मिला रखे।

मात्रा—३ माशा।

अनुपान—जल। शूल नाशक है।

(२) नीबूरस १ सेर सेंधानमक ½ सेर पीपर १ पाव

पीपर को रस तथा नमक के साथ ४ दिन तक भिगोवे, फिर छाया में सुखा शीशी में बंद कर रखे। मात्रा—२-४ पीपर। अनुपान—गरम जल। २ मात्रा।

अजीर्ण नाशक तथा पाचक है।

(३) जायफल नीबू के रस में घिस पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
दस्त ला आध्मान तथा शूल नाशक है।

(४) हिग्वष्टक चूर्ण (शार्ङ्गधर संहिता) २ माशा
गरम जल के साथ। ३ मात्रा

(५) सोंठ चूर्ण ४ तोला, सेंधानमक (बुका) २ तोला, शुद्ध गंधक २ तोला
नीबू रस में खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१-२ गोली। अनुपान—गरम जल। ३ मात्रा

(६) सोहागा का लावा ८ माशा अजवाइन ३½ तोला
मरीच ४ तोला मुसब्बर ४ माशा
इनका कपड़ छान चूर्ण कर घीकुवार स्वरस में खरल कर चने प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—२ गोली। अनुपान—जल। ३ मात्रा।
दस्त साफ ला आध्मान, शूल तथा अजीर्ण नाशक है।

(७) करजीरी १ तोला राई १ तोला गुड़ १ तोला
इनको एकत्र मिला ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। ३ मात्रा
अजीर्ण नाशक तथा पाचक है।

(८) सनाय ४ माशा हरड़ छिलका ४ माशा मरीच ४ माशा
इन्हें जल के साथ खरल कर ३ माशा प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—२ गोली। अनुपान—जल। प्रातः काल
दस्त ला अजीर्ण नाशक है।

(९) रसोनादिवटी (वै० जी०) १-२ गोली
अनुपान—जल। ३, ४ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(१०) चित्रकादिवटी (बृ० नि० र०) २-४ गोली
अनुपान—जल। ३, ४ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(११) शंखवटी (शार्ङ्गधर संहिता) १ गोली
अनुपान—गरम जल। ३ मात्रा। अजीर्ण तथा शूलनाशक है।

(१२) अजीर्ण कण्टक रस (रसयोगसागर) १-३ रत्ती
अनुपान—नीबू रस वा गरम जल। ३ मात्रा
शीघ्र ही शूल तथा अजीर्ण नष्ट होता है।

(१३) सर्वतोभद्र रस (रसयोगसागर) २ गोली
अनुपान—जल। ३ मात्रा। सोपद्रव अजीर्ण नाशक है।

R/

(१४) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	१० "
पल्व रिहाई	(Pulv Rhei)	३ "
म्युसिलेज ट्रैगेकंथ	(Mucilage Tragacanth)	२० बूंद
आयल मैंथ पिप	(Oil Menth Pip)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। भोजन से पूर्व।

R/

(१५) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth carb)	१० "
पल्व रिहाई को०	(Pulv Rhei Co.)	३ "

दुग्ध के साथ। २ मात्रा। भोजन से पूर्व।

R/

(१६) सोडा बाईकार्ब	(Sada Bicarb)	१० ग्रेन
लाइकर बिस्मथ	(Liqr-bismuth)	३० बूंद
क्लोरोडीन	(Chloridnne)	१० "
आयल मैंथ पिप	(Oil menth pip)	५ "
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

नोट—नं० १४ से १६ तक की औषधियां तीव्र अजीर्ण में व्यवहृत होती हैं, जो शूल तथा वमन बन्द कर क्षुधा उत्पन्न करती हैं।

R/

(१७) सोडा बाई कार्ब	(Soda bicarb)	१० ग्रेन
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	१० "
मैग कार्ब	(Mag carb)	१० "
एक्वा मैंथ पिप	(Aqua menth pip)	१ औंस

३ मात्रा

R/

(१८) सोडा बाई कार्ब	(Soda bicarb)	१० ग्रेन
टि० रिहाई	(Tr rhei)	३० बूंद
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	१ ड्राम

जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । भोजन से पूर्व ।

नोट—नं० १७ तथा १८ की ओषधियाँ शूल शामक तथा क्षुधोत्पादक है ।

R/

(१९) सोडा बाई कार्ब	(Soda bicarb)	१० ग्रेन
टि बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूंद
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth carb)	१५ ग्रेन
टि नवस	(Tr. Nux)	५ बूंद
मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	१ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । भोजनोत्तर

R/

(२०) सिबेजाल	(Cibezol)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३, ४ मात्रा

R/

(२१) डायामार्फीन हाइड्रोक्लोराइड	(Diamorphine hydrochloride)	½ ग्रेन
टि० कार्ड को०	(Tr. card co)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा । शूलनाशक है ।

R/

(२२) लाइकर ओपियाई	(Liqur opii)	५ बूंद
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon aromaticus)	½ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा । तीव्र शूल नाशक है ।

R/

(२३) फेरी एट क्वीनीन साइट्रास	(Ferrei et quinine citras)	१० ग्रेन
लाइकर स्ट्रिक्नीन	(Liqur strychnine)	५ बूंद
एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid hydrochloric dil)	५ ,,
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१० ,,

जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। पाण्डुयुक्त उदर शूल नाशक है।

R/

(२४) कैल्शिय ब्रोमाइड	(Calcium bromde)	१५ ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral hydrate)	५ ,,
कोडीन सल्फ	(Codeine sulph)	½ ,,
मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा। योषापस्मार जन्य उदरशूल नाशक है।

R/

(२५) अमन कार्ब	(Ammon carb)	५ ग्रेन
स्पि० ईथरिश को०	(Spt. aetheris co)	२० बूंद
आयल मेंथ पिप	(Ool meinth pip)	५ ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा

R/

(२६) एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	१ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट वलेरियन	(Ext Valerian)	५ ,,
क्वीनीन सल्फ	(quinine sulph)	२ ,,

१ गोली। ३ मात्रा

नोट—नं० २५ तथा २६ की औषधियां वातरक्त (Gout) जन्य उदर शूल तथा अजीर्ण नाशक है।

R/

(२७) फेरीसल्फ	(Ferri sulph)	२ ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
एसिडसल्फ डिल	(Acid sulph dil)	४ बूंद
एक्वा मेंथ पिप	(Aqua menth pip)	१ औंस

२ मात्रा

R/

(२८) मार्फिया	(Morphia)	⅙ ग्रेन

त्वचागत सूची। रक्तवमन नाशक है।

R/

(२९) ओलिव आयल	(Olive Oil)	१ ड्राम
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth carb)	१० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।

भोजन से पूर्व।

R/

(३०) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१ भाग
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth carb)	३ ,,
मैगकार्ब	(Mag carb)	३ ,,
क्रीटा प्रीपयेरेटा	(Creta preparata)	३ ,,

मात्रा—१ चिम्मच। अनुपान—दूध। प्रत्येक दो घंटे पर।

R/

(३१) गैस्टोमैग	(Gastomag)	बूट कम्पनी

R/

(३२) स्टेलिडिन सूची	(Stellidin injection)	५ सी० सी०

नित्यप्रति। ३ सप्ताह तक।

नोट—नं० २७ से ३२ तक की ओषधियां आमाशयिक व्रण (Gastric ulcer) में व्यवहृत होती है।

ग्रंथि (Glands)

(१) सज्जी	१ भाग	शख चूर्ण	१ भाग
मूलीक्षार	,, ,,		

इन्हें एक जल से पीस ग्रंथि पर लेप करना। २ बार।
ग्रंथि नाशक है।

(२) दन्तीजड़	१ भाग	मदार दूध	१ भाग
चीताजड़	,, ,,	हीरा कसीस	,, ,,
भेलावा बीज	,, ,,	गुड़	,, ,,
थूहर दूध	,, ,,		

एकत्र जल से पीस ग्रंथि पर लेप करना। २, ३ बार।
ग्रंथिको पकाने तथा फोड़ने में सर्वोत्तम है।

(३) जामुन छाल	१ भाग	अर्जुन छाल	१ भाग
बेत की छाल	" "		

जल के साथ एकत्र पीस ग्रंथि पर २, ३ बार लेप करे। ग्रन्थि को बैठाती है।

(४) द्राक्षा रस	२ तोला	हरड़ चूर्ण	३ माशा

नित्य ३ मात्रा खिलावे

(५) हरड़ चूर्ण	३ माशा	ईख रस	½ छटाँक

३ मात्रा

R/

(६) पाट आयोडाइड	(Pot Iodide)	१५ ग्रेन
आयोडीन	(Iodine)	१२ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ "
जल	(Aqua)	१ औंस

ब्रश से अलसनिका में २ बार लगाते हैं, ग्रैवेयक (Cervical) ग्रन्थि के तीव्र शोथ को नष्ट करती है।

R/

(७) सिबेजाल	(Cibezol)	१ गोली
सोडाबाईकार्ब	(Sodabicarb)	५ ग्रेन

४ मात्रा। शोथ बैठ जाता है।

R/

(८) टि० आयोडीन	(Tr. Iodine)	½ औंस
इक्थ्याल	(Ichthyol)	२ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

मलहम बना रखे। ग्रन्थि पर मलते हैं। प्रातः तथा सांयकाल। ग्रन्थि बैठ जाती है।

R/

(९) पाट आयोडाइड	(Pot Iodidle)	४ ड्राम
अमन ब्रोमाइड	(Ammon Bromide)	२ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ "
गुलाबजल	(Aqua rose)	१ "
स्पि० रेक्टीफाइड	(Spt rectified)	१ औंस

ग्रन्थि पर बारम्बार लगाते है। यक्ष्मा की ग्रंथियों पर लाभप्रद है।

R/

(१०) सीरप फेरी आयोडाइड	(Syrup Ferri Jodide)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

पूयमेह (Gonorrhoea)

(१) गैरिक	६ माशा	शीतलचीनी	६ माशा
कपूर	६ रत्ती		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२ माशा। अनुपान—जल दिन में ६ मात्रा। मूत्र प्रणाली के दाह तथा पूय को शीघ्र ही बन्द करती है।

(२) शीतल चीनी	६ माशा	बड़ी लाची के बीज	६ माशा
फिटकिरी	४ ,,	खड़िया मिट्टी	६ ,,
श्वेत खैर	,, ,,	राल	,, ,,

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४ माशा। अनुपान—गोदुग्ध ३ मात्रा। दाह तथा पूय नाशक है।

(३) रेवन्द चीनी चूर्ण १ तोला अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल। मूत्र प्रणाली के व्रण का रोहण करती है।

(४) शीतल चीनी	२ तोला	कच्ची फिटकिरी	१ तोला
रेवन्द चीनी	२ ,,	छोटीलाची का दाना	,, ,,
कलमी शोरा	१½ ,,		

इनका कपड़ छान चूर्ण बना रखना। मात्रा—४ माशा। अनुपान—दुग्ध ६ मात्रा। दाह तथा मूत्र का रुक रुक आना नष्ट होता है।

(५) कलमीशोरा	१½ तोला	फिटकिरी	६ माशा
खड़िया मिट्टी	½ छटाँक	गेरु	४ ,,
शीतलचीनी	½ पाव	कपूर	३ ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण बना रखना। मात्रा—४ माशा। अनुपान—शीतल जल। ६ मात्रा। पूयमेह की अपूर्व औषधि है।

(६) चन्दन का तैल	२० बूंद	शीतलचीनी का तैल	१० बूंद
बिरोजे का तैल	,, ,,		

बतासे में मिला खिलाना। २ मात्रा। औषधि के साथ दुग्ध पिलावे। भयंकर वेदना तथा पूय नाशक है।

(७) श्वेतजीरा	१ तोला	शीतलचीनी	६ माशा
कलमीशोरा	६ माशा	खरबूजा बीज	१ तोला
रेवन्द चीनी	" "		

इन्हें जल के साथ पीस कपड़ छानकर ६ तोला मिश्री मिला रखले। थोड़ा थोड़ा २,४ मात्रा दें। ७ दिनों में पूय मेह नष्ट होता है।

(८) कुकरौंधा का रस	१ तोला	मिश्री	६ माशा

३ मात्रा

(९) कपूर ½ रत्ती अथवा शोरा ½ रत्ती

मूत्र प्रणाली में रखना। मूत्रत्यक्त होने लगता है।

(१०) सतबिरोजा	१ तोला	रेवन्द चीनी	१ तोला
श्वेतपीपरी खैर	" "	गिले अरमनी	" "
कलमीशोरा	" "	संगजराहत	" "
भूनी फिटकिरी	" "	गेरू	" "
श्वेतचन्दन बुरादा	" "	हजरलयहूद	" "

इनका कपड़ छान चूर्ण करे। इस चूर्ण में १ तोला प्रवाल भस्म तथा ११ तोला मिश्री मिला रखे। मात्रा—४ माशा। अनुपान—धारोष्ण दुग्ध। प्रातः तथा सायंकाल। पूयमेह के सम्पूर्ण उपद्रव दूर होते हैं।

(११) तूतिया	३ माशा	श्वेतखैर	१ तोला
फिटकिरी	६ "	जल	½ सेर

इनका क्वाथ करे १ पाव जल शेष रहते छान शीतल करे। मूत्रप्रणाली में इसकी पिचकारी देने से मूत्र प्रणाली के व्रण अच्छे होते है।

प्रातःकाल।

(१२) श्वेतखैर	१० माशा	भुना तूतिया	४ रत्ती
मुरदा शंख	" "	जल	१ सेर
रसौत	" "		

इनका क्वाथ करे ½ सेर जल रहते छान शीतल कर मूत्र प्रणाली में पिचकारी दे।

प्रातःकाल।

(१३) मेंहदी की हरी पत्ती	२ तोला	रसौत	२ तोला

सफेद सुरमा २ तोला जल १½ सेर
गेरु " "

जल के साथ पाक करे ३ पाव जल शेष रहते छान रखले।
इसकी पिचकारी से रोग निश्चित जाता है।
प्रातःकाल।

(१४) रेवन्द चीनी १ तोला अर्कसौंफ १½ तोला
एकत्र पीस नाभि के चारों लेप करे। मूत्रत्याग कराती है।

(१५) पलासफूल २ तोला जल १ पाव
फूल को उबाल वस्ति प्रदेश पर बांधना। २, ३ वार।
मूत्रत्याग कराती है।

(१६) पलासफूल २ तोला कलमी शोरा २ तोला
जल के साथ पीस वस्ति प्रदेश पर २, ३ वार बाँधना। मूत्रत्याग कराती है।

(१७) मूलीपत्र स्वरस ½ सेर शोरा ३ माशा
३, ४ मात्रा पिलावे। मूत्रत्याग करती है।

(१८) जायफल चूर्ण २ तोला जल १ पाव
क्वाथ बनावे ½ पाव जल रहते छान जननेन्द्रिय को डुबो रखना।
शोथ नाशक है।

(१९) हरड़ ३ माशा आंवला ३ माशा
बहेड़ा " " जल १ पाव
इनका क्वाथ बनावे। ½ पाव जल रहते छान जननेन्द्रिय को ½ घण्टे तक डुबोये रखे। ५, ७ दिनो में भयानक शोथ नष्ट होता है।

(२०) चन्दनासव (शा० सं०) २ तोला जल २ तोला
२ मात्रा। भोजनोपरान्त। दाह तथा पूय नाशक है।

R/

(२१) कोपेवा वालजम (Copaiba Balsam) १४ ग्रेन
मुसिलेज गम एकेसिया (Mucilage gum Acacia) २८ "
मैगसल्फ (Magsulph) १½ ड्राम
जल (Aqua) १ औंस
३ मात्रा। सोपद्रव पूयमेह नाशक है।

R/

(२२) एम एण्ड बी ६९३ (M & B 693) १ गोली

सोडा बाई कार्ब	(Soda bicarb)	५ ग्रेन

४ मात्रा। पूयमेह के जीवाणुओं को नष्ट करती है।

R/

(२३) पाट साइट्रास	(Pot. Citras)	१५ ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० "
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूंद
आयल सेण्टल	(Oil Santal)	१५ "
हेक्सामीन	(Hexamin)	१० ग्रेन
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscymus)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। दाहनाशक तथा मूत्रशोधक है।

R/

(२४) सेलाल	(Salol)	३ ग्रेन
कोपेबा	(Copaiba)	२ बूंद
आयल सेण्टल	(Oil Santal)	" "
आयल सिनेमोमी	(Oil Cinnamomi)	१ "

१ कैप्सुल। ६ मात्रा।

R/

(२५) प्रोटार्गाल	(Protargol)	१ से ४० ग्रेन
परिश्रुत जल	(Distilled water)	८ औंस

इससे मूत्राशय तथा मूत्रप्रणाली को प्रक्षालित करते हैं।

R/

(२६) आर्जिराल	(Argyrol)	१५–५० ग्रेन
परिश्रुत जल	(Distilled water)	१ औंस

मूत्राशय तथा मूत्रप्रणाली को प्रक्षालित करते हैं।

R/

(२७) पोटाश परमाग्नेट	(Potash Permangnate)	$\frac{१}{२}$–१ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

मूत्राशय तथा मूत्रप्रणाली को प्रक्षालित करते हैं।

R/

(२८) एक्रीफ्लेवीन	(Acriflavin)	$\frac{१}{१६}$–$\frac{१}{८}$ ग्रेन

नार्मल सेलाइन (Normal Saline) १ औंस

मूत्राशय तथा मूत्रप्रणाली को प्रक्षालित करते हैं।

सूची—

मिश्रित गोनोकोकस वैक्सीन (Gonococcus Vaccine Mixed), पेनिसिलिन (Penicillin), एक्रीफ्लेविन (Acriflavin), मरक्यूरोक्रोम (Mercurochrome)।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

पैनोक्रोम (Panochrome), सेप्टोसील एल्बम (Septosil Album), पायलोप्योरीन (Pyelopurin) सल्फायल (Sulfoil), गोनोकीन (Gonokin), गोनोसीराल (Gonoserol), मैग्निशियम सल्फेट कम्पाउण्ड (Magnesium Sulphate Compound), गोनोक्रीन (Gonocrin),

वातरक्त (Gout)

निम्बादि चूर्ण (शा० सं०)

(१) नीम छाल	१ तोला	सफेद जीरा	१ तोला
गिलोय	" "	कुटकी	" "
बड़ी हरड़	" "	सफेद खैर	" "
आँवला	" "	सेंधा नमक	" "
बावची	" "	जवाखार	" "
सोंठ	" "	हल्दी	" "
वायविडङ्ग	" "	दारुहल्दी	" "
चकवड़ बीज	" "	नागरमोथा	" "
छोटी पीपर	" "	देवदारु	" "
अजवाइन	" "	कूठ	" "
वच	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा–३, ४ माशा। अनुपान–गुडूची क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।

वातरक्त तथा रक्त व्याधियों की रामवाण ओषधि है।

(२) गुडूची सत	½ पाव	शुद्ध गुग्गुल	½ पाव

एकत्र मिला रखना। मात्रा—३ माशा। अनुपान—जल।

घोर वातरक्त नाशक है।

नोट—तेल, खटाई, हींग तथा लवण का त्याग करे।

योगसारामृत

(३) भैंसा गुग्गुल	२ सेर	गुडूची	१२८ तोल
त्रिफला	१ ,,	जल	३२ सेर

इनका क्वाथ करे जब १६ सेर जल शेष रहे तब छान कर इस क्वाथ को गाढ़ा होने तक पुनः औटावे।

(क) शतावर	½ सेर	गुडूची	½ सेर
गंगेरन	,, ,,	छोटी पीपर	,, ,,
विधारा	,, ,,	असगंध	,, ,,
कैंवाच	,, ,,	गोखरु	,, ,,

इनको कपड़छान चूर्ण कर ४½ सेर चीनी मिलावे। अब अवलेह चूर्ण को परस्पर मिलाते हैं, फिर इसमें मधु ६४ तोला, घी ३२ तोला, दालचीनी, लाची तथा तेजपत्ते का कपड़छान चूर्ण ४ तोला मिला रखते हैं।

मात्रा—२ माशा। अनुपान—दूध। २ मात्रा।

वातरक्त नाशक, बलवर्धक तथा श्वेत बालों को कृष्ण करने वाला है।

(४) फिटकिरी	४ तोला	राल	४ तोला
आँवलासार गंधक	,, ,,	रसकपूर	६ माशा

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। इस चूर्ण को १०१ बार धोये हुये गोघृत में मिला लेप करे। वेदना, कण्डू तथा स्राव नाशक है।

(५) गुरुच की लुगदी	४ सेर	जल	६४ सेर

क्वाथ करे। १६ सेर रहते छान ले।

गोघृत	४ सेर	क्वाथ	१६ सेर
गोदुग्ध	,, ,,	गुरुच की लुगदी	१ ,,

घी अवशेष तक पाक करे फिर छान एक पात्र में रखे। मात्रा—६ माशा से ३ तोला। अनुपान—दूध। २ मात्रा।

रक्त विकार तथा वातरक्त की सर्वोपरि ओषधि है।

(६) शारिवा	१ छटाँक	मुलेठी	१ छटाँक
राल	,, ,,	मजीठ	,, ,,

इनको एकत्र जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तैल	१¼ सेर	लुगदी	१ पाव
दूध	५ ,,	मोम	१ छटाँक

तैल मात्र के अवशेष तक पाक करे।

इसके मर्दन से वेदना शान्त होती है।

(७) सिंहनाद गुग्गुल (भै० र०) — ४ गोली
अनुपान—गुरुच स्वरस। ३ मात्रा।

(८) कैशोर गुग्गुल (भै० र०) — ४ गोली
अनुपान—गुरुच क्वाथ। २ मात्रा।

(९) वातरक्तान्तक रस (रसे० स०) — २ गोली
अनुपान—घी तथा नीम क्वाथ। २ मात्रा।

(१०) विश्वेश्वररस (रसे० सं०) — २-३ रत्ती
अनुपान—मधु। २ मात्रा।

(११) महातालेश्वर रस (रसयोग०) — २ रत्ती
अनुपान—गुरुच क्वाथ। ३ मात्रा।

(१२) गुडूच्यादि लौह — १ गोली — अनुपान—गुरुच क्वाथ।
३ मात्रा

(१३) बृहन्मजिष्ठादि क्वाथ (शा० सं०) — ½ छटाँक
२ मात्रा।

(१४) खदिरारिष्ट (शा० सं०) — २ तोला
जल — " "
२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(१५) अमृताद्य घृत — १ तोला — भोजन के साथ।

(१६) महारुद्र गुडूची तैल — मालिश करना।

R/

(१७) वाइनम कालचिकम	(Vinum Colchicum)	८ बूंद
पोट बाईकार्ब	(Pot. Bicarb)	२० ग्रेन
सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(१८) कालचिकम	(Colchicum)	$\frac{1}{60}$ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext. Nux Vomica)	½ "
एक्स्ट्रैक्ट हायोस्याइमस	(Ext Hyoscymus)	½ "

एक्स्ट्रैक्ट जेंशियन	(Ext Gentian)	१ ग्रेन
		१ गोली ३ मात्रा ।
R/		
(१९) टिं० काल्चिकम	(Tr. Colchicum)	१० बूंद
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१५ ग्रेन
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा ।
R/		
(२०) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१२ ग्रन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	५ ,,
टिं० जेंशियन को०	(Tr. Gentian Co)	½ ड्राम
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	३ बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा ।
R/		
(२१) पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	१२ ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soba Bicarb)	१५ ,,
लाइकर आर्सेनिक	(Liqr. Arsenic)	२ बूंद
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	५ ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा ।
R/		
(२२) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ग्रेन
टिं० काल्चिकम	(Tr. Colchicum)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा ।

R/

(२३) पाट. आयोडाइड	(Pot Iodide)	१० ग्रेन
पाट. साइट्रास	(Pot. Citras)	१५ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

नोट:—नं० २० से २३ तक की औषधियाँ चिरकालिक वातरक्त नाशक हैं।

R/

(२४) ब्ल्यू पिल्स	(Blue Pills)	१ गोली
एक्स्ट्रक्ट हायोसाइमस	(Ext. Hyoscyums)	१ ग्रेन

३ मात्रा। रात्रि में।

R/

(२५) बारबिटोन टेब्लेट	(Barbitone Tabts)	१ गोली

१ मात्रा। रात्रि में।

नोट:—नं० २४ तथा २५ की औषधियाँ वेदना को दूर कर निद्रा लाती हैं।

R/

(२६) आटोफेन	(Atophan)	१० ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२० "

३ मात्रा।

R/

(२७) ओलिव आयल	(Olive oil)	२ ड्राम
टि० एकोनाइट	(Tr Aconite)	२ "
टि० ओपियाई	(Tr. Opii)	२ "
लिनिमेण्ट सैपोनिस	(Lin Saponis)	२ "

वातरक्तज शोथ पर इसे मल रुई रख बाँधते हैं।

R/

(२८) सोडा कार्बोनेट	(Soda Carbonate)	२ ड्राम
लिनिमेण्ट बेलाडोना	(Lin Belladonna)	२ औंस
टि० ओपियाई	(Tr. Opii)	१½ "
जल	(Aqua)	८ "

वेदना के स्थान पर मलते हैं। वेदना नाशन में उत्तम है।

R/

(२६) पाट॰ आयोडाइड	(Pot. Iodide)	१० ग्रेन
लुगाल्स आयोडीन	(Lugol's Iodine)	८ बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। यह उपद्रवयुक्त चिरकालिक रोग नाशक है।

नोट—नं॰ २६ की औषधि वृक्क दोष वाले रोगी को नहीं देते।

सूची—

आटोफेन (Atophan) को कैल्शियम (Calcium) के साथ प्रविष्ट करते हैं।

पेटेण्ट औषधियाँ—

सिंकोफेन गोली (Cinchophan Tabts), अल्कलाइन कम्पाउण्ड गोली (Alkaline Compound Tabts), काल्चिकम कम्पाउण्ड गोली (Colchicum Compound Tabts), पोटेशियम बाई कार्बोनेट गोली (Potassium Bicarbonate Tabts), गाएकम गोली (Guaiacum Tabts), सोनलजीन (Sonalgin), यूरेनीन (Uranine), र्ह्यूमेलीन (Rheumalin)।

शिरःशूल (Headache)

(१) सीपभस्म	१ तोला	नौसादर	१ तोला

जल के साथ खूब महीन पीस नास देना। शिरःशूल नाशन में सर्वोत्तम है।

(२) मुलेठी	६ रत्ती	वत्सनाभ	१½ रत्ती

जल के साथ महीन पीस नास देना। शिरःशूल को निश्चय बन्द करती है।

षडबिन्दुतैल (ग॰ नि॰)

(३) एरण्ड जड़	२ तोला	सेंधानमक	२ तोला
तगर	" "	जलभांगरा	" "
सौंफ	" "	वायविडङ्ग	" "
जीवन्ती	" "	मुलेठी	" "
रास्ना	" "	सोंठ	" "

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल	½ सेर	भांगरा स्वरस	२ सेर
बकरीदूध	२ "	लुगदी	२० तोला

इनको एकत्र तैल मात्र शेष तक पकावे, पकने पर छान रख ले। नस्य देना या ३, ४ बूंद नाक में डालना। यह शिरोरोग, बालों के रोग तथा दन्त रोग नाशक है।

अपामार्ग तैल—

(४) अपामार्ग बीज	२ तोला	नकछिकनी का पत्ता	२ तोला
त्रिकटु	,, ,,	हींग	,, ,,
हल्दी	,, ,,	बायविडङ्ग	,, ,,

जल के साथ सिल पर पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल	१ सेर	गोमूत्र	४ सेर
कल्क	१२ तोला		

तैल मात्र शेष तक पका छान रखे। नस्य देते हैं। शिर के क्रिमी को नष्ट करता है।

(५) रस सिन्दूर	६ माशा	लोहभस्म	६ माशा
अभ्रक	,, ,,	शुद्ध गन्धक	,, ,,
ताम्रभस्म	,, ,,		

इन्हें थूहर के दूध में एक दिन खरल कर ३ रत्ती की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। सूर्यावर्त तथा अर्द्धावभेदक की उत्तम ओषधि है।

(६) कालाजीरा	६ माशा	नागरमोथा	६ माशा
सोंठ	,, ,,	मुलेठी	,, ,,
सौंफ	,, ,,	नीलकमल	,, ,,
असनपर्णी	,, ,,		

एकत्र जल में पीस शिर पर लेप करना। शिरःशूल तत्काल नष्ट होता है।

(७) कुमारी तैल

मर्दन करना तथा शिर पर रखना। शिरोरोग, वातरोग, बहरापन तथा कर्ण शूल नष्ट होता है।

(८) विडंगादि तैल

नस्य देना। कृमिजन्य शिरोरोग नष्ट होता है।

(९) शिरःशूलान्तक रस	२ गोली	बकरी दूध	१ पाव

प्रातः तथा सायंकाल। सम्पूर्णप्रकार का शिरःशूल नष्ट होता है।

(१०) घी में भुनी केशर	३ रत्ती	मिश्री	३ रत्ती

नस्य देना। शिरःशूल, शखक, अर्द्धावभेदक तथा अर्ध शूल नाशक है।

(११) गोघृत	१ तोला	सेंधानमक	१ तोला

अर्धावभेदक (अधकपारी) की सर्वोत्तम दवा है। ३ दिनमें समूल नष्ट होती।

सीरप आरेन्शाई (Syrup aurati) १ ड्राम
जल (Aqua) १ औंस
प्रत्येक ६ वें घण्टे ।

R/
(२२) ब्यूटिल क्लोरल हाइड्रेट (Butylchloral hydrate) ५ ग्रेन
२ मात्रा ।

नोट—नं० २० से २२ तक की औषधियाँ नाड़ी जन्य शिरःशूल नाशक है ।

R/
(२३) सोडा सैलिसिलास (Soda salicylas) १० ग्रेन
पाट ब्रोमाइड (Pot Bromide) २० "
मैगसल्फ (Mag sulph) १½ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म (Spt. chloroform) १० बूंद
जल (Aqua) १ औंस
३ मात्रा

R/
(२४) हाइड्रार्ज गोली (Hydrarg pill) ३ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट एलूज (Ext Aloes) १ "
एक्स्ट्रैक्ट हायोसाइमस (Ext. Hyoscymus) " "
रात्रि में सोते समय ।

नोट—नं० २३, २४ की औषधियाँ पित्तज शिरःशूल नाशक है ।

R/
(२५) फेनासीटीन (Phenacetin) ५ ग्रेन
एस्पिरिन (Aspirin) ७ "
कैफीन (Caffein) २ "
३, ४ मात्रा

R/
(२६) नाइट्रोग्लीसरीन (Nitroglycerin) १ बूंद
एक्स्ट्रैक्ट गरेनालिक्विड (Ext. guaraneliquid) १ ड्राम
सीरप आरेन्शाई (Syrup Aurantii) " "
जल (Aqua) १ औंस

R/
(२७) सोडा ग्लीसरोफास्फेट (Soda glycerophosphate) १० बूंद

मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। विषमज्वर जन्य तथा वारम्बार निश्चित समय पर होने वाले शिरःशूल कानाशक है।

R/

(१७) वेरोनाल	(Veronal)	५ ग्रेन

रात्रि में होने वाले शिरःशूल का नाशक है।

R/

(१८) अमन ब्रोमाइड	(Ammon. Bromide)	१० ग्रेन
फेनासीटीन	(Phenacetin)	" "
कैफिन साइट्रास	(Caffein Citras)	५ "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा। लगातार होने वाले शिरःशूल का नाशक है।

R/

(१९) नाइट्रोहाइड्रोक्लोरि एसिड डिल	(Nitrohydrochloric Acid Dil)	१० बूंद
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. nux vomica)	१० "
टिं० जेंशियन को०	(Tr. Gentian co.)	½ ड्राम
सीरप आरेंशाई	(Syrup Aurantii)	½ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। साधारण शिरःशूल नाशक है।

R/

(२०) अमन क्लोराइड	(Ammon chloride)	½ ड्राम
टिं० जेल्शिमाई	(Tr. gelsemii)	७ बूंद
सीरप ओरेन्शाई	(Syrup aurantii)	१ ड्राम
मैगसल्फ	(Magsulph)	१० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। प्रथम एक एक घन्टे पर फिर ३, ३ घण्टे पर।

R/

(२१) बेबरीन सल्फ	(Baberine sulph)	४ ग्रेन
एसिड सल्फ एरोमेट	(Acid sulph. aromat)	१५ बूंद

पाट. ग्लीसरोफास्फेट	(Pot. glycerophosphate)	१० बूंद
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	५ "
आयल मेंथ पिप	(Oil menth pip)	३ "
सीरप कोडीन	(Syrup Codeine)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

नोट—नं० २६, २७ की औषधियां रक्तचापाधिक्य (High Blood pressure) जन्य शिरःशूल नाशक है।

R/

(२८) क्लोरल	(Chloral)	१ ड्राम
कैम्फर	(Camphor)	१ "
क्लोरोफार्म	(Chloroform)	१ "
मार्फिया	(Morphia)	१ "

मस्तक पर मलते हैं।

R/

(२९) मेंथल	(Menthol)	१ ड्राम
सिनेमन आयल	(Cinnamon oil)	२० बूंद
क्लब्ज आयल	(Cloves oil)	" "
अल्कोहल	(Alcohol)	१ औंस

मस्तक पर लगाते हैं।

R/

(३०) कैल्शियम लैक्टेट (Calcium Lactate) १० ग्रेन

जल के साथ ३ मात्रा। आर्तस्राव के पश्चात् के शिरःशूल को नष्ट करती है।

R/

(३१) पाट आयोडाइड (Pot Iodide) १५ ग्रेन

ताप के साथ के शिरःशूल को नष्ट करती है।

R/

(३२) टिं० क्लोरोफार्म	(Tr Chloroform)	१० बूंद
टिं० एकोनाइट	(Tr Aconite)	१० "
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	१ औंस

मस्तक पर लगाते हैं।

पेटेण्ट औषधियाँ

सोनल्जिन (Sonelgin), कोडोपायरिन (Codopyrine) थियोगार्डनाल (Theogardenal), कैफिमिडान (Cafimidon), फेनास्कोडीन (Phenascodin) सिबाल्जिन (Cibalgin)।

हिक्का (Hiccough)

(१) रेणुका — १ तोला — पीपर — १ तोला
जल — १ पाव

इनका एकत्र क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छान ले। इसमें १ रत्ती हींग मिला रोगी को पिलावे। २ मात्रा। यह उत्तम औषध है।

(२) हरड़ — १ तोला — बहेड़ा — १ तोला
पीपर — ,, ,, — गेरु — ,, ,,
आँवला — ,, ,,

इनका एकत्र कपड़ छान चूर्ण करना।

चूर्ण — ३ माशा — घी — २ माशा
मूंगाभस्म — ४ रत्ती — मधु — ६ ,,
शंखभस्म — ,, ,,

प्रातः तथा सायंकाल।

(३) मयूरपंख भस्म — २ रत्ती — मधु — ६ माशा
२ मात्रा।

(४) छोटी पीपर — १ तोला — आँवला — १ तोला
मुनक्का — ,, ,, — बेर के बीज की गिरी — ,, ,,
मुलेठी — ,, ,, — वायविडङ्ग — ,, ,,
कूठ — ,, ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।

चूर्ण — ७ तोला — चीनी — १ तोला
लोहभस्म — ८ ,,

इनको एकत्र जल के साथ खरल कर ५ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। २ मात्रा। हिक्का की महौषध है।

हिक्काद्यघृत—

(५) चव्य	२ तोला	हरड़	२ तोला	पीपर	२ तोला
कुटकी	" "	गधतृण	" "	पळाश	" "
चीता की छाल	" "	कचूर	" "	कालानमक	" "
सेंधानमक	" "	बेलगिरि	" "	तालीसपत्र	" "
जीवन्ती	" "	वच	" "	भुई आंवला	" "

इनको जल के साथ पीस लुगदी बना ६ माशे हींग मिलावे।

गोघृत ४ सेर गोदुग्ध ८ सेर जल १६ सेर लुगदी ३ छटांक २ माशा।

इनको घी मात्र शेष रहने तक पका छान ले।

मात्रा—६ माशे से २ तोला। प्रातः, सायंकाल।

(६) सोंठ चूर्ण १ तोला गुड़ ½ तोला

एकत्र मिला सुंघावे। हिक्का अवश्य बंद होता है।

(७) अनार की कली १ तोला तुलसी का पत्ता १ तोला दूब १ तोला
इन्हें एकत्र जल के साथ पीस कपडे में बांध इस का रस ३, ४ बूंद की मात्रा में नाक में डाले। रोग शीघ्र ही अवश्य बन्द होता है।

R/

(८) लाइकर पोटाश	(Liqr Potash)	१० बूंद
आयल सक्सिनि	(Oil Succini)	६ "
टि० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co)	१० "
मुसिलेज एकेशिया	(Mucilage Acacia)	१ ड्राम
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ "
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	३ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा। प्रत्येक २ घण्टे पर।

R/

(९) स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	३० बूंद
आयल टेरिबिंथ	(Oil Terebinth)	१० "
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	३ "
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा

R/

(१०) स्पि० क्लोरोफार्म	(Sp. Chloroform)	१५ बूंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
टिं० कार्ड को०	(Tr. Card Co)	२० बूंद
एक्वा मेंथ पिप	(Agua Menth Pip)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(११) आयल कैजुपुट	(Oil cajuput)	३ बूंद
टिं० ओपियाई	(Tr. opii)	५ "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१२) नाइट्रोग्लीसरीन टेब्लेट	(Nitroglycerin tabts)	$\frac{१}{१००}$ ग्रेन

१ गोली। जल के साथ। ३ मात्रा।

R/

(१३) स्पि० ग्लीसरील नाइट्रेट	(Spt. glyceryl nitrate)	१ बूंद
		४ मात्रा।

R/

(१४) क्लोरल हाइड्रेट	(Chloralhydrate)	१० ग्रेन
पाट० ब्रोमाइड	(Pot bromide)	१५ "
टिं० हायोसाइमस	(Tr. hyoscymus)	१५ बूंद
एक्स्ट्रैक्ट वलेरियन	(Ext. valerian)	२ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा। योषापस्मार की हिक्का को नष्ट करती है।

R/

(१५) सोडा बाई कार्ब	(Sodabicarb)	१० ग्रेन
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Ammon Aromat.)	२० बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१५ "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
टिं० कार्ड को०	(Tr. card co.)	२० बूंद
एक्वा मेंथ पिप	(Aqua menth pip)	१ औंस

३ मात्रा। अजीर्णजन्य हिक्का नाशक है।

R/

(१६) मस्क गोली (Musk Pill) ५–१० ग्रेन

हिमजल या लाइकर आइस (Liquorice) के साथ । ३, ४ मात्रा

R/

(१७) एमिल नाइट्राइट (Amyl nitrite)

सुंघाते हैं ।

(१८) आमाशय पर घी लगा राई प्लास्टर लगाते हैं ।

सूची—

मार्फीन (Morphin), पिलोकार्पीन (Pilocarpin), लोबेलीन (Lobelin), कैम्फर इन आयल (Camphor in Oil)

पेटेण्ट औषधियाँ

गार्डनाल (Gardenal), प्रोपीवान (Propivan)

योषापस्मार (Hysteria)

(१) प्याज का स्वरस सुंघाते हैं । यह मूर्च्छानाशक है ।

(२) द्राक्षासव २ तोला जल २ तोला

३ मात्रा । भोजनोपरान्त

(३) कस्तूरी २ रत्ती मधु ३ माशा

प्रातः तथा सायंकाल

नोट—नं० २, ३ की औषधियाँ दौरे को रोकती हैं ।

(४) मुसब्बर १ तोला हींग ६ रत्ती

जल के साथ पीस ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे ।

मात्रा—१–२ गोली अनुपान—जल । प्रत्येक शाम को ।

यह साफ दस्त ला दौरे को कम करती है ।

(५) वातकुलान्तकरस (रसेन्द्रसार संग्रह) २ रत्ती

दशमूलादि क्वाथ ½ छटाँक

२ मात्रा ।

R/

(६) टिं० वलेरियन	(Tr valerin)	३० बूंद
टिं० कैनेबिस इण्डिका	(Tr Cannabis Indica)	५ ,,
टिं० सुम्बुल	(Tr Sumbul)	३० ,,
टिं० मोस्की	(Tr. Moschi)	२५ ,,
एक्वा क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

३, ४ मात्रा

R/

(७) टिं० वलेरियन अमोनिएटा	(Tr. valerian ammo.)	½ ड्राम
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. ammon aromat.)	२० बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१५ ,,
टिं० हयोसाइमस	(Tr Hyoscymus)	१० ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। आक्रमण नाशक है।

R/

(८) टिं० वलेरियन अमोनिएटा	(Tr. Valerian Ammo)	½ ड्राम
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूंद
ब्रोमाइड स्ट्रोन्साई	(Bromide Strontii)	१५ ग्रेन
सीरप ग्लीसरोफास्फ को०	(Syrup glycerophosph co,)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२, ३ मात्रा। आक्रमण काल में।

R/

(९) मोस्की	(Moschi)	२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट वलेरियन	(Ext. valerian)	१ ,,
एक्स्ट्रैक्ट ओपियाई	(Ext. Opii)	¼ ,,

१ गोली। २ मात्रा

R/

(१०) एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	१४ ग्रेन
एसिड कैम्फर	(Acid camphor)	१ ,,
वलेरियनेट जिंक	(Valerianate zinc)	२ ,,
कैनेबिस इण्डिका	(Cannabis indica)	¼ ,,

१ गोली। २ मात्रा

R/

(११) जिंक वलेरियन	(Zinc valerian)	५ ग्रेन
आसाफेटिडा पिल	(Asafetida pill)	३ ,,
		३ मात्रा

R/

(१२) एक्स्ट्रैक्ट हायोसाइमस	(Ext. Hyoscymus)	२ ग्रेन
जिंक वलेरियन	(Zinc Valerian)	२ ,,

१ गोली। २ मात्रा। आक्रमण को कम करती है।

R/

(१३) कैल्शिब्रूनेट गोली	(Calcibronate tabts)	१ गोली
		३ मात्रा

सूची—

कैल्शिब्रूनेट (Calcibronate), गार्डनाल सोडियम (Gardenal sodium), लुमिनाल सोडियम (Luminal sodium), वलेरियन (Valerian)।

पेटेण्ट ओषधियाँ

एलिक्जिर ब्रोमोवाल (Elixir bromoval), कैल्शिमा (Calcima), कैल्शिबियान (Calcibion), लुपाट (Lupot), सिपाफेरान (Cipaferron), गार्डनाल (Gardenal), प्लैनेडालिन (Planadalin), सोनेरिल (Sonaryl), ब्रोमोवलेरियनेट (Bromovalerianate), ब्रोमोपीन (Bromopin)।

रक्तपित्त (Haematemesis and haemoptysis)

(१) अडूसे का पत्ता	६ माशा	मुनक्का	६ माशा
हरड़	,, ,,	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। जब ½ छटाँक जल शेष रहे तब छान शीतल कर मधु तथा मिश्री मिला पिलाना। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) दशमूल	६ माशा	मुनक्का	५ दाना
शतावर	१ तोला	दूध	½ सेर
छोटीपीपर	२ दाना	जल	,, ,,

इन्हें एकत्र पकाकर दूध शेष तक औटा, छान रखे। २, ३ मात्रा। रक्तष्ठीवन की अचूक औषध है।

(३) लाक्षा ६ माशा मधु ६ माशा
घी ,, ,,
प्रातः तथा सायंकाल। रक्त वमन की सर्वोत्तम औषधि है।

(४) अडूसे के जड़ की छाल ६ माशा किशमिश ६ माशा
हरड़ ,, ,, जल १ पाव
इनका क्वाथ बनावे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर मधु तथा मिश्री मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। श्वास, कास तथा रक्तष्ठीवन को बन्द करती है।

(५) सुगंधवाला १ तोला गुरुच १ तोला
नीलकमल ,, ,, मुलेठी ,, ,,
खस की जड़ ,, ,, नागरमोथा ,, ,,
अडूसा ,, ,, लालचन्दन ,, ,,
पुरानी धनियाँ ,,
इनको जौ कुट कर एकत्र मिला रखे। इसमें से २ तोला चूर्ण १ पाव जल में मिला क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर मधु, मिश्री मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल रक्त वमन तथा रक्तष्ठीवन नाशक है।

(६) छोटीलाची १ तोला दालचीनी १ तोला
तेजपात ,, ,, छोटी पीपल ४ तोला
मुलेठ ४ ,,
इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
पिण्डखजूर ४ तोला मुनक्का ४ तोला
चीनी ,, ,,
इन द्रव्यों को कूट कर चूर्ण में मिलावे फिर इसे मधु के साथ ३-३ माशा की गोली बनावे। मात्रा—२ गोली। ३ मात्रा। रक्त वमन को नष्ट करती है।

(७) मुक्ता शुक्तिभस्म १ तोला धनियां चूर्ण १ तोला
प्रवाल भस्म ,, ,, मुलेठी चूर्ण ,, ,,
स्वर्ण गैरिक भस्म ,, ,, मिश्री ,, ,,
इन्हें एकत्र मिश्रित कर रखे। मात्रा—३ माशा। अनुपान—५ तोला अडूसा स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल। रक्तवमन तथा रक्तमेह नाशक है।

(८) शतावर स्वरस	४ सेर	भूमि कुष्माण्ड स्वरस	४ सेर
बला स्वरस	,, ,,	ईख रस	,, ,,
द्राक्षा स्वरस	,, ,,	आँवला स्वरस	,, ,,
घी	,, ,,		

इन्हें एकत्र पकाकर घी अवशेष तक पाक करे। मात्रा—½-१ तोला। प्रातः तथा सायंकाल।

रक्तपित्त नष्ट कर बल, शुक्र तथा ओज वर्धक है।

(९) महादूर्वाद्यघृत — १ तोला

प्रातः तथा सायकाल

(१०) वासाघृत ½ से १ तोला — मधु १½ माशासे ½ तोला

प्रातः तथा सायंकाल। रक्तपित्त की सर्वोपरि औषध है।

(११) रक्तपितान्तक लौह — १ माशा

अनुपान—चीनी तथा मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(१२) अभ्रकभस्म	२ रत्ती	लाची चूर्ण	½ माशा
मिश्री	१ तोला		

प्रातः तथा सायंकाल।

(१३) वंशलोचन	½ माशा	मिश्री	१ तोला
मधु	½ तोला		

प्रातः तथा सायंकाल। रक्तष्ठीवन नाशन में उत्तम है।

(१४) चन्द्रकला रस (योगरत्नाकर) — २ गोली

अनुपान—जल। २ मात्रा। सोपद्रव रक्तपित्त नाशक है।

(१५) उशीरासव (शार्ङ्गधर सहिता) — २ तोला
जल — ,, ,,

भोजनोपरान्त।

R/

(१६) प्लम्बाई एसीटेट	(Plumbi Acetate)	४ ग्रेन
एसिटिक एसिड डिल	(Acetic Acid dil)	६ बूंद
लाइकर मार्फीन एसीटेट	(Liqr Morph. Acetate)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

प्रत्येक २ घण्टे पर

R/

(१७) कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium gluonate) २० ग्रेन

एक्स्ट्रैक्ट अर्गट लिक्विड	(Ext Ergot. Liquid)	१५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा

R/

(१८) आयल टेरिबिंथ	(Oil Terebinth)	३० बूंद
एक्स्ट्रैक्ट डिजिटेलिस लिक्विड	(Ext. Digitalis Liquid)	१० ,,
मुसिलेज एकेसिया	(Mucilage Acacia)	१ ड्राम
एका मैंथ पिप	(Aqua Menth pip)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१९) लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट हाइड्रेसिस	(Liq. Ext. Hydrasis)	१५ बूंद
टिं० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	२ ,,
कोडीन	(Codeine)	१ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(२०) कैल्शियम लैक्टेट गोली	(Cal. Lactate tab)	१ गोली
विटामिन सी गोली	(Vita C Tab)	१ ,,
		३ मात्रा

R/

(२१) अर्गोटीन	(Ergotin)	½ ड्राम
मार्फीन हाइड्रोक्लोर	(Morphine Hybrochlor)	१½ ,,
		१० गोली

मात्रा—१ गोली। ३ मात्रा

R/

(२२) पल्व इपीकाक को०	(Pulv. Ipecac co.)	४ ग्रेन
हाइड्रार्ज कम क्रीटा	(Hydiarg cum creta)	१ ,,

जब बराबर रक्त निकलता हो तो प्रत्येक ३, ३ घण्टे पर दें।

सूची—

मार्फीन (Morphin), मार्फीन एट एट्रोपीन (Morphin et Atropin), कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium gluconate), कैल्शियम ग्लुकोनेट विथ रिडाक्सन

(Calcium gluconate with Redoxon), कांगोरेड (Congored), कैल्शियम क्लोराइड (Calcium Chloride) विटामिन के (vitamin k)।

पेटेण्ट औषधियाँ

कैल्शियम कार्बोनेट कम्पाउण्ड गोली (Calcium Carbonate Compound-tabts), मार्फीन गोली (Morphine Tabts)।

नासारक्तस्राव (Epistaxis)

R/

(१) टिंचर बेंजायन को० (Tr Benzoin Co.)
रुई भिगो नाशा में रखना।

(२) ग्रीवा पर वर्फ रखना।

(३) कांगोरेड सूची (Congored Inj) शिरागत।

(४) कैल्शियम का व्यवहार करना।

(५) एड्रेनालिन हाइड्रो क्लोरायड में रुई तर करके नासिका के भीतर रखना

औषधिगंध ज्वर (Hay fever)

(१) सर्पगन्धा क्वाथ प्रातः तथा सायंकाल

(२) अष्टगंध की धूनी देना

R/

(३) एड्रेनलीन क्लोराइड	(Adrenalin Chloride)	½ ड्राम
नार्मल सेलाइन	(Normal Saline)	१ ग्रेन
फेनालिस	(Phenolis)	१ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ ड्राम
गुलाब जल	(Rose water)	२ औंस

नाक और गले में लगाना
प्रत्येक २, २ तथा ३, ३ घण्टे पर।

R/

(४) मेंथल	(Menthol)	१ ड्राम
कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	½ ,,
जिंक आक्साइड	(Zinc oxide)	१ ,,
वेसलीन लिक्विड	(Vaselin Liq)	२ औंस

नासिका में लगाना। ३, ४ बार

R/

(५) बोरक्स (Borax) १० ग्रेन
कपूर जल (Camphor water) १ औंस
नेत्र में डालना।
नेत्र क्षोभ नाशन में उत्तम है।

R/

(६) एलार्जिन (Alargine) २ गोली
३, ४ मात्रा

सूची—

पोलैक्सीन (Polacoine), एफेड्रीन हाइड्रोक्लोराइड (Ephedrine Aydrochloride) ½ ग्रेन।

पेटेण्ट ओषधियाँ

ब्लाड पिल (Blaud pill), ईस्टन सीरप (Easton syrup), आर्सनिक गोली (Arsenic Tabts) एण्टी स्टिन (Antistire) बेनाड्रिल (Benedryl)।

यकृत की व्याधियाँ (Hepatic Disterbance)

(१) नौसादर २ रत्ती लौहभस्म १ रत्ती
पीपर क्वाथ के साथ। २ मात्रा। यकृत शोथ नाशक है।

(२) समुद्रफेन चूर्ण ४ रत्ती सोंचर नमकचूर्ण ४ रत्ती
रोहिड़ा जड़ का क्वाथ २ तोला २ मात्रा।
यकृत वृद्धि को बंद करती है।

(३) हल्दी चूर्ण २ रत्ती सेंधानमक चूर्ण २ रत्ती घीकुवाररस ४ रत्ती
प्रातः तथा सायंकाल। यकृत वृद्धि को बंद करती है।

(४) बोल २ तोला लाक्षा २ तोला नागकेशर १ तोला सोंठ १ तोला
एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—१ माशा
अनुपान मधु २ मात्रा
यकृत शोथ नाशक है।

(५) राई जल के साथ पीस यकृत् प्रदेश पर लेप।
यकृत शोथ नाशक है।

(६) कौड़ी भस्म २ रत्ती मण्डूर भस्म १ रत्ती पीपरचूर्ण ४ रत्ती मधु ४ माशा
२ मात्रा
यकृत शोथ नाशक है।

R/

(७) अमन क्लोराइड	(Ammon chloride)	१० ग्रेन
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. nux vomica)	२ बूंद
टिं० पोडोफिलिन	(Tr Podophyllin)	६ ,,
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० ,,
सोडा सल्फ	(Soda sulph)	३० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

R/

(८) कोनीन सल्फ	(Qinine sulph)	३ ग्रेन
एसिड सल्फडिल	(Acid sulph dil)	६ बूंद
लाइकर आर्सेनिकलिस हाइड्रो०	(Liqr arsenicalis hydro)	२ ,,
फेरीसल्फ	(Ferri Sulph)	३० ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag sulph)	$1\frac{1}{2}$ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा । विषमज्वर जन्य यकृतवृद्धि को नष्ट करती है ।

R/

(९) इमेटीन हाइड्रोक्लोर (Emetine hydrochlor)

सूची द्वारा । अतिसारजन्य यकृतशोथ तथा विद्रधि की अपूर्व औषधि है ।

सूची—

लिवर एक्स्ट्रैक्ट (Lvier extract), हीपेटाक्स (Hepatox), हीपेराल (Heparol), क्रीनहीपार (Crenhepar), इरीथ्रोजेन (Erythrogen) ।

सामान्य ज्वर (Unknown fever)

(१) सोंठ	$\frac{1}{2}$ तोला	छोटी कटेरी	$\frac{1}{2}$ तोला
देवदारु	,, ,,	रोहिष तृण	,, ,,
बड़ी कटेरी	,, ,,	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे । एक छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । २ मात्रा सम्पूर्ण ज्वरों को पचाता है ।

नोट—रोहिष तृण के अभाव में खस वा धनियाँ लेनी चाहिये ।

(२) धनियाँ	$\frac{1}{2}$ तोला	पद्माख	$\frac{1}{2}$ तोला
निम्बछाल	,, ,,	लालचन्दन	,, ,,
गुरुच	,, ,,	जल	,, ,,

इनका क्वाथ करे । जब जल १ छटाँक शेष रहे तब छान कर पिलावे । प्रातः तथा सायंकाल ।

यह दाह, प्यास, वमन तथा अरुचि को नष्ट कर ज्वर हरता है ।

(३) अमलतास का गूदा	१ तोला	कुटकी	१ तोला
नागर मोथा	,, ,,	पीपरामूल	,, ,,
हरड़	,, ,,		

इनको एकत्र जौ कुट करे । फिर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । २ मात्रा । दस्त साफ लाता है, तथा दीपन-पाचन है । सभी ज्वरों में लाभदायक है ।

(४) हरड़	१ तोला	आँवला	१ तोला
अमलतास का गूदा	,, ,,	निशोथ	,, ,,
कुटकी	,, ,,		

इनको एकत्र जौ कुट करे । फिर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । प्रातः तथा सायकाल । आमयुक्त जीर्णज्वर में पाचन है ।

(५) सोंठ	१ तोला	धमासा	१ तोला
खस	,, ,,	नागरमोथा	,, ,,
कुटकी	,, ,,		

इनको एकत्र कपड़ छान चूर्ण करे। मात्रा—३-६ माशा । अनुपान—गरम जल । ३ मात्रा । ज्वर नाशक तथा अग्निदीपक है ।

(६) आँवला	७½ माशा	छोटी हरड	७½ माशा
चीनी	,, ,,	पीपर	,, ,,
जल	१ पाव		

इनका क्वाथ करे । ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । २ मात्रा सम्पूर्ण प्रकार के ज्वर को नष्ट करती है ।

निम्बादि चूर्ण (शार्ङ्गधरसंहिता)

(७) निम्बपत्र	१० भाग	सेंधानमक	१ भाग
त्रिफला	३ ,,	काला नमक	,, ,,
त्रिकटु	,, ,,	सोंचर नमक	,, ,,
अजवाइन	२ ,,	जवाखार	२ ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण बना रखे। मात्रा-३-६ माशा । अनुपान-गरमजल प्रातः तथा सांयकाल ।

सम्पूर्ण प्रकार के ज्वरों को, विशेषतः विषमज्वर नाशक है ।

R/

(७) अमन क्लोराइड	(Ammon chloride)	१० ग्रेन
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. nux vomica)	२ बूंद
टिं० पोडोफिलिन	(Tr Podophyllin)	६ ,,
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० ,,
सोडा सल्फ	(Soda sulph)	३० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(८) कोनीन सल्फ	(Qinine sulph)	३ ग्रेन
एसिड सल्फडिल	(Acid sulph dil)	६ बूंद
लाइकर आर्सेनिकलिस हाइड्रो०	(Liqr arsenicalis hydro)	२ ,,
फेरीसल्फ	(Ferri Sulph)	३० ग्रेन
मॅगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। विषमज्वर जन्य यकृतवृद्धि को नष्ट करती है।

R/

(९) इमेटीन हाइड्रोक्लोर (Emetine hydrochlor)

सूची द्वारा। अतिसारजन्य यकृतशोथ तथा विद्रधि की अपूर्व औषधि है।

सूची—

लिवर एक्स्ट्रैक्ट (Lvier extract), हीपेटाक्स (Hepatox), हीपेराल (Heparol), क्रीनहीपार (Crenhepar), इरीथ्रोजेन (Erythrogen)।

सामान्य ज्वर (Unknown fever)

(१) सोंठ	½ तोला	छोटी कटेरी	½ तोला
देवदारु	,, ,,	रोहिष तृण	,, ,,
बड़ी कटेरी	,, ,,	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। एक छटॉक जल शेष रहते छान कर पिलावे। २ मात्रा सम्पूर्ण ज्वरों को पचाता है।

नोट—रोहिष तृण के अभाव में खस वा धनियाँ लेनी चाहिये।

(२) धनियाँ	½ तोला	पद्माख	½ तोला
निम्बछाल	,, ,,	लालचन्दन	,, ,,
गुरुच	,, ,,	जल	,, ,,

इनका क्वाथ करे । जब जल १ छटाँक शेष रहे तब छान कर पिलावे ।
प्रातः तथा सायकाल ।
यह दाह, प्यास, वमन तथा अरुचि को नष्ट कर ज्वर हरता है ।

(३) अमलतास का गूदा	१ तोला	कुटकी	१ तोला
नागर मोथा	,, ,,	पीपरामूल	,, ,,
हरड़	,, ,,		

इनको एकत्र जौ कुट करे । फिर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । २ मात्रा । दस्त साफ लाता है, तथा दीपन-पाचन है । सभी ज्वरों में लाभदायक है ।

(४) हरड़	१ तोला	आँवला	१ तोला
अमलतास का गूदा	,, ,,	निशोथ	,, ,,
कुटकी	,, ,,		

इनको एकत्र जौ कुट करे । फिर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । प्रातः तथा सायकाल ।
आमयुक्त जीर्णज्वर में पाचन है ।

(५) सोंठ	१ तोला	धमासा	१ तोला
खस	,, ,,	नागरमोथा	,, ,,
कुटकी	,, ,,		

इनको एकत्र कपड़ छान चूर्ण करे । मात्रा—२–६ माशा । अनुपान—गरम जल । ३ मात्रा । ज्वर नाशक तथा अग्निदीपक है ।

(६) आँवला	७½ माशा	छोटी हरड़	७½ माशा
चीनी	,, ,,	पीपर	,, ,,
जल	१ पाव		

इनका क्वाथ करे । ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । २ मात्रा
सम्पूर्ण प्रकार के ज्वर को नष्ट करती है ।

निम्बादि चूर्ण (शार्ङ्गधरसंहिता)

(७) निम्बपत्र	१० भाग	सेंधानमक	१ भाग
त्रिफला	३ ,,	काला नमक	,, ,,
त्रिकटु	,, ,,	सोंचर नमक	,, ,,
अजवाइन	४ ,,	जवाखार	२ ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण बना रखे । मात्रा-२–६ माशा । अनुपान-गरमजल
प्रातः तथा सांयकाल ।
सम्पूर्ण प्रकार के ज्वरों को, विशेषतः विषमज्वर नाशक है ।

(८) गुरुच	२ तोला	लवंग	२ तोला
पीपर	,, ,,	सोंठ	,, ,,
पीपरामूल	,, ,,	कुटकी	,, ,,
बिल्वछाल	,, ,,	चिरायता	,, ,,
हरड़	,, ,,	श्वेत चन्दन	,, ,,

इनका एकत्र कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३–६ माशा। अनुमान—गरम जल। प्रातः तथा सांयकाल

(९) हरड़	८ तोला	गुरुच	४ तोला
निशोथ	,, ,,	शतावर	,, ,,
त्रिधारा	,, ,,	गोखरु	,, ,,
विधारा	,, ,,	वायविडंग	,, ,,
पीपर	४ ,,	सहदेवी	,, ,,
सोंठ	,, ,,		

इनका एकत्र कपड़ छान चूर्ण बना, फिर मधु मिला ४ रत्ती की गोली बनावे। मात्रा—२ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सांयकाल खाँसी, श्वास तथा कोष्ठबद्धता युक्त ज्वर नाशक है।

(१०) सुदर्शन चूर्ण (शा० सं०) ३–४ माशा। अनुपान शीतल जल। प्रातः तथा सांयकाल। सोपद्रव सभी प्रकार के ज्वर को निस्संदेह दूर करती है।

ज्वरधूमकेतु रस (र० सा० सं०)

(११) शुद्ध पारा	१ तोला	शुद्ध सिंगरफ	१ तोला
शुद्ध समुद्रफेन	,, ,,	शुद्ध गन्धक	,, ,,

इनको एकत्र आर्दी स्वरस से एक पहर खरल कर ३–३ रत्ती प्रमाण की गोलियां बनावे। मात्रा—½ से १ गोली। अनुपान—आर्दी स्वरस। प्रातः तथा सांयकाल। नवीन ज्वर नाशन में श्रेष्ठ है।

ज्वरघ्नीरस

(१२) शुद्ध पारद	१ भाग	शुद्ध गन्धक	२ भाग

इनकी कज्जली बनावे।

कज्जली	२ भाग	शुद्ध सिंगरफ	३ भाग
शुद्ध जयपाल बीज	४ भाग		

इन्हें जयपालके जड़ के रस में खरल कर सरसों बराबर गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल और चीनी। प्रातः काल। नवीन ज्वर एक दिन में बन्द करती है।

हुताशन रस

(१३) कौड़ी भस्म	३ तोला	शुद्ध विष	६ तोला
मरीच	,, ,,	शुद्ध सोहागा	४ ,,
सोंठ	५ ,,		

एकत्र खरल कर कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—जल। २ मात्रा।

सर्वज्वरहरवटी

(१४) शुद्ध पारद	१ भाग	शुद्ध गन्धक	भाग २

इनकी कज्जली करें।

कज्जली	२ भाग	शुद्ध वत्सनाभ	३ भाग
शुद्ध जयपाल बीज	५ भाग	शुद्ध भड़भाड़ की जड़	४ ,,

नीबू रस में सबको खरल कर मरीच प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान-आदी स्वरस। प्रातः तथा सांयकाल सर्वज्वर नाशक है।

ज्वरघ्नवटी

(१५) शुद्ध जयपाल बीज	४ माशा	गेरू	४ माशा
कुटकी	८ ,,		

इन्हें घीकुवार के रस में खरल कर मटर प्रमाण की गोली बनावे, मात्रा—१ गोली अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल। जीर्ण ज्वर नाशक है।

महाज्वरांकुशरस (र० यो० सा०)

(१६) शुद्ध पारद -	३ माशा	शुद्ध धतूर बीज	६ माशा
शुद्ध आंवलासार गन्धक	,, ,,	चोक	३६ ,,
शुद्ध वत्सनाभ विष	,, ,,		

प्रथम पारद तथा गन्धक की कज्जली करे फिर इसमें शेष ओषधियों का कपड़ छान चूर्ण मिला खरल कर एक कर रखे मात्रा—१ रत्ती अनुपान—नीबू या आदी स्वरस २ मात्रा सर्व ज्वर नाशन में श्रेष्ठ है।

R/

(१७) फेनासिटीन	(Phenacitin)	५ ग्रेन
सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ,,
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Ammon Aromat)	१५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० ,,
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१ ड्राम

जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा

वेदनायुक्त ज्वर नाशक है।

R/

(१८) टि० एकोनाइट	(Tr. Aconite)	५ बूंद
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	१/२ ड्राम
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	१ ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	१ १/२ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२, ४ मात्रा

वेदनायुक्त ज्वर नाशक है।

R/

(१९) क्वीनीन सल्फ	(Quinine sulph)	३ ग्रेन
एसिड सल्फडिल	(Acid sulphdil)	१ बूंद
टि० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	१० ,,
मैगसल्फ	(Magsulph)	१ १/२ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोत्तर।

वेदनायुक्त ज्वर नाशक है।

R/

(२०) पाट० साइट्रास	(Pot Citras)	१५ ग्रेन
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	३० बूंद
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr Ammon Acetas)	१ ड्राम
मैगसल्फ	(Magsulph)	१ १/२ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

स्वेदल तथा ज्वर नाशक है।

R/

(२१) एमोनाल गोली	(Ammonaltab) १० ग्रेन	१ गोली

२ मात्रा। ज्वरनाशक है।

R/

(२२) स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोर	(Strychnine Hydrochlor)	१/६० — १/१५

त्वचागत। हृदय को सम्भालने के हेतु।

(२३) बोरैक्स ग्लीसरीन (Borax Glycerine) १ औंस
टि० माई (Tr Myrrhae) २ ड्राम
जल (Aqua) ८ औंस
मुंह में फाहा से लगाते हैं। शुष्कता निवारणार्थ।

वातज्वर

(१) बेल १ तोला पाढ़ल १ तोला सोनापाठा १ तोला
गम्भारी १ ,, गणियारी १ ,,
इनको जौकुट करे। इनमें से २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे,
½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायकाल। दोषों को पचाती है।

(२) धनियाँ ५ माशा सोंठ ५ माशा देवदारु ५ माशा
दोनों कटेरी ५ ,, जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान पिलावे।
प्रातः तथा सायकाल।
दीपन-पाचन है।
ज्वर को निश्चित ही दूर करती है।

(३) मीठा वच २ माशा अजवाइन ६ माशा धनियाँ ६ माशा
सोंठ ६ ,, जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छानकर पिलावे। सायंकाल।
वेदना तथा ज्वर नाशक है।

(४) जवासा १ तोला सोंठ १ तोला कुटकी १ तोला
पाठा १ ,, कचूर १ ,, अडूसा १ ,,
एरण्ड जड़ १ ,,
इनको एकत्र जौकुट करे। इसमें से २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे,
½ छटाँक शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
श्वास, कास तथा शूल युक्त ज्वर नाशक है।

त्रिपुरभैरवरस (रसयोगसागर)

(५) शुद्ध वत्सनाभ १ भाग सोंठ चूर्ण २ भाग पीपर चूर्ण ३ भाग
मरीच चूर्ण ४ ,, ताम्र भस्म ५ ,, हिंगुल ६ ,,
इनको एकत्र आदीस्वरस में खरल कर रखे।
मात्रा—½ रत्ती। अनुपान—आदी स्वरस
प्रातः तथा सायकाल। ज्वरनाशक में श्रेष्ठ है।

कल्पतरु रस (रसयोगसागर)

(६) शुद्ध पारद २ तोला शुद्ध गन्धक २ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

शुद्ध वत्सनाभ	२ तोला	शुद्ध मैनसिल	२ तोला
शुद्ध सोनामाखी	२ ,,	शुद्ध सोहागा	२ ,,
सोंठ	४ ,,	पीपर	४ ,,
मरीच	२० ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।

कज्जली एवं चूर्ण को एकत्र ६ घण्टे तक खरल कर रखे।

मात्रा—१ रत्ती। अनुपान-आदी स्वरस।

प्रातः तथा सायकाल।

नोट—इसका नस्य देने से शिरःशूल, प्रलाप तथा मूर्च्छादि नष्ट होती हैं।

(७) वालुका स्वेद

पसीना निकाल वेदना नाशक है।

(८) भुनी भाँग चूर्ण ६ रत्ती मधु ३ माशा

रात्रि में। निद्रा लाती तथा बेचैनी हटाती है।

(९) देवदारु	३ माशा	श्वेतवच	३ माशा	कूठ	३ माशा
हींग	३ ,,	शतावर	३ ,,	सेंधानमक	३ ,,

जल के साथ पीस गरम कर उदर पर लेप करे।

उदर शूल तथा आध्मान नाशक है।

पित्त ज्वर

(१) पित्तपापड़ा	१ तोला	अड़ूसा	१ तोला	कुटकी	१ तोला
चिरायता	१ ,,	धनियाँ	१ ,,	प्रियगु फूल	१ ,,

इनको जौकुट करे। इसमें से २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ३ छ० जल शेष रहते छान चीनी मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

दाह तथा प्यास युक्त ज्वर को शान्त करती है।

(२) द्राक्षा	१ तोला	हरड़	१ तोला	नागरमोथा	१ तोला
कुटकी	१ ,,	अमलतास	१ ,,	पित्तपापड़ा	१ ,,

इनको जौकुट करे। इसमें से २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ३ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।

भ्रम, मूर्च्छा, प्रलाप तथा प्यास युक्त ज्वर नाशक है। यह दस्तभी लाती है।

(३) पित्तपापड़ा ५ माशा लालचन्दन ५ माशा नेत्रवाला ५ माशा
सोंठ ५ ,, जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
पित्तज्वर नाशन में परमोत्तम है।

(४) सुगंधवाला ४ माशा लालचन्दन ४ माशा खस ४ माशा
नागरमोथा ४ ,, पित्तपापड़ा ४ ,, जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
सोपद्रव पित्तज्वर नाशक है।

(५) बबूलगोंद ६ माशा कहरुवा ६ माशा
वंशलोचन ,, ,, ईसबगोल १ तोला
जावित्री ,, ,, भुना जीरा ,, ,,
मुलेठीसत्त ,, ,, भुनाबाकला ,, ,,
इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४ माशा। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल। पित्तज्वर के दस्त को निश्चय ही बंद करती है।

कफज्वर

(१) बिजोरे नीबू की जड़ ५ माशा गुरुच ५ माशा
सोंठ ,, ,, पीपरामूल ,, ,,
जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान २ रत्ती जवाखार मिला पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल। कफज्वर को पचाती है।

(२) कटेरी ४ माशा कूट ४ माशा
अडूसा ,, ,, परवर ,, ,,
लोध ,, ,, जल १ पाव
क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) निम्बछाल ३ माशा कचूर ३ माशा
सोंठ ,, ,, चिरायता ,, ,,
गुरुच ,, ,, पुष्करमूल ,, ,,
शतावर ,, ,, पीपर ,, ,,
कटेरी ,, ,,

इनको जौ-कूटकर २। तोला ले १ पाव जल में क्वाथ करे, जब ½ छटांक जल शेष रहे तब छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

(४) पीपर — १ तोला; बहेड़ा — १ तोला
हरड़ — " "; आंवला — " "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—३ माशा। अनुपान-मधु २ मात्रा। कफज्वर के श्वास तथा कास को निश्चय बन्द करती है।

(५) कायफल — १ तोला; कलौंजी — १ तोला
पोष्करमूल — " "; सोंठ — " "
काकड़ासिंगी — " "; पीपर — " "
अजवाइन — " "; मरीच — " "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—३ माशा। अनुपान—आदी रस वा मधु। प्रातः तथा सायकाल। श्वास, कास, हिक्का तथा वमन युक्त ज्वर नाशक है।

(६) कुटकी — १ तोला; पीपर — १ तोला
निम्बछाल — " "; मरीच — " "
अतीस — " "; इन्द्रजव — " "
सोंठ — " "

इनको जौ कूट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। कासयुक्त घोर कफ ज्वर नाशक है।

(७) आमला — २ भाग; कालीमरीच — १ भाग
हरड़ — " "; बहेड़ा — " "
पीपर — " "; दालचीनी — " "
वच — १ "; इलायची — " "
सोंठ — " "; तेजपत्ता — " "

इनको जौ कूट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। तः तथा सायंकाल। मल को पतला करती है, कफ को हर अग्नि दीप्त करती है।

(८) कल्प तरु रस (र० यो० सा०) — १ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) पिप्पल्यादिगण की ओषधियों का क्वाथ

प्रातः तथा सायंकाल। ज्वर का पाचक है।

वात-पित्तज्वर

(१) गुरुच	४ माशा	पित्तपापड़ा	४ माशा
नागरमोथा	„ „	सोंठ	„ „
चिरायता	„ „	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) हरड़	१ तोला	सेमर छाल	१ तोला
बहेड़ा	„ „	चिरायता	„ „
आंवला	„ „	रास्ना	„ „

इनको जौ कूट करे। २ तोला द्रव्य को १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पीलावे। प्रातः तथा सायकाल। ज्वर का पाचन करता है।

(३) नेत्रवाला	१ तोला	पद्मकाष्ठ	१ तोला
गुरुच	„ „	भारङ्गी	„ „
एरण्ड जड़	„ „	पीपर	„ „
सुगन्धवाला	„ „	खस	„ „
नागरमोथा	„ „	चन्दन	„ „

इनको एकत्र जौ कूट करे। २। तोला द्रव्य ले १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल ज्वर नाशक तथा अग्निवर्धक है।

किरातादिक्वाथ

(४) चिरायता	४ माशा	आंवला	४ माशा
गुरुच	„ „	कचूर	„ „
द्राक्षा	„ „	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान पुराना गुड डाल कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।

(५) नील कमल	१ तोला	कुम्भेर	१ तोला
खस	„ „	मुलेठी	„ „
खरेटी	„ „	द्राक्षा	„ „
पद्माख	„ „	महुवा	„ „
फालसा	„ „		

इनको एकत्र जौ कुट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल प्रलाप तथा मूर्च्छा युक्त ज्वर नाशक है।

वात-कफज्वर (इन्फ्लुएंजा) (Influenza)

आरग्वधादि क्वाथ (शा० सं०)

(१) अमलतास का गुदा	४ तोला	पीपरामूल	४ तोला
कुटकी	,, ,,	नागरमोथा	,, ,,
हरड़	,, ,,	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। विबन्ध, शूल नाशक तथा दीपन, पाचन है।

(२) पीपर	४ तोला	चीता	४ तोला
पीपरामूल	,, ,,	सोंठ	,, ,,
चव्य	,, ,,	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। दीपन तथा पाचन है। सोपद्रव ज्वर नाशन मे उत्तम है।

(३) कटेरी	९ तोला	गुरुच	९ तोला
सोंठ	,, ,,	एरण्ड जड़	,, ,,
जल	१ पाव		

इनका क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। श्वास, कास तथा वेदना युक्त ज्वर नाशक है।

(४) दशमूल क्वाथ	½ छटांक	पीपल चूर्ण	१ माशा

प्रातः तथा सायकाल। मुखपाक, अनिद्रा, कास, श्वास तथा पार्श्वशूल नाशक है।

पिपल्यादि महाक्वाथ (वै० शि०)

(५) पीपर	१ तोला	जीरक	१ तोला
पीपरामूल	,, ,,	पाढल	,, ,,
चव्य	,, ,,	इन्द्रजव	,, ,,
चीता	,, ,,	रेणुका	,, ,,

सोंठ	१ तोला	चिरायता	१ तोला
वच	,, ,,	मूर्वा	,, ,,
अतीस	,, ,,	मरीच	,, ,,
कायफल	,, ,,	रास्ना	,, ,,
पोष्करमूल	,, ,,	धमासा	,, ,,
भारंगी	,, ,,	अजवाइन	,, ,,
वायविडग	,, ,,	अजमोदा	,, ,,
काकड़ासिगी	,, ,,	श्योनाक	,, ,,
मदार की जड	,, ,,	हींग	,, ,,
बड़ी कटेरी	,, ,,	सरसों	,, ,,

इनको जौ कुट करे। २। तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। पसीना, कम्प, प्रलाप, अतिनिद्रा, अरुचि, अपतन्त्रक, तथा शून्यता आदि उपद्रव युक्त ज्वर नाशक है। यह पिप्पल्यादि महाक्वाथ सर्वोपरि है।

(६) वच १ तोला अजवाइन १ तोला सोंठ १ तोला

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। शरीर में इसका मर्दन करना। स्वेदाधिक्य नाशक है।

(७) वालुका स्वेद — शारीरिक वेदना नाशक है।

(८) भुनी कुल्थी चूर्ण — शरीर में मलना। स्वेदाधिक्य नाशक है।

(९) सूर्यशेखर रस (र० का० घे०)

शुद्ध पारद	१ भाग	शुद्ध गन्धक	१ भाग
भुना सुहागा	१ ,,	शुद्ध जयपाल बीज	१ ,,
सेंधानमक	१ ,,	मरीच	१ ,,
इमलीक्षार	१ ,,	खाण्ड	१ ,,

इन्हें नीबू रस में १ दिन तक खरल कर सूखा चूर्ण बना रखे। मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—गरम जल। ३ मात्रा।

R/

(१०) सोडियम सैलिसिलेट	(Sodium Salicylate)	१० ग्रेन
फेनासिटीन	(Phenacitin)	३ ,,
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	५ बूंद

स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. chloroform)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(११) टिं० ओपियम	(Tr. Opuim)	५ बूंद
एसिड सल्फ एरोमेट	(Acid Sulph Aromat.)	१० ,
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१२) फेनाज़ोन	(Phenazone)	३ ग्रेन
सोडा वाईकार्व	(Soda Bicarb)	६ ,,
टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१३) पाट० ब्रोमाइड	(Pot Bromide)	१५ ग्रेन
वेरोनाल	(Veronal)	६ ,,
सीरप कोडीन	(Syrup Codeine)	½ ड्राम
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

कास तथा अनिद्रा नाशक है।

R/

(१४) पैरेल्डिहाइड	(Paraldehyde)	१–२ ड्राम
सीरप टोलू	(Syrup Tolu	१ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

अनिद्रा हारक है।

R/

(१५) लाइकर मार्फ हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Morph Hydrochlor)	½ ड्राम

पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१५ ग्रेन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

अनिद्राहारक है।

(१६) एसिटेनिलिड	(Acetanilid)	७ ग्रेन
कैफीन	(Caffein)	१ ,,
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२ ,,

३-४ मात्रा

वेदना हारक है।

R/

(१७) कैफीन	(Caffein)	३ ग्रेन
एस्पिरीन	(Aspirin)	६ ,,
फेनासिटीन	(Phenecitin)	६ ,,

३ मात्रा

शिरःशूल तथा वेदना नाशक है।

R/

(१८) क्वीनीन सैलिसिलेट	(Quinine Salicylate)	५ ग्रेन
एसीटेनिलिड	(Acetanilid)	३ ,,
पल्व कैम्फर	(Palv. Camphor)	½ ,,
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	¼ ,,

२ मात्रा

सूची—

पिच्युट्रीन (Pituitrin) कैम्फर इन ईथर (Camphor in Ether)

हृदयावसाद नाशक है।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

सीडेमान (Sedamon), फेनास्कोडीन (Phenascodin), क्वीनोकैल्शिमा (Quino-Calciuma), कोरैसोल क्वीनीन (Corasol Quinine), पल्मोट्रान (Pulmotron), चेस्टोन (Cheston), ओम्नाई (Omni), एम्पाइरिनगोली (Empirin Tabts), एम्पाइरिन कम्पाउण्ड गोली (Empirin Comound Tabts) एम्पाइरिन कम्पाउण्ड विथ कोडीन गोली (Empirin Compound with Codeine Tabts), डोवर्स पाउडर गोली (Dover Powder Tabts), प्लैनोक्रीन (Planocrine), इन्फ्लुएंजा गोली (Influenza Tabts)।

पित्त-कफ ज्वर

(१) गुरुच ४ माशा धनियाँ ४ माशा कुटकी ४ माशा
लालचन्दन ४ ,, निम्ब छाल ४ ,, जल २ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान रोगी को पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल प्यास, दाह तथा वमन युक्त ज्वर नाशक है।

(२) गुरुच १ तोला नागरमोथा १ तोला कुटकी १ तोला
नीम छाल १ ,, इन्द्र जौ १ ,, सोंठ १ ,,
परवल का पत्ता १ तोला लालचन्दन १ ,,
इनको जौकुट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर पीपर चूर्ण ६ रत्ती मिला पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
तृषा, दाह तथा वमन युक्त ज्वर नाशन में श्रेष्ठ है।

(३) कटेरी ४ माशा गुरुच ४ माशा सोंठ ४ माशा
चिरायता ४ ,, पोष्करमूल ४ ,, जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे
प्रातः तथा सायंकाल।
ज्वर नाशन में श्रेष्ठ है।

(४) इन्द्रजौ ४ माशा पित्तपापड़ा ४ माशा धनियां ४ माशा
चिरायता ४ ,, निम्ब छाल ४ ,, जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान शीतल कर मधु मिश्री मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

सन्निपात ज्वर

(१) बेल १ तोला श्योनाक १ तोला
खम्भारी १ ,, पाढल १ ,,
शालपर्णी १ ,, पृष्टपर्णी १ ,,
छोटी कटेरी १ ,, बड़ी कटेरी १ ,,
गोखरू १ ,, गणियारी १ ,,
इनको जौकुट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान पीपर चूर्ण मिला पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
पार्श्व शूल, हृदय शूल, कास, श्वास, तन्द्रा तथा कण्ठावरोध युक्त सन्निपात नाशन में रामबाण है।

(२) जायफल	१ तोला	पोष्करमूल	१ तोला	काकड़ासिंगी	१ तोला
सोंठ	१ ,,	मरीच	१ ,,	पीपर	१ ,,
जवासा	१ ,,	अजवाइन	१ ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—२-३ माशा। अनुपान—आदीरस युक्त नं० १ का क्वाथ।
प्रातः तथा सायकाल।
घोर सन्निपात नाशक है।

अष्टादशांग क्वाथ

(३) दशमूल	१० तोला	चिरायता	१ तोला	नागरमोथा	१ तोला
देवदार	१ ,,	सोंठ	१ ,,	कुटकी	१ ,,
इन्द्रजौ	१ ,,	गजपीपर	१ ,,	धनियां	१ ,,

इनको जौकुट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।
प्रलाप, श्वास, कास, दाह, स्वेद तथा तन्द्रायुक्त सन्निपातनाशन में अद्वितीय है सूतिका रोग को भी दूर करती है।

(४) अतीस	१ तोला	सोंठ	१ तोला	मदार जड़	१ तोला
चिरायता	१ ,,	जवासा	१ ,,	देवदार	१ ,,
रास्ना	१ ,,	सम्भालू	१ ,,	मीठा बच	१ ,,
गणियारी	१ ,,	सहजन	१ ,,	पीपरामूल	१ ,,
पीपर	१ ,,	चव्य	१ ,,	चीता	१ ,,
भांगरा	१ ,,				

इनको जौकुट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
दांत लगे हुये सन्निपात को भी नष्ट करती है।

(५) दशमूल	४ माशा	नागरमोथा	४ माशा	चिरायता	४ माशा
गुरुच	४ ,,	सोंठ	४ ,,	जल	१ पाव

क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छानकर पिलावे।
प्रातः तथा सायकाल।
नोट—दस्त कराना आवश्यक हो तो क्वाथ में निशोथ चूर्ण ३ माशा मिला देवे।

(६) त्रिकटु	४ माशा	दशमूल	४ माशा	सोंठ	४ माशा
भारंगी	४ ,,	गुरुच	४ ,,	जल	१ पाव

क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
सन्निपात शीघ्र ही नष्ट होता है।

पञ्चवक्त्र रस

(७) शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गंधक	१ तोला	शुद्ध सुहागा	१ तोला
शुद्ध वत्सनाभ	१ "	मरीच	१ "		

इनको दिन भर धतूर स्वरस में खरलकर सुखा लेवे।
मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—आदीस्वरस। २ मात्रा
घोर सन्निपात नाशक है।

(८) शुद्ध विष	४ भाग	कौड़ीभस्म	१० भाग	मरीच	१८ भाग

इनको एकत्र खरल कर मूंग प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१-२ गोली। अनुपान—आदी स्वरस। २ मात्रा।

स्वल्पकस्तूरी भैरव (भै० र०)

(९) शुद्ध हिंगुल	१ तोला	शुद्ध विष	१ तोला	शुद्ध सुहागा	१ तोला
जाविन्नी	१ "	जायफल	१ "	मरीच	१ "
पीपर	१ "	कस्तूरी	१ "		

इन्हें जल के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—आदी स्वरस
प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) बृहत् कस्तूरी भैरव रस (भै० र०) १ गोली
आदी स्वरस २ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(११) वेताल रस (र० यो० सा०) १ गोली
आदी स्वरस २ माशा
२ मात्रा
मूर्च्छायुक्त सन्निपात नाशक है।

(१२) सूचिकाभरण रस (भैषज्यरत्नावली) १ गोली
अनुपान—मिश्री का रस। २ मात्रा। घोर सन्निपात नाशक है।

(१३) मरीच आदी रस
आदी रस में मरीच घिस रोगी को नस्य देना। बेहोशी नाशक है।

(१४) शुद्ध जयपाल की मींगी	२० माशा	मरीच	२ माशा
पीपरामूल	२ "		

जम्बीरी नीबू के रस में ७ दिन तक खरल कर गोली बनावे। अंजन देना।
सन्निपात नाशक है।

(१८) पारा	१ तोला	नौसादर	१ तोला
नीला थोथा	" "	वत्सनाभ	" "
मरीच	" "		

धतूर तथा लहसुन स्वरस के साथ खरल कर रखे। शिर के मध्य के बाल को काट कर लेप करते हैं। मूर्च्छा नाशन में श्रेष्ठ है।

(१९) रोहित तृण	१ तोला	धमासा	१ तोला
अडूसा	" "	पित्तपापड़ा	" "
प्रियंगु फल	" "	कुटकी	" "

इनको जौ कुट करे। १ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्राथ करे ½ छटांक जल शेष रहते छान मिश्री मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल ज्वरगत रक्तष्ठीवन नाशक है।

(१०) मृतसंजीवनीसुरा	२ तोला	जल	२ तोला

२ मात्रा। भोजनोत्तर।

सन्धि शोथ (Arthritis)

R/

(१) सोडियम आयोडाइड	(Sodium iodide)	५ ग्रेन
सोडियमसेलिसिलेट	(Sodium salicylate)	१५ "
वाइनम कालिचकम	(Vinum colchium)	२० बूंद
सीरप सार्सा को०	(Syrup sarsae co.)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२, ४ मात्रा

R/

(२) आर्सनिक आयोडाइड	(Arsenic iodide)	$\frac{1}{30}$ ग्रेन
सीरप फेरस आयोडाइड	(Syrup ferrous iodide)	½ औंस
सीरप लीमन	(Syrup lemon)	१ औंस
मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। दोनों सन्धि शोथ तथा वेदना हारक है।

R/

(३) आयडिपिन गोली	(Iodipin tabts)	२, १० ग्रेन

नित्यप्रति। साथ में उष्ण बालुका सेंक।

R/

(४) आटोफेन टिकिया	(Atophan tabt)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda bicarb)	४ ग्रेन
		३ मात्रा

R/

(५) ग्वायाकोल कार्ब	(Guaiacol carb)	८ ग्रेन
		३ मात्रा

R/

(६) पैराफिन	(Paraffin)	१ औंस
आयोडीन	(Iodine)	१० बूंद
		सन्धि पर मर्दन

R/

(७) रुमेलिन (Reumalin)

इसका व्यवहार करते हैं।

नोटः—व्याधि के कारणों को भी नष्ट करना चाहिये।

काला-आजार (Kalazar)

R/

(१) एण्टीमनी साल्ट (Antimony salts)

०.०५ से प्रारम्भ कर ०.२ ग्राम तक

आधुनिक काल में ब्रह्मचारी द्वारा आविष्कृत यूरिया स्टिबेमीन (Urea Stibemine) का ही व्यवहार करते है, जो सम्पूर्ण रोगियों में लाभ दायक सिद्ध हो चुकी है। इसका व्यवहार शिरागत होता है। ब्रह्मचारी ने ही मांसगत प्रविष्ट करने के निमित्त न्यूस्टिबोसान (Neostebosan) नामक ओषधि का निर्माण किया है।

R/

(२) यूरिया स्टिबेमिन (Urea stibamine)

परिचय—यह चूर्ण के रूप में पीताभ वर्ण की ओषधि होती है, जो एक अम्प्युल मे बन्द रहती है। इसे पुनः परिस्रुत जल में घोल प्रविष्ट करते है।

मार्ग—शिरागत।

मात्रा—प्रथम—०.०२५ ग्राम	चौथी—० १५ ग्राम
दूसरी—० ०५ „	पाचवीं—० २ „
तीसरी—० १ „	छठवीं—०.२५ „

१ से १९ वर्ष तक की अवस्थावाले रोगियों के लिये

प्रथम—०.०१ ग्राम		तीसरी—० ०३ ग्राम	
दूसरी—०.०२	,,	चौथी—० ०४	,,

शेष मात्रायें ०.०४ ग्राम की ही चलती है।

कुष्ठ (Leprosy)

(१) मंजिष्ठादिक्काथ (शा० सं०)

मजीठ	१ तोला	सतावर	१ तोला
सोमराजी	,, ,,	वरियरा	,, ,,
चकवड़ बीज	,, ,,	गुलशकरी	,, ,,
नीमछाल	,, ,,	मुलेठी	,, ,,
हरड़	,, ,,	गोखरू	,, ,,
हल्दी	,, ,,	परवलपत्र	,, ,,
आंवला	,, ,,	खस की जड़	,, ,,
अडूसापत्र	,, ,,	गुरुच	,, ,,
लालचन्दन	,, ,,		

इनको जौकुट कर २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। कुष्ठ तथा अन्य चर्म रोग नाशक है।

(२) महामंजिष्ठादि क्वाथ ½ छटांक

प्रातः तथा सायंकाल

(३)

गुरुच	४ माशा	एरण्डमूल	४ माशा
अडूसाछाल	,, ,,	हरड़	,, ,,
सोमराजी	,, ,,	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छानकर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल

(४) निम्बपंचांग चूर्ण २ माशा

अनुपान—गोमूत्र। प्रातःकाल

(५) पंचतिक्तघृत गुग्गुल ½ तोला

अनुपान—गोमूत्र। प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तमौषधि है।

(६) शुद्ध भिलावा ८ सेर जल ३२ सेर

क्वाथ करे। ८ सेर जल शेष रहते छान रखे।

घी	८ सेर	क्वाथ	८ सेर

घी मात्र शेष रहने तक पाक करे। पाक हो जाने पर ४ सेर चीनी मिला ७ दिनों तक रख छोड़े। मात्रा—३-६ माशा। प्रातः तथा सायंकाल

(७) अमृतांकुर लौह — १ रत्ती

अनुपान—असमान मात्रा में घी तथा मधु। ऊपर से दूध पिलाना।

(८) ताळकेश्वर रस (र० यो०) — २ रत्ती

अनुपान—गोमूत्र। प्रातः तथा सायंकाल

(९) रसमाणिक्य (र० सा० सं०) — २ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल

(१०) पंचतिक्त घृत — ½ तोला

प्रातः तथा सायंकाल

(११) महासिन्दुराद्य तैल

मर्दन करना।

(१२) सोमराजी तैल

मर्दन करना।

(१३) मरिच्यादि तैल (शा० सं०)

मर्दन करना।

(१४) बावची चूर्ण १ पाव आर्दीस्वरस २ सेर

एकत्र मिला शरीर में मालिश करना।

(१५) हरड़	१ तोला	करंज	१ तोला	सरसों	१ तोला
हल्दी	,, ,,	बावची	,, ,,	सेंधानमक	,, ,,
वायविडंग	,, ,,				

इनको गोमूत्र में पीस कर लेप करना।

R/

(१६) चालमूग्रा तैल (Oil Chaulmoogra) — ३-३० बूंद

R/

(१७) एलीपोल सूची (Alepol injection)

कैप्सुल में ३ मात्रा सप्ताह में २ वार

R/

(१८) ई०, सी०, सी०, ओ० (E C C O) — O ५ सी० सी० से १० सी० सी० तक

मांसगत

नोट—प्रतिवार ०.५ सी० सी० बढ़ाते हुये १० सी० सी० तक ले जाते है।

R/

(१९) क्रियोजोट सूची (Creosote) ४ प्रतिशत
सप्ताह में दो वार

R/

(२०) ईथिल ईस्टर (Ethyl Ester) ०.५ से ४ सी० सी०।
सप्ताह में २ वार। मांसगत।

R/

(२१) सोडियम चालमूग्रेट (Sodium Chaulmoograte) १–३ ग्रेन
मांसगत

R/

(२२) सोडियम हिडनोकार्पेट (Sodium Hydnocarpate) ०.५–७ सी० सी०
मांसगत

R/

(२३) नेस्टीन (Naistun) १ सी० सी०
त्वचागत। प्रारम्भ में साप्ताहिक फिर सप्ताह में २ वार।

विषमज्वर (Malaria)

(१) छोटी हरड ७ माशा द्राक्षा ७ माशा जीरा ७ माशा
जल १ पाव
इनका क्वाथ करे। ½ छटांक शेष रहते छान शीतल कर स्वर्णमाक्षिक २, ३ रत्ती मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
यह ज्वर का पाचन है।

(२) गुडूच ४ माशा आंवला ४ माशा नागरमोथा ४ माशा
कटेरी ४ ,, जल १ पाव
क्वाथ करे। ½ छटांक जल रहते छान शीतल कर मधु और पीपल चूर्ण मिला रोगी को पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल। उत्तम है।

(३) लहसुन कल्क १ तोला तिल तैल १ तोला नमक ½ तोला
प्रातःकाल
इसके सेवन से चिरकालिक विषमज्वर नष्ट होता है।

(४) द्रोणीपुष्पी स्वरस १ तोला मरीच चूर्ण ½ माशा
प्रातः तथा सायंकाल

(५) परवल पत्र	४ माशा	इन्द्र जौ	२ माशा	देवदारु	२ माशा
त्रिफला	२ "	नागरमोथा	२ "	द्राक्षा	२ "
मुलेठी	२ "	गुरुच	२ "	अडूसा	२ "
जल	१ पाव				

इनका क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान शीतल कर मधु मिला पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
सर्वोत्तम है।

(६) मुलेठी ९ माशा खुरासानी अजवाइन ३ माशा जल १ पाव
क्वाथ करे। ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
ज्वर को निश्चित रोकती है।

(७) काला जीरा	१ तोला	मुसव्वर	१ तोला	सोंठ	१ तोला
मरीच	१ "	वकायन फल	१ "	करंजफल की मींगी	१ "

इनको जल के साथ पीस चने बराबर गोली बना रखे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। ३ मात्रा।
इससे ज्वर रुकता है तथा चढ़ा हुआ ज्वर उतरता है।

(८) निम्बछाल चूर्ण २ तोला जल १ पाव
क्वाथ बनावे। ½ छटांक जल शेष रहते छान सोंठ तथा धनियां चूर्ण ६ माशा के प्रमाण में मिला पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल
कुनाइन से अधिक लाभप्रद है।

(९) मण्डूर भस्म ४ तो० नवसादरचूर्ण ४ तो० पीपरचूर्ण ४ तो०
इनको एकत्र मिला रखे।
मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।
यकृद् वृद्धि युक्त ज्वर नाशक है।

(१०) यवक्षार ३ रत्ती पीपरचूर्ण ३ रत्ती गुड़ ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।
यकृत् तथा प्लीहावृद्धि युक्त ज्वर नाशक है।

(११) लाल भुनी फिटकिरी ६ रत्ती मिश्री १ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।
ज्वर की बारी रुक जाती है।

नोट—नं० ११ की औषधि कास के रोगी को नहीं देना चाहिये।

(१२) अभ्रकभस्म १ माशा, लोहभस्म १ माशा, शुद्ध वत्सनाभचूर्ण १ „, पीपरचूर्ण २ „, करंज बीज मींगीचूर्ण २ माशा

इनको नीबू स्वरस में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—गरम जल।

प्रत्येक दो दो घण्टे पर। ज्वर चढ़ने से ६ घण्टे पूर्व से प्रारम्भ करे।

(१३) क्वीनाइन १ तोला, वंसलोचन १ तोला, छोटी इलायचीचूर्ण १ तोला, प्रवालभस्म १ „, टार्टरिक एसिड १ „

गुलाबजल में खरल कर दो दो रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। ३ मात्रा

ज्वर चढ़ने के पूर्व से प्रारम्भ करे। ज्वर रोधक है।

(१४) शुद्ध वत्सनाभ चूर्ण ५ माशा, रससिन्दूर २ माशा, करंजबीज चूर्ण ६ „, गुरुच सत १ तोला

इनको नीबू रस में खरल कर दो, दो रत्ती की गोलियां बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। ३ मात्रा

ज्वरागमन के ३ घण्टे पूर्व से प्रारम्भ करे।

(१५) गुरुच ४ माशा, कुटकी ४ माशा, निम्बछाल ४ माशा, धनियाँ ४ „, परवरपत्र ४ „, पित्तपापड़ा ४ „, सनाय ४ „, बड़ी हरड़ ४ „, जल ½ सेर

इनका क्वाथ करे। ½ पाव जल शेष रहते छान दो, दो घण्टे पर पिलावे।

३ मात्रा

(१६) लालचन्दन १ तोला, वाला १ तोला, अडूसा १ तोला, खस १ „, पीपर १ „, मोथा १ „

इनका कपडछान चूर्ण करे।

चूर्ण ६ तोला, लोहभस्म ६ तोला

इन्हें जल के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु

जीर्ण ज्वर तथा विषमज्वर शीघ्र आराम होता है।

(१७) सर्वज्वर हर लौह (र० यो० सा०) १ गोली, मधु ३ माशा

३ मात्रा

ज्वर, प्लीहा तथा यकृत वृद्धि नाशक है।

(१८) बृहत्सर्वज्वरहर लौह (र० यो० सा०) २ रत्ती

पीपरचूर्ण २ रत्ती

पुराना गुड़ ३ माशा

प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

(१९) ज्वराशनिरस (भै० र०) १ गोली
पान रस ३ माशा
३ मात्रा

(२०) विषमज्वरान्तक लौह (भै० र०) १ गोली
मधु ३ माशा
३ मात्रा।

(२१) कल्पतरु रस (र० यो०) १ गोली
पीपर चूर्ण ३ माशा

अनुपान—गरम जल। ३ मात्रा। सोपद्रव विषमज्वर नाशक है।

(२२) व्यहारिक रस (वै० शिक्षक) ३ रत्ती की गोली

अनुपान—अलसी क्वाथ। तृतीय तथा अन्य विषम ज्वर नाशक है।
३ मात्रा।

(२३) चातुर्थ्यकारिरस (र० यो०) २ रत्ती की गोली

अनुपान—चम्पारस। ३ मात्रा। चातुर्थक ज्वर नाशक है।

(२४) महालाक्षादि तैल (शा० स०) मर्दन करना।

(२५) दशमूल षटपलक घृत २ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(२६) क्वीनीन हाइड्रोक्लोर	(Quinine Hydrochlor)	१० ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
सीरप लीमन	(Syrup Lemon)	१½ "
क्लोरोफार्म जल	(Aqua Chloroform)	१ औंस

२ मात्रा।

R/

(२७) क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	२ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	८ बूंद
फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	१ ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।

R/

(२८) कीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	३ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	६ बूंद
फेरी सल्फ	(Eerri Sulph)	१ ग्रेन
लाइकर आर्सेनिक हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Arsenic Hydroohlor)	२ बूंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(२९) कीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	३ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	६ बूंद
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(३०) कीनीन टिकिया	(Quinine Tabt)	१ गोली

३ मात्रा। ज्वर आने के पूर्व।

R/

(३१) सिंकोना फेब्रीफ्यूज	(Cinchona Febrifuge)	३ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	६ बूंद
एसिड कार्बोलिक	(Acid Carbolic)	१ ”
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा
भोजनोपरान्त।

R/

(३२) पिरामिडान	(Pyromidan)	५ ग्रेन
फेनासीटिन	(Phenacetin)	८ ”
कैफीन साइट्रास	(Caffein Citras)	३ ”

३ मात्रा
शिरःशूल तथा शारीरिक वेदना हारक है।

R/

(३३) ईस्टन्स सीरप	(Eston's Syrup)	$\frac{1}{2}$ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा
भोजनोत्तर

R/

(३४) क्वीनीन हाइड्रोक्लोर	(Quinine Hydrochlor)	२$\frac{1}{2}$ ग्रेन
फेरी रीडक्टी	(Ferri Reducti)	१ "
स्ट्रिक्नीन सल्फ	(Strychnine Sulph)	$\frac{1}{3}$ "
आर्सेनिक ट्राई आक्साइड	(Arsenic Tri Oxide)	$\frac{1}{60}$ "

१ कैप्सुल। ३ मात्रा
रक्ताल्पता तथा ज्वर नाशक है।

R/

(३५) कालमेघ मिक्श्चर	(Kalmegh Micture)	$\frac{1}{2}$ ड्राम

३ मात्रा

सूची—

क्वीनीन बाईहाईड्रोक्लोर इन सैकेरोज सोलुशन (Quinine Bihydrochlor in Saccarose Solution), क्वीनीनडाई हाइड्रोब्रोमाइड (Quinine Dihydrobromide), मेपाक्रीन मीथेनोसल्फ (Mepacrine Methanosulph), एड्रेनलीन क्लोराइड (Adrenalin Chloride), सोडियम कैकोडिलेट (Sodium Cacodylate), मीथेलीन ब्ल्यू (Methyline Blue), मैफरसाइड (Mepharside), क्वीनेक्रीन (Quinacrine), क्वीनीनबाई हाइड्रोक्लोर (Quinine Bihydrochlor), क्वीनार्सोल (Quinarsol)।

पेटेण्ट औषधियाँ—

एटब्रिन (Atabrin), मेपाक्रीन (Mepacrin), पैलुड्रीन (Paludrin), सिपाफेरान (Cipaferron), प्रीक्वीन (Praequine), स्टोवार्सोल (Stovarsol) आदि।

रक्तप्रदर (Menorrhagia and Metrorrhagia)

(१) अशोकछाल २ तोला गोदुग्ध १ पाव जल १ पाव
मिश्री ६ माशा

एकत्र पाक करे। संपूर्ण जल के जल जाने पर छान रोगी को पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२) पके गूलर फल का चूर्ण　३ माशा　मिश्री　३ माशा

अनुपान—दूध

प्रातः तथा सायंकाल

रक्तप्रदर निश्चित अच्छा होता है।

(३) दशमूल　२ तोला

चावल के धोवन से पीसकर ३ दिन पिलाना।

प्रातः तथा सायंकाल

उत्तम है।

(४) सफेद चन्दन　१ तोला　खस　१ तोला　कमलगट्टे की गिरी　१ तोला

मिश्री　१ ״

इन्हें चावल के धोवन के साथ पीस छान कई दिनों तक पिलाना।

प्रातः तथा सायंकाल

(५) दारुहल्दी　१ तोला　रसौत　१ तोला　अडूसा　१ तोला

नागरमोथा　१ ״　चिरायता　१ ״　बेलगिरी　१ ״

शुद्ध भिलावा　१ ״　कुमुदनी　१ ״

इनको जौकुट कर इसे फिर २½ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल पर मधु मिला रोगी को पिलावे।

प्रातः तथा सायंकाल

प्रदर की वेदना तथा घोर प्रदर नाशक है।

(६) चन्दनादि चूर्ण　(शा० स०)　३ माशा

मधु　३ ״

अनुपान—चावल का धोवन। प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

(७) पुष्यानुगचूर्ण　(च० द०)　१½—३ माशा

मधु　३ ״

अनुपान—चावल का धोवन। प्रातः तथा सायंकाल

(८) प्रदरारिलौह　(र० यो०)　२ रत्ती

अनुपान—कुशमूल स्वरस। २ मात्रा

कुक्षिशूल तथा प्रदररोग का नाशक है।

(९) प्रदरान्तक लौह　(र० यो०)　१ गोली

अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

शूलयुक्त व्याधिनाशक है।

(१०) अशोक घृत　(शा० स०)　१ तोला

प्रातः तथा सायंकाल

सोपद्रव प्रदर नाशक में श्रेष्ठ है।

(११) फलकल्याण घृत — १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(१२) कौल्शियम लैक्टेट (Calcium Lactate) — २० ग्रेन
३ मात्रा। रक्तरोधक है।

R/

(१३) एक्स्ट्रैक्ट अर्गाटा (Extract Ergot Liquid) — ३० बूंद
पाट० ब्रोमाइड (Pot. Bromide) — १० बूंद
टि० डिजिटेलिस (Tr. Digitalis) — ५ बूंद
जल (Aqua) — १ औंस
३ मात्रा। भोजनोपरान्त
शूल तथा रक्तस्राव रोधक है।

R/

(१४) अर्गोमेट्रीन टिकिया (Ergometrine tabts) — ½–१ मिलीग्राम
३ मात्रा

R/

(१५) कैल्शियम ग्लुकोनेट विथ कैल्शिफेराल (Calcium gluconate with Calciferol) — १–२ गोली
३ मात्रा।

R/

(१६) स्टिप्टाल टिकिया (Styptol tabts) ¾ ग्रेन — १ गोली
३ मात्रा। रक्तस्राव रोधक है।

सूची—

कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcuim gluconate), कोलायड कैल्शियम (Colloid Calcium), अर्गोमेट्रिन (Ergometrine)।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

एण्टोस्टैब (Antostab), फिजोस्टैब (Physostab), लुटियोस्टैब (Luteostab) आदि।

पेशीशूल (Myalgia)

(१) दशांग प्रलेप (शा० सं०) शूल स्थान पर उष्ण कर लगाना।

R/

(२) लिनिमेण्ट क्लोरोफार्म (Liniment Chloroform)

शूल स्थान पर लगाना।

R/

(३) बेलाडोना प्लास्टर (Belladonna Plastar)

शूल स्थान पर लगाना।

R/

(४) एण्टीफ्लोजिस्टन (Antiphlogistine)

शूल स्थान पर व्यवहृत करना।

R/

(५) पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	१० ग्रेन
सोडा सैलिसिलेट	(Soda Salicylas)	" "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० बूंद
टिं० बेलाडोना	(Tr Belladonna)	५ "
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(६) फेनासिटिन	(Phenacetin)	५ ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	" "

३, ४ मात्रा।

R/

(७) सेलाइन सूची (Saline injection)

त्वचागत।

पेशी शोथ (Myositis)

(१) दशांग प्रलेप शोथ स्थान पर लगाना।

R/

(२) पाट० आयोडाइड	(Pot Iodide)	१० ग्रेन
सोडा सैलिसिलेट	(Soda Salicylate)	" "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा।

R/
(३) बेलाडोना प्लास्टर (Belladonna Plaster) स्थानिक उपयोग ।

R/
(४) एण्टीफ्लेविन (Antiflavin)

या

एण्टीफ्लोजिस्टिन (Antiphlogistine) स्थानिक उपयोग ।

R/
(५) मार्फीन सूची (Morphine Injection)
त्वचागत । वेदना शमनार्थं ।

वृक्क शोथ (Nephritis)

R/

(१) पाट० एसिटास	(Pot. Acetas)	१५ ग्रेन
लाइकर अमन एसिटास	(Liqr. Ammon Acetas)	१½ ड्राम
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	१५ बूंद
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscyamus)	२० ,,
सीरप लीमन	(Syrup Lemon)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा ।

R/

(२) लाइकर अमन एसीटेट	(Liqr Ammon Acetate)	१५ बूंद
पाट० एसिटेट	(Pot. Acetate)	१५ ग्रेन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
मेगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा ।

R/

(३) पाट० एसीटेट	(Pot. Acetate)	१५ ग्रेन
लाइकर फेरी एसीटेट	(Liqr Ferri Acetate)	१५ बूंद
लाइकर अमन एसीटेट	(Liqr Ammon Acetate)	१½ ड्राम
सीरप लीमन	(Syrup Lemon)	१ ,,
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ,,

जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । भोजनोपरान्त ।

R/

(४) टि० फेरी परक्लोर	(Tr. Ferri Perchlor)	१५ बूंद
टि० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	१० „
स्पि० क्लरोफार्म	(Spt. Chloroform)	„ „
मैग सल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । भोजनोपरान्त ।

R/

(५) सोडा सल्फ	(Soda Sulph)	१५ ग्रेन
मैग सल्फ	(Mag Sulph)	½ ड्राम
फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	२ ग्रेन
पल्व डिजिटेलिस	(Pulv Digitalis)	१ „
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । भोजनोपरान्त ।

R/

(६) फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	१ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट एलज	(Ext. Aloes)	„ „
पल्व डिजिटेलिस	(Pulv. Digitalis)	„ „
पिलुला सैपोनिस	(Pillula Saponis)	२ „

३ मात्रा ।

R/

(७) टि० फेरी परक्लोर	(Tr. Ferri Perchlor)	१० बूंद
एसीटिक एसिड डिल	(Acetic Acid dil)	१५ „
लाइकर अमन एसीटेट	(Liqr. Ammon Acetate)	१ ड्राम
सीरप आरेंशाई	(Syrup Aurantii)	„ „
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा । स्वेदल तथा मूत्रल है ।

R/

(८) अमन क्लोराइड	(Ammon Chloride)	१० ग्रेन
टि० फेरी परक्लोर	(Tr. Ferri Perchlor)	१० बूंद

मैग सल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।

मूत्र में अल्ब्यूमिन (Albumin) को कम करती है।

R/

(९) पाट० एसीटेट	(Pot. Acetate)	१५ ग्रेन
पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	३ "
स्पि० जुनिपर	(Spt. Juniper)	३० बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
मैग सल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

चिरकालिक वृक्क शोथ नाशक है।

R/

(१०) यूरिया	(Urea)	१२ ग्रेन

३ मात्रा। एकस प्ताह तक

शोथ (Dropsy) नाशक है।

R/

(११) एमीनोफाइलिन टिकिया	(Aminophylline Tabt.)	१–२ गोली

३ मात्रा।

सूची—

नेप्टाल (Neptol), एमीनोफाइलिन (Aminophylline).

मूत्रविषता (Uraemia)

R/

(१) टि० जलापा	(Tr. Jalapa)	१ ड्राम
एक्स्ट्रैक्ट कैस्केरा लिक्विड	(Ext. Cascara Liquid)	½ "
सीरप जिंजिबेरिस	(Syrup Zingiberis)	१ "
आयल सिनेमम	(Oil Cinnamom)	⅓ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

१ मात्रा।

रात्रि में सोते समय।

R/

(२) टि० जलापा	(Tr. Jalapa)	१ ड्राम
टि० सेना को०	(Tr. Senna Co.)	„ „
एसिड पोटेसियमटार्ट्रेटिस	(Acid Potassium Tartiatis)	„ „
सीरप जिंजिबेरिस	(Syrup Zingiberis)	„ „
जल	(Aqua)	१ औंस

१ मात्रा। प्रातःकाल।

R/

(३) कैफीन हाइड्रोब्रोमाइड	(Caffeine Hydrobromide)	२ ग्रेन
टिं० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	५ बूंद
टिं० स्ट्रोफेंथस	(Tr. Strophanthus)	५ „
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

हृदय को शक्ति देती है, रक्तचाप को उच्च करती है।

R/

(४) अमन बेंजोएट	(Ammon Benzoate)	१२ ग्रेन
लाइकर अमन एसीटेट	(Liqr Ammon Acetate)	१½ ड्राम
स्पि० ईथरिस	(Spt. Aetheris)	२० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

R/

(५) टि० कैनेबिस इण्डिका	(Tr. Cannabis Indica)	१५ बूंद
पाट० ब्रोमाइड	(Pt. Bromide)	१० ग्रेन
टि० डिजिटेलिस	(Tr: Digitalis)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	५ „
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

नोट—नं० ४, ५ की ओषधियाँ मूत्रविषमयता के प्रलाप, निद्रानाश तथा बेचैनी को नष्ट करती है।

R/

(६) सोडा बेंजोएट	(Soda Benzoate)	३ ग्रेन

इन्फुजन बुकु	(Inf. Buchu)	१ औंस

३, ४ मात्रा

वेदना नाशक है।

R/

(७) कैफीन साइट्रास	(Caffeine Citras)	५ ग्रेन
टिं० कैक्टि ग्रेण्डिफ्लोरिया	(Tr. Cacti Grandiflora)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

मूत्रल तथा हृदय को शक्ति दायक है।

R/

(८) एड्रेनलीन	(Adrenalin)	१/२ ग्राम

२ मात्रा

R/

(९) एक्स्ट्रैक्ट वलेरियन	(Ext. Valerian)	३ ग्रेन

कैप्सुल में ४ मात्रा

R/

(१०) लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ग्रिण्डिलिया	(Liquid Ext. Grindelia)	१० बूंद
स्पि० ईथरिस	(Spt. Aetheris)	२० "
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा

श्वास कष्ट नाशक है।

R/

(११) एसिड हाइड्रोसायनिक	(Acid Hydrocyanic Dil)	३ बूंद
एसिड कार्बोलिक	(Acid Carbolic)	१ "
लाइकर एड्रेनलिन हाइड्रोक्लोर	(Liqr Adrenalin Hydrochlor)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा

वमन नाशक है।

(१२) शिरा से २० औंस रक्त निकाल १० औंस नारमल सेलाइन प्रविष्ट करना।

सूची—

एड्रनलीन (Adrenalin), पिलोकार्पीन नाइट्रेट (Pilocarpine Nitrate), डेक्स्ट्रोज (Dextroze), मैग्नीज सल्फ (Megnes Sulph)।

वातनाड़ी शूल (Neuralgia)

(१) योगराज गुग्गुल (शा० स०) १ माशा

अनुपान—गरम दूध। प्रातःकाल।

(२) महायोगराज गुग्गुल (शा० स०) ४ रत्ती

अनुपान—गरम दूध। प्रातःकाल।

(३) बबूल छाल	१ तोला	असगंध	१ तोला	हाउबेर	१ तोला
शतावर	१ ”	रास्ना	१ ”	सौंफ	१ ”
गोखरू	१ ”	गुरुच	१ ”	विधारा	१ ”
अजवायन	१ ”	सोंठ	१ ”		

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

गुग्गुल १२ तोला चूर्ण १२ तोला गोघृत ६ तोला

लोह खरल में काजल सदृश होने तक खरल कर १, माशे की गोली बनावे।

मात्रा—१ से ६ गोली। अनुपान—गरम दूध

प्रातः तथा सायंकाल।

नोट—उपर्युक्त तीनों ओषधियाँ शूल नाशक हैं।

(४) महाविष्णु तैल मर्दन करना। शूल नाशक है।

(५) महानारायण तैल (शा० स०) पिलाना, मर्दन करना तथा नस्य देना।

वात शूल तथा वातव्याधि नाशन में श्रेष्ठतम है।

नोट—महानारायण तैल का व्यवहार वायु शून्य स्थान में करते हैं।

(६) बृहतवात चिन्तामणि रस (लि० यो० स०) २ रत्ती

अनुपान—मधु। २ मात्रा।

(७) वातगजांकुश रस (र० सा० स०) २ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(८) फेरी एट अमन साइट्रास	(Ferri et Ammon Citras)	२० ग्रेन
लाइकर आर्सनिकलिस	(Liqr. Arsenicalis)	३ बूंद
टिं० नक्स वोमिका	(Tr Nux Vomica)	५ ”
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(९) सोडा सेलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	५ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। तीव्र वेदना नाशक है।

R/

(१०) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	५ "
कैफीन	(Caffeine)	३ "

३ मात्रा।

R/

(११) टि० जेल्शिमियम	(Tr Gelsimium)	१० बूंद

३ मात्रा। वेदना नाशन में उत्तम है।

नोटः—नं० ८ से ११ तक की ओषधियाँ पाण्डु जन्य नाडी शूल नाशक हैं।

R/

(१२) सोडा सेलिसिलास	(Soda Salicylas)	५ ग्रेन
फेनाजोन	(Phenazone)	" "
टि० स्ट्रोफेंथस	(Tr. Strophanthus)	३ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० "
मेगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा। वातरक्त जन्य नाड़ी शूल नाशक है।

R/

(१३) ब्युटिल क्लोरल	(Butyl Chloral)	५ ग्रेन
टि० जेल्शिमियम	(Tr Gelsimium)	१० बूंद
काड लिवर आयल	(Cod Liver oil)	½ ड्राम
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	९ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा।

R/

(१४) सोडियम आयोडाइड	(Sodium Iodide)	५ ग्रेन
सोडियम सैलिसिलेट	(Sodium Salicylate)	१० "
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। मुखमण्डल के नाड़ी शूल नाशन में श्रेष्ठतम है।

R/

(१५) ब्युटिल क्लोरल	(Butyl Chloral)	५ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट कैनेबिस इण्डिका	(Ext. Cannabis Indica)	$\frac{1}{8}$ "

१ गोली। ३ मात्रा।

R/

(१६) एक्स्ट्रैक्ट जेल्शिमियम	(Ext. Gelsimium)	¼ ग्रेन
क्वीनीन वलेरियनेट	(Quinine Valerianate)	१½ "
जिक वलेरियनेट	(Zinc Valerianate)	" "
फेरी वलेरियनेट	(Ferri Valerianate)	" "

२ मात्रा। भोजनोपरान्त। योषापस्मार जन्य मुखमण्डल नाड़ी शूल नाशक है।

R/

(१७) टिं० जेल्शिमियम	(Tr. Gelsimium)	१० बूंद
अमन क्लोराइड	(Ammon Chloride)	१५ ग्रेन
टिं० एकोनाइट	(Tr. Aconite)	२ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।

R/

(१८) सोडा सैलिसिलेट	(Soda Salicylate)	१० ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	५ "
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	" "

२ मात्रा। शिरः शूल नाशक है।

R/

(१९) कोडीन सल्फ	(Codeine Sulph)	१ ग्रेन

टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

आशयिक नाड़ीशूल नाशक है।

R/

(२०) कीनीन वाई हाइड्रोक्लोर	(Quinine hydrochlor)	३ ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	५ "
कैल्शियम	(Calcium)	६ "
मार्फीन हाइड्रोक्लोर	(Morphin hydrochlor)	$\frac{1}{6}$ "
		३ मात्रा

सर्वोत्तम है।

R/

(२१) टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	२ ड्राम
टिं० ओपियम	(Tr. opium)	२ "
मीथिल सैलिसिलेट को०	(Methyle Salicylate Co.)	२ "
स्पि० कैम्फर	(Spt Camphor)	४ "

स्थानिक लेप।

R/

(२२) लिनिमेण्ट बेलाडोना (Liniment Belladonna)

या

लिनिमेण्ट एकोनाइट (Liniment Aconite)

या

लिनिमेण्ट ओपियम (Liniment opium)

या

लिनिमेण्ट ए०, बी०, सी० (Liniment A. B. C.)

इनमें से किसी एक का स्थानिक लेप शूलनिवारणार्थ करते हैं।

R/

(२३) प्लैनोकेन गोली (Planocain tab) १ गोली

या

नोवल्जिन टिकिया (Novalgin Tab) १ गोली

२ मात्रा

सूची—

अल्कोहल १०% (Alcohol 10%), स्ट्रिक्नीन (Strychnine), नाव-लिजन (Novalgin), सिवाल्जिन (Cibalgin).

पेटेण्ट ओषधियां—

विटामाइड फोर्ट (Bitamide Forte), कैल्शिमा डी (Calcima D), सीडे-मान (Sedamon), लुपाट (Lupot), फेनास्कोडीन (Phenascodin), बार्बी-टोन (Barbitone), ईमोसिन टिकिया (Emocin Tab), ब्युटिलक्लोरल हाइड्रेड एण्ड जेल्सिमाइन (Butyl Chloral hydrate and Gelsimine)

नाड़ी दौर्बल्य (Neurasthenia)

R/

(१) सोडा बाइकार्ब	(Soda Bicarb)	१५ ग्रेन
एसिड हाइड्रोसायनिक डिल	(Acid Hydrocyanic dil)	३ बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
टि० कार्ड० को	(Tr. Card. Co)	२० बूंद
एक्वा क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

३ मात्रा

भोजन से आध घण्टा पूर्व।

R/

(२) कैल्शियम ग्लीसरोफास्फेट	(Calcium glycerophasphate)	१ ड्राम
स्ट्रिक्नीन आर्सनेटिस	(Strychnine Arsenatis)	¼ ग्रेन
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
सीरप आरेंशाई	(Syrup Aurantii)	२ ”
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

भोजनोपरान्त।

R/

(३) मीथाइल सल्फोनाल	(Methyl Sulphonal)	१९ ग्रेन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१½ ड्राम
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ”

जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(४) पाट० ब्रोमाइड	(Pot Bromide)	१५ ग्रेन
कैल्शियम ग्लिसरोफास्फेट	(Calcium glycerophosphate)	५ ”
टिं० नक्स वोमिका	(Tr Nux Vomica)	५ बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा
		निद्रा लाती है।

R/

(५) सीरप ग्लीसरो फास्फेट को०	(Syrup glycerophasphate co.)	½ ड्राम
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	५ बूंद
एसिड फास्फरिक डिल	(Acid Phosphoric Dil)	१० ”
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा
		भोजनोपरान्त।

R/

(६) फेरी ग्लीसरोफास्फेट	(Ferri glycerophosphate)	२ ग्रेन
फास्फेरि	(Phospheri)	$\frac{1}{60}$ ”
एक्स्ट्रैक्ट कैनेबिस इण्डिका	(Ext. Cannabis Indica)	¼ ”
		१ गोली
		२ मात्रा

R/

(७) थायरायड टिकिया	(Thyroid Tabt) ¼–१ ग्रेन	१ गोली
		३ मात्रा। भोजनोपरान्त

सूची—

सोडियम ग्लीसरोफास्फेट (Sodium Glycerophosphate), कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium gluconate)

पेटेण्ट औषधियाँ—

गार्डनाल (Gardenal), पेप्ट आयरन (Pept iron)

नाड़ी शोथ (Neuritis)

R/

(१) सोडा सैलिसिलास	(Soda salicylas)	१० ग्रेन
कोडीनसल्फ	(Codeinsulph)	१ "
एस्पिरिन	(Aspirin)	५ "
क्लोरलहाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	१० "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

वेदना तथा अनिद्रा नाशक है।

R/

(२) विटामिन बी १ टिकिया	(VitaminB. Tabt.)	१ गोली
		३ मात्रा

R/

(३) सिबाल्जिन टिकिया	(Cibalgin tabt)	१ गोली
		३, ४ मात्रा

R/

(४) सल्फाथायोजाल गोली	(Sulphathiozol Tabt)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन
		३ मात्रा

सूची—

विटामिन बी (Vitamin B), सिबाल्जिन (Cibalgin)

मेदो रोग (Obasity)

(१) गोमूत्र ½ पाव मधु १½ तोला

प्रातः तथा सायंकाल

स्थूल शरीर दुर्बल होता है।

(२) सोंठ १ तोला पीपर १ तोला मरीच १ तोला
हरड़ १ " बहेड़ा १ " आंवला १ "

इनका कपड़छान चूर्ण करे। इसमें सोंठ के बराबर गुग्गुल मिला बेर सदृश गोली बनावे।

मात्रा—१-२ गोली। अनुपान—गोमूत्र प्रातः तथा सायंकाल।

अमृतादि गुग्गुल—

(३) गुरुच १ भाग छोटी इलायची २ भाग विडंग ३ भाग
कुटज ४ " इन्द्रयव ५ " हर्रा ६ "
आंवला ७ "

इनका कपड़छान चूर्ण करे। चूर्ण में ८ भाग शुद्ध गुग्गुल मिला मधु के साथ मर्दन कर रखे।

मात्रा—६ माशा। अनुपान—मधु
प्रातः तथा सायकाल।

(४) वायविडंग १ तोला आँवला १ तोला सोंठ १ तोला
यवक्षार १ " मुलेठी १ "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखे।

चूर्ण ३ माशा लोहभस्म ३ रत्ती
अनुपान—मधु
प्रातः तथा सायंकाल।

दशांग गुग्गुल—

(५) त्रिकटु १ तोला त्रिफला १ तोला नागरमोथा १ तोला
चीता की जड़ १ " वायविडंग १ "

इनका कपड़छान चूर्ण कर १ तोला शुद्ध गुग्गुल मिला रखे।

मात्रा—६ माशा। अनुपान—मधु
प्रातः तथा सायकाल सर्वोत्तम है।

त्र्यूषणादिलोह—

(६) त्रिकटु १ तोला भांग १ तोला चव्य १ तोला
चीता १ " कालानमक १ " सेंधानमक १ "
औद्भिद नमक १ " सोंचर नमक १ " सोमराजी १ "

इनका कपड़छान चूर्ण करे। इस चूर्ण में इसके बराबर लोह भस्म मिला रखे।

मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—असमान घी तथा मधु
प्रातः तथा सायंकाल।

(७) लोह रसायन १ तोला

अनुपान—दूध
प्रातः तथा सायकाल।

नोट—केला, करील, करेला, करौंदा, कुन्द तथा कांजी लोहरसायन के सेवन काल में वर्ज्य है।

(८) त्रिफलाद्यतैल

मर्दन करना।

स्थूलता को नष्ट कर दुर्बल बनाता है।

(९) महासुगन्धि तल मर्दन करना।

R/

(१०) सोडियम आयोडाइड	(Sodium Iodide)	३ ग्रेन
लाइकर थायरायडीन	(Liqr. Thyroidein)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	" "
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट फुसी-वेसिकुलोस	(Liquid Ext. Fuci-vesiculosi)	१ ड्राम
मैगसल्फ	(Mag Sulph')	१½ "
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।

R/

(११) थायरायड एक्स्ट्रैक्ट की टिकिया	(Ext. Thyroid tabt) ½–१ ग्रेन	१ टिकिया

३ मात्रा।

उदरावरण शोथ (Peritonitis)

R/

(१) बिस्मथ सैलिसिलेट	(Bismuth Salicylate)	१५ ग्रेन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	" बूंद
मुसिलेज एकेसिमा	(Mucilage Acacia)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(२) आयडोफार्म	(Iodoform)	½ ग्रेन
टि० लेवेण्डुली को०	(Tr. Lavandulae Co)	७ बूंद
इमल्सि ओलियाई मार्ह	(Emulsi Olei Morrha)	१ ड्राम

२ मात्रा।

भोजनोपरान्त।

R/

(३) आयडोफार्म	(Iodoform)	$\frac{1}{2}$ ग्रेन
क्रियोजोट	(Creosote)	$\frac{1}{2}$,,

कैप्सुल में। २ मात्रा।
वेदना नाशक है।

R/

(४) काड लिवर आयल	(Cod Liver oil)	१ चिमाच

भोजनोपरान्त।

R/

(५) ग्लिसरो फेरी आयोडाइड	(Glycero-Ferri-Iodide)	२० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(६) डोवर्स पाउडर	(Dover's Powder)	१० ग्रेन

३ मात्रा।
तीव्र वेदना नाशक है।

R/

(७) आयडोफार्म मलहम	(Iodoform Oint)	१ औंस
ओलिव आयल	(Olive Oil)	,, ,,

उदर पर मर्दन करना।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(८) आयडो फार्म	(Iodoform)	१ औंस
काड लिवर आयल	(Cod Liver Oil)	,, ,,

उदर पर मर्दन करना।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(९) क्रोटन आयल	(Croton Oil)

उदर पर मर्दन करना।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(१०) एम० एण्ड बी० ६९३ (M & B 693) २ टिकिया
सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन
३ मात्रा।

R/

(११) प्रोसेप्टेसिन (Proseptecin) १ गोली
या
साल्यु सेप्टेसिन (Soluseptecin) १ गोली
सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन
३ मात्रा।

सूची—

नार्मल सेलाइन (Narmal Saline)

स्वेदाधिक्य (Perspiration)

(१) दारुहल्दी १ भाग शीरषछाल १ भाग
तिल ,, ,, खस ,, ,,
लोध्र ,, ,, केशर ,, ,,
इनका कपड़छान चूर्ण करे। इस चूर्ण को शरीर में मले।

(२) हरड़ चूर्ण २ माशा मधु ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) हरड़ चूर्ण शरीर पर मल स्नान करना।

(४) भूनी मूंग चूर्ण हाथ तथा पांव में मलना।

(५) मुक्ता भस्म २ रत्ती मधु ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(६) भुनी कुलथी चूर्ण १ पाव
पीली कौड़ी भस्म १ पाव
हाथ, पाँव पर मर्दन करना शीत का स्वेद बन्द होता है।

(७) काले धतूर के भूने बीज का चूर्ण १ माशा
१ मात्रा।
शीत का स्वेद बन्द होता है।

(८) बबूल के सूखे पत्ते का चूर्ण मर्दन करना।

(९) अबीर — शरीर में मलना।
विसूचिकागत भी स्वेदाधिक्य नाशक है।

(१०) प्रवाल भस्म — २ रत्ती — मधु — ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(११) टिं० अर्गट	(Tr. Ergot)	३० बूंद
टिं० एगरिसि	(Tr Agarici)	१५ "
क्लोरोफर्म जल	(Aqua Chloroform)	१ औंस

रात्रि में सोते समय
तीव्र स्वेद नाशक है।

R/

(१२) एसिड कैम्फरेसि	(Acid Camphoraci)	३ ग्रेन
एसिड एगरिसि	(Acid Agarici)	१ "

१ गोली। रात्रि में सोते समय
रात्रि के पसीने को बन्द करती है।

R/

(१३) एट्रोपीन गोली	(Atropin tabt)	१ गोली

२ मात्रा।

R/

(१४) एसिड सेलिसिलिक	(Acid Salicylic)	१० ग्रेन
एसिड बोरिक	(Acid Boric)	४ ड्राम
पल्व एमाइल	(Pulv Amyli)	१ "
पल्व टाक	(Pulv Talc)	१ औंस

पैर के तलवे पर छिड़कना
तलवे के दुर्गन्धित स्वेद का नाशक है।

R/

(१५) कैम्फरिक एसिड	(Camphoric Acid)	३० बूंद

कैप्सुल में
रात्रि को सोते समय।

R/

(१६) एट्रोपीन	(Atropin)	$\frac{1}{100}$ ग्रेन
कैम्फरिक एसिड	(Camphoric Acid)	३ "

एगरिक एसिड (AgaricAcid) $\frac{1}{4}$ "

१ गोली।

रात्रि को सोते समय।

R/

(१७) पल्व इपीकाक को० (Pulv. Ipecac Co.) ५ ग्रेन

एट्रोपीन (Atropin) $\frac{1}{100}$ "

रात्रि को सोते समय।

(१८) पिक्रोटाक्सिन (Picrotoxin) $\frac{1}{100}$ ग्रेन

एगरिसिन (Agaricin) $\frac{1}{8}$ "

रात्रि को सोते समय।

R/

(१९) टैनोफार्म पाउडर (Tannoform Powder)

सम्पूर्ण शरीर पर छिड़कना।

सूची—

एट्रोपीन (Atropin), कोरामीन (Coramin), कम्फर इन ईथर (Camphor in Ether), कंम्फर इन आयल (Camphor in oil) आदि।

अग्निरोहिणी (Plague)

(१) देवकारड १ पाव मरीच $\frac{1}{2}$ छटाँक

इनको एकत्र पीस १ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली, अनुपान—मधु।

प्रातः तथा सायंकाल।

(२) देवकारड जल के साथ पीस बढ़ती हुई ग्रंथि (गाँठ) पर लगाना।

ग्रन्थि को बैठा देती है।

(३) मुक्ता भस्म १ रत्ती श्रृंग भस्म २ रत्ती

अनुपान—मधु, ३ मात्रा।

हृदय को शक्ति देती है तथा वक्ष की वेदना नष्ट करती है।

(४) कैलोमल (Calomel) २–४ ग्रेन

दस्त लाती है।

R/

(५) हाइड्रार्ज परक्लोर (Hydrarg perchlor) ५ ग्रेन

टि० स्ट्रोफैंथस (Tr. Strophanthus) ३ बूंद

मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा

हृदयावसाद नाशक है।

R/

(६) लिनिमेण्ट बेलाडोना (Liniment Belladonna)

ग्रंथि पर लगावे।

R/

(७) आयोडीन मलहम (Iodine Ointment)

ग्रंथि पर मल सेंक करे। ग्रंथि बैठ जाती है।

R/

(८) इक्थ्याल मलहम (Ichthyol oint)

ग्रंथि पर मलना। ग्रंथि बैठ जाती है।

R/

(९) सल्फाडायजिन	(Sulphadiazine)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा

प्लेग नाशक है।

सूची—

R/

(११) आयोडीन सूची (Iodine injection)

शिरागत।

प्लेग के जीवाणुओं को नष्ट करती है।

R/

(११) डिजिटेलिस सूची (Digitalis injection)

त्वचागत। हृदयावसाद नाशक है।

R/

(१२) स्ट्रिक्नीन (Strychnine)

त्वचागत। हृदयावसाद नाशक है।

R

(१३) कोरामीन (Coramin)

मांसगत। हृदयावसाद नाशक है।

(१४) पेंसिलिन (Pencillin)

१, १ लाख प्रति ६ घंटे पर मांस में

फुफ्फुसावरणशोथ (Pleurisy)

(१) वसन्तमालती	(रसयोगसागर)	२ रत्ती
पीपरचूर्ण		४ ,,

अनुपान—मधु
प्रातः तथा सायंकाल

R/

(२) अमन क्लोराइड	(Ammon chloride)	१० ग्रेन
वाइनम एण्टीमोनियल	(Vinum Antimonial)	१० ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा
शूल नाशक है।

R/

(३) टिं० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co.)	१० बूंद
टिं० सिला	(Tr Scilla)	१५ ,,
टिं० सेनीगा	(Tr. Senega)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा
दुखदाई कास नाशक है।

R/

(४) कैफीन साइट्रास	(Caffein citras)	५ ग्रेन
सोडा बेंजोएट	(Soda Benzoat)	५ ,,

२ मात्रा
आवरणगत तरलाधिक्य को शोषित करती है।

R/

(५) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	२० ग्रेन
सैलिसिनि	(Salicini)	१० ,,
एक्स्ट्रैक्ट ओपियम लिक्विड	(Ext. Opium Liquid)	१० ,,
लाइकर अमन एसिटास	(Liqr Ammon Acetas)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा
वेदना नाशक है।

R/

(६) मेंथल	(Menthol)	१० ग्रेन
कोकीन हाइड्रोक्लोर	(Cocaine Hydrochlor)	५ ,,
एडिपिस लेनी	(Adipis Lanae)	१ औंस

वक्ष पर मर्दन करना।

R/

(७) सीबेजाल	(Cibezol)	२ गोली
सोडाबाईकार्ब	(Sodabicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा

कर्कट सन्निपात, फुफ्फुस प्रदाह (Pneumonia)

(१) शुद्ध हिंगुल	१ तोला	शुद्ध मीठा विष	१ तोला
शुद्ध सुहागा	१ ,,	जावित्री	१ ,,
जायफल	१ ,,	मरीच	१ ,,
पीपर	१ ,,	असल कस्तूरी	१ ,,

इन्हें जल के साथ खरल कर रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बना रखे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—आदी स्वरस
प्रातः तथा सायकाल

(२) शंखभस्म	१ माशा	शुद्ध सुहागा	१ माशा
सोंठ चूर्ण	,, ,,	शुद्ध मीठा विष चूर्ण	५ ,,
मरीच चूर्ण	,, ,,		

इन्हे आदी स्वरस में ३ दिन खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावें।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—आदी स्वरस
प्रातः तथा सायकाल।

(३) घी में भुनी हींग	१ तोला	कस्तूरी	१ तोला
कपूर	,, ,,		

इन्हे एकत्र खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावें।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—आदी स्वरस
प्रातः तथा सायकाल।

(४) सरिवन	१ तोला	पृश्नपर्णी	१ तोला
पिठवन	,, ,,	सोनापाठा	,, ,,
दोनों कटेरी	,, ,,	गम्भारी	,, ,,

गोखरू	१ तोला	पाढ़ल	१ तोला
बेल	" "		

इनको एकत्र जौ कुट करे, फिर १ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्काथ करे। १ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। उपद्रवयुक्त फुफ्फुस प्रदाह नाशक है। सर्वोत्तम है।

(५) मार्ग्यादि कषाय ½ छटाँक २, ३ मात्रा।

(६) मुक्ताभस्म २ रत्ती श‍ृंगभस्म ४ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायकाल। वक्ष की वेदना तथा श्वास कष्ट नाशक है।

(७) गोघृत ½ छटांक सेंधा नमक २ तोला

वक्ष पर मर्दन करना। शूल नाशक तथा कफ निस्सारक है।

R/

(८) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१५ ग्रेन
स्पि० ईथरिस को०	(Spt Aetheris Co)	३० बूंद
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromat.)	१५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

व्याधि जन्य विष शोषण में सहायक होता है।

R/

(९) अमन क्लोराइड	(Ammon Chloride)	१० ग्रेन
वाइनम एण्टीमनी	(Vinum Antimony)	१५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	१ ड्राम
स्पि० कंम्फर	(Spt. Camphor)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

भोजनोपरान्त। कफ निस्सारक है।

R/

(१०) टिं० डिजिटेलिस (Tr. Digitalis) ५ बूंद

टिं० नक्स वोमिका	(Tr Nux Vomica)	५ बूंद
स्पि० अमन एरोमेट०	(Spt. Ammon Aromat)	१५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।
हृदयावसाद नाशक है।

R/

(११) मेडिनाल	(Medinal)	१० ग्रेन
एस्पिरिन	(Aspirin)	" "
कैफीन	(Caffein)	३ "

१ मात्रा।
निद्रा लाती है।

R/

(१२) टिं० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	१० बूंद
लाइकर स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Strychnine Hydro.)	५ "
स्पि० ईथरिस	(Spt. Aetheris)	२० "
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।
हृदयावसाद नाशक है।

R/

(१३) एम एण्ड बी ६९३	(M. & B. 693)	२ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन

३ मात्रा।
श्वास कष्ट, वेदना तथा विष नाशक है।

R/

(१४) एण्टीफ्लोजिस्टिन (Antiphlogestin) वक्ष पर लगाना।

सूची—

स्ट्रिक्नीन (Strychnine) कोरामीन (Coramin), पेनिसिलिन (Penicillin), कैल्शियम विथ रिडाक्सान (Calcium with Redokon), डेक्स्ट्रोज (Dextrose), स्ट्रोफेंथिन (Strophanthin), क्वीनो कैल्शियम (Quino Calcium), पल्मोट्रान (Pulmotran), कोरासोल क्वीनीन (Corasol Quinine).

पूयात्मक वृक्क शोथ (Pȳelonephritis)

R/

(१) एसिजेन	(Acigen)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा।

R/

(२) अमन बेंजोएटिस	(Ammon Benzoatis)	८ ग्रेन
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ओपियम	(Liquid Ext. Opium)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(३) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१५ ,,
हेक्सामिन	(Hexamine)	१० ,,
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscyamus)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

R/

(४) अमन एसीटास	(Ammon Acetas)	१० ग्रेन
पाट० साइट्रास	(Pot Citras)	,, ,,
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	१५ बूंद
हेल्मिटाल	(Helmitol)	५ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(५) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१० ग्रेन
यूरेट्रोपिन	(Uratropin)	८ ,,
टिं० बुचु	(Tr. Buchu)	२० बूंद
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscyamus)	१० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(६) सिस्टोप्योरिन	(Cystopurin)	१० ग्रेन
		३ मात्रा।

R/

(७) सल्फाडाइजीन	(Sulphadiazın)	१ गोली
सोडा बाइकार्ब	(Soda Bıcarb)	१० ग्रेन
		३, ४ मात्रा।

R/

(८) सिबेजाल	(Cıbazol)	१ गोली
सोडा बाइकार्ब	(Soda Bıcarb)	१० ग्रेन
		३, ४ मात्रा।

R/

(९) प्रोसेप्टेसिन	(Proseptasıne)	१ गोली
सोडा बाइकार्ब	(Soda Bıcarb)	५ ग्रेन
		३ मात्रा।

R/

(१०) एम एण्ड बी ६९३	(M. & B. 693)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bıcarb)	९ ग्रेन
		३, ४ मात्रा।

नोट—नं० ७ से १० तक की ओषधियाँ शोथ तथा पूय नाशक है।

सूची—

पाइलोप्युरिन (Pyelopurın) ५ सी० सी० शिरागत।

पूयमयता (Pyaemia)

R/

(१) क्वीनीन सल्फ	(Quinıne Sulph)	३ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dıl)	१० बूंद
टि० फेरी परक्लोर	(Tr. Ferrı Perchloı)	१५ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		४ मात्रा

R/

(२) फेरी एट अमन साइट्रास	(Ferrı et Ammon Cıtras)	५ ग्रेन
लाइकर आर्सेनिकलिस	(Lıqr Arsenıcalıs)	२ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा

R/

(३) टिं० फेरी परक्लोर (Tr. Ferri Perchlor) २० बूंद
जल (Aqua) १ औंस
३, ४ मात्रा

R/

(४) सल्फाडाएजिन (Sulphadiazin) १ गोली
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) १० ग्रेन
४ मात्रा
पूयनाशक है।

सूची—

R/

(५) सेलाइन (Saline)
शिरा, चर्म वा गुदमार्ग से। अति ही उपयोगी है।

R/

(६) कोलायडल मैंगनीज (Colloidal Manganese)
शिरागत।
पूयमयता नाशन में उत्तमोत्तम है।

R/

(७) कोलार्गोल २ प्र० श० (Collargol 2%) शिरागत

R/

(८) कोलायडल सिल्वर (Colloidal Silver) शिरागत।

R/

(९) मार्फीन (Morphine) त्वचागत।
बेचैनी, प्रलाप तथा वेदना नाशक है।

R/

(१०) पेनिसिलिन (Penicillin)
पूय नाशन में सर्वोत्तम है। मांसगत।

R/

(११) स्ट्रेप्टोकोकस वैक्सीन (Streptococcus Vaccine)

पेटेण्ट औषधियाँ—

सेप्टोसील एल्बम (Septosil Album), निकोसिल (Nicosil), प्रोसेप्टेसीन Proseptasine), सालुसेप्टेसीन (Soluseptasine), थिएजमाइड (Thiazamide),

एक्रीफ्लेविन (Acriflavine), डेक्स्ट्रोज (Dextrose), हाइड्रार्जिरी परक्लोर (Hydrargyri Perchlor), जेंशियन वायलेट (Gentian Violet), सल्फापाइरिडिन सोलुबुल (Sulphapyridine Soluble).

राजयक्ष्मा (Phthisis)

(१) वायविडङ्ग चूर्ण १ माशा हरड़चूर्ण १ माशा
शुद्ध शिलाजीत १ तोला स्वर्णमाक्षिकभस्म २ रत्ती
लोहभस्म २ रत्ती

अनुपान—असमान मात्रा में घी तथा मधु ।
प्रातः तथा सायंकाल । उग्र राजयक्ष्मा नाशक है ।

(२) धनियाँ ५ माशा सोंठ ५ माशा पीपर ५ माशा
दशमूल ,, ,, जल १ पाँव

इनका क्वाथ बनाये । जब ½ छटाँक जल शेष रहे तब छान कर पिलावे ।
प्रातः तथा सायंकाल ।
पार्श्वशूल, ज्वर, कास तथा दाह निश्चित नष्ट होता है ।

(३) त्रिफलाचूर्ण ४ तोला त्रिकटुचूर्ण ४ तोला
शतावरचूर्ण ४ ,, लोहभस्म ४ ,,

एकत्र मिला रखे ।
मात्रा—१ तोला । अनुपान—मधु । प्रातः तथा सायंकाल ।
उरःक्षत तथा कण्ठशूल नाशक है ।

(४) वायविडङ्गचूर्ण १ माशा हरड़ चूर्ण १ माशा
शुद्ध शिलाजीत १ माशा लोहभस्म २ रत्ती

अनुपान—असमान मात्रा में घी तथा मधु । प्रातः तथा सायंकाल ।
प्रबल श्वास, कास नष्ट होता है ।

सितोपलादि (शा० सं०)

(५) दालचीनी १ भाग लाची २ भाग पीपर ४ भाग
वसलोचन ८ ,,

इनका कपड़छान चूर्ण कर १६ भाग मिश्री मिला रखे ।
मात्रा—१-२ माशा । अनुपान—घी-१० माशा, मधु—५ माशा ।
प्रातः तथा सायंकाल
कास पार्श्वशूल, दाह तथा ज्वरादि नाशक है ।

(६) अडूसा स्वरस १ तोला कटेरी स्वरस १ तोला मधु २ माशा
पीपर चूर्ण ६ रत्ती

प्रातः तथा सायंकाल ।
दारुण श्वासनाशक है ।

तालीसादिचूर्ण (शा० सं०)

(७) तलीसपत्र	१ तोला	मरीच	२ तोला	सोंठ	३ तोला
पीपर	४ ,,	वंसलोचन	५ ,,	छोटी लाची का दाना	६ मा०
दालचीनी	६ माशा				

इनका कपड़छानचूर्ण कर ३२ तोला मिश्री मिला रखना। मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—मधु या कच्चा दूध। प्रातः तथा सायंकाल। उरःशूल, श्वास तथा कास नाशक है।

(८) लाक्षादितैल (शा० सं०)

नं० ७ की ओषधि के सेवन काल में शरीर में मर्दन करना। प्रातः तथा सायंकाल अति उत्तम है।

जातिफलादिचूर्ण (शा० सं०)

(९) जायफल	१ तोला	लाची	१ तोला	तेजपत्ता	१ तोला
दालचीनी	१ ,,	नागकेशर	१ ,,	सफेदचन्दन	१ ,,
सफेद तिल	१ ,,	वंसलोचन	१ ,,	कपूर	१ ,,
लवंग	१ ,,	तगर	१ ,,	आँवला	१ ,,
तालीसपत्र	१ ,,	पीपर	१ ,,	हरड़	१ ,,
कलोंजी	१ ,,	चीता	१ ,,	सोंठ	१ ,,
वायविडंग	१ ,,	मरीच	१ ,,	धुली भाँग	१ ,,

इनका कपड़छान चूर्ण कर ४० तोला मिश्री मिला रखना। मात्रा—१-४ माशा अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। श्वास, कास तथा शूल नष्ट कर नींद लाती है।

लवंगादि चूर्ण (शा० सं०)

(१०) लवंग	१ तोला	काली अगर	१ तोला
छोटी लाची	,, ,,	वसलोचन	,, ,,
शुद्ध कपूर	,, ,,	जटामांसी	,, ,,
तज	,, ,,	कमलगट्टे की बीज	,, ,,
नागकेशर	,, ,,	छोटी पीपर	,, ,,
जायफल	,, ,,	श्वेत चन्दन	,, ,,
वैतरा सोंठ	,, ,,	सुगन्धवाला	,, ,,
काला जीरा	,, ,,	कक्कोल	,, ,,
खस	,, ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण करे तथा इसमें ८॥ तोला मिश्री मिला रखे । मात्रा—४ रत्ती-२ माशा । अनुपान—मधु । प्रातः तथा सायंकाल । श्वास, कास, ज्वर, उरःशूल तथा रक्तष्ठीवन नाशन में सर्वोत्तम है ।

(११) कपूर	१ तोला	बालछड़िला	२ तोला
दालचीनी	,, ,,	मरीच	३ ,,
जायफल	,, ,,	पीपर	४ ,,
तेजपत्ता	,, ,,	सोंठ	५ ,,
कंकोल	,, ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण कर २० तोला मिश्री मिला रखे । मात्रा—६ माशा-१ तोला । अनुपान—मधु । प्रातः तथा सायंकाल । स्वरभङ्ग, कास, श्वास नाशक तथा हृदय हितकारी है ।

द्राक्षारिष्ट (शा० सं०)

(१२) उत्तम बीजहीन बड़ा मुनक्का	१½ सेर
जल	१० ,,

मन्द अग्नि पर कलईदार कराही में पकावे २॥ सेर जल शेष रहने पर शीतल कर मुनक्का को मसल छान ले ।

क्वाथ	२½ सेर	तेजपत्ता	२ तोला
मिश्री	१। ,,	वायविडंग	,, ,,
दालचीनी	२ तोला	प्रियंगु फूल	,, ,,
छोटी लाची बीज	,, ,,	मरीच	१ ,,
नागकेशर	,, ,,	छोटी पीपर	,, ,,

इन्हें एकत्र एक घी लगे हुये मिट्टी के पात्र में रख कपड़ मिट्टी द्वारा पात्र का मुख बन्द कर एक मास पर्यन्त जमीन में गाड़ रखते हैं । तत्पश्चात् औषधि को छानकर शीशियों में बन्द रखते हैं । मात्रा—६ माशा-२ तोला । अनुपान—जल । २ मात्रा भोजनोपरान्त । रक्तष्ठीवन बन्द करती है तथा दस्त साफ लाती है । यह द्राक्षारिष्ट है ।

नोट—इसके साथ साथ नं० ९ या १० का चूर्ण सेवन करावें तो अति उत्तम है ।

द्राक्षासव (शा० सं०)

(१३) द्राक्षा	१$\frac{१}{४}$ सेर	तेजपत्ता	$\frac{१}{२}$ पाव
मिश्री	५ "	सोंठ	" "
कटेरी की जड़	२॥ पाव	मरीच	" "
धायफूल	१। "	पीपर	" "
चिकनी सुपारी	$\frac{१}{२}$ "	नागकेशर	" "
लवंग	" "	मुस्तगी	" "
जावित्री	" "	कशेरू	" "
जायफल	" "	अकरकरा	" "
तज	" "	मीठा कूट	" "
बड़ी इलायची	" "	जल	३१। सेर

इनको एक मिट्टी के पात्र में रख कपड़ मिट्टी द्वारा पात्र का मुख बन्द कर १ मास तक जमीन में गाड़ रखना। तत्पश्चात् छान बोतलों में बन्द कर रखना। मात्रा—६ माशा–१ तोला अनुपान—जल २ मात्रा भोजनोपरान्त वीर्यवर्धक है। यह द्राक्षासव है।

बृहत्वासावलेह (यो० र०)

(१४) त्रिकटु	४ तोला	काला जीरा	४ तोला
दालचीनी	" "	लेवड़ी	" "
तेजपत्र	" "	पीपरामूल	" "
लाची	" "	चव्य	" "
कायफल	" "	कुटकी	" "
नागरमोथा	" "	हरड़	" "
कूठ	" "	तालीसपत्र	" "
कबीला	" "	धनियाँ	" "
श्वेत जीरा	" "		

इनका एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना।

अडूसे के जड़ की छाल	१२॥ सेर	जल	६४ सेर

कड़ाही में क्वाथ करे। १६ सेर जल शेष रहते छान ले।

क्वाथ	१६ सेर	चीनी	१२ सेर
चूर्ण	[illegible]		

इन्हें एकत्र पाक करे। जब लेह की भाँति गाढा हो जाय तब उतार शीतल कर एक सेर मधु मिला रखे। मात्रा—६ माशा से १ तोला। अनुपान—गरम जल प्रातः तथा सायंकाल स्वरभंग, कास अग्निसांध आदि नाशक है।

(१५) पाराभस्म १ तोला गुरुच सत्व १ तोला
लोहभस्म " "

इनको एकत्र खरल कर रखे। मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—घी तथा मधु असमान प्रमाण में। प्रात तथा सायंकाल।

(१६) च्यवनप्राश (च० सं०) ६ माशा—२ तोला
अनुपान—बकरी का दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(१७) वसन्त मालती (र० यो०) १ रत्ती
छोटी पीपर चूर्ण २ "
मधु ३ माशा

प्रातः तथा सायंकाल।

(१८) कुमुदेश्वर रस (र० यो०) ३ रत्ती
मरीच चूर्ण १ "
मिश्री २ माशा मधु ४ माशा

३ मात्रा। उत्तम है।

(१९) वसन्त मालती (सि० भै० म०) १ रत्ती
सितोपलादि चूर्ण १ माशा
मधु ६ माशा

प्रातः तथा सायंकाल
कास, श्वास तथा यक्ष्मा नाशक है।

(२०) कुमुदेश्वर रस (र० यो०) १ रत्ती
मरीच चूर्ण ३ रत्ती घी १० माशा

प्रातः तथा सायंकाल। बल तथा रक्तवर्धक और क्षय नाशक है।

(२१) वसन्त मालती (यो० र०) १ रत्ती
मक्खन २ तोला मिश्री १ तोला

प्रातः तथा सायंकाल। वीर्यवर्धक तथा शुष्क कास नाशक है।

(२२) राजमृगांकरस	(र० यो०)		४ रत्ती
मरीच चूर्ण	२ रत्ती	मधु	६ आशा
पीपर चूर्ण	६ "	घृत	१० "

प्रातः तथा सायंकाल।

(२३) मृगांकरस	(र० स०)		४ रत्ती
पीपर चूर्ण	६ रत्ती	घी	६ माशा

प्रातः तथा सायंकाल। सोपद्रव यक्ष्मा नाशक है।

(२४) महामृगांकरस	(र० यो०)		२ रत्ती
पीपर चूर्ण	६ रत्ती	घी	१० माशा

प्रातः तथा सायंकाल। स्वरभग, अरुचि, वमन तथा कास नाशक है।

(२५) हिंगुलोत्थ पारद	४ माशा	सेंधानमक	४ तोला
शुद्ध गन्धक	" "	मरीच चूर्ण	" "
शुद्ध सुहागा	" "	स्वर्ण भस्म	" "
ताम्र भस्म	" "	लोह भस्म	" "
वंग भस्म	" "	चाँदी भस्म	" "
स्वर्णमाक्षिक भस्म	" "		

इनको एकत्र क्रमशः एक एक दिन धतूर रस, हरसिंगार रस, दशमूल क्वाथ तथा चिरायता क्वाथ में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु तथा श्वेत जीरा चूर्ण प्रातः तथा सायंकाल। क्षय की प्रधान ओषधि है।

(२६) सितोपलादि चूर्ण	(शा० स०)		१॥ माशा
मक्खन	२ तोला	मिश्री	१ तोला

प्रातः तथा सायंकाल। पार्श्वशूल, स्कन्धशूल तथा दाह नाशक है।

अश्वगंधादि चूर्ण (शा० सं०)

(२७) असगंध	४० तोला	सोंठ	२० तोला	पीपर	१० तोला
मिश्री	५ "	दालचीनी	१ "	तेजपत्र	१ "
नागकेशर	१ "	इलायची	१ "	लवंग	१ "
भारंगी जड़	१ "	तालीसपत्र	१ "	कचूर	१ "
सफेद जीरा	१ "	कायफल	१ "	कबाबचीनी	१ "

नागरमोथा	१ तोला	रास्ना	१ ,,	कुटकी	१ तोला
जीवन्ती	१ ,,	मीठा कूट	१ ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—२-३ माशा। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

उरःक्षत तथा क्षीणता नाशक है।

एलादि गुटिका (शा० सं०)

(२८) छोटी लाची बीज	६ माशा	तेजपत्र	६ माशा
दालचीनी	६ ,,	पीपर	६ ,,
मिश्री	२ तोला	मुलेठी	४ तोला
खजूर	४ ,,	द्राक्षा	४ ,,

इनको एकत्र महीन करे। इसमें मधु मिला एक तोले प्रमाण की गोलियाँ बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—बकरी का। दूध प्रातः तथा सायंकाल।

उरः क्षत की प्रधान ओषधि है। कामी पुरुषों के लिये भी हितकर है।

(२९) काला द्राक्षा ६४ तोला मुलेठी ३२ तोला जल ४ सेर

एकत्र क्वाथ करे। १ सेर जल शेष रहते छान लेवे।

क्वाथ	१ सेर	मुलेठीचूर्ण	४ तोला
पीला द्राक्षा	४ तोला	पीपर चूर्ण	४ तोला
घी	६४ ,,	दूध	८ सेर

इनको एकत्र पाक करे। घी अवशेष रहते उतार शीतल कर ३२ तोला सफेद चीनी मिलावे।

मात्रा—६ माशा—१ तोला। २ मात्रा

ज्वर, श्वास तथा उरः क्षत को निश्चित नष्ट करती है।

(३०) चन्दनादि तैल (शा० सं०)

मर्दन करना।

जीर्णज्वर, दाह शान्त कर कान्ति वर्धक है।

(३१) लाक्षादितैल (शा० सं०)

मर्दन करना।

R/

(३२) गाएकोल (Guaiacol) ५ बूंद

कैप्सुल में ३ मात्रा

R/

(३३) गाएकोल (Guaiacol) ४ बूंद

सिनेमम आयल (Cinnamom Oil) १ ,,

ग्लीसरीन	(Glycerine)	३० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(३४) गाएकोल	(Guaiacol)	८ बूंद
काड लिवर आयल	(Cod Liver Oil)	१ ड्राम
		३ मात्रा

भोजनोपरान्त।

R/

(३५) गाएकोलकार्बोनेट	(Guaiacol Carbonate)	४ ग्रेन
एसिड आर्सेनिओसी	(Acid Arseniosi)	$\frac{1}{60}$,,
		१ गोली
		३ मात्रा

R/

(३६) नाइट्रिक एसिड डिल	(Nitric Acid Dil)	१५ बूंद
हाइड्रोसायनिक एसिड डिल	(Hydrocyanic Acid dil)	१५ ,,
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

भोजन से कुछ पूर्व। यह कास को शान्त करती है।

R/

(३७) क्रीओजोट	(Creosote)	२ बूंद
काडलिवर आयल	(Codliver Oil)	१ ड्राम
		३ मात्रा

भोजनोपरान्त।

R/

(३८) आयडोफार्म	(Iodoform)	$\frac{3}{4}$ ग्रेन
क्रीओजोट	(Creosote)	$\frac{3}{4}$,,
पल्व बेन्जायन	(Pulv. Benzoin)	$\frac{3}{4}$,,
पल्व बाल्जम टोलू	(Pulv. Balsam Tolu)	$\frac{6}{4}$,,
		१ गोली

मात्रा—२ से ४ गोली

R/

(३९) यूकेलिप्टाल	(Eucalyptol)	२ ड्राम
तारपीन एसेन्सल आयल	(Ess. Oil Turpentine)	२ ,,
क्रीओजोट	(Creosote)	५ ,,
ईथर	(Aether)	५ बूंद

५, ७ बूंद तौलिया पर छिड़क सूघना।

R/

(४०) सोडा वाईकार्व	(Soda Bicarb)	१५ ग्रेन
टि० नक्स	(Tr. Nux)	८ बूंद
टि० जेंशियम	(Tr. Gentian)	१/२ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा भोजन के पूर्व।

R/

(४१) एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid Hydrochloric dil)	१२ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। भोजन से १/२ घण्टा पूर्व।

नोट—नं० ४०, ४१ की ओषधियां क्षुधा को बढ़ाती है।

R/

(४२) मार्फीन हाइड्रोक्लोर	(Morphine Hydrochlor)	२१/४ ग्रेन
एपोमार्फीन हाइड्रोक्लोर	(Apomorphine Hydrochlor)	१/४२ ,
एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid Hydrochloric Dil)	६ बूंद
सीरप प्रूनीवर्जिनिया।	(Syrup Pruni Virg.)	१/२ ड्राम
एका क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

४ मात्रा

R/

(४३) सीरप कोडीन	(Syrup Codein)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

R/

(४४) ग्लाइको हीरोइन	(Glyco-Heroin)	१ ड्राम

जल	(Aqua)	१ औंस
		४ मात्रा

नोट—नं० ४२ से ४४ तक की ओषधियाँ कास नाशक हैं।

R/

(४५) टैनिजेन	(Taunigen)	१० ग्रेन
		३ मात्रा

R/

(४६) पिलुला प्लम्बाई कम ओपियाई (Pillula Plumbi Cum Opii) २ से ४ ग्रेन

R/

(४७) पल्व क्रीटा एरोमेटिकस	(Pulv. Creta Aromat)	४ ग्रेन
टिं० ओपियम	(Tr. Opium)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(४८) बिस्मथ सैलिसिलेट	(Bismuth Salicylate)	१० ग्रेन
टिं० ओपियम	(Tr. Opium)	५ बूंद
केओलिन	(Keolin)	१५ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा।

R/

(४९) सल्फाग्वायनाडिन	(Sulphaguanadine)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	१० ग्रेन
		३, मात्रा।

R/

(५०) बिस्मथ सैलिसिलेट	(Bismuth Salicylate)	१५ ग्रेन
मार्फिन हाइड्रोक्लोर	(Morphin Hydrochlor)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(५१) इमेटीन हाइड्रोक्लोर सूची (Emetine Hydrochlor) त्वचागत।

नोट—नं० ४५-५१ तक की ओषधियाँ राजयक्ष्मागत अतिसार (Diarrhoea) नाशक हैं।

R/

(५२) अमन क्लोराइड	(Ammon Chloride)	८ ग्रेन
इपीकैकुआन।	(Ipecacuanha)	१/२ ”

३ मात्रा।
कफ को ढीला कर बाहर निकालती है।

R/

(५३) टेरेबीन	(Terebene)	८ बूंद
कोडीन	(Codeine)	१/२ ग्रेन
डायामार्फीन हाइड्रोक्लोराइड	(Diamorphine Hydrochloride)	१/२४ ”
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। कफाधिक्य नाशक है।

R/

(५४) स्पि० अमोनिया एरो०	(Spt. Ammonia Aromat.)	१ ड्राम
लेमन वाटर	(Lemon Water)	१ औंस

२ मात्रा। श्वास कष्ट नाशक है।

R/

(५५) अमन कार्ब	(Ammon carb)	१० ग्रेन
टि० सेनिगा	(Tr. Senega)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। कफावरोध जन्य श्वास कष्ट नाशक है।
कफ निस्सारक है।

R/

(५६) क्रीयोजेनिन	(Cryogenin)	८–१५ ग्रेन

२ मात्रा। ज्वर नाशक है।

R/

(५७) पिरामिडान	(Pyramidon)	५ ग्रेन

या

एसिड पिरामिडान कैम्फोरेट	(Acid Pyramidon Camphorate)	८ ग्रेन

२ मात्रा। ज्वर तथा पसीना को दूर करती है।

R/

(५८) एट्रोपीन	(Atropin)	$\frac{1}{100}$ ग्रेन
एगारिसि एसिड	(Agarici Acid)	$\frac{1}{4}$ „
कैम्फोरिक एसिड	(Camphoric Acid)	३ „

१ गोली रात्रि में सोते समय ।
रात्रि स्वेद नाशक है ।

R/

(५९) प्रेग्मोलिन सूची	(Pregmoline)	मांसगत

रात्रि स्वेद नाशक है ।

R/

(६०) सलफेनाल	(Sulphanol)	१५ ग्रेन
गरम जल	(Warm Water)	$\frac{1}{2}$ औंस

१ मात्रा । रात्रि में सोते समय ।

R/

(६१) मीथिल सल्फोनाल	(Methyl Sulphonal)	१०-१५ ग्रेन

रात्रि में सोते समय ।

R/

(६२) वेरोनाल	(Veronal)	१० ग्रेन
कोडीन फास्फेट	(Codeine Phosphate)	$\frac{1}{4}$ „

रात्रि में सोते समय ।

नोट—नं० ६०-६२ तक की ओषधियाँ व्याधि जन्य निद्रानाश को दूर करने में बहुत ही उपयोगी है ।

R/

(६३)(१) सनोक्राइसिन सूची	(Sanocrysin injection)	शिरागत
अथवा (२) ट्यूबरकुलीन सूची	(Tuberculin injection)	शिरागत

ट्यूबर कुलीन सूची की निषिद्ध अवस्थायें—

(१) तीव्र क्षय (Acute Tuberculosis)
(२) उच्च तथा संतत ज्वर ।
(३) आन्त्र क्षय तथा क्षय जन्य प्रवाहिका ।
(४) अत्यधिक क्षीणता ।

(५) हृदय तथा वृक्क की व्याधियों की उपस्थिति।

(६) अपस्मार।

ट्यूबर कुलीन के व्यवहार की अवस्थायें—

(१) गौड़ सक्रमण (Secondary infection)

(२) आन्त्र वन्धनियों के ग्रन्थियों का क्षय (Tuberculous Mesentric glands)

(३) क्षय जन्य उदरावरण शोथ (Tuberculous Peritonitis)

(४) क्षय जन्य फुफ्फुसावरण शोथ (Tuberculous Pleurisy)

(५) क्षय जन्य स्वरयन्त्र शोथ (Tuberculous Laryngitis)

सूची—

कैल्शियम क्लोराइड (Calcium Chloride), कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium gluconate), कैल्शियम ग्लुकोनेट विथ रीडाक्सन (Calcium gluconate with redaxon), आरोफार्म बी (Auroform B), आरोफार्म सी (Auroform C), क्रीयोजोट (Creosote), कैल्शियम विथ विटामिन डी (Calcium with Vitamin D), मारुसोल (Morusol), कोलोकैल्शियम कम विटामिन डी (Collocalcium Cum Vitamin D), स्ट्रेप्टो माइसिन (Streptomycin), बी०, सी०, जी० वैक्सीन (B C. G. Vaccine).

पेटेण्ट ओषधियाँ—

जेकोसिन (Jecocin), माल्ट एक्स्ट्रैक्ट विथ काड लिवर आयल (Malt Extr. with Cod Liver oil), क्रिसेल्बिन (Crisalbine) मायोक्राइसिन (Myocrisin) जेफ्राल (Zephrol), काड लिवर आयल विथ माल्ट एक्स्ट्रैट एण्ड क्रियोजोट (Cod Liver oil with Malt extr. and Creosote), सोडियम कैकोडिलेट गोली (Sodium Cacodylate Tabts), कैल्शिमा डी (Calcima D). ट्यूबर सान (Tubersan), मेथल कम्पाउण्ड गोली (Menthol Compound Tabts) । पी. ए एस (P A. S) पैरा-एमीनो-सैलिसिलिक एसिड।

मूसिकदंश ज्वर (Rat Bite fever)

R/

(१) (क) सालवर्सन सूची . (Salvarsan inj.) ०·३ ग्राम

शिरागत।

२ सूची। ज्वर को दूर करती है।

R/

अथवा (ख) न्यूसालवर्सन सूची (Neo-Salvarsan) शिरागत।

पुनरावर्तक ज्वर (Relapsing Fever)

R/

(१) (क) स्ट्रिक्नीन सूची (Strychnine inj)

R/

अथवा (ख) स्ट्रोफैंथिन सूची (Strophanthin inj)

त्वचागत। हृदयावसाद नाशक हैं।

R/

(२) न्यूसालवर्सन सूची (Neosalvarsan inj)

शिरागत।

८ ग्रेन से अधिक न देवे। ज्वर नाशक है।

आमवात ज्वर (Rheumatic Fever)

(१) सोंठ	१ तोला	गुरुच	१ तोला
शतावर	१ "	गोरखमुण्डी	१ "
कचूर	१ "	देवदारु	१ "
पुनर्नवा	१ "		

इनका कपड़छान चूर्ण बना रखना।

मात्रा—३-६ माशा। अनुपान-कांजी। २ मात्रा। भोजनोपरान्त

योगराज गुग्गुलु (शा० सं०)

(२) चीता	१ तोला	त्रिकटु	१ तोला	वायविडंग	१ तोला
सेंधानमक	१ "	नागरमोथा	१ "	तज	१ "
तालीसपत्र	१ "	चव्य	"	लाची	१ "
देवदारु	१ "	कूट	"	लहसून	१ "
खस	१ "	अजवाइन	१ "	खुरासानी अजवाइन	१ "
रास्ना	१ "	गोखरू	१ "	धनियाँ	१ "
श्वेतजीरा	१ "	यवक्षार	१ "	अजमोदा	१ "
शतावरजड़	१ "	सौंफ	१ "	काश	१ "

इनका कपड़छान चूर्ण करे। इस चूर्ण में चूर्ण के बराबर शुद्ध गुग्गुलु मिला खरल करे। मिल जाने पर घी पात्र में रखे।

मात्रा—१ तोला। अनुपान—दुग्ध

प्रातः तथा सायंकाल।

आमवात नाशन में श्रेष्ठ है।

(३) लहसुन ५ तोला सोंठ ५ तोला निर्गुण्डी ५ तोला
इनको जौकुट कर रखे। २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे, जब जल ½ छटांक शेष रहे तब छान शीतल कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। आमवात नाशन में रामबाण है।

पिप्पल्यादिचूर्ण (भा० प्र०)

(४) पीपर ८ तोला पीपरामूल ८ तोला सेंधानमक ८ तोला

काला जीरा	८ तोला	चव्य	८ तोला
चीता छाल	८ ,,	तालीसपत्र	८ ,,
नागकेशर	४ ,,	कालानमक	४ ,,
मरीच	४ ,,	श्वेतजीरा	४ ,,
सोंठ	४ ,,	दाड़िमसार	१६ ,,
अमलतास	८ ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—३-५ माशा। अनुपान—मधु या गरम जल प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

रास्नासप्तक क्वाथ (भा० प्र०)

(५) रास्ना १ तोला देवदारु १ तोला अमलतास गूदा १ तोला
गोखरू १ ,, पुनर्नवा १ ,, एरण्ड जड़ १ ,,
गुरुच १ ,,
इनको जौकुट करे। २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छ० जल शेष रहते छान २ माशा सोंठ चूर्ण मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। उत्तम है।

(६) लहसुन ४ तोला हींग ४ तोला त्रिकटु ४ तोला
धनियाँ ४ ,, सेंधानमक ४ ,, सफेद जीरा ४ ,,
सोंचर नमक ४ ,, विडनमक ४ ,, कालानमक ४ ,,
इनका कपड़छान चूर्ण बना रखे। मात्रा—१ तोला। अनुपान—तेल। प्रातःकाल।

(७) हरड़चूर्ण ३ माशा एरण्डतैल ½ छटाँक
१ मात्रा। प्रातःकाल।

वैश्वानर चूर्ण (भा० प्र०)

(८) सेंधानमक २ तोला अजवाइन २ तोला अजमोदा ३ तोला
सोंठ ४ ,, हरड़ १२ ,,
इनका कपड़छानचूर्ण बना रखे।

मात्रा—१ तोला। अनुपान—गरम जल या घी। प्रातः तथा सायकाल।
कोष्ठ बद्धता तथा नाना प्रकार की वेदना नाशक है।

(९) गोरखमुण्डी	१ तोला	गोखरू	२ तोला	त्रिफला	३ तोला
सोंठ	४ ,,	गुरुच	५ ,,	निशोथ	१५ ,,

इनका कपड़छानचूर्ण कर रखे।
मात्रा—१ तोला। अनुपान—गरम जल
प्रातः तथा सायकाल।

महारास्नादिक्वाथ

(१०) रास्ना	१ माशा	एरण्ड जड़	१ माशा	अडूसा	१ माशा
जवासा	१ ,,	कटसरैया	१ ,,	कचूर	१ ,,
खरेटी	१ ,,	नागरमोथा	१ ,,	अतीस	१ ,,
हरड़	१ ,,	गोखरू	१ ,,	कटेरी	१ ,,
अमलतास	१ ,,	सौंफ	१ ,,	धनियाँ	१ ,,
पुनर्नवा	१ ,,	असगंध	१ ,,	गुरुच	१ ,,
पीपर	१ ,,	विधारा	१ ,,	शतावर	१ ,,
वच	१ ,,	चव्य	१ ,,		

इनको जौकुट कर ½ सेर जल में क्वाथ करे। १ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। सर्वोत्तम है।

आमवातारिगुटिका

(११) सौंफ	१ तोला	सुहागा	१ तोला	लवंग	१ तोला
मरीच	१ ,,	निशोथ	१ ,,	त्रिफला	१ ,,
जवाखार	१ ,,	पीपर	२ ,,	धनियाँ	२ ,,
सफेद जीरा	८ ,,	अजायइन	१६ ,,	सोंठ	६ माशा
कचूर	६ माशा	छोटी लाची बीज	६ माशा	तेजपत्र	६ ,,
दालचीनी	६ ,,				

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

मिश्री	१४४ तोला	जल	१६ सेर

इनकी चासनी करे। चासनी में चूर्ण को मिलाते हैं। शीतल हो जाने पर ५ तोला मधु मिला एक एक तोला का लड्डू बनाते हैं।
मात्रा—१ लड्डू। प्रातःकाल। आमवात नाशन में यह कभी असफल नहीं होती।

(१२) शुद्ध आँवलासार गंधक	५ तोला	शुद्ध गुग्गुलु	५ तोला
त्रिफला	५ ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

एरण्डतैल	५ तोला	चूर्ण	१५ तोला

इनको एकत्र मिला रखे।

मात्रा—१ तोला। अनुपान—गरम जल। प्रातःकाल। २१-४० दिन तक सेवन करे।

अजमोदादिवटक

(१३)

अजमोदा	४ तोला	मरीच	४ तोला	वायविडंग	४ तोला
देवदारु	४ ,,	चीता	४ ,,	सेंधानमक	४ ,,
पिपरामूल	४ ,,	पीपर	४ ,,	सोया	४ ,,
सोंठ	४० ,,	विधारा	४० ,,	हरड़	२० ,,

इनका कपड़छान चूर्ण करना।

जल	४ सेर	गुड़	१२६ तोला

इनकी चासनी बनावे। इस चासनी में उपर्युक्त चूर्ण मिला ४, चार माशे की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—नं० १० का क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल। आमवात निश्चय ही नष्ट होता है।

(१४)

एरण्डतैल	४ सेर	प्रसारिणी या गधाली रस	१६ सेर

तेल मात्र अवशेष तक पाक कर रखे।

मात्रा—½ तोला। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(१५)

शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गंधक	१ तोला
शुद्ध तूतिया	१ ,,	शुद्ध सुहागा	१ ,,
सेंधानमक	१ ,,	लोहभस्म	१ ,,
ताम्रभस्म	१ ,,	शुद्ध गुग्गुलु	१४ ,,
निशोथ चूर्ण	१॥। ,,	चीता चूर्ण	१॥। ,,

इनको घी के साथ खरल कर ३ तीन माशे की गोलियाँ बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—त्रिफला क्वाथ या गरम जल प्रातः तथा सायंकाल। पाचक तथा विरेचक है।

सैन्धवाद्य तैल (भावप्रकाश)

(१६)

एरण्ड तैल	४ सेर	सफेद राल	४ तोला
सोया का क्वाथ	,, ,,	मरीच	,, ,,
काँजी	८ ,,	कूठ	,, ,,
दही	,, ,,	सोंठ	,, ,,
सेंधानमक	४ तोला	सोंचर नमक	,, ,,

गजपीपर	४ तोला	कालानमक	४ तोला
रास्ना	" "	मीठा वच	" "
सोवा	" "	जीरा	" "
अजवाइन	" "	पीपर	" "

तैल पाक विधि से इस तैल को पका रखे। नियम पूर्वक इसका पान, अभ्यग तथा वस्ति करे।

R/

(१७) सोडा सैलिसिलेट	(Soda Salicylate)	१५ ग्रेन
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१० "
पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	८ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
सीरप जिंजिबेरिस	(Syrup Zingiberis)	½ ड्राम
मैगसल्फ	(Mag. Sulph)	१½ "
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा। ज्वर, वेदना तथा अनिद्रा नाशक है।

R/

(१८) डोवर्स पाउडर	(Dover's Powder)	१० ग्रेन

रात्रि में सोते समय। तीव्र वेदना नाशक है।

R/

(१९) सैलिसिन	(Salicin)	१ ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१ "

३, ४ मात्रा। अनुपान—दूध। बच्चों को।

R/

(२०) सेलोक्वीनीन सैलिसिलेट	(Saloquinine Salicylate)	१० ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	" "
स्पि० क्लोराफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। ज्वर मुक्ति के पश्चात् शक्ति हेतु।

R/

(२१) सोडियम फार्मेटिस	(Sodium Formatis)	५ ग्रेन

सीरप टोलु	(Syrup Tolu)	½ ड्राम
एक्वा क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	½ औंस

२ मात्रा। सर्वोत्तम हृदयोत्तेजक।

R/

(२२) सोडियम सैलिसिलेट	(Sodium Salicylate)	१० ग्रेन
पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	५ "
लाइकर आर्सनिकलिस	(Liqr. Arsenicalis)	२ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
सीरप जिंजिबेरिस	(Syrup Zingiberis)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोत्तर। सन्धि शोथ तथा वेदना नाशक है।

R/

(२३) पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	५ ग्रेन
नेपेंथी	(Nepenthe)	४ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	८ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२० "
जल	(Aqua)	½ औंस

२ मात्रा। निद्रा नाश तथा बेचैनी नाशक है, बच्चों को। युवकों को बड़ी मात्रा देवे।

R/

(२४) पोटास ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१० ग्रेन
टि० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	१० "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। हृदयावसाद नाशक है।

R/

(२५) पल्व एण्टीमनी	(Palv. Antimony)	२ ग्रेन
हाइड्रा॰ सबक्लोर	(Hydrarg Subchlor)	½ "
एक्स्ट्रैक्ट हायोसाइमस	(Ext Hyoscyamus)	1½ "

१ गोली। २ मात्रा। चिरकालिक आमवात नाशक है।

R/

(२६) आटोफेन गोली (Atophan Tabt) १ गोली
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) १० ग्रेन

३, ४ मात्रा। ज्वर तथा वेदना नाशक है।

R

(२७) गाएकोल (Guaiacol) १ ड्राम
टि० आयोडीन (Tr. Iodine) ७ "

सन्धि शोथ पर लगाना।

R/

(२८) लिनिमेण्ट ए०. बी० सी० (Lintt A. B. C.)

सन्धि शोथ पर मलना। वेदना तथा शोथ नाशक है।

R/

(२९) फाइलेकोजोन सूची (Phylacogen inj) २ से १० सी० सी०

त्वचागत। ताप, स्वेद तथा शिरःशूल नाशक और हृदयोत्तेजक है।

R/

(३०) एण्टीफ्लेविन (Antiflavin)

या

एण्टीफ्लोजेस्टिन (Antiflogestin)

शोथ तथा वेदना पूर्ण स्थान पर लगाना।

सूची—

कैल्सियम एसिटो सैलीसिलास (Calcium Aceto Salicylas), आटोफेन (Atophan), सोडा सैलिसिलास (Soda Salicylas), आरोफार्म (Auroform).

पेटेण्ट औषधियाँ—

आर्थीय्रटिन (Arthrytin), मायोक्रायसिन (Myocrisin), यूरेजिन (Uragine), सिंकोफेन गोली (Cinchophan Tabt), अल्कलाइन कम्पाउण्ड गोली (Alkaline Compound Tabt), रूमेलिन (Rheumalin), एस्पिरिन (Aspirin), यूरोब्रोम (Urobrom), सल्फायल (Sulfoil), सीडेमन (Sedamon), लैकोलान (Lakolan)

बाल शोष (Ricket)

(१) असगंध चूर्ण ६ रत्ती

अनुपान—गरम जल। २ मात्रा

(२) सैंधानमक १ तोला त्रिकटु १ तोला बड़ी करंज १ तोला
पाठा १ " पहाड़ी करंज १ "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—घी, मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) प्रवालभस्म १ भाग सुक्तिभस्म २ भाग
शंखभस्म ३ " कौड़ीभस्म ४ "
गोदन्तीभस्म ६ "

इनको एकत्र नीबू स्वरस में खरल कर रखे।
मात्रा—२-८ रत्ती। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल

(४) रससिन्दूर १ तोला यशदभस्म ½ तोला गोरोचन्द १ तोला
शुद्ध गन्धक १ " गोदन्तीभस्म ८ "

एकत्र खरल कर शीशी में रखे।
मात्रा—२-४ रत्ती। अनुपान—मधु। ३, ४ मात्रा
जीर्णज्वर तथा शोष नाशक है।

R/

(५) सोडाबाईकार्ब	(Sodabicarb)	३ ग्रेन
टि० नक्स	(Tr Nux)	१ बूंद
इन्फुजन जेंशियन को०	(Inf. gentian Co.)	१ ड्राम

३ मात्रा
भोजन से आध घण्टा पूर्व क्षुधा वर्धक है।

R/

(६) सोडाबाईकार्ब	(Sodabicarb)	२ ग्रेन
अमन कार्ब	(Ammon Carb)	१ "
पल्व रियाई	(Pulv. Rhei)	१ "
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१० "
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा
भोजन से ½ घण्टा पूर्व

R/

(७) ग्रे पाउडर	(Grey Powder)	¼ ग्रेन

३, ४ मात्रा
वमन तथा प्रवाहिका नाशक है।

R/

(८) काडलिवर आयल	(Codliver oil)	
	दूध के साथ । ३ मात्रा । शक्तिवर्धक है ।	

R/

(९) फेरी रीडक्टाई	(Ferri Reducti)	१ ग्रेन
सैकरी एल्ब	(Sacchari Alb)	३ "
		३ मात्रा
		भोजनोपरान्त ।

R/

(१०) पाट० साइट्रास	(Pot Citras)	२ ग्रेन
फेरी एट अमनसाइट्रास	(Ferri et Ammoncitras)	२ "
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा
		भोजनोपरान्त

R/

(११) फास्फरस	(Phosphorus)	½ ग्रेन
आयल मार्हे	(Oil Morrhuae)	१५ बूंद
		३ मात्रा
		भोजनोपरान्त

R/

(१२) फेरीसल्फ	(Ferri Sulph)	½ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph dil)	१ बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	५ ग्रेन
आयल मैंथ पिप	(Oil Menth Pip)	३ ग्रेन
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	३ "
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा
		भोजनोपरान्त

R/

(१३) काडलिवर आयल विथ माट एक्स्ट्रक्ट (Cod Liver oil with malt ext)

१ चिम्मच

३ मात्रा

भोजनोपरान्त ।

R/

(१४) कैल्शिफेराल टिकिया (Calciferol tabts) १ गोली

२ मात्रा

प्रातः तथा सायंकाल

R/

(१५) कैल्सिफेराल घोल (Calciferol Solution) १० बूंद

जल (Aqua) १ ड्राम

३ मात्रा

भोजनोपरान्त

R/

(१६) कैल्सियम ग्लुकोनेट विथ कैल्सिफेराल गोली (Calcium gluconate with Calciferol Tabts) १ गोली

जल के साथ । ३ मात्रा ।

R/

(१७) कैल्सियम विथ विटामिन डी गोली (Calcium with Vita D. Tabts) १ गोली ।

३, ४ मात्रा ।

R/

(१८) विटालिन गोली (Vitalin tabts)

या

विटालिन सीरप (Vitalin Syrup)

३ मात्रा । १ चिम्मच ।

R/

(१९) विमाल्ट (Vimalt) २ मात्रा ।

प्रातः तथा सायंकाल ।

R/

(२०) काड लिवर आयल (Cod Liver oil) १० बूंद

सीरप कैल्सियम लैक्टेट (Syrup Calcium Lactate) " "

सीरप आरेन्शाई (Syrup Aurantii) १५ "

जल (Aqua) १ ड्राम

३ मात्रा । भोजनोपरान्त ।

गृध्रसी (Sciatica)

(१) दशमूल	४ माशा	सोंठ	४ माशा
रास्ना	" "	खरेटी	" "
गुरुच	" "	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान २ तोला एरण्ड तैल मिला रोगी को प्रातःकाल पिलावे।
गृध्रसी तथा पगुत्व नाशक है।

(२) एरण्ड बीज की गुद्दी	५ तोला	गो दुग्ध	½ सेर

इन्हें खीर सदृश होने तक पाक कर रोगी को २१ दिनों तक खिलाते हैं। प्रातःकाल
निश्चित ही गृध्रसी नाशक है।

(३) त्रिफला क्वाथ	½ छटाँक	एरण्ड तैल	२ तोला

प्रातःकाल।
उरुग्रह तथा गृध्रसी नाशक है।

(४) एरण्ड जड़	८ माशा	दोनों कटेरी	६ माशा
बेलगिरी	६ "	जल	३२ तोला

इनका क्वाथ करे। ४ तोला जल शेष रहते छान काला नमक मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। गृध्रसी तथा वङ्क्षण शूल नाशक है।

(५) अडूसा	१ तोला	अमलतास का गुदा	१ तोला
जमालगोटा का जड़	" "	जल	½ सेर

एकत्र खौलावे। आध पाव जल शेष रहते छान १ तोला एरण्ड तैल मिला रोगी को पिलावे।
प्रातःकाल। १५ दिनो तक पिलावे।

(६) निर्गुण्डी पत्र	२ तोला	जल	१॥ पाव

इनका क्वाथ करे १¼ पाव जल शेष रहते छान ले।

क्वाथ	१। पाव	पोष्करमूल चूर्ण	१ माशा
पीपर चूर्ण	१ माशा	भूनी हींग	१ रत्ती

प्रातः काल।
असाध्य गृध्रसी भी नष्ट होती है।

(७) रास्ना	३ माशा	गोखरु	३ माशा
गुरुच	" "	एरण्ड जड़	" "
अमलतास का गुदा	" "	पुनर्नवा	" "
देवदारु	" "	जल	½ सेर

इनका क्वाथ करे। ½ पाव जल शेष रहते छान १ माशा सोंठ चूर्ण मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। त्रिकशूल तथा गृध्रसी आदि नाशक है।

(८) रास्ना चूर्ण	४ तोला	शुद्ध गुग्गुलु	९ तोला

इन्हे घी के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—शीतल जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) लहसुन	१ तोला	शुद्ध गुग्गुलु	५ तोला

इन्हें घी के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायकाल।

(१०) गोखरु क्वाथ	१ सेर	सोंठ चूर्ण	१ पाव
काले तिल का तेल	" "	पुराना गुड़	१ सेर
गो दुग्ध	४ "		

तैल अवशिष्ट तक इन्हें एकत्र पाक कर तैल छान रखे। मात्रा—१ तोला। प्रातः तथा सायंकाल। पिलाना, नस्य तथा वस्ति करना। गृध्रसी, कम्पवायु तथा कटिशूल नाशक है।

(११) त्रयोदशांग गुग्गुलु	१ तोला	रास्नादि क्वाथ	½ छटाँक

प्रातः तथा सायकाल।

(१२) पथ्यादि गुग्गुलु — १ तोला

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायकाल।

(१३) प्रसारिणी या महानारायण तैल — मर्दन करना।

R/

(१४) क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	१ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	२ बूंद
पाट॰ आयोडाइड	(Pot. Iodide)	३ ग्रेन
स्पि॰ क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	९ बूंद

जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा।

R/

(१५) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१ ग्रेन
ब्रोमाइड	(Bromide)	१० "
फेनाजोन	(Phenazone)	३ "
सोडा वाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ "
टि० वेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा।

R/

(१६) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ग्रेन
पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	५ "
टिं० काल्चिकम	(Tr. Calchicum)	३ बूंद
टिं० जेल्शिमाइन	(Tr. Gelsimine)	१० "
स्पिट० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा

R/

(१७) आटोफेन गोली	(Atophan Tabts)	१ गोली
सोडाबाईकार्ब	(Sodabicarb)	१० ग्रेन
		३ मात्रा

R/

(१८) सिबाल्जिन गोली	(Cibalgin tabt)	१ गोली
		३ मात्रा

R/

(१९) सोनाल्जिन गोली	(Sonalgin)	२ गोली
		३ मात्रा

R/

(२०) नावल्जिन गोली	(Novalgin)	१ गोली
		३ मात्रा

सूची—

आटोफेन (Atophan), वीनर्वा (Benarva), विटामिन वी काम्प्लेक्स (Vitamin B Complex), सिवाल्जिन (Cibalgin)

प्रलेप—

लिनिमेण्ट मिथिल सैलिसिलेट को० (Liniment. Methyl Salicylate Co), लिनिमेण्ट ए०, वी०, सी० (Liniment A. B. C.)

नपुंसकता (Sexual Impotence)

(१) अभ्रकभस्म १ रत्ती सोना वर्क १ रत्ती चांदी वर्क १ रत्ती
पान के साथ खिलाना
प्रातःकाल। धातुवर्धक है।

(२) वगभस्म २ रत्ती खोया १ छटाँक
प्रातः तथा सायंकाल
वीर्य वर्धक तथा पुष्टिकारक है।

(३) वगभस्म २ रत्ती लवंगचूर्ण १ माशा
पीपरचूर्ण १ माशा छोटीइलायचीचूर्ण २ "
प्रातः तथा सायंकाल
बल तथा वीर्य वर्धक है।

(४) शतावर ५ तोला गोखरू ५ तोला
केवाँच वीज की गिरी ५ " तलमखाना बीज ५ "
सेमर की मसूली ५ " बरियरा वीज ५ "
गुलसकरी ५ "

इनका कपड़छान चूर्ण कर चूर्ण के बराबर मिश्री मिला रखना।
मात्रा—१ तोला। अनुपान—धारोष्ण गोदुग्ध
प्रातः तथा सायंकाल। ३, ४ मास सेवन करे। धातु पुष्टिकारक है।

नोट—नं० ४ की ओषधि के सेवन काल में स्त्री प्रसंग वर्जित है। इसके पश्चात् मदनानन्द चूर्ण खाना चाहिये।

(५) वंगभस्म १ तोला प्रवालभस्म १ तोला चाँदी वर्क १ तोला
भीमसेनी कपूर २ माशा गुरुच सत्त १ " शुद्धशिलाजीत १ "
इनको एकत्र खरल कर १ रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—धारोष्ण दूध
प्रातः तथा सायंकाल। बल, वीर्य तथा कान्ति वर्धक है।

मदनानन्दचूर्ण—

(६) मिश्री ४ तोला, सालम मिश्री ४ तोला
स्याहमूसली चूर्ण ४ ,, सफेद मूसली चूर्ण ४ ,,
शतावरचूर्ण ४ ,, वहमन सुर्ख चूर्ण २ ,,
वहमन सफेदचूर्ण २ ,, तोदरी छोटी चूर्ण २ ,,
तोदरी बडी चूर्ण २ ,, सुखारी बीजचूर्ण १ ,,
इन्द्रजव चूर्ण १ ,, जावित्री चूर्ण १ ,,
जायफलचूर्ण १ ,, सोंठचूर्ण १ ,,
कुलंजनचूर्ण १ ,,

इनको एकत्र मिला रखते हैं।

मात्रा—६ माशा अनुपान—१ तोला मधु मिश्री मिला दूध पीना। प्रातः तथा सायकाल कामोत्तेजक तथा वीर्यस्तम्भन में सर्वोत्तम है।

(७) अकरकरा २ माशा, जायफल २ माशा, सोंठ २ माशा
केशर २ ,, लवँग २ ,, पीपर २ ,,
कपूर २ ,, उत्तम कस्तूरी २ ,, अभ्रकभस्म २ ,,

इनको एकत्र यथाविधि खरल कर १८ माशा शोधी अफीम मिला ½ रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे।

मात्रा—१-२ गोली। अनुपान—मिश्री युक्त दूध। प्रातः तथा सायकाल। वीर्यस्तम्भक है।

(८) महालक्ष्मी विलासरस (र० सा० स०) १ रत्ती

अनुपान—मिश्री मिला दूध १ पाव। प्रातः तथा सायकाल। वीर्य तथा मैथुन शक्ति वर्धक है।

(९) चन्द्रोदय रस ४ तोला, भीमसेनी कपूर १६ तोला
जायफलचूर्ण ६४ माशा, मरीचचूर्ण ६४ ,,
लवँगचूर्ण ६४ ,, कस्तूरी ४ ,,

एकत्र खरल कर रखे।

मात्रा—१ माशा। अनुपान—पान स्वरस प्रातः तथा सायंकाल। रति शक्ति वर्धक है।

(१०) लक्ष्मीविलासरस (र० सा० सं०) ½ या १ गोली

अनुपान—मिश्री मिला दूध। प्रातः तथा सायकाल। मैथुन शक्ति वर्धक है।

(११) जायफल चूर्ण १ तोला, लवँग चूर्ण १ तोला

मरीच चूर्ण	१ "	भीमसेनी कपूर	१ तोला
सोनावर्क	१ माशा	कस्तूरी	१ माशा
रससिन्दुर	४½ तोला		

इनको ४८ घण्टे तक पान स्वरस में घोट ४ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मलाई, पानस्वरस, दूधादि।
प्रातः तथा सायंकाल। वीर्य तथा कान्तिप्रद है।

(१२) मकरध्वजरस (र० यो०) २ रत्ती
अनुपान—पान स्वरस। प्रातःकाल।

(१३) सिद्ध सूतरस २ रत्ती
अनुपान—मूसली और मिश्री। प्रातः तथा सायंकाल।
इन्द्रियों की शिथिलता नष्ट हो वीर्य बढ़ता है।

(१४) पूर्णचन्द्र रस (भै० र०) २–४ रत्ती
घी १ तोला
मधु ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल

(१५) बृहत्पूर्णचन्द्ररस (र० सा० सं०) १ गोली
अनुपान—पान स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल
रसायन तथा वाजीकरण है।

(१६) श्रीमन्मथ रस १ गोली
अनुपान—गरम दूध प्रातः तथा सायकाल।
ध्वजभग तथा नपुंसकता नाशन में सर्वश्रेष्ठ है।

(१७) श्रीकामदेव रस (र० सा० स०) १ रत्ती
अनुपान—घी-१ तोला, मधु—६ माशा
प्रातः तथा सायकाल। बल, वीर्य तथा कान्तिदायक है।

(१८) बसन्तकुसुमाकर रस (र० सा० स०) १ चावल से १ रत्ती
अनुपान—घी—६ माशा, मधु—३ माशा। प्रातः तथा सायंकाल
वीर्य, रति शक्ति तथा आयु दायक है।

(१९) कामिनी विद्रावण रस (भै० र०) ३ रत्ती
अनुपान—दूध। रात्रि में सोते समय।
मैथुन तथा वीर्यस्तम्भन शक्ति वर्धक है।

(२०) शुक्रवल्लभ रस १ गोली
अनुपान—दूध।
रात्रि में सोते समय।

(२१) कामेश्वर रस — १ गोली — मिश्री — ६ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(२२) कस्तूरी — १ माशा — लवँग चूर्ण — २ माशा
केसर — २ " — शुद्ध अफीम — ४ "
जायफल चूर्ण — " " — शुद्ध भाँग चूर्ण — २ "
इन्हें एकत्र जल के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। ऊपर से घी तथा मिश्री युक्त दूध पीना।
मैथुन इच्छा को उत्पन्न करती है।

(२३) अष्टावक्र रस — २ रत्ती
अनुपान—पान स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।
बल, वीर्य तथा मेधा शक्तिवर्धक और बालों को पकने से रोकने वाली है।

(२४) कामाग्नि संदीपन मोदक — १ गोली
अनुपान—दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२५) मदनानन्द मोदक — (शा० सं०) — ३-६ माशा
अनुपान—दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२६) मृगनाभ्यादि वटी — (स्वा० र०) — १ गोली
अनुपान—मलाई। १ माशा।

(२७) मूसली पाक — २ तोला
अनुपान—मिश्री मिला दूध। प्रातः तथा सायंकाल।
नपुंसकता निश्चित नष्ट होती है।

(२८) शतावर जड़ की लुगदी — ४ सेर — गोदुग्ध — १ मन
गोघृत — " "
घी अवशेष तक पाक कर रखे।
घी — १ तोला — मधु — ४ माशा
मिश्री — ६ माशा — पीपर चूर्ण — २ रत्ती
प्रातः तथा सायंकाल।

(२९) बृहत्वानरी मोदक — १ तोला

अनुपान—मिश्री युक्त गोदुग्ध।
प्रातः तथा सायंकाल।

(३०) शुद्ध आँवलासार गन्धक ५ तोला सेमर जड़ चूर्ण ५ तोला

इन्हें सेमर छाल के स्वरस में ३ दिन खरल कर छाया में सुखा रखे। मात्रा—१-१॥ माशा। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल। वीर्य वर्धक तथा नपुसकता नाशक है।

(३१) फास्फरस	(Phosphorus)	१/३ ग्रेन
स्ट्रिक्नीन	(Strychnine)	„ „
फेरीसल्फ	(Ferrisulph)	१ „
कोलीसिंथ एट हायोसाइमस गोली	(Colocynth et Hyoscyamus Pill)	„ „

१ गोली बनावें। २ मात्रा।

R/

(३२) फास्फरस	(Phosphorus)	१/६ ग्रेन
स्ट्रिक्नीन सल्फ	(Stsychnine Sulph)	„ „

१ गोली। ३ मात्रा

R/

(३३) टिं० फास्फरिक	(Tr. Phosphoric)	१५ बूंद
टिं० डेमायनी	(Tr. Damiani)	१ ड्राम
टिं० क्वीनीन	(Tr. Quninine)	१/२ „
सीरप टोलू	(Syrup tolu)	„ „
वाइनम आरंशाई	(Vinum Aurantii)	„ औंस
जल	(Aqua)	„ „

३ मात्रा

R/

(३४) फेरी पाइरोफास्फेट	(Ferri Pyro hosphate)	२ ग्रेन
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	५ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१/२ ड्राम
एलिकूजीर सिंकोना	(Elixir Cnichona)	५ „

३ मात्रा

R/

(३५) क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	१/२ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	१ बूंद
स्ट्रिक्नीन	(Strychnine)	१/८० ग्रेन
एसिड आर्सेनियस	(Acid Arsenious)	,, ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(३६) सीरप हाइपोफास्फेट को०	(Syrup Hypophosphate Co.)	३० बूंद
सीरप ग्लीसरोफास्फेट को०	(Syrup Glyceroposphate Co.)	,, ,,
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट डेमायनी	(Liquid Ext Damianae)	,, ,,
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(३७) एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext Nux Vomica)	१ ग्रेन
फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	१/३ ,,
क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	१/२ ,,
एक्स्ट्रैक्ट डेमायनी	(Ext. Damianae)	२ ,,
		१ गोली । २ मात्रा

R/

(३८) टेस्टिकुलर एक्स्ट्रैक्ट	(Testicular Extract)	२ मात्रा
		भोजनोपरान्त।

R/

(३९) एक्स्ट्रैक्ट डेमायनी	(Ext. Damianae)	२ ड्राम
फास्फरस	(Phosphorus)	१/२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट कैनेबिस इण्डिका	(Ext. Canabis Indica)	३० ,,
स्ट्रिक्नीन सल्फ	(Strychnine Sulph)	२ ,,

४० गोली बनावें।

मात्रा—१ गोली, ६, ६ घण्टे पर।

R/

(४०) केल्सि ग्लीसरोफास्फेट	(Calci Glycerophosphate)	१ ड्राम
फरीफास्फेट	(Ferric Phosphate)	२० ग्रेन

जिङ्क फास्फेट	(Zinc Phosphate)	२ ग्रेन
आरी एट सोडियम क्लोराइड	(Auri et Sodiumchloride)	१ "
स्ट्रिक्नीन सल्फ	(Strychnine Sulph)	½ "

२० मात्रा बनाना। ३ मात्रा

R/

(४१) स्पर्मीन एसेन्स (Spermin Essence) २०–३० बूंद प्रातःकाल

R/

(४२) लाइकर टेस्टिकुलरिस (Liqr Testicularis) १५–२० बूंद २ मात्रा

R/

(४३) लाइकर टेस्टिकुलरिस सूची (Liqr. Testicularis inj.)

उरुस्तम्भ

(१) कालेधतूर की जड़	१ तोला	कालाजीरा	१ तोला
पोस्ते की ढोढ़ी	" "	जयन्तीपत्र	" "
लहसुन	" "	सहजन छाल	" "
मरीच	" "	सरसों	" "

एकत्र गोमूत्र में पीस लेप करते हैं।

(२) चीता	१ तोला	अतीस	१ तोला
इन्द्र जौ	" "	कुटकी	" "
पाठा	" "	हरड़	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४–६ माशा। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

अष्टकट्वरतैल (भा० प्र०) उरुस्तम्भ नाशक तथा क्षुधा वर्धक है।

(३) पीपरामूल	८ तोला	सोंठ	८ तोला

जल के साथ पीस लुगदी बनावें।

सरसों का तैल	६४ तोला	मट्ठा	६४ तोला
दही	" "	लुगदी	१६ "

इन्हें कलईदार कड़ाही में तैल मात्र अवशेष तक पाककर छान रखे। मर्दन करे।

(४) कूठ	½ पाव	देवदारु	½ पाव
लोहवान	" "	नागकेशर	" "
सुगन्धवाला	" "	वनतुलसी	" "

सरल धूप	½ पाव	असगन्ध	½ पाव

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों तैल	४ सेर	लुगदी	१ सेर
जल	१६ "		

एक कलईदार कड़ाही में तैल मात्र अवशेष तक पाक करे। छान के अन्दर बन्द रखे। रोगी को पिलाते हैं। मात्रा—½ तोला। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) महासैन्धवाद्य तैल ½ तोला

प्रातः तथा सायंकाल। मर्दन भी करते हैं।

(६) सेंधा नमक	८ तोला	चीता जड़	८ तोला
सोंठ	२० "	शुद्ध भिलावा	२० नग
पीपरामूल	८ "		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

एरण्ड तैल	४ सेर	लुगदी	सादी तैयार
कांजी	३२ "		

इनको एकत्र तेल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखते हैं। मात्रा—½ तोला प्रातःकाल। मर्दन भी करते हैं।

(७) आढ्यवातान्तक रस १ गोली

अनुपान—हींग, सेंधानमक तथा मधु के साथ। प्रातः तथा सायंकाल। अत्युत्तम है।

(८) अमृतादि गुग्गुल ३ माशा

अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

(९) गुंजाभद्रक रस (र० सा०) ४ रत्ती

अनुपान—हींग, सेंधानमक तथा मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) मदार की जड़ गोमूत्र में पीस लेप करना।

(११) नदी के धारा के प्रतिकूल चलना।

वन्ध्यत्व (Sterelity)

(१) बृहत् कल्याण घृत १ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

(२) बृहत् फल घृत १ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

प्रियङ्ग्वादि तैल भै० र०

(३) प्रियंगु फूल	४ तोला	कमल की जड़	४ तोला
मुलेठी	४ तोला	हरड़	४ तोला
बहेड़ा	४ "	आँवला	४ "
रसौत	४ "	श्वेतचन्दन	४ "
मजीठ	४ "	सोवा	४ "
राल	४ "	सेंधानमक	४ "
मोथा	४ "	मोचरस	४ "
काकमाची	४ "	बेल का गुदा	४ "
बाला	४ "	गजपीपर	४ "
काकोली	४ "	क्षीरकाकोली	४ "

इनको जल के साथ पीस लुगदी करे।

काले तिल का तैल	४ सेर	बकरी का दूध	४ सेर
दही	४ "	दारुहल्दी का क्वाथ	४ "
लुगदी	सादी तैयार		

इन्हें एकत्र मन्दाग्नि पर तैल मात्र अवशेष तक पाक छान रखे। मालिश करते हैं। प्रातः तथा सायकाल रामबाण है।

(४) कुमारकल्पद्रुमरस ६ माशा

अनुपान—मधु प्रातः तथा सायंकाल।

शतावरी घृत

(५) मेदा	२ तोला	मजीठ	२ तोला
मुलेठी	२ "	कूठ	२ "
त्रिफला	२ "	खरैंटी	२ "
सफेदविदारीकन्द	२ "	काकोली	२ "
क्षीरकाकोली	२ "	असगंध	२ "
अजवाइन	२ "	दारुहल्दी	२ "
हल्दी	२ "	कुटकी	२ "
हींग	२ "	नीलाकमल	२ "
दाख	२ "	श्वेत चन्दन	२ "
लालचन्दन	२ "		

इनको एकत्र जल के साथ पीस लुगदी बनाना।

शतावर	१६ सेर	धेनुगाय का दूध	१६ सेर

धेनुगाय का घी ४ सेर लुगदी उल्लिखित परिमाण की

घृत शेष तक मन्दाग्नि पर पाक करे।

मात्रा—१ तोला। प्रातः तथा सायंकाल।

स्त्री रोगों के तथा वन्ध्यत्व नाशन में उत्तम है।

(६) नागोरी असगंध २ तोला

गाय के दूध के साथ पीस लुगदी बनावे।

गाय का दूध १ पाव गाय का घी १ तोला लुगदी २ तोला

कलईदार कढ़ाही में इन्हें मन्दाग्नि पर पाक करले। ऋतु के पश्चात् चौथे दिन स्त्रियों को पिला दूध भात खिला रात्रि में मैथुन करे। अवश्य गर्भ रहता है।

(७) गुरुच	१ तोला	त्रिफला	१ तोला
रास्ना	१ "	हल्दी	१ "
दारुहल्दी	१ "	शतावर	१ "
श्योनाक	१ "	दोनों कटेरी	१ "
मेदा	१ "	सोंठ	१ "

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी ½ सेर दूध २ सेर लुगदी सादी तैयार

इनको मन्दाग्नि पर घृत शेष पर्यन्त पाक कर छान रखे।

मात्रा—६ माशा। प्रातः तथा सायंकाल।

योनि रोग नाशन में रामबाण है।

(८) छोटी पीपर	५ तोला	सोंठ	५ तोला
मरीच	५ "	नागकेशर	५ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—६ माशा। अनुपान—मधु।

ऋतुस्नान के पश्चात् चौथे दिन प्रातःकाल खिला रात्रि में रति करना। अवश्य गर्भ रहता है।

(९) नागकेशर	४ तोला	लक्ष्मण	४ तोला
असगंध	४ "	सुपारी	४ "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—४-६ माशा। अनुपान—मधु

प्रातः तथा सायंकाल।

वन्ध्यत्वनाशन तथा पुत्रोत्पादन में श्रेष्ठ है।

R/

(१०) कार्पसलुटियम (Corpusluteum tabt) १ गोली

२ गोली

R/

(११) पोटेण्ट फीमेल गोली (Potent female Tabts) १ गोली
२ मात्रा

R/

(१२) थायरायड गोली (Ext. Thyroid Tabts) १ गोली
३ मात्रा

R/

(१३) कार्पोलुटिन गोली (Corpolutin tabts) १ गोली
३ मात्रा

सूची—

कार्पोलुटिन (Corpolutin), विटामिन (ई) (Vita. E.)

पेटेण्ट औषधियाँ—

एन्टोस्टैब (Antostab), फिजोस्टैब (Physostab), स्टिवोएस्ट्राल (Stboe-strol), ओवोस्टैब (Ovostab), लुटियोस्टैब (Luteostab).

फिरंग (Syphilis)

(१) नमक, लालमिर्च, गुड़ तथा खटाई का त्याग करना चाहिये।

(२) रसकपूर ४ रत्ती

गेहूँ के आंटे को सान कुप्पी बना रसकपूर को उसमें बन्द कर आंटे पर लवंग चूर्ण लगा जल के साथ निगलने को देते हैं। दाँत से स्पर्श नहीं होने देते। ऊपर से पान खिलाते हैं।

नोट—इसके सेवनकाल में शाक, अम्ल, नमकीन पदार्थ, परिश्रम, धूप, पर्पट तथा अत्यधिक स्त्री प्रसंग त्याज्य है।

(३) पारद	२४ रत्ती	खैर	२४ रत्ती
अकरकरा	४८ "	मधु	७२ "

खरल में मर्दन कर ७ गोलियाँ बनावे।

मात्रा—१ गोली। प्रातःकाल

नोट—अम्ल तथा लवण युक्त पदार्थों का त्याग।

(४) पारद १ तोला गंधक १ तोला खैरसार १ तो०

इनकी कज्जली करे।

हल्दी	१ तोला	नागकेशर	१ तोला
छोटी लाची	१ "	बड़ी लाची	१ "
स्याहजीरा	१ "	सफेद जीरा	१ "

अजवाइन	१ तोला	सफेदचन्दन	१ तोला
लालचन्दन	१ "	पीपर	१ "
वंशलोचन	१ "	जटामांसी	१ "
तेजपत्र	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। इसमें से ½ तोला चूर्ण कज्जली में मिला ८ तोले मधु तथा ८ तोले घी के साथ खरल कर रखे।

मात्रा—½ तोला। अनुपान—मधु।

प्रातः तथा सायंकाल। फिरंग जन्य व्रण शान्त होते हैं।

नोट—२१ दिनों तक नमक का परित्याग करते हैं।

(५) पारद १ तोला गंधक १ तोला चावल १ तोला

इनकी कज्जली कर ७ गोली बनावे।

इनका धूम्रपान करना।

फिरंग निश्चित नष्ट होता है।

(६) पारद २४ रत्ती

पीली फूल वाली खरेटी के रस के साथ दोनों हथेलियों में पारद के लुप्त हो जाने तक मले। फिर हाथ को अग्नि पर सेंक ले। यह क्रिया ७ दिनों तक करते हैं।

R/

(७)	पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	५ ग्रेन
	लाइकर हाइड्रार्जिरी परक्लोर	(Liqr. Hydrarg Perchlor)	२० बूंद
	जल	(Aqua)	१ औंस
			३ मात्रा

R/

(८)	पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	५ ग्रेन
	लाइकर हाइड्रार्जिरी परक्लोर	(Liqr Hydrarg Perchlor)	२० बूंद
	लाइकर सार्सापेरिला को०	(Liqr. Sarsaparilla Co.)	½ ड्राम
	जल	(Aqua)	१ औंस
			३ मात्रा

R/

(९)	पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	५ ग्रेन
	लाइकर हाइड्रार्जिरी परक्लोर	(Liqr Hydrarg Perchlor)	२० बूंद
	स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
	जल	(Aqua)	१ औंस
			३ मात्रा

R/

(१०) लोशियो निग्रा (Lotio Nigra)

प्रारम्भिक व्रण पर लगाते है।

R/

(११) हाइड्रार्जिरी एट जिंकसाइनाइट (Hydrarg et Zinccyanide) ५ ग्रेन

अगवेण्टम लैनोलीन को० (Ung Lanoline Co.) १ औंस

प्रारम्भिक व्रण पर लगाते है।

R/

(१२) केलोमल (Calomel) १ ड्राम

वैसलीन (Vaseline) २ ,,

व्रण पर लगाते हैं।

R/

(१३) हाइड्राजंकम क्रीटा (Hydrarg cum Creta) २ ग्रेन

पल्व ओपियाई (Pulv. Opii) ८ ,,

१ गोली

३ मात्रा

सूचीवेध चिकित्सा—

प्रारम्भिकावस्था—

संखिया तथा पारद या विस्मथ प्रवेश विधि

चिकित्सा दिवस	सालवर्सन (६०६) (Salvarsan)	न्यूसालवर्सन* (९१४) (Neosalvarsan)	स्टेबिलार्सिन (Stabilarsin)	सल्फार्सनाल (Sulfarsenol)	विस्मथ (Bismuth)	पारद (Mercury)
	ग्राम	ग्राम	ग्राम	ग्राम	ग्राम	ग्रेन
प्रथम दिन	०·३	०·४५		०·४२	०·२५*	१
८ वें ,,	०·3	०·४५	०·४५	०·४२	०·२५	,,
१५ वें ,,	०·३	०·४५	०·४५	०·४२	०·२५	,,
२२ ,, ,,	—	—	—	—	—	—
२९ ,, ,,	०·४	०·६	०·६	०·६	०·२५	१
३६ ,, ,,	०·४	४ ६	०·६	०·६	०·२५	१
४३ ,, ,,	—	—	—	—	—	—
५० ,, ,,	०·४	०·६	०·६	०·६	०·२५	१
५७ ,, ,,	०·४	०·६	०·६	०·६	०·२५	,,

* स्टेविलार्सिन की प्रथम सूची न देकर न्यूसालवर्सन या साल्फार्सनाल की देते हैं।

* किन्हीं किन्हीं रोगियों में विस्मथ को ०·२ ग्राम की मात्रा मे प्रविष्ट करते हैं।

६४ वें दिन	वासरमैन परीक्षा के हेतु रक्त लेना।
६५ ,,—८४ वें दिन	अन्तिम सूची के पश्चात् ४ सप्ताह का विश्राम।
८५ ,,—९८ ,, ,,	१४ दिनों तक पोटेसियम आयोडाइड का व्यवहार।
९९ ,,—१२५ वें ,,	५७ वें दिवस जैसा पुनः चिकित्सा चलाना।

१६२ वें दिन वासरमैन परीक्षा के हेतु रक्त लेते हैं तथा ब्रह्म वारि की भी परीक्षा करते हैं। यदि दोनों में जीवाणु की उपलब्धि न हो तो चिकित्सा बन्द कर देते हैं। अन्यथा द्वितीयावस्थावत चिकित्सा करते हैं। यह चिकित्सा प्रथमावस्था की चिकित्सा के बारह सप्ताह पश्चात् प्रारम्भ करते हैं।

द्वितीयावस्था—

प्रथम से १६२ वें दिवस तक प्रथमावस्थावत।
१६३ वें से २३१ वें दिवस तक आराम।
२३२ वें से २४५ वे दिवस तक पोटेशियम आयोडाइड का व्यवहार।
२४६ वें से ४०० वें दिवस तक पुनः प्रथमावस्थावत चिकित्सा।

अब ४०१ वासरमैन परीक्षा करते हैं। रक्त तथा ब्रह्म वारि में रोगोत्पादक जीवाणु की अनुपस्थिति में चिकित्सा समाप्त हो जाती है। यदि वे उपस्थित रहते हैं तो ३ मास विश्राम के पश्चात् सालवर्सन का ०.३ ग्राम की या अन्य योग की ३ मात्रा प्रविष्ट करते हैं। इसके साथ साथ पारद की १ ग्रेन की या विस्मथ की ०.२५ ग्राम की ३ मात्रा प्रविष्ट करते हैं। इन सूची वेधों के १४ दिन पश्चात् एक सप्ताह के अन्तर से संखिया तथा विस्मथ वा पारद की दो सूची प्रविष्ट करते हैं। रक्त वा ब्रह्मवारि में रोगोत्पादक जीवाणुओं की अनुपस्थिति में चिकित्सा बन्द कर देते हैं।

तृतीयावस्था—

इसकी चिकित्सा लक्षणों पर निर्भर रहती है। अतः इसमें कोई निर्दिष्ट चिकित्सा क्रम नहीं है।

पेटेण्ट औषधियाँ—

सल्फोस्टैब (Sulphostab), नोवोस्टैब (Novastab), विस्मोस्टैब (Bismo-stab), क्लोरोस्टैब (Chlorostab), क्विनोस्टैब (Quinostab), अर्सान (Arsan), विस्मथ (Bismuth), विस्मथ आक्सी क्लोराइड (Bismuth oxy Chloride), आयडिसिन (Iodicin), मर्क्युरियल क्रीम (Mercurial Cream), ग्रे आयल (Grey Oil), मरक्यूरिक क्लोराइड (Mercuric Chloride), ग्रे पाउ॰

ग्रे गोली (Grey Powder tabts), एनर्सान (Ener-an), एसीटिलार्सान (Acetylarsan), विसेण्टाल (Bisantol), विसग्लूकोल (Bisglucol), न्यूकार्डील (Neocardyl), बियार्सेमाइड (Biarsamide), बिस्टोवोल (Bistovol), रुबील (Rubyl), विस्क्वीनाल (Bisqninol).

उपदंश (Soft Chancre)

(१) त्रिफला	१ तोला	खैर की लकड़ी	१ तोला
नीमछाल	,, ,,	विजयसार	,, ,,
अर्जुन छाल	,, ,,	अडूसे की पत्ती	,, ,,
पीपर छाल	,, ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण करे। इस चूर्ण के बराबर शुद्ध गुग्गुल मिला ६, ६ माशे की गोलियाँ बनावें। मात्रा—१ गोली अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल व्रण नाशक है।

(२) शुद्ध जयपाल बीज की गिरी	३ माशा	खुरासानी अजवायन	६ माशा
चोक	४ ,,	मरीच	२ रत्ती
काली तिल	६ ,,		

कपड़छान चूर्ण करे। फिर ½ पाव गुड़ के साथ तीन दिन तक खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावें। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मलाई। प्रातः तथा सायंकाल ८, १० दिनों तक।

नोट—इसके सेवन काल में तेल, खटाई तथा मिर्च वर्जित हैं।

(३) शुद्ध गन्धक	२ तोला	शुद्ध जयपाल चूर्ण	२ तोला
शुद्ध पारद	,, ,,	मरीच चूर्ण	,, ,,
शुद्ध सोहागा	,, ,,		

पारद, गन्धक की कज्जली बना शेष वस्तुओं को कज्जली में डाल गो दुग्ध के साथ खरल कर ½ रत्तो प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—शीतल जल। प्रातः तथा सायंकाल। दस्त साफला उपदंश नाशक है।

पथ्य—दही, भात या दूध, भात।

(४) कस्तूरी	१ तोला	खैर	१ तोला

हरिद्रा	१ तोला	शुद्ध कंकुष्ठ	१ तोला
दारुहल्दी	" "		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे। फिर ३/४ सेर तिल तेल में पाक करे। तेल मात्र शेष रहते छानकर रखे। मात्रा—१ माशा। अनुपान—६ माशा चौराई का रस। प्रातः तथा सायंकाल। व्रण, फुंसी आदि नाशक है।

(५) शुद्ध संखिया	२ तोला	अकरकरा	२ तोला
सफेद कत्था	" "	सफेद सुपारी	" "
भांगरा	" "		

जल के साथ खरल कर बाजरे के बराबर गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल। ८ दिनों तक। घोर उपदंश नाशक है।

(६) शुद्ध संखिया	१ तोला	पीपरी खैर	२ तोला

बंगला पान के स्वरस के साथ ४८ घण्टे तक खरल कर बाजरे बराबर गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल प्रातः तथा सायंकाल। पथ्य—दूध, भात।

नोट—इसके सेवनकाल में खटाई, मिर्च तथा दही वर्जित है।

(७) शुद्ध हिंगुल	१ तोला	माजूफल	१ तोला
नीम का गोंद	" "	सुहागा	" "
अकरकरा	" "		

इनको एकत्र कूटकर मिला ५ मात्रा में विभक्त करके। हुक्के पर एक मात्रा रख बेर के कोयले के आग के साथ पीना। उपदंश निस्सन्देह नष्ट होता है।

(८) शुद्ध हिंगुल	१ तोला	मदार की जड़	१ तोला
माजूफल	" "	भाँगरा	" "

इनका एकत्र चूर्णकर कर रखना। ९ माशा चूर्ण, खैर की लकड़ी के कोयले के साथ हुक्के पर रख पीना। उपदंश नाशन में रामबाण है।

(९) खैर सार	१ तोला	देशी मोम	१ तोला
अफीम	६ माशा	शतधौत घृत	५ "

इनको एकत्र मिला मलहम बनावे। व्रण, अर्श की वेदना नाशक है।

(१०) सफेद कत्था	२ तोला	सिन्दूर	½ तोला
कपूर	१ ,,		

शतधौत घी में मिला मल्हम बनावे। व्रण, अर्श तथा चर्मरोग को निश्चय नष्ट करता है।

(११) करंज बीज	१ छ०	बड़ की छाल	१ छ०
नीमपत्र	,, ,,	गुलर की छाल	,, ,,
विजयसार	,, ,,	पीपल की छाल	,, ,,
शालवृक्ष की छाल	,, ,,	पाकड़ की छाल	,, ,,
जामुन की छाल	,, ,,	वेतस की छाल	,, ,,

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

उपर्युक्त दसों औषधियाँ	८ सेर	जल	६४ सेर

एकत्र खौलावे १६ सेर जल शेष रहते छान ले।

घी	४ सेर	लुगदी	० सेर
क्काथ	१६ ,,		

इनको मन्दाग्नि पर घृत शेष तक पाक कर छान रखे। व्रण पर लगाना। पूयस्राव तथा व्रण निश्चित ही बन्द होता है।

कोशातकी तैल—

(१२) कड़वी तैल	१ तोला	सोंठ	१ तोला
कड़वी तुम्बी बीज	,, ,,		

इन्हें जल के साथ पीस लुगदा बनावे। इससे तिल के तेल को पकावे। व्रण पर लगाना। यह घोर व्रण, सड़े गले लिंग मांस को अच्छा करती है।

(१३) दारुहल्दी की छाल	१ तोला	गोबर का रस	१ तोला
शखनाभि	,, ,,	तेल	,, ,,
रसौत	,, ,,	घी	,, ,,
लाक्षा	,, ,,	दूध	,, ,,

इन्हे एकत्र पीस उपदंश पर लेप करे। व्रण, शोथ तथा दाह शामक है।

(१४) आंवला १ तोला हरड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला

इनका क्काथ कर व्रण को धोवे तथा इन्हीं को जला राखकर मधु के साथ लेप करे व्रण नाशक है

(१५) सेमल के नरम कंद का रस उपदंशजन्य जंघा ग्रंथि शोथ पर लगाना। शोथ के दाह को शान्त कर उसे बैठाता है।

(१६) वैसिलस डुक्रेज वैक्सीन (Ducrey's Bacillus Vaccine) शिरागत।
(१७) मेल्कोज (Dmelcos) व्रण पर लगाना।
व्रण शामक।
(१८) मेल्कोज सूची (Dmelcos injection) व्याधि नाशक है।

गर्भाशयिक असंवृत्ति (Sub involution of the Uterus)

(१) चीरीवृक्षों की छाल २ तोला जल १ सेर
इनका काथ करे। ½ सेर जल शेष रहते छान ले।
गर्भाशय प्रक्षालन करना।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/
(२) टिंचर आयोडीन (Tr Iodine) १ ड्राम
जल (Aqua) २ पाउण्ड
गर्भाशय प्रक्षालन।
प्रातः तथा सायंकाल

R/
(३) हाइड्रेस्टिन (Hydrastin) ५ ग्रेन
३ मात्रा।

R/
(४) पिच्युटरीन सूची (Pituitarin inj) सप्ताह में २ बार।

R/
(५) लिक्विड एक्सट्रैक्ट अर्गट (Liquid Ext Ergot) २० बूंद
मैगसल्फ (Mag Sulph) १ ड्राम
जल (Aqua) १ औंस
३, ४ मात्रा

नोट—उपरोक्त औषधियां गर्भाशयिक असंवृत्ति नाशक हैं।

R/
(६) लिक्विड एक्सट्रैक्ट अर्गट (Liquid Ext Ergot) २० बूंद
टि० फेरीपरक्लोर (Tr. Ferriperchlor) १५ "
सीरप आरेंशाइ (Syrup Aurantii) ½ ड्राम
जल (Aqua) १ औंस
२ मात्रा
भोजनोपरान्त।
पाण्डु नाशक तथा शक्ति दायक है।

मूत्र कृच्छ्र (Supression of urine)

(१) इलायची	१ तोला	खीराबीज	१ तोला
पाषाणभेद	" "	सेंधा नमक	" "
शुद्ध शिलाजीत	" "	केशर	" "
पीपर	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—४, ६ माशा
अनुपान—चावल का धोवन। प्रातः तथा सांयकाल।

(२) शुद्ध शिलाजीत	१ तोला	केसर	१ तोला
गोखरु	" "	ककड़ी बीज	" "
पाषाणभेद	" "	सेंधानमक	" "
लाची	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—४, ६ माशा
अनुपान—चावल का धोवन प्रातः तथा सांयकाल।

(३) आंवलासार गन्धक	४ माशा	मिश्री	१ तोला
जवाखार	" "	मट्ठा	१ पाव

प्रातः तथा सांयकाल

(४) भुनी फिटकिरी	२ माशा	गेरु	२ माशा
मिश्री	६ "		

धारोष्ण गोदुग्ध के साथ। प्रातः काल
मूत्रकृच्छ्र तथा पूय मेह नाशक में श्रेष्ठ है।

(५) यवक्षार	६ माशा	गोखरु चूर्ण	६ माशा
मिश्री	" "		

प्रातः तथा सांयकाल।

(६) राल	६ माशा	सफेद चन्दन का चूर्ण	६ माशा
मिश्री	" "		

प्रातः तथा सांयकाल
मूत्रकृच्छ्र तथा रक्तमेह नाशक है।

(७) चन्दन का तेल १ तोला, बिरोजा तेल १ तोला, शीतल चीनी का तेल „ „

एकत्र शीशी में रखना। मात्रा—१० या २० बूंद अनुपान—मिश्री ६ माशा ३, ४ मात्रा। मूत्रकृच्छ्र, मूत्र की जलन तथा पूय नाशक है।

(८) बिरोजा सत्व ६ माशा, लाल गेरु ६ माशा, कलमी शोरा „ „, संगजरहत „ „, फिटकिरी का लावा „ „, खरिया मिट्टी „ „, खैर „ „, गेरु „ „, सफेद चन्दन चूर्ण „ „, हजरल यहूद „ „, रेवन चीनी „ „

इनका कपड़छान चूर्ण करे। चूर्ण के बराबर इसमें मिश्री मिला रखे। मात्रा—४ माशा। अनुपान—गाय दूध। प्रातः तथा सायंकाल। मूत्रकृच्छ्र तथा पूयनाशक है।

(९) वंशलोचन ४ माशा, रेवन्द चीनी ३ माशा, गुजराती लाची बीज „ „, जवाखार „ „, श्वेतचन्दन का बुरादा „ „, कलमीशोरा „ „, शीतल चीनी ३ „

इनका कपड़छान चूर्ण करे, फिर चूर्ण के बराबर मिश्री मिला रखे। मात्रा—४ माशा। अनुपान—चावल का धोवन। प्रातः तथा सायंकाल। मूत्र कृच्छ्र तथा दाह नाशक है।

(१०) शुद्ध पारद १ तोला, यवक्षार १ तोला, शुद्ध गन्धक „ „

पारद तथा गन्धक की कज्जली कर यवक्षार के साथ खरल कर रख लेते हैं। मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—चीनी तथा छाछ। प्रातः तथा सायंकाल।

(११) शीतल पर्पटी (सि० यो० सं०) ४ रत्ती

अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(१२) शुद्ध पारद	६ माशा	शुद्ध गन्धक	६ माशा

इनकी कज्जली करे ।

जवाखार	६ माशा	गोखरू	६ माशा
जवासा	" "	हरड़	" "

इनका कपड़छान चूर्ण करे ।

कज्जली	१२ माशा	अभ्रकभस्म	६ माशा
लोहभस्म	६ "	वंगभस्म	" "

इनको पंचमूल क्वाथ तथा गोखरू क्वाथ में क्रमशः एक एक दिन खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे ।

मात्रा—१ गोली । अनुपान—मधु ३ माशा ।
गूलचर चूर्ण १ माशा ।
प्रातः तथा सायंकाल ।

R/

(१३) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१० ग्रेन
स्पि० थरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	२० बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
इन्फुजन स्कोपेरियस	(Infusion Scoparius)	१ औंस

३, ४ मात्रा ।

R/

(१४) पाट० साइट्रास	(Pot Citras)	१० ग्रेन
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	३० बूंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा ।

R/

(१५) सोडा बाई कार्ब	(Soda bicarb)	१५ ग्रेन
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	२० बूंद
इन्फुजन बुचु	(Infusion Buchu)	१ औंस

३ मात्रा ।

R/

(१६) कैफीन सोडियो बेंजोएट	(Caffeine Sodio Benzoate)	५ ग्रेन
अमन बेंजोएट	(Ammon Benzoate)	८ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा ।

R/

(१७) सोडा बाई कार्ब	(Sodabicarb)	१० ग्रेन
पाट० साइट्रास	(Pot Citras)	” ”
हेक्सामीन	(Hexamin)	” ”
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscyamus)	५ बूंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		४ मात्रा ।

नोट—ये औषधियाँ मूत्रकृच्छ्र नाशक है ।

R/

(१८) अमन कार्ब	(Ammon Carb)	१० ग्रेन
टिं० डिजिटेलिस	(Tr.Digitalis)	५ बूंद
सीरप आरेंशाई	(Syrup Aurantii)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा ।

हृदयावसाद नाशक है ।

R/

(१९) टर्पेण्टाइन स्टुप (Terpentine Stupe) वृक्क प्रदेश पर प्रयोग करने से मूत्र त्याग कराती है ।

R

(२०) डायूरेटिन (Diuretin) १० ग्रेन

३, ४ मात्रा । मूत्रल है ।

R/

(२१) स्ट्रिक्नीन सूची (Strychnine inj) त्वचागत

हृदयावसाद नाशक है ।

मूत्राघात (Retention of Urine)

(१) कलमी शोरा	४ तोला	श्वेत जीरा	४ तोला
रेवन्द चीनी	” ”	यवक्षार	” ”

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना । मात्रा—३ माशा ।
अनुपान—गाय दूध । प्रातः तथा सायंकाल ।

(२) गोखरु	३ माशा	शतावर	३ माशा
एरण्ड जड़	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर ½ सेर दूध में औटावे। औटाने पर दूध को छान रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) पाषाण भेद	१ सेर १२ छ०	पुनर्नवा	१ सेर ९ छ०
एरण्ड जड़	" " ६ "	शतावर	" " " "
शालपर्णी	" " " "	जल	६४ "

इनको खौलावे जब जल १६ सेर शेष रहे तब छान ले।

तिल तैल	४ सेर	क्वाथ	१६ सेर

इन्हें तैल मात्र अवशेष तक पाक करे। मात्रा—६ माशा। अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) पुनर्नवा	२ सेर	शतावर	२ सेर
जल	३२ "		

इनका क्वाथ करे। जब ८ सेर जल शेष रहे तब छान ले।

पाषाण भेद	२½ छ०	एरण्ड जड़	२½ छ०
सालपर्णी	२½ "		

इन्हे जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	२ सेर	क्वाथ	८ सेर	लुगदी	०

इन्हें तैल मात्र अवशेष तक पाक करे। शीतल होने पर तैल छान कर रखले। मात्रा-६ माशा। अनुपान—गरम दूध। प्रातःतथा सायंकाल।

(५) कपूर की बत्ती बना मूत्र प्रणाली में रखना। मूत्र त्याग कराने में उत्तम है।

(६) पलास फूल — जल में उबाल किंचित गरम रहते वस्ति प्रदेश (पेडू) पर बाँधना। ३, ४ वार। मूत्रत्याग कराती है।

(७) विदारी घृत	६ माशा	अनुपान—गरम दूध, २ मात्रा।
(८) चित्र काथघृत	६ माशा	अनुपान—गरम दूध, २ मात्रा
(९) कुशावलेह	१ तोला	अनुपान—ताजा जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) वरुणछाल चूर्ण	८ तोला	हरड़ चूर्ण	२ तोला
आंवला चूर्ण	” ”	पिठवन चूर्ण	१ ”
धायफूल चूर्ण	४ ”	लोह भस्म	” ”
अभ्रक भस्म	१ ”		

इनको एकत्र मिला रखना। मात्रा—४ माशा। अनुपान—मधु। प्रातःतथा सायंकाल। व्याधि नाशक तथा बल वर्धक है।

R/

(११) शलाका (कैथिटर Catheter) को मूत्रप्रणाली में प्रविष्ट कर मूत्र निकालना।

R/

(१२) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	२० ग्रेन
यूरेट्रोपिन	(Uratropin)	१० ”
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyosoyamus)	५ बूंद
स्पि० जुनिपर	(Spt. guniper)	१० ”
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा

नोट—१—न० १२ की ओषधि के प्रयोग काल में मूत्र प्रणाली अवरोध होन होनी चाहिये। २—रोग के कारण को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

श्लीपद (Elephantisis or Fileria)

(१) त्रिफला	२४ तोला	सोंठ	८ तोला
देवदारु	८ ”	पुनर्नवा	” ”
पीपर	” ”	विधारावीज	५७ ”

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—कांजी। प्रातःतथा सांयकाल।

श्लीपदगज केशरी (भै० र०)

(२) शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गन्धक	१ तोला

इनकी कज्जली करना।

त्रिकटु	१ तोला	शुद्ध सोहागा	१ तोला
शुद्ध वत्सनाभ	” ”	शुद्ध जयपाल	” ”
शुद्ध अजवाइन	” ”	चीताजड़	” ”
शुद्ध मैनशिल	” ”		

इनका कपड़ छान चूर्ण करना।

कज्जली	०	चूर्ण	०

इनको क्रमशः भृंगराज, गोखरु, नीबू तथा आर्दी स्वरस में खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सांयकाल।

(३) मैनफल	१ तोला	नील कमल	१ तोला
समुद्र नमक	" "		

जल के साथ इन्हें पीस मक्खन में मिला लेप करे। श्लीपद की जलन को नष्ट करती है।

(४) नित्यानन्द रस (र० सा० स०) १ गोली

अनुपान—हरड़ भिगोया जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) पीपर	१ तोला	दन्ती	४ तोला
चीता	१ "	हरड़	२० "

कपड़ छान चूर्ण कर ८ तोला गुड़ मिला मधु के साथ मोदक बना रखे। मात्रा—१ तोला। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायकाल।

(६) सौरेश्वर घृत १ तोला अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायकाल।

(७) बायविडङ्ग	८ छ०	चीता जड़	८ छ०
मरीच	८ "	देवदारु	" "
मदार जड़	" "	मुसब्बर	" "
सोंठ	" "	पाँचो नमक	" "

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	४ सेर	जल	१६ सेर
लुगदी	० "		

तैल मात्र अवशेष तक पाककर रखे। श्लीपद पर लगाना।

R/

(८) टि० फेरीपरक्लोर	(Tr Ferri Perchlor)	३० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		२ मात्रा

R/

(९) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१५ ग्रेन

अमन कार्ब	(Ammon Carb)	१० ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१०) डोनोवन्स सोलुशन	(Donovan s Solution)	५ बूंद
मैगसल्फ	(Mag sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

उत्तमोत्तम है।

R/

(११) लोशियो प्लम्बाई (Lotio plumbi)

श्लीपद के व्रणो पर लगाना।

सूची—

फाइब्रोलाइसिन (Fibrolysin), सोयामीन (Soamin), आर्सिनोटाइफाइड (Arsenotyphoid)

गुल्म रोग

(१) हींग	१ तोला	जीरा	५ तोला
वच	२ "	हरड	६ "
कालानमक	३ "	कूठ	१९ "
सोंठ	४ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२ माशा।
अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

हिंग्वादिचूर्ण—

(२) हींग	१ तोला	विडनामक	१ तोला
पीपरामूल	" "	सोंठ	" "
धनियां	" "	मरीच	" "
जीरा	" "	पीपर	" "
वच	" "	जवाखार	" "
चव्य	" "	सज्जीखार	" "
चीता	" "	दाड़िम	" "

पाठा	१ तोला	हरड़	१ तोला
कचूर	” ”	पोखरमूल	” ”
तितिड़ीक	” ”	अम्लवेत	” ”
सेंधानमक	” ”	झाऊबेर	” ”
सौंचरनमक	” ”	जीरा	” ”

इनका कपड़ छान चूर्ण कर क्रमशः आदी तथा नीबू स्वरस में एक एक दिन खरल कर रखे। मात्रा—३, ६ माशा। अनुपान—गरम जल। २ मात्रा। भोजनोत्तर।

(३) यवक्षार	९ तोला	काली मरीच	९ तोला
सोंठ	” ”	पीपर	” ”

इनका कपड़ छान चूर्ण करे। मात्रा—२ माशा। अनुपान—घी। प्रातः तथा सांयकाल। रक्त स्राव करा रक्त गुल्म नाशक है।

कांकायन गुटिका—

(४) कचूर	४ तोला	जवाखार	४ तोला
पुष्करमूल	४ ”	आदी	८ ”
दन्तीजड़	४ ”	अम्लवेत	८ ”
चीताजड़	४ ”	अजवाइन	२ ”
अदरख	४ ”	मरीच	२ ”
अरहर	४ ”	धनियाँ	२ ”
सोंठ	४ ”	पीपर	२ ”
बच	४ ”	अजमोदा	२ ”
निशोथ	४ ”	हरड़	८ ”
हींग	३ ”	वायविडंग	८ ”
सेंधानमक	४ ”	सूखा अनारदान	८ ”

इनका कपड़छान चूर्ण कर नीबू स्वरस में खरल कर ६, ६ माशे की गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—गरम जल। २ मात्रा।

वज्रक्षार—

(५) समुद्रनमक	२ तोला	शोरा	२ तोला
सेंधानमक	२ ”	सोहागा	२ ”

कचियानमक	२ तोला	सज्जीखार	२ तोला
यवक्षार	२ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर क्रमशः थूहर तथा मदारके दूध में ३ दिन तक खरल कर गोला बना मदार के पत्ते में लपेट हाड़ी में रख उसके मुख को वद कर पकावे। पक जाने पर उतार ले।

सोंठ	२ तोला	आँवला	२ तोला
मरीच	२ "	अजवाइन	२ "
छोटीपीपर	२ "	जीरा	२ "
हरड़	२ "	चीता छाल	२ "
बहेड़ा	२ "		

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

नोट—उपर की ओषधि तथा इस चूर्ण को एकत्र मिला शीशी में बंद रखे।

मात्रा—१-४ माशा। अनुपान—गरम जल। २ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(६) पलासक्षार घृत १ तोला मिश्री १ तोला

प्रातः तथा सायकाल।

(७) दन्ती हरीतकी १ तोला गुड़ ६ माशे

प्रातः काल दस्त साफ ला गुल्मनाशक है।

(८) नाराच घृत ६ माशा

अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) बृहत् कालानल रस १-२ गोली

अनुपात—दूध या गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) पंचानन रस (र० सा० सं०) १ गोली

अनुपान—आँवला स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।

(१ कुमार्यासव (शा० ध० स०) २ तोला
जल २ "

भोजनोपरान्त।

(१२) भारंगी १ तोला सोंठ १ तोला
पीपर १ " मरीच १ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर १ तोला गुड़ मिला रखे। मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—काले तिल का क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल। रक्तगुल्म नाशक है।

(१३) सेंधानमक	१ तोला	पीपर	१ तोला
सोंठ	१ "	मरीच	१ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—३ माशा।
अनुपान—घीकुवार रस। प्रातः काल
रक्तगुल्म नाशक है।

प्लीहा की व्याधियाँ (Spleen diseases)

(१) नौसादर — ४ रत्ती
अनुपान—पका पपीता। प्रातः तथा सायंकाल।
प्लीहा वृद्धि नाशक है।

(२) मुक्ता शुक्ति भस्म	४ रत्ती	मण्डूर भस्म	१ रत्ती

अनुपान—नीबू स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) कौड़ी भस्म	४ रत्ती	मण्डूर भस्म	१ रत्ती

अनुपान—नीबू स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) शंख भस्म	२ रत्ती	शुक्ति भस्म	१ रत्ती
कौड़ी भस्म	१ "		

अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायकाल।

(५) दारुहल्दी	१ तोला	श्वेत पुनर्नवा	४ माशा
कुटकी	४ माशा	जल	४ "
गुरुच	१½ पाव		

इनका क्वाथ करे। एक छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर पिलावे। अनुपान—६ माशा मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(६) हल्दी	२० तोला	घी कुवार रस	२० तोला
सेंधानमक	८० "		

इन्हें एक मिट्टी के पात्र में एकत्र रखे। मात्रा—६ माशा।
२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(७) वज्रक्षार (र० सा० सं०) — ३ माशा
अनुपान—मट्ठा। प्रातः तथा सायंकाल।

(८) अभया लवण — ६ माशा
अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) गुड़ पिप्पली — ६ माशा
अनुपान—गरमजल। प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) वृहत् लोकनाथ रस (र० सा० सं) २ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(११) चित्रकाद्य घृत ६ माशा—१॥ तोला।

प्रातः तथा सायंकाल।

(१२) अभयावटक १ तोला

अनुपान—गरमजल। प्रातः तथा सायंकाल।

(१३)

मानकन्द	३ तोला	सोंचर नमक	१ तोला
गिलोय	३ "	काला नमक	१ "
अड़ूसा जड़	३ "	जवाखार	१ "
शालपर्णी	३ "	सज्जीखार	१ "
चीता	३ "	ताड़ के जटा की क्षार	१ "
सेंधानमक	३ "	लटजीरा का क्षार	३ "
सोंठ	३ "	गो मूत्र	१६ सेर
पीपर	१ "		

कपड़ छान चूर्ण कर एकत्र पाक करे। गाढ़ा होने पर उतार शीतल कर १२ तोला मधु मिला रखे। मात्रा—६ माशा। अनुपान—गरम जल। २ मात्रा।

(१४) प्लीहारि लौह ४ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(१५) अग्निमुख चूर्ण १॥–३ माशा।

अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायकाल।

नोट—उपरोक्त ओषधियाँ प्लीहा वृद्धि तथा तज्जन्य विकार नाशक हैं।

R/

(१६)

सिकोना फेब्रिफ्यूज	(Cinchona febrifuge)	३ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid sulph Dil)	६ बूँद
फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	१ ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	$1\frac{1}{2}$ ड्राम
कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	१ बूँद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। भोजनोपरान्त

R/

(१७)

क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	३ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	५ बूँद

फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	१ ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ आस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(१८) कीनीन बाई हाइड्रोक्लोर इन सैकरोज सोलुशन सूची (Quinine Bihydrochlr in Saccarose Solution) मांसगत

R/

(१९) यूरिया स्टेबेमिन सूची (Urea Stebamin inj) शिरागत

कालाजार जन्य प्लीह नाशक है।

आंत्रिक ज्वर (Typhoid Fever)

(१) कटेरी	४ माशा	सोंठ	४ माशा
गुरुच	४ "	हरड़	४ "
पोखर मूल	४ "		

इन्हें जौ कुट कर १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहने पर छान शीतल कर रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) भारंगी	३ माशा	हरड़	३ माशा
गुरुच	३ "	सोंठ	३ "
नागरमोथा	३ "	पुष्करमूल	३ "
भटकटैया का पंचांग	३		

इन्हें जौ कुट कर १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। ३ दिनों में ही घोर सन्निपात नाशक है।

(३) बृहत् कस्तूरी भैरव रस (भै० र०) १ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) प्राणेश्वर रस (र० यो०) १ रत्ती

अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल। तीव्र ताप को भी कम करती है।

(५) सन्निपात भैरव रस — (र० सा० सं०) — १ रत्ती
अनुपान—आदी स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।
विवन्ध नष्ट कर सन्निपात नाशक है।

(६) चन्द्रशेखर रस — (र० सा० सं०) — २ रत्ती
अनुपान—आदी स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।
उग्र ज्वर नाशक है।

(७) वेताल रस — (र० सा० सं०) — १ रत्ती
अनुपान—आदी स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।
मूर्च्छा तथा कफ वृद्धि नाशक है।

(८) मृत संजीवनी रस — (र० सा० सं०) — १ रत्ती
अनुपान—आदी स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।
मरणासन्न रोगी को भी जीवित करती है।

R/
(९) सोडा बाईकार्ब — (Sodabicarb) — ५ ग्रेन
लाइकर पोटेशाई — (Liqr. Potassii) — १० बूंद
सैक्केरिनि — (Saccharini) — १ ग्रेन
ओलिव आयल — (Olive oil) — २० बूंद
जल — (Aqua) — १ औंस
३, ४ मात्रा।
मल को ढीलाकर निकालती है।

R/
(१०) सिनेमन आयल — (Cinnamon oil) — ३, ४ बूंद
जल — (Aqua) — १ औंस
४, ५ मात्रा।
आध्मान (Tympanitis) नाशक है।

R/
(११) पिलुला प्लम्बाई कम ओपियाई — (Pillula Phumbi cum opii) — २-४ ग्रेन
१ गोली। ३ मात्रा।
रक्त मिश्रित प्रवाहिका नाशक है।

R/
(१२) बिसमथ कार्ब — (Bismuth Carb.) — ५ ग्रेन

टि० ओपियम	(Tr. Opium)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा । दस्त को बन्द करती है ।

R/

(१३) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	५ ग्रेन
कैल्शियम लैक्टेट	(Calcium Lactate)	१० "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा ।
रक्त मिश्रित प्रवाहिका नाशक है ।

R/

(१४) टैनिक एसिड	(Tannic Acid)	१० ग्रेन
स्पि० टर्पेण्टाइन	(Spt. Turpentine)	१० बूंद
टि० क्लोरोफार्म को०	(Tr. Chloroform)	१५ "
टि० ओपियम	(Tr Opium)	१० "
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	४ "
जल	(Aqua)	१ औंस

६ मात्रा । रक्तस्राव रोधक है ।

R/

(१५) टर्पेण्टाइन	(Turpentine)	१० बूंद

कैप्सुल में २, ३ मात्रा ।
रक्तस्राव रोधक है ।

R/

(१६) मार्फीन सूची	(Morphine inj)	⅙ ग्रेन

त्वचागत । रक्तस्राव को रोकती है ।

R/

(१७) स्ट्रिक्नीन सूची	(Strychnine inj)	त्वचागत ।

हृदयावसाद नाशक है ।

R/

(१८) पल्व इपीकाक को०	(Pulv Ipecac Co)	१२ ग्रेन

२ मात्रा । अनिद्रा तथा प्रलाप नाशक है ।

R/

(१९) कैल्सियम लैक्टेट गोली	(Cal, Lactate Tabts)	१ गोली
विटामीन सी. गोली	(Vita. C Tabts)	" "

३, ४ मात्रा। रक्तस्राव नाशक है।

R/

(२०) क्लोरोमाइसेटिन	(Chloromycetin Capsule)	१ कैप्सुल

६ मात्रा नित्य।

सूची—

ग्लुकोज (Glucose), कैल्सियम विथ विटामीन बी (Cal. with Vita. B) एण्टी टाइफाइड सीरम (Antityphoid Serum)

हृद्योत्तेजक औषधियाँ (Stimulants)

R/

(१) स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Ammon Aromat)	३० बूंद
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	" "
टिं० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	१० "
कैम्फर जल	(Aqua Camphor)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(२) टिं० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	१० बूंद
टिं० आरेंशाई	(Tr. Aurantii)	१ ड्राम
स्पि० क्लरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Ammon Aromat)	३० "
स्पि० ईथरिस	(Spt Aetheris)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(३) एक्स्ट्रैक्ट माल्ट	(Ext. Malt)	१ ड्राम
वाइनम कोकी	(Vinum Cocae)	१ औंस

३, ४ मात्रा।

(४) मृतसंजीवनी सुरा	१ तोला	जल	१ तोला

सूची—

कोरामीन (Coramine), स्ट्रिक्नीन (Strychnine), केम्फर इन ईथर (Camphor in Ether)

गलगण्ड या थायरायड ग्रंथि की व्याधियाँ

(Diseases of Thyroid glands)

अमृतादि तैल

(१) गिलोय	२ छटाँक	अतिबला	२ छटाँक
निम्ब छाल	,, ,,	कुरइया की छाल	,, ,,
वला	,, ,,	देवदारु	,, ,,

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	४ सेर	जल	१६ सेर
लुगदी	० ,,		

तैल मात्र अवशेष तक एकत्र पाक करे, फिर छान रोगी को पिलावे।
मात्रा—६ माशा। प्रातः तथा सायंकाल।
गलगण्ड नाशन में उत्तम है।

काञ्चनार गुगुल (भै० र०)

(२) कचनार वृक्ष की छाल	४० तोला	मरीच	४ तोला
हरड़	८ ,,	वरुन छाल	,, ,,
वहेड़ा	,, ,,	लाची	१ तोला
आँवला	,, ,,	दालचीनी	,, ,,
सोंठ	४ ,,	तेजपत्र	,, ,,
पीपर	,, ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण करे। चूर्ण के बराबर शुद्ध गुग्गुल मिला खरल कर ४ माशे की गोलियाँ बनावे। मात्रा—१ गोली।
अनुपान—हरड़ क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।

शाखोट तैल—

(३) प्रियंगु फूल	२ छ०	चन्दन	२ छ०
मुलेठी	,, ,,	नागरमोथा	,, ,,
कूठ	,, ,,	नीम छाल	,, ,,
पीपर	,, ,,		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तैल	४ सेर	लुगदी	०
लिसोड़े का रस	१६ "		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। मात्रा—६ माशा प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(४) थायरायडेक्टिन	(Thyroidectin)	५ ग्रेन

कैप्सुल में। ३ मात्रा।

R/

(५) सोडियम फास्फेट	(Sodium Phosphate)	१५ ग्रेन
लाइकर आर्सेनिकलिस	(Liqr. Arsenicalis)	३ बूंद
पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१० ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag. Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।

R/

(६) सोडियम फास्फेट	(Sodium Phosphate)	१५ ग्रेन
टिं० कांवलेरिया	(Tr. Convallaria)	३ बूंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। गलगण्डजन्य नाड़ीतीव्रता नाशक है।

R/

(७) थाइमस एण्ड सुप्रारेनल गोली	(Thymus and Suprarenal Tabt)	५ ग्रेन

१ गोली। ३ मात्रा। गलगण्ड नाशक है।

R/

(८) पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	६ ग्रेन
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Ammon. Aromat)	१५ बूंद
लाइकर थायरायडिन	(Liqr. Thyroidine)	५ "
सीरप फेरी आयोडाइड	(Syrup Ferri Iodide)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(९) एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	१/३ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट अर्गट	(Ext. Ergot.)	२ बूंद
क्वीनीन हाइड्रोब्रोमाइड	(Quinine Hydrobromide)	१½ ग्रेन
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(१०) लुगाल्स आयोडीन	(Lugol's Iodine)	५ बूंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।

R/

(११) एक्स्ट्रैक्ट अर्गट	(Ext. Ergot)	२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	१/३ ,,
क्वीनीन हाइड्रोब्रोमाइड	(Quinine Hydrobromide)	१½ ,,
एक्स्ट्रैक्ट जेंशियन	(Ext. Gentian)	काफी मात्रा
		१ गोली। ३ मात्रा।

R/

(१२) थायराइड एक्स्ट्रैक्ट गोली	(Thyroid Ext Tabt)	१/४–१ ग्रेन
		१ गोली। ३ मात्रा।

R/

(१३) आयोडीन सूची	(Iodine injection)	२ सी० सी०
		मांसगत। गलगण्ड नाशक है।

R/

(१४) इन्सुलीन सूची	(Insulin injection)	त्वचागत
		घातक गलगण्ड नाशक है।

R/

(१५) सोडियम फ्लोरिड सूची	(Sodiumflouride inj)	शिरागत

R/

(१६) मार्फीन सूची	(Morphine inj.)	त्वचागत
		गलगण्ड के वमन को नष्ट करती है।

R/

(१७) मार्फीन सपोजिटरी (Morphine Suppository)

गलगण्ड के वमन को दूर करती है।

R/

(१८) पिच्युटरी सूची (Pituitary inj.) त्वचागत

गलगण्ड के वमन का नाशक है।

R/

(१९) सेलाइन सूची (Saline infusion) शिरागत

वमनाधिक्य में विषमयता नाशनार्थ।

दाहरोग

चन्दनादि क्वाथ—

(१) सफेद चन्दन	२ तोला	कमल डण्डी	२ तोला
पित्तपापड़ा	" "	सौंफ	" "
सुगन्धवाला	" "	धनियाँ	" "
खस	" "	पद्माख	" "
नागरमोथा	" "	आँवला	" "
कवलगट्टा की गिरी	" "		

इनको जौ कूटकर १½ पाव जल में क्वाथ करे। १½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर मधु तथा मिश्री मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

(२) पित्तपापड़ा	४ माशा	लालचन्दन	४ माशा
खस	" "	पद्माख	" "
नागरमोथा	" "		

इनको जौ कूटकर १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते उतार, छान शीतल कर १ तोला मधु मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। दाह ज्वर तथा प्यास नाशन में उत्तम है।

(३) आँवला	५ माशा	बहेड़ा	५ माशा
हरड़	" "	अमलतास का गूदा	" "

इन्हें जौ कुटकर १½ पाव जल में क्वाथ करे। १ छटाँक जल शेष रहते उतार, छान, शीतल कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

काञ्जिक तैल—

(४) तिल तैल ६४ तोला काञ्जी १०२४ तोला

इन्हें तैल मात्र अवशेष तक पाक कर रखे। मर्दन करना। दाह तथा ज्वर नाशक है।

(५) श्वेतचन्दन १ तोला गुलाब जल १ पाव

कपूर ६ रत्ती

इनको एकत्र घिस शरीर में लगाना।

(६) रससिन्दूर २ तोला मुक्ताभस्म २ तोला

सोना भस्म ” ” आर्दी ” ”

इन्हें त्रिफला के जल तथा शतावर स्वरस के साथ क्रमशः खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ रत्ती अनुपान—नं० १ का क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल दाह तथा आमरक्त नाशक है।

(७) दाहान्तक रस (र० सा० सं०) २ रत्ती

अनुपान—त्रिकटु चूर्ण १ माशा तथा आर्दी रस। प्रातः तथा सायंकाल। दाह तथा मूर्च्छा नाशक है।

(८) चन्दनादि लौह (र० सा० सं०) २ रत्ती

अनुपान—आर्दी स्वरस। प्रातः तथा सायकाल।

(९) चन्दनासव (शा० सं०) २ तोला

जल ” ”

१ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(१०) सीरप विटामिन बी काम्प्लेक्स (Syrup Vita. B. Complex) १ चिम्मच

३ मात्रा।

तृषा (Thirst)

(१) आलू बुखारा इसे भूजकर मुख में रख चूसना। अति उपयोगी है।

कुमुदेश्वर रस (र० च०)

(२) ताम्र भस्म २ माशा वंग भस्म १ माशा

इन्हे मुलेठी क्वाथ के साथ खरल कर रखे। मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—चन्दनादि क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल। निश्चय ही तृषाशामक है।

(३) धनियाँ	६ माशा	काला मुनक्का	६ माशा
अडूसा	" "	पित्तपापड़ा	" "
आँवला	" "		

इनको जौ कुटकर एक मिट्टी के पात्र में सायंकाल सेर भर जल में भिगो कर रातभर पड़े रहने देते हैं। प्रातः काल मसल के छान कर थोड़ा थोड़ा पिलाते है।

(४) धनियाँ	२ तोला	जल	१ सेर

एक मिट्टी के पात्र में एकत्र रात भर भिगोये रखते हैं। प्रातः काल जल को छान मिश्री मिला रोगी को पिलाते हैं। तृषा तथा दाह नाशक है।

(५) पीपल वृक्ष की छाल — इसे अग्नि में जला कर गरम गरम जल में डाल देते हैं। मात्रा—२ तोला।

(६) धनियाँ	२ तोला	चीनी	१ तोला
मधु	३ माशा		

धनियाँ को जल के साथ पीस जल में घोल शेष चीजों को मिला रोगी को थोड़ा थोड़ा पिलाते हैं।

(७) बड़का अंकुर	४ तोला	अनार दाना	४ तोला
पठानी लोध्र	" "	मुलेठी	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर ४ तोला मधु तथा ४ तोला मिश्री मिला ३, ३ माशे की गोली बनाते हैं। मात्रा—१ गोली अनुपान—चावल का धोवन। ३, ४ मात्रा। घोर तृषा नाशक है।

R/

(८) पिपरमिण्ट (Pippermint) मुख में रखना।

वमन (Vomiting)

(१) गुरुच चूर्ण	१ तोला	जल	१ पाव

इन दोनों को मिट्टी के पात्र में एक रात भिगों रखे। प्रातःकाल मल कर जल को छान ६ माशा जल में मधु मिला रोगी को पिलावे। कष्ट साध्य वमन आराम होता है।

एलादि चूर्ण (वै० जी०)

(२) इलायची	१ तोला	लवंग	१ तोला

नागकेशर	१ तोला	बेर के गुठली की गिरी	१ तोला
प्रियंगु फूल	१ "	नागरमोथा	१ "
धान का लावा	१ "	सफेद चन्दन	१ "
पीपर	१ "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखे।
मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—मधु, मिश्री। ३ मात्रा

(३) आम की गुठली की गिरी १ तोला बेल गिरी १ तोला
जल १ सेर

इनका क्वाथ करे, ½ पाव जल शेष रहने पर छान शीतल कर १ तोला मिश्री मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
वमन तथा अतिसार नाशन में उत्तम है।

(४) मरीच १ तोला सफेद जीरा १ तोला कालानमक १ तोला
कपड़छान चूर्ण कर १ तोला मिश्री मिला रखे।
मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—मधु
प्रातः तथा सायंकाल।
तत्काल वमन बंद होता है।

(५) वृषध्वजरस २ रत्ती
अनुपान—सरिवन क्वाथ १ छटाँक। प्रातः तथा सायंकाल।

(६) पद्मकाष्ठ २ सेर गुरुच १॥ सेर धनियाँ १॥ सेर
चन्दन १॥ " नीमछाल १॥ "

इनको जौकुट कर ६४ सेर जल में क्वाथ करे जब १६ सेर जल शेष रहे तब छान ले।

घी ४ सेर क्वाथ १६ सेर उपर्युक्त ओषधियों का कल्क १ सेर
इनको घीमात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
मात्रा—६ माशा—१ तोला। प्रातः तथा सायकाल।

रसेन्द्र—

(७)

सफेद जीरा चूर्ण	१ तोला	धनियाँ चूर्ण	१ तोला
पीपर चूर्ण	१ "	इलायची चूर्ण	१ "
त्रिकटु चूर्ण	२ "	रससिन्दूर	१ "

इनको १ तोला मधु के साथ खरल कर रखे।
मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—मधु। ३ मात्रा।

R/

(८) पाट० बाईकार्ब (Pot. Bicarb) १० ग्रेन

स्पि० अमन एरोमेट	(Spt. Ammon Aromat)	१५ बूंद
एसिड हाइड्रोसायनिक डिल	(Acid Hydrocyanic dil)	४ "
लाइकर विस्मथ	(Liqr. Bismuth)	२० "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा

R/

(९) लुगाल्स आयोडीन	(Lugol's Iodine)	३ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१/२ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		प्रत्येक घण्टे पर।

R/

(१०) कोडीन सल्फ	(Codeine Sulph)	१/४ ग्रेन
फेनासीटिन	(Phenacetin)	३ "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा
		ज्वर जन्य वमन नाशक है।

R/

(११) वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	२ बूंद
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन
आयल मैंथ पिप	(Oil Menth pip)	½ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा

R/

(१२) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	५ ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ "
टि० आयोडीन	(Tr. Iodine)	१ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा

R/

(१३) कोकेन हाइड्रोक्लोराइड	(Cocaine Hydrochloride)	१/८ ग्रेन
क्रियोजोट	(Creosote)	१ बूंद

सोडा ब्रोमाइड	(Soda Bromide)	३ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा

गर्भकालिक वमन नाशक है।

R/

(१४) जिंक सल्फेट	(Zinc Sulphate)	३ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ ड्राम
इन्फुजन चिरायता	(Infusion Chirata)	१ औंस

३, ४ मात्रा

R/

(१५) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन
कैलोमल	(Calomel)	¼ "

३, ४ मात्रा

R/

(१६) राइ	(Mustard)	२ तोला
कपूर	(Camphor)	६ माशा

जल के साथ पीस वस्त्र पर घी लगा ५, ७ मिनट तक इन्हें एकत्र लेप करना।

R/

(१७) डेक्स्ट्रोज सूची (Dextrose injection)

शिरागत।

नोट—व्याधि के कारणों पर भी ध्यान रखना चाहिये।

रक्त-पित्त

(१) सुगन्धबाला	६ माशा	नीलकमल	६ माशा
खस की जड़	६ "	अडूसा	६ "
गुरुच	६ "	मुलेठी	६ "
नागरमोथा	६ "	लालचन्दन	६ "
पुरानी धनियाँ	६ "		

इन्हें जौकुट कर २ तोला द्रव्य एक पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते क्वाथ को छान शीतल कर मधु तथा मिश्री मिला रोगी को पिलावे।

प्रातः तथा सायंकाल।

एलादि गुटिका

(२) छोटी इलायची	१ तोला	तेजपत्र	१ तोला

दालचीनी	१ तोला	छोटी पीपर	४ तोला
मुलेठी	४ "		

सबका कपड़छान चूर्ण करे। इसमें ४ तोला पिण्ड खजूर, ४ तोला द्राक्षा, ४ तोला चीनी तथा ४ तोला मधु मिला ३ माशा प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१-२ गोली। अनुपान—मधु

प्रातः तथा सायंकाल।

रक्तपित्तान्तकरस (र० रा० सुं०)

(३) नागभस्म	१ तोला	लौहभस्म	१ तोला
माक्षिकभस्म	१ "	रसतालक	१ "
शुद्ध गंधक	१ "		

मुलेठी, द्राक्षा तथा गुडूची के क्वाथ में क्रमशः एक एक दिन खरल कर रखना।

मात्रा—१ माशा। अनुपान—चीनी, मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

दाह तथा ज्वर युक्त रक्तपित्त नष्ट होता है।

नोट—पारा, गंधक, हरताल और दारमूज विष को एकत्र मर्दन कर एक पहर तक बालुका यंत्र में पाक करने पर जो पीला पदार्थ तैयार होता है। उसे रसतालक कहते हैं।

शतावरी घृत

(४) शतावर की लुगदी	८ सेर	दूध	३२ सेर
घी	३२ "	मिश्री	८ "

घी अवशेष तक मन्दाग्नि पर पाक कर रखे।

मात्रा—६ माशा—१ तोला। अनुपान—दूध।

प्रातः तथा सायंकाल।

(५) खण्डकाद्य लौह	४ आने भर	दूध	१ पाव

प्रातः तथा सायंकाल। दारुण रक्तपित्त नाशक है।

(६) कुष्माण्ड खण्ड	१ तोला	बकरी का दूध	१ पाव

प्रातः तथा सायंकाल।

(७) ह्रीवेराद्य तैल — शरीर में मर्दन करना।

(८) कामदेव घृत	१ तोला	बकरी का दूध	१ पाव

प्रातः तथा सायंकाल।

अम्लपित्त

रसायन योग—

(१) त्रिफला	४ तोला	चीता	४ तोला

त्रिकटु	४ तोला	नागरमोथा	४ तोला
वायविडङ्ग	,, ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गन्धक	२ तोला

इनकी कज्जली कर उपरोक्त चूर्ण मिला रखे। मात्रा—३, ६ माशा। अनुपान—असमान भाग घी तथा मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

अम्लपित्तान्तक रस (र० सा० सं०)

(२) रस सिन्दूर	६ माशा	लौहभस्म	६ माशा
अभ्रकभस्म	,, ,,	हरड़ चूर्ण	१½ तोला

इनको एकत्र मिला रखे। मात्रा—१ माशा। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायकाल।

लीलाविलास रस (र० सा० सं०)

(३) शुद्ध पारद	६ माशा	शुद्ध गन्धक	६ माशा

इनकी कज्जली करे।

अभ्रक भस्म	६ माशा	लौह भस्म	६ माशा
ताम्र भस्म	,, ,,	कज्जली	,, ,,

इनको आँवला रस तथा बहेड़ा क्वाथ में क्रमशः ३, ३ दिनों तक खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल वक्ष की जलन युक्त रक्तपित्त नाशक है।

सिता मण्डूर—

(४) मण्डूर भस्म	४ तोला	पुराना घी	३२ तोला
मिश्री	२० ,,	गाय का दूध	६४ ,,

इनको गाढा होने तक पकावे।

त्रिकटु चूर्ण	२ तोला	इलायची चूर्ण	२ तोला
त्रिफला चूर्ण	,, ,,	वायविडङ्ग चूर्ण	,, ,,
मुलेठी चूर्ण	,, ,,	मीठाकूठ चूर्ण	,, ,,
जवासा चूर्ण	,, ,,	लवँग चूर्ण	,, ,,

इन्हें एकत्र कर उपरोक्त पाक में भली भाँति मिला शीतल कर ८ तोला मधु मिला रखे। मात्रा—६ माशा। अनुपान—दूध। २ मात्रा। भोजन से पूर्व।

अविपत्तिकर चूर्ण (र० सा० सं०)

(५) त्रिकटु	१ तोला	इलायची	१ तोला
त्रिफला	" "	तेजपत्र	" "
नागरमोथा	" "	लवंग	" "
विडनमक	" "	निशोथ	२८ "
वायविडंग	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर ४२ तोला मिश्री मिला रखे। मात्रा—३-८ माशा। अनुपान—शीतल जल। २ मात्रा। भोजन से पूर्व। सशूल अम्लपित्त नाशक है।

(६) सर्वतोभद्र रस — १ आना भर

अनुपान—जल। २, ३ मात्रा। सोपद्रव अम्लपित्त नाशक है।

(७) द्राक्षा	५ तोला	मिश्री	१० तोला
हरड़	" "		

इनको एकत्र पीस २, दो तोले की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(८) द्राक्षाद्य घृत — ६ माशा

अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायकाल।

(९) पिप्पली घृत — ६ माशा

अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायकाल।

R/

(१०) आलूड्राक्स	(Auludrox)	१ चिम्मच
जल	(Water)	२ औंस

३ मात्रा।

R/

(११) सीरप विटामिन बी० काम्प्लेक्स (Serup Vita. B. Complex) — १ चिम्मच

जल के साथ। ३ मात्रा।

शीतपित्त (Urticaria)

(१) हरिद्राखण्ड — ½-२ तोला

अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायकाल।

(२) बृहत् हरिद्राखण्ड — ½-१ तोला

अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) हरदी	१ छटाँक	दूब	१ छटाँक

जल में पीस शरीर में मलना। २, ३ वार।

(४) एरण्ड तैल	½ छटाँक	गरम दूध	१ पाव

सोते समय। दस्त साफ लाती है।

R/

(५) सफेद सरसों	१ तोला	चाकुला बीज	१ तोला
हल्दी	" "	काली तिल	" "

इन्हें जल के साथ पीस १ छटाँक सरसों के तैल में मिला शरीर पर लेप करे। २ वार।

R/

(६) कैलोमल	(Calomel)	१ ग्रेन
सोडियम फास्फेट	(Sodium Phosphate)	३० "
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा। दस्तावर है।

R/

(७) इक्थ्याल	(Ichthyol)	५ बूँद

कैप्सुल में। ३ मात्रा।

R/

(८) कैल्सियम लैक्टेट	(Calcium Lactate)	१५ ग्रेन

३, ४ मात्रा। ३ दिनों तक।

R/

(९) फेनासीटिन	(Phenacetin)	५ ग्रेन
वाइनम काल्सिचकम	(Vinum Colchicum)	५ बूँद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(१०) फेनाजोन	(Phenazone)	५ ग्रेन
लाइकर आर्सेनिक	(Liqr. Arsenic)	२ बूँद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/		
(११) सोडासैलिसिलास	(Soda Salioylas)	१० ग्रेन
फेनासीटिन	(Phenacetin)	३ "
वाइनम कालिचकम	(Vinum Colohioum)	५ बूँद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा।
R/		
(१२) थायराइड एक्सट्रैक्ट	(Thyroid Ext.)	¼–१ ग्रेन
		१ गोली। ३ मात्रा।
R/		
(१३) एट्रोपीन गोली	(Atropine Tabt)	१/१२०–१/१०० ग्रेन
		१ गोली। सोते समय।
R/		
(१४) कार्बोलिक एसिड	(Acid Carbolic)	½ ड्राम
मैंथलिस	(Menthalis)	" "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ "
स्पि० रेक्टीफाइड	(Spt. Rectified)	३ औंस
एक्वा कैम्फर	(Aqua Camphor)	५ "
		चकत्तो पर लगाना।
R/		
(१५) एसिड हाइड्रोसायनिक डिल	(Acid Hydrocyanic Dil)	१ ड्राम
लाइकर कार्बोनिस डीटरजेण्टिस	(Liqr. Carbonis Detergentis)	२ "
परिस्रुत जल	(Distd Water)	१० औंस
		चकत्तों पर लगाना।
R/		
(१६) एसिड सैलिसिलिक	(Acid Salicylic)	१० ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस
		चर्म पर लगाना।
R/		
(१७) बेटानेफ्थाल	(Betanepthol)	१ ड्राम

जिंकआक्साइड	(Znio oxide)	½ ड्राम
वैसेलीन	(Vaseline)	१ औंस

चर्म पर लगाना

R/

(१८) जिंक आक्साइड	(Znio oxide)	१ औंस
टाक	(Talc)	,, ,,
कैम्फर	(Camphor)	,, ,,
स्टार्च	(Starch)	,, ,,

चर्म पर छिड़कना

सूची—

कैल्सियमब्रूनेट सूची (Calcium bronate inj) ५, १० सी० सी०

शिरागत। सप्ताह में २, ३ वार।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

एड्रेनलीन (Adrenaline), मैग्नेसियम थायोसल्फेट (Magnesiumthiosulphate), सोडियम थायोसल्फेट (Sodium Thiosulphate), एफेड्रिन (Ephedrine) (M & Baker), कैल्सियमा (Calciuma), थायोकैल्सिमा (Thiocalcima), सिपलान (Cipalon)

कृमिरोग (Worms)

(१) पलाश बीज	१ तोला	नीम की छाल	१ तोला
इन्द्रजव	,, ,,	चिरायता	,, ,,
वायविडङ्ग	,, ,,		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—१ माशा अनुपान—गुड़। प्रातः तथा सायंकाल। ५ दिनों तक

(२) मोथा	५ माशा	सहजन बीज	५ माशा
त्रिफला	,, ,,	जल	,, ,,
देवदारु	,, ,,		

½ छटांक जल शेष रहने तक क्वाथ कर छान रखे। इसमें पीपर चूर्ण ४ रत्ती तथा विडङ्ग चूर्ण ४ रत्ती मिला रोगी को पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल। सम्पूर्ण प्रकार की कृमियां नष्ट होती हैं।

(३) विडङ्ग	१ तोला	नीमबीज	१ तोला
पलाश बीज	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण करे, फिर नं० २ के क्वाथ के साथ खरल कर ६ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल

क्रिमिमुद्गर रस (र० सा० सं०)

(४) शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गन्धक	२ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

कज्जली	० तोला	शुद्ध कुचिला चूर्ण	५ तोला
अजमोदा चूर्ण	२ "	पलाश बीज चूर्ण	६ "
विडङ्ग चूर्ण	४ "		

इनको एकत्र खरल कर रखे। मात्रा—१, ४ माशा अनुपान-नं० २ का क्वाथ। प्रातः तथा सायकाल

विडङ्ग लोह (र० सा० सं०)

(५) शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गन्धक	१ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

लोहभस्म	१ तोला	त्रिकटु	३ तोला
जायफल	" "	विडङ्ग	१ "
लवङ्ग	" "	सोहागा	" "
हरताल	३ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर कज्जली मिला जल के साथ खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान-मधु। प्रातः तथा सायंकाल

कृमिघातनी वटी—

(६) शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गन्धक	२ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

अजमोदा	३ तोला	बभनेटी बीज	५ तोला
विडङ्ग	४ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर कज्जली मिला मधु के साथ खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—नं० २ का क्वाथ प्रातः तथा सायंकाल

(७) बच	१ तोला	पलाश बीज	१ तोला
अजमोदा	,, ,,	कचूर	,, ,,
वाय विडङ्ग	,, ,,	सोंठ	२ ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण कर १ तोला हींग मिला रखे। मात्रा—३, ६ माशा। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(८) हरड़	२६ पल	च्वाभ	३$\frac{1}{4}$ पल
बहेड़ा	१६ ,,	चीता मूल	,, ,,
आंवला	,, ,,	सोंठ	४३ ,,
विडङ्ग	,, ,,	दशमूल	१६ ,,
पीपर मूल	३$\frac{1}{4}$,,	जल	६४ ,,
पीपला मूल	,, ,,		

८ सेर जल शेष रहने तक पाक कर छान ले।

घी	४ सेर	सेंधानमक	२ सेर
क्वाथ	८ ,,	चीनी	१ ,,

घी मात्र शेष रहने तक पाक कर छान रखे। मात्रा—$\frac{1}{2}$, १ तोला। प्रातः तथा सायंकाल

R/

(९) सैण्टोनीन	(Santonin)	५ ग्रेन
एरण्डतैल	(Oil Ricini)	$\frac{1}{2}$ औंस
मुसिलेज एकेसिया	(Mucilage Acacia)	४ ड्राम
सीरप	(Syrup)	१ ,,
एक्वा मेंथ पिप	(Aqua Menth Pip)	२ औंस

३ मात्रा

यह गण्डूपद कृमि (Round worm) नाशक है।

R/

(१०) पेट्रोलियम इमलसन (Petroleum Emulsion) १ ड्राम

२, ४ मात्रा

तंतुकृमि (Thread worm) नाशक है।

R/

(११) सल्फर (गंधक) (Sulphur) ९ ग्रेन

१ मात्रा

तंतुकृमि (Thread Worm) नाशक है।

R

(१२) एक्स्ट्रैक्ट केस्केरा (Ext. Cascara) २ ग्रेन

३ मात्रा। ३ दिनों तक।

R/

(ख) सीना कम्पाउण्ड (Senna Compound) १ औंस

केस्केरा के पश्चात् चौथे दिन ५ बजे भोर में।

R/

(ग) एक्स्ट्रैक्ट आफ मेल फर्न (Ext. of Male Fern) १९ बूंद

कैप्सुल में चौथे दिन ही ९ बजे दिन से प्रारम्भ कर प्रत्येक आधे घण्टे पर ३ मात्रा तक।

R/

(घ) सीना कम्पाउण्ड (Senna Compound) १ औंस

चौथे दिन ही पुनः ११ बजे

उपरोक्त विधियों से औषधि देने पर स्फीत कृमि (Tape worm) नष्ट होते हैं।

R/

(१३) फिलमेरान आयल (Filmaron Oil) १ औंस

१ मात्रा।

R/

(१४) पैलेटिएरीन टैनेट गोली (Pallatierine Tannate Tabt) १ गोली

३ मात्रा। स्फीत कृमि नाशक है।

अंकुश-कृमि (Hook-Worms)

R/

(१) चिनोपोडियम आयल	(Chenopodium oil)	१९ बूंद
क्लोरोफार्म	(Chloroform)	१० ”
मुसिलेज गम एकेसिया	(Mucilage Gum Acacia)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

१ मात्रा।

R/

(२) कार्बन टेट्राक्लोराइड (Carbon Tetra Chloride)

उदावर्त

(१) निशोथ	२ तोला	मिश्री	८ तोला
पीपर	४ ”		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—मधु। २ मात्रा। भोजन के पूर्व। मलत्याग कराकर उदावर्त को शान्त करती है। विबन्ध नाशन में उत्तम है।

(२) निशोथ	५ तोला	हरड़	५ तोला

इनका कपड़छान चूर्ण कर, सेहुण्ड दूध में खरल कर चने के बराबर गोलियाँ बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—गरम दूध वा गरम जल। प्रातःकाल। विबन्ध नाशकर उदावर्त नाशक है।

(३) शुद्ध पारद	२ तोला	शुद्ध गन्धक	२ तोला

इनकी कज्जली बनाते हैं।

कज्जली	० तोला	निशोथ चूर्ण	२ तोला
शुद्ध सोहागा	२ ”	अतीस चूर्ण	४ ”
मरीच चूर्ण	” ”	शुद्ध जयपाल बीज चूर्ण	१८ ”

इनको एकत्र मदार पत्र स्वरस में खरल कर मन्दाग्नि पर गरम कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—शीतल जल। प्रातःकाल। दस्त ला उदावर्त नाशक है। पथ्य—दही, भात।

नोट—अत्यधिक दस्त को रोकने के लिये गरम जल पिलाते हैं।

(४) एरण्ड तैल	½ छटाँक	गरम दूध	१½ पाव

प्रातःकाल दस्त। कराकर, उदावर्त, आध्मान तथा आनाह नाशक है।

(५) जवाखार	८ तोला	चीता	५ तोला
हींग	” ”	अम्लवेत	” ”

इनका कपड़छान चूर्ण करे। मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—गरम जल। प्रातः काल। शुष्क मल को ढीला करके निकालती है। अत्युत्तम है।

(६) हींग	५ तोला	सोहागे का लावा	५ तोला
सोंठ	” ”		

इनको एकत्र खूब मिला रखना। मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—गुड़ तथा मट्ठा। प्रातःकाल।

(७) शंख भस्म	४ रत्ती	गुड़	१ तोला

२ मात्रा। उदावर्त अवश्य नष्ट होता है।

आनाह

(१) मैनफल	४ तोला	वच	४ तोला
पीपर	” ”	सफेद सरसों	” ”
कूठ	” ”		

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

चूर्ण	१० तोला	गुड़	८० तोला

इन्हें दूध के साथ पीस कनिष्ठिकागुँलि प्रमाण की वर्ति बना सुखा रखे। वर्ति गुदा में रखना। यह विबन्ध को बन्द कर गुदा दर्द, उदर दर्द तथा आनाह नाशक है।

(२) हींग	१ तोला	सज्जीखार	७ तोला
मीठा वच	३ ”	वाय विडंग	९ ”
कूठ	५ ”		

इनका कपड़ छान चूर्ण करे। मात्रा—२ से ४ माशा। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायङ्काल। आनाह, उदावर्त, वायुगुल्म तथा विसूचिका नाशक है।

नोटः—उदावर्त में वर्णित ओषधियों का भी व्यवहार करना चाहिये।

उन्माद (Paralysis of Insane)

(१) उन्माद गजाकुंश रस (र० सा० स०) १ रत्ती

अनुपान—रास्नादि क्वाथ या ब्राह्मी स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल। उन्माद रोग आराम होता है।

(२) उन्माद भंजन रस (र० सा० सं०) २ रत्ती

अनुपान—दशमूल क्वाथ के साथ। प्रातः तथा सायंकाल। उन्माद रोग नष्ट होता है।

(३) भूताङ्कुश रस (र० सा० सं०) २ रत्ती

अनुपान—आर्द्री स्वरस के साथ, ऊपर से दशमूल क्वाथ में पीपल चूर्ण मिला पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। उन्माद नाशक है।

(४) सोना भस्म	१ भाग	कस्तूरी	१ भाग
रस सिन्दूर	२ "	हरताल	" "
मैनसिल	१ "		

इनको एकत्र घीकुवार स्वरस में तीन दिन तक खरल कर गोला बना एरण्ड पत्र में लपेट तीन दिन तक धान्य राशि में रख चूर्ण कर लें। मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—त्रिफला चूर्ण और मधु। प्रातः तथा सायकाल। उन्माद नाशक है।

सारस्वत चूर्ण—

(५) कूठ	२ तोला	कालाजीरा	२ तोला
असगन्ध	" "	त्रिकटु	१ "
सेंधानमक	" "	पाठा	२ "
अजमोदा	" "	शंखपुष्पी	" "
सफेद जीरा	" "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर २२ तोला वच चूर्ण मिला ब्राह्मी स्वरस में सात दिन तक, बारह बारह घण्टे खरल कर चूर्ण बनावे। मात्रा—१ तोला। अनुपान—असमान घी और मधु। प्रातः तथा सायकाल। उन्माद नाशन में श्रेष्ठ है। सात दिन में ही गुण दिखलाता है।

(६) ब्राह्मी स्वरस	१ पाव	शंखपुष्पी स्वरस	१ पाव
वच स्वरस	" "	दस वर्ष का पुराना घी	" "
कूठ स्वरस	" "		

छठई बार पात्र में सबको एक साथ घृत मात्र अवशेष तक पका कर व्यवहार करना। मात्रा—६ माशा से १ तोला। प्रातः तथा सायकाल।

(७) महा पैशाचिक घृत — ६ माशे से २ तोला प्रातः तथा सायंकाल।

(८) [illegible] घृत — ६ माशे से २ तोला प्रातः तथा सायंकाल।

(९) चैतस घृत ½ से २ तोला

या

शिवा घृत ½ से २ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) चन्दनादि तैल

तथा

नारायण तैल (शा० सं०)

इनका व्यवहार करने से उन्माद रोग नष्ट होता है।

(११)	पीपर	१ तोला	मरीच	१ तोला
	सेंधा नमक	” ”	गोरोचन	” ”

इनका कपड़छान चूर्ण कर मधु के साथ वर्ति बनावे।
मधु में रगड़ कर नेत्र में लगावे।

(१२)	सोंठ	५ तोला	वच	५ तोला
	अजमोद	” ”	मूलेठी	” ”
	हल्दी	” ”	कूठ	” ”
	दारुहल्दी	” ”	पीपर	” ”
	सेंधा नमक	” ”	जीरा	” ”

इन सबका कपड़छान चूर्ण कर ले। मात्रा—४ से ६ माशा। अनुपान—घी। प्रातःकाल। साक्षात् सरस्वती जिह्वा पर निवास करती हैं। उन्माद नष्ट होता है।

(१३)	चन्द्रावलेह	½ से १ तोला	गाय का दूध	१ पाव

प्रातः तथा सायंकाल।

(१४)	रससिंदूर चूर्ण	१½ माशा	सर्पगन्धा चूर्ण	२½ तोला

एक घण्टा एक साथ खरल कर २४ मात्रा बनावे। मात्रा—एक २ मात्रा। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल। अनिद्रा तथा उन्माद नाशक।

(१५)	सारस्वतारिष्ट	१ तोला	जल	२ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।
बुद्धि वर्द्धक तथा उन्माद नाशक है।

R/

(१६)	क्वीनीन	(Quinine)	५ ग्रेन
	एसिड नाइट्रो हाइड्रो क्लोरिक डिल	(Acid Nitro hydro Chloric Dil)	३ बूंद

मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

शक्तिदायक तथा उन्माद नाशक है।

R/

(१७) पिल एलूज़ एट फेरी	(Pill Aloes et Ferri)	३ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext. Nux Vomica)	¼ "
क्वीनीन	(Quinice)	१ "

३ मात्रा।

सारक तथा शक्तिदायक है।

उन्माद की शान्त्यावस्था में देते हैं।

R/

(१८) पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	५ ग्रेन
सैलाल	(Salol)	१० "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(१९) थायरायड एक्स्ट्रैक्ट	(Ext Thyroid)	१ ग्रेन

३ मात्रा।

नोट—इसके व्यवहार से रोगी दुर्बल हो जाता है, किन्तु इसको बन्द करते ही पुनः पूर्ववत हो जाता है।

R/

(२०) पैरेल्डिहाइड	(Paraldehyde)	१५ ग्रेन
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ग्लिसराइज़ा	(Liquid Ext. Glycerrhiza)	१५ बूंद
सीरप आरैन्शाई	(Syrup Aurantii)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

निद्रा लाती है।

R/

(२१) सल्फोनाल	(Sulphonal)	१० ग्रेन

३ मात्रा।

अनिद्रा नाशक है।

R/

(२१) पाट० ब्रोमाइड	(Pot Bromide)	३० ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral hydrate)	१५ "
सिम्पुल सीरप	(Symple Syrup)	२ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

केवल २ रात्रि देते हैं।

निद्रानाश में श्रेष्ठ है।

मस्तिष्क सौषुम्निक ज्वर (Cerebrospinal fever)

R/

(१) पाट० ब्रोमाइड	(Pot Bromide)	१५ ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	१० "
एक्सट्रैक्ट कैनेबिस इण्डिका	(Ext. Canabis Indica)	१ "
हायोसाइमस	(Hyoscyamus)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा।

यह निद्रानाश तथा अकड़न नाशक है।

R/

(२) एम० एण्ड बी ६९३	(M. & B. 693)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब		५ ग्रेन

३, ४ मात्रा।

संक्रमण नाशक है।

R/

(३) यूरेट्रोपीन (Uratropin) २ ग्रेन

३ मात्रा।

R/

(४) एण्टी मैनिगों कोकस सीरम (Antimeningococcus Serum)

सुषुम्नागत।

ब्रह्मवारि को निकालने के पश्चात्।

R/

(५) पेनिसिलीन सूची (Penicillin inj) मांसगत।

R/

(६) सोडियम सल्फाथायोजोल (Sodium Sulphathiozole) शिरागत।

R/

(७) सल्फामीथेजीन (Sulphamethazine)

इसका व्यवहार पेनिसिलिन के साथ करे।

आमाशयिक व्रण (Gastric Ulcer)

R/

(१) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	९ ग्रेन
मैग कार्ब	(Mag Carb)	१० "
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	" "

प्रत्येक २ घण्टे पर। जल या दूध के साथ।

R/

(२) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	१० ग्रेन
मैगकार्ब	(Mag Carb)	३० "
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	" "
क्रीटा प्रीपेयरेटा	(Creta Preparata)	" "

प्रत्येक दो घण्टे पर जल के साथ।

R/

(३) फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	२ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	३ "
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	२ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(४) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	१० "
मैग कार्ब	(Mag Carb)	१० "
म्यूसिलेज ट्रेगेकैंथ	(Mucilage Tragacanth)	१५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

वेदना निवारक है।

R/

(५) ओलिव आयल	(Olive oil)	१ ड्राम
पल्व ट्रैगेकैंथ	(Pulv. Tragacanth)	२० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

भोजन के पूर्व। वेदना निवारक है।

R/

(६) सिलवर नाइट्रेट गोली (Silver nitrate Tabts) १ गोली

२, ३ मात्रा

पक्वाशयिक व्रण (Duodenal ulcer)

R/

(१) मैगनेसियम इमलशन (Magnesium Emulsion) ½ ड्राम

२ मात्रा

भोजनोपरान्त। वेदना नाशक है।

R/

(२) ओलिव आयल (Olive oil) ½ ड्राम

२ मात्रा

भोजन के पूर्व।

R/

(३) मैगनेसियम आक्साइड (Magnesium Oxide)

वेदना के समय।

दुर्जल ज्वर (Blackwater fever)

(१) हरड़	२ तोला	नीमपत्र	२ तोला	सोंठ	२ तोला
सेंधानमक	२ "	चीता	२ "		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—४-६ माशा। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) शुद्ध वत्सनाभ चूर्ण	२ भाग	कौड़ीभस्म	५ भाग
मरीचचूर्ण	५ "	सोंठचूर्ण	५ "

इनको आर्द्री स्वरस के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनाएं।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) परवर पत्र	५ तोला	नागरमोथा	५ तोला
गुरुच	५ ”	अड़ूसा	५ ”
सोंठ	५ ”	धनियाँ	५ ”
चिरायता	५ ”		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—२ माशा। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) सोंठ २ माशा जीरा २ माशा हरड़ २ माशा

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।
२ मात्रा। भोजन के पूर्व।
स्वस्थावस्था में सेवन से जल का प्रभाव नहीं होता।

(५) चिरायता	४ तोला	निशोथ	४ तोला
सुगंधवाला	४ ”	पीपर	४ ”
वायविडंग	४ ”	सोंठ	४ ”
कुटकी	४ ”		

एकत्र कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—२ माशा। अनुपान—मधु। ४ बार।

R/

(६) लाइकर हाइड्रार्ज परक्लोर	(Liqr Hydrarg Perchlor)	३० बूंद
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३, ४ मात्रा
मूत्रत्याग स्वच्छ होने तक।

R

(७) नारमल सेलाइन सूची (Normal Saline inj)

शिरागत।
मूत्राघात नाशक है।

R/

(८) पिलोकार्पीन सूची (Pilocarpin inj) त्वचागत।

मूत्राघात नाशक है।

R/

(९) पिच्युटरी एक्स्ट्रैक्ट सूची (Pituitary Ext inj)

हृदयावसाद नाशक है।

R/

(१०) कोरामीन सूची	(Coramine)	मांसगत
		हृदयावसाद नाशक है।

R/

(११) एण्टीवेनीन सूची	(Antivanin inj)	त्वचागत।

नोट—शीतल जल स्नान करावे।

दण्डक ज्वर (Dangue fever)

R/

(१) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ग्रेन
फेनासीटिन	(Phenacetin)	३ "
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	६ बूंद
स्पि० क्लोफार्म	(Spt Chlorcform)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३, ४ मात्रा
		वेदनाधिक्य नाशक है।

R/

(२) मार्फीन सूची	(Morphine inj)	त्वचागत।

R/

(३) लिनिमेण्ट ए०, बी०, सी०	(Liniment A. B. C.)	
		शोथयुक्त सन्धियों पर लगाना।

R/

(४) डोवर्स पाउडर	(Dover's powder)	५ ग्रेन
		३, ४ मात्रा

पीतज्वर (Yellow fever)

R/

(१) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
फेनासीटिन	(Phenacetin)	१ "
टिं० नक्स	(Tr. Nux)	५ बूँद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(२) कैलोमल	(Calomel)	१० ग्रेन
		२ मात्रा

R/

(३) कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	२ बूँद
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

मन्यास्तम्भ (Torticollis)

(१) प्रसारिणी तैल — ग्रीवा में मर्दन करना तथा नस्य देना।

(२) दशमूल क्वाथ — ½ छटाँक प्रातः तथा सायंकाल।

(३) असगंध की जड़ — जल में पीस ग्रीवा पर लेप करना।

R/

(४) एस्पीरिन	(Aspirin)	१० ग्रेन
कैफीन	(Caffeine)	३ "
		३, ४ मात्रा

वेदना तथा स्तम्भ नाशक है।

R/

(५) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ग्रेन
फेनासीटिन	(Phenacetin)	३ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस
		३ मात्रा

R/

(६) (अ) लिनिमेण्ट मीथील सैलिसिलेट को० (Lint Methyl Salicylate Co)

मालिश कर सेंक करना।

R/

या (ब) लिनिमेट बेलाडोना (Lint. Belladonna)

मालिश कर सेंक करना।

वातव्याधि (Nerves Diseases)

(१) रास्ना ४ तोला पुष्करमूल ४ तोला सहजन ४ तोला

बेल की गिरी	४ तोला	चीता	४ तोला	सेंधानमक	४ तोला
गोखरू	४ ”	पीपर	४ ”		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—१½-३ माशा। अनुपान—घी। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) महायोगराज गुग्गुलु ३ माशा-१ तोला

अनुपान—गरमदूध। प्रातः तथा सायंकाल।

त्रयोदशांग गुग्गुलु—

(३) बबूल छाल	१ तोला	असगंध	१ तोला	हाऊबेर	१ तोला
शतावर	१ ”	गुरुच	१ ”	गोखरू	१ ”
विधारा	१ ”	रास्ना	१ ”	सौंफ	१ ”
कचूर	१ ”	अजवाइन	१ ”	सोंठ	१ ”

कपड़ छान चूर्ण करे। इसमें १२ तोला शुद्ध गुग्गुलु डाल खरल कर १ माशा प्रमाण की गोली बना रखे।

मात्रा—१-६ गोली। अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

स्वच्छन्द भैरवरस (र० सु०)

(४) शुद्ध गन्धक १ तोला शुद्ध पारद १ तोला

इनकी कज्जली करे।

लोहभस्म	१ तोला	शुद्ध सुहागा	१ तोला
मीठा विष चूर्ण	१ तोला	हरताल चूर्ण	१ तोला
सोनामाक्षिक भस्म	१ ”	त्रिकटु चूर्ण	१ ”
अरणी	१ ”	हरड़	१ ”
मुण्डी	१ ”		

इनको कज्जली के साथ क्रमशः निर्गुण्डी स्वरस तथा गोरखमुण्डी स्वरस के साथ एक एक दिन खरल कर चूर्ण बना रखे।

मात्रा—१ रत्ती। अनुपान—रास्नादिक क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।

रास्नादि क्वाथ—

(५) रास्ना	६ माशा	पुनर्नवा	६ माशा	सोंठ	६ माशा
गुरुच	६ ”	एरण्डजड़	६ ”	जल	४ ”

इनका क्वाथ करे। जब जल १ छटाँक शेष रहे तब छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

चिन्तामणि चतुर्मुखरस—

(६) रससिन्दूर	२ तोला	लोहभस्म	१ तोला	अभ्रकभस्म	१ तोला
सोना भस्म	½ ”				

इनको घीकुवार के रस में खरल कर गोला बना एरण्ड पत्र में लपेट ३ दिनों तक धान्य राशि में रखे। फिर निकाल २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु तथा त्रिफला जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(७) वातगजांकुश रस (र० सा० स०) २ रत्ती
पीपर चूर्ण ३ माशा
अनुपान—हरड़ क्वाथ। प्रातः तथा सायकाल।

(८) बृहत् वातगजांकुश रस (र० सा० स०) २ रत्ती
अनुपान—पान स्वरस। प्रातः तथा सायकाल।

(९) योगेन्द्र रस (भैं० र०) २ रत्ती
अनुपान—त्रिफला जल तथा चीनी।
प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) रसराज रस २ रत्ती
अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(११) चिन्तामणि रस (र० सा० स०) १ रत्ती
अनुपान—दशमूल क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।
वातव्याधि, प्रदर तथा सूतिका रोग नाशक है।

(१२) बृहत् वात चिन्तामणि रस १ रत्ती
अनुपान—महारास्नादि क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।

वातारिरस (र० सा० सं०)

(१३)

शुद्ध पारद	१ तोला	चीता जड़ चूर्ण	४ तोला
शुद्ध गन्धक	२ "	शुद्ध गुग्गुल	५ "
त्रिफला चूर्ण	३ "		

प्रथम पारद तथा गन्धक की कज्जली करे। फिर शेष का चूर्ण कर रखे। इन्हें एरण्ड तैल के साथ खरल कर ३ माशा प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१–४ गोली। अनुपान—सोंठ चूर्ण ३ माशा तथा एरण्ड जड़ क्वाथ। प्रातः तथा सायकाल।

(१४)

शुद्ध वत्सनाभ विष	१ तोला	टकण का लावा	३ तोला
मरीच चूर्ण	५ "	सोंठ चूर्ण	४ "

इनको एकत्र आर्द्री स्वरस में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(१५) वातगज केशरी बटी १ गोली
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(१६) अश्वगंधाद्य घृत — ६ माशा
अनुपान—दूध। २ मात्रा।

(१७) दशमूलाद्य घृत — ६ माशा—१ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

(१८) बृहत् विष्णुतैल
या
महानारायणतैल (भा० प्र०)
या
हिमसागर तैल (भा० प्र०)
या
सैंधवाद्य तैल — इनका व्यवहार वातव्याधि में श्रेष्ठ है।
या
माषबलादि तैल

प्रसारिणी तैल—

(१९) गंधप्रसारिणी — ४०० तोला
जल — ६४ सेर

एकत्र औटावे जब १६ सेर जल रह जाय तब उतार छान ले।

सौंफ	८ तोला	देवदारु	८ तोला
रास्ना	८ ,,	गजपीपर	८ ,,
गंधप्रसारिणीजड़	८ ,,	जटामांसी	८ ,,
भिलावा जड़	८ ,,		

इनको जल के साथ एकत्र पीस लुगदी बनावे।

क्वाथ	१६ सेर	तिलतैल	४ सेर
लुगदी	० ,,	गाय का दूध	१६ ,,
पत्ररस	४ ,,	शतावररस	४ ,,

इन्हें मन्दाग्नि पर तैल अवशिष्ट तक पाक कर छान ले। इसका व्यवहार सर्वोत्तम है। यह पुष्पराज प्रसारिणी तैल है।

वातकुलान्तकरस—

(२०) शुद्ध पारद	२ तोला	शुद्ध गंधक	२ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

हरड़ छिलका	२ तोला	नागकेशर	२ तोला
बहेड़ा छिलका	२ ,,	जायफल	२ ,,

इलायची　　२ तोला　　लवंग　　२ तोला

कपड़ छान चूर्ण कर रखे।

कज्जली　　०　　चूर्ण　　०　　कस्तूरी　　२ तोला

इन्हें ब्राह्मी स्वरस में खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—ब्राह्मी क्वाथ। ३-४ मात्रा।

(२१) सुवर्ण समीरपन्नग रस　　½ से १ रत्ती　　आर्द्री स्वरस　　१ तोला

अर्दित, पक्षावात, पार्श्वशूल आदि नाशक है।

(२२) विषगर्भ तैल　　(सि० यो० सं०)
या
पचगुण तैल

ये वेदना नाशक हैं।

(२३) विद्युत का व्यवहार करना।

R/

(२४) विटामिन बी १　　(Vitamin B 1)　　१ गोली

३, ४ मात्रा

R/

(२५) विटामिन बी सूची　　(Vitamin B. inj)　　त्वचा या मांसगत।

रोहिणी (Diphtheria)

R/

(१) एण्टीटाक्सीन सीरम　　(Antitoxin Serum)

२००० यूनिट-३०००० यूनिट

व्याधि की तीव्रतानुसार। त्वचागत।

R/

(२)	हाइड्रार्ज परक्लोर	(Hydrarg Perchlor)	१ ग्रेन
	पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	३० ”
	ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ ड्राम
	जल	(Aqua)	८ औंस

मात्रा—१ चिम्मच। ३-४ मात्रा।

R/

(३)	सोडा बाईकार्ब	(Soda bicarb)	१ ड्राम
	सोडा बाईबोरेट	(Soda Biborate)	१ ”
	पाट० क्लोरेट	(Pot Chlorate)	½ ”
	सोडा क्लोराइड	(Soda Chloride)	½ ”

टि० लेवेण्डुली कम्पोजिटा	(Tr. Lavandulae Composita)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

R/

(४) टिं० वेलाडोना	(Tr. Belladonna)	२०–३० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

कुल्ला करना या झिल्ली पर लगाना।
हर एक घण्टे बाद। श्वास पेशी के घात में लाभप्रद है।

R/

(५) स्ट्रिक्नीन	(Strychnine)	२ सी० सी०

त्वचागत (Subcutaneous)। उत्तेजक तथा विषनाशक है।

बेरी बेरी (Beri Beri)

R/

(१) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१५ ग्रेन
पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१० ”
टिं० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	३ बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३–४ मात्रा
शोथ नाशक है।

R/

(२) विटामिन बी. गोली	(Vitamin B. Tabts)	१ गोली

३ मात्रा।

R/

(३) नाइट्रोग्लीसरीन	(Nitroglycerin Tabts)	१ गोली

३ मात्रा

R/

(४) एमील नाइट्रेट	(Amyl Nitrite)	५ बूंद

कैप्सुल में। हृदय को शक्ति देती है।

R/

(५) स्ट्रोफैंथस सूची	(Strophanthus inj.)	

हृदयावसाद को रोकती है।

R/

(६) विटामिन बी॰ सूची (Vitamin B. inj.) २ सी॰ सी॰

स्वचागत। वहुत ही उपयोगी है।

दग्ध (Burns & Scalds)

(१) तिलतैल १ छटाँक चूना जल १ छटाँक

दग्ध के व्रण पर लगाना चाहिये। २, ३ वार।

(२) आलू इसे पीस कर दग्ध स्थान पर लगाते है।

(३) सर्जरस मलहम स्थानिक व्यवहार करते हैं।

R/

(४) कोलोडियन पेण्ट (Collodion Paint)

फफोलाहीन दग्ध स्थान पर लगाते हैं।

R/

(५) पिक्रिक एसिड १% (Picric Acid 1%)

फफोले को फोड़ चर्म को पृथक् कर स्वच्छ वस्त्र को इस घोल में भिगो फफोले के स्थान पर रख वाँध देते हैं। ४ दिनों तक यही क्रम रहता है।

R/

(६) फेनाजोन	(Phenazone)	१ ड्राम
सेलाल	(Salol)	½ औंस
बोरिक एसिड	(Boric Acid)	½ "
आयडोफार्म	(Iodoform)	१५ ग्रेन
फेनल	(Phenol)	१५ "
हाइड्रार्ज परक्लोर	(Hydrarg Perchlor)	२ "
वेसलीन	(Vaseline)	७ औंस

दग्ध स्थान पर लगाना।

R/

(७) एसीटेनिलिड	(Acetanilid)	१ भाग
जिंक स्टीरेट	(Zinc Stearate)	५ "

व्रण पर छिड़कते हैं।

R/

(८) बेटा नेफथाल	(Beta Nephthol)	५ ग्रेन
यूकेलिप्टस आयल	(Eucalyptus oil)	१० बूंद

ओलिव आयल	(Olive oil)	२ बूंद
वेसलीन	(Vaseline)	२ ड्राम

व्रण के रोहण के समय लगाते हैं।

R/

(९) टैनिक एसिड घोल (Tannic Acid solution)

दग्ध स्थान पर लगाते है। विष के शोषण को रोकती है। सर्वोत्तम है।

R/

(१०) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	२० ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२ "
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide)	२ गोली
वेसलीन	(Vaseline)	१ औंस

दग्ध पर लगाना।

R/

(११) पिच्युट्रिन तथा मार्फीन ¼ ग्रेन (Pituitrin & Morphine ¼ gr.)

त्वचागत। वेदना तथा स्तब्धता नाशक है।

R/

(१२) नार्मल सेलाइन तथा एड्रेनलीन (Normal saline with Adrenalin)

गुदामार्ग में। स्तब्धता नाशक है।

R/

(१३) सिबेजाल गोली	(Cibazol Tabts)	१ गोल
सोडाबाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन

२, ४ मात्रा।

पूय नाशक तथा व्रण रोपक है।

R/

(१४) एक्रिफ्लेविन इमल्शन (Acriflavine Emulsion)

दग्धस्थान पर लगाना।

R/

(१५) स्कोरोफार्म (Scoroform) वेदना निरणार्थ

स्थानिक व्यवहार करते हैं।

R/

(१६) जल्मार (Jalmar) दग्ध स्थान पर लगावे।

बाघी (Bubo)

(१) चीता की जड़ — १ तोला

नीबू रस में पीस बाघी पर बांधे। बाघी शीघ्र ही बैठ जाती है।

(२) धतूर जड़ — १ तोला, सेंधानमक — ६ रत्ती

जल के साथ पीस बाघी पर बांधे। बाघी बैठ जाती है।

(३) एरण्ड बीज — १ तोला, हरड़ — १ तोला

इनको एकत्र पीस सिरका तथा एरण्ड तैल मिला गरम कर, गरम गरम बाघी पर बांधना। नवीनोत्पन्न बाघी बैठ जाती है। चिरकालिक बाघी पक जाती है।

(४) अम्बा हल्दी — १ तोला, गुग्गुल — ६ माशा
नीला थोया — ६ माशा, गुड़ — १ तोला
राल — १ तोला

इन्हें एकत्र पीस गरम कर बाघी पर बांधते हैं। बघी शीघ्र ही फूट जाती है।

(५) गेहूं के आटे की पुल्टिस

कई बार बांधना। बाघी को फोड़ती है।

(६) मेथी — १ तोला, हल्दी — १ तोला

जल के साथ पीस एरण्ड तैल में मिला गरम कर बाघी पर बांधते हैं। बाघी बैठ जाती है।

R/

(७) इक्थ्याल (Ichthyol) — १ ड्राम
वैसलीन (Vaseline) — २ औंस

बाघी पर लगा सेंक करे। वेदना शान्त होती है तथा बाघी बैठ जाती है।

R/

(८) टिंचर आयोडीन (Tr. Iodine)

बाघी पर लगा सेंक करे। बाघी बैठ जाती है।

R/

(९) हाइड्राजे मलहम (Hydrarg oint) — १ ड्राम
बेलाडोना (Belladonna) — २ ,,

इक्थ्याल	(Icthyol)	१ ड्राम
लेनोलीन	(Lanoline)	१ औंस

२. ३ वार मलना । वेदना नाशक है ।

R/

(१०) सिबेजाल गोली	(Cibazol)	१ गोली
सोडावाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन

३, ४ मात्रा । पूय को रोकती है ।

संग्रहणी (Enteritis or sprue)

(१) जायफल	१ तोला	आंवला	१ तोला
लंवग	" "	तालीस पत्र	" "
इलायची	" "	पीपर	" "
तेजपात	" "	हरड़	" "
दालचीनी	" "	कलौंजी	" "
नागकेशर	" "	चीता	" "
कपूर	" "	सोंठ	" "
सफेद चन्दन	" "	वायविडंग	" "
तिल	" "	मरीच	" "
वंशलोचन	" "	धुलीभांग	२० "
तगर	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण बना ४० तोला मिश्री मिला रखे । मात्रा—१, ३ माशा । अनुपान-मधु । प्रातः तथा सायंकाल । कास, श्वासयुक्त संग्रहणी नाशक है ।

(२) शुद्ध गन्धक	१ तोला	शुद्ध पारद	६ माशा

इनको कज्जली करें ।

सोंठ	१ तोला	समुद्र नमक	१½ तोला
पीपर	" "	अजमोदा	२ "
मरीच	" "	भुना जीरा	" "
सेंधानमक	१½ "	भुनी हींग	" "
सोंचर नमक	" "	भुना सोहागा	" "
विडनमक	" "	भुना भांग	८ "

ओद्भिद् नमक	१½ तोला	स्याह जीरा	२ तोला

इनका कपड़ छान चूर्ण कर कज्जली के साथ खरल कर रखे। मात्रा—१, २ माशा। अनुपान—मट्ठा २ मात्रा। रामबाण है।

(३) चीता	२ तोला	त्रिकटु	२ तोला
पीपरामूल	” ”	भुनी हींग	” ”
जवाखार	” ”	अजमोदा	” ”
पांचो नमक	” ”	चव्य	” ”

इनका कपड़ छान चूर्ण कर बिजोरा नीबू स्वरस में खरल कर मटर बराबर गोली बनावे। मात्रा—१ गोली अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। आम को पचाती तथा जठराग्नि दीपक है।

(४) शुद्ध हिंगुल	४ तोला	शुद्धधतूर बीज	४ तोला
शुद्ध गन्धक	” ”	पीपर	” ”
शुद्ध सोहागा	” ”	मरीच	” ”
शुद्ध वत्सनाभ विष	” ”		

कपड़ छान चूर्ण कर भांग स्वरस में ३ घण्टे खरल कर १ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—½ गोली अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल

(५) महाकल्याण गुड़ — १ माशा — प्रातः तथा सायंकाल। क्षीणता तथा सग्रहणी नाशक है।

(६) कुष्माण्ड कल्याण गुड़ — २ माशा — प्रातः तथा सायंकाल

(७) ग्रहणी कपाट रस — १ गोली — मरीच — ३ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। अग्नि दीपक तथा संग्रहणी नाशक है।

(८) अनारदाना	३२ तोला	जीरा	४ तोला
मिश्री	” ”	सोंठ	” ”
पीपर	४ ”	वंशलोचन	१ ”
पीपरामूल	” ”	दालचीनी	८ माशा
अजमोदा	” ”	तेज पत्र	” ”
मरीच	” ”	इलायची	” ”
धनियाँ	” ”	नागकेशर	” ”

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—२ माशा अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल

(९) समुद्र नमक	८ तोला	नागकेशर	२ तोला
सोंचर नमक	६ ,,	तालीसपत्र	,, ,,
विड नमक	२ ,,	अम्लवेत	,, ,,
सेंधा नमक	,, ,,	मरीच	१ ,,
धनियां	,, ,,	जीरा	,, ,,
पीपर	,, ,,	सोंठ	,, ,,
पीपरामूल	,, ,,	सूखा अनारदाना	४ ,,
काला जीरा	,, ,,	दालचीनी	६ माशा
तेज पत्र	,, ,,	इलायची बीज	,, ,,

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—४ माशा। अनुपान—दही या मट्ठा। २ मात्रा। संग्रहणी तथा मन्दाग्नि नाशक है।

(१०) शुद्ध कुचिला	२ माशा	लवंग	१ माशा

इन्हें आदी स्वरस में खरल कर चने प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। संग्रहणी तथा आम नाशक है।

(११) शुद्ध अफीम	२ माशा	शुद्ध धतूर बीज	१ माशा
जायफल	१ ,,	अभ्रक भस्म	१ ,,
शुद्ध सोहागा	,, ,,		

इन्हे प्रसारिणी स्वरस के साथ खरल कर रत्ती प्रमाण गोली बनाना मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। आमातिसार, रक्तातिसार तथा संग्रहणी नाशन में श्रेष्ठ है।

नोटः—गर्भिणी को नहीं देना चाहिये।

(१२) शुद्ध पारा	१ माशा	शुद्ध गन्धक	१ माशा

इनकी कज्जली करे।

शुद्ध मीठा विष	१ माशा	शुद्ध सिंगरफ	१ माशा
ताम्रभस्म	,, ,,	सेमरछाल चूर्ण	,, ,,
अभ्रक भस्म	,, ,,	अफीम	,, ,,

इनको तथा कज्जली को दूध के साथ खरल कर ½ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल। शोथयुक्त संग्रहणी नाशन में सर्वोत्तम है।

नोट—इसके सेवन काल में नमक तथा जल नहीं देते। प्यास लगने पर दूध पिलाते हैं तथा दूध का ही आहार देते हैं। दूध से ऊब जाने पर दूध, भात देते हैं।

(१३) लोह पर्पटी — १–२ रत्ती
अनुपान—जीरा चूर्ण तथा मट्ठा। २, ३ मात्रा।
संग्रहणी तथा उदर शूलादि नाशक है।

(१४) मण्डूर पर्पटी — १–२ रत्ती
अनुपान—जीरा चूर्ण तथा मट्ठा। २ मात्रा।
ग्रहणी, शोथ तथा मन्दाग्नि नाशक है।

(१५) विजय पर्पटी — १–३ रत्ती
अनुपान—मधु। २, ३ मात्रा।
ग्रहणी, शोथ, जलोदर तथा उदर नाशक है।

(१६) पञ्चामृत पर्पटी — १–२ रत्ती
अनुपान—मधु तथा जीरा चूर्ण। २, ३ मात्रा।
अतिसार, ग्रहणी तथा शूल नाशक है।

(१७) ताम्र पर्पटी — १–२ रत्ती
अनुपान—छोटी इलायची तथा जीरा चूर्ण।
२, ३ मात्रा। चिरकालिक ग्रहणी नाशक है।

(१८) स्वर्ण पर्पटी — १–२ रत्ती
अनुपान—मधु। २, ३ मात्रा।
ग्रहणी नष्ट कर क्षुधा वर्धक है।

(१९) रस पर्पटी — १–३ रत्ती
अनुपान—जीरा चूर्ण ३ माशा।
घी में भुनी हींग ½ रत्ती। ३ मात्रा।

नोट—उपरोक्त मात्रायें जो १–२ रत्ती लिखी गई हैं वे १ दिन की हैं।

पर्पटी सेवन विधि—

रोग तथा रोगादि के बल आदि देखकर १ रत्ती से पर्पटी को प्रारम्भ कर प्रतिदिन क्रमशः १–१ रत्ती बढ़ा कर १० रत्ती तक ले जाते हैं। यही मात्रा रोग मुक्ति तक देते रहते हैं। जब रोग अच्छा हो जाता है वत पुनः १, रत्ती घटाकर ओषधि-सेवन बन्द कर देते हैं।

R/

(२०) एलो सेण्टोनीन	(Yellow Santonin)	३–५ ग्रेन
कैस्टर आयल	(Castor oil)	२० मिनिम

२ मात्रा। ६ दिन तक

R/

(२१) आयरन आर्सिनेट (Iron arsenate inj) रक्ताल्पता निवारणार्थ।

R/

(२२) कैल्सियम लक्टेट विथ पैराथायरायड गोली (Cal. Lactate with Parathyroid tabts) १ गोली ३ मात्रा।

नोट—अन्य ओषधियाँ प्रवाहिका (Diarrhoea) में वर्णित हैं।

स्कर्वी (Scurvy)

R/

(१) अलुमिनम	(Aluminum)	५ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph Dil)	१० बूंद
टिं० मार्ह	(Tr. Morrhae)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस

मुख का प्रक्षालन करना चाहिये।
दन्तवेष्ट के रक्तस्राव को बन्द करती है।

R/

(२) विटामिन सी गोली (Vita. C.) १ गोली
३ मात्रा। व्याधि नाशक है।

R/

(३) रिडाक्सान सूची (Redoxon) २ सी० सी०
त्वचागत। व्याधि नाशक है।

अश्मरी (Stone)

(१) वरुण छाल	१ तोला	कुश	१ तोला
सोंठ	" "	काश	" "
गोखरु बीज	" "	शर	" "
तालमूली	" "	दर्भ	" "
कुल्थी	" "	इक्षु	" "

इनको जौ कुटकर २ तोले द्रव्य को ½ सेर जल में क्वाथ करे जब १ छटाँक जल शेष रहे तब छान ३ माशा चीनी तथा ३ माशा जवाखार मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
वातारमरी (Oxalate of Lime Calculus) तथा बस्तिशूल नाशक है।

(२) वरुणछाल का क्षार	३२ तोला	गुड़	४ तोला
जवाखार	१६ "	घी	" "

इनको एकत्र मिला रखे। मात्रा—१ तोला। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) शुद्ध पारद	४ तोला	शुद्ध गन्धक	४ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

ताम्र भस्म	८ तोला	बकरी दूध	८ तोला

इनको दूध जल जाने तक एकत्र औटावे।

कज्जली	४ तोला	ताम्र भस्म	८ तोला

इनको निर्गुण्डी स्वरस में १ दिन खरल कर गोला बना बालुकायन्त्र में एक पहर पाक कर पुनः चूर्ण बना रख लेते हैं। मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल। अश्मरी तथा शर्करा नाशक है।

(४) शुद्ध पारद	४ तोला	शुद्ध गन्धक	८ तोला

इनको श्वेत पुनर्नवा के स्वरस के साथ एक दिन खरल कर एक हांडी में रख दूसरी हांडी के मुख को इस हांडी के मुख पर रख कपड़ मिट्टी द्वारा दोनों के मुख के जोड़ों को बन्द कर एक गड्ढे में रख ऊपर से कण्डे की आँच देते हैं। आग शीतल हो जाने पर ओषधि निकाल गुड़ के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बना रखते हैं। मात्रा—१ गोली। अनुपान—कुल्थी या इन्द्रायण जड़ का क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल। अश्मरी—तथा वस्तिशूल नाशक है।

(५) पाषाण भिन्न रस २ रत्ती

अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायकाल।

(६) पाषाण भेद	½ तोला	ब्राह्मी	½ तोला
वरुण छाल	" "	जल	१ पाव
गोखरू	" "		

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शुद्ध शिलाजीत गुड़ तथा खीरा और ककड़ी के बीजों का कल्क बना इसमें मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(७) हजरल यहूद	१ तोला	कुलथी	८ माशा
खरबूजा बीज की मींगी	८ माशा	सौंफ	४ ”
खीरा तथा ककड़ी बीज की मींगी	” ”	बबूल का गोंद	” ”
गोखरु	” ”	अजमोदा	” ”

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—चना क्काथ। प्रातः तथा सायंकाल।

(८) वरुण छाल	४ सेर	जल	३२ सेर

इन्हें एकत्र खौलावे जब ८ सेर जल शेष रहे तब छान ले।

कुलथी	२ तोला	जवाखार	२ तोला
सेंधा नमक	” ”	कोहड़ा बीज	” ”
वायविडंग	” ”	गोखरु बीज	” ”
तगर	” ”		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बना २ तोला चीनी मिलावे।

गाय का घी	२ सेर	लुगदी	०
क्काथ	८ ”		

इनको मन्दाग्नि पर घी मात्र अवशेष तक पका छान ले। मात्रा—१ तोला। अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) पुनर्नवा	१ तोला	पुष्करमूल	१ तोला
गुरुच	” ”	अजवायन	” ”
शतावर	” ”	हाऊबेर	” ”
जवाखार	” ”	हींग	” ”
तीनों नमक	” ”	सौंफ	” ”
कचूर	” ”	अजमोदा	” ”
कूठ	” ”	वायविडंग	” ”
बच	” ”	अतीस	” ”
नागरमोथा	” ”	मुलेठी	” ”
रास्ना	” ”	पञ्चकोल	” ”
कायफल	” ”		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तैल	१ सेर	कांजी	२ सेर
गोमूत्र	२ ”	लुगदी	० ”

इन्हें मन्दाग्नि पर तैल मात्र शेष रहते पका, तैल को छान ले। मात्रा—१ तोला। प्रातः तथा सायंकाल

नोट—पिलाने तथा बस्ति देने से अश्मरी, शर्करा तथा शूल नष्ट होता है।

(१०) वरुणाद्य घृत १ तोला प्रातः तथा सायंकाल।

अश्मरी तथा शूल नाशक है।

R/

(११) हेक्सामीन	(Hexamine)	१० ग्रेन
एसिड सोडाफास्फेट	(Acid Soda phosphate)	२५ "
एसिड नाइट्रोहाइड्रोक्लोरिकडिल	(Acid Nitro Hydrochloricdil)	२० बूंद
इन्फुजनजेंशियन को०	(Infusion Gentian co.)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(१२) लिथिया साइट्रेट	(Lithia Citrate)	१० ग्रेन
हेक्सामीन	(Hexamine)	" "
एसिड सोडाफास्फेट	(Acid Soda phosphate)	२५ "
एसिड नाइट्रोहाइड्रोक्लोरिकडिल	(Acid Nitrobydrochloricdil)	१० बूंद
टिं० हायोसाइमस	(Tr. Hyoscyamus)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त

R/

(१३) आटोफेनगोली	(Atophan Tabts)	२ गोली
सोडाबाईकार्ब	(Sodabicarb)	१५ ग्रेन

३ मात्रा

R/

(१४) लिथियासाइट्रेट	(Lithia Citrate)	५ ग्रेन
पाट० एसीटास	(Pot. Acetas)	३० "
हेक्सामीन	(Hexamine)	८ "
सीरप	(Syrup)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

R/

१५) सोडा सैलिसिलेट	(Soda Salicylate)	१२ ग्रेन
सोडा फास्फेट	(Soda Phosphate)	२० "

सोडा सल्फेट	(Soda Sulphate)	१ ड्राम

२ मात्रा। गरम जल के साथ। भोजन के ½ घण्टे पूर्व। पित्ताश्मरी नाशक है।

R/

(१६) आयल टेरिबिंथिन	(Oil Terebinthine)	५ बूंद
सोडा फास्फोकार्बोलेट	(Soda Phosphocarbolate)	२० ग्रेन
स्पि० ईथरिस को०	(Spt. aetheris Co.)	१४ बूंद
आयल मैंथपिप	(Oil Menth Pip.)	६ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। पित्ताश्मरी नाशक है।

R/

(१७) ग्लीसरीन	(Glycerine)	१०, २० बूंद

२ मात्रा। क्षारीय जल में। पित्ताश्मरी के आक्रमण को रोकती है।

शूल (Colics)

(१) पीपर	१ तोला	हरड़	१ तोला
कुटकी	" "	मुसब्बर	" "
चिरायता	" "		

इन्हें जल के साथ पीस गरम कर गरम गरम सम्पूर्ण उदर पर लेप करना। यह मल को पतला करता है। २ दस्त ला शूल नाशक है।

(२) सोंठ चूर्ण	५ तोला	सोहागा की खील	१। तोला
काला नमक	२॥ "	भुनी हींग	८ माशा

सहजन की जड़ के रस के साथ सर्व प्रथम हींग फिर उत्तरोत्तर सोहागा, सोंठ और काला नमक को खरल कर ४ रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल

(३) मीठा बच	२ तोला	चीता	२ तोला
सोंठ	" "	हींग	" "
जीरा	" "	शुद्ध विष	" "

मरीच	२ तोला	दालचीनी	२ तोला

इनका कपड़ छान चूर्ण कर भांगरे के रस में खरल करे, फिर चने प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा-१ गोली। अनुपान—गरम जल। ३ मात्रा

(४) जवाखार	१ तोला	सोंठ चूर्ण	१ तोला
कौड़ी भस्म	” ”	मरीच चूर्ण	” ”
शुद्धवत्सनाभ चूर्ण	” ”	पीपर चूर्ण	” ”
सेंधानमक चूर्ण	” ”		

इनको एकत्र पान स्वरस के साथ ६ घण्टे तक खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा-१ गोली अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायकाल परिणाम तथा आम शूल नाशक है।

(५) शंख भस्म	२ तोला	सेंधानमक चूर्ण	२ तोला
सोंठ चूर्ण	” ”	सांभरनमक चूर्ण	” ”
मरीच चूर्ण	” ”	खारीनमक चूर्ण	” ”
पीपर चूर्ण	” ”	यवक्षार	” ”
कालानमक चूर्ण	” ”		

इन्हे कदम्ब या शीरीष बीज के साथ खरल कर एक माशा की गोली बना छाया में सुखा रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान-गरम जल प्रातःकाल। परिणाम शूल तुरन्त नष्ट होता है।

(६) आंवला चूर्ण	१६ तोला	मुलेठी	४ तोला
लोह भस्म	८ ”		

आंवले के रस में ७ दिन खरल कर धूप में सुखा रख ले। मात्रा-२ माशा। अनुपान-असमान घी तथा मधु। २ मात्रा। भोजन के साथ

(७) शुद्ध मण्डूर	१६ तोला	दूध	१६ तोला
शतावर रस	” ”	घी	८ ”
दही	” ”		

इनको लेह पर्यन्त तक खौलावे, गाढ़ा होने पर उतार रख ले। मात्रा—६ रत्ती। अनुपान-मधु। २ मात्रा। भोजन के साथ।

(८) वायविडङ्ग चूर्ण	१ तोला	त्रिकटु चूर्ण	३ तोला
चीता चूर्ण	,, ,,	शुद्धमण्डूर भस्म	९ ,,
चव्य चूर्ण	,, ,,	गोमूत्र	३६ ,,
त्रिफला	,, ,,	गुड़	१८ ,,

इन्हें मन्दाग्नि पर पाक करे जब गोली बनाने योग्य हो जाय तब उतार ले। मात्रा—१ तोला। २ मात्रा। भोजन के साथ।

(९) समुद्र नमक	१ तोला	निशोथ चूर्ण	१ तोला
सेंधानमक	,, ,,	जमीकन्द चूर्ण	,, ,,
काला नमक	,, ,,	मण्डूर भस्म	,, ,,
सांभर नमक	,, ,,	दही	४० ,,
सोंचर नमक	,, ,,	गोमूत्र	,, ,,
जवखार	,, ,,	गाय का दूध	,, ,,
दन्ती चूर्ण	,, ,,		

इन्हें एकत्र पकावे। जब गाढ़ा हो जाय तब उतार ठण्डा कर चूर्ण बना रखें। मात्रा-१॥, ३ माशा अनुपान—गरम जल। ३ मात्रा

(१०) लोह भस्म	६ माशा	पीपर चूर्ण	६ माशा
हरड़ चूर्ण	,, ,,	सोंठ चूर्ण	,, ,,

इन्हें एकत्र खरल कर रखे। मात्रा—३ माशा। अनुपान—असमान घी, मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(११) पीपर	½ सेर	जल	८ सेर

इन्हें दो सेर जल शेष रहने तक पका छान ले।

पीपर	½ पाव	इसे जलके साथ पीस लुगदी बनावे।	
घी	½ सेर	लुगदी	½ पाव
क्वाथ	२ ,,		

घी मात्र शेष रहने तक मन्दाग्नि पर पाक करे। पाक होने के पश्चात् उतार छान ले। मात्रा—४ माशा-२ तोला। अनुपान—दूध प्रातः तथा सायंकाल। घोर परिणामशूल नाशक है।

R/

(१२) टिं० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३. ४ मात्रा

वृक्कशूल निवारक है।

R/

(१३) मार्फीन एण्ड एट्रोपीन सूची (Morphine and Atropin inj)

त्वचागत। वेदना नाशक है।

R/

(१४) क्लोरोफार्म सुंघाना (Inhalation of Chloroform)

तीव्र वृक्काश्मरीजन्य शूल नाशक है।

R/

(१५) विस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	१० ग्रेन
मार्फीन	(Morphine)	$\frac{1}{8}$ "
हाइड्रोसायनिक एसिड	(Hydiocynic Acid)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा

R/

(१६) टर्पेण्टाइन स्टूप (Terpentine Stup)

यह वेदना शामक है।

R/

(१७) टर्पेण्टाइन एनीमा (Terpentine Enema)

यह पित्ताश्मरीजन्य शूल नाशक है।

R/

(१८) टिं० आसाफेटिडा	(Tr. Asafetida)	२० बूंद
स्पि० अमन एरोमेट	(Spt Amm Aromat)	$\frac{1}{2}$ ड्राम
मास्की	(Moschi)	३ ग्रेन
पल्व एकेसिया	(Palv Acacia)	$\frac{1}{2}$ ड्राम
एक्वासिनेमम	(Aqua Cinamom)	१ औंस

२ मात्रा

यह आंत्रिकशूल (Intestinal colic) नाशक है।

R/

(१९) स्पि० मार्फीन हाइड्रोक्लोर	(Spt. Morphine Hydrochlor)	१० बूंद
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	२० "
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth pip)	५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

आंत्रिक शूल नाशक है।

R/

(२०) स्पि० आर्मोरेसी को०	(Spt. Armoraciae Co.)	१५ बूंद
टि० क्लोरोफार्म एट मार्फ को०	(Tr. Chloroform et Morph Co.)	७ "
जल	(Aqua)	१ औंस

४ मात्रा

आंत्रिक शूल नाशक है।

R/

(२१) आसाफेटिडा	(Asafetida)	१९ ग्रेन
ओविविटेलाई	(Ovivitallii)	१ औंस
इन्फ्यूजन वलेरियन	(Infusion Valerian)	२ "

एनीमा (वस्ति) देते हैं। आध्मान नाशक है।

R/

(२२) मैगसल्फ	(Magsulph)	३ औंस
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulph dil)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	४ औंस

मात्रा—१ चिम्मच। ३ मात्रा

R/

(२३) पल्व ओपियाई	(Pulv. Opii)	१२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	१२ "
ओलिव ट्रिग्लाई	(Olive Triglli)	१२ बूंद

१२ गोली बनावे। मात्रा—१ गोली।
प्रत्येक २ घण्टे पर वेदना शान्त पर्यन्त।

R/

(२४) सेलाइन सूची	(Saline inj)	त्वचागत।
		उदर प्रान्त में।

R/

(२५) कैल्सियम क्लोराइड (Calcium Chloride) शिरागत।

नोट—न० २२ से २५ तक की ओषधियां सीस विष जन्य शूल (Lead Colic) नाशक है।

R/

(२६) प्रोपिवान (Propivan) त्वचागत।

पित्ताशयिक तथा वृक्काश्मरी शूल नाशक है।

R/

(२७) सोडियम बाइबोरेट (Sodium Biborate) शिरागत।

पित्ताशय शूल नाशक है।

आतप व्यापद (Sun stroke)

R/

(१) चीनी	१६ तोला	घिसा चन्दन	१ तोला
बड़े नीबू का रस	८ "	सौंफ तैल	½ "
जल	२ सेर		

थोड़ा थोड़ा पिलाते हैं।

R/

(२) तारपीन तैल (Turpentine Oil)

गरम जल में ऊनी वस्त्र भिगो निचोड़ इस पर तारपीन तैल के कुछ बूंद छिड़क गरदन पर बाँधते हैं। मूर्च्छा नाशक है।

नोट—बेहोशी दूर होते ही वस्त्र को पृथक कर देते हैं, अन्यथा रोगी को अत्यन्त कष्ट होगा।

(३) सेंधानमक	१ पौंड	नीबू रस	२ औंस
यू० डी० कोलेन	१ औंस	जल	२ पाइंट

इस घोल में कपड़ा भिगो रोगी के शरीर को पोंछना।

R/

(४) अमन नाइट्रट (Ammon Nitrate) ½ पौण्ड

जल (Aqua) २ पाइण्ट

इस घोल में कपड़ा भिगो रोगी के शरीर को पोंछना।

सूची—

स्ट्रिक्नीन (Strychnine), कैम्फर (Camphor), ईथर (Ether), डिजिटेलिस (Digitalis) ये अवसाद नाशक हैं।

धनुषतम्भ (Tetanus)

R/

(१) पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	२० ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	१५ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	२० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

आक्षेप नाशक है।

R/

(२) क्लोरोफार्म (Chloroform) सुंघान।

आक्षेप नाशक है।

R/

(३) कोकेन सूची (Cocain injection) सुषुम्नागत।

आक्षेप नाशक है।

R/

(४) मार्फीन सूची (Morphine injection) $\frac{1}{4}$ ग्रेन

प्रत्येक ४ घण्टे पर। आक्षेप नाशक है।

R/

(५) एण्टीटाक्सीन सीरम (Antitoxin Serum)

या

मैगसल्फ सूची (Magsulph injection)

त्वचा, मांस या सुषुम्नागत। रोग नाशक है।

R/

(६) हाइड्रोजन परआक्साइड (Hydrogen Peroxide)

या

पोटेसियम परमाग्नेट (Potssium permangnate)

या

आयोडीन घोल (Iodine Solution)

इनसे व्रण का बंधन कर्म करना।

सूची—

पेण्टोथाल सोडियम (Pentothal Sodium), एविपान सोडियम (Evipan Sodium), सोडियम एमिटाल (Sodium Amytal), नेम्बुटाल (Nembutal), पैरेल्डी हाइड (Paraldehyde) ये आक्षेप निवारक हैं।

अर्श (Haemorrhoid)

(१) दन्ती	८ तोला	बेल	८ तोला	श्योनाक	८ तोला
गम्भारी	८ "	पाटला	८ "	गणियारी	८ "
सरिवन	८ "	पिठवन	८ "	बृहती	८ "
कण्टकारी	८ "	गोक्षुर	८ "		

इन्हे जौकुट कर ६४ सेर जल में पकावे। पकाते समय २४ तोला त्रिफला चूर्ण डाले। १६ सेर जल शेष रहते छान घी लगे हुए पात्र में रखे। इसमें २½ सेर गुड़ डाल पात्र का कपड़ मिट्टी से मुख बन्द कर १ मास तक जमीन में गाड़े। तत्पश्चात् छान बोतल में भर रखे।
मात्रा—९ माशा—१॥ तोला। अनुपान—समान जल।
प्रातः तथा सायंकाल। अत्युत्तम है।

(२) मरीच	२ माशा	पीपर	२ माशा
सेंधानमक	२ "	सफेद जीरा	२ "
कूठ	२ "	मीठा वच	२ "
हींग	२ "	सोंठ	२ "
वायविडंग	२ "	हरड़	२ "
चीता जड़	२ "	अजवाइन	२ "

इनका कपड़छान चूर्ण कर ४ तोला पुराना गुड़ मिला रखे।
मात्रा—४-६ माशा। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) शुद्ध भिलावा	१ तोला	चीता	१ तोला
सोंठ	४ माशा	हरड़	१ "
पीपर	४ "	मरीच	४ माशा
वायविडंग	१ तोला	तिल	१ तोला

इनका कपड़ छान चूर्ण कर ६ तोला पुराना गुड़ मिला रखना।
मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।
शोथ तथा अर्श नाशक है।

(४) सोंठ	७ तोला	पीपर	६ तोला	मरीच	२ तोला
नागकेशर	४ "	तेजपत्र	३ "	इलायची	१ "
मिश्री	२६ "				

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) जायफल चूर्ण	१ तोला	सोंठ चूर्ण	१ तोला
लवंग चूर्ण	" "	शुद्ध सोहागा चूर्ण	" "

पीपर चूर्ण	१ तोला	शुद्ध धतूर बीज चूर्ण	१ तोला
सेंधा नमक	" "	शुद्ध हिंगुल	" "

जामुन अर्क के साथ या नीबू रस के साथ घोंट रत्ती प्रमाण की गोली बनाना। मात्रा—१ गोली। प्रातः तथा सायंकाल।

(६) सूरण चूर्ण	३२ तोला	मरीच चूर्ण	२ तोला
चीता छाल चूर्ण	१६ "	गुड़	६४ "
सोंठ चूर्ण	४ "		

इनको एकत्र मिला एक तोला प्रमाण की गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(७) सोंठ	१२ तोला	तेजपत्र	७ माशा
पीपर	८ "	इलायची	१ तोला
मरीच	१६ "	सफेद जीरा	" "
चव्य	४ "	काला जीरा	" "
तालीसपत्र	" "	दालचीनी	" "
नागकेशर	२ "	खस	" "
पीपरामूल	८ "	अजमोदा	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर १॥ सेर पुराना गुड़ मिला ६ माशे प्रमाण की गोलियां बना रखे। मात्रा—१-२ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल। अर्श तथा विषम ज्वर नाशक है।

(८) शुद्ध पारद	१ तोला	शुद्ध गन्धक	१ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

कज्जली	० तोला	अभ्रक भस्म	१ तोला
ताम्र भस्म	१ "	शुद्ध मीठा विष चूर्ण	" "
लोह भस्म	" "	शुद्ध भिलाव चूर्ण	९ "

इन्हें एक साथ सूरण तथा मानकन्द के रस में ३ दिन खरल कर उड़द बराबर गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—घी। प्रातः तथा सायंकाल।

(९) रस सिन्दूर	१ तोला	ताम्रभस्म	१ तोला
अभ्रक भस्म	" "	शुद्ध गन्धक	" "

लोह भस्म	१ तोला	शुद्ध भिलावा	१ तोला

इनको सूरण के रस में खरल कर १ माशा प्रमाण की गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायकाल।

(१०) हरड़ छिलका	१ सेर	पीपर	८ तोला
आँवला	२ "	लोध्र	" "
पक्के कैथ का गूदा	½ "	मरीच	" "
इन्द्रायन जड़	४ तोला	मुसब्बर	" "
वायविडंग	८ "	जल	६। मन

इनको एकत्र औटावे जब १ मन २१॥ सेर जल शेष रह जाय तब छान कर २५ सेर पुराना गुड़ मिला घी लगाये हुये पात्र में रख, एक मास तक जमीन में गाड़े। गाड़ते समय पात्र का मुख कपड़ मिट्टी द्वारा बन्द कर रखे। फिर छान बोतल में रखे। मात्रा—१-१॥ तोला। अनुपान—समान जल। २ मात्रा। भोजनोपरान्त। उदर, अर्श, शोथ तथा तिल्ली नाशक है।

(११) राल मलहम — अर्श की दाह तथा वेदना नाशक है।

(१२) भाँग या मेहदी — जल के साथ पीस अर्श पर लगावे। दाह तथा वेदना नाशक है।

R/

(१३) मार्फीन सल्फेट	(Morphine Sulphate)	१० ग्रेन
बेलाडोना मलहम	(Belladonna Oin)	१ ड्राम
स्ट्रैमोनियम मलहम	(Stramonium Oin)	" "

कपड़े पर रख अर्श पर लगावे। वेदना हारक है।

R/

(१४) हाइड्रार्ज सबक्लोर मलहम	(Hydrarg Subchlor Oin)	५ ड्राम
एक्स्ट्रैक्ट ओपियम	(Ext. Opium)	३ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	२ "
लैनोलीन	(Lanoline)	½ औंस

कपड़े पर रख अर्श पर लगाना। वेदना नाशक है।

R/

(१५) अलुमिन	(Aluminum)	१५ ग्रेन
कैम्फर	(Camphor)	१२ ”
एडिपिस बेंजायन	(Adipis Benzoin)	१ औंस

अर्श पर लगाने से कण्डु नष्ट होता है।

R/

(१६) टैनिक एसिड मलहम	(Tannic Acid Oint)	½ ड्राम
स्ट्रैमोनियम मलहम	(Stramonium Oint)	” ”
वेलाडोना मलहम	(Belladonna Oint)	” ”

आभ्यन्तरिक अर्श पर लगाना।

R/

(१७) एक्स्ट्रैक्ट सुप्रारेनल	(Extr. Suprarenal)	२ ड्राम
लैनोलीन	(Lanoline)	६ ”

वर्ति बना गुदा में रखे।

नोट—इसका व्यवहार अधिक काल तक नहीं करना चाहिये।

R/

(१८) इक्थ्याल	(Ichthyol)	५ ड्राम
टैनिक एसिड	(Tannic Acid)	” ”
एक्स्ट्रैक्ट वेलाडोना	(Ext. Belladonna)	⅓ ”
एक्स्ट्रैक्ट स्ट्रैमोनियम	(Ext. Stramonium)	” ”
एक्स्ट्रैक्ट हेमामीलिस	(Ext Hamamelis)	१० ”

वर्ति बना गुदा में रखना।
रक्तस्राव नाशक है।

R/

(१९) क्रिसोरोबिन	(Crysorobin)	३ ग्रेन
टैनिक एसिड	(Tannic Acid)	४ ”
आयडोफार्म	(Iodoform)	३ ”
आयल थियोब्रोमेट	(Oil Theobromate)	३० ”

वर्ति बना गुदा में रखना।
वेदना तथा रक्तस्राव नाशक है।

R/

(२०) पल्व क्रीटा एरोमेटिकस	(Pulv Creta Aromaticus)	२० ग्रेन
टि० कैटेचु	(Tr. Catechu)	१ ड्राम

डीकाक्टम होमोटाक्सील (Decoctum Haemotoxyle) १ औंस

२ मात्रा।

वेदना, रक्तस्राव तथा अर्श का बाहर आना ठीक होता है।

सूची—

कीनीन बाई हाइड्रोक्लोर विथ यूरेथीन (Quinine Bi hydrochlor with Urathene), ग्लीसरीन कार्बोलिक एसिड (Glycerine Carbolic Acid) १०% इसकी १-४ बूंद अर्श में देते हैं।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

हीलिंग पाइल मलहम (Healing Pile ointment), पैरागार (Paragar), स्क्यूरोफार्म (Scuroform), वेरिकेन (Varicane), स्टोवेन (Stovaine), सोडियम मोर्हुट (Sodium Morrhuate), हैजेलिन कम्पाउण्ड (Hazeline Compound), गाल एण्ड ओपियम (Gall and Opium), मार्फीन एण्ड बेलाडोना (Morphine and Belladonna), मार्फीन सपोजिटरीज (Morphine Suppositories).

गुदशोथ (Proctitis)

R/

(१) एरण्ड तैल	(Castor Oil)	१ औंस
दूध	(Milk)	½ पौण्ड

सोते समय।

दस्त पतला लाकर शोथ नष्ट करती है।

R/

(२) मार्फीन एसीटेट	(Morphine Acetate)	¼ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext Belladonna)	१ "
आयल थियोब्रोम	(Oil Theobrome)	१५ "

बत्ती बना गुदा में रखना।

शोथ तथा वेदना नाशक है।

R/

(३) ओपियम	(Opium)	२ ग्रेन
स्टार्च	(Starch)	८ औंस

शोथ पर लगना।

वेदना शामक है।

R/

(४) हेजेलिन	(Hazeline)	४ ड्राम
जल	(Water)	२ औंस

वस्ति देना।

शोथ तथा वेदना नाशक है।

R/

(५) प्रोटार्गाल	(Protargol)	६० ग्रेन
परिस्नुत जल	(Dist. Water)	१ औंस

R/

(६) अर्जिराल	(Argyrol)	५० ग्रेन
परिस्नुत जल	(Distt Water)	१ औंस

R/

(७) सिल्वर नाइट्रेट	(Silver nitrate)	२० ग्रेन
परिस्नुत जल	(Distt Water)	१ औंस

नोट—नं० ५ से ७ तक की ओषधियों को गुदा में प्रविष्ट करते हैं। ये चिरकालिक शोथ नाशक है।

R/

(८) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Sodabicarb)	६ ग्रेन

३ मात्रा।

शोथ नाशक है।

R/

(९) फ्लैक्स टी	(Flax Tea)	१ औंस
ओपियम	(Opium)	½ ग्रेन
फ्ल्यूइड एक्स्ट्रैक्ट क्रेमेरिया	(Fluid Ext. Kramarea)	३० बूंद

वर्ति बना गुदा में धारण करना।

तीव्र शोथ तथा वेदना शीघ्र ही दूर होती है।

R/

(१०) स्ट्रिक्नीन	(Strychnine)	½ ग्रेन
फेरी सल्फ	(Feri Sulph)	१ ”
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

शक्ति दायक है।

R/

(११) पाट० परमाग्नेट	(Pot. Permangnate)	१ ग्रेन
जल	(Water)	४० औंस

२ वार वस्ति देना ।
चिरकालिक शोथ में लाभप्रद है ।

गुद-कण्डू
(Pruritus Ani)

R/

(१) रीसार्सिन	(Resorcin)	१० ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

कण्डू पर लगाना ।

R/

(२) लाइकर प्लम्बाई सबएसिटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	२ औंस

कण्डू पर लगाना ।

R/

(३) कैलोमल	(Calomel)	१ ड्राम
लार्ड	(Lard)	१ औंस

कण्डू स्थान पर लगाना ।

R/

(४) बालजम पीरु	(Balsam Peru)	१ ड्राम
बोरिक एसिड	(Boric Acid)	,, ,,
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

कण्डू पर लगाना ।

R/

(५) बिस्मथ सबनाइट्रेट	(Bismuth Subnitrate)	१½ ड्राम
हाइड्रार्ज सबक्लोर	(Hydrarg Subchlor)	२ ,,
टि० एकोनाइट	(Tr Aconite)	७ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ ड्राम
अगवेण्टम सैम्बुसी	(Ung. Sambuci)	१ औंस

कण्डू पर लगाना ।

R/

(६) कैम्फो फेनिक	(Campho Phenique)	१ ड्राम
लैक्टिस	(Lactis)	१ औंस
जल	(Aqua)	" "

कण्डू पर लगाना।

R/

(७) पिसिस कार्बोनिस	(Picis Carbonis)	१ ड्राम
बेंज़ोल	(Benzol)	४ "
एसीटोन	(Acetone)	१ औंस

कण्डू स्थान पर लगाना।

R/

(८) एनीस्थेसिन	(Anaesthesin)	१ भाग
स्टार्च पाउडर	(Starch Powder)	२ "

कण्डू स्थान पर छिड़कना।

R/

(९) कैल्सियम क्लोराइड	(Calcium Chloride)	२० ग्रेन
लि० एक्स्ट्रैक्ट ग्लिसराइज़ा	(Liquid Ext. Glycerrhiza)	१ ड्राम
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(१०) बिस्मथ सबनाइट्रास	(Bismuth Subnitras)	२ ड्राम
कोकेन	(Cocaine)	१० ग्रेन
वेसेलीन	(Vaseline)	१ औंस

कण्डूस्थान पर लगाना।

भग कण्डू (Pruritus Valva)

R/

(१) मेंथल	(Menthol)	१ ड्राम
ओलिव आयल	(Olive Oil)	३ "
क्लोरोफार्म	(Chloroform)	५ "
लैनोलिन	(Lanoline)	३ औंस

कण्डू स्थान पर लगाना।

R/

(२) कोकेन हाइड्रोक्लोर	(Cocaine Hydrochlor)	९ ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ड्राम
लैनोलीन	(Lanoline)	१ औंस

कण्डू स्थान पर लगाना ।

R/

(३) लाइकर प्लम्बाई सबएसिटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ पाइण्ट

कण्डू स्थान को तर रखना ।

R/

(४) लाइकर कार्बोनिस डीटर्जेन्स	(Liqr Carbonis detergens)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ पाइण्ट

कण्डू स्थान को तर रखना ।

R/

(५) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

कण्डू स्थान पर लगाना ।

R/

(६) इक्थ्याल	(Ichthyol)	२० ग्रेन
लैनोलिन	(Lanoline)	२ औंस

कण्डू स्थान पर लगाना ।

R/

(७) पल्व एसिड सैलिसिलास	(Pulv Acid Salicylas)	२० ग्रेन
पल्व एमाइल	(Pulv Amyle)	२ औंस

कण्डू स्थान पर छिड़कना ।

R/

(८) लाइकर कार्बोनिस डीटर्जेन्स	(Liqr. Carbonis detergens)	½ चिम्मच
लाइकर प्लम्बाई सबएसिटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	½ चिम्मच

जल	(Aqua)	१ औंस

कण्डु स्थान पर लगाना।

R/

(९) हाइड्रोसायनिक एसिड डिल	(Hydrocyanic Acid Dil)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

कण्डु स्थान पर लगाना।

R/

(१०) हाइड्रार्ज मलहम	(Ung. Hydrarg)	१ औंस
जिंक मलहम	(Ung Zinc)	" "
प्लम्बाई एसीटेटिस मलहम	(Ung. Plumbi Acetatis)	" "

कण्डु स्थान पर लगाना।

नोट—उपरोक्त औषधियों को कण्डु स्थान को भली भाँति गरम जल तथा साबुन से प्रक्षालित कर २, ३ वार लगाते रहे।

भगन्दर (Fistula in Ano)

(१) चीता	१ तोला	श्वेतकनेर	१ तोला
निशोथ	" "	वच	" "
पाढल	" "	कलिहारी	" "
मदार	" "	हरताल	" "
कठूमर	" "	सज्जीखार	" "
थूहर	" "	मालकांगनी	" "

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	४८ तोला	लुगदी	० तोला
जल	१९२ "		

एकत्र तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।

भगन्दर पर लगाना। व्रण रोपण है।

(१) हल्दी	१ तोला	मदारदूध	१ तोला	सेंधानमक	१ तोला
गुग्गुलु	१ "	कनेर	१ "	इन्द्रयव	१ "

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल	१२ "	जल	४८ तोला	लुगदी	०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। भगंदर पर लगाना।

(२) कनेर	१ तोला	हल्दी	१ तोला	जमालगोटा	१ तोला

कलिहारी १ तोला संधानमक १ तोला वीजोरा नीबू १ तोला
इन्द्रजव १ ,, चीता १ ,,

इनको जल के साथ पीस लुगदी करे।

तिलतैल ३२ तोला जल १७६ तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। भगंदर पर लगाना।

(४) हरड़चूर्ण २ तोला आँवला चूर्ण २ तोला
बहेड़ा चूर्ण २ ,, पीपर चूर्ण १० ,,
गुग्गुलु १० ,,

इनको घी के साथ खरल कर रखना।

मात्रा—½ तोला

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) व्रणगजांकुश रस १ माशा मधु ३ माशा

प्रातः तथा सायंकाल।

(६) सप्तविंशति गुग्गुलु ½ तोला

अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(७) पल्व ओपियाई	(Pulv Opii)	२ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext. Belladonna)	२ ,,
हाइड्रार्ज सबक्लोर	(Hydrarg Subchlor)	४ ,,
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

भगन्दर पर लगाना। वेदना तथा व्रण नाशक है।

R/

(८) प्लम्बाई एसीटेट मलहम	(Plumbi Acetate Oint.)	१ औंस
एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोन	(Ext. Belladonna)	१ ड्राम

भगन्दर पर लगाना। वेदना तथा व्रण नाशक है।

R/

(९) एनीस्थेसिन	(Anaesthesin)	७० ग्रेन
लैनोलिन	(Lanoline)	३ औंस

भगन्दर पर लगाना। वेदना नाशक है।

R/

(१०) हैमामेलिस मलहम	(Hamamelis Oint)	१ औंस
हाइड्रार्ज नाइट्रेटिस डिल मलहम	(Hydrarg Nitratis dil Oint)	१ ,,

भगदर पर लगाना। वेदना नाशन में उत्तम है।

R/

(११) इक्थ्याल मलहम (Ichthyol Oint) १०%

भगंदर पर लगाना।

R/

(१२) सिबेजाल (Cibazol) १ गोली

३ मात्रा

पूय नाशक है।

नोट—उपरोक्त ओषधियों के प्रभाव हीन होने पर शस्त्रकर्म करना।

नाड़ी व्रण (Fistula)

(१) हल्दी १ तोला वच १ तोला कुटकी १ तोला
गोजिया १ ,, पचमूल ५ ,,

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल ३६ तोला जल १४४ तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। व्रण पर लगाते हैं।

व्रण शोधक, तथा पूरक है।

(२) सज्जीखार १ तोला सेंधानमक १ तोला
दन्ती १ ,, चीता १ ,,
सफेद मदार १ ,, सिवार १ ,,
चिचिड़ी बीज १ ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल २८ तोला जल ११२ तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।

नाड़ी व्रण पर लगाना।

(३) सेंधानमक १ तोला बहेड़ा १ तोला मरीच १ तोला
चीता १ ,, करेला १ ,, हल्दी १ ,,
दारुहल्दी १ ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल २८ तोला जल ११२ तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।

नाड़ी व्रण पर लगाते हैं।

R/

(४) सिबेजाल गोली	(Cibazol Tabts)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda bicarb)	५ ग्रेन

२, ४ मात्रा

पूय नाशक है।

नोट—भगन्दर में वर्णित चिकित्सा का भी व्यवहार करते हैं।

विद्रधि (Abscess)

(१) वड्छाल	५ माशा	पाकड़छाल	५ माशा
पीपर छाल	" "	वेतस छाल	" "
गुलर छाल	" "		

जल के साथ पीस थोड़ा गरम कर घी मिला शोथ पर लेप करना। शोथ बैठ जाता है।

(२) जौ का आटा पकाकर बाँधना — २, ३ बार।

शोथ बैठ जाता है।

(३) मूग या अरहर पीस गरम कर बाँधना — २, ३ बार।

शोथ बैठ जाता है।

(४) सैजन के जड़ को पीस गरम कर बाँधना — २, ३ बार।

शोथ बैठ जाता है।

(५) तीसी पीस गरम कर बाँधना — २, ३ बार।

शोथ पक जाता है।

(६) एरण्ड बीज पीस गरम कर बाँधना — २, ३ बार।

शोथ पक जाता है।

(७) सेजन के जड़ की छाल का रस — १ तोला — मधु — ३ माशा।

पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।

अपक्व अन्तर्विद्रधि बैठ जाती है।

(८) श्वेत पुनर्नवा जड़ — २ तोला — जल — १ पाव

इसका क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान कर पिलावे।

प्रातः तथा सायंकाल।

अपक्व अन्तर्विद्रधि नाशक है।

(९) वरुण छाल — २ तोला — जल — १ पाव

इसका क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान शीतल कर पिलावे। प्रातः तथा सायकाल।

अपक्व अन्तर्विद्रधि नाशक है।

(१०) हींग	१ तोला	कसीस	१ तोला
सेंधानमक	" "	शिलाजीत	" "

इनका चूर्ण कर रखे। मात्रा—३ माशा।
अनुपान—वरुण क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।
अन्तर्विद्रधि नाशक है।

(११) एरण्ड तैल	२ तोला	दूध	½ पाव

प्रातः तथा सायंकाल।
अन्तर्विद्रधि नाशक है।

(१२) सनबीज	१ तोला	तीसी	१ तोला
मूली बीज	" "		

इन्हें जल के साथ पीस थोड़ा गरम कर
विद्रधि पर लगावे। २, ३ वार।
विद्रधि को शीघ्र ही पकाती है।

(१३) सहजन बीज	१ तोला	सरसों	१ तोला
जौ का आटा	½ छ०		

जल के साथ मिला थोड़ा गरम कर विद्रधि
पर लगावे। २, ३ वार।
विद्रधि को पकती है।

(१४) करंज	१ तोला	कबूतर की बीट	½ तोला
कनेर की जड़	" "		

जल के साथ पीस थोड़ा गरम कर विद्रधि
पर बाँधे। २, वार।
विद्रधि को पकाकर फोड़ देती है।

(१५) परवर का पत्ता	१ तोला	जल	१ सेर
नीम का पत्ता	" "		

इनका क्वाथ बनावे। ½ सेर जल शेष रहते छान रखे।
इससे घाव को प्रक्षालित करते हैं।
यह शोधक तथा जीवाणु नाशक है।

(१६) बड़ छाल	९ माशा	गूलर छाल	९ माशा
पीपल छाल	" "	वेतस छाल	" "
पाकड़ छाल	" "	जल	१ सेर

इनका क्वाथ करे। १ पाव जल शेष रहते छान कर रखते हैं।
घाव को धोते हैं। यह शोधक है।

(१७)

प्रियंगु फूल	१ तोला	कायफल	१ तोला
धाय फूल	" "	हल्दी	" "
लोध	" "	दारु हल्दी	" "

इनको जल के साथ पीस लुगदी में परिणित करे।

प्रियगु फूल	१ तोला	हल्दी	१ तोला
धायफूल	" "	दारुहल्दी	" "
लोध	" "	जल	३८४ "
कायफल	" "		

इन्हें जल के साथ पकाये। ९६ तोला जल शेष रहते छान ले।

तिल तैल	२४ तोला	लुगदी	० तोला
क्वाथ	९६ "		

इनको तैल मात्र अवशेष तक एकत्र पाक कर रखे। घाव पर लगाते हैं। व्रण पूरक है।

(१८)

करज पत्र	१ तोला	मोम	१ तोला
वरुण का फल	" "	मुलेठी	" "
चमेली पत्र	" "	कुटकी	" "
परवर पत्र	" "	प्रियगु	" "
नीम पत्र	" "	कुशजद	" "
हल्दी	" "	जलवेत	" "
दारुहल्दी	" "		

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी	५२ तोला	लुगदी	० तोला
जल	२०८ "		

घी मात्र शेष रहने तक पाक कर छान रखे। व्रण पर लगाना। व्रण नाशक है।

(१९)

जाती पत्र	८ तोला	मजीठ	६ तोला
नीम पत्र	६ "	खस की जड़	" "
परवर पत्र	" "	मोम	" "
कुटकी	" "	तुतिया	" "
हल्दी	" "	मुलेठी	" "
दारुहल्दी	" "	कहर करंज की बीज	" "
अनन्तमूल	" "		

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनाये।

घी या तिल तैल	४ सेर	लुगदी	० तोला
जल	१६ "		

घी या तैल मात्र शेष तक पाक कर छान रखे। घाव पर लगाना। पूय निकाल घाव को सुखाता है।

(२०)

सिन्दूर	१ पल	लहसुन	१ पल
कूठ	" "	चीतामूल	" "
मीठा विष	" "	बलामूल	" "
हींग	" "	ईशलांगला	" "

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों का तैल	४ सेर	लुगदी	० पल
जल	१६ "		

इन्हें तैल मात्र शेष रहने तक पाक कर रखे। घाव पर लगाना। घाव का रोहण करता है।

(२१) पारद २ तोला गन्धक २ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

सरसों का तैल	½ सेर	लहसुन	२ तोला
हरताल	२ तोला	विष	" "
मटिया सिन्दूर	" "	ताम्र	" "
मेनसिल	" "	कज्जली	० "

इनको एकत्र धूप में रखना। घाव तथा विस्फोट पर लगाना। घाव तथा विस्फोट नाशक है।

(२२)

पत्थर का कोयला	४ तोला	साबुन	४ तोला
खार	६ "	जंगाल	" "

इनका कपड़ छान चूर्ण करे।

गन्धविरोजा ८० तोला

गन्धविरोजा को मन्द आँच पर मलहम बनाने योग्य पिघला कपड़े से छान उपर्युक्त चूर्ण डाल शीतल होने तक खूब मिलावे। यह मलहम विद्रधि विदारक तथा व्रण शोधक तथा रोपक है।

R/

(२३) बेलाडोना प्लास्टर (Belladonna Plaster)

विद्रधि पर लगाना। विद्रधि बैठ जाती है।

R/

(२४) एण्टीफ्लेविन प्लास्टर (Antiflavin Plaster)

शोथ पर लगाना । शोथ तथा वेदना नाशक है ।

R/

(२५) एण्टीफ्लोजेस्टिन प्लास्टर (Antiflogestin Plaster)

शोथ पर लगाना । शोथ तथा वेदना नाशक है ।

R/

(२६) सिबैजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन
		३ मात्रा

शोथ तथा पूय नाशक है ।

R/

(२७) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	२० ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२० ग्रेन
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide)	२ गोली
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

व्रण पर लगाना ।

व्रण रोपक तथा पूय नाशक है ।

R/

(२८) एक्रीफ्लेविन (Acriflavin)

या

टिंचर आयोडीन (Tr. Iodine)

या

नार्मल सेलाइन (Narmol Saline)

विद्रधि को चीर इनके घोल में वस्त्र भिगो व्रण में भरना ।

विषनाशक तथा व्रण रोपक है ।

R/

(२९) कार्बोलिक तैल (Carbolic oil)

आयडोफार्म (Iodoform)

एकत्र मिला सड़े गले घावों पर लगाना । तीव्र जीवाणु नाशक तथा व्रण पूरक है ।

क्षत (Wound)

(१) फिटकिरी १ तोला जल १ सेर

इसमें कपड़ा भिगो क्षत पर रखना।
रक्तस्राव बंद करती है।

(२) चिरचिरी के पत्ते का रस
या
दूब के पत्ते का रस

क्षत पर डालने से रक्तस्राव बन्द होता है।

(३) शतधौत घी १ पाव कपूर २ तोला

एकत्र मिला कपड़े पर फैला क्षत पर लगाना।
क्षत पकता नहीं, वेदना नहीं होती तथा क्षत शीघ्र भरता है।

(४) वंसलोचन ५ माशा एरण्डजड़ ५ माशा
गोखरू ६ " पाषाणभेद ५ "
जल १ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर हींग और सेंधानमक मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
कोष्ठ में रुके हुये रक्त को बाहर निकालती है।

R/

(५) बिस्मथ (Bismuth)
आयडोफाम (Iodoform)
पैराफिन (Paraffin)
पेस्ट (Paste)

इनको एकत्र मिला दूषित व्रणों पर लगाते हैं।
क्षत को विसंक्रमित कर उसे भरता है।

R/

(६) सिबेजाल (Cibazol) १ गोली
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) १० "
३ मात्रा

व्रण को पकने नहीं देता।

नोट—विसंक्रमित क्षत को तुरन्त ही विसंक्रमित द्रव से प्रक्षालन कर सीवन लगा देते हैं।

आंत्र वृद्धि (Hernia)

(१) पेटी बांधना (Truss)

(२) शस्त्रकर्म द्वारा आंत्र वृद्धि का उपचार करना ।

(३) रास्ना ४ माशा मुलेठी ४ माशा गिलोय ४ माशा
एरण्डजड़ ४ " खरेटी ४ " गोखरू ४ "
जल १ पाव

क्वाथ करे । ½ छटाँक जल शेष रहते छान एक तोला एरण्ड तैल मिला रोगी को पिलावे । सायंकाल ।

आंत्र उतरना बंद होता है ।

मूत्रज वृद्धि (Hydrocele)

(१) बच २ तोला सरसों २ तोला

जल के साथ पीस वृद्धि पर लेप करना । वृद्धि नाशक है ।

(२) पीपर २ तोला पांचों नमक २ तोला जवाखार २ तोला
सज्जीखार २ " सोहागा २ " त्रिफला २ "
परवरपत्र २ " अजवाइन २ " अजमोदा २ "
सोवा २ " जीरा २ " हींग २ "
मेथी २ " चीतामूल २ " चाभ २ "
वच २ " दन्तीमूल २ " मोथा २ "
सहजन २ " नीमबीज २ " विधारा बीज २ "
शुद्ध धतूरबीज २ "

इनका कपड़छान चूर्ण करे ।

शुद्ध पारा २ तोला शुद्ध गंधक २ तोला हरताल २ तोला
मैनशिल २ " शिलाजीत २ " लोहभस्म २ "
चूर्ण ● "

इन्हें एकत्र मिला रखना ।

मात्रा—४ रत्ती । अनुपान—मधु । २ मात्रा

(३) शतपुष्पाद्यघृत ½—२ तोला

अनुपान—दूध । प्रातः तथा सायंकाल ।

(४) शुद्ध पारा २ तोला शुद्ध गंधक २ तोला

त्रिफला चूर्ण	३ तोला	चीतामूल चूर्ण	४ तोला
गुग्गुलु	५ ,,		

इन्हें एरण्ड तैल में मर्दन कर ½ तोला प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—आदी स्वरस।
प्रातः तथा सायकाल।

(५) गंधर्वहस्त तैल ॰ तोला
अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायकाल।

(६) वेधनकर्म (Tapping)

(७) शस्त्रकर्म (Operation)

मोच (Sprain)

R/

(१) लाइकर प्लम्बाई सबएसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	२ ड्राम
एसीटिक एसिड डिल	(Acetic Acid Dil)	½ औंस
मेथिलेटेड स्पिरिट	(Methylated Spirit)	१ ,,
जल	(Aqua)	२० ,,

कपड़ा भिगो मोच पर बाँधना।

R/

(२) लाइकर प्लम्बाई सबएसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	१ औंस
टिंचर ओपियाइ	(Tincture Opii)	१ ,,
जल	(Water)	१ पौंड

कपड़ा भिगो मोच पर बाँधना।

नोट—नं० २ की औषधि चर्म फटने पर निषिद्ध है।

स्वरभंग (Hoarsness)

(१) अजवाइन	१ तोला	हल्दी	१ तोला	चीता छाल	१ तोला
यवक्षार	१ ,,	आँवला	१ ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—१-२ माशा। अनुपान—असमान मधु और घृत।
प्रातः तथा सायकाल। भयंकर स्वरभंग नाशक है।

आंत्र वृद्धि (Hernia)

(१) पेटी बांधना (Truss)

(२) शस्त्रकर्म द्वारा आंत्र वृद्धि का उपचार करना।

(३) रास्ना ४ माशा सुलेठी ४ माशा गिलोय ४ माशा
एरण्डजड़ ४ " खरेटी ४ " गोखरू ४ "
जल १ पाव

क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान एक तोला एरण्ड तैल मिला रोगी को पिलावे। सायंकाल।

आंत्र उतरना बंद होता है।

मूत्रज वृद्धि (Hydrocele)

(१) वच २ तोला सरसों २ तोला

जल के साथ पीस वृद्धि पर लेप करना। वृद्धि नाशक है।

(२) पीपर २ तोला पांचों नमक २ तोला जवाखार २ तोला
सज्जीखार २ " सोहागा २ " त्रिफला २ "
परवरपत्र २ " अजवाइन २ " अजमोदा २ "
सोवा २ " जीरा २ " हींग २ "
मेथी २ " चीतामूल २ " चाम २ "
वच २ " दन्तीमूल २ " मोथा २ "
सहजन २ " नीमबीज २ " विधारा बीज २ "
शुद्ध धतूरबीज २ "

इनका कपड़छान चूर्ण करे।

शुद्ध पारा २ तोला शुद्ध गंधक २ तोला हरताल २ तोला
मैनशिल २ " शिलाजीत २ " लोहभस्म २ "
चूर्ण ० "

इन्हें एकत्र मिला रखना।

मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—मधु। २ मात्रा

(३) शतपुष्पाद्यघृत ½—२ तोला

अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) शुद्ध पारा २ तोला शुद्ध गंधक २ तोला

त्रिफला चूर्ण	३ तोला	चीतामूल चूर्ण	४ तोला
गुग्गुलु	५ "		

इन्हें एरण्ड तैल में मर्दन कर ½ तोला प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—आदी स्वरस।
प्रातः तथा सायकाल।

(५) गंधर्वहस्त तैल २ तोला
अनुपान—गरम दूध। प्रातः तथा सायकाल।

(६) बेधनकर्म (Tapping)

(७) शस्त्रकर्म (Operation)

मोच (Sprain)

R/

(१) लाइकर प्लम्बाई सबएसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	२ ड्राम
एसीटिक एसिड डिल	(Acetic Acid Dil)	½ औंस
मेथिलेटेड स्पिरिट	(Methylated Spirit)	१ "
जल	(Aqua)	२० "

कपड़ा भिगो मोच पर बाँधना।

R/

(२) लाइकर प्लम्बाई सबएसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	१ औंस
टिंचर ओपियाइ	(Tincture Opii)	१ "
जल	(Water)	१ पौंड

कपड़ा भिगो मोच पर बाँधना।

नोट—नं० २ की ओषधि चर्म फटने पर निषिद्ध है।

स्वरभंग (Hoarseness)

(१) अजवाइन	१ तोला	हल्दी	१ तोला	चीता छाल	१ तोला
यवक्षार	१ "	आँवला	१ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—१-३ माशा। अनुपान—असमान मधु और घृत।
प्रातः तथा सायकाल। भयंकर स्वरभंग नाशक है।

(२) छोटी हरड़ १ तोला ब्राह्मी १ तोला दूधिया वच १ तोला
अडूसापत्र १ " छोटी पीपर १ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—२-४ माशा। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) कुलञ्जन २ तोला मरीच २ तोला बड़ी लाची २ तोला
मुलेठी २ "

कपड़ छान चूर्ण कर बंगला पान के स्वरस के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(४) कस्तूरी १ तोला छोटी लाची १ तोला लवंग १ तोला
वंसलोचन १ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—१ माशा। अनुपान—असमान प्रमाण में घी तथा मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।
स्वरभंग और वाक्स्तम्भ नाशक है।

(५) शुद्ध गन्धक २ तोला शुद्ध पारद २ तोला
इनकी कज्जली करे।

शुद्ध मीठा विष २ तोला भुना सोहागा २ तोला मरीच २ तो०
चव्य २ " चीता छाल २ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर कज्जली को मिला आर्द्री स्वरस के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(६) त्र्यम्बकाभ्र १ गोली
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायकाल।

(७) निदिग्धिकावलेह ३ माशा
प्रातः तथा सायंकाल।

(८) ब्राह्मीघृत ½-२॥ तोला
अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

अरोचक

(१) खट्टा अनारदाना ८ तोला तेजपत्र ४ माशा

दालचीनी	४ माशा	छोटी लाची बीज	४ माशा

इनका कपड़ छान चूर्ण कर १२ तोला चीनी मिला रखना।
मात्रा—१ माशा। अनुपान—मधु। ३ मात्रा।
अरुचि नाशक तथा अग्नि दीपक है।

(२)

सोंठ	१ तोला	छोटी पीपर	१ तोला
अजमोदा	१ ”	कालाजीरा	१ ”
मरीच	१ ”	सफेद जीरा	१ ”
सेंधानमक	१ ”	भूनी हींग	१ ”

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—१-३ माशा।
२ मात्रा। भोजन के साथ।

(३)

लवंग	१ तोला	अगर	१ तोला
कंकोल	१ ”	तज	१ ”
मरीच	१ ”	नागकेशर	१ ”
खस	१ ”	पीपर	१ ”
सफेद चन्दन	१ ”	सोंठ	१ ”
तगर	१ ”	लाची	१ ”
नीला कमल बीज	१ ”	भीमसेनी कपूर	१ ”
काला जीरा	१ ”	जायफल	१ ”
सुगंधवाला	१ ”	नीला वंसलोचन	१ ”

इनका कपड़ छान चूर्ण करे। चूर्ण के आधे प्रमाण के बराबर मिश्री मिला रखना। मात्रा—१-२ माशा।
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।
अरुचिनाशक तथा अग्नि और कामोद्दीपक है।

(४)

आदी स्वरस	१ तोला	सेंधानक	३ रत्ती

२ मात्रा। भोजन के पूर्व।

(५)

आदी स्वरस	१ माशा	मधु	३ माशा

प्रातः तथा सायंकाल।

(६) खाण्डव चूर्ण १-३ माशा

अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।
अरुचि, शूल तथा आध्मान नाशक है।

(७)

चाभ	१० माशा	अनार	१० माशा
बैर	१० ”	आँवला	१० ”
खस की जड़	१० ”	चौपतिया	१० ”

इनका कपड़ छान चूर्ण करे।

अभ्रक भस्म	१ तोला	चूर्ण	६० माशा
हीरक भस्म	१ "	नीबूरस	१० तोला

एकत्र खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे। मात्रा—१ गोली।
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।
अरुचि, कास, श्वास, वमन तथा शूल नाशक है।

(९) कलौंजी	१ तोला	मुनक्का	१ तोला
जीरा	१ "	खट्टा अनार दाना	१ "
मरीच	१ "	सोंचर नमक	१ "

कपड़ छान चूर्ण कर गुड़ तथा मधु मिला २ रत्ती प्रमाण की गोलियाँ बनावे। मात्रा—१ गोली। मुख में रख चूसना।

सोम रोग (Polyurea)

(१) रससिंदूर भस्म	१ तोला	वंग भस्म	१ तोला
लोह भस्म	१ "	अभ्रक भस्म	१ "

मधु के साथ एक दिन तक खरल कर १ माशा प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—गूलर बीज चूर्ण १ आना भर ;
मधु-३ माशा। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) शुद्ध पारा	२ तोला	शुद्ध गंधक	२ तोला

इनकी कज्जली बनावे।

सोना भस्म	१ तोला	प्रवाल भस्म	५ माशा
सोना माक्षिक भस्म	१ "	वंग भस्म	५ "
लोह भस्म	५ माशा	कज्जली	० "

इनको अफीम क्वाथ, केला फूल स्वरस तथा गूलर स्वरस में क्रमशः सात, सात बार खरल कर ३ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान-मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) कदल्यादि घृत — $\frac{1}{2}$–१ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

(४) बृहत् धात्री घृत — १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल।

नोट—पाश्चात्य चिकित्सा उदक मेहवत करते हैं।

योनि प्रक्षालक (Vaginal Douches)

(१) वटछाल	५ माशा	गूलरछाल	५ माशा।
पीपल छाल	" "	सीरीष छाल	" "
पाकड़ छाल	" "	जल	१ सेर

इनका क्काथ करे। ½ सेर जल शेष रहते छान योनिप्रक्षालन में व्यवहृत करे। शामक तथा जीवाणु नाशक है।

R/

(२) लाइसोल	(Lysol)	१ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

R/

(३) सीलिन	(Cyllin)	½ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

R/

(४) सैनिटास	(Sanitas)	१ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

R/

(५) टि० आयोडिन	(Tr. Iodine)	१ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

नोट—नं० २ से ५ तक की ओषधियाँ जीवाणु नाशक हैं।

R/

(६) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

R/

(७) टि० ओपियाई	(Tr. Opii)	१ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

R/

(८) क्लोरल हाइड्रास	(Chloral Hydras)	½ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

R/

(९) लाइकर प्लम्बाई सबएसिटास	(Liqr. Plumbi Subacetas)	½ ड्राम

जल	(Water)	१ पाइण्ट

नोट—नं० ६ से ८ तक की ओषधियाँ शामक (Sedative) हैं।

R/

(१०) अलुमिनिस	(Aluminis)	१ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

R/

(११) जिंक सल्फेट	(Zinc Sulphate)	१ ड्राम
जल	(Water)	१ औंस

R/

(१२) टेनिन	(Tannin)	½ ड्राम
जल	(Water)	१ पाइण्ट

नोट—नं० १० से १२ तक की ओषधियाँ संकोचक (Astringent) हैं।

R/

(१३) पाट० क्लोराइड	(Pot. Chloride)	३ ग्रेन
सोडा० "	(Soda ")	६० "
" सल्फास	(" Sulphas)	२½ "
" कार्ब	(" Carb)	" "
" फास्फ	(" Phosph)	२ "
गरम जल	(Hot Water)	२० औंस

नोट—यह बहुत उपयोगी औषधि है।

भ्रम (Vertigo)

(१) शतमूली चूर्ण	६ माशा	किसमिस	१ तोला
वरियरा जड़	" "	दूध	१ सेर

एकत्र औटाना। ३ पाव दूध रहते छान रोगी को पिलावे।

प्रातः तथा सायंकाल।

(२) वरियरा बीज चूर्ण	३ माशा	चीनी	१ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

(३) सोंठ	१ तोला	सोवा	१ तोला
पीपर	" "	हरड़	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर ६ तोला गुड़ मिला ½ तोला प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) ताम्रभस्म २ रत्ती घी १ आना भर

अनुपान—जवासा क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) रस सिंदूर २ रत्ती पीपर चूर्ण २ रत्ती

अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(६) अश्वगन्धारिष्ट १, ४ तोला जल १, ४ तोला

२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(७) पाट॰ ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१५ ग्रेन
पाट. आयोडाइड	(Pot. Iodide)	१० ,,
लाइकर अर्सेनिकलिस	(Liqr. Arsenicalis)	३ बूंद
टिं॰ बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	५ ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(८) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१५ ग्रेन
स्पि॰ अमन एरोमेट	(Spt. Ammon Aromat)	१५ बूंद
टिं॰ जेल्सिमाई	(Tr. Gelsimii)	२० ,,
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(९) टिं॰ आयोडिन तीव्र	(Tr. Iodine Strong)	१ ड्राम
टिं॰ आयोडिन तनु	(Tr. Iodinedil)	,, ,,

फफोलोत्पत्ति तक कान के पीछे लगाना।

प्रत्येक रात्रि।

R/

(१०) क्वीनीनसल्फ	(Quinine Sulph)	३ ग्रेन
एसिड हाइड्रोब्रोमिक डिल	(Acid Hydrobromic dil)	½ ड्राम
स्पि॰ क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० बूंद
एक्वामेंथपिप	(Aqua Menth pip)	१ औंस

३ मात्रा। कर्णरोग जन्य भ्रम नाशक है।

R/

(११) पाट॰ ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१० ग्रेन
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अर्गट	(Liquid Ext. Ergot.)	१० बूंद

सीरप आरेंशाई	(Syrup Aurantii)	½ ड्राम
एक्वामेंथपिप	(Aqua Menth Pip)	१ औंस
		३ मात्रा।

सामुद्रिकज्वर (Sea sickness)

R/

(१) क्लोरोटोन	(Chlorotone)	५ ग्रेन

कैप्सुल में प्रत्येक ३ घंटे पर। ४ मात्रा। शामक तथा वमन नाशक है।

R/

(२) वैलिडाल	(Validol)	१० बूंद
चीनी	(Sugar)	½ छटांक

आवश्यकतानुसार कई मात्रा। निद्रालु तथा वमन नाशक है।

R/

(३) क्लोरोब्रोम	(Chlorobrome)	२, ४ ड्राम
		१ मात्रा

आवश्यकतानुसार दोहराया जा सकता है।

R/

(४) कोकेन	(Cocaine)	½ ग्रेन
क्लोरोफार्मजल	(Chloroform water)	१ औंस
		२ मात्रा

सूची—

हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड (Hyoseine Hydrobromide) $\frac{1}{100}$ ग्रेन, स्ट्रिक्नीनविथ एट्रोपीन सल्फ (Strychnine with Atropine Sulph) $\frac{1}{60}$–$\frac{1}{150}$ ग्रेन, एट्रोपीन सल्फ (Atropine Sulph) $\frac{1}{60}$ ग्रेन, ये शामक तथा वमन नाशक हैं।

नोट—शेष औषधियाँ दुर्जलज्वरवत देनी चाहिये।

मदात्यय (Alcoholism)

(१) चव्य	२ तोला	सोंठ	२ तोला
काला नमक	” ”	अजवाइन	” ”
बड़े नीबू का छिलका	” ”	हींग	” ”

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा १–२ माशा। अनुपान—शीतल जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) छोटी लाची	१ तोला	द्राक्षा	१ तोला
मुलेठी	" "	छुहारा	" "
चीता छाल	" "	तिल	" "
हल्दी	" "	जौ	" "
दारुहल्दी	" "	विदारी	" "
त्रिफला	" "	गोखरु बीज	" "
रक्तशालि	" "	निशोथ	" "
पीपर	" "	शतावर	" "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर, दूगनी चीनी के चासनी में मिला; ५, ६ माशे का लड्डू बना रखे। मात्रा—१ लड्डू। अनुपान—धारोष्ण दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) त्रिफला	३ तोला	पाँचो नमक	५ तोला
श्वेत निशोथ	१ "	सोया	१ "
श्यामालता	" "	सौंठावच	" "
देवदारु	" "	कूठ	" "
सोंठ	" "	दालचीनी	" "
अजवाइन	" "	तेजपत्र	" "
अजमोदा	" "	छोटी लाची	" "
दारुहल्दी	" "	मुसब्बर	" "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा-१-६ माशा। अनुपान—शीतल जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) कज्जली	१ तोला	मोतीभस्म	१ तोला
स्वर्णभस्म	" "	लोहभस्म	" "
अभ्रक भस्म	" "		

इनको आँवला स्वरस के साथ खरल कर दस रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—धारोष्ण दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) पुनर्नवा क्वाथ	१२ सेर	दूध	४ सेर
घी	४ "	मुलेठी कल्क	१ "

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान ले। मात्रा—३-५ माशा। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

(६) श्रीखण्ड आसव 1-४ तोला

अनुपान—जल। २ मात्रा। भोजनोपरान्त।

(७) बृहत् धात्री तैल मर्दन करना।

R/

(८) मैग्नीसियम सल्फेट	(Magnesium Sulphate)	२५ ग्रेन
एसिड सल्फ डिल	(Acid Sulphuric Dil)	२० बूंद
पीपरमिण्ट जल	(Peppermint Water)	२ औंस

आमाशय प्रक्षालन कर ओषधि को प्रविष्ट करते हैं।

R/

(९) पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	२५ ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	२० "
टि० हायोसाइमस	(Tr Hyoscyamus)	" बूंद
एक्वा मेंथ पिप	(Aqua Menth Pip)	१ औंस

१ मात्रा।

तीव्र प्रलाप तथा अनिद्रा नाशक है।

नोट—यदि इस ओषधि से प्रथम मात्रा में ही प्रलाप शान्त न हो तो प्रत्येक २ घण्टे पर इसकी आधी मात्रा प्रविष्ट करते हैं।

R/

(१०) हायोसीन हाइड्रो ब्रोमाइड सूची (Hyoseine Hydro bromide Injection) त्वचागत

तीव्र आक्षेप तथा प्रलाप नाशक है।

R

(११) स्ट्रिक्नीन सूची (Strychnine Injection)

या

कोरामीन सूची (Coramine Injection)

या

कैम्फर इन ईथर सूची (Camphor in Ether injection)

हृदयावसाद नाशक हैं।

R/

(१२) इमेटीन हाइड्रोक्लोराइड (Emetine Hydrochloride) $\frac{1}{3}$ ग्रेन

त्वचागत। प्रत्येक दूसरे दिन। चिरकालिक मदात्यय की प्रधान ओषधि है।

R/

(१२) टिं० सिंकोना	(Tr. Cinchona)	२५ बूंद
टिं० कैप्सिकम	(Tr. Capsicum)	१२ "
स्पि० अमन० एरोमेट	(Spt. Ammon. Aromat)	२५ "
टिं० कार्ड० को०	(Tr. Card Co.)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस

नशे की चाट आने पर या प्रत्येक २ घण्टे पर समान जल के साथ।

R/

(१४) टिं० रिह्वाई को०	(Tr. Rhei Co.)	४५ बूंद
" कैप्सिकम	(Tr. Capsicum)	१२ "
" जेंशियन को०	(Tr. Gentian Co.)	४५ "
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट सिंकोना	(Liquid Ext. Cinchona)	१२ "
सोलुशन आफ एट्रोपीन सल्फ	(Solution of Atropine Sulph)	२ बूंद
सोलुशन आफ स्ट्रीक्नीन नाइट्रास	(Solution of StrychnineNitras)	२ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ ड्राम
क्लोरोफार्म जल	(Chloroform Water)	१ औंस

½ छ० जल के साथ।
प्रथम ४ वार फिर २ वार प्रतिदिन।
चिरकालिक मदात्यय नाशक है।

नोट—सोलुशन आफ एट्रोपीन सल्फ तथा स्ट्रिक्नीन नाइट्रास को १ औंस तरल में १ ग्रेन की मात्रा में औषधि घुला कर बनाते हैं।

R/

(१५) लाइकर सिंकोना कंसन्ट्रेटिस	(Liqr Cinchona Concentratis)	२५ बूंद
लाइकर जेंशियन को० कंसण्ट्रेटिस	(Liqr. Gentian Co. Concentratis)	८ बूंद
सोलुसन स्ट्रिक्नीन नाइट्रास (१ औंस में १ ग्रेन)	(Solution Strychnine Nitras)	१ बूंद
सोलुसन एट्रोपीन सल्फ (१ औंस में १ ग्रेन)	(Solution Atropine Sulph)	१ बूंद

ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

५ मात्रा । प्रत्येक ३ घण्टे पर ।
चिरकालिक मदात्यय नाशक है ।

पेटेण्ट ओषधियाँ—

गार्डनाल (Gardenal), सोनेरील (Soneryl), सोडियम गार्डनाल (Sodium Gardenal), ये प्रलाप नाशक हैं ।

क्षुद्र रोग

राजिका (Prikly Heat or Lichentropicus)

(१) हल्दी पत्र	१ तोला	पद्मकाष्ठ पत्र	१ तोला
दारुहल्दी पत्र	" "	केशर पत्र	" "
मुलेठी पत्र	" "	कैंथ पत्र	" "
लालचन्दन पत्र	" "	पाकड़ पत्र	" "
पुण्डरीक पत्र	" "	वड़ पत्र	" "
पद्म पुष्प प	" "		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे ।

तिल तैल	½ सेर	लुगदी	० सेर
दूध	२ "		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे ।
मर्दन करना ।
व्यंग, नीलिका, तिलकालक, राजिका तथा युवान पिडिका नाशक है ।

(२) कुंकुमाद्य तैल　　लेप करना ।

(३) छतिवन छाल	१ पल	नीम छाल	१ पल
अडूसा छाल	" "	जल	६४ सेर

१६ सेर जल शेष तक औटा कर छान ले ।

हल्दी	२ छटांक	इन्द्रजौ	१ छटांक
दारुहल्दी	" "	मजीठ	" "
हर्रा	१ "	जवाखार	२ "
आँवला	" "	खदिरकाष्ठ	१ "
बहेड़ा	" "	सेंधानमक	" "
त्रिकटु	३ "		

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे ।

तिल तैल	४ सेर	क्वाथ	१६ सेर
गोमूत्र	१६ "	लुगदी	० "

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
मर्दन करना।
पद्मिनी कण्टक, चिप्प, कदर, व्यंग, राजिका, नीलिका
तथा जाल गर्दभ नाशक है।

R/

(४) कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	२१ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मिनट तक चर्म पर लगा स्नान करे। राजिका नाशक है।

R/

(५) एसिड सैलिसिलिक	(Acid Salicylic)	१ ड्राम
रेक्टिफाइड स्पिरिट	(Rectified Spirit)	८ औंस

२ मिनट तक चर्म पर लगा स्नान करे।

R/

(६) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१ औंस
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ "
स्टार्च	(Starch)	१ "

स्नानोत्तर शरीर शुष्क कर चर्म पर मलना।

R/

(७) सब्लिमेट	(Sublimate)	½ ग्रेन
जल	(Water)	१ औंस

चर्म पर मलना।

R/

(८) एसिड कार्बोलिक	(Acid Carbolic)	१ ड्राम
कैम्फर	(Camphor)	२ "
ग्लिसरीन	(Glycerine)	४ "
जल	(Water)	८ औंस

शरीर पर मर्दन करना।

विस्फोट (Pemphigus)

(१) दशमूल	२॥ माशा	रास्ना	२॥ माशा
दारुहल्दी	" "	खस	" "

धमासा	२॥ माशा	गुरुच	२॥ माशा
धनियाँ	" "	नागरमोथा	" "
जल	१ पाव		

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२)

द्राक्षा	३ माशा	खजूर	३ माशा	परवर	३ माशा
नीम	३ "	अडूसा	३ "	कुटकी	३ "
धमासा	३ "	जल	१ पाव		

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर मिश्री मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(३)

चिरायता	२ माशा	नीम	२ माशा
मुलेठी	२ "	नागरमोथा	२ "
अडूसा	२ "	परवर का पत्ता	२ "
पित्तपापड़ा	२ "	खस	२ "
त्रिफला	२ "	इन्द्रजौ	२ "

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(४)

लालचन्दन	१ तोला	लोध्र	१ तोला	कमल	१ तोला
खस	१ "	दोनों सारिवा	२ तोला		

इन्हें जल के साथ पीस शरीर पर लेप करना। विस्फोट के दाह को नष्ट करती है।

(५)

कमल	१ तोला	मुलेठी	१ तोला	लोध्र	१ तोला
नागकेशर	१ "	बायविडंग	१ "	हल्दी	१ "
दारुहल्दी	१ "	तगर	१ "	कूठ	१ "
इलायची	१ "	तेजपत्र	१ "	नीलाथोथा	१ "
राल	१ "				

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी	५२ तोला	जल	२०८ तोला	लुगदी	० तोला

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। विस्फोट पर लगाते है।

(६)

कबीला	१ तोला	बेल गिरी	१ तोला	नीम	१ तोला
मोथा	१ "	प्रियंगु फूल	१ "	लोध्र	१ "
त्रिफला	१ "	खरेटी	१ "	कूड़ा छाल	१ "
राल	१ "	अगर	१ "	खैरसार	१ "
धाय फूल	१ "	चन्दन	१ "		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तेल ५६ तोला जल २२४ तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। मर्दन करना।

R/

(७) लाइक्वर आर्सेनिकलिस हाइड्रोक्लोर (Liqr. Arsenicalis Hydrochlor) २ बूंद
मैगसल्फ (Magsulph) १½ ड्राम
जल (Aqua) १ औंस

३ मात्रा।

R/

(८) टिनाक्सील गोली (Tinoxil) १ गोली

३ मात्रा

R/

(९) सिबेजाल (Cibazol) १ गोली
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन

३, ४ मात्रा।

R/

(१०) सिबेजाल मलहम (Cibazol oint).

विस्फोट पर लगाना।

सूची—

प्रोटीन (Protein), आटोहीमो थिरेपी (Autohaemotherapy)।

कदर (Corns)

R/

(१) एसिड सैलिसिलिक प्लास्टर (Acid Salicylic Plaster) १०–२०%

स्थानिक व्यवहार।

R/

(२) कोलोडियन सैलिसिलिक एसिड (Collodion Salicylic Acid)

स्थानिक व्यवहार।

(३) शस्त्रकर्म करना।

अलस (Chilblain)

R/

(१) कैल्सियम लैक्टेट (Calcium Lactate) ५, १५ ग्रेन

३ मात्रा

नोट—प्रथम सप्ताह में ५ ग्रेन, द्वितीय सप्ताह में १० ग्रेन तथा तृतीय सप्ताह में १५ ग्रेन खिलाते हैं।

R/

(२) कॉड लिवर आयल	(Cod Liver oil)	१ चिमच

दूध के साथ। २ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(३) कस्टिक पोटाश	(Caustic Potash)	½ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	४२ ”
अल्कोहल	(Alcohol)	५ ”
जल	(Aqua)	६० ”

गरम जल से अवयव का प्रक्षालन कर पुंछे लगाना।

R/

(४) इक्थ्याल	(Ichthyol)	१२० ग्रेन
लैनोलीन	(Lanolin)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार करना।

R/

(५) टिं. आयोडीन	(Tr. Iodine)

स्थानिक व्यवहार करना।

R/

(६) लिनिमेण्ट एकोनाइट	(Liniment Aconite)	१० ड्राम
लिनिमेण्ट बेलाडोना	(Liniment Belladonna)	” ”
टिं० ओपियाई	(Tr opii)	३ ”
लिनिमेण्ट सपोनिस	(Liniment Saponis)	२ औंस

वेदना पूर्ण स्थान पर लगाना। प्रातः तथा रात्रि।

R/

(७) थायरायड गोली	(Thyroid Tabts)	½–१ ग्रेन

२ मात्रा

R/

(८) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली

सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन

३, ४ मात्रा। शोथ व पूय नाशक है।

R/

(६) कैल्सियम ग्लुकोनेट सूची (Calcium Gluconate)

१० % १० सी०सी०। शिरागत।

दारुणक (Pityriasis Capitis)

(१) मालती पत्र ४ तोला चीता मूल ४ तोला
कनेर जड़ ,, ,, डहर करंज बीज ,, ,,

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल १ सेर लुगदी ०
जल ४ ,,

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। मर्दन करना। दाक तथा दारुणक रोग नाशक है।

R/

(२) सैलिसिलिक एसिड (Salicylic Acid) २५ ग्रेन
वैसलीन (Vaseline) १ औंस

रोगी को रात्री में पाट० परमाग्नेट जल (Pot Permangnate water) से स्नान कर शरीर को शुष्क कर मलना।

सिध्म (Pityriasis Vesiculor)

(१) केशर ४ तोला दारुहल्दी ४ तोला
हल्दी ,, ,, पीपर ,, ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी १ सेर लुगदी ०
चीतामूल क्वाथ ४ ,,

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। मात्रा-१ तो०। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायकाल। नस्य तथा मर्दन भी करते हैं।

R/

(२) सोडा हाइपोफास्फेट (Soda Hypophosphate) १० ग्रेन

सैलिसिलिक एसिड	(Salicylic Acid)	५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

सिध्म पर लगाते हैं।

R/

(३) सैलिसिलिक एसिड	(Salicylic Acid)	२५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

सिध्म पर लगाना।

चिप्प (Onychia)

R/

(१) सप्तच्छदादि तैल — चिप्प पर लगाना।

R/

(२) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१० ग्रेन
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide)	१ गोली
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

पूय युक्त चिप्प पर लगाना।

R/

(३) सिबेसाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Sodabicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा। पूय नाशक है।

R/

(४) यलो आक्साइड आफ मर्करी	(Yellow Oxide of Mercury)	१५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

फिरंग जन्य चिप्प पर लगाना।

R/

(५) न्यूसालवर्सन सूची (Neosalvarsan inj) शिरागत

फिरंग जन्य चिप्पनाशक है।

अरुंषिका:(Eczema of the Face or scalp)

(१) हल्दी	१ पल	दारुहल्दी	१ पल
चिरायता	१ ”	त्रिफला	१ ”
नीम छाल	१ ”		
लालचन्दन	१ ”		

इनको जल के साथ पीस गद्दी बनावे।

सरसों का तैल ४ सेर जल १६ सेर लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। मस्तक पर मर्दन करना।

R/

(२) हाइड्रार्ज अमोनियटा	(Hydrarg Ammoniata)	१० ग्रेन
लाइकर कर्बोनिस डिटर्जेण्ट	(Liqr. Carbonis Deterg.)	२० बूंद
लैनोलीन	(Lanoline)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार करना।

R/

(३) लाइकर कार्बोनिस डिटर्जेण्ट	(Liqr. Carbonis Deterg.)	२ ड्राम
लाइकर प्लम्बाई सबएसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	२ ,,
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	३ ,,
जल	(Aqua)	६ औंस

स्थानिक व्यवहार करना।

R/

(४) कैल्सिब्रनेट सूची (Calcibronate inj) मांसगत।

R/

(५) विटामिन बी गोली (Vitamin B. tabts) १ गोली

३ मात्रा

इन्द्रलुप्त (Alopecia)

(१) मुलेठी ८ तोला आँवला ८ तोला

जल के साथ पीस लुगदी बनाना।

तिल तैल १ सेर दूध ४ सेर लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। नस्य देना

तथा शिर में मर्दन करना।

केश उदय होता है।

R/

(२) लैक्टिक एसिड	(Lactic Acid)	३० ग्रेन
कैस्टर आयल	(Castor Oil)	½ औंस
स्पिरिट	(Spirit)	½ ,,

इन्द्रलुप्त पर लगाना।

R/

(३) सल्फर	(Sulphur)	२५ ग्रेन
एसिड सैलिसिलिक	(Acid Salicylic)	२५ "
लार्ड	(Lard)	१ औंस

इन्द्रलुप्त पर लगाना।

R/

(४) क्रिसोरोबिन	(Crysorobin)	२५ ग्रेन
ग्लिसरीन	(Glycerine)	½ औंस
क्लोरोफार्म	(Choroform)	½ "

स्थानिक उपयोग करना।

नोट—मुख मण्डल पर नहीं लगाना चाहिये।

गंजत्व (Baldness)

R/

(१) यूरेसोल	(Euresol)	१ ड्राम
हाइड्रार्ज परक्लोराइड	(Hydrarg Perchloride)	२ ग्रेन
आयल रिसिनि	(Oil Ricini)	१ ड्राम
स्पि० वाइनी रेक्टिफाइड	(Spt. Vini Rectified)	४ औंस

बाल हीन शुष्क स्थान पर लगाते हैं।

R/

(२) रीसार्सिन	(Resorcine)	१॥ ड्राम
हाइड्रार्ज परक्लोराइड	(Hydrarg Perchloride)	१½ ग्रेन
एसीटोन	(Acetone)	१ औंस
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spirit Rectified)	६ औंस

आर्द्र गंजा स्थान पर लगाना। बालोत्पादक है।

R/

(३) टि० कैंथराइडिस	(Tr. Cantharidis)	२ औंस
एसीटिक एसिड फोर्ट	(Acetic Acid Fort)	१ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	४ "
स्पि० रोस्मेरी	(Spt Rosmary)	१ औंस

गुलाब जल	(Rose Water)	८ औंस

स्थानिक व्यवहार करना।
बालोत्पादक है।

R/

(४) टिं० कैंथराइडिस	(Tr. Cantharidis)	१ औंस
" जेबोरेण्डिस	(Tr. Jaborandis)	" "
लिनिमेण्ट सैपोनिस	(Lint Saponis)	४ "

स्थानिक व्यवहार करना। दिन में १ बार।
बालोत्पादक है।

R/

(५) पिलोकार्पिन हाइड्रोक्लोराइड	(Pilocarpine Hydrochloride)	८ ग्रेन
सेण्टल आयल	(Santol Oil)	१० बूंद
टिं० कैंथराइडिस	(Tr. Cantharidis)	४ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	" "
स्पि० सैकेरि	(Spt Sacchari)	" "
" कैम्फर	(" Camphor)	" "
" वाइनी रेक्टीफाइड	(" Vini Rectified)	४ औंस

स्थानिक व्यवहार करना।
बालोत्पादक है।

R/

(६) सैलिसिलिक एसिड	(Salicylic Acid)	१० ग्रेन
बेटानेफ्थलिस	(Betanephtholis)	२० "
प्रेसिपिटेट सलफर	(Precepitate Sulphur)	१ ड्राम
वेसलिन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार करना।

R/

(७) रोज आयल	(Rose oil)	२ बूंद
हाइड्राजंपरक्लोर	(Hydrarg Perchlor)	१२ ग्रेन
रेक्टिफाइडस्पिरिट	(Rectified spirit)	३ औंस
ग्लीसरीन	(Glycerine)	३ ड्राम
जल	(Aqua)	६ औंस

बालों के जड़ों में मलना।
प्रातः तथा रात्रि में।

R/

(८) टिं० कँथराइडिस	(Tr. Cantharidis)	२ ड्राम
टेनिन	(Tannin)	८ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ औंस
अल्कोहल	(Alcohol)	४ "
जल	(Aqua)	१ "

बालों के मूलों में मलना।

R/

(९) एसीटिक एसिड	(Acetic Acid)	८ बूंद
टिं० कंथराइडिस	(Tr. cantharidis)	२ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ "
स्पि० रोस्मेरी	(Spt. Rosmary)	१ "
गुलाप जल	(Aqua Rosae)	१ औंस

बालों के मूलों में मलना।
प्रातः तथा रात्रि में।

डैण्ड्रफ (Dandruft)

R/

(१) सेलिसिलिक एसिड	(Salicylic Acid)	२० ग्रेन
प्रेसीपिटेड सल्फर	(Precipited sulphur)	२० "
पेराफीन	(Paraffin)	१ औंस

मस्तक को साफ कर लगाते हैं।

R/

(२) थियोब्रोम आयल	(Theobrom oil)	४ ड्राम
प्रेसिपिटेड सल्फर	(Precipited Sulphur)	३ "
रिसिनि आयल	(Ricini oil)	६ "

मस्तक को साफ कर लगाते हैं।

न्यच्छ (Navi)

(१) पीली झिण्टी	१२॥ सेर	जल	६४॥ सेर

१६ सेर जल शेष रहने तक औटा छान ले।

मौरीबछाल	१२॥ सेर	जल	६४ सेर

१६ सेर जल शेष रहने तक औटा छान ले।

पीपरामूल	२ छटांक	जवाखार	१ छटांक
चीतामूल	१ ”	सज्जीखार	” ”
चाभ	” ”	सोहागा	” ”
सोंठ	” ”	मटिया सिंदूर	” ”
बायविडंग	” ”	गेरू मिट्टी	” ”
पांचों नमक	५ ”		

इनको जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी	४ सेर	लुगदी	० सेर
दोनों क्काथ	३२ ”		

घी मात्र शेष रहने तक पाक कर छान रखे।

मर्दन करना।

न्यच्छ, नीलिका, तिलकालक, पाददरी तथा पीलिका नाशक है।

R/

(१) कार्बोनिक एसिड स्नो (Carbonic Acid Snow)

छोटे न्यच्छ पर व्यवहृत होता है।

(२) दग्ध करना।

मुखदूषिका (Acne vulgaris)

R/

(१) एक्नी तथा स्टैफिलोकोकस वैक्सीन (Acne and Staphylococcus Vaccine)

त्वचागत।

R/

(२) विटामिन बी काम्प्लेक्स (Vita. B. Complex) १ गोली

३ मात्रा।

R/

(३) सिबेजाल (Cibazol) १ गोली

सोडाबाईकार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन

३, ४ मात्रा। पूय नाशक है।

R/

(४) प्रोटीन सूची (Protein inj) ५, १० सी० सी०

मांस गत।

पाददरी (Phagades)

(१) सहचर घृत — पाददरी पर लगाना।
(२) मोम लगाना।

वल्मिकी (Actymonycosis)

R/
(१) टि० आयोडीन (Tr. Iodine) — स्थानिक व्यवहार करते हैं।
(२) अंगच्छेदन (Amputation) — अधिक दूरी में रहने वाली वल्मिकी की चिकित्सा है।

माष (Mole)

(१) काट कर निकाल देना।

जतुमणि (Molluscum)

(१) काट कर निकाल देना।

विचर्चिका (Phagades)

(१) डहरकरज	२ छटांक	चीतामूल	२ छटांक
छतिवन छाल	” ”	भीमराज	” ”
ईशलांगला	” ”	हल्दी	” ”
सेहुण्ड	१ ”	मीठा विष	” ”
मदार दूध	” ”		

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों का तैल	४ सेर	लुगदी	०
गोमूत्र	१६ ”		

तैल मात्र शेष तक पाक कर छान रखे। स्थानिक व्यवहार। विचर्चिका, विस्फोट तथा विसर्प नाशक है।

पामा (Eczema)

(१) हल्दी का कल्क १ छटांक मदार के पत्ते का रस ४ छटांक
सरसों का तैल ४ ,,

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान स्थानिक व्यवहार करना। पामा, कच्छु और विचर्चिका नाशक है।

(२) अडूसे का पत्ता १ तोला हल्दी १ तोला

गोमूत्र में पीस स्थानिक लेप करना।

(३) महासिन्दूरादि तल स्थानिक व्यवहार करना।
(४) सोमराजी तैल ,, ,, ,,
(५) कन्दर्पसार तैल ,, ,, ,,
(६) महामरिच्यादि तैल ,, ,, ,,
(७) मरिच्यादि तैल स्थानिक व्यवहार करना।

R/

(८) कैलेमाइन	(Calamine)	४ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ ,,
गुलाबजल	(Aqua Rosae)	८ औंस

मुखमण्डल के पामा पर लगाना। क्षोभ तथा दाह नाशक है।

R/

(९) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ड्राम
जिंक कार्ब	(Zinc Carb)	२ ,,
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ ,,
लाइकर कैलिसस	(Liqr. Calcis)	६ औंस

कपड़े पर लगा पामा पर रखना। क्षोभ तथा दाह नाशक है।

R/

(१०) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२ ड्राम
पल्व एमाइल	(Pulv. Amyle)	२ ,,
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार। स्राव को बंद कर पामा नाशक है।

R/

(११) लाइकर प्लम्बाई सब एसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	२० औंस

कपड़ा भिगो शाखाओं के पामा पर रखना। स्राव तथा दाह नाशक है।

R/

(१२) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	३ ड्राम
लाइकर प्लम्बाई सबएसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	२ "
लाइकर कार्बोनिस डिटर्जेण्टिस	(Liqr. Carbonis Detergentis)	२ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ "
जल	(Aqua)	४ औंस

स्थानिक व्यवहार करते हैं। स्राव, वेदना तथा कण्डू नाशक है।

R/

(१३) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ औंस
एडिपिस लैनी	(Adipis Lanae)	२ ड्राम
ओलिव आयल	(Olive Oil)	१ औंस
लाइकर कैल्सिस	(Liqr Calcis)	२ "

स्राव बंद हो जाने पर इसको लगाते हैं।

R/

(१४) सैलिसिलिक एसिड	(Salicylic Acid)	१० ग्रेन
एमाइल	(Amyle)	२ ड्राम
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२ "
पेट्रोलेटि	(Petrolate)	४ "

स्राव बंद होने पर इसको लगाते हैं।

R/

(१५) हाइड्रार्ज अमन	(Hydrarg Ammon)	१ ड्राम
एमाइल	(Amyle)	२ "
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२ "

लैनोलीन	(Lanoline)	३ औंस

स्थानिक व्यवहार।
पूय युक्त पामा नाशक है।

R/

(१६) एसिड सैलिसिलिक	(Acid Salicylic)	१० ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२ ड्राम
रीसार्सिन	(Resorcin)	१० ग्रेन
एमाइल	(Amyle)	२ ड्राम
इक्थ्याल	(Ichthyol)	३० ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	½ औंस

स्थानिक व्यवहार।
पामा के स्राव का नाशक है।

R/

(१७) प्लम्बाई सबएसीटेट	(Plumbi Subacetate)	१ ड्राम
पैराफिन मोल	(Paraffin Moll)	१ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ "

स्थानिक व्यवहार।
क्षोभ नाशक है।

R/

(१८) हाइड्रार्ज अमोनिएटा	(Hydrarg Ammoniata)	४० ग्रेन
लाइकर प्लम्बाई फोर्ट	(Liqr. Plumbi Fort)	१ ड्राम
लाइकर कार्बोनिस डीटर्जेण्ट	(Liqr. Carbonis Detergent)	२ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस
लैनोलीन	(Lanoline)	" "

स्थानिक व्यवहार।
चिरकालिक पामा नाशक है।

R/

(१९) जीलेटीन	(Gelatin)	२० ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१२ "
इक्थ्याल	(Ichthyol)	५ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२० "

जल	(Water)	१ ड्राम

पामा पर एक दिन लगा २-३ दिन तक लगाये रहते हैं। खुरण्ड युक्त पामा नाशक है।

R/

(२०) पल्व कैम्फर	(Pulv. Camphor)	८ ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ड्राम
एडिपिस बेंजोएटस	(Adipis Benzoats)	१औंस

भग के पामा पर लगाना।

R/

(२१) कैल्सिब्रूनेट सूची	(Calcibronate inj)	मांसगत।

R/

(२२) जिंक क्रीम	(Zinc Cream)

स्राव बन्द होने पर स्थानिक व्यवहार करते हैं।

दद्रु (Ring worm)

(१) मुर्दाशंख	१ गोल	मरीच	१ गोल
गन्धक	" "	सफेद खैर	" "
नौसादर	" "	अफीम	" "
सोहागा	" "	चीनिया गोंद	" "
माजूफल	" "		

जल के साथ पीस गोली बना रखे। नीबू के रस में घिस लगावे।

(२) तूतिया का कपड़छान चूर्ण	१ रत्ती	मोम	१॥ तोला
माजूफल का कपड़छान चूर्ण	३० "	मधु	" "

इनका मलहम बना लगाना। पुराने से पुराना दद्रु नाशक है।

(३) राल	१ तोला	भुना सोहागा	१ तोला
गन्धक	" "	फिटकिरी	" "

एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। घी में मिला कर लगाना।

(४) लोबिया	१ तोला	सोहागा	१ तोला
गन्धक	" "	चकवड़ बीज	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर चकवड़ के रस में खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे। नीबू के रस में घिस प्रत्येक दूसरे दिन लगावे। ३ वार लगाने में दद्रु नष्ट होते हैं।

R/

(५) क्राइसोफेनिक एसिड	(Crysophanic Acid)	२० ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक उपयोग। निश्चित ही दद्रु नाशक है।

R/

(६) एसिड सेलिसिलेट	(Acid Salicylate)	२० ग्रेन
हाइड्राजं अमोनिएटा	(Hydrarg Ammoniata)	½ ड्राम
लैनोलीन	(Lanoline)	" औंस
वैसलीन	(Vaseline)	" "

स्थानिक उपयोग। २ वार।

R/

(७) क्रिसेरोबिन	(Chrysarobin)	१ ड्राम
एडिपिस बेंजोएन	(Adipis Benzoan)	१ औंस

स्थानिक उपयोग। चिरकालिक दद्रु नाशक है।

कण्डू (Scabies)

(१) नीम की कोपल	१ तोला	जल	१ छटाँक

एकत्र पीस १५ दिनों तक दूध के साथ पीना। प्रातःकाल।

(२) कड़ुवा चिरायता	४ माशा	शाहतरा	४ माशा
जंगहरड़	" "		

चूर्णकर सायंकाल जल में भिगो प्रातःकाल छान कर पिलावे। फोड़ा युक्त कण्डू नाशक है।

(३) शुद्ध आँवलासार गंधक	४ माशा	बावची	४ माशा

आमाहल्दी	४ माशा	शाहतरा	४ माशा

चूर्णकर सायंकाल जल में भिगो प्रातःकाल छान रोगी को पिलावे। तथा तलछुट को सरसों के तैल में पीस शरीर पर मलकर गरम जल से स्नान करावे। शुष्क कण्डू नाशक है।

(४) हरी तूतिया	४ माशा	कवीला	८ माशा
सुर्ती	" "	सफेद चीनी	१६ "

इनको एकत्र पीस सरसों के तैल में मिला शरीर पर लगाना।

(५) तूतिया	१ माशा	वन्दूक की वारूद	३ माशा
पारद	" "	घी	१२ "
मरीच	" "		

एकत्र मिला कण्डू स्थान पर मल २ घण्टे वाद साबुन से स्नान करना।

(६) हरी तूतिया	१० माशा	कपूर	१० माशा
आँवलासार गन्धक	" "	शतधौत गोघृत	१ छ०

एकत्र मिला शरीर पर मल एक घण्टे वाद स्नान करे। कण्डू नाशन में सर्वश्रेष्ठ है।

(७) मरीच्यादि तैल — शरीर में मर्दन कर स्नान करना।

R/

(८) सल्फर	(Sulphur)	२५ ग्रेन
कार्बोनेट आफ पोटाश	(Cerbonate of Potash)	५० "
लार्ड	(Lard)	९ ड्राम

स्थानिक उपयोग।

R/

(९) सल्फर	(Sulphur)	२५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक उपयोग।

R/

(१०) पीरु वाल्जम	(Peru Balsam)	३ भाग
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ "

स्थानिक उपयोग।

R/

(११) टिनाक्सील गोली (Tinoxil Tablet) १ गोली

३ मात्रा।

R/

(१२) स्कैबियोल (Scabiol) कण्डु पर लगाना।

R/

(१३) क्रीयोजोट (Creosote) १० बूंद

सल्फर (Sulphur) ८० ग्रेन

एडिपिस बेंजोएट (Adipis Benzoat) ४ ड्राम

बाल्जम पीरु (Balsam Peru) ४० ग्रेन

ग्लीसरीन (Glycerine) १ औंस

शरीर पर मल कर ४ घण्टे पश्चात् साबुन से स्नान करे।

३ दिन में कण्डु नष्ट होता है।

सोरिएसिस (Psoriasis)

R/

(१) लाइकर आर्सेनिक हाइड्रोक्लोर (Liqr Arsenic Hydrochlor) २ बूंद

वाइनम एण्टीमोनियल (Vinum Antimonial) ८ "

जल (Aqua) १ औंस

३ मात्रा।

R/

(२) क्रीसेरोबिन (Chrysarobin) २५ ग्रेन

वैसलीन (Vaseline) १ औंस

पीड़िकाओं पर लगाना।

दिन में २ बार।

R/

(३) रीसार्सिन (Resorcin) २० ग्रेन

लार्ड (Lard) १ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(४) एसिड सलिसिलिक (Acid Salicylic) १ ग्रेन

क्रीसेरोबिन (Chrysarobin) २ ड्राम

ग्रीन सोप	(Green Soap)	२ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	२ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(५) अन्वेण्टम हाइड्रार्ज एमोनिएटा (Ung. Hydrarg Ammoniata)

शिर तथा ग्रीवा पर लगाते है।

R/

(६) एनीसोल (Enesol)

मांसगत।

लुपस (Lupus)

R/

(१) कैलेमाइन	(Calamine)	३ ड्राम
बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१ "
जिंक आक्साइड	(Znic Oxide)	४ "
जल	(Aqua)	४ औंस

स्थानिक व्यवहार करते हैं।

R/

(२) जिंक सल्फेट	(Zinc Sulphate)	½ ड्राम
पाट० सल्फुरेट	(Pot. Sulphurate)	½ "
जल	(Aqua)	४ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(३) एसिड आर्सेनिक	(Acid Arsenic)	१० ग्रेन
हाइड्रार्ज सल्फ रुब्री	(Hydrarg Sulph Rubri)	½ ड्राम
अन्वेण्टम रोज	(Ung. Rose)	½ औंस

स्थानिक व्यवहार। अत्युत्तम है।

R/

(४) एसिड सैलिसिलिक	(Acid Salicylic)	४५ ग्रेन
सैपोनिस विरिडिस	(Saponis Viridis)	४५ "
कोलोडीयन फ्लेक्स	(Collodion Flex)	७ ड्राम

स्थानिक व्यवहार।

R/

(५) इक्थ्याल	(Ichthyol)	२ ड्राम
कोलोडियन	(Collodion)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार ।

R/

(६) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२ ड्राम
पल्व एमाइल	(Pulv. Amyle)	२ "
एसिड सैलिसिलिक	(Acid Salicylic)	२० ग्रेन
इक्थ्याल	(Ichthyol)	२० बूंद
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार ।

टिनिया क्रुरिस (Tinea cruris)

R/

(१) रीसार्सिन	(Resorcin)	१ ड्राम
सैलिसिलिक एसिड	(Salicylic Acid)	१ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	४ ड्राम
लैनोलिन	(Lanolin)	४ "

स्थानिक व्यवहार । नवीन व्याधि नाशक है ।

R/

(२) क्रीसेरोबिन	(Chrysarobin)	२० ग्रेन
जिंक	(Zinc)	२० "
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार ।
तीव्र व्याधिनाशक है ।

R/

(३) टि० आयोडीन (Tr. Iodine) स्थानिक व्यवहार ।
तात्कालिक व्याधि नाशक है ।

साइकोसिस (Sycosis)

R/

(१) कैलोमल	(Calomel)	१५ ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	४५ "

पेट्रोलियम	(Petroleum)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(२) सेलिसिलिक एसिड	(Salicylic Acid)	७ ग्रेन
रीसार्सिन	(Resorcin)	१२ "
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२॥ ड्राम
पेट्रोलियन	(Petroleum)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(३) काडलिवर आयल	(Cod Liver oil)	१ चिम्मच

प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(४) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२ ग्रेन

४ मात्रा।

पूय नाशक है।

कक्षा (Herpes Zoster)

R/

(१) एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext. Nux Vomica)	½ ग्रेन
जिंक फास्फाइड	(Zinc Phosphide)	⅙ "
एक्स्ट्रैक्ट जेंशियन	(Ext. Gentian)	२ "

१ गोली।

वेदना शान्ति तक प्रत्येक ३ घंटे पर।

R/

(२) सोडा सैलिसिलास	(Soda Salicylas)	१० ग्रेन
फेनाजोन	(Phenazone)	" "
एस्पिरिन	(Aspirin)	५ "
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम
टि० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

वेदना शामक है।

R/

(३) सोडा बाईकार्व	(Soda Bicarb)	३ ड्राम
क्रीटा प्रीपेयरेटा	(Creta Praeparata)	२ "
टाक	(Talc')	३ "
मार्फीन सल्फेट	(Morphine Sulphate)	२० ग्रेन

फफोले पर छिड़क रूई रख बाँध देते हैं।

R/

(४) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाईकार्व	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन
		३ मात्रा

फफोले का पूय नाशक है।

R/

(५) हाइड्रार्ज अमोनिएटा	(Hydrarg Ammoniata)	५ ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Okide)	½ औंस
वैसलीन	(Vaseline)	" "

पूययुक्त क्षत पर लगाते हैं।

R/

(६) इथिल क्लोराइड (Ethyl chloride)

वेदनापूर्ण स्थान पर छिड़कना। वेदना शामक है।

R/

(७) मार्फीन एट एट्रोपीन सूची (Morphine et Atropine inj) त्वचागत। वेदना शामक है।

इम्पेटिगो काण्टेजिओसा (Impetigo Contagiosa)

R/

(१) हाइड्रार्ज बाईक्लोराइड	(Hydrarg Bichloride)	१ ग्रेन
स्पि० रेक्टीफाइड	(Spt. Rectified)	१ औंस
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	४ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(२) जिंक आक्साइड	(Zinc oxide)	२ ड्राम
एमाइल	(Amyle)	" "

हाइड्रार्ज एमोनिएटा	(Hydrarg Ammoniata)	१२ ग्रेन
पेट्रोलियम	(Petroleum)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(३) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ औंस
हाइड्रार्ज एमोनिएटा	(Hydrarg Ammoniata)	५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(४) हाइड्रार्ज एमोनिएटा	(Hydrarg Ammoniata)	५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(५) रीसार्सिन	(Resorcin)	१० ग्रेन
लैनोलीन	(Lanolin)	१ औंस
वैसलीन	(Vaseline)	,, ,,

मुख मण्डल पर लगाते हैं।

R/

(६) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाई कार्बकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३, ४ मात्रा।

पूय नाशक है।

सूची—

प्रोटीन (Protein), आटोहीमोथिरेपी (Autohaemotherapy),

त्वगार्बुद (Wart)

R/

(१) एसिड सैलिसिलिक	(Acid Salicylic)	१० ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट कैनेबिस इण्डिका	(Ext. Cannabis Indica)	१ ,,
कोलायड फ्लेक्स	(Colloid Flex)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार।

दिन में २ बार।

R/

(२) नाइट्रिक एसिड (Nitric Acid)

दग्ध करते हैं ।

मण्डल (Wheals)

शीतपीत्त (Urticaria) की चिकित्सा देखिये ?

उत्कोठ (Allergy)

शीतपित्त (Urticaria) की चिकित्सा देखिये ?

किलास (Leucoderma)

(१) कत्था	१ तोला	जल	१ पात्र
आँवला चूर्ण	,, ,,		

इनका क्वाथ करे । ½ छटाँक जल शेष रहते छान १ तोला वाकुची चूर्ण मिला रोगी को पिलावे । प्रातः तथा सायंकाल ।

(२) वाकुची बीज	१६ तोला	मैनसिल	६ माशा
हरताल	४ ,,	चीताजड़	,, ,,

गोमूत्र के साथ पास लेप करना ।

(३) चमेली	१ तोला	गोरोचन	१ तोला
मैनसिल	,, ,,	अमलतास	,, ,,
वायविडंग	,, ,,	सेंधानमक	,, ,,
कासीस	,, ,,		

गोमूत्र के साथ पीस लेप करना ।

(४) सेहुण्ड	१ तोला	दुर्गन्ध करंज	१ तोला
मदार	,, ,,	धतूर का हरा पत्ता	,, ,,
चमेली	,, ,,		

गोमूत्र के साथ पीस लेप करना ।

(५) ब्राह्मी	१ तोला	सेंधानमक	१ तोला
लहसुन	,, ,,	चीता जड़	,, ,,

गोमूत्र के साथ पीस लेप करे ।

(६) चिरचीरी भस्म	१ तोला	मैनसिल	१ तोला

जल के साथ पीस लेप करे ।

(७) कालातिल	१ तोला	बाकुची	१ तोला
रसौत	,, ,,	आँवला	,, ,,

आँगरे के रस में पीस लेप करना।

(८) बावची	२ तोला

जल के साथ पीस लेप करना।

नोट—शेष चिकित्सा कुष्ठवत होती है।

विसर्प (Erysipelas)

(१) सीरीष छाल	६ माशा	हल्दी	६ माशा
मुलेठी	,, ,,	दारुहल्दी	,, ,,
तगर	,, ,,	कूठ	,, ,,
लाल चन्दन	,, ,,	सुगन्धवाला	,, ,,
इलायची	,, ,,	बालछुरिला	,, ,,

जल के साथ पीस घी मिला लेप करना।
दाह, शोथ और ज्वर नाशक है।

(२) पद्माख	१ तोला	मुलेठी	१ तोला
खस	,, ,,		

जल के साथ पीस लेप करना।

(३) बड़छाल	१ तोला	गूलरछाल	१ तोला
पीपलछाल	,, ,,	पारीषछाल	,, ,,
पाकड़छाल	,, ,,		

जल के साथ पीस लेप करना

(४) शुद्ध आँवलासार गन्धक	१ तोला	रसकपुर	६ माशा
फिटकिरी	,, ,,		

इसे १०८ बार धोये घी में मिला लेप करे।

(५) चन्दन चूर्ण	१ तोला	गोघृत	½ छटाँक
कपूर	½ छटाँक		

एकत्र मिला लेप करना।

(६) चिरायता	३ माशा	त्रिफला	३ माशा
अडूसा	,, ,,	नीम	,, ,,
कुटकी	,, ,,	चन्दन	,, ,,
परवर	,, ,,	जल	१ पाव

क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
सोपद्रव विसर्प नाशक है।

(७) गुरुच	३ माशा	त्रिफला	३ माशा
अडूसापत्र	” ”	खैरसार	” ”
परवरपत्र	” ”	अमलतास का गुदा	” ”
निम्बछाल	” ”	जल	१ पाव

क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान
६ माशा शुद्ध गुगुल मिला पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।

(८) डहर करंज	२ तोला	चीता	२ तोला
छतिवन	” ”	भांगरा	” ”
कलिहारी	” ”	हल्दी	” ”
सेहुण्ड दूध	” ”	वत्सनाभ विष	” ”
मदार दूध	” ”		

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों तैल	७२ तोला	लुगदी	० तोला
गोमूत्र	२८८ ”		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
मर्दन करते हैं।

(९) एरण्ड जड़	२ तोला	चकवड़	२ तोला
कड़वी तुम्बी	” ”	कड़वी तर	” ”
नीम	” ”	अंकोल	” ”
वावची	” ”	एरण्ड बीज	” ”

कपड़छान चूर्ण कर क्रमशः गोमूत्र, दही, दूध,
तिल तैल, तथा बकरी के मूत्र में खरल कर
पाताल यन्त्र द्वारा तैल निकाल मर्दन करे।
यह रामवाण है।

(१०) परवरपत्र	४ छटांक	अडूस छाल	२ छटांक
छतिवन छाल	२ ”	गुरुच छाल	” ”
नीम छाल	” ”	जल	१६ सेर

४ सेर जल शेष रहने तक क्वाथ कर छान लेवे।

घी	१ सेर	त्रिफला की लुगदी	१ पाव
क्वाथ	४ ”		

घृतमात्र शेष तक पाक कर छान रखे। मात्रा—६ माशा।
अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(११) लाइकर प्लम्बाई सब एसीटेटिस फोर्ट	(Liqr. Plumbi sub acetatis Fort)	१ड्राम
जल	(Water)	२० औंस

कपड़ा भिंगो विसर्प पर लगाना। दाह तथा कण्डू नाशक है।

R/

(१२) इक्थ्याल (Ichthyol) विसर्पपर लगाना।

R/

(१३) इक्थ्याल	(Ichthyol)	१२५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

विसर्प पर लगाना।

R/

(१४) हाइड्राज परक्लोर	(Hydrarg Perchlor)	१/२ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

स्थानिक व्यवहार।

R/

(१५) इक्थ्याल	(Ichthyol)	२५ ग्रेन
रीसार्सिन	(Resorcin)	२५ "
अन्वेण्टम हाइड्राजं	(Ung. Hydrarg)	३ ड्राम
लैनोलिन	(Lanolin)	४ "

स्थानिक व्यवहार। दाह तथा कण्डू नाशक है।

R/

(१६) टि० फेरी परक्लोराइड	(Tr. Ferri Perchloride)	१/२ ड्राम
मैगसल्फ	(Mag sulph)	" "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। उत्तम।

R/

(१७) सुबिटाल (Subitol) विसर्प पर लगाना।

सूची—

कोलोजल मैग्नीज (Collosol Mangnese), स्ट्रैप्टोकोकल वैक्सिन (Streptococcal Vaccine), पेनिसिलिन (Penicillin)

अपची, गण्डमाला (Scrofula)

(१) लाल चन्दन — १ तोला
हरड़ — ,, ,,
लाक्षा — ,, ,,
वच — १ तोला
कुटकी — ,, ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल — [illegible]० तोला
जल — ८० ,,
लुगदी — ० तोला

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।
मात्रा—६ मात्रा। प्रातः तथा सायकाल।

(२) सफेद घुमची (गुंजा) का जड़ — १ छ०
कनेर जड़ — ,, ,,
विधारा बीज — ,, ,,
मदार दूध — १ छ०
सरसों — ,, ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों तैल — १। सेर
गोमूत्र — ५ ,,
लुगदी — ० सेर

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।
मर्दन करना।

(३) निर्गुण्डी स्वरस — ४ सेर
कलिहारी के जड़ की लुगदी — १ पाव
तिल तैल — १ सेर

तैल मात्र अवशेष तक पका छान ले।
नस्य देना।

(४) सरसों का तैल — ४ सेर
भांगरा स्वरस — १६ ,,
चकवड़ के जड़ की लुगदी — ½ सेर

तैल मात्र अवशेष तक पका छान ले।
मर्दन करना।

(५) त्रिकटु — १ छटांक
वायविडंग — ,, ,,
मुलेठी — ,, ,,
सेंधानमक — १ छटांक
देवदारु — ,, ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तैल — १। सेर
जल — ५ ,,
लुगदी — ० सेर

तैल मात्र अवशेष तक पका छान ले।
नस्य देना।
कष्ट साध्य गलगण्ड भी आराम होता है।

(६) कचनार का छाल	५ पल	वरुण छाल	२ तोला
सोंठ	१ "	दालचीनी	६ माशा
पीपर	" "	तेजपत्र	" "
मरीच	" "	लाची	" "
त्रिफला	२ तोला	शुद्ध गुगुल	६ पल

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—½ तोला। अनुपान-हरड़ क्वाथ। प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(७) कैल्सियम ग्लुकोनेट तथा आयोडीन सूची (Calcium gluconate and Iodine injection) एक साथ मिला शिरागत प्रविष्ट करना। सर्वोत्तम है।

स्नायुक रोग

(१) अतीस	१ तोला	सोंठ	१ तोला
नागरमोथा	" "	पीपर	" "
भारगी	" "	बहेड़ा	" "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा-३, ६ माशा। अनुपान—गरम जल। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) राल	१० माशा	अफीम	५ माशा
साबुन	२ "		

इनकी लुगदी बना ले।

तिल तैल	७ तोला	लुगदी	० तोला

एकत्र पाक कर मलहम बना रखे। प्रातः तथा सायकाल व्रण पर बाँधते हैं। ३ दिनों में व्याधि नष्ट होती है।

(३) हरताल	१ तोला	नागरमोथा	४ तोला

जल के साथ पीस लेप करे। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) घी	१ सेर	असगन्ध लुगदी	१ पाव
असगन्ध क्वाथ	४ "		

घी मात्र अवशेष तक पका छान रखे। मात्रा-१ तोला। प्रातः तथा सायकाल।

शूक दोष

(१) त्रिफला २ तोला जल १ पाव

क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान गुग्गुलु मिला रोगी को पिलावे।

प्रातः तथा सायंकाल।

(२) दारुहल्दी १ तोला तुलसी १ तोला मुलेठी १ तोला
घर का धुवाँ १ " हल्दी १ "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल २० तोला जल ८० तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान लेवे। लिंग पर मर्दन करना।

प्रातः तथा सायंकाल।

(३) रसाञ्जन जल के साथ पीस लिंग पर लेप करना।

(४) सज्जीखार १ तोला नीला थोथा १ तोला
शिलाजीत १ " सुरमा १ "
रसौत १ " मैनशिल १ "
हरताल १ "

जल के साथ पीस लिंग पर लेप करना। लिंगार्श नाशक है।

(५) घीकार पत्र

लिंग के चर्मकीलक पर ३ दिनों तक बाँधना। चर्मकीलक नाशक है।

शक्तिवर्धक औषधियाँ (Tonics)

(१) ब्राह्मी स्वरस ३ माशा गुरुच स्वरस ३ माशा
शंखपुष्पी कल्क ३ " मुलेठी चूर्ण ३ "

दूध के साथ पीना। प्रातःकाल।

बल, अग्नि, कान्ति दायक तथा व्याधि नाशक है।

(२) वंसलोचन ४ रत्ती पीपल १ माशा
सेंधानमक २ माशा मधु ६ "

प्रातःकाल।

बल, बुद्धि, अग्नि तथा कान्तिदायक और व्याधि नाशक है।

(३) शतावर १ तोला गोरखमुण्डी १ तोला गुरुच १ तोला
पलास १ " काली मूसली १ "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—मधु या घृत। प्रातःकाल।

कान्ति, बल तथा बुद्धि दायक है।

(४) अश्वगंधा चूर्ण ३ माशा घी १ तोला
प्रातःकाल।
शरीर तथा वीर्य को पुष्ट करती है।

(५) लौह ४ तोला शुद्ध गुग्गुल १२ तोला
त्रिकटु चूर्ण २० " त्रिफला चूर्ण ३२ "
इनको एकत्र मिला रखना।
मात्रा—१ तोला। अनुपान—मधु या घृत।
प्रातःकाल।
शक्ति वर्धक तथा व्याधि नाशक है।

(६) चांदी भस्म १ चावल
अनुपान—मक्खन। प्रातः तथा सायकाल।
शक्ति तथा बुद्धि वर्धक है।

(७) अकरकरा १ छटांक सोंठ १ छटांक लवंग १ छटांक
नागकेशर १ " पीपर १ " जायफल १ "
जावित्री १ " सफेदचन्दन १ छटांक
इनका कपड़ छान चूर्ण कर ४ तोला शुद्ध अफीम मिला खरल कर २ माशा प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।
शुक्रस्तम्भक तथा शक्ति वर्धक है।

(८) नागौरी असगंध २॥ तोला गुरुच सत्त १ तोला
भांगरे के रस में घोंट २ माशा प्रमाण की गोली बना रखे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।

(९) जायफल १ तोला काली अगर १ तोला
रूमी मुस्तगी १ " बाल छड़िला १ "
दालचीनी १ " खस की जड़ १ "
शाहबलूत १ " कस्तूरी १ "
सालममिश्री ६ माशा मिश्री ११ "
इनके कपड़ छान चूर्ण में ९६॥ तोला मधु मिला रखे। मात्रा—३-६ माशा।
प्रातः तथा सायंकाल।

(१०) नागौरी असगंध	२ तोला	काली मूसली	२ तोला
तलमखाना बीज	२ ”		

कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—३ माशा। अनुपान—मिश्री युक्त गरम दूध।
प्रातः तथा सायकाल।

R

(११) फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	४ ग्रेन
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२० ”
सोडा सल्फेट	(Soda Sulphate)	१ ड्राम
टिं० जिंजिबेरिस	(Tr. Gingiberis)	२० बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० ”
इन्फुजन क्वेसिया	(Infusion Quassia)	१ औंस

३ मात्रा।
भोजनोपरान्त। अत्युत्तम रक्त वर्धक है।

R/

(१२) टिं० फेरीपरक्लोराइड	(Tr. Ferri Perchloride)	१० बूंद
लाइकर आर्सेनिकलिस	(Liqr Arsenicalis)	२ ”
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२० ”
जल	(Aqua)	१ औंस

२ मात्रा।
समान जल के साथ। भोजनोपरान्त।

R/

(१३) फेरी एट अमन साइट्रास	(Ferri et Ammon Citras)	५ ग्रेन
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromaticus)	३० बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम
इन्फुजन कैलुम्बा	(Infusion Calumba)	१ औंस

३ मात्रा
भोजनोपरान्त। रक्तवर्धक है।

R/

(१४) टिं० फेरी परक्लोराइड	(Tr. Ferri Perchloride)	१५ बूंद
एसिड फास्फोरिक डिल	(Acid Phosphoric Dil)	१० ”
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१६ ”

जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

भोजनोपरान्त। रक्तवर्धक है।

R/

(१५) फेरी एट अमन साइट्रास	(Ferri et Ammon Citras)	५ ग्रेन
सीरप आरेंशाई	(Syrup Aurantii)	½ ड्राम
इन्फुजन चिरायता	(Infusion Chirata)	१ औंस

३ मात्रा।

भोजनोपरान्त।

R/

(१६) एसिड फास्फरिक डिल	(Acid Phosphoric Dil)	१० बूंद
लाइकर स्ट्रिक्नीन	(Liqr. Strychnine)	५ "
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	१० "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

भोजनोपरान्त।

R/

(१७) एसिड नाइट्रो हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid Nitro-Hydrochloric Dil)	१० बूंद
टि० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	१० "
टि० जेंशियन को०	(Tr. Gentian Co.)	१५ "
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा

भोजनोपरान्त।

R/

(१८) क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	½ ग्रेन
स्ट्रिक्नीन	(Strychnine)	१/८ "
फास्फरस	(Phosphorus)	" "
एसिड आर्सेनिक	(Acid Arsenic)	" "

२ मात्रा।

भोजनोपरान्त।

R/

(१९) फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	२ ग्रेन
कीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	१ ”
एसिड सल्फडिल	(Acid Sulph Dil)	१० बूंद
मैगसल्फ	(Mag sulph)	½ ड्राम
लाइकर आर्सेनिक हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Arsenic Hydrochlor)	२ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा। भोजनोपरान्त।

R/

(२०) फेरी पेप्टोन	(Ferri Pepone)	३ ग्रेन
पैंक्रीएटीन	(Pancreatin)	१ ”
स्ट्रिक्नीन	(Strychnnine)	½ ”

३ मात्रा। क्षुधाल्पता तथा क्षीणता नाशक है।

R/

(२१) क्वीनीन हाइड्रोब्रोमाइड	(Quinine Hydrobromide)	२ ग्रेन
एसिड हाइड्रोब्रोमिकडिल	(Acid Hydrobromic dil)	१० बूंद
टिं० स्ट्रोफेन्थस	(Tr. Strophanthus)	६ ”
सीरप आरेंशाई	(Syrup Aurantii)	½ ड्राम
एक्वा क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(२२) मिस्चुरा फेरी को०	(Mistura Ferri Co.)	१ चिम्मच

जल के साथ। ३ मात्रा। भोजनोपरान्त।
रक्तवर्धक है।

पेटेण्ट—

हीमोहीपेराल (Haemo-Heparol), न्यूटोन (Neotone), लिवर एक्स्ट्रैक्ट (Liver Extract), काड लिवर आयल (Cod Liver Oil).

शिशुरोग (Children Disease)

ज्वर (Fever)

(१) भद्रमोथा	१ माशा	मुलेठी	१ माशा
नीम	” ”	कड़वा परवर का पत्ता	” ”

हरड़ १ माशा जल १ छ०

इनका क्वाथ करे। १½ तोला जल शेष रहते छान रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) नागरमोथा १ तोला अतीस १ तोला
पीपर " " काकड़ाशिंगी " "

एकत्र कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४–६ रत्ती। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायकाल। ज्वर, कास तथा अतिसार नाशक है।

(३) अतीस चूर्ण ४ रत्ती

अनुपान—तुलसी स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल। विषम ज्वर निश्चय नष्ट होता है।

(४) हल्दी १ माशा कटेरी १ माशा
दारुहल्दी " " इन्द्रजौ " "
मुलेठ " " जल १ छ०

१। तोला जल शेष रहने तक क्वाथ करे। फिर छान रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। ज्वर, अतिसार, कास, श्वास तथा वमन नाशक है।

(५) कुटकी चूर्ण ४ रत्ती मधु ६ रत्ती
मिश्री ६ "

प्रातः तथा सायंकाल।

(६) कुटकी जल के साथ पीस बच्चे के सिर पर लेप करना। ज्वर नाशक है।

नोट—पाश्चात्य ओषधियाँ पुरुषवत हैं, किन्तु मात्रायें अल्प देनी चाहिये।

पसली रोग वा फुफ्फुस प्रदाह

(Bronchopneumonia)

(१) कबीला ८ माशा हींग १ माशा

दही के पानी में खरल कर मरीच बराबर गोली बनावे। मात्रा—१–२ गोली अवस्थानुसार। अनुपान—गरम जल। २, ३ मात्रा। श्वास, ज्वर, तथा पलई मारना बन्द होता है।

(२) करेलापत्र स्वरस ४ रत्ती पक्के नागरपान का स्वरस ४ रत्ती
अडूसापत्र स्वरस „ „ जामुन के छाल का स्वरस „ „
इनमें वच घिसकर पिलाना। ३ मात्रा।

(३) अमलतास का गुदा २ रत्ती वनफसा २ रत्ती
उन्नाव „ „

इनका चूर्ण कर खिलावे।
प्रातः काल। यह दस्तावर है।
मल साफ लाकर व्याधि नाशक है।

(४) एरण्ड तैल

पेट पर मल वकायन की पत्ती गरम गरम बाँधना।

(५) शुद्ध पारद ½ तोला शुद्ध गन्धक ½ तोला
इनकी कज्जली बनावे।
स्वर्णमाक्षिक २ माशा कज्जली ० माशा
इसे लोह खरल में क्रमशः केसुरिया, भाँगरा, निर्गुण्डी, काकमाची, द्रोण पुष्पी तथा हुरहुर के स्वरस के साथ खरल कर श्वेत अपराजिता के जड़ का चूर्ण २ माशा, मरीच चूर्ण २ माशा मिला सरसों बराबर गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।
श्वास, कास तथा ज्वर नाशक है।

R/

(६) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१० बूंद
वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	८ „
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	½ ड्राम
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Aetheris Nitrosi)	५ बूंद
एक्वा कैम्फर	(Aqua Camphor)	२ ड्राम

२ मात्रा।
कास, श्वास नाशक है।

R/

(७) लाइकर स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Strychnine Hydrochlor)	१ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	५ „

जल	(Aqua)	१ ड्राम

३, ४ मात्रा।

R/

(८) स्ट्रिक्नीन	(Strychnine)	¼ ग्रेन
एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid Hydrochloric Dil)	१ ड्राम
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	½ औंस
एक्स्ट्रैक्ट सिङ्कोना लिक्विड	(Ext. Cinchona Liquid)	२ ड्राम
जल	(Aqua)	४ औंस

९ वर्ष के बच्चे तक १ ड्राम नित्य।
श्वास केन्द्र उत्तेजक है।

R/

(९) वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	२½ बूंद
अमन कार्बोनेट	(Ammon Carbonate)	१ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

१० वर्ष के बच्चे तक ३, ४ मात्रा।
कफ निस्सारक है।

R/

(१०) एम० एण्ड बी० ६९३	(M. & B. 693)	¼ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१ ग्रेन

२ मात्रा
शूल तथा व्याधि नष्ट होती है।

R/

(११) एण्टी फ्लोजेस्टिन	(Antiflogestin)	वक्ष पर लगाना।

वक्ष शूल नाशक है।

हृद्योत्तेजक (Cardiac Stimulent)

R/

(१) स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt Aetheris nitrosi)	१० बूंद
टि० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	५ ,,
टि० लेवेण्डुली को०	(Tr. Lavandulae Co.)	,, ,,
जल	(Aqua)	½ औंस

२ मात्रा

कोष्ठबद्धता (Constipation)

(१) छुहारा २ माशा सायंकाल ½छ० जल में भिगो दे। तथा प्रातः काल मसल कर जल पिलावे।

(२) रेवन्द चीनी जड़ १ माशा दूध में घिस पिलाना। प्रातः काल।

(३) गुलाब फूल ३ माशा चीनी ३ माशा जल के साथ पीस पिलाना। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) मुनक्का २ तोला हरड़ चूर्ण १ तोला एकत्र मिला रखना। मात्रा—२ माशा। अनुपान—दूध। प्रातः काल।

(५) एरण्ड तेल ½ तोला गरम दूध ½ छटांक प्रातः काल।

R/

(६) फ्लुइड मैग्नेसिया (Fluid Magnesia) १ ड्राम प्रातः काल।

R/

(७) सोडा फास्फेट (Soda Phosphate) ५ ग्रेन दूध में मिला पिलावे। २, ३ मात्रा।

R/

(८) टिं० पोडोफिलिन (Tr Podophyllin) १ बूंद दूध के साथ। प्रातः काल। सफेद दस्त आने पर देते हैं।

R/

(९) कान्फेक्शन सलफर (Confection Sulphur) ½ चिम्मच दूध के साथ। २ मात्रा। वेदना पूर्ण शुष्क मल नाशक है।

R/

(१०) गाएकम एण्ड सलफर गोली (Guaiacum and Sulphur tabts) ½ गोली दूध के साथ। प्रात. काल।

R/

(११) हाइड्रार्ज कम क्रीटा	(Hydrarg Cum Creta)	१ ग्रेन
पल्व रीहाई	(Pulv. Rhei)	५ ”

२ मात्रा।

R/

(१२) सोडा सल्फ	(Soda Sulph)	१ ड्राम
टि० एलूज़	(Tr. Aloes)	१५ बूंद
सीरप सीना	(Syrup Senna)	½ ड्राम

प्रातः काल।

R/

(१३) सोडा सल्फ	(Soda Sulph)	१० ग्रेन
टि० एलूज	(Tr. Aloes)	५ बूंद
सीरप सीना	(Syrup Senna)	½ ड्राम
आयल मैंथ पिप	(Oil Menth Pip)	२ बूंद
जल	(Aqua)	२ ड्राम

प्रातः काल।

चिरकालिक कोष्टबद्धता नाशक है।

शूल (Colic)

(१) जायफल	१ तोला	लवंग	१ तोला
जीरा	१ ”	सोहागे का लावा	१ ”

कपड़ छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—१-२ रत्ती। अनुपान—दूध।

२ मात्रा।

R/

(२) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२ ग्रेन
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromaticus)	२ बूंद
टि० रिहाई को०	(Tr. Rhei Co.)	२½ ”
टि० बेलाडोना	(Tr. Belladonna)	१ ”
एका एनिथि	(Aqua Anethi)	१ ड्राम

३ मात्रा।

R/

(३) कोडीन	(Codein)	१/१२ ग्रेन
आयल टेरीबींथ	(Oil Terebenth)	४ बूंद
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt Aetheris Nitrosi)	१० "
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा

(४) गरम जल से भरी बोतल से उदर सेंकना।

कास (Bronchitis)

(१) जीरा	१ तोला	सूखा पुदीना	१ तोला
बड़ी हरड़ का छिलका	१ "	वायविडङ	१ "
लवंग	१ "	अतीस	१ "
सौंफ	१ "	जायफल	१ "
शंखभस्म	१ "	केसर	१ "

कपड़ छान चूर्ण कर ग्वारपाठे के रस में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बना छाया में सुखा रखना।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—दूध।

प्रातः तथा सायकाल।

शर्दी, कास, अतिसार तथा वमन नाशक है।

(२) जायफल	१ तोला	लवग	½ तोला

कपड़ छान चूर्ण कर रखना।

मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—मधु।

प्रातः तथा सायकाल।

H/

(३) पोट० साइट्रास	(Pot Citras)	१० ग्रेन
वाइनम इपीकाक	(VinumIpecac)	६ बूंद
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	½ ड्राम
स्पि० ईथरिस	(Spt Aetheris)	५ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		४ मात्रा

R/

(४) अमन कार्ब	(Ammon Carb)	१ ग्रेन
टि० डिजिटेलिस	(Tr. Digitalis)	१ बूंद

सीरपप्रनी एनीथी	(Syrup Pruni Anethi)	२० बूंद
एका एनीथी	(Aqua Anethi)	१ ड्राम

४ मात्रा।

कफ निस्सारक तथा हृदयोत्तेजक है।

R/

(५) एण्टीमनी टार्ट	(Antimony Tart)	१/२० ग्रेन
लाइकर मार्फीन हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Morphine Hydrochlor)	२ बूंद
पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	२ ग्रेन
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt Chloroform)	४ बूंद
जल	(Aqua)	२ ड्राम

४ मात्रा

समान जल के साथ श्वास नाशक है।

आक्षेप (Convulsions)

(१) यशद	१/२ तोला	प्रवाल पिष्टी	१/२ तोला
शृंगभस्म	१/२ "	शुद्ध हिंगुल	१/२ "
गोरोचन	१/२ "	कचूर चूर्ण	१/२ "
केसर	१/२ "		

इन्हें ब्राह्मी स्वरस में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बना छाया में सुखा रखे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु।

२, ३ मात्रा

R/

(२) क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	१॥ ग्रेन
सोडा ब्रोमाइड	(Soda Bromide)	२॥ "
सीरप	(Syrup)	२० बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा

R/

(३) क्लोरोफार्म (Chloroform) सूंघाते हैं।

सूची—

हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड (Hyoscine Hydiobromide), मार्फीन (Morphine) १/२०० — १/१०० ग्रेन तथा १/२० ग्रेन।

दन्तोद्गम (Dentition)

(१) पीपर	१ तोला	पीपरामूल	१ तोला	चाभ	१ तोला
चीतामूल	१ „	सोंठ	१ तोला	अजमोदा	१ „
अजवाइन	१ „	हल्दी	१ „	मुलेठी	१ „
देवदारु	१ „	दारुहल्दी	१ „	वायविडंग	१ „
बड़ी लाची	१ „	नागकेसर	१ „	मोथा	१ „
शठी	१ „	काकड़ाशिंगी	१ „	कालानमक	१ „

कपड़छान चूर्ण करना।

लोहभस्म	१ तोला	अभ्रकभस्म	१ तोला
शंखभस्म	१ „	स्वर्णमाक्षिकभस्म	१ „
चूर्ण	० „		

इनको जल के साथ खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बना रखे।

मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु
प्रातः तथा सायंकाल।

ज्वर, अतिसार तथा आक्षेप नष्ट हो दाँत शीघ्र निकलते हैं।

नोट—गोली को जल के साथ घिस मसुड़े में लगाना भी चाहिये।

(२) धायफूल १ तोला पीपर १ तोला आँवला स्वरस १ तोला

एकत्र पीस मसुड़े पर लगाना। आराम से दाँत निकलते हैं।

(३) चूना ½ तोला मधु २ तोला

एकत्र मिला मसूड़े पर लगाना। दाँत आराम के साथ निकलते हैं।

(४) कुमार कल्याण घृत ३–६ माशा

अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल।

अति ही हितकारी है।

R/

(५) क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	२ ग्रेन
पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	२ „
स्पि० अमन एरोमेटिकल	(Spt. Ammon Aromat.)	२ बूंद
सीरप प्रूनी वर्जिनी	(Syrup Pruni Virgini)	१० „
जल	(Aqua)	१ ड्राम

४ मात्रा

R/

(६) कैल्सियम विथ विटामिन डी गोली (Calcium with Vita D Tabts)

१ गोली
३ मात्रा

अतिसार (Diarrhoea)

(१) मजीठ १। माशा, धायफूल १। माशा
सारिवा १। ", पठानी लोध्र १। "
जल १ छटांक

इनका क्वाथ करे। १। तोला जल शेष रहते छान शीतल कर मधु मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) धायफूल १ तोला, लोध्र १ तोला
मजीठ १ ", नेत्रवाला १ "
नागरमोथा १ ", बेलगिरी १ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—४-६ रत्ती। अनुपान– मधु। प्रातः तथा सायंकाल। सर्वोत्तम है।

(३) सोंठ १। माशा, अतीस १। माशा, नागरमोथा १। माशा
इन्द्रजौ १। ", जल १ छटांक

इनका क्वाथ करे। १। तोला जल शेष रहते छान शीतल कर मधु मिला पिलावे। प्रातःकाल।

(४) लाजवन्ती १। माशा, धायफूल १। माशा, लोध्र १। माशा
सारिवा १। ", जल १ छटाँक

१। तोला जल शेष रहने तक क्वाथ करे। क्वाथ छान शीतल कर २ माशा मधु मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(५] वायविडंग २ रत्ती, अजमोदा २ रत्ती, पीपर २ रत्ती

कपड़ छान चूर्ण कर जल के साथ पिलाना। प्रातः तथा सायंकाल। मरोड़ पूर्ण अतिसार नष्ट होता है।

(६) धनियाँ १ तोला, अतीस १ तोला
काकड़ा सिंगी १ ", गजपीपर १ "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल। अतिसार तथा वमन नाशक है।

(७) जायफल	१ तोला	लवंग	१ तोला
जीरा	१ "	सोहागा का लावा	१ "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—मधु, चीनी।
प्रातः तथा सायंकाल।
सशूल अतिसार नाशक है।

(८) कूटज के जड़ की छाल	८ तोला	जल	१ सेर

१ पाव जल शेष रहने तक क्वाथ कर छान लेना।

अतीस	४ आने भर	पाठा	४ आने भर
जीरा	४ "	बेलगिरी	४ "
आम के गुठली की गिरी	४ आने भर	सोया	४ "
मोथा	४ "	जायफल	४ "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखे। उपरोक्त क्वाथ को गाढ़ा होने तक पुनः उबाल इस चूर्ण को मिला उतार रखे।
मात्रा—१ आना भर।
प्रातः तथा सायंकाल।
शूल तथा रक्तयुक्त अतिसार नाशक है।

(९) रामबाण	½ रत्ती	शंख	१ रत्ती

अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(१०) विस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	९ ग्रेन
पल्व क्रीटा एरोमेटिकस	(Pulv. Creta Aromaticus)	१ "
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२ "

३ मात्रा।

R/

(११) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ग्रेन
टिं० ओपियम	(Tr. Opium)	½ बूँद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० "
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा।
दुर्गन्धित, श्वेत अतिसार नाशक है।

R/

(१२) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ग्रेन
टिं० ओपियम	(Tr Opium)	१/३ बूंद
टेंनिजोन	(Tannigen)	१ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा।

R/

(१३) टिं० ओपियम	(Tr. Opium)	१/३ बूंद
टिं० रिहाई को०	(Tr Rhei Co.)	३ "
स्पि० अमन एरोमेटिकस	(Spt. Ammon Aromaticus)	१ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० "
एक्वा एनीथि	(Aqua Anethi)	१ ड्राम
		३ मात्रा।

R/

(१४) रीसार्सिन	(Resorcin)	२ ग्रेन
टिं० रिहाई को०	(Tr. Rhei Co.)	३ बूंद
" ओपियम	(" Opium)	१/३ "
" कार्ड को०	(" Card Co)	६ "
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	१/२ "
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा।

दुर्गन्धित अतिसार नाशक है।

R/

(१५) आयल रिसिनि	(Oil Ricini)	२ बूंद
टिं० ओपियम	(Tr. Opium)	१/२ "
वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	१ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० "
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा।

आँव तथा रक्तपूर्ण अतिसार नाशक है।

R/

(१६) डोवर्स पाउडर	(Dover's Powder)	$\frac{1}{8}$ ग्रेन
कैलोमल	(Calomel)	,, ,,

३, ४ मात्रा।
२ दिनों तक।

R/

(१७) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	५ ग्रेन
कैलोमेल	(Calomel)	$\frac{1}{6}$,,
पल्व इपीकाक को०	(Pulv. Ipecac Co.)	,, ,,

३ मात्रा।

R/

(१८) सल्फाग्वायनाडिन	(Sulphaguanadin)	$\frac{1}{4}$ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२ ग्रेन

३, ४ मात्रा।

R/

(१९) लाइम वाटर	(Lime Water)	१ ड्रिम्मच
दूध	(Milk)	,, ,,

३, ४ मात्रा।
भोजनोपरान्त।

शैशवकालीन वमन (Vomiting in Childhood)

(१) नागकेशर	१ तोला	लाची	१ तोला
दालचीनी	,, ,,	तेजपत्र	,, ,,

कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ रत्ती
अनुपान—मधु। ३ मात्रा।

(२) कुटकी चूर्ण	४ रत्ती	मधु	१ माशा

३ मात्रा। वमन तथा हिक्का
निश्चय शान्त होती है।

(३) आम की गिंगी	२ रत्ती	सेंधानमक	२ रत्ती
धान की खील	,, ,,		

इनका कपड़छान चूर्ण कर २ माशा मधु मिला
खिलाना। ३ मात्रा। दूध फेंकना
निश्चय ही बन्द करती है।

(४) मुलेठी चूर्ण	२ रत्ती	बिजोरा नीबू स्वरस	६ रत्ती
पीपर चूर्ण	" "		

प्रातः तथा सायंकाल।

(५) दोनों कटेरी के फूल का स्वरस	२ तोला	चव्य चूर्ण	२ तोला
पीपर चूर्ण	" "	चीता "	" "
पीपरामूल चूर्ण	" "	सोंठ "	" "

एकत्र मिला रखना। मात्रा—४ रत्ती।
अनुपान—दूध। दूध फेंकना वंद होता है।

(६) स्वर्णगैरिक चूर्ण	२ रत्ती	मधु	१ माशा

प्रातः तथा सायंकाल।

(७) धायफूल	२ तोला	लोध्र	२ तोला
बेलगिरी	" "	इन्द्रजौ	" "
धनियां	" "	वाला	" "

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा–२ रत्ती।
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(८) बेर का पत्ता	१ तोला	कैथ का पत्ता	१ तोला
मकोय का पत्ता	" "	चांगेरी का पत्ता	" "

इन्हें पीस बालक के सिर पर लेप करना।
वमन तथा अतिसार नाशक है।

R/

(९) कोकेन	(Cocaine)	$\frac{१}{५०}$ ग्रेन
जल	(Aqua)	१ ड्राम

२ मात्रा।
६ मास तक के शिशु की मात्रा है।

R/

(१०) जिंक सल्फेट	(Zinc Sulphate)	$\frac{१}{१६}$ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	५ बूंद
इन्फुजन चिरायता	(Infusion Chirata)	१ ड्राम

३ मात्रा।
भोजन के पूर्व।

R/

(११) इंग्लुविन	(Ingluvin)	$\frac{१}{६}$ ग्रेन

४ मात्रा।

R/

(१२) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	१ ग्रेन
जिंक सल्फेट	(Zinc Sulphate)	$\frac{१}{२}$ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	५ बूंद
इन्फुजन चिरायता	(Infusion Chirata)	१ ड्राम

३ मात्रा ।
भोजन से पूर्व ।

R/

(१३) लाइकर अर्सेनिकलिस	(Liqr. Arsenicalis)	$\frac{१}{२}$ बूंद
पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	३ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० बूंद
इन्फुजन चिरायता	(Infusion Chirata)	$\frac{१}{२}$ ड्राम

३ मात्रा ।
६ मास तक के शिशु की मात्रा है ।

R/

(१४) टिं० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	$\frac{१}{६}$ बूंद
टिं० रिहाई को०	(Tr. Rhei Co.)	२ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० "
आयलमेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	$\frac{१}{२}$ "
जल	(Aqua)	१ ड्राम

४ मात्रा ।

R/

(१५) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	१ ग्रेन
बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	२ "
टिं० ओपियम	(Tr. Opium)	$\frac{१}{१०}$ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा ।

R/

(१६) मार्फीन सूची	(Morphine inj)	$\frac{१}{४०}$ ग्रेन

त्वचागत ।

R/

(१७) राई की पुल्टिस	(Mustard Poultice)	आमाशय पर ।

६ से ८ घण्टे तक ।

काली खाँसी (Whooping Cough)

(१) काकड़ासिंगी	१ तोला	अतीस	१ तोला
नागर मोथा	” ”		

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४ रत्ती।
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायकाल।
कास, ज्वर तथा वमन नाशक है।

(२) अतीस चूर्ण	४ रत्ती	मधु	१ माशा

प्रातः तथा सायकाल।
कास, ज्वर तथा वमन नाशक है।

(३) नागरमोथा	१ तोला	पीपर	१ तोला
अतीस	” ”	ककड़ासिंगी	” ”
जवासा	” ”		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा-४ रत्ती।
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) अडूसा	२ तोला	हरड़	२ तोला
द्राक्षा	” ”	पीपर	” ”

कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४ रत्ती।
अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) द्राक्षा	१ तोला	सोंठ	१ तोला
पीपर	” ”		

कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४ रत्ती।
अनुपान—असमान घी तथा मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(६) कण्टकारी फूल चूर्ण	२ रत्ती	मधु	६ रत्ती

प्रातः तथा सायंकाल।
चिरकालिक कास नाशक है।

(७) सोंठ	२ रत्ती	गुड़	२ रत्ती
मरीच	” ”	जल	२ तोला
सेंधानमक	” ”		

½ तोला जल शेष रहने तक क्वाथ
कर छान बच्चे को पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।

(८) बालरोगान्तक रस			१ गोली

अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(९) गोदन्ती भस्म	१ रत्ती	मधु	६ रत्ती
आदी स्वरस	४ ”		

प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(१०) फेनाज़ोन	(Phenazone)	३ ग्रेन
पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	२ ”
अमन कार्ब	(Ammon Carb)	१ ”
वाइनम इपीकाक	(Vinum Ipecac)	५ बूंद
स्पि० क्लोरोफार्म	(Spt. Chloroform)	” ”
एका मेंथ पिप	(Aqua Menth Pip)	२ ड्राम

मात्रा—२ चिम्मच; ३, ४ घण्टे पर।
कालीकास के दौरे को शान्त करती है।

R/

(११) हीरोइन हाइड्रोक्लोर	(Heroin Hydrochlor)	१/६० ग्रेन
मेंथल	(Menthol)	” ”
टेरीबींथ	(Terebenth)	१ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम

१ या २ मात्रा।

R/

(१२) पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	१ ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	३ ”
लाइकर आर्सनिकलिस हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Arsenicalis Hydrochlor)	१/२ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

४ मात्रा।

R/

(१३) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	५ ग्रेन
ग्लीसरीन कार्बोलिक एसिड	(Glycerine Carbolic Acid)	२ बूंद

जल	(Aqua)	१ ड्राम ४ मात्रा।

R/

(१४) ब्रोमोफार्म	(Bromoform)	२ बूंद
अल्कोहल	(Alcohol)	४ "
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१५ "
जल	(Aqua)	१ ड्राम ४ मात्रा।

R/

(१५) परटुसिस वैक्सीन	(Pertusis Vaccine)	त्वचागत।

R/

(१६) कैल्सियम ग्लुकोनेट विथ रीडाक्सन	(Calcium Gluconate with Redoxon)	मांसगत।

R/

(१७) आयल कैरुई	(Oil Carui)	३ भाग
" सक्सिनि	(" Succini)	" "
" यूकेलिप्टस	(" Eucalyptus)	२ "
लिनिमेण्ट कैम्फर	(Liniment Camphor)	२४ "

वक्ष पर मर्दन करना।
प्रातः तथा रात्रि में।

R/

(१८) थायमाल	(Thymol)	१½ ड्राम
क्रीयोजोट	(Creosote)	२½ "
एसिड कार्बोलिक प्योर	(Acid Carbolic Pure)	२ "
आयल कैरियोफिल	(Oil Caryophill)	" "
ईथरिस एसीटेट	(Etheris Acetate)	४ "

कपड़े पर छिड़क सुंघाना।

पेटेण्ट औषधियाँ—

जेफ्राल (Zephrol), रेसील सीरप (Resil Syrup), कैसेबीन सीरप (Casebin Syrup), हुक्को (Whoocco), सीरप कासिलिन को० (Syrup Cosiline Co.)

हिचकी (Hiccough)

(१) पीपर चूर्ण	१ रत्ती	मधु	६ रत्ती
मुलेठी चूर्ण	" "	मिश्री	४ "

नीबू के रस के साथ चटाना।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२) कुटकी चूर्ण	४ रत्ती	मधु	६ रत्ती

३ मात्रा।
हिक्का अवश्य नष्ट होता है।

(३) काकड़ासिंगी	१ तोला	सोंठ	१ तोला
हींग	" "	मुलेठी	" "
गेरु	" "	नागरमोथा	" "

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—४-६ रत्ती। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

नोट—अन्य ओषधियाँ युवावत किन्तु मात्रायें न्यून होती हैं।

मुखपाक (Thrush)

(१) पीपलछाल चूर्ण	१ तोला	मधु	२ तोला

एकत्र मिला मुख में लगाना।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२) स्वर्ण गैरिक चूर्ण	१ तोला	मधु	२ तोला
रसवत चूर्ण	" "		

एकत्र मिला मुख में लगाना।
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) सोहागा	१ तोला	मधु	१ तोला

एकत्र मिला मुख में लगाना।
२, ३ बार।

R/

(४) सोडाबाई कार्ब	(Soda Bicarb)	२ ग्रेन
टिं० रिहाई	(Tr. Rhei)	३ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	" "
आयलमेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	१ "

जल	(Aqua)	१ ड्राम

२मात्रा
एक वर्ष तक के बालक को।

R/

(५) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	५ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ ड्राम

मुखपाक पर लगाना। २, ३ वार।

R/

(६) बोरेक्स	(Borax)	५ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ ड्राम

मुख पाक पर लगाना। २, ३ वार।

R/

(७) सोडियम सल्फाइड	(Sodium Sulphide)	१ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

मुख पाक पर लगाना। २, ३ वार।

R/

(८) बोरैक्स	(Borax)	½ ग्रेन
पोटेसियम क्लोरेट	(Potassium chlorate)	१ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

मुख पाक पर लगाना। ३ वार।

R/

(९) पाट० परमाङ्गेट	(Pot. Permangnate)	½ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

मुखपाक पर लगाना। ३ वार।

R/

(१०) बोरैक्स	(Borax)	१० ग्रेन
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide	१ गोली
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

मुखपाक पर लगाना। ३, ४ वार।

सहज फिरंग (Congenital Syphilis)

R/

(१) न्यूसालवर्सन ९१४ सूची (Neosalvarsan 914) ०.०९ ग्राम से प्रारम्भ शिरा गत।

R/

(२) हाइड्रार्ज कम क्रीटा (Hydrarg Cum Creta) $\frac{1}{2}$ ग्रेन–१ ग्रेन प्रातः तथा रात्रि में।

R/

(३) हाइड्रार्ज मलहम (Hydrarg oint) उदर पर मालिश करना २ वार।

नोट—शिशुओं में पारद विष के कारण लाला स्रावाधिक्य न हो कर अतिसार होता है।

कण्ठशालूक (Adenoid)

(१) हरड १ तोला कूठ १ तोला
मीठा वच ,, ,,

कपड़ छान चूर्ण करना। मात्रा—४ रत्ती।
अनुपान—मधु तथा माँ का दूध।

R/

(२) लाइकर आर्सेनिकलिस (Liqr. Arsenicalis) $\frac{1}{4}$ बूंद
पाट० ब्रोमाइड (Pot. Bromide) १ ग्रेन
एक्‍व मेंथ पिप (Aqua Menth Pip) १ ड्राम

३ मात्रा।
भोजनोपरान्त।

R/

(३) रीसार्सिन (Resorcin) ५ ग्रेन
टि० हेमामेलिस (Tr. Hamamelis) ३० बूंद
नार्मल सेलाइन (Normal Saline) १ औंस

५ बूंद नाक में डालना। २ वार।

R/

(४) पाट० आयोडाइड (Pot. Iodide) १२ ग्रेन
आयोडीन (Iodine) ६ ,,

मेंथल	(Menthol)	१ ड्राम
अल्कोहल	(Alcohol)	१ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

कण्ठ शालूक पर लगाना।

नोट—नं० ३ की औषधि नं० ४ के प्रयोग काल में बन्द कर देनी चाहिये।

(५) शस्त्र कर्म करना।

तुण्डिकेरी (Tonsilitis)

R/

(१) एसिड कार्बोलिक	(Acid Carbolic)	१० ग्रेन
टिं० आयोडीन	(Tr. Iodine)	१५ बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	२ ड्राम

तुण्डिकेरी पर लगाना। ३ वार।

R/

(२) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	६ ग्रेन
सोडा सैलिसिलेट	(Soda Salicylate)	६ "
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	२० बूंद
जल	(Aqua)	२ ड्राम

३ मात्रा।

तुण्डिकेरी जन्य ज्वर नाशक है।

R/

(३) टिं० एकोनाइट	(Tr. Aconite)	१ बूंद
ला० अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	१ ड्राम
गरम जल	(Hot Water)	" "

ज्वर नाशक है।

R/

(४) पाट० क्लोरेट	(Pot. chlorate)	१० ग्रेन
लाइकर फेरी परक्लोर	(Liqr. Ferri Perchlor)	२० बूंद
लाइकर स्ट्रिक्नीन	(Liqr Strychnine)	५ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	३ "
एका क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	½ औंस

१ चिम्मच।

३ मात्रा।

R/

(५) टि० बेंज़ायन को०	(Tr. Benzoin Co)	१ ड्राम
गरम जल	(Hot. Water)	२० औंस

भाप देना । तीव्र वेदना नाशक है ।

R/

(६) सिबेज़ाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा ।

शोथ तथा पूय नाशक है ।

रोमान्तिका (Measles)

(१) हल्दी	१ तोला	नागर मोथा	१ तोला
दारुहल्दी	" "	लोध्र	" "
खस	" "	चन्दन	" "
सीरष	" "	नागकेशर	" "

जल के साथ पीस लेप करना ।

(२) परवर पत्र	३ माशा	चौलाई	३ माशा
नागर मोथा	" "	जल	१ पाव
श्योनाक	" "		

इनका क्वाथ करे २॥ तोला जल शेष रहते छान आंवला और हल्दी कल्क मिला रोगी को पिलावे ।

प्रातः तथा सायंकाल ।

सोपद्रव रोग नाशक है ।

(३) मरीच	१ तोला	कण्टकारी	१ तोला
पीपर	" "	मोचरस	" "
कूठ	" "	वसलोचन	" "
गजपीपल	" "	जवासा	" "
मोथा	" "	अतीस	" "
मुलेठी	" "	अडूसा छाल	" "
मूर्वामूल	" "	गोखरु	" "
भारगी	" "	बृहती	" "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना ।

मात्रा—२ आना भर । अनुपान-मधु ।

प्रातः तथा सायंकाल ।

(४) एलाद्यरिष्ट	२ माशा	जल	२ माशा

२ मात्रा।

भोजनोपरान्त।

R/

(५) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१ ग्रेन
वाइनम इपीकाक	(Vin. Ipecac)	१ बूंद
टिं० कैम्फर को०	(Tr. Camphor Co.)	२ "
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१५ "
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा।

कास नाशक है।

R/

(६) बिस्मथ कार्ब	(Bismuth Carb)	२ ग्रेन
पल्व क्रीटा एरोमेट कम ओपियाई	(Pulv. Creta Aromat-Cum Opii)	१ ग्रेन
ग्लीसरीन एसिड टैनिक	(Glycerine Acid Tannic)	५ बूंद
मुसिलेज एकेशिया	(Mucillage Acacia)	१५ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा।

रोमान्तिका के अतिसार तथा वमन नाशन में उत्तम है।

R/

(७) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	३ ग्रेन
" एण्टीमनी टार्ट	(Antimony Tart)	$\frac{1}{30}$ ग्रेन
लाइकर अमन एसीटास	(Liqr. Ammon Acetas)	२० बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा।

५ वर्षीय बच्चे को ज्वर नाशन हेतु।

R/

(८) एमोनाल गोली	(Ammonal Tabts)	३ ग्रेन

२ मात्रा।

ज्वर तथा वेदना नाशक है।

R/

(१) एण्टी टाक्सिन आफ मीज़िल्स (Anti Toxin of Measles) ४००० यूनिट

त्वचागत। श्वासावरोध का भय जाता रहता है।

मसूरिका (Small Pox)

(१) अभ्रक भस्म	१ तोला	मैनसिल	१ तोला
सिन्दूर भस्म	” ”	वंसलोचन	२ ”
चांदी भस्म	” ”	शुद्ध गुग्गुल	७ ”
सोना भस्म	” ”		

इन्हें जल के साथ खरल कर रखना।
मात्रा—१-४ रत्ती। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२) स्वर्णभस्म १ तोला लोहभस्म तोला शुद्ध शिलाजीत १ तोला

वन तुलसी स्वरस के साथ खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनाना।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।

(३) नीम छाल	१ माशा	दवन पापड़ा	१ माशा
अम्बष्टा	१ ”	परवर पत्र	१ ”
कुटकी	१ ”	अडूसा छाल	१ ”
जवासा	१ ”	आँवला	१ ”
खस की जड़	१ ”	श्वेतचन्दन	१ ”
लाल चन्दन	१ ”	जल	१ ”

इनका क्वाथ करे। २ तोला जल रहते छान चीनी मिला रोगी को पिलावे।
प्रातः तथा सायकाल।
ज्वर तथा मसूरिका नाशक है।

(४) सीरष छाल	१ तोला	पीपल छाल	१ तोला
लिसोड़ा छाल	१ ”	गूलर छाल	१ ”

कपड़ छान चूर्ण करे। फिर शतधौत घी में मिला मसूरिका के दाने पर लगावे।
दाह नाशक है।

(५) वट छाल	१ तोला	पीपल छाल	१ तोला
गूलर छाल	१ ”	पाकड़ छाल	१ ”

सीरीष छाल १ तोला

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। पूय तथा स्राव युक्त मसूरिका पर लगाना।

२ वार।

स्राव तथा पूय नाशक है।

(६) लिसोड़ा छाल

जल के साथ पीस आँखों पर गाढा गाढ़ा लेप करना।

मसूरिका जन्य नेत्र वेदना नाशक है।

(७) धमासा	३ माशा	पित्तपापड़ा	३ माशा
परवरपत्र	३ "	कुटकी	३ "
जल	१ पाव		

क्वाथ करे। जब जल २॥ तोले रह जाय तब छान शीतल कर रोगी को पिलावे।

प्रातः तथा सायंकाल।

दाह तथा मसूरिका नाशक है।

R/

(८) टिं० एकोनाइट	(Tr. Aconite)	१ बूंद
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Etheris nitrosi)	१५ "
ला० अमन एसीटेट	(Liqr. Ammon Acetate)	२० "
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	½ ड्राम
जल	(Aqua)	१ "

२ मात्रा

ज्वर तथा कास नाशक है।

R/

(९) ओपियम (Opium) ½ ग्रेन

निद्रानाश तथा प्रलाप नाशक है।

R/

(१०) मार्फीन (Morphine) १/१२ ग्रेन

वमन नाशक है।

R/

(११) बोरिक एसिड (Boric Acid) १० ग्रेन परिस्रुत (Dist. water) १ औंस

नेत्र प्रक्षालन में व्यवहृत होता है।

R/

(१२) विसक्रमित वेसलीन (Sterile Vaseline)

पक्ष्मों को पृथक् रखने के निमित्त लगाते हैं।

R/

(१३) बोरिक एसिड (Boric Acid) १ ड्राम
जिंक आक्साइड (Zinc Oxide) १ "
स्टार्च (Starch) १ "

पीड़िकाओं पर छिड़कते हैं।

R/

(१४) सिबेजाल (Cibazol) १ गोली
सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन

३, ४ मात्रा।
पूय नाशक है।

R/

(१५) सिबेजाल मल्हम (Cibazol Ointment)

पूय युक्त पीडिकाओं पर लगाना।

R/

(१६) एलेक्ट्रार्गाल सूची (Electrargol injection) १० सी० सी०

शिरागत।
भयानक मसूरिका नाशक है।

तृष्णा (Thirst)

(१) प्रियंगु १ तोला रसवत १ तोला नागरमोथा १ तोला

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—४ रत्ती। अनुपान-मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।
प्यास, वमन तथा अतिसार नाशक है।

(२) अनार दाना १ तोला जीरा १ तोला नागकेसर १ तोला

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—मधु तथा मिश्री।
२ मात्रा।

(३) प्याज रस ४ रत्ती भूनाजीरा ४ रत्ती मिश्री ४ रत्ती

प्रातः तथा सायंकाल।

(४) भूना जीरा चूर्ण ४ रत्ती मधु १ माशा

प्रातः तथा सायंकाल।

सुखापाई या सुखण्डी (Marasmus)

(१) सेंधानमक	१ तोला	पहाड़ी करंज	१ तोला
त्रिकटु	” ”	पाढ़ल	” ”
बड़ीकरंज	” ”		

कपड़छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४-६ रत्ती।
अनुपान—घी-४ माशा ; मधु-८ माशा।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२) प्रवाल भस्म	१ भाग	कौड़ी भस्म	४ भाग
सीप भस्म	२ ”	गोदन्ती भस्म	५ ”
शंख भस्म	३ ”		

३ वार नीबू स्वरस में खरल कर सुखा रखे।
मात्रा—२-८ रत्ती। अनुपान—दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(३) टि० सिंकोना को०	(Tr. Cinchona Co.)	३ बूंद
” जेंशियन को०	(Gentian Co)	” ”
जल	(Aqua)	१ ड्राम

२ मात्रा।

R/

(४) सीरप फेरी आयोडाइड	(Syrup Ferri Iodide)	३ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

३ मात्रा।
भोजनोपरान्त।

R/

(५) काड लिवर आयल	(Cod Liver Oil)	५ बूंद
दूध	(Milk)	½ छ०

२ मात्रा।

R/

(६) सीरप फेरी आयोडाइड	(Syrup Ferri Iodide)	५ बूंद
सीरप केल्सियम हाइपोफास्फेट	(Syrup Calcium Hypophosphate)	१५ बूंद

[illegible] ([illegible]) १ ड्राम
३ मात्रा।
भोजनोपरान्त।

R/
(१) [illegible] ([illegible] Pills) १ गोली
२ मात्रा।

R/
(२) कैल्शियम विद
विटामिन डी० (Calcium With Vitamin D) १ गोली
२ मात्रा।

R/
(३) कैल्शियम इंजेक्शन ([illegible] Injection)
मांसगत।

पाषाण गर्दभ (Mumps)

(१) [illegible] २ तोला सेंधानमक ४ रत्ती
जल के साथ पीस किंचित् गरम कर
शोथ पर लगावें। ३, ४ बार।
शोथ नष्ट होता है।

(२) [illegible] १ तोला हरताल १ तोला
[illegible] " " देवदारु " "
हल्दी " "
जल के साथ पीस किंचित् गरम कर
शोथ पर लगावे। ३, ४ बार।
शोथ नाशक है।

R/
(३) डोवर्स पाउडर (Dovers Powder) ५ ग्रेन
२ मात्रा।
वेदना नाशक है।

R/
(४) लाइकर अमन एसीटास (Liqr. Ammon Acetas) १० बूंद
पाट० साइट्रास (Pot. Citras) २ ग्रेन

आयल सिनेमन	(Oil Cinnamon)	१ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

१ मात्रा ।
ज्वर तथा वेदना नाशक है ।

R/

(५) लिनिमेण्ट बेलाडोना	(Liniment Belladonna)	२ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

ग्रंथि पर लेप करना ।

R/

(६) थियुरमाइड	(Thiuramide)	½ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	३ ग्रेन

३, ४ मात्रा
शोथ तथा वेदना नाशक है ।

विषम ज्वर (Malaria)

R/

(१) क्वीनीन सल्फ (Quinine Sulph)

अवस्थानुसार क्वीनीन की प्रयुक्त होने वाली मात्रा की तालिका

अवस्था	मात्रा	वार
१ वर्ष तक	½—१॥ ग्रेन	२४ घण्टे में ६ वार
१—३ वर्ष तक	१—२ ,,	२४ घण्टे में ६ वार
३—१० वर्ष तक	२—३ ,,	२४ घण्टे में ६ वार
१०—१६ वर्ष तक	३—५ ,,	२४ घण्टे में ६ वार
१६ वर्ष से—	५ ग्रेन	२४ घण्टे में ६ वार

अग्निमांद्य (Dyspepsia)

(१) करेले के पत्ते का रस २ माशा हल्दीचूर्ण २ रत्ती

प्रातः तथा सायंकाल ।
वमन तथा दस्त ला पेट साफ कर अग्निमांद्य नाशक है ।

(२) जायफल

नीबू स्वरस में घिस १ माशा की मात्रा में पिलाना।
प्रातः तथा सायकाल।
मल निकाल व्याधि नाशक है।

(३) संचानमक १ तोला सोंठ १ तोला
हींग १ " भारंगी १ "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—४-६ रत्ती।
अनुपान—घी।
प्रातः तथा सायकाल।
आध्मान तथा उदर शूल नाशक है।

R/

(४) कॅलोमल (Calomel) $\frac{1}{4}$-$\frac{1}{6}$ ग्रेन

४ मात्रा।
दस्त साफ ला व्याधि नाशक है।

R/

(५) सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) ३ ग्रेन
हाइड्रार्ज कमक्रीटा (Hydrarg Cum Creta) $\frac{1}{2}$ "
पल्व रिहाई (Pulv Rhei) २ "

रात्रि में।

R/

(६) पाट० साइट्रास (Pot Citras) ३ ग्रेन
सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) ३ "
टिं० नक्स (Tr Nux) १ ड्राम
इन्फुजन जॅशियन को० (Infusion Gentian Co.) १ "

२ मात्रा
भोजन से $\frac{1}{2}$ घण्टे पूर्व।
शूल तथा आध्मान नाशक है।

नाभि पाक (Omphitis)

(१) लोध्र १ तोला हल्दी १ तोला
प्रियंगु फूल १ " मुलेठी १ "

कपड़ छान चूर्ण कर नाभि पर छिड़कना।
प्रातः तथा सायकाल।

(२) हल्दी	१ तोला	लोध्र	१ तोला
प्रियंगु फूल	१ "	मुलेठी	१ "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

काली तिल तैल	१६ तोला	जल	६४ तोला
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
नाभि पर लगाना।
३ वार।

(३) चन्दन चूर्ण

नाभि पर छिड़कना।
३ वार।

R/

(४) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१० ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१० "
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide)	१ गोली
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

नाभि पर लगाना।

गुदपाक (Proctitis)

(१) शंख	१ तोला	रसवत	१ तोला
मुलेठी	" "		

जल के साथ पीस गुदा पर
लगावे। २, ३ वार।

(२) शंख	१ तोला	मुलेठी	१ तोला
सफेद सुरमा	" "		

जल के साथ पीस गुदा पर
लेप करे। २, ३ वार।

(३) चन्दन	१ तोला	शंखनाभि	१ तोला
दोनों सारिवा	" "		

जल के साथ पीस गुदा पर लेप
करना। २, ३ वार। दाह,
ज्वर तथा पाक नाशक है।

(४) चन्दन चूर्ण	२ रत्ती	शंखनाभि भस्म	१ रत्ती
दोनों सारिवा चूर्ण	" "	मधु	१ माशा

२ मात्रा।

R/

(५) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१० ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	" "
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide)	१ गोली
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

गुदपाक पर लगाना।

R/

(६) सिबेजाल गोली	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३, ४ मात्रा।

R/

(७) सिबेजाल मलहम (Cibazol Ointment)

गुदपाक पर लगाना।

गुदभ्रंश (Prolapse Ani)

R/

(१) स्टार्च	(Starch)	१० ग्रेन
जल	(Water)	२ औंस

१ औंस जल शेष तक उबाल शीतल करे।

उबाला स्टार्च	(Boiled Starch)	१ औंस
लाडेनम	(Laudanum)	३ बूंद
इपीकाक	(Ipecac)	५ ग्रेन

गुदा को गरम जल से धो इसकी वस्ति देना। प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(२) कोकेन गुदवर्ती (Cocain Suppository)

गुदा में रखना।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(३) स्टार्च पुल्टिस	(Starch Poultice)	

स्टार्च वस्ति देने के बाद इसे बाँधना ।

स्वरयन्त्र प्रदाह (Laryngitis)

R/

(१) पाट० एण्टीमनी टार्ट	(Pot Antimony Tart)	५ १/७ ग्रेन
लाइकर अमन साइट्रास	(Liqr Ammon Citras)	१० बूंद
सीरप टोलू	(Syrup Tolu)	१/२ ड्राम
जल	(Aqua)	१ ड्राम

२ मात्रा ।
कास, ज्वर तथा शोथ नाशक है ।

R/

(२) अमन क्लोराइड	(Ammon Chloride)	२ ग्रेन
फेरी एट अमन साइट्रास	(Ferri et Ammon Citras)	" "
लाइकर स्ट्रिक्नीन	(Liqr Strychnine)	१ बूंद
एक्स्ट्रैक्ट ग्लीसराइजा	(Ext Glycerrhiza)	१/२ ड्राम
इन्फुजन सेनीगा	(Infusion Senega)	१ "

बराबर जल के साथ । ३ मात्रा ।
भोजनोपरान्त ।

R/

(३) पिरामिडान	(Piramidon)	२ ग्रेन

३ मात्रा ।
ज्वर नाशक है ।

R/

(४) टिं० एकोनाइट	(Tr Aconite)	१ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम

२ मात्रा ।
तीव्र ज्वर नाशक है ।

R/

(५) कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	१० बूंद

जल	(Aqua)	१ औंस

२ इंच चौड़ा वस्त्र भिगो गले के चारों ओर लपेट रुई रख १२ घण्टे तक बाँध रखना। वेदना तथा शोथ नाशक है

R/

(६) सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	२ ड्राम
सोडा बेंजोएट	(„ Benzoate)	„ „
सोडा बाईबोरेट	(„ Biborate)	„ „
एसिड कार्बोलिक प्योर	(Acid Carblic Pure)	१५ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१½ औंस
परिस्रुत जल	(Aqua Distillata)	८ „

बराबर जल मिला भाप देना। वेदना तथा शोथ नाशक है।

शक्तिवर्धक योग (Tonics)

(१) घी	४ सेर	जल	१६ सेर
असगन्ध कल्क	१ „		

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। मात्रा—१ आना भर। अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल। बालक पुष्ट तथा शक्तिशाली होता है।

(२) कटेरी	८ सेर	जल	६४ सेर

१६ सेर जल शेष रहने तक क्वाथ कर छान ले।

मुनक्का	२ तोला	बेलगिरी	२ तोला
सोंठ	„ „	अनार छाल	„ „
चीनी	„ „	तुलसी	„ „
जीवन्ती	„ „	सरिवन	„ „
जीवक	„ „	मोथा	„ „
बरियरा	„ „	कूठ	„ „
शटी	„ „	छोटी लाची	„ „
जवासा	„ „	गजपीपर	„ „

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी	४ सेर	लुगदी	०
क्वाथ	१६ "		

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
मात्रा—१ आना भर। अनुपान—दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।
बालक पुष्ट तथा शक्तिशाली होता है।

(३) छोहाड़ा — दूध के साथ पीस छान बालक को पिलाना।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(४) काड लिवर आयल	(Cod Liver Oil)	५ बूंद
दूध	(Milk)	½ छ०
		२ मात्रा।

R/

(५) पाट० साइट्रास	(Pot. Citras)	२ ग्रेन
फेरी एट अमन साइट्रास	(Ferri et Ammon Citras)	" "
टि० जेंशियन को०	(Tr. Gentian Co)	१० बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा

R/

(६) एसिड फास्फडिल	(Acid Phosph Dil)	१० बूंद
लाइकर स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोर	(Liqr Strychnine Hydrochlor)	½ "
टिं० जेंशियन को०	(Tr. Gentian Co)	१० "
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा।

R/

(७) फेरी सल्फ	(Ferri Sulph)	½ ग्रेन
एसिड सल्फडिल	(Acid Sulph Dil)	१ बुंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	५ ग्रेन
सीरप आरेंशाई	(Syrup Auranti)	२ बूंद
जल	(Aqua)	१ ड्राम
		३ मात्रा।

स्त्रीरोग (Fmale Diesases)

योनिरोग

(१) गुरुच	५ माशा	जमालगोटा	८ माशा
हरड़	" "	जल	१ पाव
आंवला	" "		

आध छटांक जल शेष रहने तक क्वाथ कर छान योनि का प्रक्षालन करे।
प्रातः तथा सायंकाल। योनि कण्डू नाशक है।

(२) खैर	२ तोला	नीम का पत्ता	२ तोला
हरड़	" "	सुपारी	" "
जायफल	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर मूंग के क्वाथ के साथ खरल कर सुखा पुनः कपड़ छान कर रखना।
इसे कपड़े में बांध योनि में रखना।
योनि सङ्कुचित होती है तथा जल का स्राव बन्द होता है।

(३) धवपत्र	१। तोल	कसीस	१। तोला
आंवला	" "	लोध्र	" "
कमल पत्र	" "	कायफल	" "
सुरमा	" "	तिन्दुकफल	" "
मुलेठी	" "	फिटकिरी	" "
जामुन की गुठली	" "	अनारछाल	" "
आम की गुठली	" "	गूलर का कच्चा फल	" "

इन्हें बकरी के मूत्र में पीस लुगदी बनावे।

काले तिल का तेल	१ सेर	गाय का दूध	१ सेर २॥ पाव
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पका, छान बोतल में रखे। पीठ तथा कमर में मर्दन करना और योनि में फाहा रखना तथा योनि में पिचकारी देना।
विप्लुता, परिप्लुता, योनिकन्द, योनि शोथ, व्रण तथा पूय नाशन में रामबाण है।

(४) पीपर	१ तोला	शतावर	१ तोला
मरीच	" "	कूठ	" "

हरड	१ तोला	सेंधानमक	१ तोला

इन्हें जल के साथ पीस अंगुष्ठ प्रमाण बत्ती बना छाया में सुखा रखे। बत्ती को नित्य योनि में धारण करना। अत्यानन्दा, कर्णिका, चरणा, अतिचरणा तथा कफज रोग निश्चय नष्ट होते हैं।

(५) गुरुच	१ तोला	पिसावांस	१ तोला
त्रिफला	" "	दाख	" "
शतावर	" "	कसौंदी	" "
श्योनाक	" "	बेलगिरी	" "
हल्दी	" "	फालसा	" "
अरणी	" "		

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी	½ सेर	लुगदी	०
जल	२ "		

घी मात्र शेष तक पाक कर छान रखे। मात्रा—१ तोला अनुपान—दूध। प्रातः तथा सायंकाल। योनि तथा वात विकार नष्ट कर गर्भ स्थापक है।

गर्भ नाशक योग (Aborative)

(१) गाजर बीज	२ तोला	काली तिल	२ तोला
चिरौंजी	" "		

इनका कपड छान चूर्ण कर रखे। मात्रा—३, ६ माशा अनुपान—गुड। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) सोंठ	३ माशा	जल	१ पाव
लहसुन	१५ "		

इनका क्वाथ करे, ½ छटांक जल शेष रहते छान शीतल कर ३ दिनों तक पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) पीपर	२ तोला	निर्गुण्डी	२ तोला
पीपरा मूल	" "	इन्द्रायण	" "
कटेरी	" "		

इनको जौ कुट कर, २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छटांक जल शेष रहते छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(४) बथुला बीज	८ माशा	पुराना गुड़	८ माशा
सहजन छाल	" "	जल	½ सेर

इनका क्वाथ करे। १ छटांक जल शेष रहते छान कर रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(५) एरण्ड कली	२० माशा	मुसब्बर	४ माशा
खिरीन बीज की गिरी	" "		

जल के साथ पीस बत्ती बना गर्भाशय में रखे।

(६) अखरोट छाल	४ माशा	सोआ बीज	४ माशा
बिनोला की गिरी	" "	कलौंजी	" "
मूली बीज	" "	पुराना गुड़	४८ "
गाजर बीज	" "	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे, ½ छटांक जल शेष रहते छान कर रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

श्वेत प्रदर (Leucorrhoae)

(१) ककड़ी बीज की मींगी	२ माशा	जीरा	१ माशा
सफेद कमल की पंखुड़ी	" "	मिश्री	२ "

जल के साथ पीस ७ दिनों तक पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) लोध्रचूर्ण	६ माशा	काकजंघा का रस	१ तोला
मधु	१ तोला		

प्रातः तथा सायंकाल

(३) भिण्डी की सूखी जड़	१० तोला	सूखा पिण्डाल	१० तोला

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—६ माशा। अनुपान—दूध, मिश्री। प्रातः तथा सायकाल। २० दिनों तक।

(४) सफेद चन्दन	१ तोला	इन्द्रजव	१ तोला
जटामासी	" "	अतीस	" "
लोध	" "	आंवला	" "
खस	" "	रसवत	" "
कमल केसर	" "	आम की गिरि	" "
नाग केसर	" "	जामुन की गिरि	" "
बेल का गुदा	" "	मोचरस	" "

सोंठ	१ तोला	कमलगट्टे की गिरि	१ तोला
नागरमोथा	” ”	मजीठ	” ”
हाउबेर	” ”	गुजराती लाची का दाना	” ”
पाढ़ल	” ”	अनार	” ”
कूटजछाल	” ”	कूठ	” ”

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—½–२ तो०
अनुपान—चावल धोवन तथा मधु।
प्रातः तथा सायकाल।

(५) दारुहल्दी चूर्ण	१ तोला	मधु	१ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

(६) नागकेसर चूर्ण ३ माशा अनुपान—मट्ठा
प्रातः तथा सायंकाल। ३ दिन तक।

(७) दारुहल्दी	१ तोला	बेल गिरी	१ तोला
रसवत	” ”	मधु	” ”
चिरायता	” ”	लालचन्दन	” ”
अडूसा	” ”	मदार फूल	” ”
नागर मोथा	” ”		

इन्हें जौ कुट करे। २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे ½ छटांक जल शेष रहते छान शीतल कर १ तोला मधु मिला रोगी को पिलावे। प्रातः तथा सायकाल। सवेदना श्वेतप्रदर नष्ट होता है।

नोट—शेष बिमारियों की चिकित्सा पूर्व में वर्णित है।

गर्भिणी रोग

ज्वर (Fever)

(१) लालचन्दन	६ माशा	अनन्तमूल	६ माशा
लोध्र	६ ”	द्राक्षा	६ ”
जल	१ पाव		

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान शीतल कर मिश्री मिला रोगिणी को पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) एरण्ड जड़	४ माशा	गुरुच	४ माशा
मजीठ	४ "	लालचन्दन	४ "
पद्माख	४ "	जल	१ पाव

इनका क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छानकर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) धनियाँ	६ माशा	नागरमोथा	६ माशा
खस	६ "	सुगंधवाला	६ "
श्योनाक	६ "	गुरुच	६ "
अतीस	६ "	बरियां	६ "
पित्तपापड़ा	६ "	जवासा	६ "
लालचन्दन	६ "		

इनको जौकुट करे। २ तोला द्रव्य १ पाव जल में क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते क्वाथ को छान कर पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।

गर्भिणी के रक्तविकार तथा अतिसार युक्त ज्वर नाशक है।

(४) शुद्ध पारद	२ तोला	शुद्ध गंधक	२ तोला

इनकी कज्जली करे।

कज्जली	४ तोला	अभ्रकभस्म	१ तोला
कपूर	१ "	वंगभस्म	१ "
ताम्रभस्म	१ "	जायफलचूर्ण	१ "
जावित्री चूर्ण	१ "	गोक्षुर बीज चूर्ण	१ "
शतावर चूर्ण	१ "	दोनोंवरियरा	२ "

इन्हें जल के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

ज्वर, दाह तथा योनि से रक्तस्राव नाशक है।

(५) शुद्ध पारद १ तोला शुद्ध गंधक १ तोला तूतिया १ तोला

नीबू स्वरस में १ वार तथा ३ वार त्रिकटु के क्वाथ में खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु। प्रातः तथा सायंकाल।

(६) शुद्ध पारा	१ तोला	शुद्ध गंधक	१ तोला
सोनाभस्म	१ "	लोहभस्म	१ "

रूपामाक्षिकभस्म	१ तोला	शुद्ध हरतालभस्म	१ तोला
वंगभस्म	१ ”	अभ्रकभस्म	१ ”

इन्हें क्रमशः ब्राह्मी, अडूसा, भाँगरा, दवन पापड़ा और दशमूल क्वाथ में खरल कर रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।

मात्रा—१। गोली अनुपान—मधु।
३ मात्रा।

नोट—पाश्चात्य चिकित्सा ज्वरवत करनी चाहिये जिसका वर्णन पूर्व में किया जा चुका है।

प्रसव विलम्ब (Delate Labour)

(१) सखिन २ तोला नागदौन २ तोला चीते की जड़ २ तोला
इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—२ माशा। अनुपान—गरम दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।
विना वेदना के शीघ्र प्रसव होता है।

(२) कूट १ तोला तालीस पत्र १ तोला
जल के साथ पीस कल्क बना कुलथी क्वाथ के साथ पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
विना वेदना के शीघ्र प्रसव होता है।

(३) ताड़ की जड़ २ तोला मैनफल की जड़ २ तोला चीता की जड़ २ तोला
कपड़ छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—२ माशा। अनुपान—दूध।
प्रातः तथा सायंकाल।
मृत गर्भ तक का शीघ्र प्रसव होता है।

नोट—पाश्चात्य चिकित्सा में शस्त्रकर्म का अवलम्बन किया जाता है।

अतिसार (Diarrhoea)

(१) लवंग	१ तोला	सोहागे का लावा	१ तोला
मोथा	१ ”	धायफूल	१ ”
बेलगिरी	१ ”	धनियाँ	१ १
जायफल	१ ”	सफेदराल	१ ”
सोवा	१ ”	अनार का छिलका	१ ”
जीरा	१ ”	सेंधानमक	१ ”
मोचरस	१ ”	नीलाकमल	१ ”

रसांजन	१ तोला	बराहकान्ता	१ तोला
लालचन्दन	१ "	सोंठ	१ "
अतीस	१ "	काकड़ासिंगी	१ "
बाला	१ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर १ तोला अभ्रकभस्म तथा
१ तोला बगभस्म मिला रखे
मात्रा—४ आना भर। अनुपान—बकरी का दूध।
३ मात्रा

(२) सुगधबाला	४ माशा	अतीस	४ माशा
नागरमोथा	४ "	मोचरस	४ "
इन्द्रयव	४ "	जल	१ पाव

क्वाथ करे। जब ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
अतिसार, रक्तस्राव तथा उदर शूल नाशक है।

(३) लालचन्दन	१ माशा	सुगधबाला	२ माशा
खरेटी	२ "	धनियाँ	२ "
गुरुच	२ "	खस	२ "
नागरमोथा	२ "	जवासा	२ "
पित्तपापड़ा	२ "	अतीस	२ "
जल	१ पाव		

क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे।
प्रातः तथा सायंकाल।
अतिसार, रक्तस्राव, उदर शूल तथा गर्भ पीड़ा नाशक है।

नोट—पाश्चात्य चिकित्सा अतिसार प्रकरण में वर्णित की गयी है।

वमनाधिक्य (Vomiting)

(१) धनियाँ चूर्ण	३ माशा	मिश्री	३ माशा

अनुपान—चावल का धोवन।
प्रातः तथा सायंकाल।

(२) चावल का धोवन	१ छ०	मिश्री	१ तोला

प्रातः तथा सायंकाल।

नोट—शेष चिकित्सायें वमनाधिकार में वर्णित है।

गर्भपात तथा गर्भस्राव (Abortion & Miscarriage)

(१)

जवासा	२ माशा	रास्ना	२ माशा
सारिवा	” ”	मुलेठी	” ”
पद्माख	” ”	कमल	” ”

दूध के साथ पीस पिलाना।
प्रातः तथा सायंकाल।
गर्भपात तथा गर्भस्राव नाशक है।

(२)

कुश	३ माशा	लालएरण्ड जड़	३ माशा
काश	” ”	गोखरु	” ”

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

दूध	३२ तोला	कल्क	०
जल	१२८ ”		

दूध मात्र अवशेष तक पाक कर छान मिश्री मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
गर्भस्राव कालीन वेदना नाशक है।

(३)

विदारीकन्द	२ तोला	जाती पुष्प	२ तोला
अनार का पत्र	” ”	शतावर	” ”
कच्ची हल्दी	” ”	नीलकमल	” ”
त्रिफला	” ”	पद्म	” ”
सिघाड़ा का पत्ता	” ”		

इन्हें जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	१ सेर	कल्क	०
जल	४ ”		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान मर्दन करे।
गर्भशूल, गर्भपात तथा स्राव नाशक है।

सूतिका रोग

(१)

सोंठ	१ तोला	तेजपत्र	१ तोला
मरीच	” ”	लाची	” ”
पीपर	” ”	नागकेशर	” ”
दालचीनी	” ”	धनियाँ	” ”

इनका कपड़छान चूर्ण कर रखना।
मात्रा—३-६ माशा। अनुपान—पुराना गुड़।
प्रातः तथा सायंकाल।
मक्कल शूल नाशक है।

(२) सोंठ चूर्ण	१ तोला	जावित्री चूर्ण	२ तोला
मरीच चूर्ण	२ ,,	शुद्ध तुतिया	,, ,,
पीपर ,,	३ ,,	सेंधालमक	६ माशा

निर्गुण्डी स्वरस में ३ घण्टे तक खरल कर रखे। मात्रा—२ रत्ती। अनुपान—मधु तथा आदि स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल।

(३) पीपर	१ माशा	हींग	१ माशा
पीपरामूल	,, ,,	भारगी	,, ,,
मरीच	,, ,,	पाढ़ल	,, ,,
गजपीपर	,, ,,	इन्द्रयव	,, ,,
सोंठ	,, ,,	जीरा	,, ,,
चीता	,, ,,	यकाइन	,, ,,
चव्य	,, ,,	अतीस	,, ,,
रेणुका	,, ,,	कुटकी	,, ,,
इलायची	,, ,,	वायविडंग	,, ,,
अजमोदा	,, ,,	चुरनहार	,, ,,
सरसों	,, ,,	जल	१ पाव

क्वाथ करे। ½ छटाँक जल शेष रहते छान सेंधानमक मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल। सकल शूल, गोला, ज्वर तथा वायुनाशक है।

(४) शुद्ध पारद	१ तोला	अभ्रक भस्म	१ तोल
शुद्ध गन्धक	,, ,,	ताम्र भस्म	,, ,,

खुलकुड़ी स्वरस में घोंट ½ रत्ती बराबर गोली बना छाया में सुखा रखे। मात्रा—२-४ गोली। अनुपान—आदी स्वरस। ३ मात्रा। सूतिका ज्वर, प्यास, शोथ अरुचि तथा अग्निमान्द्य नाशक है।

(५) शुद्ध पारद	१ तोला	स्वर्णमाक्षिक भस्म	१ तोला
,, गन्धक	,, ,,	त्रिकटु चूर्ण	,, ,,
,, अभ्रक	,, ,,	मीठा विष चूर्ण	,, ,,

एकत्र खरल कर रखना। मात्रा—४ रत्ती। अनुपान—मधु तथा आदी स्वरस। प्रातः तथा सायंकाल। ग्रहणी, अतिसार, श्वास, कास तथा मन्दाग्नि नाशक है।

(६) दशमूल २ तोला जल १ पाव
क्वाथ करे । ½ छटाँक जल शेष रहते छान कर पिलावे । प्रातः तथा सायंकाल । शारीरिक वेदना नाशक है ।

(७) दशमूलारिष्ट १ तोला जल १ तोला
२ मात्रा । भोजनोपरान्त ।

(८) प्रतापलकेश्वर रस २ रत्ती
अनुपान—शुद्ध गुग्गुल; गुरुच, नागरमोथा, त्रिफला । प्रातः तथा सायंकाल । २ मात्रा । सूतिका रोग तथा धनुंवात नाशक है ।

(९) सौभाग्य शुण्ठीपाक १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल । वमन, दाह, ज्वर श्वास, कास तथा शोथ नाशक है ।

(१०) जीरकाद्य मोदक १ तोला
प्रातः तथा सायंकाल । ग्रहणी रोग नाशक है ।

R/

(११) एसीटिल सैलिसिलिक एसिड	(Acetyl Salicylic Acid)	५ ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	१० ”
लाइकर स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोर	(Liqr. Strychnine Hydro-chlor)	३ बूंद
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा । प्रसूति ज्वर अनिद्रा तथा प्रलाप नाशक है ।

R/

(१२) ब्रोमाइडिया (Bromidia) ५ ग्रेन
३ मात्रा । सूतिका कालिक संक्रमण नाशक है ।

R/

(१३) पैरेल्डिहाइड (Paraldehyde) ३ मात्रा ।
सूतिका के प्रलाप को नष्ट करती है ।

R/

(१४) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडाबाइकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा।
संक्रमण तथा ज्वर नाशक है।

सूचना—

स्ट्रेप्टो कोकल वैक्सीन (Streptococcal Vaccine), एण्टी स्ट्रेप्टोकोकल सीरम (Antistreptococcal Serum) प्रथम दो सूची ६ घण्टे के अन्तर से २० सी० सी० तथा तीसरी ६ घण्टे के पश्चात् १० सी० सी०, पेनिसिलिन (Penicillin), थिएजमाइड (Thiazmide) आदि।

शालाक्यशास्त्र

शिरो रोग (Head and Scalp Diseases)

(१) कूट	४ माशा	एरण्ड जड़	४ माशा
सोंठ	” ”		

मट्ठे के साथ पीस मस्तक पर लगाना।
वातज शिरो रोग नाशक है।
२ बार।

(२) लवंग	१ रत्ती	सोंठ	२ रत्ती
केशर	२ ”		

जल के साथ पीस २ तोले तैल में पका
गरम गरम लेप करना।
वातज शिरःशूल नष्ट होता है।
२, ३ बार।

(३) मुचकुन्द फूल १ तोला जल के साथ पीस मस्तक पर लगाना।
वातज शिरःशूल नाशक है।
२, ३ बार।

(४) श्वास कुठार रस का नस्य देना। २, ३ बार।
वातज शिरो रोग नाशन में रामबाण है।

(५) चन्दन	५ माशा	कमलकेसर	५ माशा
कमल	” ”	कमलकन्द	” ”

मृणाल	५ माशा	पद्माख	५ माशा

दूध के साथ पीस मस्तक पर लेप करना।
प्रातः तथा सायंकाल।
पित्तज शिरःशूल नाशक है।

(६) आंवला	१ तोला	नील कमल	१ तोला

जल के साथ पीस शिर पर लेप करे।
२, ३ बार।
पित्तज शिरःशूल नाशक है।

(७) चन्दन	५ माशा	खरेटी	५ माशा
खस	” ”	नखी	” ”
मुलेठी	” ”	कमल	” ”

दूध के साथ पीस मस्तक पर लेप करना।
प्रातः तथा सायंकाल।
पित्तज शिरःशूल नाशक है।

(८) पीपर	५ माशा	सोआ	५ माशा
सोंठ	” ”	नील कमल	” ”
नागर मोथा	” ”	कूठ	” ”
मुलेठी	” ”		

जल के साथ पीस मस्तक पर लेप करना।
प्रातः तथा सायंकाल।
कफज शिरःशूल नाशक है।

(९) पीपर	५ माशा	शतावर	५ माशा
मोथा	” ”	कमल	” ”
सोंठ	” ”	चीता	” ”
मुलेठी	” ”		

जल के साथ पीस मस्तक पर लेप करे।
प्रातः तथा सायंकाल।
कफज शिरः शूल नाशक है।

(१०) त्रिकटु	१॥ तोला	करञ्ज बीज	५ माशा
सहजन बीज	५ माशा		

गोमूत्र में पीस नस्य देना।
प्रातः तथा सायंकाल।
कृमिज शिरो रोग नाशक है।

(११) वायविडंग	५ माशा	दन्ती	५ माशा
सज्जी	” ”	हींग	” ”

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों तैल	१ तोला	गोमूत्र	३२ तोला
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रक्खे।
नस्य देना। २, ३ बार।
कृमिज शिरो रोग नाशक है।

(१२) आदी	५ माशा	वच	५ माशा
पीपर	” ”		

जल के साथ पीस नस्य देना।
सूर्यावर्त शिरो रोग नाशक है।

(१३) भांगरा स्वरस	१ तोला	बकरी का दूध	१ तोला

धूप में गरम कर नस्य देना।
प्रातः तथा सायंकाल।

(१४) धनियां	५ माशा	कासनी	५ माशा
चन्दन	” ”	इसब गोल	” ”

पोस्ते के जल के साथ पीस शिर पर लेप करना।
२, ३ बार।
सूर्यावर्त नाशक है।

(१५) मुलेठी	१ तोला	वच	१ तोला
सारिवा	” ”	मरीच	” ”

काँजी के साथ पीस लेप करना।
२, ३ बार।
अर्धावभेदक नाशक है।

(१६) अनन्तमूल	१ तोला	मुलेठी	१ तोला
नीलकमल	” ”	कूठ	” ”

काँजी के साथ पीस घी मिला मस्तक पर लेप करना।
प्रातः तथा सायकाल।
सूर्यावर्त, अर्धावभेदक तथा अनन्तवात नाशक है।

(१७) शतावर	९ माशा	नीलकमल	९ तोला
काली तिल	” ”	दूब	” ”

मुलेठी	९ माशा	गदहपूर्ना	९ तोला

जल के साथ पीस घी तथा बच मिला नस्य देना।
२, ३ बार।
शङ्खक रोग नाशक है।

(१८) दारुहल्दी	१ तोला	नीमपत्र	१ तोला
हल्दी	" "	खस की जड़	" "
मजीठ	" "	पद्माख	" "

जल के साथ पीस शंख प्रदेश पर लेप करे।
प्रातः तथा सायकाल।
शखक रोग नाशक है।

(१९) शतधौत घृत — शिर पर मलना।

(२०) महुआ	१ तोला	मुलेठी	१ तोला	बायविडंग	१ तोला
भाँगरा	१ "	सोंठ	१ "		

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

गाय का घी	२० तोला	जल	८० तोला	लुगदी

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
नस्य देवे। प्रातः तथा सायकाल।
शिरःशूल, बाल गिरना तथा दृष्टि रोग नाशक है।

(२१) रस सिन्दूर	१ तोला	अभ्रकभस्म	१ तोला
ताम्रभस्म	१ "	लोहभस्म	१ "
शुद्ध गंधक	१ "		

सेहुंढ के दूध मे एक दिन तक खरल कर
२ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु।
प्रातः तथा सायंकाल।
सूर्यावर्त तथा अर्धावभेदक आदि नाशक है।

(२२) शुद्ध पारद	२ तोला	शुद्ध गंधक	२ तोला

इनकी कज्जली बनाना।

नीशोथ	१ तोला	त्रिफला	४ तोला
कूठ	६ माशा	मुलेठी	६ माशा
पीपर	६ "	गोखरू	६ "
वायविडंग	६ "	दशमूल	६ "

इनका कपड़ छान चूर्ण करे।

कज्जली	०	चूर्ण	०
लोहभस्म	२ तोला	शुद्ध गुग्गुलु	८ तोला

एक दिन दशमूल क्वाथ के साथ तथा दूसरे दिन प्रातःकाल घी के साथ खरल कर ४, ४ माशे की गोलियाँ बनावे।

मात्रा—१ या २ गोली। अनुपान—मधु या बकरी का दूध।

३ मात्रा।

शिरःशूलान्तक रस है।

(२३) एरण्ड जड़

एरण्ड जड़	२ तोला	तगर	२ तोला
सौंफ	२ ”	जीवन्ती	२ ”
रास्ना	२ ”	सेंधालसक	२ ”
जल भाँगरा	२ ”	वायविडंग	२ ”
मुलेठी	२ ”	सौंफ	२ ”

जल के साथ पीस लुगदी बना रखे।

तिल तैल	½ सेर	भाँगरा रस	२ सेर
बकरी का दूध	२ ”	लुगदी	०

तैलमात्र अवशेष तक पका छान रखे।

नस्य दे या ४-६ बूँद नाक में डाले।

२, ३ बार।

शिरोरोग, दन्तरोग तथा नेत्ररोग नाशक है।

यह षड्बिन्दु तैल है।

R/

(२४) कैफीन साइट्रास	(Caffein Citras)	२ ग्रेन
फेनासीटीन	(Phenacetin)	३ ”
एस्पिरिन	(Aspirin)	६ ”

३ मात्रा

अर्धावभेदक तथा शिरःशूल नाशक है।

R/

(२५) ग्लीसरील ट्रिनिट्रेट गोली (Glyceryl Trinitrate Tabts) १ गोली

३ मात्रा

अर्धावभेदक नाशक है।

R/

(२६) अर्गोमेट्रिन टार्ट सूची (Ergometrine Tart) शिरागत।

नोट—अन्य ओषधियाँ शिरःशूल में देखिये।

कर्णरोग (Diseases of the ear)

कर्णपाली रोग (Diseases of the Pinna)

(१) खरेटी	१ तोला	कालीसर	१ तोला
मुलेठी	१ "	जामुन की पत्ती	१ "
कमल	१ "	आम की पत्ती	१ "
मजीठ	१ "	लोध	१ "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	३२ तोला	जल	१२८ तोला
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।
कर्णपाली में लगाना।

(२) कर्पूर ४ माशा बकरी के मूत्र में पीस कर्णपाली पर लगाना। फुसियाँ नष्ट होती हैं।

R/

(३) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१५ ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

कर्णपाली पर लगाना। कण्डु तथा पामा नाशक है।

R/

(४) जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१५ ग्रेन
बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१५ "
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

कर्णपाली पर लगाना। कण्डु तथा पामा नाशक है।

R/

(५) इक्थ्याल	(Ichthyol)	५० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

कर्णपाली पर लगाना। कण्डु तथा पामा नाशक है।

R/

(६) लाइकर प्लम्बाई सब एसीटेटिस	(Liqr. Plumbi Subacetatis)	१५ बूंद
कैलेमाइन	(Calamine)	२५ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	½ ड्राम
गुलाबजल	(Aqua Rosae)	२ औंस

कर्णपाली पर लगाना। कण्डु तथा पामा नाशक है।

R/
(७) हाइड्रार्जि अमोनिएटा (Hydrarg Ammoniata) १ भाग
साधारण मलहम (Symple Ointment) ३० ,,
कर्णपाली पर मलना। पामा नाशक है।

R/
(८) हाइड्रार्ज अमोनिएटा (Hydrarg Ammoniata) ½ भाग
एसिड कार्बोलिक (Acid Carbolic) ¹⁄₁₀ ,,
जिंक आक्साइड मलहम (Zinc Oxide Ointment) ३० ,,
कर्णपाली पर लगाना। पामा नाशक है।

R/
(९) एसिड कार्बोलिक (Acid Carbolic) १ भाग
स्पि० विन० रेक्टीफाइड (Spt. Vin Rectified) ३० ,,
कर्णपाली पर लगाना। पामा नाशक है।

R/
(१०) आयल कैण्डिनि (Oil Candini) १ भाग
ग्लीसरीन (Glycerine) २५ ,,
कर्णपाली पर लगाना। पामाजन्य चर्म की कठिनता को नष्ट करती है।

R/
(११) लेड एसीटेट (Lead Acetate) १७० भाग
लेड आक्साइड (Lead Oxide) १०० ,,
जल (Aqua) १ लीटर
इन्हें उबाले। इससे कपड़ा भिगो कर्णपाली पर रखना। त्वक्शोथ नाशक है।

R/
(१२) कोलोडियन (Collodion) ५० भाग
आयल रिसिनि (Oil Ricini) २ ,,
आयल टेरीबिंथ (Oil Terebinth) ७½ ,,
कर्णपाली पर लगाना। त्वक्शोथ, वेदना तथा कण्डु नाशक है।

R/
(१३) कैम्फर रेसी (Camphor Rasae) ०.२ भाग
सेरी एल्बी (Cerae Albae) १० ,,
आयल लिनी (Oil Lini) १५ ,,
कर्णपाली पर लगाना। तीव्र कण्डु नाशक है।

R/

(१४) विल्सोनि मलहम (Wilsoni ung.)

कर्णपाली पर लगाना। त्वक्शोथ तथा वेदना नाशक है।

R/

(१५) प्लम्बाई एसीटेट क्रिस्टल (Plmbi acetate Crystal) २८ भाग
परिस्रुत जल (Distilled Water) २८० ,,

कपड़ा भिगो कर्णपाली पर रखना। त्वक्शोथ नाशक है।

कर्णशूल (Otalgia)

(१) आदी १ तोला मुलेठी १ तोला सेंधानमक १ तोला

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल १ तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे। कुछ गरम कर कान में डालना।
२ वार।

(२) लहसुन १ तोला आदी १ तोला
लाल सहजन की जड़ १ ,, केले की जड़ १ ,,

इनका रस निकाल गरम कर कान में डालना।
२, ३ वार

(३) समुद्रफेन ४ र० नीबूरस १ तोला

२ बूंद कान में डालना।
२, ३ वार

(४) सीरपभस्म ४ र० नीबूरस १ तोला

२ बूंद कान में डालना।
२ वार

(५) हींग १ तोला सेंधानमक १ तोला सोंठ १ तोला

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल १२ तोला जल ४८ तोला लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।
कान में डालना। २ वार

(६) हरताल ८ तोला मिठा विष २ तोला
सेंधानमक ४ ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

मदार स्वरस १ सेर सेहुण्ड पत्र स्वरस १ सेर
सभाल पत्र स्वरस ,, ,, हुरहुर स्वरस ,, ,,

अमलतास पत्र स्वरस	१ सेर	तिल तैल	१ सेर
सूर्यावर्त स्वरस	" "	लुगदी	०
चीता पत्र स्वरस	" "		

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे। कान में डालना घोर शूल नाशक है। यह विषगर्भ तैल है।

(७)

देवदारु	१ तोला	शतावर	१ तोला
बच	" "	कूठ	" "
सोंठ	" "	सेंधानमक	" "

जल के साथ पीस लुगदी बनाना।

तिल तैल	२४ तोला	लुगदी	०
गोमूत्र	९६ "		

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे। कान में डालना।

R/

(८)

क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	१ ग्रेन
पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	२ "

३ मात्रा बनाना। प्रातः तथा सायंकाल। नाड़ी जन्य कर्ण शूल नाशक है।

R/

(९)

एण्टीपायरिन	(Antipyrin)	½ ग्राम

२ वार। नाड़ी जन्य कर्ण शूल नाशक है।

R/

(१०)

कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	६ ग्रेन
मार्फीन हाइड्रोक्लोर	(Morphine Hydrochlor)	३ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम

थोड़ा गरम कर कपड़ा भिगो कान में रखना। ४ वार। वाह्यकर्ण शोथ जन्य शूल तथा पीडिका नाशक है।

R/

(११)

एनीस्थेसिन	(Anaesthesin)	१२ ग्रेन

अलकोहल	(Alcohol)	१½ छ०
ला० अमन एसीटेट	(Liqr. Ammon Acetate)	३० बूंद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

थोड़ा गरम कर कपड़ा भिगों कान में रख बाँधना। वाह्यकर्ण शोथ जन्य शूल तथा पीडिका नाशक है।

R/

(१२) क्लोरोफार्म	(Chloroform)	१५ बूंद
ओलिव आयल	(Olive Oil)	" "

कपड़ा भिगों कान में रखना। कर्ण शूल नाशक है।

R/

(१३) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१ भाग
स्पि० विन० रेक्टीफाइड	(Spt. Vin. Recti.)	२० "

कान में डालना।

R/

(१४) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१ भाग
मार्फिन एसिटेट	(Morphine Acetate)	०·२ "
वैसलीन	(Vaseline)	२० "

कपड़े में लपेट कान में रखना। शोथ जन्य कर्ण शूल नाशक है।

R/

(१५) रिसार्सिन घोल	(Resorcin Solution)	२०%

कपड़ा भिगों कान में रखना।

R/

(१६) कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	०·५ भाग
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१५ "

कपड़ा भिगों कान में डालना।

R/

(१७) टिंचर ओपियम	(Tr. Opium)	१ भाग
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	३ "

कपड़ा भिगों कान में रखना। वाह्य कर्ण शोथ जन्य शूल नाशक है।

R/

(१८) सिल्वर नाइट्रेट	(Silver nitrate)	०·८ भाग
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१० भाग

ब्रश से कान पर लगाना। वाह्य कर्ण शोथ जन्य शूल नाशक है।

R/

(१९) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१ भाग
लैनोलीन	(Lanolin)	२० "

कर्ण शोथ पर लगाना।

R/

(२०) पिक्रिक एसिड घोल (Picric Acid Solution)

ब्रश से शोथ पर लगाना। कण्डू तथा शूल नाशक है।

R/

(२१) कोरोजिव सब्लिमेट	(Corosive Sublimate)	०·१ भाग
अल्कोहल	(Alcohol)	६० "

कान में डालना शोथ तथा शूल नाशक है।

मध्य कर्ण शोथ (Otitis Media)

R/

(१) ओलिव आयल	(Olive oil)	१ ड्राम
क्लोरोफार्म	(Chloroform)	" "

एक कपड़े पर २०, ३० बूंद छिड़क कर्ण पर बांधे। शोथ तथा वेदना नाशक है।

R/

(२) टिं० ओपियम	(Ti. Opium)	२ भाग
जल	(Aqua)	२०० "

कपड़ा भिगो कर्ण पर बांधना।

R/

(३) कोकेन मुरिएट	(Cocain Murhiat)	०·५ भाग
एक्वा डिस्टिलेटा	(Aqua Distillata)	१० "

६, १० बूंद कर्ण में डालना।

R/

(४) कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	१ भाग
ग्लीसरीन	(Glycerine)	" "

१ बूंद कान में डालना ।

R/

(५) सोडा सैलिसिलेट	(Soda Salicylate)	५ ग्रेन
क्लोरल हाइड्रेट	(Chloral Hydrate)	१० "
फेनासीटिन	(Phenacetin)	३ "
लाइकर अमन एसीटेट	(Liqr. Ammon Acetate)	१५ बूंद
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा ।

वेदना तथा अनिद्रा नाशक है ।

R/

(६) सिबेजाल गोली	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Sodabicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा ।

अन्तः कर्ण शोथ (Inflammation of the Labyrinth)

R/

(१) पिलोकार्पीन मुरिएट घोल (Pilocaopin Murhiat Solution) १%

त्वचा गत ।

वेदना तथा शोथ नाशक है ।

R/

(२) लि० स्टेराइल वैसलिन (Liquid Sterile Vaselin) ८ बूंद

मध्य कर्ण में प्रविष्ट करना ।

शोथ तथा वेदना नाशक है ।

R/

(३) पोटेसियम आयोडाइड	(Potassium Iodide)	०·५ भाग
परिस्रुत जल	(Aqua Distillate)	१५ "

८ बूंद मध्य कर्ण में प्रविष्ट करना ।

R/

(४) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	०·५ भाग
एक्वाडिस्टिलेटा	(Aqua Distillata)	१५ "

ग्लीसरीन (Glycerine) २ भाग

८ बूंद मध्य कर्ण में प्रविष्ट करना।

R/

(५) सिबेज़ाल गोली (Cibazol Tabt) १ गोली
सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन

३ मात्रा।

नोटः—सम्पूर्ण ओषधियाँ वेदना तथा शोथ नाशक हैं।

सपूय मध्य कर्णशोथ (Suppurative Otitis media)

(१) गन्धक १॥ तोला हल्दी १ तोला
मैनसिल " "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों तैल ३२ तोला लुगदी ०
धतूर रस " "

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे। कर्ण में डालना। दुर्गन्धित स्राव नाशक है।

(२) कूठ ३ तोला सोया ३ तोला
हींग " " सोंठ " "
वच " " सेंधानमक " "
देवदारु " "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल १ सेर बकरी का मूत्र ४ सेर
लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे। कर्ण में डालना। दुर्गन्धित स्राव नाशक है।

(३) तिल तैल १ पाव चमेली पत्र स्वरस १ सेर

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे। कर्ण में डालना। पूयस्राव नाशक है।

(४) आम का कोमल पत्र १ पाव महुआ का कोमल पत्र १ पाव
जामुन का कोमल पत्र " " बेर का कोमल पत्र " "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिलतैल	४ सेर	जल	१६ सेर
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे ।
कर्ण में डालना ।

(५) सज्जिखार	१ तोला	नीबूस्वरस	४ तोला

कान में डालना ।

(६) लहसुन	१ पल	आंवला	½ पल
हरताल	½ "		

जल के साथ पीस लुगदी बनावे ।

सरसों तैल	१ सेर	बकरी दूध	४ सेर
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे ।
कान मे डालना ।

(७) फिटकिरी लावा चूर्ण — कर्ण में प्रधमन द्वारा प्रविष्ट करना ।

नोटः—उपरोक्त ओषधियाँ कर्णस्राव नाशक है ।

R/

(८) हाइड्रोजन पर आक्साइड (Hydrogen Peroxide) ५–१० बूंद

कर्ण में डालना ।
कर्ण को साफ करती है तथा जीवाणु नाश करती है ।

R/

(९) जिंक सल्फेट	(Zinc Sulphate)	४ ग्रेन
अल्कोहल	(Alcohol)	½ औंस
हाइड्रोजन पर आक्साइड	(Hydrogen Peroxide)	" "

गरम कर ६, ७ बूंद कान में डालना ।

R/

(१०) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	३० ग्रेन
स्पि० वाइनम रेक्टिफाइड	(Spt. Vinum Rectified)	२ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

गरम कर ६, ७ बूंद कान में डालना ।

R/

(११) एक्रिफ्लेविन घोल (Acriflavin Solution) १००० में १,२,३ बूंद

कान में डालना ।

R/

(१२) मरक्यूरोक्रोम घोल	(Lotio Mercurochrome)	२००० में १

५ बूंद कान मे डालना।

R/

(१३) बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१५ ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	२५ "
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide)	२ गोली

कान में प्रधमन करना।

R/

(१४) सिबेजाल गोली	(Cibazol tabt)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा।

R/

(१५) हाइड्रार्ज परक्लोर	(Hydrarg Perchlor)	०.०५ भाग
स्पि० वाइनम रेक्टिफाइड	(Spt. Vinum Rectified)	५० "

५, ७ बूंद कान में डालना।

R/

(१६) कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	१ भाग
स्पि० वाइनम रेक्टिफाइड	(Spt. Vinum Rectified)	१५ "
एक्वा डिस्टिलेटा	(Aqua Distillata)	" "

५, ७ बूंद कान में डालना।

R/

(१७) रिसार्सिन	(Resorcin)	१ भाग
स्पि० वाइनम रेक्टिफाइड	(Spt. Vinum Rectified)	२० "

थोड़ा गरम कर
१५ बूंद कान में डालना।

R/

(१८) प्लम्बाई एसीटेट	(Plumbi Acetate)	०.१ भाग
जल	(Aqua)	२० "

१५, २० बूंद कान में डालना।

नोट—उपरोक्त ओषधियाँ पूय तथा जीवाणु नाशक है।

कर्णनाद (Noise in the Ear)

(१) राई	१ तोला	सौंफ	१ तोला
पीपर	" "	मूली बीज	" "
हींग	" "		

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	२० तोला	लुगदी	० तोला
काँजी	८० "		

तैल मात्रा अवशेष तक पका छान रखे।
कर्ण में डालना।

(२) सज्जी	१ तोला	पीपर	१ तोला
सूखीमूली	" "	सोंठ	" "
हींग	" "	सौंफ	" "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	२४ तोला	लुगदी	० तोला
काँजी	९६ "		

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।
कान में डालना।

(३) शिलाजीत	१ तोला	लोहभस्म	१ तोला
अभ्रक भस्म	" "	सोना भस्म	३ माशा

मकोय, शतावर, आँवला तथा पद्म के रस से क्रमशः खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे। मात्रा—१ गोली।
अनुपान—आँवला स्वरस या क्वाथ। ३ मात्रा।

(४) शुद्ध गन्धक	१ तोला	शुद्ध पारद	१ तोला

कज्जली बनाना।

कज्जली	० तोला	कौड़ी भस्म	१ तोला
मीठा विष	१ "	मरीच चूर्ण	" "
सोहागे का लावा	" "		

आदी स्वरस के साथ खरल कर २ रत्ती प्रमाण की गोली बनावे।
मात्रा—१ गोली
अनुपान—आदी स्वरस।
३ मात्रा।

R/

(५) पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।

R/

(६) स्पि० अरोमेटिकस	(Spt. Aromatious)	३० बूंद
स्पि० सिनैप	(Spt. Sinap)	,, ,,

१० बूंद गोस्तन प्रवर्धन पर मलना।

R/

(७) ओलिव आयल	(Olive Oil)	८ बूंद
क्लोरोफार्म	(Chloroform)	,, ,,

गोस्तन प्रवर्धन पर मलना।

R/

(८) पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	२ भाग
आयोडिन प्योर	(Iodine Pure)	०·१ ,,
एमोलिएण्ट मलहम	(Emolliant Oint)	२० ,,

गोस्तन प्रवर्धन पर मलना।

R/

(९) आयोडाल	(Iodol)	०·८ भाग
एमोलिएण्ट मलहम	(Emolliant Oint)	२० ,,
आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	१० बूंद

गोस्तन प्रवर्धन पर मलना।

नोटः—उपरोक्त ओषधियाँ कर्णनाद नाशक हैं।

वाधिर्य (Deafness)

(१) बेल का गुद्दा १ पाव

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	१ सेर	जल	४ सेर
दूध	४ ,,	लुगदी	० ,,

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।

५, ६ बूंद कान में डालना।

(२) मुलेठी २ तोला क्षीरकाकोली २ तोला

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

एरण्ड जड़ स्वरस	१ पाव	मूली स्वरस	१ पाव
सहजन स्वरस	" "	तिलतैल	" "
वरुण स्वरस	" "	लुगदी	० "

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।
कान में डालना, नस्य देना तथा मालिश करना।

(३) काकजघा स्वरस ५ बूंद
कान में डालना।

(४) आदी स्वरस	६ माशा	सेंधानमक	१ रत्ती
मधु	३ "	तिल तैल	२ माशा

कान में डालना।

नोटः—उपरोक्त ओषधियाँ बाधिर्य नाशक हैं।

R/

(५) फास्फोरिक एसिड डिल	(Acid Phosphoric Dil)	१५ बूंद
टि० नक्स वोमिका	(Tr. Nux Vomica)	१० "
मैगसल्फ	(Mag Sulph)	१½ ड्राम
एक्वा क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

२ मात्रा।
शक्ति वर्धक है।

नोटः—क्षीणता से बाधिर्य की वृद्धि होती है, अतः शक्ति वर्धक देते हैं।

R/

(६) स्ट्रिक्नीन नाइट्रेट	(Strychnine Nitrate)	०·१ भाग
ग्लीसरीन	(Glycerine)	०·१ "

५, ६ बूंद गोस्तन पर मले।

R/

(७) पाट० ब्रोमाइड	(Pot. Bromide)	१० ग्रेन
स्पि० अमन अरोमेट	(Spt Ammon Aromat)	२० बूंद
एक्वा कैम्फर	(Aqua Camphor)	१ औंस

२ मात्रा।

R/

(८) एसिड हाइड्रोब्रोमिक डिल	(Acid Hydrobromic Dil)	१० बूंद
मैगसल्फ	(Magsulph)	१½ ड्राम

एका क्लोरोफार्म (Aqua Chloroform) १ औंस

भोजनोपरान्त । ३ मात्रा ।

R/

(१) विटामिन बी काम्प्लेक्स गोली (Vita. B. Complex Tabt.) १ गोली

३ मात्रा ।

नेत्ररोग

(Diseases of the Eye)

अभिष्यन्द (Conjunctivitis)

(१)	हरड़	१ तोला	आँवला	१ तोला
	बहेड़ा	" "	पोस्ते की ढोढ़ी	" "

जल के साथ पीस लुगदी बना थोड़ा अफीम मिला पतले कपड़े पर रख आँख के ऊपर रखना। नेत्र पीडा को तत्काल नष्ट करती है।

(२)	हरड़	५ माशा	बहेड़ा	५ माशा
	आँवला	" "	जल	" पाव

क्वाथ करे। ½ छ० जल शेष रहते छान शीशी में रखे। नेत्र में २, ४ बूद डालना। वेदना शामक है।

(३)	हरड़	१ तोला	आँवला	४ तोला

जल के साथ पीस गोली बना सुखा रखे। जल के साथ रगड़ आँख में लगावे। नेत्रस्राव तथा वेदना नाशक है।

(४)	अफीम	१ माशा	इमली पत्र	२० माशा
	फिटकिरा लावा	२ "		

चूर्ण कर कपड़े में बाँध पोटली बना, जल में भिगो भिगो आँख पर फेरे तथा उसकी २ बूद जल आँखों में डालें। वेदना तथा रक्तिमा नाशक है।

(५)	फिटकिरी	१ माशा	अलसी	२ माशा

कपड़े में बाँध जल में भिगो आँख पर फेरना। नेत्र की रक्तिमा नाशन में सर्वोत्तम है।

R/

(६) प्रोटार्गोल	(Protargol)	२० ग्रेन
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१ औंस

३, ४ बूंद आँख में डालना । शोथ, वेदना तथा रक्तिमा नाशक है ।

R/

(७) आर्जिराल	(Argyral)	२० ग्रेन
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१ औंस

३, ४ बूंद नेत्र में डालना ।
शोथ, वेदना तथा रक्तिमा नाशक है ।

R/

(८) मरक्यूरोक्रोम	(Mercurochrome)	२० ग्रेन
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१ औंस

२, ३ बूंद नेत्र में डाले ।
नेत्रस्राव, रक्तिमा तथा वेदना नाशक है ।

R/

(९) जिंक सल्फेट	(Zinc Sulphate)	१ ग्रेन
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१ औंस

२ बूंद नेत्र में डाले ।
नेत्रस्राव नाशक है ।

R/

(१०) सिल्वर नाइट्रेट	(Silver Nitrate)	१० ग्रेन
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१ औंस

वर्त्म पर लगा बोरिक के घोल से धो दें ।
नेत्र स्रावाधिक्य नाशक है ।

नोटः—नेत्र स्रावाधिक्य के नष्ट होते ही नं० १० की ओषधि का व्यवहार बन्द कर देना चाहिये ।

R/

(११) सल्फाडायेजीन	(Sulphadiazin)	१ गोली
सोडा बाईकार्ब	(Soda Bicarb)	१० ग्रेन

३ मात्रा ।

R/

(१२) यलो आक्साइड आफ मर्करी (Yellow Oxide of Mercury) २½ ग्रेन
विसंक्रमित श्वेत वैसलिन (Sterile White Vaseline) १ औंस

पक्ष्म के किनारों पर लगाना।
पक्ष्म परस्पर संसक्त नहीं होते।

R/

(१३) बोरिक घोल (Boric Lotion) २%

नेत्र प्रक्षालित करें।

R/

(१४) प्रोटीन सूची (Protein injection) ३–१० सी० सी०
मांसगत।

पोथकी (Trauchoma)

(१) रसांजन	१ तोला	शखनाभि	१ तोला
इलायची	" "	सहजन बीज	" "
केशर	" "	चीनी	" "
मैनसिल	" "		

जल के साथ पीस वर्ती बना छाया में सुखा रखे।
मधु में घिस नेत्र में लगाना।

(२) रसांजन	१ तोला	बहेड़ा की गिरी	१ तोला
सहजन बीज	" "	शखनाभि	" "
पीपर	" "	मैनसिल	" "
मुलेठी	" "		

बकरी के दूध के साथ पीस वर्ती बना
छाया में सुखा रखे। जल के साथ
पीस नेत्र में लगाना।

(३) परवर पत्र	३ माशा	अडूसा छाल	३ माशा
त्रिफला	" "	जल	१ पाव
नीम छाल	" "		

क्वाथ करे। ¼ छ० जल शेष रहते छान शुद्ध
गुग्गुल मिला पिलावे। प्रातः तथा सायंकाल।
शूल, शोथ तथा रक्तिमा नाशक है।

(४) नयनचन्द्र लोह — १ गोली — त्रिफला जल — १ छ०
प्रातः तथा सायंकाल।

(५) बृहत् वासादि क्वाथ — ½ छ०
प्रातः तथा सायंकाल।
नेत्र कण्डु, शोथ, तिमिर हारक है।

R/

(६) सिल्वर नाइट्रेट	(Silver Nitrate)	१० ग्रेन
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१ औंस

पपम को उलट दोनों पर फाहे से लगा ½ मिनट बाद बोरिक घोल से धो दें। यह दानों को फोड़ती है।

चेतावनी—नं० ६ की ओषधि के व्यवहार काल में ध्यान रहे कि ओषधि नेत्र के अन्दर प्रवेश न कर पावे अन्यथा बुरा परिणाम होगा।

R/

(७) मरक्यूरोक्रोम	(Mercurochrome)	२५ ग्रेन
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	१ औंस

नेत्र में डालना।

नोटः—नं० ६ की ओषधि के व्यवहार के पश्चात् नं० ७ की ओषधि को व्यवहृत करें।

R/

(८) यलोआक्साइड आफमर्करी	(Yellow Oxide of Mercury)	१० ग्रेन
विसंक्रमित श्वेत वैसलीन	(Sterile White Vaseline)	१ औंस

रात्रि में सोते समय नेत्र में लगावें।

नोटः—जब इन उपायों से कार्य नहीं चले तब शस्त्र कर्म का अवलम्बन करें।

अव्रण शुक्र (Corneal Opacity)

(१) हरद	१ तोला	सेंधानमक	१ तोला
आँवला	,, ,,	मुलेठी	,, ,,
बहेड़ा	,, ,,	शुद्ध तूतिया	,, ,,
सोंठ	,, ,,	रसवत	,, ,,
पीपर	,, ,,	बायविडंग	,, ,,

मरीच	१ तोला	लोध्र	१ तोला

कपड़ छान चूर्णकर १ तोला ताम्र भस्म मिला ओस जल के साथ खरलकर वर्ती बना रखे। दूध में रगड़ आंख में लगावे।

R/

(२) हाइड्रार्जिरी आक्साइड फ्लेवा	(Hydrargyri Oxide Flava)	४ ग्रेन
व्हाइट वसलीन	(White Vaseline)	१ औंस

रात्रि में सोते समय नेत्र में लगाना।

R/

(३) डायोनिन	(Dionin)	५ ग्रेन
परिस्रुतजल	(Distilled Water)	१ औंस

२, ३ बूंद नेत्र में डालना। २ वार वेदना नाशक है।

R/

(४) सल्फाडाएजिन गोली	(Sulphadiazin Tabt.)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा

संक्रमण नाशक है।

सव्रण शुक्र (Corneal Ulcer)

R/

(१) कोकेन घोल	(Cocaine Solution)	२%	१ बूंद

प्रति २ मिनट पश्चात्, ४-५ वार। कृष्णमण्डल को शून्य करती है।

R/

(२) शुद्ध कार्बोलिक एसिड (Carbolic Acid Pure)

न० १ की ओषधि से शून्य करने के पश्चात इससे व्रण के किनारों को दग्ध किया जाता है।

R/

(३) एट्रोपीन	(Atropine)	४ ग्रेन

श्वेत वैसलीन	(White vaseline)	१ औंस

३ वार नेत्र मेंल गाना। कनीनक प्रसारक तथा संसक्ति (Synechiae) नाशक है।

R/

(४) होमेट्रोपीन	(Homatropine)	२ ग्रन
परिस्रुतजल	(Distilled Water)	१ औंस

२ वार

कनीनक प्रसारक तथा संसक्ति नाशक है।

R/

(५) सल्फाडाएजीन गोली	(Sulphadiazin Tabts)	१ गोली
सोडा वाईकार्व	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा

पूय नाशक तथा व्रण रोपक है।

R/

(६) पेनिसिलिन (Peinoillin) का व्यवहार करें।

अजकाजात (Staphyloma)

(१) हल्दी	१ तोला	बायविडंग	१ तोला
नीमपत्र	" "	नागरमोथा	" "
पीपर	" "	हरड़	" "
मरीच	" "		

वकरी के मूत्र के साथ पीस वर्ती वना छाया में सुखा रखे। स्त्री के दूध के साथ घिस नेत्र में लगावे। मधु के साथ घिस कर लगाने से धुध नाशक है।

(२) समुद्रफल की मिंगी	१ तोला	खीरिन की मिंगी	१ तोला
रींठ की मिंगी	" "	हरड़ की मिंगी	" "

कपड़ छान चूर्णकर नीवू स्वरस के साथ खरल कर गोलियाँ वना रखे। जल के साथ घिस नेत्र में लगाना अव्रणशुक्र, अजकाजात तथा पक्ष्म रोग नाशक है।

(३) लालचन्दन चूर्ण	१ तोला	फिटकिरी	१ तोला

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। अजकाजात, अव्रण शुक्र तथा रतौंधी नाशक है।

(४) शुद्ध काला सुरमा ५ तोला सौंफ का अर्क १ सेर

एकत्र खरल कर सुखा रखे। नेत्रों में लगाना।

(५) शुद्ध काला सुरमा १ तोला मिश्री १ तोला
सेंधा नमक " " सोंठ " "
शखनाभि " " पीपर " "
अफीम " " मरीच " "
शुद्ध मैनसिल " " निर्मलीफल " "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। घी तथा दूध के साथ नेत्र में लगाना। अजकाजात, धुध तथा रतौंधी नाशक है।

लिंगनाश या मोतियाबिंदु (Cataract)

(१) निर्मली १ तोला

मधु के साथ घिस नेत्र में लगावे।

(२) नौसादर १ तोला

कपड़ छान चूर्ण कर नेत्र में लगावे

(३) वच १ तोला सोंठ १ तोला
हींग " " सौंफ " "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मात्रा—४ माशा। अनुपान—मधु- लिंगनाश की वृद्धि नहीं होने देती। ३ मात्रा।

(४) चन्द्रोदयवर्ती नेत्र में लगाना।

नासारोग

(Diseases of the Nose)

पीनस (Atrophic Rhinitis)

(१) चव्य १ तोला चीता १ तोला
अमलवेत " " नागकेसर " "
सोंठ " " तेजपत्र " "
छोटी पीपर " " छोटी लाची " "

तालीशपत्र	१ तोला	इमली	१ तोला

कपड़ छान चूर्ण कर रखना । मात्रा—६ माशा अनुपान—जीरा तथा पुराना गुड़ । प्रातः तथा सायंकाल । कास तथा पीनस नाश हो रुचि तथा अग्नि दीप्त होती है ।

(२) कायफल	२ तोला	त्रिकटु	६ तोला
पोखरमूल	" "	जवाखा	२ "
काकड़ासिंगी	" "	अजवाइन	" "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना । मात्रा—६ माशा—१ तोला । अनुपान—आदी स्वरस । प्रातः तथा सायंकाल । पीनस, स्वरभेद, कास तथा श्वास नाशक है ।

(३) सोंठ चूर्ण	४ माशा	इलायची बीज चूर्ण	४ माशा
पीपर चूर्ण	" "	गुड़	८ तोला

एकत्र मिला २ माशा प्रमाण की गोलियाँ बना रखे । मात्रा—१ गोली । अनुपान—जल । रात्रि में ।

R/

(४) साधारण नमक	(Common Salt)	१ चिम्मच
जल	(Water)	२० औंस
पाट० परमाग्नेट	(Pot Permangnate)	१ ग्रेन

नाशिका सिंचन करना ।

R/

(५) मेंथल	(Menthol)	१ भाग
बोरिक एसिड	(Boric Acid)	२ "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	३ "

३, ४ वार नाशिका में लगाना ।

R/

(६) काडलिवर आयल	(Cod Liver oil)	१ चिम्मच

दूध के साथ । ३ मात्रा ।

R/

(७) सालुसेप्टेसिन	(Soluseptesine)	नाशिका में डालना ।

पूतिनस्य (Ozoena)

(१) भटकटैया जड़	१ तोला	सोंठ	१ तोला
दन्ती	,, ,,	मरीच	,, ,,
वच	,, ,,	पीपर	,, ,,
सहजन	,, ,,	सेंधानमक	,, ,,
तुलसी	,, ,,		

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों तैल	३६ तोला	जल	१४४ तोला
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान ले।
नस्य देना।

(२) सहजन बीज	१ तोला	सोंठ	१ तोला
भटकटैया बीज	,, ,,	मरीच	,, ,,
दन्ती बीज	,, ,,	पीपर	,, ,,
जमाल गोटा	,, ,,	सेंधानमक	,, ,,

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सरसों तैल	३२ तोला	बेल के पत्त का रस	१२८ तोला
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पका कर छान ले।
नस्य देना। यह शिग्रु तैल है।

R/

(३) सिबेजाल गोली (Cibazol) १ गोली
सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) १० ग्रेन
३ मात्रा।
पूय नाशक है।

R/

(४) क्वीनीन एण्ड कैम्फर गोली (Quinine & Camphor Tabts) १ गोली
२ मात्रा।

R/

(५) यूकेलिप्टिया कम्पाउण्ड (Eucalyptia Compound)
पूतिनस्य नाशक है।

R/

(६) स्टिलविस्ट्राल मलहम (Stilboestrol Oint)

नासिका में लगाना।

R/

(७) बोरिकएसिड (Boric Acid) १५ ग्रेन

जल (Water) १ औंस

नाशा प्रक्षालन।

R/

(८) स्टिलविस्ट्राल हाइपोलायड (Stilboestrol Hypoloid) सूची

१ सी० सी०।

R/

(९) कोरिजा वैक्सीन (Corysa Vaccine) सूची द्वारा

नाशारक्तस्राव (नकसीर Epistaxis)

(१) दूब रस ४ सेर तिल तैल १ सेर

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।

नस्य देना। २, ३ बार।

नोट—पाश्चात्य चिकित्सा पूर्व में वर्णित है।

नाशार्श (Nasal Polypus)

(१) चीता जड़ १ तोला करंज बीज १ तोला

चव्य ” ” सेंधानमक ” ”

अजवाइन ” ” मदार दूध ” ”

कटेरी ” ”

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल १ सेर गोमूत्र ४ सेर

लुगदी ०

तैल मात्र अवशेष तक पका छान रखे।

नस्य देना। २, ३ बार।

(२) लाल कनेर का फूल २ तोला असन फूल २ तोला

जाती पुष्प ” ” मल्लिका फूल ” ”

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

तिल तैल	३२ तोला	जल	१२८ तोला
लुगदी	०		

तेल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
नस्य देना। २, ३ बार।
यह करवीराद्य तैल है।

क्षवथु (Sneezing)

(१) सोंठ	२ तोला	बेल	२ तोला
कूठ	" "	दाख	" "
पीपर	" "		

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

सोंठ	२ तोला	बेल	२ तोला
कूठ	" "	दाख	" "
पीपर	" "	जल	१६ सेर

क्वाथ करे जब २ सेर जल शेष रह जाय तब छान ले।

तिलतैल	४० तोला	क्वाथ	२ सेर
लुगदी	०		

तैल मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
नस्य देना।

दीप्ति रोग (Rhivitis)

(१) नीम	१ तोला	रसौत	१ तोला

जल के साथ पीस नस्य देना।
२, ३ बार।

नासास्राव (Rhivitis)

(१) चीता छाल	६ माशा	देवदारु	६ माशा

चीलम पर रख धूम्र पान कराना।

नाशापाक (Suppurative Rhivitis)

(१) शालवृक्ष छाल	१ तोला	गूलर छाल	१ तोला
अर्जुन छाल	१ "	कुटज छाल	१ "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

शालवृक्ष छाल	८ तोला	कुटज छाल	८ तोला
अर्जुन छाल	८ "	जल	२५६ "

गूलर छाल	८ तोला		क्वाथ करे।

जब जल ६४ तोला शेष रहे तब छान ले।

घी	१६ तोला	क्वाथ	६४ तोला
लुगदी	०		

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे।
नाक में लगाना २, ३ वार।

(२) शालवृक्ष छाल	८ तोला	कुटज	८ तोला
अर्जुन छाल	८ ”	जल	२५६ ”
गूलर छाल	८ ”		क्वाथ करे।

६४ तोला जल शेष रहते छान
नाशा प्रक्षालन करे। २, ३ वार

(३) शुद्ध पारद	४ तोला	शुद्ध गंधक	४ तोला

कज्जली करना।

जाविन्नी	४ तोला	विदारीकन्द जड़	२ तोला
जायफल	४ ”	गुलशकरी जड़	२ ”
विधारा वीज	२ ”	वरियरा जड़	२ ”
भाँगवीज	२ ”	गोखरु वीज	२ ”

कपड़ छान चूर्ण करना।

अभ्रक	८ तोला	कज्जली	०
कर्पूर	४ ”	चूर्ण	०

पान के स्वरस में खरल कर ३ रत्ती बरावर गोली वनावे।
मात्रा—१ गोली। अनुपान—मधु तथा पान स्वरस
प्रातः तथा सायंकाल।

शुरंगा का तीव्र शोथ (Acute Sinnusitis)

R/

(१) टि॰ वेंजायन को॰	(Tr. Benzoin Co.)	½ ड्राम
खौलता जल	(Boiling water)	२० औंस

वाष्प देना। २ वार।

R/

(२) थाइमल	(Thymol)	५ ग्रेन
स्पिरिट रेक्टिफाइड	(Spt. Rectified)	१ ड्राम
मैग कार्व लिविस	(Mag Carb Livis)	३ ग्रेन

जल (Aqua) १ औंस

१ ड्राम घोल २० औंस खौलते जल में डाल वाष्प देना । २ वार ।

R/

(३) एड्रेनलिन हाइड्रोक्लोर (Adrenalin Hydrochlor) १००० में १ १½ औंस

कोकेन हाइड्रोक्लोर (Cocaine Hydrochlor) १% १ औंस

१५ मिनट तक इसका नाक में फौहारा देना । २, ३ वार ।

R/

(४) एस्पिरिन (Aspirin) १० ग्रेन

कैफीन (Caffein) ३ "

४ मात्रा । वेदना नाशक है ।

R/

(५) पल्व इपीकाक को० (Pulv. Ipecac Co.) १० ग्रेन

३ मात्रा । वेदना नाशक है ।

R/

(६) सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) १ औंस

सोडा बाई बोरेटिस, (Soda Biboratis) १ "

सोडा क्लोराइड (Soda Chloride) १ "

१ ड्राम ओषधि २० औंस जल में घोल सिंचन करना । शोथ तथा स्राव नाशक है ।

R/

(७) सल्फाथायोजाल गोली (Sulphathiozal) १ गोली

सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) १० ग्रेन

३ मात्रा ।

R/

(८) सिबेजाल (Cibazol) १ गोली

सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) ५ ग्रेन

३ मात्रा ।

R/

(९) पेनिसिलिन (Penicillin injection) सूची

शोथ तथा पूय नाशक है ।

R/

(१०) मेंथाल (Menthol) १६ ग्रेन
स्पिरिट रेक्टिफाइड (Spirit Rectified) २ ड्राम
मैग कार्ब लिविस (Mag Carb) ८ ग्रेन
जल (Aqua) १ औंस

१ ड्राम घोल २० औंस खौलते जल में डाल बाष्प देना।

शुरंगा का चिरकालिक शोथ (Chronic Sinnusitis)

R/

(१) सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) २ ग्रेन
बौरेक्स (Borax) २ ”
सोडा बेंजोएट (Soda Benzoate) १/२ ”
यूकेलिप्टाल (Eucalyptol) १/२४ बूंद
मेंथल (Menthol) १/४८ ग्रेन
उष्ण जल (Hot water) १ औंस

नाशा प्रक्षालन करना।

R/

(२) टि० बेंज्वायन को० (Tr. Benzoin Co.) ३ बूंद
बोरक्स (Borax) ३ ग्रेन
ग्लीसरीन (Glycerine) ३ बूंद
उष्ण जल (Hot water) १ औंस

नाशा प्रक्षालन करना।

R/

(३) सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) ४ ग्रेन
बोरक्स (Borax) ४ ”
सोडा बेंजोएट (Soda Benzoat) १/६ ”
सोडा सैलिसिलास (Soda Salicylas) १/६ ”
यूकेलिप्टाल (Eucalyptol) १/१२ बूंद
थाइमाल (Thymol) १/१२ ग्रेन
मेंथल (Menthol) १/२४ ”
आयल गालथेरिया (Oil Gaultheria) १/२४ बूंद

उष्ण जल	(Hot water)	१ औंस

नाशा प्रक्षालन करना।

R/

(४) सल्फाथियज़ माइड गोली	(Sulphathiaz mide Tabt.)	१ गोली
सोडा बाइ कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा।

R/

(५) सिबेजाल गोली	(Cibazol Tabt)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३ मात्रा।

R/

(६) पेनिसिलिन	(Penicillin injection)	सूची

मुखरोग
(Diseases of the Mouth)
(१) ओष्ठरोग (Diseases of the Lips)
वातज ओष्ठ प्रकोप (Cracked or chapped Lips)

(१) लोहवान	१ तोला	देवदारु	१ तोला
राल	१ "	मुलेठी	१ "
गुग्गुलु	१ "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर ओष्ठ पर मर्दन करे। प्रातः तथा सायंकाल।

(२) तैल	१ तोला	रास्ना चूर्ण	१ तोला
घी	१ "	गुड़	१ "
राल	१ "	सैंधानमक चूर्ण	१ "
मोम	१ "	गेरु चूर्ण	१ "

एकत्र पका रखे। ओष्ठ पर लेप करना। प्रातः तथा सायंकाल। ओष्ठ का फटना तथा पाक आराम होता है।

(३) मोम	१ तोला	गुड़	१ तोला	राल	१ तोला

इनका एकत्र गोला बनावे।

घी	१२ तोला	जल	४८ तोला	गोला	०

घी मात्र अवशेष पर्यन्त पाक कर छान रखे। ओष्ठ पर लेप करना। प्रातःतथा सायंकाल। ओष्ठ की वेदना, कठोरता, पूय तथा रक्त स्राव नाशक है।

R/

(४) लैनोलीन (Lanoline)

ओष्ठ पर लगावे। २ वार।

फटना बन्द होता है।

R/

(५) कोल्ड क्रीम (Cold Cream) ओष्ठ पर लगाना।

२ वार।

फटना बन्द होता है।

R/

(६) सिल्वर नाइट्रेट (Silver Nitrate) ओष्ठ पर स्पर्श करना।

२, ३ वार।

फटना बन्द होता है।

पित्तज ओष्ठ प्रकोप (Herpes Labialis)

(१) शतधौत घृत १ तोला कर्पूर ४ रत्ती

ओष्ठ पर लगाना। प्रातः तथा सायंकाल।

दाह तथा पाक नाशक है।

(२) मोम १ तोला धनियाँ चूर्ण १ तोला

राल " "

एकत्र मिला ओष्ठ पर लगाना।

दाह तथा व्रण नाशक है।

(३) जौंक लगवा कर रक्त निकलवाना।

R/

(४) कोलोडियन (Collodian) पीड़िकाओं पर लगाना।

R/

(५) वोरिक एसिड	(Boric Acid)	१० ग्रेन
जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	" "
सल्फेनिलेमाइड	(Sulphanilamide)	२ गोली
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

२, ३ वार ओष्ठ पर लगावे।

पाक तथा स्राव नाशक है।

कफज ओष्ठ प्रकोप

(१) सोंठ	१ तोला	सज्जीखार	३ तोला
पीपर	” ”	जवाखार	” ”
मरीच	” ”		

कपड़ छान चूर्ण कर रखना ।
मधु मिला ओष्ठ पर लगावे ।
२, ३ वार ।

सन्निपातज ओष्ठ प्रकोप

दोषानुसार पूर्व वर्णित चिकित्सायें होती हैं ।

मेदज ओष्ठप्रकोप (Machrochilia)

(१) प्रियंगु	१ तोला	बहेड़ा	१ तोला
आंवला	” ”	लोध	” ”
हरड़	” ”		

इनका कपड़ छान चूर्णकर रखना ।
मधु के साथ ओष्ठ पर मलना ।
२, ३ वार ।

(२) आंवला	१ तोला	हरड़	१ तोला
बहेड़ा	” ”		

कपड़ छान चूर्ण कर मधु मिला ओष्ठ पर मले ।

(३) शस्त्रकर्म करना ।

विधि—ओष्ठ के मध्य से वी (V) के आकार का चीरा लगा मांस निकाल दोनों किनारों को पुनः सी कर परस्पर मिला देते हैं ।

(२) दन्तवेष्ठ रोग (Diseases of the Gums)

शीताद (Spongy Gums)

(१) हीराकसीस	१ तोला	मैनसिल	१ तोला
लोध	” ”	प्रियंगुफूल	” ”
पीपर	” ”	तेजबल	” ”

कपड़ छान चूर्ण कर रखना ।
मधु मिला दन्तवेष्ठ पर लगाना । २ वार ।
सड़ा मांस पृथक् हो जाता है ।

(२) नागरमोथा	१ तोला	बहेड़ा	१ तोला
आंवला	" "	प्रियंगुफूल	" "
हरड़	" "		

जल के साथ पीस दन्तवेष्ठ पर लेप करना ।
३ बार।

R/
(३) सिल्वर नाइट्रेट (Silver Nitrate) दन्तवेष्ठ पर लगाना।

R/

(४) एलुमिनम	(Aluminum)	५ ग्रेन
सल्फुरिक एसिड डिल	(Sulphuric AcidDil)	१० बूंद
टि० माहं	(Tr. Myrrh)	" "
परिस्रुत जल	(Aqua Distillata)	१ औंस

कुल्ला करना ।
जीवाणु नाशक तथा रक्तरोधक है ।

R/
(५) विटामिन सी (Vitamin C) १ गोली
३ मात्रा ।

R/
(६) विटामिन सी सूची (Vitamin C injection) त्वचागत ।

दन्त-पुप्पुटक (Gum Boils)

(१) तिल	१ तोला	चीता	१ तोला
सफेद सरसों	" "		

गरम जल के साथ पीस लुगदी कर मुख में रखना । शोथ नाशक है ।

R/

(२) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	५ ग्रेन

३, ४ मात्रा ।
शोथ तथा पूय नाशक है ।

(३) दूषित दांत को निकाल देना ।
(४) विद्रधि में चीरा लगाना

दन्तवेष्टक (Pyorrhoea Alveolaris)

(१) लोध	१ तोला	मुलेठी	१ तोला
पतंग	" "	लाख	" "

कपड़ छान चूर्ण कर मधु मिला दन्तवेष्टक पर लगाना।

रक्त रोधक तथा व्रण पूरक है।

(२) नागर मोथा	१ तोला	मरीच	४ माशा
हरड़	" "	वायविडंग	१ तोला
सोंठ	४ माशा	नीम पत्र	" "
पीपर	" "		

गोमूत्र के साथ पीस १ माशा की गोली बना छाया में सुखा रखना।

रात्रि में सोते समय मुख में धारण करना।

दाँत दृढ़ होते हैं।

R/

(३) पाट० क्लोरेट	(Pot. Chlorate)	२ ड्राम
अलुमिनम	(Aluminum)	" "
जल	(Aqua)	१० औंस

कुल्ला करना।

R/

(४) हाइड्रोजन पर आक्साइड	(Hydrogen Peroxide)	१० बूंद
जल	(Water)	१ औंस

कुल्ला करना।

R/

(५) स्टोवार्सल (Stovarsol) १ गोली

३ मात्रा।

R/

(६) कैल्सियम डी (Calcium D) १ गोली

३ मात्रा।

R/

(७) निकोसिल (Nicosil) १–२ गोली

३ मात्रा।

शौषिर (Gingivitis)

(१) लोध	१ तोला	नागरमोथा	१ तोला
रसवत	" "		

कपड़ छान चूर्ण कर मधु के साथ दन्तवेष्ठ पर लेप करे।

(२) वट छाल	४ माशा	गूलर छाल	४ माशा
पीपल छाल	" "	पारीष छाल	" "
पाकड़ छाल	" "	जल	½ सेर

½ पाव जल शेष रहने तक क्काथ कर छान कुल्ला करे।

महा शौषिर

(१) पीपर चूर्ण	८ माशा	मधु	४ माशा
घी	४ "		

एकत्र मिला मुख में रखना। दन्त शूल नाशक है।

(२) हींग	४ माशा	सज्जी	४ माशा
कायफल	१ तोला	कुटकी छाल चूर्ण	१ तोला
कसीस	४ माशा		

एकत्र मिला मुख में धारण करना रोग नाशन में उत्तम है

(३) सारिवा	१ तोला	अगर	१ तोला
कमल	" "	मुलेठी	" "
अनन्तमूल	" "	चन्दन	" "

जल के साथ पीस लुगदी बनावे।

घी	२४ तोला	गोदुग्ध	२४० तोला
लुगदी	०		

घी मात्र अवशेष तक पाक कर छान रखे। नस्य देना।

परिदर तथा उपकुश

(१) त्रिकटु चूर्ण	१ तोला	मधु	९ माशा
सेंधानमक	५ माशा		

दाँतों पर घिसना।

त्रिकटु	१ तोला	नीम	१ तोला
पटोलपत्र	" "	जल	१॥ पाव

१ छटांक जल शेष रहने तक क्वाथ कर छान ले। कुल्ला करना।

नोट—शौषिर से उपकुश तक की व्याधियों के लक्षण पाश्चात्य शास्त्र में जिंजिवायटिस (Gingivitis) नामक व्याधि में मिलते हैं; अतः इसमें समावेश किये गये हैं।

जिंजिवायटिस (Gingivitis)

R/

(१) विटामिन सी	(Vitamine)	१ गोली
			३ मात्रा

R/

(२) सिबेजाल	(Cibazol)	१ गोली
सोडा बाई कार्ब	(Sodabicarb)	५ ग्रेन
		३ मात्रा

(३) दंत-रोग (Dental Diseases)

(१) सोंठ	१ तोला	सुपारी की राख	१ तोला
हरड	" "	काली मरीच	" "
नागर मोथा	" "	लवंग	" "
कत्था	" "	दालचीनी	" "
कपुर	" "		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मंजन करना। दांत तथा मुख की अनेक व्याधियां नष्ट होती हैं।

(२) तुर्त्ती	१ तोला	तूतिया भस्म	१ तोला
चिकनी सुपारी	" "	मरीच	" "
पीपरी खैर	" "	हरड़	" "

कपड़ छान चूर्ण कर रखना। मंजन करना।

(३) वज्रदन्ती	४ तोला	सैंधा नमक	२ तोला
नागर मोथा	" "	भूनी फिटकिरी	१ "
जटामांसी	" "	रूमी मस्तगी	" "
मौलसीरी छाल	" "	छोटी हरड़	" "
सोना गेरु	" "	खैर का गोंद	" "

अनार छाल	,, ,,	कसीस	६ माशा
अकरकरा	,, ,,	तुतिया	,, ,,
माजूफल	,, ,,		

इनका कपड़ छान चूर्ण कर २ तोला लोह भस्म मिला रखना । मंजन करना । दाँतों का हिलना, मुख की दुर्गन्धि तथा दंतशूल नष्ट होते हैं ।

(४) सुपारी	१ तोला	बड़ी इलायची बीज	१ तोला
माजूफल	,, ,,	शीतल चीनी	,, ,,
फिटकिरीका लावा	,, ,,	अकरकरा	,, ,,
सफेद खैर	,, ,,	कपूर	,, ,,
सेतखरी	,, ,,	मरीच	,, ,,

सर्व प्रथम मरीच का कपड़ छान चूर्ण करे फिर इसमें कपूर मिलावे तत्पश्चात् अन्य शेष ओषधियों का कपड़छान चूर्ण मिला खरल कर रखे । मंजन करना । दाँत दृढ होते हैं तथा वेदना नष्ट होती है ।

R/

(५) प्रेसिपिटेट चाक	(Precipitated chalk)	१० ग्रेन
मैग कार्ब (हेवी)	(Mag carb Heavy)	,, ,,
पल्व ओनिस रूट	(Pulv. Onis Root)	,, ,,
पल्व हार्ड सोप	(Pulv Hard Soap)	,, ,,
थाइमल	(Thymol)	,, ,,
यूकेलिप्टस आयल	(Eucalyptus oil)	२० बूँद
मीथिल सैलिसिलेट	(Methyl Salicylate)	२० बूँद
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ भाग
साधारण सीरप जल	(Symple Syrup Water)	उचितमात्रा

मंजन करना

R/

(६) लिनिमेण्ट एकोनाइट	(Liniment Aconite)	१ ड्राम
आयोडीन फोर्ट	(Iodine Fort)	,, ,,

रूई से मसूड़े पर लेप करना । दंतशूल नाशक है ।

R/

(७) कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)		१५ बूंद
क्लव आयल	(Clove oil)		३० "

रुई भिगो दंतकोटर में रखना।
दंतशूल तथा कृमि नाशक है।

(४) कण्ठ-रोग (Diseases of the Throat)

(१) जवासा	१ तोला	दारुहल्दी	१ तोला
तेजबल	" "	हल्दी	" "
पाढ़ल	" "	पीपर	" "
रसवत	" "		

कपड़ छान चूर्ण कर मधु मिला ४ रत्ती की
गोली बना रखे। मुख में रख चूसना।

(२) जवाखार	१ तोला	रसांजन	१ तोला
चाभ	" "	दारुहल्दी	" "
अरवछा	" "	पीपर	" "

कपड़ छान चूर्ण कर मधुर मिला गोलियां बनावे।
मुख में रख चूसना।

(३) पीपर	१ तोला	इलायची	१ तोला
पीपरामूल	" "	मरीच	" "
चाभ	" "	दालचीनी	" "
चीतामूल	" "	पलासक्षार	" "
सोंठ	" "	यवक्षार	" "
तालीसपत्र	" "	घण्टापाटला	" "

कपड़ छान चूर्ण करना।

गुड़	२४ तोला	जल	पर्याप्त

चासनी करे। इसमें चूर्ण डाल बेर बराबर
गोली बना मुख में धारण करे।

(४) मनसिल	१ तोला	सेंधानमक	१ तोला
यवक्षार	" "	दारुहल्दी	" "
हरताल	" "		

कपड़छान चूर्ण कर रखना।
मधु के साथ मुख में रखे।

R/

(५) हाइड्रोजन परआक्साइड	(Hydrogen Peroxide)	६ ड्राम
परिस्रुत जल	(Distilled Water)	२ औंस

गले में लगाना।
२, दो घण्टे पर।

R/

(६) टि० एकोनाइट	(Tr. Aconite)	२ बूंद
पाट० क्लोरेट	(Pot. Chlorate)	२ ग्रेन
लाइकर फेरी परक्लोर	(Liqr. Ferri Perchlor)	१० बूंद
„ हाइड्राजं परक्लोर	(„ Hydrarg Perchlor)	५ „
„ स्ट्रिक्नीन	(„ Strychnine)	३ „
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम
एका क्लोरोफार्म	(Aqua Chloroform)	१ औंस

३ मात्रा।
ताप नाशक है।

R/

(७) सोडा बाई कार्ब	(Soda Bicarb)	२ ड्राम
सोडा बेंजोएट	(„ Benzoate)	„ „
„ बाइबोरेट	(„ Biborate)	„ „
कार्बोलिक एसिड प्योर	(Carbolic Acid Pure)	१५ ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१½ औंस
एका डिस्टिलेटा	(Aqua Distillata)	८ „

वाष्प लेना।

R/

(८) लाइकर अमन एसिटास	(Liqr. Ammon Acetas)	½ औंस
स्पि० ईथरिस नाइट्रोसी	(Spt. Etheris Nitrosi)	१० बूंद
एसीटिल सेलिसिलिक	(Acetyl salicylic Acid)	१० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

३ मात्रा।
ताप नाशक है।

सर्वसर

(१) कबाब चीनी २ माशा मिश्री २ माशा
मुख में रख चूसना।
व्रण तथा फफोला नाशक है।

(२) कालाजीरा	१ तोला	इन्द्रयव	१ तोला
कूट	" "		

कपड़छान चूर्णकर मुख में रखना।
मुखपाक, फफोला तथा दुर्गन्धि नाशक है।

विशिष्ट औषधि-निर्माण विधि

जल (एका Aqua)

(१) एका कैम्फर (Aqua Camphor)

R/

कैम्फर	(Camphor)	१८ ग्रेन
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt Rectified)	उचित मात्रा।
जल	(Aqua)	४० औंस

प्रथम कम्फर तथा स्पिरिट को मिला कर फिर जल डालें।

(२) एका क्लोरोफार्म (Aqua Chloroform)

R/

क्लोरोफार्म	(Chloroform)	३० बूंद
जल	(Aqua)	२५ औंस

दोनों को मिला भली भाँति हिला दें।

(३) एका मेंथ पिप (Aqua Menth Pip)

R/

आयल मेंथ पिप	(Oil Menth Pip)	१४ बूंद
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt, Rectified)	उचित मात्रा
जल	(Aqua)	४० औंस

प्रथम तैल को स्पिरिट में मिला कर फिर जल को मिला खूब हिला दे।

(४) एका एनिसि (Aqua Anisi)

R/

आयल एनिसि	(Oil Anisi)	१४ बूंद
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt. Rectified)	उचित मात्रा

जल	(Aqua)	४० औंस

प्रथम तैल को स्पिरिट में घुला कर फिर जल मिला कर रख लें।

(५) एक्वा एनिथिन (Aqua Anithaen)

R/

आयल डिल	(Oil Dil)	७ बूंद
अल्कोहल	(Alcohol 90%)	२१० "
जल	(Water)	३९० "

तैल को अल्कोहल में मिलाने के पश्चात् जल मिला हिला रख लें।

अम्ल (Acid)

(१) एसीटिक एसिड डिल (Acetic Acid Dil)

R/

एसीटिक एसिड फोर्ट	(Acetic Acid Fort)	२ औंस ४ ड्राम
जल	(Aqua)	२० औंस

जल में एसिड को धीरे धीरे मिला कर हिलावें।

(२) हाइड्रोक्लोरिक एसिड डिल (Hydrochloric Acid Dil)

R/

एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid Hydrochloric Dil)	१२ औंस
जल	(Aqua)	४० "

जल में एसिड को धीरे धीरे मिला कर हिलावें।

(३) एसिड नाइट्रिक डिल (Acid Nitric dil)

R/

नाइट्रिक एसिड फोर्ट	(Nitric Acid Fort)	६ औंस । ४ ड्राम
जल	(Aqua)	४० "

जल में एसिड को धीरे धीरे मिला कर हिला दें।

(४) सल्फुरिक एसिड डिल (Sulphuric Acid dil)

R/

एसिड सल्फुरिक फोर्ट	(Acid sulphuric Fort)	२ औंस ११ ड्राम
जल	(Aqua)	४० "

२० औंस जल, बोतल में डालने के पश्चात् एसिड डाल फिर शेष जल भर दे।

(५) एसिड नाइट्रोहाइड्रोक्लोरिक डिल (Acid Nitro Hydrochloric dil)

R/

नाइट्रिक एसिड फोर्ट	(Nitric Acid Fort)	३ औंस
हाइड्रोक्लोरिक एसिड फोर्ट	(Hydrochloric Acid Fort)	३ ,,
जल	(Aqua)	२५ ,,

एसिड को धीरे धीरे जल में मिला शीशे के काग वाली बोतल में १४ दिनों तक बंद रखने के पश्चात् व्यवहार में लावें।

स्पिरिट (Spirit)

(१) स्पिरिट क्लोरोफार्म (Spirit Chloroform)

R/

क्लोरोफार्म	(Chloroform)	२ औंस
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt Rectified)	४० ,,

शीशे के काग वाली बोतल में बंद रखे।

(२) स्पिरिट कैम्फर (Spirit Camphor)

R/

कैम्फर (कपूर)	(Camphor)	२ औंस
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt. Rectified)	१० ,,

शीशे के काग वाली बोतल में बंद रखे।

शर्बत (Syrup)

(१) साधारण शर्बत (Symple Syrup)

R/

चीनी	(Sugar)	४ पौंड
जल	(Aqua)	४ ,,

एकत्र उबाले ६ पौण्ड मात्र शेष रहते छान ले।

(१) सीरप आरेंशाई (Syrup Aurantii)

R/

टि० आरेंज	(Tr. Orange)	२ औंस
साधारण शर्बत	(Symple Syrup)	१६ ,,

एकत्र मिला रखे।

चूर्ण (Pulv.)

(१) पल्व रियाई को० (Pulv. Rhei Co.)

R/

पल्व रुबार्ब रुट	(Pulv. Rhubarb root)	४ औंस
मैग कार्ब लिविस	(Mag carb Levis)	१२ "
पल्व जिंजर	(Pulv Ginger)	२ "

(२) पल्व क्रीटा अरोमेटिकस (Pulv. Creta Aromaticus)

R/

सिनेमन	(Cinnamon)	८ ड्राम
पल्व नटमेग	(Pulv. Nutmāg)	६ "
पल्व क्लव्ज	(Pulv. Cloves)	३ "
पल्व कार्डेमम	(Pulv Cardamom)	२ "
सुगर	(Sugar)	६ औंस
प्रीपेयर्ड चाक	(Prepared Chalk)	२ औंस ४ ड्राम

(३) पल्व ग्लिसराइजा को० (Pulv. Glycerrhiza Co.)

R/

पल्व सीना	(Pulv. Senna)	२ औंस
पल्व लाइकराइस	(Pulv. Liquorice)	२ "
पल्व फेनलफ्रूट	(Pulv Fennel Fruit)	१ "
सलफर	(Sulphur)	१ "
सुगर	(Sugar)	६ "

(४) पल्व जैलप को० (Pulv Jalap Co.)

R/

पल्व जेलप	(Pulv. Jalap)	१० औंस
एसिड पाट० टार्ट	(Acid Pot Tart)	१८ "
जिंजर	(Ginger)	२ "

गोली (Pills)

(१) योषापस्मार की गोली (Hysteria pills)

R/

एलूज	(Aloes)	१२ ग्रेन

आसाफीटिडा	(Asafaetida)	१२ ग्रेन
साधारण शर्बत	(Symple Syrup)	१२ बूंद
सोप	(Soap)	१२ ग्रेन

परस्पर मिला १२ गोलियां बनावें।

(२) विरेचक गोली (Cathartic Pill)

R/

कैलोमल	(Calomel)	३ ग्रेन
एक्स्ट्रैक्ट हायोसायमस	(Ext Hyoscyamus)	२ "
एक्स्ट्रैक्ट कोलोसिंथ को०	(Ext. Colocynth Co)	५ "

परस्पर मिला २ गोलियां बनाना।

(३) शक्तिवर्धक गोली (Tonic Pill)

R/

एलायन	(Aloin)	१ ग्रेन
फेरीसल्फ	(Ferrisulph)	४ "
एक्स्ट्रैक्ट नक्स वोमिका	(Ext. Nux Vomica)	१ "
एक्स्ट्रैक्ट जेंशियन	(Ext. Gentian)	उचित मात्रा।

परस्पर मिला २ गोलियां बनाना।

(४) पाट० परमांग्नेट गोली (Pot. Permangnate Pill)

R/

पाट० परमांग्नेट	(Pot Permangnate	१ ग्रेन
केओलिन	(Keolin)	उचित मात्रा।
वैसलिन	(Vaseline)	" "

प्रथम पोटास तथा केओलिन मिलावे फिर
२ गोली बनावे।

(५) कीनीन गोली (Quinine Pills)

R/

कीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	६ ग्रेन
एसिड साइट्रिकक	(Acid Citric)	उचित मात्रा
या	or	
लाइम जूस	(Lime Juice)	उचित मात्रा

गोली बना मधु या ग्लीसरीन लगावें।

मिश्रण (Mixture)

(१) क्लोरिन मिक्श्चर (Chlorine Mixture)

R/

क्वीनीन सल्फ	(Quinine Sulph)	२ ग्रेन
क्लोरीन जल	(Chlorine Aqua)	१ औंस

(२) क्लोरिन जल (Chlorine Water)

R/

पाट० क्लोरेट	(Pot. Chlorate)	३० ग्रेन
एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid Hydrochloric Dil)	४० बूंद
जल	(Aqua)	१२ औंस

पोटेसियम क्लोरेट को बोतल में डाल हाइड्रोक्लोरिक एसिड डाले। झागोत्पन्न के समय काग लगा दे फिर धीरे धीरे जल मिलाते जावे।

(३) स्पिरिट वाइनम गैलिसाइ मिक्श्चर (Spt. Vin. Gallici Mixt.)

R/

ब्राण्डी	(Brandy)	२ औंस
सिनेमन जल	(Cinnamon Water)	२ „
सुगर	(Sugar)	२ ड्राम
अण्डे का छिलका	(Yalk egg)	१ „

प्रथम छिलका तथा चीनी मिलावे फिर जल तथा ब्राण्डी मिला देवे।

(४) मुसिलेज एकेसिया (Mucilage Acacia)

R/

बबूल गोंद	(Gum Acacia)	८ औंस
जल	(Aqua)	१२ „

जल में घुला आँच दिखलाना। बन्द पात्र में रखना।

(५) मुसिलेज ट्रैगेकैंथ (Mucilage Tragacanth)

R/

पल्व ट्रैगेकैंथ	(Pulv. Tragacanth)	१ ड्राम
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt. Rectified)	४ „
जल	(Aqua)	२० औंस

स्पिरिट में ट्रैगेकैंथ को मिला हिलाकर जल मिलावे।

लाइकर (Liquor)

(१) लाइकर कैल्सिस (Liquor Calcis)

R/

लाइम	(Lime)	१ औंस
जल	(Aqua)	४ „

दोनों को मिला २० मिनट तक रखे।

(२) लाइकर अमन एसीटास (Licr. Ammon Acetas)

R/

अमन कार्ब	(Ammon Carb)	१ औंस
एसीटिक एसिड फोर्ट	(Acetic Acid Fort)	४ ड्राम ३ „
जल	(Aqua)	२० „

अमन कार्ब को सूक्ष्म चूर्ण में परिणित कर १० औंस जल में मिलावे तत्पश्चात् एसीटिक एसिड फोर्ट मिला फिर शेष जल मिला देवे।

(३) लाइकर हाइड्रार्ज परक्लोराइड (Liqr. Hydrarg Perchloride)

R/

हाइड्रार्ज परक्लोर	(Hydrarg Perchlor)	१० ग्रेन
साधारण नमक	(Common Salt)	„ „
जल	(Aqua)	२० औंस

भली भाँति मिला देवे।

(४) लाइकर पोटाश (Liqr. Potash)

R/

पाट० हाइड्राक्साइड	(Pot. Hydroxide)	२० ग्रेन
जल	(Aqua)	१ औंस

जल में धीरे धीरे मिलावे

(५) लाइकर प्लम्बाई सब एसीटेटिस डिल या गोलार्डस लोशन (Liqr. Plumbi subacetatis Dil or Goulard's lotion)

R/

लाइकर प्लम्बाई सब एसीटेटिस फोर्ट (Liqr. Plumbi Subacetatis fort) २ ड्राम

रेक्टिफाइड स्पिरिट	(Rectified Spirit)	२ "
जल	(Aqua)	२० औंस

प्रथम स्पिरिट और जल को मिलावे
तत्पश्चात् प्लम्बाई को मिला खूब हिलादे।

(६) लाइकर प्लम्बाई सब एसीटेटिस या लेड लोशन (Liqr. Plumbi subacetatis or lead lotion)

R/

लेड एसीटेट	(Lead Acetate)	३० ग्रेन
रेक्टिफाइड स्पिरिट	(Rectified Spit.)	२ ड्राम
जल	(Aqua)	२० औंस

भली भाँति हिला लेवे।

लेप (Liniment)

(१) लिनिमेण्ट कैम्फर (Liniment Camphor)

R/

कैम्फर	(Camphor)	१ औंस
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt. Rectified)	उचित मात्रा।
मीठा तैल	(Sweat oil)	४ औंस

कैम्फर को स्पिरिट में भलीभांति घोलने
के बाद तैल मिलादें।

(२) लिनिमेण्ट क्लोरोफार्म (Liniment Chloroform)

R/

लिनिमेंट कैम्पर	(Liniment Camphor)	२ औंस
क्लोरोफार्म	(Chloroform)	" "

भलीभांति मिला रखलें।

(३) लिनिमेण्ट कैल्सिस (Liniment Calcis)

R/

लाइकर कैल्सिस	(Liqr Calcis)	२ औंस
मीठा तैल	(Sweat Oil)	" "

भलीभांति मिलाते हैं।

(४) लिनिमेण्ट टर्पेण्टाइन (Linimnt Turpentine)

R/

आयल टर्पेण्टाइन	(Oil Turpentine)	२३ औंस
कैम्फर	(Camphor)	२ "
साफ्ट सोप	(Soft soap)	३ "
जल	(Aqua)	१० "

प्रथम कैम्फर को तारपीन तैल में घुलावे फिर सोप को ४ औंस जल में घुलावे। अन्त में दोनों घोल को एक में मिला खूब हिलाने के पश्चात् इतना जल मिलावे कि कुल २० औंस हो जाय।

(५) मस्टर्ड लिनिमेण्ट (Mustard Liniment)

R

कैम्फर	(Camphor)	४ ड्राम
रेक्टिफाइड स्पिरिट	(Spt Rectified)	८ औंस
केस्टर आयल	(Castor Oil)	१० "
मास्टर्ड आयल	(Mustard Oil)	३ ड्राम

कैम्फर को स्पिरिट में घोलने के पश्चात् एरण्ड तथा सरसों तैल मिलादें।

(६) ब्लैकवाश या लोशियो हाइड्रार्ज निग्रा (Black Wash or Lotio Hydrarg Nigra)

R/

कैलोमल	(Calomel)	६० ग्रेन
ग्लीसरीन	(Glycerine)	८ ड्राम
मुसिलेज	(Mucilage)	२½ औंस
लाइकर कैल्सिस	(Liqr. Calcis)	२० "

कैलोमल को ग्लीसरीन में मिलाने के बाद मुसिलेज मिलावे; फिर ४ औंस लाइकर कैल्सिस मिला भलीभांति हिलाने के बाद शेष लाइकर भी मिला दें।

मलहम (Ointments)

(१) बोरिक एसिड मलहम (Boric Acid oint)

R/

पल्व बोरिक एसिड	(Pulv. Boric Acid)	१ औंस
वैसलीन	(Vaseline)	९ "

भलीभांति मिला रखे।

(२) जिंक मलहम (Zinc Ointment)

R/

जिंक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	२ औंस

वैसलीन में जिंक को शनैः शनैः मिलावे। आवश्यकतानुसार गरम भी कर सकते हैं।

(३) आयोडिन मलहम (Iodine Ointment)

R/

आयोडिन	(Iodine)	२० ग्रेन
पाट० आयोडाइड	(Pot. Iodide)	" "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ ड्राम

वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

आयोडिन, आयोडाइड तथा ग्लीसरीन को खरल में मिलाने के पश्चात् वैसलीन मिलावे।

(४) गन्धक मलहम (Sulphur Ointment)

R/

पल्व सल्फर सब एसीटेट	(Pulv Sulphur Subacetate)	१ औंस
वैसलीन	(Vaseline)	९ "

भलीभाँति मिलावे।

(५) आयडोफार्म मलहम (Iodoform Ointment)

R/

पल्व आयडोफार्म	(Pulv. Iodoform)	८ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	३ औंस

भली भाँति मिलावे।

(६) प्लम्बाई मलहम (Plumbi Ointment)

R/

लेड एसीटेट	(Lead Acetate)	२० ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

भली भाँति मिलावे।

(७) कैलोमल या हाइड्रार्ज सबक्लोर मलहम (Calomel or Hydrarg Subchlor oint)

R/

हाइड्रार्ज सबक्लोर	(Hydrarg Subchlor)	४ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	५ औंस

भली भाँति मिलावे।

(८) रेड या हाइड्रार्ज आयोडाइड रुब्रा मलहम (Red or Hydrarg Iodide Rubra Ointment)

R/

हाइड्रार्ज आयोडाइड रुब्रा	(Hydrarg Iodide Rubra)	२० ग्रेन
वैसलीन	(Vaseline)	१ औंस

भली भाँति मिलावे।

(९) स्काट या हाइड्रार्ज को० मलहम (Scott's or Hydrarg Co. Ointment)

R/

हाइड्रार्ज मलहम	(Hydrarg Oint)	१ औंस
वैक्स	(Wax)	६ "
ओलिव आयल	(Olive Oil)	६ "
कैम्फर	(Camphor)	३ "

मलहम में वैक्स और तैल मिला गरम करे; फिर कैम्फर मिलावे।

(१०) हाइड्रार्ज मलहम (Hydrarg. Ointment)

R/

मर्करी	(Mercury)	१ औंस
वैसलीन	(Vaseline)	२ "

भलीभाँति मिलावे।

(११) हाइड्रार्ज अमोनिएटा मलहम (Hydrarg Ammoniata Ointment)

R/

हाइड्रार्ज अमोनिएटा	(Hydrarg Ammoniata)	१ औंस
वैसलीन	(Vaseline)	९ "

भली भाति मिलावे।

(१२) हेमामेलिड मलहम (Hemamelid Ointment)

R/

एक्स्ट्रैक्ट हेमामेलिडिस लिक्विड	(Ext Hemamalidis Liquid)	२ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	२ औंस

भली भाँति मिलावे।

(१३) एसिड कार्बोलिक मलहम (Acid carbolic Ointment)

R/

कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	१ औंस
ग्लीसरीन	(Glycerine)	३ "

वैसलीन (Vaseline) २१ औंस

एसिड को ग्लीसरीन में घोलने के पश्चात् वैसलीन मिलावें।

(१४) क्रिसेरोबिन मलहम (Crysarobin ointment)

R/

क्रिसेरोबिन (गोवा पाउडर) (Crysarobin or Goa Powder) २० ग्रेन
वैसलीन (Vaseline) १ औंस

भली भांति मिलावे।

(१५) बेलाडोना मलहम (Belladonna Ointment)

R/

एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना (Ext. Belladonna) १ ड्राम
स्पि० रेक्टिफाइड (Spt Rectified) " "
वैसलीन (Vaseline) १ औंस

भली भांति मिलावे।

(१६) सैलिसिलिक मलहम (Salicylic Ointment)

R/

पल्व एसिड सैलिसिलिक (Pulv Acid Salicylic) १० ग्रेन
वैसलिन (Vaseline) १ औंस

भलीभांति मिलावे।

(१७) गैलि कम ओपियाई मलहम (Galli Cum Opii Ointment)

R/

पल्व गाल (Pulv Gall) ४ ड्राम
ओपियम (Opium) ३ "
वैसलीन (Vaseline) २ औंस

भलिभांति मिलावे।

टिंचर (Tincture)

(१) टि० आयोडिन (Tincture Iodine)

R/

आयोडिन (Iodine) ४ ड्राम
पाट० आयोडाइड (Pot. Iodide) " "

जल	(Aqua)	४ ड्राम
रेक्टिफाइड स्पिरिट	(Spt.Rectified)	२० औंस

आयोडिन तथा आयोडाइड को जल के साथ एक बोतल में रखे जब सब घुल जाय तब स्पिरिट मिलावे।

ग्लीसरीन लेप (Glycerine Paint)

(१) ग्लीसरीन बोरिक (Glycerine Acid Boric)

R/

पल्व बोरिक एसिड	(Pulv Boric Acid)	२ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

ग्लीसरीन को गरम कर बोरिक एसिड मिलावे और खरल कर एक कर दे।

(२) ग्लीसरीन बोरैक्स (Glycerine Borax)

R/

सोडा बाईबोरेट	(Soda Biborate)	१ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

ग्लीसरीन को गरम कर सोडा मिला खरल कर रखे।

(३) एलम ग्लीसरीन (Alum Glycerine)

R/

पल्व एलम	(Pulv Alum)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	" "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

प्रथम एलम को जल में घुलावे फिर गरम ग्लीसरीन में मिला खरल करे।

(४) ग्लीसरीन कार्बोलिक (Glycerine Carbolic)

R/

कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	१ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

ग्लीसरीन को गरम कर कार्बोलिक एसिड मिला खरल कर रखे।

(५) ग्लीसरीन टेनिक (Glyerine Tannic)

R/

एसिड टेनिक	(Acid Tannic)	१ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

ग्लीसरीन को गरम कर एसिड मिला खरल करे।

(६) ग्लीसरीन इक्थ्याल (Glycerine Ichthyol)

R/

इक्थ्याल	(Ichthyol)	१ ड्राम
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

ग्लीसरीन को गरम कर इक्थ्याल मिला खरल करे।

(७) ग्लीसरीन बेलाडोन (Glycerine Belladonna)

R/

एक्स्ट्रैक्ट बेलाडोना	(Ext Belladonna)	१ ड्राम
जल	(Aqua)	” ”
ग्लीसरीन	(Glycerine)	१ औंस

बेलाडोना को जल में मिला ग्लीसरीन को गरम कर परस्पर मिलावे।

कषाय (Infusion)

(१) इन्फुजन आरेंशाई (Infusion Aurantii)

R/

बिटर आरेंज पील (खट्टी नारंगी छाल)	(Bitter Orange Peel)	२ ड्राम
खौलता जल	(Boiling Water)	२ औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट रख मसल कर छान ले।

(२) इन्फुजन आरेंशाई को० (Infusion Aurantii Co.)

R/

बिटर आरेंज पील	(Bitter Orange Peel)	८ ड्राम

लीमन पील (नीबू का ताज़ा छाल)	(Lemon Peel)	२ ड्राम
लवंग चूर्ण	(Bruised Cloves)	६५ ग्रेन
खौलता जल	(Boiling Water)	१० औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट तक रख मसल कर छान ले।

(३) इन्फुजन कैरियोफिली (Infusion Caryophylli)

R/

जौकुट लवंग	(Bruised Cloves)	२ ड्राम
खौलता जल	(Boiling Water)	१० औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट तक रख मसल कर छान ले।

(४) इन्फुजन चिरेता (Infusion Chiratta)

R/

चिरेता का छोटा २ टुकड़ा	(Bruised Chiratta)	४ ड्राम
खौलता जल	(Boiling Water)	१० औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट तक रख मसल कर छान ले।

(५) इन्फुजन जेंशियन को० (Infusion Gentian Co.)

R/

जेंशियन रूट	(Gentian Root)	१ ड्राम
विटर आरेंज पील	(Bitter Orange Peel)	" "
लीमन पील	(Lemon Peel)	२ "
खौलता जल	(Boiling Water)	१० औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट तक रख मसल कर छान ले।

(६) इन्फुजन डिजिटेलिस (Infusion Digitalis)

R/

डिजिटेलिस पत्र चूर्ण	(Digitalis Leaves Powder)	३ ग्रेन
खौलता जल	(Boiling Water)	१ औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट तक रख मसल कर छान ले।

(७) इन्फुजन कैलुम्बा (Infusion Calumba)

R/

कैलुम्बा जड़ के टुकड़े	(Calumba root Pieces)	३ ग्रेन
कोल्ड (शीतल) जल	(Cold Water)	१ औंस

एक ढक्कनदार पा में १९ मिनट तक रख मसल कर छान ले।

(८) इन्फुजन सीना (Infusion Senna)

R/

सीना	(Senna)	२ औंस
पल्व जिंजर	(Pulv Ginger)	५४ ग्रेन
खौलता जल	(Boiling Water)	२० औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट तक रख मसल छान लेवे।

(९) इन्फुजन सेनीग (Infusion Senega)

R/

सेनीगा जड़	(Senega root)	४ ड्राम
खौलता जल	(Boiling Water)	१० औंस

एक ढक्कनदार पात्र में आधे घण्टे तक रख मसल कर छान लेवे।

(१०) इन्फुजन कैसिया (Infusion Quassia)

R/

कैसिया	(Quassia)	५ ग्रेन
शीतल जल	(Cold Water)	१ औंस

एक ढक्कनदार पात्र में १५ मिनट तक रख मसल कर छान ले।

प्रलेप (Liniments)

(१) लिनिमेण्ट ए०, बी०, सी० (Liniment A. B. C.)

R/

लिनिमेंट एकोनाइट	(Linimennt Aconite)	१ औंस
" बेलाडोना	(" Belladonna)	" "

[illegible] १ औंस

[illegible]

(३) [illegible]

[illegible]

R/

[illegible]	([illegible])	[illegible]
[illegible]	([illegible])	[illegible]
[illegible]	([illegible])	[illegible]
[illegible]	([illegible])	[illegible]
[illegible]	([illegible])	[illegible]

(४) [illegible] ([illegible])

R/

[illegible]	([illegible])
बर्गेमाट "	([illegible])
[illegible] "	([illegible] " ")
निरोली "	([illegible] ")
[illegible] "	([illegible])
रोजमेरी "	([illegible] ")
रेक्टिफाइड स्पिरिट	([illegible] Spirit)

या (or)

बर्गेमाट आयल	(Bergamot Oil)	१२५ भाग
लीमन "	(Lemon ")	[illegible] "
निरोली "	(Neroli ")	०.२ "
रोजमेरी "	(Rosemary ")	[illegible] "
थाइम "	(Thyme ")	[illegible] "
ऑरेंज फ्लावर जल	(Orange Flower Water)	[illegible] "
अलकोहल	(Alcohol)	१०० "

तेल को अलकोहल में घुलाने के बाद जल मिलावें।

(४) पल्व एसिड सैलिसिलिक को० (Pulv Acid Salicylic Co.)

R/

सैलिसिलिक एसिड (Salicylic Acid) १ औंस

बोरिक एसिड	(Boric Acid)	१० औंस
फ्रेंच चाक	(French Chalk)	८७ "

पैर में पसीना अधिक निकलने पर व्यवहार करे।

(५) स्मेलिंग साल्ट (Smelling Salt)

R/

अमन कार्ब	(Ammon Carb)	५ पौण्ड
सोलुशन आफ अमोनिया	(Solution of Ammonia)	३० औंस
लेवेण्डर आयल	(Lavender Oil)	३० बूंद
क्लव (लवंग) आयल	(Clove Oil)	३० "

मूर्च्छा नाशक है।

या (Or)

पाट० कार्बोनेट	(Pot Carbonate)	१ औंस
अमन क्लोराइड	(Ammon Chloride)	१ "
निरोली आयल	(Neroli Oil)	१० बूंद
क्लव आयल	(Clove Oil)	५ "
लेवेण्डर आयल	(Lavender Oil)	३० "
ग्लीसरीन	(Glycerine)	५ प्र० श०

प्रथम कार्बोनेट तथा क्लोराइड को मिला दे, फिर तैल, अन्त में ग्लीसरीन को चूर्ण को गीला करने के निमित्त मिला देते हैं।

मच्छर से बचने के उपाय

R/

(१) आयल एनिसि	(Oil Anisi)	३ बूंद
आयल यूकेलिप्टस	(Oil Eucalyptus)	३ "
टर्पेण्टाइन	(Turpentine)	३ "
बोरिक आयण्टमेण्ट	(Boric Ointment)	१ औंस

खुले भाग पर मलना।

R/

(२) किरासीन आयल	(Kerosen Oil)	१ औंस
कोकोनट आयल	(Cocoanut Oil)	१ "
सिट्रोनेल आयल	(Citronella Oil)	१ "

खुले भाग पर मलना।

R/

(३) सिट्रोनेल आयल	(Citronella Oil)	१ ड्राम
वैसलीन	(Vaseline)	२ औंस

खुले भाग पर मलना। मच्छर नहीं काटते।

क्रीम (Cream)

(१) कैलेमाइन क्रीम (Calamine Cream)

R/

जिक आक्साइड	(Zinc Oxide)	१ ड्राम
कैलेमाइन	(Calamine)	१ "
लाइम वाटर	(Lime Water)	८ "
अलिव आयल	(Olive Oil)	१ औंस

चर्म रोग मे लाभप्रद है।

कोल्ड क्रीम (Cold Cream)

R/

(२) अमण्ड आयल	(Almond Oil)	४२९ भाग
लैनोलीन	(Lanoline)	१८५ "
सफेद मोम	(White wax)	६२ "
बोरक्स	(Borax)	४½ "
रोज वाटर	(Rose water)	३०० "

प्रथम तीनों औषधियों को गरम कर मिला के फिर बोरेक्स को गुलाबजल में घोल मिला देवे। मुखमण्डल पर लगाने से चर्म कोमल होता है।

खटमल नाशक

R/

(१) आयल टर्पेण्टाइन	(Oil Turpentine)	८ औंस
किरासन आयल	(Kerosen Oil)	५ सेर

बालों की औषधियाँ

R/

(१) रीसार्सिन	(Resorcin)	४ भाग
टिं० कैप्सिकम	(Tr Capsicum)	१५ "

कैस्टर आयल	(Castor Oil)	१० भाग
अल्कोहल	(Alcohol)	१०० "
रोज आयल	(Rose Oil)	१० बूंद

बालों में मलना।
बालों को गिरने से रोकती है।

R/

(२) पाइरोगैलक एसिड	(Pyrogallic Acid)	७ भाग
साइट्रिक एसिड	(Citric Acid)	०.६ "
बोरोग्लीसरीन	(Boroglycerine)	२२ "
जल	(Water)	२०० "

सायकाल इसे बालों में लगा प्रातःकाल
अमोनिया के हल्के घोल से धोते हैं।
बाल काले होते हैं।

R/

(३) बेरियम सल्फाइड	(Barium Sulphide)	५ भाग
पाउडर्ड सोप	(Powdered Soap)	१ "
फ्रेंच चाक	(French Chalk)	७ "
स्टार्च	(Starch)	७ "

एकत्र मिला रखे।
एक भाग यह चूर्ण ३ भाग जल में मिला
बालों पर लेप कर ५ मिनट पश्चात् धो देवे।
स्थानिक बाल उड़ जाते हैं।

R/

(४) बेरियम सल्फाइड	(Barium Sulphide)	२ भाग
स्टार्च	(Starch)	५ "

एकत्र मिला रखना।
थोड़े जल में मिला गाढ़ा कर बालों पर लेप करे।
फिर कुछ मिनट पश्चात् धो देवे।
बाल उड़ जाते हैं।

R/

(५) ओलिव आयल	(Olive Oil)	४ औंस
ग्लीसरीन	(Glycerine)	३ "

रोज आयल	(Rose Oil)	२ ड्राम

वालों में लगाते हैं।
वालों को कोमल तथा
चमकदार बनाता हैं।

R/

(६) मृदु सोप	(Soft Soap)	१ औंस
रेक्टिफाइड स्पिरिट	(Rectified Spirit)	२ ”

वाल धोने के लिये उपयोगी है।

जूँ नाशक

R/

(१) नेफ्थलीन पाउडर	(Nephthalene Powder)	९६ भाग
क्रीयोसोट	(Creosote)	२ ”
आयडोफार्म	(Iodoform)	२ ”

कपड़ों पर छिड़कना
तथा सीवन पर मलना।

दंत मंजन

R/

१) टिन आक्साइड	(Tin Oxide)	१९ भाग
पल्व सोप	(Pulv Soap)	४ ”
सूगर	(Sugar)	९ ”
विण्टर ग्रीन आयल	(Winter green Oil)	१ ”
क्लव्स आयल	(Cloves Oil)	१ ”
प्रेसिपिटेटेड चाक	(Precipitated Chalk)	६० ”

एकत्र खरल कर कपड़ छान कर दांतों में मले।
प्रातः तथा सायकाल।

R/

(२) मेंथल	(Menthol)	१० ग्रेन
मेग कार्ब लीविस	(Mag Carb levis)	२ औंस
सैक्रिन	(Sacrin)	१० ग्रेन
लवग तैल	(Cloves Oil)	१ ड्राम
कार्बोलिक एसिड	(Carbolic Acid)	½ ”

प्रसिपिटेड चाक	(Precipitate chalk)	१ पौण्ड

एकत्र खरल कर रखना।
दांतों में मलना।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(३) सोप	(Soap)	५ ड्राम
बोरेक्स	(Borax)	३ "
मेंथल	(Menthol)	२० ग्रेन
यूकेलिप्टस	(Eucalyptus)	२० बूंद
विण्टरग्रीन आयल	(wintergreen Oil)	६० "
स्पि० रेक्टिफाइड	(Spt. Rectified)	४ ड्राम
चाक	(Chalk)	१ पौण्ड

एकत्र मिला दाँतों को मले।
प्रातः तथा सायंकाल।

R/

(४) एसिड आर्सेनिएट	(Acid arseniate)	२ भाग
मार्फीन सल्फेट	(Morphine Sulphate)	१ "
क्रीयोजोट	(Creosote)	उचित मात्रा

दांतों को मले।

चूहा नाशक

R/

(१) पेरिस प्लास्टर	(Paris Plaster)	६ भाग
सूगर (चीनी)	(Sugar)	१ "
आटा	(Flour)	२ "

घी लगे पात्र में रख सूखे स्थान पर रखना।
चूहे खा कर मर जाते हैं।

R/

(२) संखिया	(Arsenic)	७ ड्राम
तीसी चूर्ण	(Crushed Linseed)	" "
सूट	(Soot)	" "

चूहे भागते हैं।

R/

(३) कुचिला सत्व	(Strychnine)	१ औंस
चीनी	(Sugar)	१ "
ओटमील	(Oatmeal)	½ "
अल्ट्रामिरिन	(Ultramarine)	१० ग्रेन

चूहा नाशक है।

मक्खीनाशक

(१) एरण्ड तैल १० भाग राल १६ भाग
आग पर पका मोटे कागज पर फैला रखते हैं।
मक्खियाँ चिपक कर मर जाती हैं।

R/

(२) फर्मेलिन	(Fermaline)	५ औंस
जल	(Water)	२०० "

तस्तरी में रखे।
मक्खियां पी कर मर जाती हैं।

R/

(३) रेजिन	(Resin)	१५० भाग
तीसीतैल	(Linseed Oil)	५० "
मधु	(Honey)	१८ "

तैल तथा रेजिन को गरम कर पिघलाने के पश्चात् मधु मिला कागज पर बिछा देते हैं।

R/

(४) सोडा आर्सिनेट	(Soda Arsenate)	१½ पौण्ड
चीनी	(Sugar)	३ "
जल	(Water)	१ गैलन

रंगीन कागज़ को घोल में भिंगो सुखा लेते हैं।
मक्खियां नष्ट होती हैं।

सल्फा श्रेणी
(Sulpha Group)
सल्फोनेमाइड (Sulphonamide)

वर्णन—यह तीव्र पूयोत्पादक जीवाणु नाशक है। विभिन्न कम्पनियों ने इसको विभिन्न नामों से तैयार किया है। यह जल में कठिनाई के साथ घुलती है। यह प्रोण्टोसील (Prontosil) नामक ओषधि से ४ गुनी अधिक शक्तिशाली होती है।

स्वरूप—यह गंधहीन, स्वादुहीन श्वेत वर्ण की होती है।

मात्रा—२ से ६ गोली नित्य।

गुण—

१. स्ट्रेप्टोकोकस (Streptococcus), तथा स्टैफिलोकोकस (Staphylococcus) नामक पूयोत्पादक जीवाणुओं के संक्रमण को नष्ट करती है।

२. विसर्प (Erysipelas), कर्णप्रदाह (Otitis), तुण्डिकेरी (Tonsilitis), तथा अधस्त्वक् शोथ (Cellulitis), नाशक है।

३. व्रण तथा पिडिका नाशक है।

विषैला प्रभाव—

१ चक्कर आना (Vertigo)

२ हल्लास होना (Nausea)

३ हृदय स्पन्दनाधिक्य (Palpitation)

४ मुख का शुष्क होना (Dryness of the mouth)

५. नीलिमा (Cyanosis)

६ नाड़ी शोथ (Nuritis)

चिकित्सा—सर्जिकाक्षार या सोडा बाईकार्ब ग्लुकोज तथा जल का पर्याप्त मात्रा में व्यवहार करना।

निषेध—

१. विरेचन नहीं देना चाहिये।

२ धूप में नहीं रहना चाहिये।

३. गंधक से बनी ओषधियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

सिबेजाल (Cibazol)

वर्णन—यह सीबा कम्पनी (Ciba Company) की बनाई हुई ओषधि है, जो सल्फोनेमाइड आदि ओषधियों से अत्यधिक प्रभावशाली है।

स्वरूप—यह श्वेत वर्ण की होती है। यह चूर्ण तथा गोली के रूप में बाजार में उपलब्ध है।

गुण—स्ट्रेप्टोकोकस (Streptococcus,) स्टैफिलोकोकस (Staphylococcus), गोनोकोकस (Gonococcus) तथा मेनिंगोकोकस (Meningococcus) न्यूमोकोकस (Pneumococcus) के संक्रमण को नष्ट करती है।

व्यवहार—

१ व्रण तथा पिडिकाओं में २ गोली की मात्रा में दिन में ३ वार खिलाते हैं।

२ कर्ण शोथ में प्रथम दिन २ गोली की मात्रा में ६ वार खिलाते हैं तत्पश्चात् २ गोली की मात्रा को दिन में ३ वार व्यवहृत करते हैं।

३. मस्तिष्कावरण शोथ (Cerebral Meningitis) में एक मात्रा में २ से ४ गोली का व्यवहार करते हैं। इस प्रकार ज्वर की तीव्रता में एक दिन में १२ गोली तक देते हैं। ज्यों ज्यों ज्वर कम होने लगता है त्यों त्यों मात्रा भी कम कर देते हैं।

४. सौम्य (Sub-acute), तीव्र (Acute) तथा चिरकालिक (Chronic), वर्त्ममण्डल शोथ (Conjunctivitis), पोथकी (Trachoma) तथा सम्पूर्ण प्रकार के पक्ष्म शोथ (Blephritis) में २ गोली की मात्रा में दिन मे तीन वार खिलाते हैं तथा १०% प्र० शत सिबाजाल मलहम (10% Cibazol Oint) को स्थानिक व्यवहार में लाते हैं।

५. पूयमेह तथा तज्जन्य वर्त्ममण्डल शोथ में २ से ७ गोली की मात्रा का व्यवहार करते हैं तथा उपरोक्त मलहम को लगाते हैं।

दुष्परिणाम—

१. मूत्र में प्रक्षेप निकलता है (Sediment in Urine)

२ मुख की शुष्कता (Dryness of the mouth)

३ घबराहट (Anxytis)

चिकित्सा—ग्लुकोज मिश्रित जल का व्यवहार करना।

एम. एण्ड. बी. ६९३ (M. & B. 693)

वर्णन—इस ओषधि को मे एण्ड बेकर कम्पनी ने तैयार किया है। यह सल्फेनिलिक एसिड (Sulphanilic acid) तथा एमिनोपाइरायडिन (Aminopyridine) के संयोग से बनती है। यह न्यूमोकोकस (Pneumococcus) तथा गोनोकोकस (Gonococcus) को प्रधानतः नष्ट करती है।

स्वरूप—यह श्वेत रंग के कणीय चूर्ण (Crystalline Powder) के रूप में होती है, जिसका मौखिक व्यवहार टिकिया के रूप में किया जाता है।

गुण—१ न्यूमोकोकल-संक्रमण नाशक है। २. गोनोकोकल-संक्रमण नाशक है

व्यवहार—

फुफ्फुस प्रदाह (Pneumonia)

मात्रा—व्याधि की तीव्रता में २ ग्राम की मात्रा से प्रारम्भ करते हैं। यह मात्रा ४ घण्टे पश्चात् पुनः दी जाती है; तत्पश्चात् १ ग्राम की मात्रा को प्रत्येक चार चार घण्टे के पश्चात् ३६ घण्टे तक प्रविष्ट करते हैं। व्याधि के लक्षणों में कमी होने पर मात्रा भी घटा कर ½ ग्राम कर देते हैं। यह मात्रा भी २४ घण्टों तक प्रत्येक चार चार घण्टे पर दी जाती है। अन्त में यही ½ ग्राम की मात्रा प्रत्येक तीन, तीन घण्टे पर देते हैं। इसकी पूर्ण मात्रा २० ग्राम की है। इसे दूध में मिला कर रोगी को पिलाते हैं।

मार्ग— १ मुख द्वारा (Oral) २. सूची वेध द्वारा (Injection)

प्रभाव—

१. तापक्रम (Temperature) ३६ घण्टे के अन्दर कम हो जाता है।
२. विषमयता (Toxaemia) कम हो जाती है।
३ फुफ्फुस का यकृतीय-भवन (Hepatisation) रुक जाता है।
४. रोगी की दशा पूर्व की अपेक्षा सुधर जाती है।
५. फुफ्फुसीय उपद्रवों को कम कर देती है जिससे मृत्यु संख्या घट जाती है।

शिशुओं के मात्राओं की तालिका

अवस्था	१ से ३ मास	६ मास से २ वर्ष	३ वर्ष	५ वर्ष
मात्रा	०·१२५ ग्राम प्रत्येक ४ घण्टे पर	०·२५ ग्राम प्रत्येक ४ घण्टे पर	०·३७५ ग्राम प्रत्येक ४ घण्टे पर	०·५ ग्राम प्रत्येक ४ घण्टे पर

घातक रोगियों में प्रारम्भिक मात्रा दुगुनी देनी चाहिये।

पूयमेह (Gonorrhoea)

एम एण्ड बी ६९३ गोनोकोकाई (Gonococci) जन्य सभी व्याधियों को नष्ट करती है।

गोनोकोकाई जन्य व्याधियाँ—

१ मूत्र प्रणाली शोथ (Urethritis)
२. गर्भाशय की ग्रीवा का शोथ (Cervicitis)
३ उपाण्ड का शोथ (Epididymitis)
४. तीव्र सन्धि शोथ (Acute Arthritis)

५ तारामण्डलशोथ (Iritis)

६ कुकुणक (Ophthalmia Nunatorum)

मात्रा—

पुरुषो में—प्रथम सात दिनों तक नित्य ६ गोली की मात्रा को एक दिन में इस क्रम से प्रविष्ट करते हैं कि प्रथम मात्रा २ गोली की, फिर २ मात्रा एक, एक गोली की तथा अन्तिम मात्रा पुनः २ गोली की प्रत्येक तीन घण्टे पर व्यवहृत करते हैं अर्थात् (२, १, १, २) या २ से ३ सप्ताहों तक दिन में ४ गोली खिलाते हैं। इसको एक, एक गोली की मात्रा से प्रत्येक ३ घण्टे पर चारों गोलियों को खिला देते हैं।

स्त्रियों मे—० ५० ग्राम की गोली को १ गोली की मात्रा में दिन मे ४ गोली प्रत्येक तीन घण्टे पर खिलाते हैं। यह मात्रा २ सप्ताहों तक व्यवहृत की जाती है। यदि पुनः आवश्यकता होती है तो १५ दिनों तक ओपधि सेवन बंद रख पुनः खिलाना प्रारम्भ करते है।

शिशुओं में—० १२५ ग्राम की मात्रा को किंचित् दूध मे मिलाकर प्रथम दो दिनों तक प्रविष्ट करते हैं। यह मात्रा दिन मे ४ वार प्रविष्ट की जाती है। इसके वाद उपरोक्त मात्रा को ४ दिनों तक दिन मे ३ वार प्रविष्ट करते है।

सूचीवेध की अवस्थाये—

१ रोगी जब ओषधि सेवन मुख द्वारा नहीं कर सकता।

२ रोग को शीघ्रता के साथ प्रभावित करने के निमित्त।

सूचना—यह आवश्यक है कि घातक रोगियों में प्रथम मात्रा सूचीवेध द्वारा प्रविष्ट की जाय तथा अन्य मात्राओं का मौखिक व्यवहार करना चाहिये।

मार्ग—१. मांसगत (Intra-muscular)

२ शिरागत (Intra-Venous)

मात्रा—१ ग्राम से ०.५ तथा ०.७५ तक।

विधि—यह आवश्यक है कि इस ओषधि को सूचीवेध द्वारा प्रविष्ट करते समय इसका एक भी बूंद त्वचागत न प्रविष्ट होवे अन्यथा वहाँ कोथ (सड़न) उत्पन्न हो जायेगी। यह सूची नितम्ब प्रान्त की मांस पेशियों मे ही प्रविष्ट करनी चाहिये। प्रविष्ट करते समय इस ओषधि का एक भी बूंद सूची के वाह्य पार्श्व मे नही लगा होना चाहिये। प्रविष्ट करने के पश्चात् विद्धस्थान को भली भाँति मल देना चाहिये। इसकी वेदना २, ३ दिनों तक बनी रहती है।

सर्वप्रथम १ ग्राम की मात्रा को चार घण्टे पर ६ मात्रा तक प्रविष्ट करते हैं। फिर इस मात्रा को घटा कर ०.७५ या ०.५ ग्राम की मात्रा कर देते हैं।

ओषधि को शिरामार्ग से प्रविष्ट करते समय २० सी० सी० नारमल सेलाइन (Normal Saline) में घोल कर व्यवहृत करते हैं। सूचीवेध की गति ५ सी० सी० प्रति मिनट होनी चाहिये। यह ध्यान रहना चाहिये कि ओषधि के शिरा से बाहर निकलने पर कोथ उत्पन्न हो जाता है।

एम०, एण्ड०, बा०, ६९३ का दुष्प्रभाव

१ शिरःशूल (Headache)
२ हृल्लास (Nausea)
३ भ्रम (Vertigo or dizziness)
४ वमन (Vomiting)
५ श्वासकष्ट (Breathlessness)
६ नीलिमा (Cyanosis)
७ तापाधिक्य (Hyper Pyrexia)
८ हृदयाधरिक प्रदेश में कष्ट (Epigastric discomfort)
९ चर्म पर पिडिकोत्पत्ति (Skin rashes)
१० मस्तिष्क-कार्य हीनता (Mental depression)
११. रक्तमेह (Haematuria)

चिकित्सा—

१. सोडाबाईकार्ब (Sodabicarb) का व्यवहार करना।
२. दुग्ध के साथ ओषधि सेवन करना।
३. ग्लुकोज (Glucose) का अधिक व्यवहार करना।
४. ओषधि के साथ निकोटेनिक एसिड (Nicotenic Acid) का व्यवहार करना।
५ लवण का अत्यधिक व्यवहार करना।

सल्फाग्वानिडिन (Sulphaguanidine)

वर्णन—यह प्रवाहिका (Bacillary Dysentary) तथा विसूचिका (Cholera) की सर्वोत्तम ओषधि है। यह आधुनिक युग में इन व्याधियों के लिये रामवाण समझी जाती है।

स्वरूप—श्वेत वर्ण की गंध तथा स्वादुहीन टिकिया के स्वरूप में बाजार में उपलब्ध है।

मात्रा—२ गोली की मात्रा में दिन में ३ बार प्रविष्ट करते हैं।

मार्ग—मौखिक।

विधि—इस ओषधि को सोडाबाईकार्ब (Sodabicarb) के साथ खिलाते हैं। इसका व्यवहार १४ दिनों से अधिक नहीं करते।

महोदय ने बहुत दिनों के पश्चात् घोर परिश्रम से तैयार किया है। इस ओषधि के निर्माण के पूर्व इसके स्थान पर सल्फा श्रेणी की ओषधियों का व्यवहार होता था। अनेकों वर्ष की तपस्या के पश्चात् इस ओषधि का आविष्कार हुआ, इसमें रोग-नाशक शक्ति अति प्रबल है। इसका सर्व प्रधान गुण यह है कि इसकी बड़ी से बड़ी मात्रा भी शरीर को हानि नहीं पहुँचाती।

गत महायुद्ध में यह ओषधि अद्भुत चमत्कारक सिद्ध हुई है। इसने उन रोगियों के प्राणों की रक्षा हठात् की है कि जिनके बचने की आशा 1% भी नहीं थी।

स्वरूप—यह पीले वर्ण के शुष्क चूर्ण के रूप में होती है; जो आक्सफोर्ड यूनिट की मात्रा में रबर की टोपी से बंद शीशी में बाजार में उपलब्ध होती है। यह टिकिया तथा मलहम के रूप में भी बिकती है।

पेनिसिलिन के दो लवण—

(१) सोडियम (Sodium) (२) कैल्शियम (Calcium)

गुण—यह ओषधि जीवाणु को नष्ट नहीं करती, प्रत्युत उनकी वृद्धि को रोकती है। अतः इसे बैक्टिरियो स्टेसिस (Bacterio-stasis) कहते हैं। इसका व्यवहार शरीर की रक्षा करने वाली शक्ति के प्रबल होने तक करते हैं, जिससे जीवाणुओं की पुनः वृद्धि न हो सके। यह मूत्र मार्ग द्वारा शीघ्रता से त्यक्त होती है। अतः इसको प्रत्येक दो दो, वा तीन तीन घण्टों पर प्रविष्ट करते हैं।

पेनिसिलिन का प्रभाव स्टैफिलो (Staphylo) और स्ट्रेप्टो (Strepto) नामक कोकाई (Cocci) पर आशा से अधिक होता है।

इस ओषधि पर पूय वा सीरम का कोई प्रभाव नहीं होता, अतः इनकी उपस्थिति में भी इसका व्यवहार किया जा सकता है।

संयुक्त अस्थिभग्न (Compound Fracture) में कुल मात्रा ८ लाख यूनिट की ४ से १५ दिनों के अन्दर प्रविष्ट करते हैं। शल्य कर्म करने के पूर्व रोगी को २४ घण्टे में खूब पेनिसिलिन खिला देनी चाहिये। इस प्रकार से मृत्यु-संख्या 1% तक देखी गई। अधिक सफलता के लिये व्रणों को पूर्ण रूप से नहीं बंद करना चाहिये।

गैसजन्य कोथ (Gas gangrene) में अंगच्छेदन (Amputation) के अतिरिक्त इसका व्यवहार करने से मृत्यु-संख्या आधी हो जाती है। यदि सीरम के प्रयोग से रोगी के विषमयता (Toxeamia) की हालत तथा मूत्र-विषता (ureamia) का भय कम कर दिया हो तो सीरम के साथ इसको व्यवहृत करने से अंगच्छेदन (Amputation) की सम्भावना कम हो जाती है।

फुफ्फुसावरणगत संक्रमण (Intra-Plural Infection) में आवरण के अन्दर से पूय को चूषण-क्रिया (Aspiration) द्वारा बाहर निकाल लेने के पश्चात् इस ओषधि को ४८ घंटे के अन्दर ५० से ६० जार यूनिट तक प्रविष्ट कर देनी चाहिये।

शिर के क्षत (Head wound) में सल्फेनिलेमाइड तथा पेनिसिलिन को मिश्रित कर क्षत में डाल क्षत को सी देना चाहिये।

मस्तिष्क की गुहाओं के सक्रमण (Infection of the Ventricles of the Brain) १ हजार यूनिट को १ सी० सी० के घोल में मांसगत या ५ हजार से ८ हजार यूनिट को घोल कर प्रति दिन सुषुम्नावरण के बीच, लक्षणों के अव्यक्त होने तक, प्रविष्ट किया जाता है।

शिर के खुले व्रणों में सल्फेनोमाइड के साथ पेनिसिलिन को मिश्रित कर बुरक दें; क्योंकि बुरकने से ९५% सफलता मिलती है। किन्तु बुरकते समय ध्यान रहे कि रक्तस्राव के समस्त स्थान बंद हों, अन्यथा पेनिसिलिन बाहर निकल जायेगी और कुछ भी लाभ नहीं होगा।

मस्तिष्कावरण शोथ में १० हजार यूनिट की मात्रा को प्रतिदिन, ४ से ७ दिनों तक सुषुम्नागत प्रविष्ट करें और इसके साथ २ सल्फामीथेजीन (Sulphamethazine) भी देना चाहिये।

मस्तिष्क-सौषुम्निक ज्वर (Cereb.ospinal fever) में पेनिसिलिन से अत्युत्तम सफलता मिलती है। ब्रह्मवारि (Cerebrospinal fluid) को निकालने के पश्चात् १० यूनिट की मात्रा को सेलाइन में घोलकर सुषुम्नागत प्रविष्ट करना चाहिये। इस मात्रा को प्रत्येक २४ घण्टे के पश्चात् दुहराते रहें। इस प्रकार ४, ५ मात्रा प्रविष्ट करते हैं। इसके साथ यदि २४ घण्टे तक १५ हजार यूनिट की मात्रा को ३ घण्टे के हिसाब से मांस-पेशी में प्रविष्ट किया जाय तो सफलता और भी निश्चित है।

फुफ्फुस-प्रदाह (Pneumonia) में १० हजार यूनिट की मात्रा को प्रत्येक ३ घण्टे पर मांस में सूचीवेध द्वारा कम से कम दो दिन तक प्रविष्ट करते रहें।

जीवाणुमयता (Septicaemia) में १५००० यूनिट पेनिसिलिन को स्वाभाविक तापक्रम हो जाने के एक सप्ताह बाद तक मांसगत प्रविष्ट करते रहें। ऐसा करने से पूर्ण सफलता मिलती है। यदि जीवणुमयता की चिकित्सा न की जाय तो ८५% मृत्यु हो जाती है।

अस्थिमज्जाशोथ (Osteomyelitis) में शल्यकर्म के साथ साथ इसको प्रविष्ट करने से पूर्ण सफलता की आशा की जाती है। इसको शल्यकर्म के २ सप्ताह बाद तक प्रविष्ट करना चाहिये। चिरकालिक शोथ में इससे कोई लाभ नहीं होता।

चर्म-रोगों (Skin diseases) में २५० यूनिट प्रति सी० सी० के लोशन को लगाने से अधिक लाभ होता है।

पक्ष्म कोप (Blephritis) में इससे अधिक लाभ होता है।

पूयमेह (Gonorrhoea) के लिये यह संसार की सर्वोत्तम तथा प्रधान औषधि है। इसको १५ हजार यूनिट मात्रा से प्रारम्भ कर १ लाख यूनिट की मात्रा तक प्रविष्ट कर सकते हैं। इससे २४ घण्टे के अंदर शत-प्रतिशत सफलता मिलती है।

फिरंग (Syphilis) की प्रथमावस्था में यह लाभ पहुँचाती है, किन्तु चिरकालिक रोगों में इससे कोई लाभ नहीं होता है।

पेनिसिलिन का उपयोग—

१ सोपद्रव पूयमेह (Gonorrhoea and its Complication)
२. मस्तिष्कावरण शोथ (Cerebral meningitis)
३. गैसजन्य कोथ (Gas-Gangrene)
४ प्रमेह पिडिका (Carbuncle)
५ दग्ध (Burns and Scalds)
६ क्षत तथा व्रण (Wounds and ulcers)
७. फुफ्फुस-प्रदाह (Pneumonia)
८. जीवाणु मयता (Septicaemia)
९ पूयमयता (Pyaemia)
१०. आस्थिमज्जाशोथ (Osteomyelitis)

प्रवेश मार्ग—

१ मांसगत सूचीवेध (Intra-muscular Injection)
२. शिरागत सूचीवेध (Intra-Venous Injection)
३ घोल के रूप में (In Solution)
४ मलहम के रूप में (In Ointments)
५. गोली के रूप में (In tablets)
६. चूर्ण के रूप में (In Powders)

सूचीवेध का घोल निर्माण—

१. पुनः परिश्रुत जल में (रीडिस्टिल्ड वाटर Redistilled Water)
२. समबल लवणोदक में (नार्मल सेलाइन Normal Saline)
३ ५% ग्लुकोज (Glucose) के घोल में।

इन उपरोक्त तीनों वस्तुओं में से किसी एक में पेनिसिलिन को घोल कर प्रविष्ट करे। एक लाख यूनिट पेनिसिलिन के लिये ५ सी० सी० घोल पर्याप्त होता है। इसी प्रकार अधिक यूनिट के लिये घोल परिमाण बढाना चाहिये। यदि बारंबार प्रविष्ट करने की अपेक्षा दिन में एक वा दो बार ही देना हो तो इसे थोड़े से ही घोल में घोला जा सकता है।

पेनिसिलिन के सूचीवेध के पूर्व विचारणीय प्रश्न—

१ पेनिसिलीन को सर्वदा बर्फ में रखना चाहिये, क्योंकि १०°c के ऊपर यह गुणहीन होने लगती है।

२. पिचकारी (Syringe) को प्रत्येक बार जलमें उबालकर विसंक्रमित करे।

३ रोगी का चर्म, चिकित्सक का हाथ, तथा इनसे सम्बन्धित वस्तुयें पूर्णतः विसंक्रमित (Sterilised) होनी चाहिये।

४. पेनिसिलिन को अम्ल (Acids), क्षार (Alkalies), मदिरा (Alcohol) धातु (Metals) तथा दाहक वस्तुओं (Oxidising substances) के सम्पर्क मे नहीं लाना चाहिये, क्योंकि इससे वह शीघ्र नष्ट हो जाती है।

स्ट्रेप्टोमाइसिन हाइड्रोक्लोराइड (Streptomycin Hydrochloride)

वर्णन—यह ओषधि अभी थोडे समय से ही अविष्कृत हुई है, जो पेनिसिलिन सदृश ही चूर्ण के रूप में १ ग्राम तथा २ ग्राम की मात्राओं में क्रमसः २० तथा ४० सी० सी० के एम्प्युल (Ampule) में मिलती है; जो रिडिस्टिल्ड वाटर (Redistilled water) या नार्मल सेलाइन (Normal-Saline) में घुलन शील होती है।

मात्रा—

१ ग्राम के एम्प्युल को २ से ४ सी० सी० में घोलते है।

२ ग्राम के एम्प्युल को ४ से ८ सी० सी० में घोलते है।

इसे ६ से १२ घण्टे के अन्दर से २ सी० सी० की मात्रा में प्रविष्ट करते है।

२४ घण्टे के अन्दर ४ सूची से अधिक मात्रा नही प्रविष्ट करते हैं।

मार्ग—मांसगत (Intra-muscular)

उपयोग—

१ प्रत्येक प्रकार के क्षय में (In all sorts of Tuberculosis)

२ फुफ्फुस की व्याधियों मे (In Lungs Diseases)

३ अन्तः हृदयावरण शोथ में (In Endo-Carditis)

४. मस्तिष्कावरण शोथ मे (In Meningitis)

५ उदरावरण शोथ में (In Peritonitis)

६ प्रत्येक प्रकार की विद्रधि में (In All sorts of Abscess)

७. जीवाणुमयता मे (In Septicaemia)

८ मूत्र-मार्ग की व्याधियों में (In Urinarytract Diseases)

९. प्लेग में (Plague)

नोटः—पेनिसिलिन का विस्तृत वर्णन लेखक के 'पेनिसिलिन विज्ञान' नामक पुस्तक में देखें।

पथ्यापथ्य विमर्श

व्याध्यनुसार विवेचन

ज्वर (Fever)

पथ्य—यवागू, लाल शालि चावल तथा पुराने साठी चावल का भात, मूग, मसूर, चना, कुलथी तथा सोंठ का यूप, पटोलपत्र, बैंगन, परवल, करेला, ककोड़ा, पित्तपापड़ा, कच्ची मूली और गिलोय के पत्ते का शाक, लवा, तीतर, काला, लाल तथा चितकावर हिरन तथा खरगोश का मांस, नीबू, अनार तथा आमला हितकर हैं।

सन्निपात ज्वर

पथ्य—गरम जल, जवासा, कटेरी तथा गोखरु के क्वाथ से पकायी हुई पेया या दशमूल की ओषधियों से सिद्ध किया हुआ मांड देना चाहिये; तथा अग्नि के अनुसार वटेर, वत्तक, लवा, तीतर, खरगोश तथा गौरैया का मांस सिद्ध कर खिलाना चाहिये। अन्य पथ्य अग्नि की वृद्धि होने पर ज्वर सदृश होता है।

विषम ज्वर (Malaria)

पथ्य—घी, दूध मिश्री, मधु तथा पीपल, घी और लहसुन, शराव और माँड, एवं मुर्गा, तीतर और मोर का मांस खाने को देना चाहिये।

ज्वर मात्र में अपथ्य—दूषित जल, खटाई, पत्तों के शाक, प्रकृति तथा सयोग विरुद्ध अन्न-पान, दाहकारक गुरु पदार्थों का सेवन; पीठी तथा मैदा से बने पदार्थों का भक्षण, दिन में २, ३ या अधिक बार भोजन करना, अंकुरयुक्त अन्न सेवन, तरबूज, बडहर, मछली तथा पान का सेवन, वेगधारण तथा मैथुन सभी ज्वरों मे हानिकारक है।

ज्वरान्त में पथ्य—ज्वर छूट जाने पर भी जब तक पूर्ववत शक्ति न आजाय तब तक निम्न विषयों का त्याग करना चाहिये—

कसरत, परिश्रम, स्नान, भ्रमण, शीतल वायु तथा जल सेवन, मैथुन, स्नेह पान, वमन विरेचन दिन मे सोना तथा शरीर मे तैल मर्दन करना विषवत् हानिकर होते है।

अतिसार (Dysentary)

पथ्य—पुराने साठी चावल का भात, मॉड, मसूर तथा अरहर की दाल का यूष, केले का फल-फूल, जीरा, धनियाँ, जायफल, कषैले पदार्थ का रस, मधु, जामुन,

आदी, सोंठ, कैथ, बेलगिरी, खट्टा तथा मीठा अनार, भाँग, मजीठ, ताड़फल, गाय का घी, दूध, दही और माठा एवं मछली, खरगोश, लवा, तीतर तथा हिरन का मांस हितकर हैं।

अपथ्य—स्नान, गेहूँ, उड़द, जौ, बथुआ, मकोय, चौराई, कन्द साग, सहजन, आम, सुपारी, पेठा, तुम्बी, बेर, सोआ, पालक, मेथी, ककड़ी, खीरा, नारियल, यवक्षार, सज्जीखार, ईख, गुड़, मदिरा, तैलमर्दन, मैथुन, रात्रिजागरण, नस्य, धूम्रपान, तथा परिश्रम अहितकर हैं।

अजीर्ण (Dyspepsia)

पथ्य—यवागू, लाजा मण्ड, महीन लाल चावल, शालि चावल, मूंग का यूप, बथुआ, छोटी मूली, लहसुन, पुराना पेठा, केले का फल, सहजन, करेला, परवल, बैंगन, ककोड़ा, आमला, नारंगी, अनार, अम्लवेत, जम्बीरी नीबू, माठा, कांजी, हींग, नमक, पापड़, मधु, सोंठ, अजवाइन, मरिच, मेथी, धनियाँ, जीरा, पान, गरम जल, साबूदाना हितकर हैं।

अपथ्य—सोंठ, उड़द, चना, पीठी का पदार्थ, घी से पके पदार्थ, खोआ, लालमिर्च, ईख रस, ताड़फल, नारियल, प्रकृतिविरुद्ध अन्नपान, रात्रिजागरण, मैथुन, स्नान तथा विरेचन अहितकर हैं।

अर्श (Piles)

पथ्य—पुराने चावल का भात, मूंग, चने, या कुलथी की दाल, बथुआ, सौंफ, परवल, करेला, तरोई, मूली, कच्चा पपीता, जमीकन्द, केले का फूल, पका बेल, किशमिश, अंगूर, इलायची, जौ, लहसुन, आमला, कैथ, सोंठ, हरड़, गुड़, माठा, भिलावा, गोमूत्र, कांजी, मदिरा, विरेचक द्रव्यों का सेवन, अजवायन तथा विड्नमक हितकारी हैं।

अपथ्य—पीठी के पदार्थ, उड़द, दही, सेम, तिल, मैदा का पदार्थ, भुने पदार्थ, बेलगिरी, पोई शाक, कद्दू, पका आम, वेगधारण, घोड़े आदि की सवारी, कठोर आसन पर बैठना, स्त्री-प्रसंग, पशु-पक्षियों का मांस, दिन में सोना, अत्यधिक भोजन करना, धूप तथा अग्नि सेवन और वस्तिकर्म अहितकर है।

पाण्डु (Anaemia)

पथ्य—चावल, जौ, गेहूँ, मूँग, मसूर, अरहर, परवल, मूली, तरोई, बैंगन, कच्चा-केला, पालकशाक, सेंधानमक, गाय का घी, मांसरस, लौह बुझाया जल तथा दूध हितकर है।

अपथ्य—मछली, मांस, गरम मसाला, तथा लाल मिर्च का सेवन अहितकर है।

कृमिरोग (Worms)

पथ्य—पुराने चावल का भात, परवल, करेला, गूलर, वथुआ, केला, लहसुन, सरसों, नीमपत्र, वायविडंग, हरड, तिल या सरसों का तेल, ताडफल, कांजी, गोमूत्र, घी, हींग, जवाखार, अजमोदा, कूड़ाछाल, नीबूरस, कलौंजी, अजवाइन, साबूदाना, आरारोट तथा वार्ली आदि हितकर है।

अपथ्य—पीठी के पदार्थ, उड़द, दही, मांस, गुड़, दिन में सोना, वेगधारण, दूध तथा पत्तों के शाक अहितकर है।

गुल्मरोग

पथ्य—पुराने चावल का भात, लाल चावल, कुलथी का यूप, जमीकन्द, परवल, बैंगन, गूलर, करेला, सहजन, कोहड़ा, केला का फूल, मूली, वथुआ, हरड़, हींग, बिजोरा नीबू, सोंठ, मरीच, पीपर, जवाखार, दाख, फालसा, नारंगी, आँवला, बेल, माठा, एरण्ड तैल, गाय तथा बकरी का दूध, शराब, पशु-पक्षियों का मांस-रस, हलुआ, रोटी, दूध, पक्का पपीता, आम, शरीफा, मिश्री का शर्बत तथा कच्चा नारियल हितकर है।

अपथ्य—शुष्क अन्नपान, स्वभाव-विरुद्ध अन्नसेवन, सूखा मांस, मछली, मीठा फल, सूखा शाक, रास्ता चलना, परिश्रम, रात्रिजागरण, मैथुन तथा वमन अहितकर है।

हृदय-रोग (Heart diseases)

पथ्य—पुराने चावल का भात, मूंग, कुलथी का यूप, मुरब्बा, परवल, केलाफल, सफेद कुहड़ा, आम, अनार, अमलतास के पत्तों का शाक; मूली, दाख, हरड़, कूठ, धनियाँ, पीपल, आदी, मधु, कस्तूरी, चन्दन, सेंधानमक, एरण्डतैल, लहसुन, सोंठ, शराब और ईमली का पन्ना हितकारी है।

अपथ्य—रूखा, विरुद्ध अन्न-पान, गरम, खट्टा तथा चरपरा भोजन, पुराना शाक, महुआ, भेड़ी का दूध, आग तथा धूप सेवन, उपवास, परिश्रम, रात्रिजागरण तथा मैथुन अहितकर है।

प्रमेह (Diabetes)

पथ्य—जौ, पुराना गेहूँ, चावल, कोदो, कँगुन, कुलथी, मूंग, अरहर, चना, तिल; कबूतर, खरगोश, लवा, तीतर, मोर, तथा हिरन आदि का मांस; मट्ठा, मधु, पुरानी शराव, परवल, करेला, सहजन, गूलर, लहसुन, कैथ, जामुन, कशेरू, कमलगट्टा, खजूर, त्रिफला, गिलोय, खैर, सोंठ, पीपर, मरीच, तरबूज; मर्दन, कसरत, कुस्ती, विरेचन तथा घूमना हितकर हैं।

अपथ्य—नया अन्न, दही, काँजी, सिरका, तेल, दूध, घी, गुड़, पेठा, ईख, अविहित मांस, मैथुन, दिवाशयन तथा धूम्रपान अहितकर हैं।

सोम रोग (Polyuria)

पथ्य—जौ की रोटी, चना, मूंग, मसूर की दाल का यूष, गूलर, परवल, सहजन, कच्चा केला, नेनुवाँ, जामुन, कसेरू, पक्का केला, कागजी नीबू, मक्खन रहित दूध, तथा परिश्रम करना हितकर हैं।

अपथ्य—दही, मीठा, कोहड़ा, उड़द, लौकी, मिर्चा, मैथुन तथा रात्रिजागरण अहितकर हैं।

शुक्रतारल्य

पथ्य—रोटी, पूड़ी, चावल, मूंग, मसूर तथा चना की दाल, आलू, परवल, गूलर, बैंगन, गोभी, शलगम, गाजर, खुरमा, हलुआ, बादाम, किशमिश, पिस्ता, खजूर, अंगूर, पका आम, कटहर, पपीता; रोहू मछली, मूर्गा, कबूतर तथा बटेर का मास और अण्डा आदि हितकर हैं।

अपथ्य—अधिक नमक, मिरचाई, शराब, मैथुन, परिश्रम, रात्रिजागरण, अग्नि तथा धूप आदि अहितकर है।

मूत्र कृच्छ्र (Suppression of urine)

पथ्य—चावल, रोटी, पूड़ी, हलुआ, मूंग का यूष, आदी, खजूर, ताड़फल के गुठली का गूदा, परवल, वैगन, गूलर, कागजी नीबू, तरबूज, मक्खन, मिश्री, दूध, मठा, दही, लस्सी, मछली का शुरवा, बकरे का मांसरस हितकर है।

अपथ्य—रूक्ष, भारी, खट्टा पदार्थ, विषम भोजन, विरुद्ध भोजन, उड़द की दाल, नमक, तेल, भूंजा अन्न, तिल के पदार्थ, हींग, शराब, परिश्रम, मैथुन तथा रात्रिजागरण अहितकर हैं।

उदर-रोग

पथ्य—पुराने चावल का भात, दूध, साबूदाना, आरारोट, मूंग, कुल्थी का यूप, माठा, दूध, गोमूत्र, आदी, लहसुन, परवल, गूलर, बैगन, करेला, सूली, हरड़, एरण्ड तैल, पान तथा इलायची हितकर है।

अपथ्य—पूड़ी, कचौड़ी, बड़ा, नमक, तिल, पत्तों का शाक, धूम्रपान, पशु-पक्षियों का मांस, घोड़े आदि की सवारी, परिश्रम तथा दिवाशयन आदि अहितकर हैं।

शूल (Colics)

पथ्य—दूध, साबूदाना, बार्ली, मांसरस, परवल, सहजन, करेला, वैगन, दाख, कालानमक, जौ की लपसी, पुराने चावल का भात तथा हींग हितकर है।

अपथ्य—विरुद्ध अन्नपान, उडद की बनी वस्तु, परिश्रम, मैथुन, दही मिरचा, तथा रात्रि जागरण अहितकर है।

उदावर्त तथा आनाह

पथ्य—पुराने चावल का भात, जौ के आटे की लपसी, खीर, दूध, साबुदाना, हलुआ, नारियल का जल, पपीता, बेदाना, अनार, शरीफा, आँवला, कशेरू, दाख, बेल, परवल, बैंगन, गूलर, हींग, तथा सेंधानमक हितकर है।

अपथ्य—उष्ण, रुक्ष तथा गुरु पदार्थ, तिल, आलू, जामुन, ककड़ी, तथा वेगों का धारण करना अहितकर है।

मदात्यय (Alcoholism)

पथ्य—पुराना चावल, जौ, गेहूँ, मटर, मूंग, उडद, दूध, घी, मिश्री, मांस का रस, परवल, चौलाई, नीबू, फालसा, अनार, आँवला, मुनक्का, गरी, खजूर, मैथुन, कपूर, शीतलवायु तथा चन्दन आदि हितकर है।

अपथ्य—नस्य, दन्तधावन तथा पान सेवन अहितकर है।

दाहरोग

पथ्य—चावल का भात, जौ, मूंग, मसूर, चना, मांस का रस, पेठा, कटहर, परवल, दाख, आँवला, फालसा, अनार, खजूर, कशेरू, सिघांडा, धनियाँ, सौंफ, नारियल जल, मिश्री का शर्बत, ईख का रस, मक्खन, मिश्री, दूध, खश, चन्दन, शीतल वायु तथा स्त्री प्रसङ्ग हितकर हैं।

अपथ्य—विरुद्ध अन्नपान, वेग धारण, सवारी का अधिक व्यवहार कसरत अग्नि तथा धूप का सेवन अहितकर है।

मेदोरोग (Obesity)

पथ्य—चावल, जौ, कुल्थी, चना, मूंग, मसूर, अरहर, गूलर, केला, बैंगन, कोहड़ा, मछली, तिलतैल, उवटन, हाथी, घोडे की सवारी, परिश्रम तथा मैथुन आदि हितकर है।

अपथ्य—घी से बने पदार्थ, गेहूँ, दूध, दही, मिठाई, फल तथा मांस आदि अहितकारी है।

राजयक्ष्मा तथा क्षय (Phthisis and T. B)

पथ्य—चोकरयुक्त गेहू के आटे की रोटी, पुराने चावल का भात, गेहूं की दलिया, मूंग तथा अरहर की दाल, आरारोट, धान की खील, साबुदाना, परवल, गूलर, कच्चा बेल, बैंगन, वथुआ, मूली, आदी, लौंग, जीरा, मरीच, सेंधानमक,

धनियाँ, अंगूर, आँवला, नीबू, कैथ, अनार, अनन्नास, आम, केला, दाख, किसमिस, मुरब्बा, मांस का रस, बकरी तथा गधी का दूध आदि हितकर है।

अपथ्य—गुरुपाकी, तथा तीक्ष्ण वीर्यकारक और रूक्ष द्रव्य, दही, सरसों का तैल, सेम, आलू, उड़द की दाल, वेगों का धारण, व्यायाम, धूम्रपान, धूलि तथा धूप में कार्य करना, परिश्रम, मैथुन तथा रात्रि जागरण आदि अहितकर है।

अम्लपित्त (Acidosis)

पथ्य—पुराना जौ, पुराना गेहूं, पुराना चावल, मूंग का यूष, केला, परवल, बैंगन, बथुआ, गूलर, पेठा, नीबू, कैथ, अनार, आँवला, मुरब्बा, शक्कर, मधु, साबुदाना तथा विरेचन आदि हितकर हैं।

अपथ्य—नवीन, विदाही तथा विरुद्ध अन्नपान, तिल, उडद, दही, शराब, कांजी तथा वेगों का धारण करना अहितकर हैं।

शीत-पित्त (Urticaria)

पथ्य—पुराने चावल का भात, मूंग तथा कुलथी का यूप, करेला, सहजन, मूली, नीम की पत्ती, तेल, अनार, मधु, आँवला, हरड, वमन, विरेचन तथा हल्दी आदि हितकर हैं।

अपथ्य—गुरु तथा विदाही अन्नपान, दूध, दही, खोआ, मलाई, रबडी, गुड़, शक्कर, चीनी, मांस, धूपसेवन, खट्टा पदार्थ तथा मैथुन आदि अहितकारी हैं।

रक्त-पित्त

राजयक्ष्मा सदृश पथ्यापथ्य उचित हैं।

आमवात (Rheumatism)

पथ्य—जौ की रोटी, साबुदाना, आरारोट, कुलथी, परवल, करेला, बैंगन, सहजन, मांस का रस, आदी, लहसुन, एरण्ड तैल, गोमूत्र, गरम जल, अग्नि दीपक पदार्थ तथा विरेचन आदि हितकर हैं।

अपथ्य—कचौडी, पीठी से बने पदार्थ, दही, मछली, गुड, गुरु पदार्थ, विरुद्ध, अन्नपान, वेगों का धारण, रात्रि जागरण तथा मैथुन आदि अहितकर है।

वातरक्त (Gout)

पथ्य—गेहूं, चावल, अरहर, मूंग, चना, मोठ, परवल, करेला, गूलर, सफेद कोहडा, बथुआ, चौराई, घी, मक्खन, एरण्ड तैल, तेलमर्दन, विरेचक द्रव्य तथा चीनी आदि हितकारी हैं।

अपथ्य—गुरु, अभिष्यन्दी तथा विरुद्ध अन्नपान, नया चावल, सेम, मटर, गुड़, दही, तिल, उड़द, लहसुन, प्याज, आलू, मिठाई, मिरचा, ककड़ी, भांग, शराब, कांजी, सत्तू, धूप तथा अग्नि सेवन, वेगधारण, दिन में सोना, कसरत तथा मैथुन आदि अहितकर हैं।

ऊरुस्तम्भ

पथ्य—रोटी, पूरी, हलुआ, मिठाई, चावल, मूंग, मसूर, चना तथा कुलथी की दाल, परवल, करेला, बैंगन, गूलर, बथुआ, चौपतिया, मकोय, निम्ब, अरिष्ट, क्षार, गोमूत्र, खजूर, किशमिश, छोहारा, बकरा, कबूतर तथा मुर्गे का मांसरस, कसरत तथा नदी में प्रवाह प्रतिकूल तैरना हितकर हैं।

अपथ्य—गुरु, शीतल, चिकना तथा विरुद्ध अन्न-पान सेवन, उड़द, गुड़, दही, मछली, मल-मूत्र के वेगों का धारण करना, दिन में सोना तथा रात्रि में जागना, वस्ति, वमन तथा विरेचनादि अहितकर हैं।

वातव्याधि (Nervous Diseases)

पथ्य—गेहूं, शाली तथा साठी चावल, कुल्थी, उड़द, परवल, बैंगन, सहजन, लहसुन, अनार, तालफल, आम, फालसा, बेर, दाख, नारंगी, महुआ, नीबू, दूध, मिश्री, हंस, सारस, बगुला, चकवा, मुर्गा, मोर, तीतर, कछुवा, रोहू, घड़ियाल, तथा मँगर आदि का मांस, घी, तेल, नरवी, मर्दन, विरेचन, वस्ति तथा नस्य आदि हितकारी हैं।

अपथ्य—जौ, कोदो, मटर, मूंग, चना, सेम, करेला, गूलर, जामुन, कसेरू, सुपारी, पत्र शाक, हाथी तथा घोड़े की सवारी, वेगों को धारण करना, रात्रि में जागना, कसरत करना तथा मैथुन आदि निषिद्ध हैं।

अपस्मार (Epilepsy)

पथ्य—गेहूं, चावल, मूंग, परवल, बथुआ, सहजन, आँवला, फालसा, दाख, नारियल का जल, अनार, हरड़, तेल का मर्दन, कछुए का मांस, धूम्रपान, नस्य, वमन, वस्ति, तथा घृत आदि हितकर हैं।

अपथ्य—गुरु तथा विदाही अन्न-पान, शाक, ककड़ी, खीरा, शराब, मास, वेग धारण तथा मैथुन आदि अहितकर हैं।

उन्माद (Insanity)

पथ्य—गेहूं, लाल चावल, धारोष्ण दूध, घी, परवल, बथुआ, चौराई, गरी, दाख, हरड़, पशु तथा पक्षियों का मांस रस, अंजन, धूम्रपान, विरेचन, स्नान तथा शीतल लेप आदि लाभदायक हैं।

अपथ्य—रूक्ष तथा विरुद्ध अन्नपान, शराब, वेगधारण, निद्रानाश, खीरा, ककड़ी तरबूज, करेला तथा मैथुन अहितकारी हैं।

मूर्च्छा (Coma)

पथ्य—पूरी, रोटी, सूजी, चावल, हलुआ, मिठाई, मूंग, मसूर, चना, उड़द, बैंगन, कोहड़ा, गूलर, केले का फूल, मक्खन, माठा, दही, दाख, अनार, पका आम, तथा पपीता, शरीफा, गरी, पशु तथा पक्षियों के मांस का रस, गाय का धारोष्ण दूध, चन्दन, कपूर, गुलाब जल, अंजन तथा विरेचन आदि हितकारी हैं।

अपथ्य—गुरू, रूक्ष, खट्टे तथा विदाही अन्नपान, शराब, परिश्रम, धूप तथा अग्नि सेवन, सवारी, रात्रि में जागना, तथा मैथुन अहितकारी है।

मूत्राघात (Retention of Urine)

पथ्य—पुराना चावल, उड़द का यूष, आदी, परवल, हरड़, सुपारी, खजूर, जंगली पशु तथा पक्षियों का मांस रस, शराब, माठा, दूध, दही, तैल मर्दन, विरेचन तथा वस्ति कर्म आदि हितकारी है।

अपथ्य—रूक्ष, विदाही तथा विरुद्ध अन्नपान, कसरत, मल तथा मूत्र के वेगों का धारण करना, रास्ता चलना तथा मैथुन अहितकारी है।

अश्मरी (Stone)

पथ्य—जौ, चावल, कुलथी, शराब, आदी, पाषाण भेद, नीबू रस, दूध, अण्डा तथा विरेचन आदि हितकारक हैं।

अपथ्य—मांस, मक्खन, घी, चर्बी, ब्राण्डी, चाय और काफी आदि अहितकर है।

शोथ (General Anasarca)

पथ्य—पुराना गेहूं, जौ तथा चावल, अरहर, मूंग, मसूर का यूष, माठा, शराब, मधु, आसव, करेला, बैंगन, लहसुन, परवल, घी, तेल, एरण्ड तैल, सोंठ, हरड़, चीता, ककड़ी, सहजन, गोमूत्र, चन्दन, जवाखार, आम तथा गाजर आदि हितकारी है।

अपथ्य—गुरु तथा विरुद्ध अन्नपान, उड़द से बने पदार्थ, खिचड़ी, दही, मिट्टी का भक्षण, नमक, गुड़, वेग का धारण करना, खटाई खाना, हींग का सेवन, रात्रि जागरण तथा मैथुन आदि त्याज्य है।

कुष्ठ (Leprosy)

पथ्य—पुराना गेहूं, जौ, चावल, अरहर, मूग, मसूर, परवल, ककड़ी, खीरा,

मकोय, ताड़फल, आँवला, हरड, जायफल, घी, तिल तेल, नीम का तेल, गोमूत्र, वमन, विरेचन, तथा नस्य आदि हितकारी है।

अपथ्य—वातरक्त सदृश।

विसर्प (Eryseplas)

पथ्य—पुराना जौ, गेहूं तथा चावल, मूंग, मसूर, चना, अरहर, परवल, करेला, मक्खन, घी, दाख, अनार, खैर, आँवला, चन्दन, मांस का रस, वमन, विरेचन, लंघन तथा तिल का लेप हितकारी है।

अपथ्य—विरुद्ध तथा विषम आहार, उड़द, कुल्थी, तिल, दही, कांजी, खट्टा तथा नमकीन, पदार्थ, लहसुन, शराब, धूप तथा अग्नि सेवन, वेगधारण, दिन में सोना तथा मैथुन आदि अहितकर हैं।

मसूरिका (Small Pox)

पथ्य—जौ, चना, मूंग, मसूर, चावल, परवल, करेला, सहजन, केला, दाख, अनार, घी, कपूर, दूध, साबुदाना, बार्ली, किशमिश तथा नारंगी आदि हितकारी हैं।

अपथ्य—गुरु, विदाही तथा विषम आहार, आलू, वेग धारण, तैल मर्दन, मैथुन तथा परिश्रम आदि अहितकारी है।

उपदंश (Soft Chancre)

पथ्य—जौ, चावल, मूंग, मसूर, अरहर, चना, परवल, करेला, गूलर, सहजन, मूली, मांस का रस, तथा वस्ति हितकारी है।

अपथ्य—मीठा पदार्थ, स्नान, मैथुन, कसरत तथा परिश्रम आदि अहितकारी है।

व्रण-शोथ (Abscess)

पथ्य—जौ, गेहूं, पूड़ी, हलुआ, अरहर, मूंग, मसूर, परवल, करेला, बथुआ, चौराई, मूली, दाख तथा मांसरस आदि हितकारी हैं।

अपथ्य—नया अन्न, उड़द, कुल्थी, मटर, दही, रबड़ी, खोआ, मलाई, गुड, शक्कर, खाँड, नमक, खटाई, परिश्रम, मैथुन तथा नस्य आदि अहितकर हैं।

प्रदर-रोग (Dysmenorrhæo)

पथ्य—जौ, गेहूँ, चावल, मूंग, मसूर, चना, परवल, केला, करेला, गूलर, दूध तथा साबूदाना आदि हितकारक हैं।

अपथ्य—गुरु, विदाही तथा विषम भोजन, मछली, मिरचा, मिठाई, अग्नि तथा धूप सेवन, रात्रि का जागना, दिन में सोना, अत्यधिक मैथुन, वेगधारण, अत्यधिक चलना तथा गाना अहितकर है।

गर्भावस्था (Pregnancy)

पथ्य—गेहूँ, चावल, मूंग, दूध, घी, परवल, करेला, चन्दन, दाख, आम, यवागू, मीठा, तथा शीतल द्रव्यों का सेवन हितकारी हैं।

अपथ्य—रूक्ष तथा विषम आहार, तीक्ष्ण, कटु, खट्टा, तथा कषैला पदार्थ, शोक, क्रोध, अत्यधिक परिश्रम, वेग धारण, उपवास, अत्यधिक मैथुन, रात्रि को जागना, वमन विरेचन, तेज सवारी पर चलना, मलिन तथा विकृति तथा अंगहीनों का स्पर्श, शून्शान घर में निवास तथा कठोर आसन पर सोना अहितकारी है।

सूतिकावस्था (Perpeurium)

पथ्य—प्रथम तीन दिनों तक दूध तथा साबुदाना खिलावें, चौथे तथा पाँचवे दिन दूध, भात तथा इसके पश्चात् पूडी आदि पोषक पदार्थ खाने को दे तथा साथ में सोंठ, मरीच, आदी, कालाजीरा और अजवाइन का भी व्यवहार करे।

अपथ्य—विषम तथा विदाही अन्नपान सेवन, चलना, तेज बोलना आदि अहितकर हैं।

शिशुरोग (Children Disease)

शिशुरोग में व्याधि के अनुसार माता को पथ्यापथ्य देना चाहिये। शिशु को लंघन कभी नहीं कराना चाहिये।

शिरोरोग (Diseases of the Head)

पथ्य—गेहूँ, चावल, मूंग का यूष, करेला, सहजन, वथुआ, आम, अनार, घी, आँवला, भाँगरा, कूठ, हरड़, नस्य, धूम्रपान, वमन तथा विरेचन आदि हितकारी है।

अपथ्य—विरुद्ध अन्नपान, वेगधारण, तथा दिवाशयन आदि अहितकर है।

नेत्र-रोग (Diseases of the Eye)

पथ्य—जौ, चना, मूंग, कुलथी, परवल, बैंगन, करेला, केला, मूली, लहसुन, धनियाँ, दाख, घी, दूध, चन्दन, कपूर, तथा त्रिफला आदि हितकारी है।

अपथ्य—गुरु तथा विरुद्ध अन्नपान, दही, शाक, तरबूज, मांस, मछली, खटाई, धूलि, धूम्र, धूप, शोक, क्रोध, मैथुन, रोना, वेगधारण, स्नान, रात्रिजागरण तथा परिश्रम आदि अहितकारी हैं।

नाशा-रोग (Diseases of the Nose)

पथ्य—पुराना जौ तथा गेहूँ, मूंग तथा कुलथी का यूष, परवल, बैंगन, सहजन, खेकसा, छोटी मूली, लहसुन, दही, गरम जल, आदि हितकर है।

अपथ्य—गुरु, विरुद्ध, तथा अभिष्यन्दी अन्न-पान, स्नान, तथा अधोवायु का रोकना अहितकर हैं।

कर्ण-रोग (Ear Disease)

पथ्य—गेहूँ, जौ, चावल, मूंग, अरहर, घी, परवल, सहजन, वैगन, करेला, नस्य, धूम्रपान, वमन, विरेचन तथा ब्रह्मचर्य आदि हितकर है।

अपथ्य—विरुद्ध अन्नपान, शिर से स्नान, अत्युच्चभाषण, मल मूत्रादि वेगधारण तथा परिश्रम आदि अहितकारी है।

मुखरोग (Diseases of the Mouth)

पथ्य—जौ, मूंग, कुलथी, परवल, करेला, मूली, घी, कपूर, गंडूप, कवल, वमन, तथा विरेचन आदि हितकारक हैं।

अपथ्य—रूक्ष, भारी तथा अभिष्यंदी अन्नपान, उडद, मांस, दूध, दही, गुड़ तथा खटाई आदि अहितकर हैं।

चर्मरोग (Skin Diseases)

पथ्य—जौ, गेहूँ, मूंग तथा दुग्ध आदि हितकारी हैं।

अपथ्य—मछली, अण्डा, जई, कडुवा, तीता; खट्टाफल, अॅचार, खटाई, मिर्चा तथा नमक आदि अहितकारी हैं।

श्वास-प्रश्वास की व्याधियाँ (Respiratory Diseases)

पथ्य—शुष्क तथा अल्प मात्रा में श्वास रोगी को भोज्य पदार्थ दे ; गरम दूध, चाय, तथा अर्ध तरल पदार्थ कास के रोगी को देवे; क्योंकि ये स्राव को निकालते हैं।

अपथ्य—राजयक्ष्मावत ।

पथ्य-निर्माण

यवागू

यवागू के ३ प्रकार—

१ माण्ड (Rice-water) २ पेया (Jelly) ३. लपसी (Gruel)

माण्ड—चावल को १९ गुने जल में पका कर छान ले। छानने से जो तरल पदार्थ निकलता है वह माण्ड कहलाता है।

पेया—चावल या जौ को पीसकर ११ गुने जल में पकावे। इस प्रकार जो पदार्थ तैयार हो; वह पेया कहलाता है।

लपसी—जौ या अन्य किसी वस्तु के आटे को ९ गुने जल में पकावे। इस प्रकार जो पदार्थ तैयार होता है, वह लपसी कहलाता है।

चपाती निर्माण—आटे को एक घण्टे जल में भिगोने के पश्चात् खूब मसल कर एक गोला सा बना ले, फिर इस गोले को १०, १५ मिनट तक जल में गरम करले, पुनः बाहर निकाल भली भाँति मसल कर पतली रोटी बनाकर सेक ले। यह चपाती लघु तथा शीघ्र पचने वाली होती है।

पूड़ी—यह चपाती सदृश होती है; किन्तु यह घी या तैल में पकाई जाती है। भली भाँति पक जाने पर यह चपाती की अपेक्षा सुगमता से पच जाती है; क्योंकि शर्करा (Starch) के कण उष्ण घी के प्रभाव से पूर्ण-रूप से टूट जाते हैं। पूड़ी रोग से मुक्त होने के पश्चात् खाने पर लाभदायक है। इसे रुग्ण-व्यक्ति को नहीं खिलाना चाहिये।

हलुआ निर्माण—यह सूजी, आटा, तथा मैदा से बनाया जाता है। सर्व प्रथम सूजी, आटा या मैदा को घी में भून लें, फिर इस में इतना दूध डालें कि यह पतला तथा गाढा हो जाय। जब सूजी, आटा या मैदा दूध के साथ खौलने लगे तब चीनी मिलादें। पकने के पश्चात् जब इसे आग से पृथक करें, तब उस में गरी, चिरौंजी तथा किशमिश आदि मिला दें।

यह शल्य तथा अन्य रोगियों के लिये उत्तम वस्तु है।

चावल या भात निर्माण—जब चावल जल के साथ पकाकर छान लिया जाता है तब वह भात कहलाता है। यह मूंग के दाल या दूध के साथ सम्भवतः सम्पूर्ण व्याधियों में व्यवहृत किया जाता है। यह लघु होता है।

खिचड़ी निर्माण—चावल तथा दाल को समान परिमाण में लेकर जल से धो एक पात्र में जल के साथ पकावें, तथा इसमें नमक, जीरा, पीपर और पीसी हुई बड़ी इलायची डाल दें। पकने के पश्चात् आवश्यकतानुसार घी डाल कर मंदाग्नि पर आधे घण्टे तक रख छोड़ दें, तत्पश्चात् खाने को दें। यह बहुत ही हलका भोजन है। विरेचन के पश्चात् रोगी को यह भोजन दिया जाता है। जिन व्याधियों में लघु तथा पोषक भोज्य की आवश्यकता होती है उनमें रोगी को यही खिचड़ी दी जाती है।

दही का खीर निर्माण—चावल को धोकर दही में मिला दें, फिर इसमें नमक तथा जीरा महीन बुक कर मिलादें। फिर चावल के पकने तक इस को अग्नि पर रखे रहें, यह अर्ध तरल होता है। यह प्रवाहिका तथा अतिसार के रोगियों के लिये बहुत ही उपयोगी है।

खीर निर्माण—चावल को धोकर दूध के साथ पकावें। इसमें बादाम, केशर, किशमिश, चिरौंजी तथा शुष्क फल आदि मिला दें। इस खीर को रोग से निवृत्त होने के पश्चात् उन रोगियों को खिलावें जिनमें पाचन की कठिनाई होती है।

फिर्नी निर्माण—एक सेर दूध में २ छटाँक पिसे चावल को पकावें। पकाते समय इसको भली भाँति चलाते रहें तथा इसमें पकने के समय ४ छटाँक चीनी और किशमिश के छोटे छोटे टुकड़ों को मिलादें। यह शीघ्रता से पच जाती है।

इस का व्यवहार प्रवाहिका तथा अतिसार के रोगियों में होता है। यह व्याधि के पश्चात् लाभदायक है।

दाल निर्माण—मूंग, मोठ, मसूर या अरहर आदि किसी एक दाल को आध पाव के परिमाण मे ले, एक सेर खौलते जल मे थोडा, घी, जीरा, पीपर और इलायची डालकर पकावे, तथा वीच वीच मे चलाते रहे। जब दाल पक जाय तब नमक मिला दे। यदि जल की कमी हो जाय तो पुनः गरम जल मिलादे। इसे दिन मे ३, ४ वार रोगी को दे सकते है। यह रोगियों के लिपे वहुत ही हितकर है।

शाक—तरोई, लौकी, सोआ, पालक और सफेद कोहड़ा शीघ्र पचन शील होते हैं; अतः इनका व्यवहार रोगियों के लिये वहुतायत से किया जाता है।

निर्माणविधि.—तरकारी का छोटा, छोटा टुकडा बना कर सर्व प्रथम घी मे भूंज ले तत्पश्चात् जल डालकर पकावे। पक जाने पर इसमे नमक मिलावे। हरे तथा पत्र वाले शाकों मे जल नही मिलाना चाहिये।

जौ वाला—(Barley-Warer)—दो छटॉक विलायती जौ (पर्ल वार्ली Pearl Barley) को शीतल जल से भली भॉति धुलकर दो सेर शीतल जल के साथ किसी पात्र मे उवाल कर छान लें। इस मे नीवू का रस तथा चीनी भी मिला सकते हैं। यह ज्वरों मे तृषा नष्ट करने के लिये दिया जाता है। यह मूत्रल भी होता है।

सुधा-जल—(Lime-Water)—एक ड्राम शुद्ध बुझे हुये चूने को वारह औंस या ६ छटॉक शुद्ध जल (डिस्टिल्ड वाटर) मे भली भॉति मिला लेवे तत्पश्चात् बारह घण्टे के बाद जलको छानकर बोतल मे रख लेवे। यह जल वच्चों के अजीर्ण, वमन, तथा अतिसार मे उपयोगी होता है। इसको दूध मे मिलाने से दूध हल्का हो जाता है।

छेना जल या ह्वे (Whey)—सवा पाव दूध मे १।२ पाव जल मिलाकर अग्नि पर उबाले, जब उवाल आने लगे तब उस मे खट्टा नीवू धीरे २ निचोडते रहें, ऐसा करने से जब दूध फट जाय तब इस फटे दूध को छान ले। यही छना हुआ जल छेना जल कहलाता है।

इमली जल—(Tamarind Water)—आध छटॉक पकी इमली के बीज को निकाल कर बीस छटॉक खौलते जल मे भिगो कर मसल दे। ठण्डा होने पर थोड़ा नमक और मरीच मिला दे। यह इमली का जल शीतल तथा तृषानाशक होता है।

पेप्टोनाइज्ड दुग्ध (Peptonize Milk)—बीस औंस दूध मे पॉच औंस जल मिला कर उस मे थोड़ा फेयरचाल्ड (Fairchild) के चूर्ण को भली भॉति मिला कर उष्ण जल से भरे हुये पात्र मे बीस मिनट तक रखे। शीतल होने के पश्चात् एक पात्र मे उवाल ले। इस प्रकार दुग्ध तैयार हो जायगा। यह पाचनशक्ति के क्षीण होने वाले रोगियों के लिये हितकारी है।

जई दुग्ध (Oat Meal Milk)—जई के ऑटे को दो ड्राम की मात्रा मे लेकर एक मलमल के वस्त्र मे वॉधे, तदुपरान्त १० छटॉक दूध मे रख कर भली भॉति पकावे। यह दुग्ध लघु तथा सुपाच्य होता है।

अलसी चाय (Linseed Tea)—आध छटॉक अलसी को भली भाँति धोने के पश्चात् चार छटॉक खौलते जल में डाल कर मन्दाग्नि पर ६ छटॉक जल शेष रहने तक पाक करें, तत्पश्चात् इसमें ज्ञान नीबू के रस तथा चीनी को मिला रोगी को पिलावें। यह पूयमेह (Gonorrhoea) तथा मूत्रकृच्छ्र (Supression of urine) आदि में लाभदायक है। यदि कास या कण्ठरोग में व्यवहृत करना हो तो २ ड्राम मुलेठी डालकर पकावें।

अदरख की चाय (Ginger Tea)—आधा चम्मच आदी तथा ४ चम्मच शक्कर को एकत्र एक पाव खौलते हुए जल में २ मिनट तक उबालें, फिर शीतल कर रोगी को पिलावें। यह पाचक तथा अनुलोमक है।

श्वेतसार जल (Albumen Water)—अण्डे के श्वेत भाग को भली भाँति बारीक चूर्ण कर ५ छटॉक स्वच्छ तथा शीतल जल में थोडे नमक के साथ भिगो कर छानने के पश्चात् व्यवहार में लावे। इस में चीनी तथा फलों के रस भी मिलाये जा सकते हैं। यह जल लघु, आशुपाकी तथा पौष्टिक होता है।

जई-जल (Oatmeal Drink)—दो ड्राम जई को १० औंस जल में लगभग बीस मिनट तक खौलावें। खौलते समय कभी कभी चलाते भी रहें; फिर इस में आदी, नीबूरस तथा स्वादानुसार चीनी भी मिला दें। यह जल तृषानाशक तथा उत्तेजक होता है।

बेल-जल (Bael Drink)—कच्चे बेल के चूर्ण को या लाइकर बेल (Liqr. Bael) को दो चम्मच की मात्रा में लेकर १० छटॉक जल में मिलावे। यह अतिसार में व्यवहृत होता है।

नीबू-जल (Lemonade) नीबू के बाह्य पीले भाग को छिल कर पृथक् कर दे, फिर नीबू को छोटे छोटे टुकडे में काटकर बीज निकाल कर उसमें आध पौण्ड चीनी मिला कर बारह छटॉक उबलते जल में मिला कर मसल दे। फिर छान ले और बर्फ मिला कर व्यवहार में लावे। यह शीतल तथा तृषानाशक होता है।

षडङ्ग-पान—पित्तपापडा, नागरमोथा, खस, लाल चन्दन, सुगंधवाला और सोंठ को सम भाग में लेकर जल में खौलावे। खौलने के पश्चात् शीतल कर छान ले। यह जल प्यास, दाह तथा ज्वर नाशक है।

फल-प्रकरण
(Fruits)

पका आम (Ripe Mangoes)—यह सारक (मृदुविरेचक) तथा शक्तिवर्धक होता है। यह हृदयरोग में विशेष लाभप्रद है। कच्चे आमों को अग्नि में भूंज कर जल में मसल दे, फिर इसमें भूना जीरा, सेंधा नमक तथा मरीच को एकत्र बारीक पीस कर मिला दे। इसको पीने से भयानक से भयानक लू आराम होती है।

सेव—यह स्वादिष्ट, हृदय को हितकारी, रक्त तथा शक्तिवर्धक और वात पित्त को नष्ट करता है और वीर्य को बढाता है।

नास्पाती—यह मीठा, लघु, वीर्य तथा शक्ति वर्धक और त्रिदोष नाशक है। इसे भोजनोत्तर खाने से अधिक लाभ होता है।

अंगूर—यह सारक, शीतल, गुरु तथा धातुपुष्टि-कारक और नेत्र को हितकर है तथा प्यास, ज्वर, वातरक्त, वमन, कामला, रक्तपित्त, दाह, मेह, शोप तथा मदात्यय को नष्ट करता है।

अनार—यह बल तथा वीर्य वर्धक, लघु, त्रिदोष नाशक, दाह, ज्वर, हृदय तथा कण्ठरोग नाशक है।

नीबू—यह वायुनाशक, दीपक, पाचक तथा लघु एवं उदरशूल, अरुचि, विसूचिका, अजीर्ण, तथा विपमज्वरादि में विशेष लाभदायक है।

नारगी—यह शरीर को पुष्ट करने वाली; वल वीर्य तथा रक्तवर्धक; अग्नि-दीपक और वातनाशक है और भोजन को पचाती है।

वेल—कच्चा बेल ग्राही, वात, कफ तथा शूल नाशक और अतिसार तथा संग्रहणी को नष्ट करता है।

पेड का पका बेल वीर्यवर्धक तथा पुष्टिकारक होता है। इसका शर्बत प्यास, वमन, दाह, परिश्रम तथा कोष्ठबद्धता को नष्ट करता है।

केला—पका केला, रुचिकर, वीर्य तथा मांस वर्धक, पुष्टिकारक और प्रमेह तथा नेत्ररोग नाशक है।

कच्चा केला गुरु, स्तम्भक, कफ, पित्त, क्षत, क्षय, वातव्याधि, अतिसार तथा संग्रहणी नाशक है।

खजूर—यह शीतल, गुरु, स्तम्भक, वीर्य तथा बल वर्धक; पुष्टि तथा रुचि कारक और ज्वर, अतिसार, तृषा, वमन, रक्त-पित्त तथा क्षय नाशक है।

शरीफा (सीताफल)—यह गुरु, वीर्य तथा शक्ति वर्धक, धातुपोषक और दाह तथा रक्त-पित्त नाशक है।

फालसा—यह शीतल, विष्टम्भी, पुष्टिकारक तथा पाचक है और रक्तविकार, ज्वर, दाह, पूयमेह, क्षय तथा पित्त को निश्चय ही नष्ट करता है।

शहतूत—यह गुरु, शीतल, पित्त तथा वायु नाशक है और प्यास, दाह, पित्त ज्वर, वमन, भ्रम, मूर्च्छा तथा मुखपाक को नष्ट करता है। तथा क्षुधा, बल वीर्य तथा रक्त की वृद्धि करता है।

सिंघाडा - यह शीतल, गुरु, ग्राही; वायु तथा कफ वर्धक; पित्त, दाह तथा रक्त विकार नाशक; वल-वीर्य वर्धक एवं प्रमेह नाशक है।

सिरनी—यह स्निग्ध, शीतल, गुरु, वीर्यवर्धक तथा मद, मूर्च्छा, क्षय और त्रिदोष नाशक है।

नारियल—इसका हरा फल, शीतल, गुरु, आर्द्र; बल तथा पुष्टि दायक एवं मूत्र शोधक है। यह वात, पित्त तथा रक्तविकार को नाश करता है। इसका जल शीतल, लघु, अग्निदीपक, वीर्यवर्धक, मूत्राशय शोधक; तृषा और पित्त नाशक है।

गाजर—यह शक्ति तथा रक्तवर्धक है। इसका हलुआ जाड़े के समय व्यवहार में आता है।

मूली—कच्ची या उबाली हुई मूली अर्श तथा कामला रोग में उपयोगी होती है।

प्याज—यह कामोत्तेजक है तथा विसूचिका और अंशुघात (लू) में विशेष लाभप्रद होता है।

लहसुन—यह क्षयरोग के लिये बहुत ही उपयोगी है। इसका बाह्य तथा आभ्यन्तर दोनों में प्रयोग होता है। क्षयज ग्रंथियों तथा नाडीव्रणों पर पीस कर लगाने से विशेष लाभ करता है।

दुग्ध-प्रकरण
(Milk)

गोदुग्ध—यह स्वादु में मीठा तथा वर्ण में धुंधले रंग का होता है। यह ०·५६°C पर जम जाता है, तथा १००·० C पर खौलता है। इसका आपेक्षिक घनत्व १०२८ से १०३५ तक होता है। सभी वर्ग के व्यक्तियों के लिये उत्तम प्रकार का भोज्य पदार्थ है। यह उत्तम पोषक तथा सुपाच्य होता है। १० छटाँक दूध पीने से ४०० से ४५० कैलोरी (Calories) तक गरमी उत्पन्न होती है।

स्किम्ड दुग्ध (Skimmed Milk)—जब किसी भी प्रकार से दुग्ध का मक्खन निकाल लिया जाता है; तब अवशिष्ट द्रव भाग को स्किम्ड दुग्ध कहते हैं। इस दुग्ध में प्रोटीन (Proteins) तथा कार्बोहाइड्रेट (Carbohydrates) अत्यधिक मात्रा में तथा वसा (Fat) १ प्रतिशत से लेकर 0·१ या 0·२ प्रतिशत तक मिलता है।

काण्डेन्स्ड दुग्ध (Condensed Milk)—जब दुग्ध या स्किम्ड दुग्ध खौलते खौलते २–३ भाग रह जाता है तब उस दुग्ध को काण्डेन्स्ड दुग्ध कहते हैं। इसमें खौलाते समय चीनी भी डाल देना चाहिये अन्यथा यह खराब हो जाता है। यह दुग्ध पोषण की दृष्टि से उत्तम नहीं है। इसमें वसा और प्रोटीन नाम मात्र का होता है।

चूर्ण दुग्ध (Powdered Milk)—दुग्ध को वाष्पीकरण क्रिया द्वारा चूर्ण के रूप

में परिवर्तित कर लिया जाता है। यह यत्र तत्र भेजने की दृष्टि से अच्छा होता है। यह उत्तम दुग्ध है।

माठा—मक्खन निकालने के पश्चात् जो द्रव पदार्थ अवशिष्ट रहता है, उसे माठा कहते हैं। इससे प्रोटीन अधिकता से मिलता है।

R/

क्रीम का मिश्रण (Composition of Cream)

जल	(Water)	७४ प्र० शत
कैजीन तथा अल्व्युमिन	(Casein & Albumin)	२.५ प्र० शत
वसा	(Fat)	१५–५१ प्र० शत
दुग्ध शर्करा	(Milk Sugar)	४.५ प्र० शत
क्षार	(Ash)	०.५ प्र० शत

विभिन्न दुग्ध
(Composition of the various Milk)

दुग्ध	जल	कैजीन	अल्व्युमिन	वसा (फैट)	दुग्ध शर्करा	क्षार (एस)
स्त्री दुग्ध	८७.४१	१.०३	१ २६	३.७८	६.२१	०.०३१
गो „	८७.१७	३.०२	० ५३	३.६९	४.८८	०.७१
भैंस „	८२.१६	४.२६	०.४६	७.५१	४.७७	०.८४
बकरी „	८५.७१	३.२०	१.०९	४ ७८	४ ४६	०.७६
गधी „	८९.६४	०.६७	१.५५	१.६४	६.९९	०.५१
ऊँटनी „	८६.५७		४	३.०७	५.५९	०.७७

नोट—गधी तथा ऊँटनी का दुग्ध राजयक्ष्मा के लिये उत्तम समझा जाता है।

गो दुग्ध का स्त्री दुग्धवत् निर्माण

गोदुग्ध	(Cow's Milk)	१½ औंस
क्रीम १५ प्र० शत	(Cream)	१ „
सुधा जल	(Lime water)	½ „
दुग्ध शर्करा का घोल	(Solution of the Milk Sugar) (३ औंस चीनी २० औंस जल)	१½ „
सोडा साइट्रास	(Soda Citras)	३ ग्रेन

नोट – गोदुग्ध में कैजीन (Casein) अधिक मात्रा मे होती है, अतः उसे कम करने के लिये क्रीम मिला दिया गया है।

स्त्रीदुग्ध में शर्करा अधिक होती है; अतः गोदुग्ध में शर्करा भी मिला दिया गया है। सुधा-जल तथा सोडा साइट्रास, केवल दुग्ध की आम्लीयता को कम कर स्त्री दुग्ध सदृश क्षारीय कर देते हैं।

भोज्य पदार्थों में उपस्थित द्रव्यों की तालिका

भोज्य पदार्थ	प्रोटीन प्र० शत	कार्वोहाइड्रेट प्रति शत	वसा प्र० शत	गरमी (कैलोरी)※ प्रति पौण्ड
जौ	७·४	७६·७	१·२	१६१५
गेहूँ	१०·९९	७०·१९	२·०८	१६१५
चावल	७·४	७९·२	०·४	१६२०
मटर	२२·६	६३·२	१·७	१४६४
मूंग	२३·६२	५३·४५	२·६९	१४६४
मसूर	२५·४७	५९·०३	३·००	१४६९
चना	१९·९१	६४·२२	४·३४	१४६७
अरहर	२१·७०	६४·०६	२·५०	१४६७
उरद	२२·३३	५५·२२	१·९५	१४६९
फली	२३·१	६३·६	२·३	१५२०
आलू	१·८	१४·७	०·०१	३१०
रोटी	९·२	५३·१	१·३	१२१५
हरे शाक	१·४	४·८	०·२	१४५
फल	०·४	८	०·६	१८०
शुष्क फल	१·८	६९·३	३·८	१४८०
क्रीम	१·४	२·२	६७·६	२९१२
मक्खन	१	×	८३	३५१०
दुग्ध	३·३	५	४	३२२
कण्डेस्ट दुग्ध	९	५१·५	१२·५	१६९३
अण्डा (२ औंस)	११·९	×	९·३	६१३
मछली	१०·९	×	२·४	२९६
श्वेत चीनी	×	१००	×	१७९०
भूरी चीनी	×	९५	×	१७००

※ कैलोरी (Calory)—ताप की उस मात्रा को कहते है जो १ पौण्ड जल को ४° F तक खौला देता है।

पथ्यसेवन सम्बन्धी साधारण नियम

१. कष्टदायक पदार्थों का निषेध करना।
२. रुग्ण व्यक्ति को रुचि के अनुसार पथ्य देना ।
३. विना किसी विशिष्ट कारण के पथ्य में परिवर्तन नहीं करना ।
४. पथ्य देने में रोगी के स्वाद तथा इच्छाओं का सर्वदा ध्यान रखना।
५. यदि पथ्य की किसी वस्तु पर रोगी की अनिच्छा हो तो उसको वंद करने के सिवा अल्प मात्रा में देना ।
६. पथ्य में शनैः शनैः परिवर्तन करना।
८. व्यक्ति के कार्य, परिश्रम तथा स्वभाव के अनुसार पथ्य देना ।

आतुरालय (अस्पताल) तथा औषधालयों में भारतीय रोगियों के पथ्य की मात्रा—

द्रव्य	पूर्ण पथ्य (Full Diet)		अर्ध पथ्य (Half Diet)		दुग्ध पथ्य (Milk Diet)		लघु पथ्य (Spoondiet)	
	सेर	छटांक	सेर	छटांक	सेर	छटांक	सेर	छटांक
आटा	×	१०	×	८	×	×	×	×
आटा } चावल	×	६ ४	×	८	×	×	×	×
दाल	×	२	×	२	×	×	×	×
दुग्ध	×	×	×	×	१	४	×	१२
चीनी	×	×	×	×	×	१	×	१
सरसों तैल } या घी	×	१/४ १/४	×	१/४ १/४	×	×	×	×
नमक	×	१/६ छ० या १५० ग्रेन	×	१/६ छ० या १५० ग्रेन	×	×	×	×
मसाला (पीपरआदि)	×	१/३ छ० या ३० ग्रेन	×	१/३ छ० या ३० ग्रेन	×	×	×	×
शाक	×	३ छ०	×	३ छ०	×	८	×	×
इंधन	×	१२	×	१२	×	×	×	८
आरारोट	×	×	×	×	×	×	×	२

शिशुपालन

स्तन–पान (Breast Feeding)

१. जन्म के पश्चात् शिशु को ६ घण्टे के अन्दर स्तन–पान के लिये स्तन से लगा देना चाहिये; किन्तु ग्रामों में ऐसा देखा जाता है कि स्त्रियाँ तीसरे दिन स्तनपान कराती है।

२. प्रथम दिन शिशु को २४ घण्टे में दो वार स्तन–पान कराना चाहिये।

३. दूसरे दिन शिशु को दिन में ४ वार तथा रात्रि में एक वार स्तन–पान कराना चाहिये। यदि बच्चा प्यास के कारण चिल्ला उठे तो एक चम्मच जल पिलाया जासकता है।

४. तीसरे दिन से शिशु को दिन में दो घण्टे पर तथा रात्रि में एक वार स्तन–पान कराना चाहिये। नियमतः दुग्ध–पान कराने से शिशु स्वस्थ तथा उदार प्रकृति का होता है।

५. दुग्ध–पान के समय यदि बच्चा सोता हो तो जगाकर पिलाना चाहिये। यदि जगाना कठिन हो या जगाने पर पुनः सो जाय तो दुग्ध–पान दूसरे समय कराना चाहिये। जैसे यदि ८, १० या १२ वजे दुग्ध–पान कराते हों और बच्चा १० वजे सोगया है तथा जगाया नहीं जा सके तो सोने देना चाहिये। तब उसको १२ वजे ही दुग्ध–पान कराना हितकर होता है।

६. स्तन–पान कराते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि बच्चे की नासिका स्तन से अवरुद्ध न हो, नहीं तो बच्चा स्वतंत्रता पूर्वक श्वास नहीं ले सकता और दुग्ध–पान भी समुचित रूप से नहीं कर सकता।

७. यदि शिशु दिन में सोता तथा रात्रि में जागता हो, तो उसे दिन में एक वार तथा रात्रि में दिनवत् (कईवार) स्तन–पान कराना चाहिये।

८. एक वार में केवल एक ही स्तन–पान कराना चाहिये तथा दूसरा स्तन दूसरी वार पिलाना चाहिये।

९. बच्चे को लगभग १५, २० मिनट तक या जबतक बच्चा स्तन–पान करते करते सो न जाय तब तक स्तन–पान कराना चाहिये।

१०. स्तन–पान के पूर्व तथा पश्चात् चूचुक को गरम जल से प्रक्षालित कर लेना चाहिये।

शिशु का भार (Weight)

जन्म के पश्चात् शिशु भार में कुछ दिनों तक उत्तरोत्तर कम होते जाते हैं किन्तु प्रथम सप्ताह के अन्त में पूर्ववत् हो जाते हैं और फिर उत्तरोत्तर नित्य प्रति

½ से १ छटाँक भार में बढ़ते जाते हैं। यदि नित्यप्रति भार में वृद्धि नहीं हो तो पोषक पदार्थ देना चाहिये।

नाभि-नाल (Umbilical cord)

यदि नाभि पक जाय तो आयोडीन (Iodine), टेनिन (Tannin) या सल्फेनिलेमाइड (Sulphanilamide) आदि व्रणस्थान पर लगा देना चाहिये। कभी कभी नाभि के पक जाने से कामला (Jaundice) उत्पन्न हो जाता है या अत्यधिक रक्त-स्राव होने लगता है; ऐसी स्थिति में नाभि पर विसंक्रमित रुई रख कर बाँध देना चाहिये तथा तत्पश्चात् उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

साधारण शिशु (Normal Infants)

भार (Weight)—जन्म के समय शिशु ३ वा ३ ½ सेर होता है। एक स्वस्थ शिशु प्रथम २ या ३ महीनों तक २ से ३½ छटाँक बढता है। किन्तु जन्म के पश्चात् प्रथम सप्ताह में उसका भार कुछ कम हो जाता है। इसके पश्चात् उत्तरोत्तर बारहवें मास तक ¾ सेर भार मे बढता है।

स्तनपान करनेवाले शिशु के प्रतिमासिक भार में वृद्धिक्रम—

मास (Months)	भार (Weight)
प्रथम मास	३¾ सेर
द्वितीय ,,	४½ ,,
तृतीय ,,	४¾ ,,
चतुर्थ ,,	५¼ ,,
पंचम ,,	५¾ ,,
षष्टम ,,	६¼ ,,
सप्तम ,,	६¾ ,,
अष्टम ,,	७½ ,,
नवम ,,	७¾ ,,
दशम ,,	८¼ ,,
एकादश ,,	८¾ ,,
द्वादश ,,	९¼ ,,

शिर का व्यास—जन्म के समय शिशु के शिर का व्यास १२ इञ्च तथा एक वर्ष पर उसका व्यास १८ इञ्च हो जाता है। शिशु की उँचाई २०½ से २४ इञ्च की होती है

ध्यान तथा श्रवण—१½ मास (६ वें सप्ताह) में बच्चा सुनने लगता है तथा शब्द की ओर घूम जाता है। घूम जाने वाला शिशु गूंगा तथा बहरा नहीं होता।

शिर-स्पर्श—तीसरे तथा चौथे मास में शिशु अपना शिर पकड़ने लगता है।

अस्थाई दन्तोद्गम—६ वें मास से अस्थाई दन्त निकलने लगते हैं, जो ३ वर्ष की अवस्था में पूर्णरूप से निकल आते है।

बैठना—९ वे से दसवें महीने मे शिशु बैठने लगता है।

गति—१२ से १८ वें महीने में शिशु चलने लगता है।

अग्रिम रन्ध्र या तालु—१८ से २४ वें महीने में तालु बन्द हो जाता है।

स्पष्ट भाषण—२४ मास पर शिशु भली भॉति बातें करने लगता है।

स्थाई दन्त—६ वे वर्ष से स्थाई दन्त निकलने लगते हैं जो बुद्धिदन्त के अतिरिक्त बारह वर्षों मे पूर्णरूप से निकल आते हैं।

मलत्याग—

अवस्था	नित्य प्रति की संख्या	स्वरूप
प्रथम २ मास	३ से ४ बार	अण्डे के तरल सदृश, गंधहीन।
२ से ८ मास	२–३ बार	उत्तरोत्तर परिवर्तनशील ।
८ से २४ मास	—२ बार	भूरे रंगका, चिकना तथा कुछ दुर्गन्धित
२ वर्ष के बाद	१–२ बार	पूर्ण रूप का तथा दुर्गन्धित।

कृत्रिम-भोज्य

कृत्रिम-भोज्य का आश्रय उसी समय लिया जाता है; जब कि माता बच्चे को स्तन-पान कराने मे असमर्थ होती है। इस में बहुत ही दोषों का सामना करना पड़ता है, जिनका बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः इस के प्रयोग मे बहुत ही सावधानी रखनी चाहिये।

१. गो दुग्ध को स्त्री दुग्धवत् बनालेना चाहिये (पृ०६२८)
२. बच्चे की उत्पत्ति से लेकर २४ घण्टे के अन्दर शिशु को कृत्रिम दुग्ध (नं०१) में ३ भाग जल मिलाकर ३ बार पिलाना चाहिये।
३. शिशुजनन के २४ वे घण्टे से लेकर ७२ वें घण्टे तक नं०२ के सदृश ही दुग्ध ६ बार पिलाना चाहिये।
४. चौथे दिन नं० १ के दुग्ध में जल नहीं मिलाना चाहिये तथा दिन में दो २ घण्टे पर तथा रात्रि मे एक बार ही दुग्ध पिलाना चाहिये।
५. कृत्रिम दुग्ध को सर्वदा विसंक्रमित कर लेना चाहिये। इस के लिये दुग्ध को

एक पात्र में बंद कर खौलते जल में गरम करके विसंक्रमित किया जाता है।

६. बच्चे को दुग्ध, सर्वदा, गोदी में लेकर पिलाना चाहिये।

७. बोतल तथा रबर के चूचुक को उबलते जल से विसंक्रमित कर लेना चाहिये। इन को सोडा के घोल में रखना उत्तम है।

८. यदि माता का दुग्ध बच्चे के लिये कम होता हो, तो दिन-रात में एक २ वार उपरोक्त दुग्ध पिलाना चाहिये।

शिशुओं के भोजन की मात्रायें तथा विश्राम काल
(Interval And Quantity At Eachfeed)

अवस्था	दिन मे घण्टों मे विश्राम	रात्रि में दुग्धपान	१ वार में मात्रा
७ दिनों तक	२, २ घण्टे पर	१	½ से ¾ छटॉक
१४ से २१ दिनों तक	२, २ ” ”	१	¾ से १½ ”
२१ से ३५ दिनों तक	२, २ ” ”	१	१½ से १¾ ”
४२ से ८४ दिनों तक	२½, २½ ” ”	१	१॥ से २। ”
३ से ५ मास तक	३, ३ ” ”	१	२ से २॥। ”
५ से ९ मास तक	३, ३ ” ”		२॥। से ३॥ ”
९ से १२ मास तक	३।, ३। ” ”		३॥। से ४॥ ”

जीवनीय द्रव्य (Vitamins)

स्वास्थ्य को स्थिर रखनेके लिये यह आवश्यक है, कि भोज्य पदार्थों में जीवनीय द्रव्य भी उपस्थित हों। यों तो भोज्य पदार्थों मे निम्नांकित ५ मुख्य वस्तुयें उपस्थित हैं—

१. प्रोटीन (Protein)
२. कार्बोहाइड्रेट (Corbohydrate)
३. वसा (Fat)
४. लवण (Salts)
५. जल (Water)

जीवनीय द्रव्यों की अनुपस्थिति से नाना प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इनकी उपस्थिति वनस्पति तथा मांस में अधिकता से होती है। हरे शाक तथा फलों में जीवनीय द्रव्य प्रचुरता से पाया जाता है। ये द्रव्य वनस्पतियों को गरम करने से शुष्क करने से या दग्ध करने से नष्ट हो जाते हैं। अभी तक निम्न जीवनीय द्रव्यों का ज्ञान हो चुका है।

१. जीवनीय द्रव्य	अ	(Vitamin A)
२. ” ”	ब	(” B)
” ”	ब१	(” B_1)
” ”	ब२	(” B_2)
” ”	ब६	(” B_6)
३. ” ”	स	(” C)
४. ” ”	डी	(” D)
५. ” ”	ई	(” E)
६. ” ”	पी	(” P)
७. ” ”	एच	(” H)
८. ” ”	के	(” K)

जीवनीय द्रव्य 'अ'—यह द्रव्य जान्तव वसा, हरे शाक, फल, फूल, दुग्ध, यकृत्, तथा वृक्क, मक्खन और काड नामक मछली के यकृत के तैल में प्रचुरता से मिलती है इसकी कमी से शरीर में निम्नांकित दोष उत्पन्न हो जाते हैं।

१ शरीर की वृद्धि रुक जाती है, जिससे व्यक्ति नाटे तथा छोटे रह जाते हैं।

२. शरीर की क्षमताशक्ति कम हो जानी है, जिससे नाना प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न होने लगती हैं।

३. रक्त में रक्तकणिकाओं की संख्या में कमी हो जाती है; जिससे रक्तस्राव बंद नहीं होता।

४. नेत्रों में श्वेत वर्ण के धब्बे उपस्थित हो जाते हैं तथा रात्रि में नहीं दिखलाई देता।

५. अन्नपाक देर में होता है।

६. चर्म शुष्क हो जाता है तथा नाना प्रकार के चर्मरोग होने लगते हैं।

७. वात (लकवा) हो जाता है।

८. दन्तवेष्ठ (मसूढ़े) पूय युक्त हो जाते है तथा दाँत हिलने लगते हैं।

९. अश्मरी उत्पन्न हो जाती है।

१०. राजयक्ष्मा हो जाता है।

११. अस्थियाँ मृदु हो जाती है।

१२. बच्चों को फक्क (सूखा) रोग हो जाता है।

उपरोक्त व्याधियों को रोकने तथा दूर करने के लिये जीवनीय द्रव्य 'अ' (Vitamina) आवश्यक है।

जीवनीय द्रव्य 'ब'—यह जल में घुलनशील होता है, जो हरे फलों, फूलों तथा पत्तों में, बीजों के छिलकों में, यकृत्, तथा खमीर (yeast) में प्रचुरता से मलता है। यह मशीन से साफ किये हुये चावलों में नहीं मिलता है।

जीवनीय द्रव्य 'ब' की कमी से शरीर में अधोलिखित दोष उत्पन्न हो जाते हैं—

१. भूख नहीं लगती।
२. मांस के सूखने के कारण व्यक्ति दुबला, पतला हो जाता है।
३. व्यक्ति शक्ति हीन हो जाता है।
४. शरीर में नाना प्रकार की वेदना उपस्थित हो जाती है।
५. वमन होने लगता है।
६. हृदय तीव्र गति से चलने लगता है।
७. आंत्र शिथिल हो जाते हैं।
८ कोष्ठबद्धता उपस्थित हो जाती है।
९. बेरी, बेरी (Beri Beri) नामक व्याधि उत्पन्न हो जाती है।
१०. रक्ताल्पता हो जाती है।

जीवनीय द्रव्य 'मिश्रित ब' (B. Complex) में उपस्थित वस्तुयें—

१. निकोटिनिक एसिड (Nicotinic Acid)
२. रिबोफ्लेविन (Ribotlavine or Vit B_2)
३. पाइरोडाक्सीन (Pyrodoxine or Vit B_6)
४. कैल्शियम पेण्टोथिनेट (Calcium Pentothinate)

जीवनीय द्रव्य 'स'—यह जलमें घुलन शील है। यह आमला नारङ्गी, नीबू, टमाटर, अंकुरित बीज, अण्डों के श्वेतीय भाग तथा कुछ दुग्ध में पाया जाता है।

जीवनीय द्रव्य 'स' की कमी से होने वाले दोष—

१. रक्तनलिकाओं की भित्तियाँ नष्ट हो जाती हैं; जिससे रक्तस्राव होने लगता है।
२. शारीरिक भार कम हो जाता है।
३, शरीर का पोषण उचित रूप में नही होता।
४. स्कर्वी (Scurvy) नामक व्याधि उपस्थित हो जाती है।

जीवनीय द्रव्य 'स' के गुण—

१. रक्तकण तथा कणिकाओं की वृद्धि।
२. काली कास (Whooping cough) नष्ट होता है।
३. स्कर्वी नाशक है।
४. पाण्डु (Anaemia) रोग को नष्ट करता है।
५. आंत्रिक ज्वर (Entericfever) में लाभदायक है।
६. गर्भपात को रोकता है।

जीवनीय द्रव्य 'डी'—यह वसा में अधिकता से पाया जाता है। यह जीवनीय 'अ' के साथ भी सर्वदा उपस्थित रहता है। इसकी कमी से शिशुओं में फक्क रोग उत्पन्न होता है। यह अस्थि तथा दन्तनिर्माण के लिये आवश्यक होता है।

जीवनीय द्रव्य 'डी' के गुण—

१. फक्क (Ricket) रोग नाशक होता है।

२. दन्तकोटर (Caries of Teeth) को नष्ट करता है।

३. अस्थिशोष तथा दन्तोद्गम के समय लाभदायक होता है।

४. यह कैल्शियम के शोषण में सहायक होता है; अतः इसका व्यवहार क्षयरोग मे लाभप्रद होता है।

जीवनीय द्रव्य 'ई'—यह अंकुरित गेहूँ, बीजों तथा हरे हरे शाकों में प्रचुरता से पाया जाता है। इसे गर्भपात के समय गर्भ स्थिर करने के हेतु देते है। इसके अभाव मे पुरुष नपुंसक तथा स्त्रियाँ वन्ध्या हो जाती है।

जीवनीय द्रव्य 'एच'—यह अंकुरित बीजों मे तथा छोटे छोटे पौधोंमे पाया जाता है। इसके अभाव में अंगों की शिथिलता, अनिद्रा, त्वचा का पीला पड़ना, मुहासे, तथा फुन्सियाँ आदि उत्पन्न हो जाती हैं।

जीवनीय द्रव्य 'के'—यह आलू, टमाटर, गोभी, पालक-शाक, गेहूँ के कोपलों में तथा अण्डे के अन्दर के भाग में प्रचुरता के साथ पाया जाता है। यह कामला (Jaundice) नामक व्याधि की प्रधान ओषधि है। यह रक्त स्कन्दन में भाग लेता है। इसका व्यवहार राजयक्ष्मा में होने वाले रक्तष्ठीवन के रक्त को बंद करने के निमित्त किया जाता है।

जीवनीय द्रव्य 'पी'—यह नीबू के रस में मिलता है, जो मुख्यतया रक्तस्राव में व्यवहृत होता है।

अन्तःस्रावी ग्रंथिविज्ञान (Endocrinology)

यहाँ पर अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के कार्य क्षीणता तथा कार्याधिकता से होने वाले शारीरिक परिवर्तनों का वर्णन किया जायगा। इन्ही परिवर्तनों के आधार पर ही इन ग्रन्थियों का व्यवहार चिकित्सा में किया जाता है।

(१) अवटुका ग्रंथि (Thyroid gland)

	कार्य-क्षीणता	कार्याधिक्य
बाल	१. बाल अल्प या बिल्कुल नहीं उगते। २. बाल उखड जाते है। ३. भ्रू का बाह्य तिहाई भाग पूर्णरूप से नहीं उगा होता।	१ बालों की वृद्धि अत्यधिक होती है। २. बाल कोमल तथा चमकीले होते है।
चर्म तथा मुखमण्डल	१ चर्म मोटा, खुरदरा तथा शुष्क हो जाता है।	१ चर्म आर्द्र तथा कोमल होता है। २ चर्म मे स्वेद (पसीना) अधिक त्यक्त होता है। ३. मुखमण्डल स्वच्छ रहता है।

	कार्य-क्षीणता	कार्याधिक्य
शारीरिक बनावट तथा अस्थिसंस्थान	१. व्यक्ति नाटा (बवना) रह जाता है। २. अस्थियां छोटी, वृद्धि हीन तथा विकृत हो जाती हैं। ३. अँगुलिया मोटी हो जाती हैं। ४. अँगुलियों का अन्तिम शिखर स्थूल हो जाता है।	१. अस्थियां छोटी हो जाती हैं। २. अंगुलियां पतली तथा पुच्छवत् हो जाती हैं, ऊपर को मोटी तथा अधः की ओर पतली हो जाती हैं।
बुद्धि तथा नाडी संस्थान	१. बुद्धि मद हो जाती है। २. ज्ञान क्षीण तथा हीन हो जाता है।	१. इच्छा शक्ति प्रबल हो जाती है। २. व्यक्ति बेचैन रहता है। ३. व्यक्ति उत्तेजित, कम्पित तथा क्षुभित हो जाता है। ४ व्यक्ति पागल हो जाता है। ५ शरीर उष्ण रहता है।
प्रजनन अंग	१. स्त्रियों का आर्तव नष्ट हो जाता है। २. व्यक्ति मे मैथुन शक्ति क्षीण हो जाती है।	१. आर्तव नष्ट हो जाता है। २. मैथुन शक्ति क्षीण हो जाती है।
पचन संस्थान तथा दन्त	१ कोष्ठबद्धता हो जाती है। २ दांत अपूर्ण तथा अनियमित होते हैं। ३ दन्तोद्गम अधिक समय मे होता है।	१ प्रवाहिका, कोष्ठबद्धता, वमन, अजीर्ण तथा आम्लीयता आदि व्याधियाँ हो जाती हैं। २. दांत मोती सदृश श्वेत तथा पूर्ण प्रगल्भ होते हैं।
हृदय तथा फुफ्फुस	१ हृदय का कार्य मद हो जाता है। २ रक्त-चाप न्यून हो जाता है।	१. हृदय की धड़कन तीव्र हो जाती है। २ हृदय का कार्य अनियमित हो जाता है। ३ श्वास-प्रश्वास तीव्र हो जाता है।
सात्मीयकरण (Metabolism)	१. सात्मीयकरण कम हो जाता है। २ मेदाधिकता हो जाती है। ३. शारीरिक ताप न्यून हो जाता है।	१. सात्मीयकरण अधिक हो जाता है। २. शारीरिक भार कम हो जाता है।
व्याधियाँ	कोष्ठबद्धता, बवनापन, कायिकक्षीणता, शिशुओं के कायिक तथा मानसिक शक्तियों की वृद्धि में कमी तथा नष्टार्तव।	गलगण्ड (Exophthalmic goitre) तथा पचन-संस्थानगत विकृति।

	कार्य-क्षीणता	कार्याधिक्य
बाल	१. बाल अल्प उगते हैं।	१. बाल अत्यधिक उगते हैं; विशेषत. वक्ष तथा शाखाओं पर। २. भ्रू सवन होती है।
चर्म तथा मुख-मण्डल	१. चर्म कोमल, श्वेत तथा मृदु होता है। २. युवा होने पर चर्म शुष्क हो जाता है।	१. चर्म मोटा, शुष्क तथा झुर्रियों से व्याप्त होता है। २. ओष्ठ तथा नासिका मोटी होती हैं। ३. जिह्वा बडी होती है।
शारीरि बना-वट तथा अस्थिसंस्थान	१. शारीरिक सगठन छोटा होता है। २. अस्थियाँ छोटी होती हैं। ३. अगुलियाँ पतली तथा पुच्छवत् होती हैं।	१. अस्थियाँ बडी होती हैं। २. मुखमण्डल की अस्थियाँ विकृत होती हैं। ३. अंगुली स्थूल तथा इनका अन्तिम भाग भी स्थूल होता है।
बुद्धि तथा नाडी सस्थान	१. बुद्धि हीन होती है। २. शिर-शूल होता है। ३. व्यक्ति निद्रालु तथा उदास रहता है।	१. बुद्धि मन्द होती है। २. व्यक्ति मूर्ख होता है। ३ शिर शूल होता है।
उत्पादक अग	१. बहुमूत्र हो जाता है। २. उत्पादक अग सूक्ष्म होते हैं। ३. आर्तव नष्ट होता है। ४. मैथुन की शक्ति तथा इच्छा का ह्रास होता है।	१ उत्पादक अग बडे होते हैं। २. नष्टार्तव होता है। ३. मैथुन शक्ति हीनता होती है।
पचन सस्थान तथा दन्त	× × ×	१. दन्त परस्पर अधिक दूरी पर होते है।
हृदय तथा फुफ्फुस	१. रक्त चाप स्वाभाविक या कम होता है। २. नाडी गति मन्द हो जाती है।	१. ध्वनि मोटी हो जाती है।
सात्मीयकरण	१. सात्मीयकरण कम हो जाता है। २. मेदस्विता हो जाती है।	१. सात्मीयकरण की वृद्धि हो जाती है। २. शर्करा मेह हो जाता है।
व्याधियाँ	ताप की न्यूनता, प्रजनन अग की स्थूलता, नपुसकता, बुद्धि तथा कायिक क्षीणता तथा मैथुन शक्ति की अप्रगल्भता होती है।	नष्टार्तव, देवकाय तथा नपुंसकता आदि व्याधियाँ हो जाती है।

अधिवृक्क (Adrenals)

	कार्य-क्षीणता	कार्याधिक्य
वाल	१. वाल अल्प उगते हैं।	१. वाल समय से पूर्व मोटे तथा सघन उगते हैं।
चर्म तथा मुख-मण्डल	× × ×	१. चर्म कृष्णवर्ण का होता है विशेषतः उत्पादक अंग तथा चुचुक का।
बुद्धि तथा नाडी संस्थान	१. मन्द होते हैं।	१. तीव्र तथा नियम विहीन होता है।
उत्पादक अग	१. उत्पादक अपूर्ण प्रगल्भ होते हैं।	१. शिश्न स्वाभाविक तथा भगशिश्नि का वडी होती है। २. स्तन वड़े होते हैं। ३. आर्तव स्राव अवस्था से पूर्व तथा अनियमित होता है। ४ मैथुनेच्छा तीव्र होती है।
पचन संस्थान तथा दन्त	१. दन्त विकृत होते हैं।	१. पचन विकृत हो जाता है। २. वमन होता है। ३. छेदक दन्त वडा होता है।
हृदय तथा फुफ्फुस	१ रक्त चाप न्यून हो जाता है। २. श्वास-प्रश्वास उथला हो जाता है।	१. रक्तचाप उच्च हो जाता है। २. नाडी गति तीव्र होती है।
मास संस्थान	१. शक्ति का ह्रास होता है।	१. शक्ति की वृद्धि होती है।
सात्मीयकरण	१. भार मे कमी हो जाती है।	१. सात्मीयकरण में वृद्धि होतो है। २. मेदस्विता हो जाती है।
व्याधियाँ	कायिक तथा मानसिक शक्ति की कमी, रक्तचाप का न्यून होना, नाडी शूल तथा लसिका ग्रन्थि वृद्धि आदि व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं।	रक्तचाप की अधिकता, आर्तव-श्राव की शीघ्रता तथा मैथुन शक्ति की समय से पूर्व प्रगल्भता आदि उपद्रव होते हैं।

डिम्ब ग्रंथि (Ovaries)		अण्ड ग्रंथि (Testes)	
कार्य क्षीणता	कार्याधिक्य	कार्यक्षीणता	कार्याधिक्य
१. कक्षा तथा भग प्रात पर बाल कम उगते है ।	१ कक्षा तथा भग-प्रात पर बाल शीघ्र उग आते हैं ।	१. बाल कम तथा स्त्रीत्व प्रकार के उदय होते हैं ।	१. बाल कक्षा तथा गुह्यप्रान्त में शीघ्र उदय होते हैं ।
२. अस्थिया लम्बी तथा गोली होती हैं ।	१. अस्थिया शीघ्र ही अवस्था के पूर्व लम्बी हो जाती हैं ।	१. अस्थियाँ लम्बी हो जाती हैं ।	१. अस्थियाँ शीघ्र ही प्रगल्भ और लम्बी हो जाती हैं ।
	२ अस्थियाँ मृदु हो जाती हैं ।	२. हाथ तथा पैर मृदु और चपटे होते हैं ।	
× ×	१ बुद्धि तीव्र होनी है।	१. बुद्धि मंद हो जाती है। २. विचार शक्ति भी कम हो जाती है ।	१. बुद्धि तीव्र होती है।
३. प्रजनन अंग अपूर्ण प्रगल्भ होते हैं ।	१. मैथुन तथा इच्छा शक्ति अवस्था से पूर्व जागृत हो जाती है ।	१. प्रजनन अंग छोटे तथा अप्रगल्भ होते है।	१. प्रजनन अग वडे होते हैं । २. मैथुन की शक्ति अधिक प्रगल्भ होती है
४. आर्तव नष्ट हो जाता है । स्राव अनियमित होता है।	२. आर्तवस्राव अवस्था से पूर्व होने लगता है। ३ आर्तव स्राव की अधिकता होती है ।		
× ×	१. दात अवस्था से पूर्व निकल आते हैं।	× ×	१. दन्त अवस्था से पूर्व निकलते हैं ।
५ रक्तचाप उच्च होता है	१ रक्तचाप न्यून होता है	× ×	× ×
६. सात्मीयकरण न्यून होता है ।		× ×	× ×
७. मेदस्विता हो जाती हैं			
८. नष्टार्तव, अनियमितार्तव, तथा वंध्यात्व आदि व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं ।	१. अस्थि शोष, रक्त-प्रदर तथा कष्टार्तव आदि व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं ।	१ मैथुनेच्छा नहीं जागृत होती ।	१. मैथुनेच्छा अवस्था से पूर्व जागृत हो जाती है ।

बालग्रन्थि (Thymus)	पिनीयल (Pineal)	उपावटुका (Parathyroid)	
कार्य क्षीणता	कार्याधिक्य	कार्य क्षीणता	कार्याधिक्य
१. बाल कम उदय होते हैं।	१ बाल अधिक उदय होते हैं।	×	×
२. ऊँचाई कम होती है	२. व्यक्ति की ऊँचाई अधिक होती है।	×	१. अस्थियों में कैल्शियम के लवण एकत्रित होते हैं।
×	×	१. आक्षेप होता है।	×
		२ मुखमण्डल, हाथ तथा पैर में ऐंठन होता है।	×
३. प्रजनन अंग अप्रगल्भ होते हैं।	१. प्रजनन अंग बडे होते हैं।	×	×
	२. मैथुनेच्छा अवस्था से पूर्व जागृत हो जाती है।	×	×
४. मध्य कर्तनकदंत बडे होते हैं।	१. पाचन विकृत हो जाता है।	१. दन्त तथा पाचन विकृत हो जाते हैं।	×
५. श्वास कष्ट तथा हृदय का कार्य अनियमित होते हैं।	×	१. धमनी दाढर्य तथा रक्त-चाप उच्च हो जाता है।	×
६. मासपेशियां क्षीण हो जाती हैं।	×	×	×
×	१. मेदस्विता हो जाती है।	×	×
७. मैथुन शक्ति हीनता हो जाती है।	१. मैथुन की इच्छा अत्यधिक हो जाती है	१ व्रण हो जाता है। २ शिरागुच्छ हो जाता है। ३. कैल्शियम का शोषण पूर्ण रूप से नहीं हो पाता।	१. कैल्शियम का शोषण पूर्ण रूप से नहीं हो पाता।

एड्रेनल (Adrenal)

परिचय—यह अधिबृक्क का सत्त्व होता है।

पर्याय—हेमिसाइन (Hemisine), एपिनेफ्राइन (Epineqhrine), तथा एड्रेनिन (Adrenin)।

योग—(Preparation)—

लाइकर एड्रेनलीन हाइड्रोक्लोर (Liqr. Adrenalin Hydrochlor)

R/

एड्रेनलीन	(Adrenalin)	१ भाग
क्लोरोफार्म	(Chloroform)	५ "
सोडियम क्लोराइड	(Sodium Chloride)	३ "
एसिड हाइड्रोक्लोरिक डिल	(Acid Hydrochloric Dil)	१००० "
डिस्टिल्ड वाटर	(Distld Water)	९ "

गुण—स्वतंत्र नाडी संस्थान (Sympathetic Nervous system) के नाड़ी के प्रान्तिक भाग (Nerve Endings) को उत्तेजित कर केशिकाओं तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म धमनियों को संकुचित करती है; जिसके परिणाण स्वरूप रक्त-चाप उच्च हो जाता है

मात्रा—१० बूँद से ३० बूँद।

एड्रेनलीन के व्यवहार में ध्यान देने योग्य विषय

१. श्वास (Asthma)—एड्रेनलीन को ५ से १० बूँद की मात्रा में त्वचागत प्रविष्ट कराते हैं। यह फुफ्फुस के मांस सूत्रों को शिथिल करती है; जिससे कफ सुगमता से वाहर निकलने लगता है।

२. श्वसनक ज्वर (Pneumonia)—एड्रेनलीन के व्यवहार से हृदय के मांस पेशियों को अत्यधिक रक्त मिलता है; क्योंकि हृदय की धमनी इससे संकुचित नहीं होती। इससे विषमयता नहीं होने पाती। इसको अवस्थानुसार १ से ३० बूँद की मात्रा में प्रविष्ट कराते है। अत्यधिक मात्रा में प्रविष्ट करानेपर यकृत के तंतुओं का क्षय हो जाता है। इसको प्रत्येक दो२ घण्टे पर २४ घण्टे तक देते हैं।

३. काली कास—(Whooping Cough)—एड्रेनलीन को ३ बूँद की मात्रा मे प्रविष्ट करने से लाभ होता है।

४. प्लीहा-वृद्धि (Enlarged spleen)—५ बूंद की मात्रा में दिन में ३ बार पिलाने से प्लीहा-वृद्धि नष्ट होती है। इस कार्य के लिये इसे कई सप्ताह तक पिलाना चाहिये।

५. रक्त-स्रावाधिक्यजन्य मूर्च्छा, स्तब्धता, शल्यकर्मोत्तर हृदयावरोध, श्वासावरोध, तथा जलमग्न (Drowning) में इसको ५ बूँद की मात्रा में २० औंस सेलाइन के साथ शिरा मार्ग द्वारा शनैः शनैः प्रविष्ट करना चाहिये। सेलाइन का तापक्रम १०५° F होना आवश्यक है।

६. सर्पदंश (Snake- Bites)—इसको दंश स्थान के समीप तंतुओं में प्रविष्ट करना चाहिये। इससे रक्त-प्रणालियाँ संकुचित हो जाती हैं तथा विष फैलने नहीं पाता इसके पश्चात् दंशस्थान को दग्ध कर देना चाहिये।

एड्रेनलीन का निषेध—

१. धमनी प्रसार (Aneurysm) में इसका व्यवहार हानिकर होता है।
२. धमनी दार्ढ्य (Arterio-sclerosis) में इसका व्यवहार नहीं करते।
३. रक्त-चापाधिक्य (High Blood-Pressure)
४. हृदय-प्रसार (Dilatation) मे भी इसका व्यवहार निषिद्ध है।

थायरायड (Thyroid)

बच्चों में थायरायड ग्रन्थि के उद्रेचन की कमी से जो दोष उत्पन्न होते है, उनको दूर करने के निमित्त इसका व्यवहार होता है।

मात्रा—१।१० से १ ग्रेन। दिन में ३ बार।

थायराइड चिकित्सा (Thyroid Treatment)-

बच्चों में—

१. लसिकाग्रंथिवृद्धि (Enlarged Lymphatic Glands) में व्यवहृत होता है।
२. तुण्डिकेरी (Enlarged tonsils) में भी लाभप्रद होता है।
३. कण्ठशालूक (Adenoids) को भी नष्ट करती है।
४. मंदता नाशक है।
५. रात्रि के समय बिस्तर पर अनैच्छिकरूप से मूत्रत्यक्त हो जाने को रोकती है।
६. फक्क (Ricket) तथा अल्ब्यूमिनुरिया (Albuminuria) को नष्ट करती है।

लड़कियां तथा स्त्रियों में—

१. गर्भपात (Abortion) को रोकती है।
२. कष्टार्तव (Dysmenorrhoea), रक्तप्रदर (Menorrhagia), तथा रक्त-क्षय (Menopause) को दूर करती है

३. आर्तव का प्रारम्भ करने के निमित्त भी व्यवहृत होती है।
४. वन्ध्यत्व नाशक है।

नष्ट होने वाली साधारण व्याधियां—

वात बलासक (Beri Beri), ताण्डव (Chorea), रक्ताल्पता (Haemophilia), बौनापन (Cratinism) बालक्षय, तापनाशा, आक्षेप (Tetany) दन्तकोटर, अस्थि भग्न, पामा (Eczema) शीत-पित्त (Urticarea) अपरस (Psoriasis) तथा श्वेत कुष्ठ (Leucoderma) आदि।

पैराथायराइड (Parathyroid)

मात्रा—१।२० से १ ग्रेन। गोली के रूप में व्यवहृत होता है।

व्यवहार—

१. कैल्शियम के सात्मीयकरण को नियमित करता है।
२. विषैले पदार्थों को शरीर से बाहर करता है।
३. चिरकालिक पूय-स्राव को रोकता है।
४. ग्रहणी (Sprue) रोग को नष्ट करता है।
५. अपस्मार (Epilepsy) को दूर करने के लिये व्यवहृत होता है।
६. आक्षेप तथा ताण्डव (Tetany and chorea) नाशक है।

पिच्युटरी (Pituitary)

यह शारीरिक वृद्धि में सहायक होती है; विशेषतः प्रजनन अंगों की वृद्धि में अधिक भाग लेती है। पिच्युटरी ग्रंथि के पश्चिम खण्ड का सत्व (Extract) अनैच्छिक मांस पेशियों का संकोचन कराती है। यह रक्त चाप को शनैः शनैः बढाती है, जो दीर्घकालिक होता है।

व्यवहार—

१. गर्भाशय की शक्ति-हीनता (Inertia) में गर्भ को बाहर निकालने के लिये प्रविष्ट किया जाता है। इसका व्यवहार उस समय किया जाता है; जब कि योनि मार्ग में कोई अवरोध उपस्थित न हो। इस कार्य के लिये यह बहुत ही लाभप्रद होती है।
२. प्रसवोत्तर रक्त स्राव को बंद करती है तथा दुग्धस्राव की वृद्धि करती है।
३. न्यून रक्त-चापयुक्त हृदयावसाद में सफलता के साथ प्रविष्ट किया जाता है।
४. आंत्र शैथिल्य (Intestinal parasis) में अत्यधिक लाभ दायक होती है। शल्योत्तर आंत्र शैथिल्य में यह हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड (Hyoscine

Hydrobromide) $\frac{1}{100}$ के ग्रेन की मात्रा के साथ १ सी० सी० की मात्रा में २ या ४ सी० सी० सेलाइन में प्रविष्ट की जाती है।

९. मरणासन्न रोगियों में; जिनमें नाड़ी (Pulse) लुप्त हो गई हो; इसको प्रविष्ट करने से नाड़ी व्यक्त होने लगती है।

व्यवहार के समय ध्यान देने योग्य बातें—

१. अपरापतन के पूर्व प्रविष्ट करने से रोगिणी के मृत्यु का भय रहता है।
२. हृदयरोग, वृक्करोग तथा जीवाणुमयता में नहीं प्रविष्ट करना चाहिये।

रोगक्षमता (Immunity)

परिचय—शरीर के उस प्रतिरोधक शक्ति को कहते हैं, जो रोगोत्पादक जीवाणुओं के आक्रमणों को रोकने में समर्थ होती है।

प्रकार—

१. सक्रिय क्षमता (Active Immunity)
२. निष्क्रिय क्षमता (Passive Immunity)

१. सक्रिय क्षमता (Active Immunity)—जब व्याधि-प्रतिरोधक शक्ति शरीर के अन्दर उत्पन्न की जाती है, तब उसे 'सक्रिय क्षमता' कहते हैं।

२ निष्क्रिय क्षमता (Passive Immunity)—बाहर से बनी बनाई क्षमता, जब शरीर में प्रविष्ट की जाती है, तब उसे 'निष्क्रिय क्षमता' कहते हैं।

नोट—सक्रिय क्षमता (A. I.) वैक्सीन (Vaccine) नामक द्रव को शरीर में प्रविष्ट करने से उत्पन्न होती है। अतः यहाँ वैक्सीन का विस्तृत वर्णन किया जाता है।

वैक्सीन (Vaccine)

परिचय—जब मृत वा अर्धमृत जीवाणुओं को किसी निश्चित ताप पर विसंक्रमित कर समबल लवणोदक (Normal Saline solution) में घोल लिया जाता है तब उसे वैक्सीन कहते हैं।

निर्माण विधि—जिस रोग का वैक्सीन बनाना हो, उस रोग के जीवाणुओं को सर्व प्रथम अन्य जीवाणुओं से पृथक् कर शुद्ध पोषक द्रव (Culture Media Pura) में रख १००° F के ताप पर १८ से २४ घण्टों तक रखकर उनकी वृद्धि कर लें। जब इनकी संख्या बढ़ जाय तब इनको लवणोदक में मिला दें।

इस घोल को ६०° C के तापक्रम पर एक घण्टे तक गरम करके या ट्राइक्रीसोल (Trikresol) नामक जीवाणुनाशक द्रव के ०.१ से ०.२ प्रतिशत शक्ति के घोल को अल्प मात्रा में मिला विसंक्रमित कर लें उनकी मात्रा १ सी० सी० में १,०००

मीलियन निर्धारित कर एक छोटी रबर युक्तकागवाली शीशी में रख दें। इनके मात्रा का निर्धारण थाम ज़ीज पिपेट ((Thom zeiss pipette) नामक यंत्र द्वारा रक्त गणना सदृश की जाती है।

वैक्सीन के प्रकार—

१. व्याधिरोधक (Prophylactic Vaccine)
२. व्याधिनाशक (Curative Vaccine)

व्याधिरोधक वैक्सीन के प्रकार—

१. सादा (Plain)
२. मिश्रित (Mixed)

व्याधिनाशक वैक्सीन के प्रकार

१. सादा (Plain)
२. मिश्रित (Nixed)
३ विशिष्ट (Special)

वैक्सीन के प्रविष्ट करने की प्रणाली—सर्व प्रथम वैक्सीन के अम्प्युल को भली भाँति हिलाकर ओषधि को पूर्ण रूप से मिला ले फिर अम्प्युल के शिरे को थोड़ा गरम कर बक्स में रखी हुई आरी (Saw) से काट कर विसंक्रमित पिचकारी में ओषधि को भर विसंक्रमित चर्म के नीचे प्रविष्ट कर विद्ध-स्थान को टिंचर आयोडीन (Tr. Iodine) द्वारा बंद कर दें।

वैक्सीन का दो प्रभाव—

१. स्थानिक (Local) २. कायिक (General)

स्थानिक प्रभाव—

१. सूजन (Swelling)
२. रक्तिमा (Redness)
३. कण्डू (Itching)
४. वेदना (Pain)

कायिक प्रभाव—

१. किंचित ज्वर।
२. शारीरिक वेदना जो २४ घण्टे मे शान्त हो जाती है।

वैक्सीन का निषेध—

१. शरीर में शोथ होने पर इसको नहीं प्रविष्ट करते, क्योंकि यह शोथ क्रिया को उत्तेजित करती है।
२. तीव्र संक्रमण मे वैक्सीन का व्यवहार नहीं करना चाहिये।

वैक्सीन की मात्रायें तथा विश्राम काल

वैक्सीन नामावली	मात्रायें	मात्राओं के वीच अवकाश
एक्नी वैक्सीन (Acne vaccine)	प्रारम्भिक मात्रा ५ मिलियन है जो बढ़कर १०० मिलियन तक जाती है।	७ से १० दिन
एक्नी वैसिलस + स्टैफिलो कोकस (Acne Bacillus + Staphylo coccus)	प्रारम्भिक मात्रा एक्नी का ५ मिलियन + स्टैफिलोकोकस का १०० मिलियन एकत्र प्रविष्ट करते है।	७ दिन
सरीब्रोस्पाइनल मेंनिजायटिस वैक्सीन (Cerebrospinal Meningtis Vaccine)	तीव्र में—५ से १० मिलियन चिरकालिक में—२५० से ५०० मिलियन	प्रत्येक २ या ३ दिनो पर। ७ से १० दिन
विसूचिका वैक्सीन (Cholera Vaccine)	प्रतिषेधक— न० १—१००० से ४००० मिलियन (½ सी० सी०) न० २—२००० से ८००० मिलियन (१ सी० सी०)	५ या ६ दिन बाद
कोलाई वैसिलस (Coli Bacillus)	तीव्र—१० से ४० मिलियन चिरकालिक—२५० या ५०० मिलियन	प्रत्येक २ या ३ दिनों पर ७ से १० दिनों तक
फ्रीड लैण्डर्स वैसिलस (Fried Landers Bacillus)	प्रतिषेधक—५०० मिलियन तक चिकित्सार्थ—७५ से १२५ मिलियन तक	३ मास १० से १४ दिन
गोनोकोकस वैक्सीन (Gonococcus Vaccine)	तीव्र—५ मिलियन चिरकालिक—५०० या १००० मिलियन	२ या ३ दिनों पर १० से १४ दिनों पर
इन्फ्लयूएंजा वैसिलस (Influenza Bacillus)	प्रतिषेधक—(१) २५० मिलियन (२) ५०० मि० मात्रा—	१० दिनों पर

वैक्सीन नामावली	मात्रायें	मात्राओं के बीच अवकाश
	चिकित्सार्थ— तीव्र—१० से ५० मिलियन चिरकालिक—५०० मि० तक	२ से ३ दिनों तक, ७ से १० दिनों तक
न्यूमोकोकस वैक्सीन (Pneumococcus Vaccine)	तीव्र—२५ से ५० मिलियन चिरकालिक—५०० मिलियन तक	२ दिनों तक ७ से १० दिनों तक
स्टैफिलो कोकस (Staphy Lococcus Vaccine)	१०० मिलियन से प्रारम्भकर १००० या ५००० तक ले जाते हैं।	७ से १० दिनों तक
टाइफाइड वैक्सीन (Typhoid vaccine)	चिकित्सार्थ—१०० से २५० मिलियन सर्वथा स्टैफिलो-कोकस के साथ।	५ दिनों तक लगातार
टाइफाइड और पैराटाइफायड मिक्स (Typhoid and Paratyphoid Mix)	प्रतिषेधक मात्रा— (१) ५०० मिलियन (½ सी० सी०) (२) १००० मिलियन (१ सी० सी०)	दोनों मात्राओं के बीच १० या १४ दिनों से अधिक अवकाश नहीं होना चाहिये
पर्टुसिस वैक्सीन (Pertusis vaccine)	अवस्थानुसार— ५० से ५०० मिलियन तक	४ से ५ दिनों तक।
ट्यूबर कुलीन (Tuberculin) टी०, आर० (T. r.)	चिकित्सार्थ— ०·००००१ सी० सी० से ऊपर	१० से १४ दिनों तक
ट्यूबर कुलीन बी०, ई० (Tuberculin B. E.)	चिकित्सार्थ—० ००००१ सी० सी० से ऊपर कभी कभी कम मात्रा भी दी जाती है।	१० से १८ दिन
ट्यूबर कुलीन टी०, ए० (Tuberculin T. A.)	निदान के लिये अधस्त्वक—०·२, १, ५ तथा १० क्यूबिक मीलीमीटर (C. M. M.)	प्रतिक्रिया के लक्षण को उत्पन्न होने तक मात्राओं में तीव्रता के साथ अल्प दिनों के अन्दर वृद्धि करनी चाहिये।

एण्टी टाक्सिक वैक्सीन (Anti Toxic Vaccine)

(१) प्लेग वैक्सीन (Plague Vaccine)—इसको २ सी० सी० की मात्रा में त्वचागत प्रविष्ट करने पर प्लेग के आक्रमण की सम्भावना कम हो जाती है। यदि आक्रमण होता भी है, तो तीव्रता कम होती है। यदि इस वेक्सीन की दो मात्रा एक सप्ताह के अन्तर पर प्रविष्ट किया जाय तो विशेष लाभ होता है।

(२) एण्टी कालरा वैक्सीन (Anti Cholera Vaccine) इसको प्रविष्ट करने पर विसूचिका के लिये क्षमता उत्पन्न हो जाती है, जो ६ मास तक बनी रहती है। इसकी प्रथम मात्रा ०·५ सी० सी० की तथा दूसरी मात्रा एक सप्ताहान्तर १ सी० सी० की होती है।

(३) एण्टी रैबिक वैक्सीन (Anti Rabbic Vaccine)—इसको पागल कुत्ते या श्रृगाल के काटने पर ५ सी० सी० की मात्रा में १ प्र० शत शक्ति के घोल को १४ दिनों तक गम्भीर त्वचा (उदर के त्वचा) में प्रविष्ट करना चाहिये। यह विष के आक्रमण को रोकती है।

(४) एज्मा वैक्सीन (Asthma Vaccine)—इसको यदि स्वजनित तैयार कर व्यवहार मे लाया जाय तो विशेष लाभ दायक होता है। किसी किसी में संचित वैक्सीन भी लाभदायक होता है।

निष्क्रिय क्षमता, सीरम (Serum) नामक द्रव्य को प्रविष्ट करने से उत्पन्न होती है। यहां सीरम का विस्तृत वर्णन किया जाता है।

सीरम (Serum)—सर्व प्रथम घोड़े में व्याधि जिवाणुओं को प्रविष्ट कर कृत्रिमतः उत्पन्न की जाती है तत्पश्चात् उसके रक्त का सीरम निकाल कर पीड़ित व्यक्तियों में प्रविष्ट करते हैं।

सीरम और वैक्सीन में भेद

वैक्सीन	सीरम
१. प्रतिरोधक क्षमता शरीर में उत्पन्न की जाती है।	१. प्रतिरोधक क्षमता शरीर में बनी बनाई प्रविष्ट की जाती है।
२. मृत वा अर्धमृत विसंक्रमित जीवाणुओं का घोल होता है।	२. रक्त की लसिका प्रविष्ट की जाती है।
३. विशेषकर व्याधियों को रोकने के लिये प्रयुक्त होता है।	३. व्याधियों को नष्ट करने के लिये व्यवहृत होता है।

(१) एण्टी डिफ्थेरिटिक सीरम (Anti Diphtheritic Serum)—इसको रोहिणी नामक व्याधि में १६०० यूनिट से १२००० यूनिट तक की मात्रा में प्रविष्ट

करना चाहिये। यह ६ से २४ घण्टे के अन्दर दुहराई जा सकती है। रोग प्रारम्भ होते ही इसको दोनों स्कन्धों के बीच में प्रविष्ट करे। इसका प्रभाव ३ सप्ताह तक बना रहता है।

(२) एण्टी टीटैनिक सीरम (Anti Tetanic Serum)—यह धनुस्तम्भ (Tetanus) नामक व्याधि के आक्रमण को रोकने के लियेक्षत होते ही २० सी० सी० की मात्रा में प्रविष्ट की जाती है। इसकी दूसरी मात्रा क्षत में पूय उत्पन्न होने पर तीसरे या पाँचवें दिन प्रविष्ट करना चाहिये। धनुस्तम्भ रोग के प्रारम्भ होने पर १०० सी० सी० की मात्रा में शिरागत प्रविष्ट किया जाता है।

(३) एण्टी डिसेण्टरिक सीरम (Anti Dysentaric Serum)—वैसिलरी डिसेण्टरी में प्रविष्ट किया जाता है।

(४) एण्टी मैनिंगोकोकल सीरम (Anti meningoooocal Serum)—यह मस्तिष्क सुषुम्नावरण शोथ में प्रविष्ट किया जाता है।

परिचर्या (Nursing)

परिचर्या, चिकित्सा का एक प्रमुख अङ्ग है। अतः इसका यहाँ पृथक् वर्णन किया जा रहा है।

परिचर्या के ३ प्रकार—

१ औषधीय परिचर्या (Medical Nursing)
२. प्रसूति परिचर्या (Obstetric ,,)
३. शल्यकर्मोत्तर परिचर्या (Surgical ,,)

परिचायक के गुण—

१. रोगी का निरीक्षण तल्लीनता के साथ करना।
२ व्याधि के विषय में पूर्ण ज्ञान रखना।
३ अपरिवर्तन शील तथा हसमुख स्वभाव होना।
४. परिचायक का सौम्य होना अनिवार्य है।
५ अपने कार्यों में सदैव तत्पर तथा तल्लीन रहना।
६ परिचायक को स्वस्थ तथा शक्ति शाली होना चाहिये।

परिचायक में उपर्युक्त प्रथम तथा द्वितीय गुण अवश्य ही उपस्थित रहना चाहिये। परिचायक को चाहिये कि व्याधि के छोटे से छोटे उपद्रवों को अंकित करके आवश्यकता पड़ने पर योग्यता के साथ शीघ्रता से कार्य करें। परिचायक को रोगी तथा रोगी के सम्बन्धियों के बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिये। यदि रोगी या रोगी के सम्बन्धी परिचायक से कोई विशिष्ट बात पूछें तो परिचायक को कहना चाहिये कि वे सीधे चिकित्सक से पूछें।

अपरिवर्तन शील तथा हंसमुख स्वभाव रोगी के लिये बहुत ही हितकर होता है, क्योंकि क्षीणता तथा व्याधि के कारण वह हताश हो जाता है तथा उसका स्वभाव पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जाता है; जिसके कारण रोगी, परिचायक के भार सा प्रतीत होता है; किन्तु परिचायक को समझना चाहिये कि ये सम्पूर्ण परिवर्तन व्याधि के कारण है। अतः रोगी के साथ सहानुभूति रखना आवश्यक है।

औषधीय परिचर्या (Medical Nursing)

(१) प्रोंछन कर्म (Blanket Bath)—रोगी को झोंके युक्त वायु रहित गरम कमरे में रख, दांत तथा नखादि को यथा विधि साफ कर गरम जल में वस्त्र भिगों सम्पूर्ण शरीर को शीघ्रता तथा मृदुता के साथ भली भांति पोंछ देना चाहिये। नाभि से ऊपर के भाग को पोंछने के लिये एक वस्त्र तथा अधः (नीचे) के भाग को पोंछने के लिये दूसरा वस्त्र व्यवहृत करना चाहिये। आच्छादित अंगों पर सदैव ध्यान रखना चाहिये। गीले वस्त्र के पश्चात् सूखे वस्त्र से शरीर को शुष्क करना चाहिये। तत्पश्चात् बालों में कंघी आदि करके रोगी को पृथक् कमरे में रखना चाहिये।

(२) दबावयुक्त स्थान—रोगी का जो अंग सर्वदा पलंग के सम्पर्क में रहता हो उस अंग पर दिन में ३ वार यू०, डी०, कोलेन (Eaude Colgne) और प्रधमन चूर्ण को सावधानी के साथ मल देना चाहिये। यदि रोगी स्वयं अपनी स्थिति में परिवर्तन करने में असमर्थ हो तो परिचायक को चाहिये, कि वह स्वयं उसके स्थिति के परिवर्तन में सहायक हो जाय।

आर्तवकाल में स्त्री को चाहिये कि ½ प्र० शत लाइसोल (Lysol) के घोल में रुई का फाया भिगों जननेन्द्रीय पर लगावे।

(३) प्रवीजन तथा स्वच्छता—युवा व्यक्तियों के कुछ व्याधियों को छोड़ शेष व्याधियों में कमरे का तापक्रम ६०° F होना चाहिये। शिशुओं तथा वृद्धों के लिये ६५° F होना चाहिये। कमरे में वायु ताजी, शुद्ध तथा उचित प्रमाण में आनी चाहिये। कमरे में सम्भवतः कम से कम सामान होना चाहिये। कमरे में जल छिड़क कर सफाई करें ताकि गर्द उड़ने न पावे।

(४) पलंग निर्माण—पलंग एक रोगी के सोने भर का होना चाहिये जिस पर एक मोटा गद्दा हो। प्रत्येक रोगियों के लिये एक चादर तथा एक वाटर प्रूफ (Macintosh) पलंग पर बिछा रहना चाहिये।

हृदय रोग से पीड़ित रोगियों को जो श्वास कष्ट से पीड़ित हों उनके पलंग पर कई तकिया पड़ी होनी चाहिये। जब रोगी को कई मास तक शय्यारूढ़ रहना पड़े तब उस अवस्था में उसको जल पूर्ण गद्दे (water bed) पर रखना चाहिये, अन्यथा शय्या के सम्पर्क में रहने वाले अंग पर व्रण बन जाता है। कशेरुकभग्न (Fract-

ured Spine) में रोगी को इसी जल पूर्ण गद्दे (water bed) पर ही रखना चाहिये। इस गद्दे में इतना जल भरना चाहिये कि दवाव पड़ने पर दोनों पर्त परस्पर मिल न सकें। गद्दे में भरे जाने वाले जल का तापक्रम १००° F होना चाहिये। इस जल में किंचित् कार्बोलिक भी मिला रखना चाहिये।

(५) पथ्य सेवन (Diet)—तीव्र व्याधियों में, जैसे आंत्रिक ज्वर (Typhoid-fever), आमवात (Rheumatism) तथा वृक्क रोग में पथ्य देने के लिये सर्वदा चिकित्सक से परामर्श लेते रहना चाहिये।

द्रव पदार्थ को प्रत्येक दो २ घण्टे पर तथा ठोस पदार्थ को चार २ घण्टे के पश्चात् देना चाहिये। पथ्य का पात्र सर्वदा स्वच्छ रखना चाहिये। पथ्य को रोगी के इतना सन्निकट रखना चाहिये, कि वह उसको भली भांति सेवन कर सके। मूर्छित व्यक्ति को गुदा या नाशाप्रणाली द्वारा पोषक पदार्थ देना चाहिये। किन्तु नाशाप्रणाली द्वारा प्रविष्ट करने में यह विशेष ध्यान रहे कि रबर शलाका (Rubber Catheter), ग्रसनिका (Pharynx) में ही एकत्रित न रह जाय या द्रव पदार्थ क्लोम (Trachea) में पहुंच कर फुफ्फुसीय व्याधियों को न उत्पन्न कर दें।

(६) वृत्त-लेखन—रोगियों के निम्न बातों को प्रतिदिन अङ्कित कर लेना चाहिये।

१. तापक्रम (Temperature)
२. प्रति मिनट नाड़ी गति (Pulse rate per minite)
३ प्रति मिनट श्वास प्रश्वास की गति (Respiration per minite)
४. ओषधि देने की सख्या तथा समय।
५. मल-त्याग (Stool)
६. मूत्र-त्याग (Discharge of Urine)
७ पथ्य देने की संख्या तथा मात्रा।
८. व्याधियों के उपद्रव जैसे, कास (Cough), वमन (Vomiting), ऐंठन (Cramps), मूर्छा (Coma) आदि।

औपसर्गिक रोग से पीड़ित व्यक्तियों की परिचर्या

१. रोगी का कमरा, घर के अन्य कमरों से पृथक् तथा कुछ दूरी पर होना चाहिये।
२. रोगी के दर्वाजे पर कार्बोलिक (Carbolic) के घोल में भींगा हुआ परदा लटकता रहना चाहिये।
३ रोगी के व्यवहार की प्रत्येक वस्तुयें सब से पृथक् होनी चाहिये।
४. पथ्य के पदार्थ रोगी के कमरे से पृथक् होने चाहिये।

५. परिचायक को चाहिये कि बाहर जाते समय अपने सम्पूर्ण वस्त्रों को रोगी के कमरे में ही छोड़ दे, ताकि वह उबाल कर विसंक्रमित किया जाय तथा उसके वस्त्र से संक्रमण का प्रसार न हो सके।
६ परिचर्या के पश्चात् परिचायक को अपने हाथों को २% प्र० लाइसोल (Lysol) के घोल से ब्रश द्वारा मल मल कर प्रक्षालित कर लेना चाहिये।
७ रोगी तथा परिचायक के प्रत्येक वस्त्रों को कार्बोलिक के २० में १ (1 in 20) की शक्ति के घोल में ६ से ८ घण्टे तक डुबोने के पश्चात् पूर्ण रूप से साफ कर देना चाहिये।
८. मल और मूत्र को क्लोरेट आफ लाइम (Chlorate of Lime) से ३ घण्टों तक ढकने के पश्चात् औपसर्गिक व्याधि में वर्णित विधि से नष्ट कर देना चाहिये।
९. दूषित वस्त्र को तुरन्त जला देना चाहिये।
१० व्यवहृत होने वाले पात्रों को सदैव उबाल कर विसंक्रमित करना चाहिये।
११ व्यवहृत यन्त्रों को शुद्ध लाइसोल (Pure Lysol) में १५ मिनट तक रख देवें या उबाल कर शुद्ध करें।
१२. कमरे को खाली कर गन्धक की पत्ती जला विसंक्रमित कर देना चाहिये तथा कमरे में २४ घण्टे तक नहीं जाना चाहिये।
१३ एक गैलन जल में १ छटाँक कार्बोलिक छोड़ कर घोल बनावे तथा इस घोल से रोगी को स्नान कराना चाहिये।
१४ परिचायक को भी रोगी वत विसंक्रमण का नियम पालन करना चाहिये।
१५ परिचारक को कुछ दिनों तक विश्राम करने के पश्चात् दूसरे रोगी की परिचर्या के लिये जाना चाहिये।
१६. परिचारक को परिचर्या काल में वायु सेवन के निमित्त प्रतिदिन बाहर जाना चाहिये।

प्रसूति-परिचर्या

(Obstetrical Nursing)

परिचारक के ध्यान में रखने योग्य बातें

१. स्वय वस्त्र सहित पूर्ण स्वच्छ रहना चाहिये।
२ स्वयं संक्रामक रोगों से पीड़ित न हो।
३ नित्य-प्रति स्नान करना चाहिये।
४. हथेली तथा अग्रबाहु को परिचर्या के समय तथा परिचर्या के पश्चात् ½ प्र० शत लाइसोल (Lysol) के घोल से धो लेना चाहिये।

५. हाथ विदार तथा व्रण रहित होना चाहिये।
६. पहिनने का वस्त्र तथा अपरन (Aparon) हलका तथा सादे कपड़े का होना चाहिये जो उबाला जा सके।
७. परिचर्या के समय कमीज के बाहु को मोड़कर कुहनी के ऊपर कर देना चाहिये।
८. भग प्रक्षालन, वस्तिकर्म तथा मूत्र निरहरण के समय परिचारक को चाहिये, कि वह अपने हाथों को पूर्णरूप से विसंक्रमित कर हस्त-त्राण (Gloves) को पहिन लेवे।
९. शस्त्रों को व्यवहार में लाने के पूर्व विसंक्रमित कर उन्हें किसी जीवाणु नाशक द्रव में रखना चाहिये।
१०. रोगी के सम्पर्क में आने वाली वस्तुयें स्वच्छ तथा विसंक्रमित होनी चाहिये।
११. शलाका (Catheter), डूस (Doche) तथा एनिमा (Enema) के नेत्रों (Nozzles) को उबाल कर लाइसोल के २० में १ शक्ति के घोल में रखना चाहिये।
१०. रोगी के मल, मूत्र, अपरा तथा दूषित वस्त्रों को तुरन्त ही हटा कर जला देना चाहिये।
१३. प्रसूति के अस्वाभाविक लक्षणों को सर्वदा तालिका-पत्र (Chart) पर अंकित कर देना चाहिये तथा आवश्यकतानुसार चिकित्सक को भी सूचित कर देना चाहिये।
१४. आवश्यकतानुसार प्रसूति को चिकित्सा के लिये भेज सकते हैं।

गर्भकालीन उपद्रव (Complications of Pregnancy)

१. रक्तस्रावाधिक्य (Haemorrhage)—यह बहुत ही भयानक उपद्रव होता है। अतः रक्तस्राव प्रारम्भ होते ही चिकित्सक को चिकित्सा के लिये सूचित कर आसन्नप्रसवा को शान्ति के साथ स्वच्छ वायु में सुला देना चाहिये। अवसादोत्पत्ति के पूर्व ही रक्तस्राव को बंद करने का प्रयत्न करें अन्यथा इससे भयानक परिणाम होता है।

(क) प्रसव-प्राक् रक्तस्राव (Ante-Partum Haemorrhage)

कारण—
१. गर्भपात जन्य रक्तस्राव (Haemorrhage due to Abortion)
२ अप्राकृतिक अपराजन्य ,, (Placenta praevial)

चिकित्सा—
१. रोगिणी को शय्या पर पूर्ण विश्राम देना।
२. चिकित्सा के हेतु सम्पूर्ण वस्तुओं को तैयार रखना।

३ यदि प्रसव सन्निकट हो तो शिर्षोदय में भ्रूणावरण को फाड़ कर बंधन बाँध देना चाहिये। तथा अर्गट (Ergot) की एक मात्रा दे देनी चाहिये।

४. स्फिगोदय (Breech Presentation) में भ्रूणावरण को फाड़ शिशु के एक पैर को बाहर खींच उससे भार (Weight) लटका देना चाहिये। इससे अपरा दब जाती है और रक्तस्राव बंद हो जाता है।

५. जब उदय होनेवाला भाग स्पर्श में नहीं आता तब भग में विसंक्रमित वस्त्र पूर्ण रूप से भर देवें, जिससे रक्तस्राव बद हो जाय।

(ख) आकस्मिक रक्तस्राव (Accidental Haemorrhage)

यह निम्नांकित ३ प्रकार का होता है।

१. दृश्य रक्तस्राव (Revealed Haemorrhage)
२ अदृश्य रक्तस्राव (Concealed Haemorrhage)
३. संयुक्त रक्तस्राव (Combined Heamorrhage)

दृश्य रक्तस्राव—यह रक्त अपरा के पार्श्व से प्रारम्भ होकर योनि (Vagina) द्वारा बाहर आता है।

परिचारक का इस अवसर का कर्तव्य—

१ चिकित्सक को सूचित करना।
२. कस कर बधन बाँध देना।
३ अर्गट (Ergot) की एक मात्रा पिला देना।
४ प्रसव प्रारम्भ होने पर भ्रूणावरण को फाड़ देना।
५. प्रसव प्रारम्भ न हुआ हो तो योनि में विसक्रमित वस्त्र भर देना ।

अदृश्य रक्तस्राव—यह बहुत ही भयानक उपद्रव है। इसमें रक्त गर्भाशय में ही सञ्चित रहता है, क्योंकि गर्भाशय इतना शिथिल हो जाता है, कि रक्त को बाहर नहीं निकाल सकता। इसमें वेदना नहीं होती।

अदृश्य रक्तस्राव के चिह्न—

१. नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है।
२. रोगिणी का मुखमण्डल तथा शरीर श्वेत हो जाता है।
३. रोगिणी को अत्यधिक बेचैनी होती है।
४. वायु को अधिकता के साथ ग्रहण करती है।
५. अत्यधिक प्यास लगती है।
६ उदर निकला हुआ तथा कठिन होता है।

परिचारक का कर्तव्य

१. चिकित्सक को सूचित करना।

२. कस कर बंधन बाँधना।
३. शल्यकर्म के लिये सम्पूर्ण तैयारी करना।
४. प्रसव प्रारम्भ होने पर अवसाद से की रक्षा करने के लिये चिकित्सक मार्फीन (Morphine) का व्यवहार कर सकता है।

श्वेतमेह (Albuminuria)

यह गर्भावस्था का एक भयानक उपद्रव है। यदि इसकी चिकित्सा न की जाय तो आक्षेप से मृत्यु हो जाती है।

परिचारक का कर्तव्य—

१. गर्भवती के मूत्र की श्वेतसार (Albuminuria) की उपस्थिति के लिये सातवें मास तक प्रतिमास में एक बार परीक्षा कर लेनी चाहिये। इसके पश्चात् मास में १५ वें दिन परीक्षा करनी चाहिये।
२. गर्भवती में गर्भावस्था के यदि कोई उपद्रव दिखलाई दे, तो चिकित्सक को सूचित कर देना चाहिये।

गर्भकालीन उपद्रव—

हाथ, पैर तथा नेत्रों के अधः में शोथ, तीव्र शिरःशूल, कोष्ठबद्धता, तथा रक्ताल्पता आदि।

परिचारक का आक्षेप कालीन कर्तव्य—

१. चिकित्सक को चिकित्सा के लिये सूचित कर देना चाहिये।
२. गर्भिणी को स्वयं आघात से बचाना चाहिये।
३. आक्षेप के समाप्त होने पर गरम सेंक द्वारा पसीना निकालना चाहिये।
४. मूत्र की परीक्षा करनी चाहिये।
५. द्रव पदार्थ रोगिणी को अधिक पिलाना चाहिये।

प्रसूतागार—काफी विस्तृत, सम्पूर्ण साधनों तथा सामग्रियों से सुसज्जित, उचित प्रकाश तथा वायु युक्त, स्वच्छ, स्नानगृह तथा शौचालय युक्त होना चाहिये। यह गृह ८ हाथ लम्बा तथा ४ हाथ चौड़ा होना चाहिये। गृह का द्वार पूर्व या उत्तर दिशा में होनी चाहिये। कुछ लोगों का मत है कि दक्षिण दिशा में भी द्वार रखा जा सकता है।

१ पलंग (Bed)—घर में एक व्यक्ति के सोने योग्य पलंग होनी चाहिये, जिस पर एक मोटा गद्दा बिछा हो। उस गद्दे पर एक चादर तथा वाटर प्रूफ (Mach-intosh) बिछा रहना चाहिये। पलंग के पास फर्स पर चटाई पड़ी रहनी चाहिये पलंग वायु के प्रपात से सुरक्षित तथा उष्ण बोतलों द्वारा गरम होनी चाहिये। जिस समय माता तथा बच्चा पलंग पर हो उस समय पलंग पर गरम बोतल नहीं होना चाहिये।

पलंग के सन्निकट रहने वाली आवश्यकीय वस्तुयें—

१. चिकित्सक के हाथ को प्रक्षालन करने के लिये ब्रश तथा एक प्याले में प्रक्षालक घोल होना चाहिये।
२. एक प्याले में जीवाणुनाशक घोल तथा विसंक्रमित फोया (Swabs) होना चाहिये।
३. शिशु के नेत्र को प्रक्षालित करने के निमित्त एक प्याले में बोरिक घोल (Boric Lotion) तथा फोया (Swabs) होना चाहिये।
४ जीवाणुनाशक घोल में कैंची (Scissors) तथा दो स्पेन्सर वेल (Spencer well) होना चाहिये।
५. शल्य कर्म के शस्त्र उबाले हुये पडे रहना चाहिये।
६. स्पंज (Swabs), गाज (Gauze), बन्धन (Ligature), तौलिया तथा शिशु ग्राहक वस्त्र (Accouchement Sheet) विसंक्रमित होनी चाहिये।
७. विसंक्रमित हस्तत्राण (Gloves) होना चाहिये।
८. विशुद्ध बस्ति-पात्र (Douche Can) तथा उबाला हुआ शलाका (Boiled Catheter)
९. विसंक्रमित उष्ण तथा शीतल जल से पूर्ण दो घड़े।
१० घोल (Lotion)
११. ताप-मापक यन्त्र (Thermometer)
१२. सूची युक्त २ सी० सी० की सूचीवेध की पिचकारी (Hypodermic Syringe)
१३. अर्गोटीन (Ergotine) या अर्गट।
१४ बूंद मापक ग्लास (Minim Glass)
१५. गरम कम्बल तथा अन्य वस्त्रादि।
१६ शिशु के श्वेत श्वासावरोध (White asphyxia) में व्यवहृत होने वाला गरम जल जिसका तापक्रम १००° F से कम न हो।
१७. दूषित आर्द्र वस्तुओं को रोकने के लिये पात्र।
१८. अपरा (Plecenta) को रखने के लिये पात्र।

ये उपरोक्त वस्तुयें गर्भिणी के कमरे में पलग के पास एक मेज पर स्वच्छ वस्त्र से आच्छादित पड़ी रहनी चाहिये।

प्रसूता प्रबन्ध

१. प्रत्येक ४ घण्टे पर तापक्रम, नाड़ी तथा श्वास-प्रश्वास की परीक्षा करते रहना चाहिये।
२. मूत्र-त्याग नियमतः तथा स्वाभाविक रूप से हो रहा है या नहीं।

३. गर्भाशय प्रतिदिन ½ इञ्च नीचे आ रहा है या नहीं।
इन तीनों बातों में अनियमितता उत्पन्न होने पर चिकित्सक को सूचित कर देना चाहिये।

४. प्रसवोत्तर स्राव (Lochia) की मात्रा तथा वर्ण को देखना चाहिये।

५. यदि प्रसवोत्तर वेदना तीव्र हो तो चिकित्सक को सूचित कर देना चाहिये। गर्भाशय पर गरम जल की बोतल रखनी चाहिये; क्योंकि इससे गर्भाशय संकुचित होता है तथा गर्भाशय के अन्दर के थक्के बाहर निकल आते हैं।

६. शिशु को स्तन से लगा देना चाहिये।

७. स्तन पान के पूर्व तथा पश्चात् स्तन को बोरिक घोल या गरम जल से पोंछना चाहिये। प्रसव के तीसरे या चौथे दिन स्तन से दुग्ध पूर्ण रूप से निकलने लगता है। यदि स्तन बहुत फैल गया हो और वेदना हो रही हो तो स्तन पर दृढ़ बन्धन बाँध देना चाहिये। सारक औषधि देनी चाहिये। स्तन पर कोमलता के साथ जैतून तैल (Olive Oil) मल देना चाहिये या स्तन को सेंक देना चाहिये। इससे वेदना तथा स्तन का प्रसार कम हो जाता है। ताप, रक्तिमा या वेदना की उपस्थित में चिकित्सक को सूचित करना चाहिये।

८. प्रसव के पश्चात् तीसरे दिन सारक औषधि देनी चाहिये।

९. लाइसोल (Lysol) के १ प्र० शक्ति के घोल से भग को दिन में २ बार प्रक्षालित करना चाहिये।

१०. साधारण पथ्य खाने को देना चाहिये। जब गर्भाशय श्रोणि गुहा में आ जाय तथा अन्य कोई उपद्रव नहीं हो तब १५ दिनों के पश्चात् पलंग से उठने देना चाहिये।

प्रसव कालिक उपद्रव

(१) जीवाणुमयता (Septicaemia)

लक्षण—

१. अकस्मात तापक्रम का १०३° F या अधिक हो जाना।
२. रोगी को शीत तथा कम्प होना।
३. नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है।
४. प्रलाप होने लगता है।
५. चर्म उष्ण हो जाता है।

परिचारक का कर्तव्य—

१. संक्रामक व्याधि सदृश परिचर्या करनी चाहिये।
२. प्रत्येक ४ घण्टे पर वस्ति (Enema) देनी चाहिये।

३. अत्यधिक मात्रा में द्रव पदार्थ खिलाना चाहिये ।
४. पलंग के सिरहाने को ईंट द्वारा ऊंचा कर देना चाहिये ।
५. रोगिणी की शक्ति को बनाये रखना चाहिये ।
६. शिशु को स्तन पान नहीं कराना चाहिये ।

(२) स्थानिक संक्रमण (Local Infection)

कारण—गर्भाशय में अपरा के टुकडे या संक्रमित रक्त के थक्के के रह जाने से होता है ।

लक्षण—

१. तापक्रम १०१° F से १०२° F तक हो जाता है ।
२. प्रसवोत्तर स्राव (Lochia) दुर्गन्धित निकलता है ।
३. प्रसूता स्वय अस्वस्थता व्यक्त करती है ।

चिकित्सा—

१. शय्या के सिरहाने को ऊंचा उठा देना चाहिये ।
२. अर्गट (Ergot) को दिन में ३ वार पिलाना चाहिये ।
३. आयोडीन घोल (Iodine Solution) से गर्भाशय का प्रक्षालन करना चाहिये।
४ मलाशय को वस्ति दे कर साफ रखना चाहिये ।
५. खाने को लघु तथा पोषक पदार्थ देना चाहिये ।
६. गर्भाशय का प्रक्षालन करना चाहिये या आवश्यकतानुसार गर्भाशय का खुरचन (Curretting) करना चाहिये ।

(३) श्वेत पाद (White Leg)

कारण—जब संक्रमण गर्भाशय से औवींया शिरा (Femoral Vein) में पहुंच कर शिरा के रक्त को जमा देता है, जिससे रक्त-परिभ्रमण नहीं हो पाता तो यह व्याधि उपस्थित हो जाती है ।

लक्षण—

१ प्रसव के पश्चात् १० वें दिन पैर फूल (Oedema) जाता है ।
२ वेदना होती है ।
३. शारीरिक तापक्रम में वृद्धि हो जाती है ।

परिचारक का कर्तव्य—

१ चिकित्सक को सूचित कर देना ।
२. पैर को पूर्ण विश्राम देना तथा शरीर के सतह से ऊपर उठाये रखना; क्योंकि पैर में गति होगी तो शिरा के टुकड़े टूट कर हृदय में पहुंच हृदयावसाद उत्पन्न कर देते हैं, जिससे मृत्यु हो जाती है ।

३. वेदना शान्ति के लिये बेलाडोना का व्यवहार या सेंक करना चाहिये।
४. रोगिणी को २, ३ सप्ताह तक पलंग पर ही रखना चाहिये।

प्राकृतिक प्रसव में परिचारक के कर्तव्य

प्रथमावस्था या गर्भाशय ग्रीवाप्रसारावस्था

यह अवस्था प्रथम प्रजाता (पहलौटी) स्त्रियों में (प्रसवकालिक वेदना) १२ से १८ घण्टों तक रहती है। यह वेदना गर्भाशय ग्रीवा के प्रसारित होने के समय से प्रारम्भ होती है। यह प्रथमावस्था बहु प्रजाता स्त्रियों में ६ से ८ घण्टों तक होती है। अतः वेदना प्रारम्भ होते ही निम्न कार्य करना चाहिये:—

१. वेदना प्रारम्भ होते ही सारक औषधि दे देनी चाहिये।
२. गर्भिणी को स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र पहिना देना चाहिये।
३. गर्भिणी को इधर उधर घूमने के किये आदेश करना चाहिये।
४ गर्भिणी को लघु आहार दे सकते हैं।
५ कुंथन (Bear down) नहीं करने देना चाहिये।
६. इसी बीच प्रसूता गृह को सुसज्जित कर लेना चाहिये।

द्वितीयावस्था या निष्काशनावस्था—यह अवस्था गर्भाशय ग्रीवा के पूर्ण प्रसार से लेकर शिशु के गर्भाशय से बाहर निकल आने तक होती है। यह प्रथम प्रजाता स्त्रियों में २ से ४ घण्टे तक तथा बहु प्रजाता में १ से २ घण्टे तक की होती है। प्रथमावस्था की वेदना इस अवस्था में बदल जाती है, जो अत्यधिक तीव्रता तथा अवकाश (Intervals) के साथ होने लगती है।

परिचारक का कर्तव्य—

१ भ्रूणावरण के फट जाने पर चिकित्सक को बुला लेना चाहिये।
२. रोगिणी को पलंग पर वाम पार्श्व पर लिटा देना चाहिये।
३. वस्ति कर्म (Enma) देना चाहिये।
४. भग तथा नितम्ब को १०० प्र० शत के घोल के लाइसोल (Lysol) से प्रक्षालित कर देना चाहिये।
५ विसंक्रमित गद्दा (Pad) तथा शिशुग्राहक वस्त्र (Accouchment) के एक शिरे को प्रसूता के नितम्ब के नीचे प्रविष्ट कर देना चाहिये।
यदि चिकित्सक अनुपस्थित हो तो परिचारक को ही स्वयं चिकित्सक का कार्य सम्पादन करना चाहिये।

चिकित्सक के अनुपस्थिति में परिचारक का कर्तव्य

१. स्वच्छ तथा विसंक्रमित अपरन पहिन लेना चाहिये।
२ हाथ तथा अ बाहु को पूर्ण विसंक्रमित कर लेना चाहिये।

३. विसंक्रमित हस्त-त्राण (Gloves) को पहिन लेना चाहिये।

४ रोगिणी के नितम्ब को विसंक्रमित वस्त्र से अच्छादित कर देना चाहिये।

५ शिर को निकलते ही, शिर को सकुचित रखकर मूलाधार (Perinium) को प्रसारण का समय देना चाहिये।

६ शिर के बाहर आने पर गले के चारों ओर नाल (Cord) को टटोलना चाहिये। यदि नाल गले में हो तो देखें, कि नाल का झुण्ड ढीला है या कसा। यदि नाल का झुण्ड ढीला ढाला हो तो उसे शिर पर से ले जाकर गले से बाहर कर देना चाहिये। यदि नाल द्वारा गला कसा हो तो नाल को बाँध कर शीघ्रता से काट देना चाहिये; जिससे ग्रीवा मुक्त हो जाय तथा ऐसी अवस्था में शिशु को शीघ्रता के साथ गर्भाशय से बाहर निकाल लेना चाहिये।

७ शिशु के नेत्र को खोलने से पूर्व बोरिक घोल (Boric Lotion) से प्रक्षालित कर लेना चाहिये।

८ शिशु को गरम वस्त्र पर ग्रहण करना चाहिये।

९. नाभि नाल के स्पन्दन के बंद हो जाने पर नाल (Cord) को दो स्थानों पर बाँधना चाहिये। प्रथम बंधन शिशु के नाभि से १½ इञ्च की दूरी पर तथा दूसरा बंधन योनि के पास बाँध कर प्रथम बंधन के ऊपर (दोनों बन्धनों के बीच) से काट देना चाहिये।

१०. शिशु को गरम पलंग पर लिटा देना चाहिये।

११ शिशु के मुख में स्थित कला (Mucus) को साफ कर देना चाहिये।

तृतीयावस्था—

यह अवस्था शिशु के बाहर आने के समय से लेकर नाल-भ्रंश तक की होती है। यह अवस्था लगभग २० मिनट तक की होती है।

परिचारक का कर्तव्य—

१. माता को पीठ पर लिटा देना चाहिये।

२. माता को भली भाँति गरम रखना चाहिये।

३ गर्भाशय शिखर (Fundus) को हाथ से पकड़ कर पीछे और नीचे की ओर दबाना चाहिये, ऐसा करने से अपरा बाहर निकल आती है।

४ नाल को कभी नहीं खींचना चाहिये।

अपरापतन के चिह्न—

१. गर्भाशय गोला तथा कठोर हो जाता है।

२. नाल की लम्बाई बढ़ जाती है।

३. कुछ रक्त प्रवाहित हो जाता है।

अपरापतन के पश्चात् का कर्तव्य—

१ भग तथा नितम्ब को जीवाणुनाशक घोल से पोंछ देना चाहिये।
२. विसंक्रमित पैड (Pad) दे देना चाहिये।
३ उदर पर कोमल बंधन कस कर बांध देना चाहिये।
४. प्रसूता को स्वच्छ कर आराम के साथ लिटाना चाहिये।
५ प्रसूता को गरम रखना चाहिये।
६. तापक्रम, नाड़ी तथा श्वास प्रश्वास (T. P. R.) को देखते रहना चाहिये।
७ १ ड्राम की मात्रा में अर्गट (Ergot) पिला कर सोने देना चाहिये।
८. प्रसूता के अस्वाभाविक लक्षणों पर सर्वदा ध्यान रखना चाहिये।

प्रसव के उपद्रव

अप्राकृतिक उदय (Abnormal Presentation)

अप्राकृतिक उदय को विवर्तन (Version) क्रिया द्वारा ठीक करते हैं, जो प्रसव से पूर्व सम्पादित किया जाता है।

स्फिगोदय (Breech Presentation) में बच्चे के शिर पर आघात लगाने तथा श्वासावरोध होने का भय रहता है। साथ ही साथ माता के गर्भाशय ग्रीवा तथा मूलाधार (Perineum) के फटने का भय रहता है।

परिचारक का कर्तव्य

१ रोगिणी को पलंग पर लिटा देना चाहिये।
२. वस्तिकर्म (Enema) नहीं करना चाहिये।
३. सम्भावित समय तक भ्रूणावरण को नहीं फटने देना चाहिये।
४. परीक्षायें नहीं करनी चाहिये।
५ भ्रूणावरण के फट जाने पर नाल भ्रंश (Prolapse cord) की परीक्षा कर लेनी चाहिये।
६. मूत्राशय को रिक्त कर देना चाहिये।
७. गर्भस्थ शिशु के हृदय का स्पन्दन १६० से ऊपर हो तो प्रसव करा देना चाहिये।

प्रसव (Delivery)

१. रोगिणी को पीठ पर लिटा देना चाहिये।
२ यदि शिशु नाभि तक योनि से बाहर निकल आया हो तो नाल को थोड़ा नीचे खींच लेना चाहिये।
यदि नाल का स्पन्दन क्षीण हो तो शीघ्र ही प्रसव करा देनी चाहिये।

प्रसारित शिर (Extended Head)

प्रसारित शिर को उचित स्थिति में लाने की २ विधियाँ हैं।

(१) प्रेग की विधि (prague Method)—शिशु के पैरों को दक्षिण हाथ से पकड़ ऊपर की ओर माता के उदर पर खींचना चाहिये। फिर शिशु के कंधों पर अंगुलियाँ रख कर सम्मुख की ओर खींचे तथा साथ ही साथ मध्यमा अंगुली से शिर को सम्भवतः संकुचित करे।

(२) स्मेलीस की विधि (Smellıess Methods)—शिशु को दक्षिण भुजा पर लिटा कर अंगुलियों द्वारा प्रत्येक स्कन्ध को पकड़ते हैं तथा मध्यमा अंगुली से शिर को सकुचित कर, शिशु को प्रथम नीचे और पीछे की ओर फिर सम्मुख तथा ऊपर माता के उदर की ओर खींचते हैं।

प्रसारित भुजा (Extended Arms)

शिशु के स्फिग को ऊपर की ओर माता के उदर पर रख कर अपने हाथ को माता के योनि में प्रविष्ट कर पश्चिम भुजा का अनुभव करते हैं। यदि दूसरी भुजा (पश्चिम भुजा) मुड़ी हुई हो तो दो अंगुलियों को कुहनी (elbow) पर ले आकर धीरे धीरे नीचे की ओर खींच लाते हैं। यदि भुजा शिर पर हो तो हाथ को कन्धे पर ले जाकर शिशु के भुजा को सुगमता के साथ धीरे धीरे मुख पर तथा फिर वक्ष पर लाकर उचित स्थिति में रखते हैं।

गर्भाशयिक शिथिलता (Uterine Inertia)

कारण—

प्रारम्भिक शिथिलता—

१. यमल गर्भ (Twin Pregnancy)

२ गर्भोदकाधिक्य (Hydramnios)

३. मूत्राशय तथा मलाशय का भरा रहना।

लक्षण—वेदना स्वाभाविक प्रसव वेदना से कम होती है।

कर्तव्य—

१. मूत्राशय तथा मलाशय को रिक्त कर देना।

२. वेदना प्रारम्भ होने पर कस कर बंधन बाँध देना।

गौण शिथिलता (Secondary Inertia)

कारण—

१. मलाशय तथा मूत्राशय का भरा रहना।

२. रोगिणी की क्षीणता।

३. गर्भ का अस्वाभाविक बड़ा होना।

लक्षण—

१ प्रसव वेदना प्रारम्भ में स्वाभाविक होती है, जो पुनः क्षीण हो जाती है।

२ भ्रूणावरण के फट जाने पर प्रसवोत्तर स्राव होना।

कर्तव्य—

१ मूत्राशय तथा मलाशय को रिक्त करना।

२. रोगिणी को विश्राम देना।

३. भ्रूणावरण फटने पर चिकित्सक को सूचित करना।

नालभ्रंश (Prolapse of Cord)

कारण—

१. अस्वाभाविक प्रसव, जैसे स्फिगोदय, ललाटोदय आदि।

२. यमल गर्भ।

३ अपक्व शिशु का उदय।

कर्तव्य—

१. माता को बिस्तर पर रखना।

२. पलंग के पैर वाले भाग को ईंट रखकर ऊँचा कर देना। या रोगिणी को घुटने पर बिठा वक्ष के नीचे तकिया लगा देना।

३. कुंथन नहीं करना।

४. संदंश प्रसव (Forceps delivery) के हेतु या विवर्तन के लिये तैयार हो जाना।

प्रसवोत्तर रक्तस्राव (Post partum Haemorrhage)

शिशुजनन के पश्चात् गर्भाशय से जो रक्तस्राव होता है, उसे प्रसवोत्तर रक्तस्राव कहते हैं।

कारण—

१. गर्भाशय की शिथिलता (Atony) के कारण उसका पूर्ण रूप से संकुचित नहीं होना।

२. प्रजनन अंगों में आघात।

कर्तव्य—

१. चिकित्सक को सूचित करना।

२. गर्भाशय को मसलना तथा अपरा को दबाना जिससे गर्भाशय सकुचित हो जाय। यदि इससे गर्भाशय संकुचित न हो तो योनि को गरम द्रव से प्रक्षालित करना। द्रव का तापक्रम ११९° से १२०°F तक होना चाहिये।

३. इतने पर भी यदि रक्तस्राव होता रहे और अपरा न निकले तो हस्तकुशल द्वारा गर्भाशय में से अपरा को निकाल कर गरम जल से गर्भाशय का प्रक्षालन कर देना।

४ गर्भाशय के रिक्त हो जाने पर १ ड्राम की मात्रा में अर्गट (Ergot) पिला देना।

शिशुचर्या

स्नान में आवश्यकीय वस्तुयें—

१. तौलिया

२. साबुन

३. प्रधमन चूर्ण (Dusting Powder)

४. गरम तैल या जैतून का गरम तैल।

५. नेत्र प्रक्षालनार्थं बोरिक घोल (Boric Lotion)

नाल छेदन के लिए आवश्यकीय वस्तुयें—

१. बोरिक चूर्ण (Boric Powder)

२ विसंक्रमित कपड़े का टुकड़ा (Gauze) और रूई।

३. तागा (Ligatures)।

४. बंधन।

५. सूची (Needle)

६. कर्तनी (Scissors)

स्नान विधि—सर्वप्रथम नेत्र को बोरिक के गरम घोल से प्रक्षालित करना तथा नासिका को विसंक्रमित वस्त्र द्वारा साफ कर लेना। मुखमण्डल को दूसरे वस्त्र द्वारा पोंछना। शरीर पर प्रथम तैल मल कर फिर साबुन लगाना। साबुन लगाते समय ध्यान रखना चाहिये, कि साबुन मुखमण्डल पर न लगे। साबुन लगाकर उसे शीघ्रता से धो बच्चे को शुष्क कर लेना। शिशु के स्नान में गरम जल, जिसका तापक्रम १००°F हो, प्रयुक्त करना। स्नान के पश्चात् शिशु को गरम तौलिया या वस्त्र में लेना। तब उसके सम्पूर्ण शरीर पर पाउडर (Dusting Powder) लगा दे। नाल को पुनः बोरिक पाउडर तथा वस्त्र से ढक कर बाँध देते हैं। बंधन के दोनों शिरों को परस्पर सी दें तथा शिशु को माता के स्तन से लगा देना। स्तन से लगाने पर शिशु दुग्धपान करना सीखता है, तथा गर्भाशय (माता का) संकुचित होता है। यदि शिशु प्यासा हो तो किञ्चित गरम जल की कुछ बूंदे पिला देना चाहिये। २४ घण्टे के अन्दर मल त्याग होना चाहिये। प्रथम कुछ सप्ताहों तक शिशु खूब सोता है।

अपक्व शिशु (Premature babies) को तथा क्षीण पक्व शिशु को स्नान नहीं कराना बल्कि केवल तैल को मालिश करना। ऐसे शिशु को सर्वदा सुलाये ही रखना चाहिये, कभी कभी ही गोदी लेते हैं। यदि शिशु स्तनपान न कर सके तो स्तन पम्प (Breast Pump) द्वारा दुग्ध को निकाल कर पिलाना चाहिये।

उपद्रव—श्वेत श्वासावरोध (White Asphyxia)

लक्षण—

१ शिशु का श्वेत हो जाना।

२. नाल का स्पन्दन क्षीण होना या स्पन्दन नहीं होना।

कर्तन—

१. नाभिनाल को तुरन्त काट देना।

२. मुख तथा नासिका आदि से कलाओं (Mucous) को निकाल देना।

३ उष्ण स्नान कराना।

४. उष्ण स्नान से श्वास न आने पर कृत्रिम श्वास प्रश्वास करना।

कृत्रिमश्वास प्रश्वास की विधि—शिशु को गरम वस्त्र पर लिटा कर सहायकसे शिशु के पग को पकड़वाना। तब शरीर खींचना चाहिये जिससे फुफ्फुस प्रसारित हो। दोनों हाथों को पकड़ ठीक शिर पर प्रसारित करे फिर हाथ को नीचे ला वक्ष पर दबावे। इस क्रिया को १ मिनट में १५ बार के हिसाब से श्वास भली प्रकार आने तकया हृदय स्पन्दन के बंध होने तक करना साथ ही बारी बारी से गरम जल में स्नान कराते रहना।

शल्यकर्म की परिचर्या

(Surgical Nursing)

शल्यकर्म (Operations)

(१) विसक्रमितकरण (Sterilization)

(क) तौलिया, अपरन (Apron), मुखत्राण (Masks) तथा रुई और पट्टी आदि ड्रम (Drum) में रखकर विसक्रमित किये जाते हैं।

ड्रम (Drum) में रखने की विधि—

१. सर्व प्रथम ड्रम (Drum) की तली में तौलिये को बिछावें।

२. फिर पट्टियाँ, पिन, रुई और गाज (Gauze) रख दें, जो शल्य कर्म में व्यवहृत होंगे।

३. स्पंज (Swabs)

४. तौलियाँ (Towels)

५. मुखत्राण (Masks)

६ टोपियाँ (Caps)

७. अपरन (Apron or overall)

इस क्रम से उत्तरोत्तर वस्तुओं को ड्रम (Drum) में रखने के पश्चात् ड्रम

(Drum) के छिद्रों को खोलकर स्टीम स्टेरिलाइजर (Steam Sterilizer) में रख दें तथा स्टेरिलाइजर को २० मिनट तक २५०° F ताप पर रखें। जब ड्रम को स्टेरिलाइजर से पृथक् करें तब उसके छिद्रों को बन्द कर देना चाहिये। इस प्रकार ड्रम को इच्छानुसार स्थानान्तरित करने से उसके अन्दर की वस्तुयें दूषित नहीं होगी।

(ख) रबर के वस्तुओं तथा अधार तथा धार युक्त शास्त्रों का विसंक्रमिण विधि का उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है।

(ग) प्याले आदि को उबाल कर विसंक्रमित करना। यदि समय का अभाव हो तो प्याले में थोड़ी स्पिरिट (Spirit) डाल चारों ओर फैला आग लगा दें। इससे भी प्याले विसंक्रमित हो जाते हैं।

(घ) तागे (Sutures)

सिल्क वार्म गट (Silk Worm Gut)—इसको मरकरी परक्लोराइड (Mercury Perchloride) के ५०० में १ (1 in 500) की शक्ति के घोल युक्त शीशे के पात्र में २४ घण्टे तक रखे, तत्पश्चात् २० मिनट तक उबाल कर अलकोहल (Alcohol) में रख दें। व्यवहार में लाने के पूर्व इसको ३ मिनट तक उबाल कर मृदु कर ले।

अश्वबाल या हार्स हेयर (Horse Hair)—इसको कार्बोलिक (Carbolic) के २० में १ (1 in 20) के शक्ति के घोल में डुबाने के पश्चात् आधे घण्टे तक उबाल कर पुनः उसी शक्ति के घोल में या अल्कोहल (Alcohol) में रखे। तब यह व्यवहार करने योग्य हो जाता है।

सिल्क (Silk) सूत्र—इसको लपेट कर २ घण्टे तक उबालने के पश्चात् कार्बोलिक (Carbolic) के २० में १ (1 in 20) के शक्ति के घोल में रखे।

कैटगट (Gatgut)—यह विसंक्रमितावस्था मे ही एक सीसे के बन्द नलिका में बाजार में बिकता है। इसको बिना खोले ही कार्बोलिक (Carbolic) के २० में १ (1 in20) के घोल में रखना चाहिये।

(२) जीवाणुनाशक घोल

स्पिरिट में घुला हुआ बिन आयोडाइड आफ मर्करी (Biniodide of Mercury in Spirit) ५०० में १ (1 in 500) की शक्ति।

परक्लोराइड आफ मर्करी २००० में १ (Perchloride of Mercury, 1 in 2000)

कार्बोलिक २० में १ से ४० में १ तक (Carbolic, 1 in 20 to 1 in 40)

आयोडीन (Iodine) 2%.

नार्मल सेलाइन घोल (Normal Saline Solution) निर्माणः—

एक औंस जल में १ ड्राम नार्मल सेलाइन घुला १० मिनट तक खौलावे। यह तीव्र घोल हुआ। व्यवहार में लाने के लिये इस तीव्र घोल में से १ औंस लेकर १९ औंस विसंक्रमित गरम या शीतल जल आवश्यकतानुसार मिलावे। सेलाइन को शल्यकर्म तथा बन्धन कर्म में प्रयुक्त करने के लिये नित्य ही विसंक्रमित कर लेना चाहिये।

(३) शल्यगृह
(Preparation of the Operation Theatre)

१. गृह का तापक्रम ६५° से ७५° F रखना।
२. प्रविजन (Ventilation) के मार्ग ऐसे हों, कि उनसे बाहर की धूलि गृह में प्रविष्ट न कर सके।
३ वायु को गति में रखने के लिये गृह में बिजली का पखा चलाना चाहिये।
४. प्रकाश उत्तर दिशा से आना चाहिये।
५. शल्य कर्म के समय रोगी को अस्तब्धता (Shock) से बचाने के लिये गरम रखना।

(४) शस्त्रयुक्त टेबुल (Instrument tables)

विभिन्न शस्त्र को विभिन्न तस्तरियों (Trays) में विसंक्रमित वस्त्र से ढककर आपरेशन टेबुल (Operation Table) के सन्निकट एक टेबुल पर रखना। ये शस्त्र किसी जीवाणुनाशक घोल में या सेलाइन में या विसंक्रमित जल में या शुष्क विसंक्रमित वस्त्र पर सर्जन (Surgeon) की इच्छानुसार रखे जाते हैं।

शस्त्र रखने का क्रम—

१. साधारण शस्त्रों से भरी हुई (जिसमें धमनी सदंशों (Artery Forceps) की सख्या अधिक होती है) एक तस्तरी (Tary) होती है।
२. विशिष्ट शस्त्रों (Special instrument) से भरी हुई दूसरी तस्तरी (Tray) होती है।
३. सूची तथा तारों से युक्त तीसरी तस्तरी होती है।
४. एक चौथी तस्तरी में ८०% प्र० शत का स्पिरिट (Spirit) रखा होता है, जो तेज धार युक्त शस्त्रों (चाकू, कैंची, आदि) को विसंक्रमित करने में व्यवहृत होता है।
५. पाँचवी तस्तरी में तौलियों को पकड़ने वाली सदंश (Towel Clips) पड़ी होती है।

नोट—ये तस्तरियाँ (Trays) एनामेल (Enamel) द्वारा रंगी होती हैं।

अन्य पार्श्ववर्ती टेबुल (Side Table)

इस पर निम्नांकित वस्तुयें रखी जाती हैं।

१. आयोडीन (Iodine), पिक्रिक एसिड (Picric Acid) होते हैं जो चर्म को विसंक्रमित करने में व्यवहृत होते हैं।

२ शीतल तथा गरम लवणोदक घोल (Saline Solution) होता है।

३. विसंक्रमित ड्रम (Sterilized Drum) होता है, जिसमें विसंक्रमित तौलिया, अपरन मुखत्राण आदि पड़े होते हैं।

४. शस्त्रों तथा वस्त्र आदि को उठाने के लिये चञ्चुमुख सदंश (Cheatle's Forceps) ४० मे १ (1 in 40) की शक्ति के कार्बोलिक घोल (Carbolic Solution) में पड़ा होता है।

५. सूचीवेध (Injection) में प्रयुक्त होने वाले सूची विसंक्रमितावस्था में रखी होती हैं।

सज्ञाहारक टेबुल (Anaesthetist Table)

१. ईथर (Ether), ए० सी० ई० घोल (A. C. E Mixture), क्लोरोफार्म (Chloroform)

२. २ सी० सी० की सूचीवेध पिचकारी (injection Syringe), स्ट्रीकनीन (Strychnine) स्ट्रोफैंथीन (Strophanthin), ईथर (Ether), एड्रनलीन (Adrenalin) तथा कर्समेन का घोल (Kurshmann's Solution)

३. जिह्वा सदंश (Tongue Forceps), दंत सदंश (Dental Forceps) तथा गैग (Gags)

४. धातु मुखत्राण (Metal Masks), गद्दे (Pads), एरण्ड तैल (Castor oil) वैसलीन (Vaseline), तौलिया (Towels) तथा वमन के लिये पात्र (Vomit Bowel)

५. पार्श्व मे आक्सीजन सिलेण्डर (Oxygen Cylinder) तैयार रखे।

६ आपरेशन टेबुल (Operation Table) के सन्निकट सर्जन के हाथ भिगाने के लिये जीवाणुनाशक घोल से भरा हुआ एक प्याला होना चाहिये।

७ दूषित पदार्थों को रखने के लिये एक और अलग प्याला होना चाहिये।

सहायक (Assistant)—सर्जन के अतिरिक्त २ या उससे अधिक परिचारक शल्यकर्म के समय आवश्यक होते हैं, जो शल्य कर्म में सर्जन की सहायता करते हैं।

एक परिचारक विसंक्रमित अपरन (Apron), मुखत्राण (Mask) तथा हस्त त्राण (Gloves) पहने होना चाहिये; जिसका निम्नांकित कर्तव्य है:—

१. उदर गुहा में या व्रण में लगे हुये धमनी सदंशों (Arsteryforceps) की गणना याद रखना तथा स्पंज (Swabs), गाज (Gauze) आदि को याद रखना ताकि शल्यकर्म समाप्त करने के पश्चात् कोई वस्तु व्रण तथा उदर गुहा में ही पड़ी न रह जाय।
२. सर्जन को शस्त्र देने में सहायक होना।
४. शल्य कर्म समाप्ति के पश्चात् रोगी का बन्धन कर्म करना।
एक दूसरा परिचारक साधारण वस्त्र में रहता है, जिसका निम्नांकित कार्य होता है:—
१. आवश्यकतानुसार संज्ञाहरण करने वाले व्यक्ति (Anaesthetist) की सहायता करना।
२ शल्य कर्म के समय आवश्यकीय वस्तुओं को लाना।

शस्त्रकर्मोत्तरकर्तव्य—
१. गृह—जिस घर में रोगी रखा जाय वह वायु युक्त, शीतल, शब्द तथा भोजन पकाने के गन्ध से हीन ऐसा होना चाहिये, कि रोगी घर में से बाहर की वस्तुओं को भली भांति देख सके।
२ स्थिति (Position)—शस्त्र कर्म के अनुसार रोगी की स्थिति होती है। जैसे जब आमाशय या पित्ताशय पर शस्त्र कर्म हुआ रहता है; तब रोगी तकिये के सहारे करीब करीब बैठा सा रहता है।
३ स्तब्धता (Shock)—स्तब्धता को दूर करने के लिये रोगी को गरम रखना चाहिये तथा स्ट्रिक्नीन (Strychnine) को त्वचामे प्रविष्ट करना चाहिये।
४ वेदना—शस्त्रकर्म जन्य वेदना को नष्ट करने के लिये ¼ ग्रेन की मात्रा में मार्फीन (Morphine) का व्यवहार करें।
५. हृल्लास तथा वमन (Nausea and Vomiting)—शस्त्र कर्म के पश्चात् पूर्ण विश्राम देना तथा शान्ति मय स्थिति में रखना।
६ स्वाद—संज्ञाहारक वस्तुओं के स्वादु को दूर करने के लिये निम्न ओषधि को मुख में लगावें।

R/

गुलाब जल	(Rose Water)	१ औंस
ग्लीसरीन	(Glycerine)	,, ,,
नीबू रस	(Lemon juice)	१५ बूंद

एकत्र मिला कर लगावें।

मुख और दांतों को पूर्ण रूप से स्वच्छ रखना। दांतो को दिन भर में २ वार ब्रश (दातुन) से मलना।

७ आध्मान (Flatulence):—यह अत्यधिक बेचैनी तथा वेदना दायक होता है। जिसको कैलोमल (Calomel) द्वारा दस्त करा कर नष्ट करें। कैलोमल (Calomel) खिलाने के पूर्व निम्न ओषधियों को गरम गरम वस्तिमार्ग से प्रविष्ट करावें अर्थात् (Enema) देना चाहिये।

R/

(१) तारर्पीन	(Turpentine)	½ से १ औंस
वार्लीवाटर	(Barley Water)	½ से १५ ,,

साथ में पिच्युटरी एक्स्ट्रैक्ट (Pituitary Extract) १ सी० सी० की मात्रा में त्वचा मे प्रविष्ट करना चाहिये।

R/

(२) लाइकर अमन फोर्ट	(Liqr Ammon Fort)	१ ड्राम
जल	(Water)	२० औंस

यह बहुत ही उपयोगी है; किन्तु सावधान रहें, कि यह एक वार से अधिक व्यवहृत नही होता तथा इस घोल के अतिरिक्त गाढ़े घोल का व्यवहार नहीं करें, अन्यथा इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

८. तृषा (Thirst)—हृल्लास के बन्द होते ही यदि रोगी प्यासा हो तो उसे १ ड्राम सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) १ से २ छटांक गरम जल में मिला कर पिलावें।

९. निद्रानाश (Sleeplessness)—परिचारक को रोगी के शिर तथा ग्रीवा को कोमल हाथों से मलना चाहिये। एस्पिरिन (Aspirin) १० ग्रेन की मात्रा में या वेरोनाल (Veronol) ५ ग्रेन की मात्रा में गरम जल के साथ रोगी को खिला देना चाहिये।

यदि निद्रानाश तीव्र वेदना के कारण हो तो मार्फीन (Morphine) को ⅙ से ¼ ग्रेन की मात्रा में प्रविष्ट करना चाहिये। वृद्ध व्यक्तियों मे जो बहुत जागते हो उनमें इसको दुहराया भी जा सकता है।

१०. आहार (Food)—२४ घण्टे वाद दाल का पानी, जल मिलित दुग्ध, अंगूर या नारंगी का रस तथा वार्ली वाटर दिया जा सकता है। ठोस पदार्थ ५ से १० दिनों तक नही देना चाहिये।

११ मूत्र त्याग—मूत्र त्याग में यदि कठिनाई हो तो सेंक करें। शलाका कभी नही प्रविष्ट करना चाहिये।

१२. मलत्याग (Opening of the Bowels):—यदि शस्त्र कर्म के २४ घंटे से ३० घंटे के वाद मलत्याग न हो तो कैलोमल (Calomel) को १ ग्रेन की मात्रा में

१ ग्रेन सोडा बाई कार्ब (Soda bicarbi) के साथ ५, ६ मात्रा तक प्रत्येक घंटे पर खिलाना चाहिये। इतने पर भी यदि १४ घंटे बाद भली भांति मलत्याग न हो, तो पिच्युटरी एक्स्ट्रैक्ट (Pituitary Extract) को ½ सी० सी० की मात्रा में त्वचा में प्रविष्ट करा दें। तथा आधे घण्टे के अन्दर २० औंस गरम जल में साबुन तथा १ औंस एरण्ड तैल मिला कर वस्ति (Enema) देनी चाहिये।

बराबर मल साफ लाने के लिये पेराफीन (Paraffin) की एक एक मात्रा प्रातः तथा रात्रि में देवें।

१३. रोगी को अस्पताल में शय्यारूढ रखने का समय—

ग्रीष्म काल में टांके (Clips) बहुधा ६ से ७ दिन में अलग कर (काट) देवें। जब कि शीत काल में ७, ८ दिन में ही काटते हैं। बच्चों का टाँका इन अवधियों से २, ३ दिन पूर्व ही पृथक् कर दिया जाता है। ग्रीष्मकाल में टाँका लगाने के २, ३ दिन बाद से घाव को नित्य प्रति खोल कर देखें।

शस्त्र कर्म के उपद्रव तथा अनुगामी व्याधियां (Complications and Sequelae)

१. वमन (Vomiting)—सञ्ज्ञाहारक द्रव्य को प्रविष्ट करने पर २ घंटे से ६ दिन तक मूत्र में एसिटोन (Acetone) निकलने लगते हैं, जिससे विषमयता हो जाती है; और तीव्र वमन होने लगता है।

कर्तव्य—शल्य कर्म के एक घण्टे पूर्व जल में सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) या ग्लुकोज (Glucose) मिला कर पिला देना।

२ संज्ञाहरण के पश्चात् रोगी को शान्ति पूर्वक आराम से सुला देवें।

३. मार्फीन (Morphine) प्रविष्ट करने से वमन तुरन्त बन्द हो जाता है।

२. आमाशय प्रसार (Dilatation of the stomach):—यह उपद्रव मुख्य तया शस्त्र कर्म के ४८ से ७२ घण्टे के पश्चात् उत्पन्न होता है, जिसमें निम्नांकित लक्षण व्यक्त होते हैं—

(१) हृदयाधरिक प्रदेश (epigastreum) में वेदना।

(२) तीव्र तृषा।

(३) अत्यधिक वमन।

कर्तव्य (१) मुख से कुछ भी नहीं देना।

(२) वेदना शान्ति पर जल या ५ प्र० श० ग्लुकोज (Glucose) का घोल देना।

(३) पिच्युटरी (Pituitary) की सूची मांसगत प्रविष्ट करना।

३. शिराशोथ तथा अन्तः रक्तस्कन्दन) Phlebitis and thrombosis)–यह गर्भाशय

गुदा तथा आन्त्रपुच्छपर शस्त्र कर्म करने से उत्पन्न होता है।

लक्षण (१) स्थानिक स्पर्शासहत्व (Tenderness)
(२) उत्सेध (Swelling)
(३) शीतपूर्वक तापक्रम का उच्च होना।

कर्तव्य—

(१) ५ या ६ सप्ताह तक पूर्ण शय्या विश्राम देना।
(२) पैर को रुई में लपेट गरम बोतल पर रखना।
(३) वेदना के स्थान पर बर्फ का थैला रखना।
(४) वेदना की तीव्रता में मार्फीन (Morphine) को त्वचा में प्रविष्ट करना।

४. शल्यकर्मोत्तर फुफ्फुस शोथ (Pneumonia)

इसके प्रारम्भ तथा समाप्ति की कोई निश्चित अवधि नहीं होती।

कर्तव्य—

(१) मुख को साफ रखना।
(२) दांतों पर दिन में २ बार ब्रश (Brush) लगाना।
(३) पूर्ण विश्राम देना।
(४) रोगी को शान्ति पूर्वक हवादार कमरे में रखना।
(५) काफी मात्रा मे जल पिलाना।
(६) शुष्क कपिंग (Dry Cupping) करना। यह बहुत ही लाभदायक होता है।

(५) मूत्रावरोध तथा मूत्राशय शोथ

यह बहुधा अर्श तथा मूलाधार या श्रोणि पर शस्त्रकर्म करने से उत्पन्न होता है।

कर्तव्य—

१ शस्त्रकर्म के १२ घण्टे पश्चात् यदि मूत्र त्याग न हो तो वस्ति प्रदेश में उष्ण बोतल से सेंक करना या वस्ति (Enema) देना।
२ नं० १ के कर्म से कार्य न हो तो शलाका (Catheter) को प्रविष्ट करना।

(६) फुफ्फुसीय अन्तः शल्यता (Pulmonary Embolism):—

शस्त्रकर्म के दूसरे से चौथे सप्ताह के बाद अन्तः शल्यता प्रारम्भ होती है; जिससे अकस्मात् या श्वास कष्ट से देर में मृत्यु हो जाती है।

कर्तव्य—

(१) अत्यधिक मात्रा में प्राणवायु (Oxygen) का व्यवहार करना।
(२) एट्रोपीन (Atropine) को त्वचागत प्रविष्ट कराना।

संज्ञाहरण

(Anæsthesia)

वर्णन—आज से शत वर्ष पूर्व मादक द्रव्यों को पिलाकर रोगी पर शीघ्रता के साथ शस्त्रकर्म किया जाता था जिसमें बहुत कठिनाई होती थी। आधुनिक काल में जो संज्ञा नाशन की प्रणालियाँ हैं, वे सर्व प्रथम १८४४ से प्रारम्भ हुईं, जिसमें उत्तरोत्तर सुधार होते होते यह स्थिति हुई है। सन् १८४४ में वेलस (Wells), रिग (Rig) तथा काल्टन (Colton) नामक चिकित्सकों ने नाइट्रस आक्साइड (Nitrous Oxide) द्वारा संज्ञानाश करना प्रारम्भ किया, फिर १८४६ में मार्टन (Morton) महोदय ने ईथर (Ether) नामक द्रव्य से संज्ञानाश करना प्रारम्भ किये। १८४७ ई० में सिम्सन (Simpson) महोदय ने क्लोरोफार्म (Chloroform) की खोज की जो बहुधा आजकल अधिक व्यवहृत होता है। आधुनिककाल में इन संज्ञाहारक वस्तुओं को प्रविष्ट कराकर रोगी के वेदना को सुगमता के साथ विना किसी कष्ट के र किया जाता है।

संज्ञाहरण के प्रकार (Kind of Anæsthesia)

१. सार्वदैहिक संज्ञानाश (General Anaesthesia)
२. प्रान्तीय „ (Regional „)
३. स्थानिक „ (Local „)

सार्वदैहिक संज्ञानाश (General Anaesthesia)

जब संज्ञाहारक द्रव्यों को सुंघाते हैं तब सार्वदैहिक संज्ञानाश होता है। सार्वदैहिक संज्ञानाश करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि रोगी को संज्ञानष्ट होते समय कम से कम कष्ट का अनुभव हो, तथा संज्ञानाश के पश्चात् जब वह चैतन्यावस्था को प्राप्त हो तब भी उसे संज्ञानाशक द्रव्यों के दुष्परिणामों तथा अनुगामी व्याधियों से कम से कम पीड़ित होना पड़े।

प्रान्तीय संज्ञानाश (Regional Anæsthesia)

प्रान्तीय संज्ञानाश में प्रान्त की बड़ी नाड़ी प्रणाली (Nerve trunk) में संज्ञानाशक द्रव्य को सूचीवेध (injection) द्वारा प्रविष्ट करा उसकी क्रिया शक्ति को रोक देते हैं। इस प्रकार जितने क्षेत्र में इस नाड़ी की शाखा प्रशाखा फैली होती है उतने क्षेत्रों में संज्ञाहीनता हो जाती है।

स्थानिक संज्ञानाश (Local Anæsthesia)

स्थानिक संज्ञानाश में नाड़ियों के प्रान्तीय (Ending) भाग को संज्ञानाशक द्रव्य द्वारा शून्य करते है। इसको सूचीवेध या फौहारे द्वारा शून्य करते हैं, जो अल्प कालिक होता है।

रोगी परीक्षा—संज्ञानाशक वस्तुओं को प्रविष्ट कराने से पूर्व रोगियों की परीक्षा कर लेना आवश्यक है, ताकि शस्त्रकर्म सफलता से किया जा सके।

१. श्वास कष्ट (Breathlessness) नहीं है।
२ पादोत्सेध (Oedema of the feat) नहीं हो।
३ फुफ्फुसों के आधार पर आर्द्र (Moist) शब्द नहीं मिले।
४. श्वास प्रणाली शोथ (Bronchitis) नहीं हो।
५. कृत्रिम दंत निकल गये हों।

पूर्वकर्म (Preparation)—

१. संज्ञाहरण से ४ घण्टा पूर्व तक ठोस पदार्थ खाने को नहीं दें।
२. विरेचक द्रव्य द्वारा आंत्रों को रिक्त करे। आवश्यकतानुसार विरेचन के पश्चात् वस्ति (Enema) भी दी जा सकती है।
३. क्षीण व्यक्तियों में स्ट्रिक्नीन (Strychnine) $\frac{1}{30}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचा में प्रविष्ट कर दें। इसको २ दिन पूर्व छोटी मात्राओं में प्रविष्ट करना उचित होता है।
४. ईथर (Ethar) द्वारा संज्ञानाश करते समय एट्रोपीन (Atropine) $\frac{1}{100}$ ग्रेन की मात्रा में तथा मार्फीन (Morphine) $\frac{1}{6}$ से $\frac{1}{4}$ ग्रेन की मात्रा में एक साथ सूचीवेध द्वारा प्रविष्ट कर देना चाहिये। इससे मुख से झाग कम निकलता है, जिससे श्वासावरोध का भय चला जाता है और ईथर (Ether) कम लगता है। शस्त्रकर्मोत्तर उपद्रव भी कम होते हैं।

संज्ञानाश की अवस्थायें (Stages of Anæsthasia)

रोगी को संज्ञानाश के समय विभिन्न अवस्थाओं मे होकर गुजरना पड़ता है। संज्ञानाश की तीसरी अवस्था शस्त्रकर्मावस्था होती है तथा चौथी अवस्था भग्नसन्धानावस्था कहलाती है। तीसरी अवस्था में शस्त्रकर्म किया जाता है तथा चौथी अवस्था में अस्थिभग्न तथा सन्धिच्युति ठीक की जाती है।

विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन

प्रथमावस्था के लक्षण—

१ मुखमण्डल तथा शरीर पर गरमी का व्यक्त होना।

२. शिर में शब्द का ज्ञान होना ।
३. नेत्रों के सम्मुख चिनगारियों का दिखलाई देना ।
४. श्वास कष्ट (दम घुटना) होना।
५. संज्ञाहारक वस्तुओं के तीव्र घोल के वाष्प को प्रविष्ट करने से कासोत्पत्ति होना ।
६. रोगी का भ्रम में पड़ जाना ।
७ शब्द मन्द सुनाई देना । ८ रोगी का पूर्ण उत्तर देना ।
९ यदि रोगी को वेदना उपस्थित रहती है, तो इस अवस्था में कम ज्ञात होती है ।

द्वितीयावस्था के लक्षण—

१. रोगी बाह्य भावों (Impressions) को भूल जाता है ।
२ स्वभावानुसार रोगी गाता है, चिल्लाता है, चीखता है और छटपटाता है ।
३. वाष्प को सूंघना बंद कर देता है ।
४ मुखमण्डल धुंधुला हो जाता है ।
५. नेत्र गोलक आगे को निकल आता है ।
६. मन्याशिरा (Jugular Vein) प्रसारित हो जाती है ।
७ नाड़ी द्रुत गति से चलने लगती है ।
८ हृदय तथा रक्तप्रणालियों में तीव्र धड़कन होती है ।
९. श्वासप्रश्वास तीव्र हो जाता है ।
१०. रक्तचाप बढ़ जाता है । ११ कनीनक (Pupil) कुछ प्रसारित हो जाता है ।

तृतीयावस्था के लक्षण

१. परावर्तित क्रियायें (Reflex action) तथा संज्ञा (Sensation) नष्ट हो जाती है ।
२ रोगी पूर्ण संज्ञाहीन हो जाता है । घरघराहट के साथ श्वास प्रश्वास आने लगता है ।
३ शाखायें शववत् (मुर्दा सदृश) शिथिल हो जाती है । यदि उन्हें ऊपर उठाकर छोड़ दिया जाय तो काष्ठवत गिर जाती हैं ।
४ तारामण्डल (Iris) पर तीव्र प्रकाश डाला जाय तो वह कुछ संकोच करता हुआ व्यक्त होगा ।
५ कनीनक संकुचित हो जाती है ।
६ वर्त्ममण्डल (Conjunctiva) की परावर्तित क्रिया पूर्ण नष्ट हो जाती है ।
७ नाड़ी आयाम तथा तीव्रता में कम हो जाती है ।
८ श्वास प्रश्वास उथला तथा गम्भीर (Deep) हो जाता है ।
९ रक्त चाप गिर जाता है ।
यही शस्त्रकर्म करने की अवस्था है जिसके लिये १ से ४ ड्राम क्लोरोफार्म की आवश्यकता होती है :
तृतीयावस्था में जब बराबर संज्ञानाशक द्रव्य प्रविष्ट कराये जाते हैं, तब चतुर्थावस्था आ जाती है ।

चतुर्थावस्था—

१ मांसपेशियों की शक्ति (Tone) पूर्ण नष्ट हो जाती है, जिससे मांसपेशियाँ पूर्णरूप से शिथिल हो जाती हैं।

२ मलमूत्र का अनैच्छिकरूप मे त्याग हो जाता है।

३ कनीनक प्रसारित हो जाती है। जो श्वासावरोध (Asphyxia) का सूचक होती हैं।

४ श्वासकेन्द्र तथा हृदयकेन्द्र घातित (Paralised) हो जाते हैं।

५. रक्तप्रणालियाँ तथा केशिकायें प्रसारित हो जाती हैं, जिससे रक्तचाप शून्य तक पहुँच जाता है।

६. श्वास प्रश्वास उथला, क्षीण और अनियमित होता है, जो अन्त में बंद हो जाता है

७ नाड़ी क्षीण तथा अनियमित हो जाती है।

८ हृदय प्रसारितावस्था (Diastole) में बंद हो जाता है।

यह अवस्था बहुत ही भयानक अवस्था होती है, अतः इस अवस्था में सर्वदा सावधानी से काम करना चाहिये। थोड़ी सी असावधानी में प्राणपखेरु के उड़ जाने का संदेह रहता है।

क्लोरोफार्म प्रवेश के समय के भयानक परिणाम—

ये (परिणाम) दो मार्गों द्वारा उत्पन्न होते हैं।

१. श्वास प्रश्वास के बंद होने से (Failure of respiration)

२. हृदय कार्य के बंद होने से (Failure of the heart)

श्वासावरोध से मृत्यु का कारण—

१. जिह्वा के पीछे गिरने से या वमित द्रव्य के अन्दर प्रविष्ट होने से तन्त्री द्वार (Glotiss) अवरुद्ध हो जाता है।

२. क्लोरोफार्म के घोल के वाष्प को सूंघने से या तंत्रीद्वार में अकड़न उत्पन्न हो जाना।

३ रोगी की भयानक स्थिति, जैसे गर्भिणी या वृद्ध होना।

४ तंग वस्त्र (Tight clothes) या बंधन (Bandages) के दबाव से।

५ दन्तहीन वृद्धों में ओष्ठों के अन्दर की ओर तथा नाशापुटों (Alae Nasi) का अन्दर की ओर गिर जाना।

६ श्वास प्रश्वास के घात (Paralysis)।

हृदय के बंद होने से मृत्यु का कारण—

१ क्लोरोफार्म वाष्प की अत्यधिक तीव्रता, जिससे हृदय की मांसपेशी अकस्मात् घातित हो जाती है।

२ शस्त्रकर्म की स्तब्धता (Shock)।

३. हृदय की व्याधियाँ।

निम्न व्यक्तियो मे कायिक संज्ञाहारक द्रव्यो का निषेध—

१. हृदय रोग से पीड़ित। २ वृद्ध। ३. मद्यपी।
४. अपस्मार से पीड़ित। *५. पाण्डु (Anaemia) से पीड़ित।
६. रक्तस्रावाधिक्यता से पीड़ित। ७ प्रमेही।
८. स्वरयंत्र (Larynx) के अवरोध से पीड़ित।
९ फुफ्फुसावरण तथा फफ्फुसीय व्याधियों से पीड़ित।
१० वृक्क रोग से पीड़ित।

इन व्यक्तियों में ईथर (Ether) प्रविष्ट करना निषिद्ध है।

कायिक संज्ञा नाश (General Anaesthesia) की आवश्यकता—

१. सन्धिच्युति (Dislocation) तथा अस्थिभग्न को ठीक करते समय मांस पेशियों के आक्षेप (Spasm) को दूर करने के लिये।
२. आन्त्रवृद्धि (Hernia) को ठीक करने के लिये।
३. उदरस्थ आशयो की परीक्षा करने के हेतु।
४ पित्ताश्मरी जन्य शूल (Biliary Colic), आन्त्रशूल (Intestinal Colic) तथा वृक्काश्मरी शूल (Renal Colic) को दूर करने के लिये।
५. धनुस्तम्भ (Tetanus), सखिया विष, जल-सन्त्रास (Hydrophobia) के आक्षेप को, गर्भाविक्षेपक को, ताण्डव (Chorea) तथा मूत्रविषता (Ureamia) के आक्षेप को दूर करने के लिये।

क्लोरोफार्म (Chloroform) को प्रविष्ट करते समय ध्यान देने योग्य बातें—

१ क्लोरोफार्म बिल्कुल शुद्ध होना चाहिये।
२ हृदय की क्षीणता में ए० सी० (A C or alcohol, Chloroform) या ए०, सी० ई० (A C E या Alcohol, Chloroform और Ether) का घोल व्यवहृत करना चाहिये।
३ ग्रीवा, वक्ष तथा उदर के तग वस्त्रों को ढीला कर देना चाहिये या हटा देना चाहिये।
४ रोगी को पकड़े रहने के समय परिचारक को चाहिये कि वक्ष या उदर को दबाये न रखें।
५ कृत्रिम दन्त पृथक् कर देना चाहिये।
६ रोगी को पृष्ट वंश पर लिटाना चाहिये।
७. संज्ञानाशक द्रव्य को प्रविष्ट कराने वाले व्यक्ति (Anaesthetist) का ध्यान सर्वदा रोगी पर उसकी रक्षा के हेतु होना चाहिये।

---

* इन व्यक्तियों में क्लोरोफार्म नहीं प्रविष्ट कराना चाहिये।

८ सर्जन, शल्यकर्म (Operation) तथा एनिस्थेटिस्ट (Anaesthetist) दोनों का कार्य एक साथ नहीं कर सकता।

९. क्लोरोफार्म वायु के साथ पूर्ण रूप से घुला होना चाहिये।

१०. क्षीण व्यक्तियों को क्लोरोफार्म सुंघाने के पूर्व, छोटी मात्रा में ब्राण्डी (Brandy) पिला देनी चाहिये।

११ रोगी के पूर्ण सज्ञाहीन होने पर ही शस्त्रकर्म प्रारम्भ करना चाहिये।

१२ जब स्वच्छमण्डल (Cornea) की संज्ञा नष्ट हो जाय या श्वास-प्रश्वास घरघराहट के साथ होने लगे, उस समय सुंघाना रोक देना चाहिये।

१३ वमन प्रारम्भ होने पर शिर को एक पार्श्व की ओर घुमा देना चाहिये; तथा जिह्वा बाहर खींच लेनी चाहिये; ताकि वमित द्रव्य स्वरयन्त्र में पहुंच कर श्वासावरोध न उत्पन्न कर दे।

१४ यदि वमित द्रव्य स्वरयन्त्र में प्रवेश कर गया हो तो उसी समय स्वरयन्त्रच्छेदन (Laryngeotomy) कर देनी चाहिये।

१५ मुखमण्डल के धुंधला (Livid) होने तथा श्वास प्रश्वास के घरघराहट या बंद होने पर निम्न उपचार करना चाहिये:—

(क) स्कन्ध को ऊचा उठा देना चाहिये।

(ख) मुख को खोल देना चाहिये।

(ग) जिह्वा को बाहर निकाल देना चाहिये।

(घ) कई घण्टों तक कृत्रिम श्वास क्रिया करनी चाहिये।

(ङ) उपरोक्त क्रियाओं के साथ साथ स्ट्रिक्नीन (Strychnine), ईथर (Ether) तथा ब्राण्डी (Brandy) को सूची से त्वचा में प्रविष्ट कराना चाहिये।

(च) आक्सीजन (Oxygen) और कार्बन डाई आक्साइड (Carbon di Oxide) सुंघाना चाहिये।

(छ) शाखाओं को बाँध देना चाहिये।

(ज) औदरीया महाधमनी (Abdominal aorta) को दबाना चाहिये।

(झ) शिर को नीचे लटका देना चाहिये।

संज्ञानाश से मुक्ति (Recovery from Anaesthesia)

१. शस्त्रकर्म के पश्चात् रोगी को गरम पलंग पर शान्ति के साथ रखें।

२ रोगी को सम्बन्धियों तथा मित्रों से नहीं मिलने दें, नहीं तो बातें आदि करने से तीव्र शिरः शूल आरम्भ हो जाता है।

३ रोगी का कमरा गरम तथा प्रविजन युक्त होना चाहिये।

४. संज्ञानाश के पश्चात् ४ घण्टे तक भोजन नहीं देना चाहिये।

५ सुगन्धित वस्तु सुंघाना।

क्लोरोफार्म (Chloroform)	ईथर (Ether)
१. क्लोरोफार्म तनु घोल में देना चाहिये। ९८% प्र० शत वायु तथा २% प्र० श। क्लोरोफार्म होना चाहिये।	१. ईथर को तीव्र घोल में व्यवहृत करना चाहिये क्योंकि इसमें क्लोरोफार्म की अपेक्षा संज्ञानाशन शक्ति कम होती है। इसको १५% प्र० शत के घोल में व्यवहृत करते हैं।
२. यह जलन शील (Inflammable) नहीं है।	२. यह जलन शील होता है, अत मुख के समीप अग्नि नही लानी चाहिये।
३. ३ ड्राम से १ औंस की मात्रा काफी है।	३. संज्ञानाश करने के लिये कई औंस की आवश्यकता होती है।
४. गन्ध अप्रिय नहीं होती।	४. अप्रिय गन्ध होती है।
५. उत्तेजना की अवस्था कम समय तक रहती है, अत. कम कष्टदायक होता है।	५ उत्तेजना अधिक समय तक होती है, जिस से कष्ट अधिक होता है।
६. संज्ञानाश होती है। जो अधिक समय तक रहती है।	६. संज्ञानाश थोडे समय तक होती है।
७. तापक्रम बहुत कम कम होता है।	७ तापक्रम अधिक (४·८° F) कम हो जाता है।
८ संज्ञानाश के पश्चात् हृल्लास तथा वमन कम होता है।	८. हृल्लास और वमन प्रधान दुष्परिणाम हैं।
९. सुगमता के साथ मांस पेशियाँ शिथिल हो जाती है।	९. उतनी सुगमता से मांस पेशियाँ नहीं शिथिल होती।
१०. हृदय, श्वासप्रश्वास तथा रक्तप्रणाली केन्द्र (Vasomotor Centre) शीघ्र ही घातित हो जाते हैं। अतः यह उत्तम संज्ञाहारक नहीं है।	१०. ये केन्द्र शीघ्र नहीं घातित होते, अत. यह उत्तम संज्ञाहारक है।
११. श्वास प्रश्वास संस्थान के उपद्रव नहीं होते।	११. श्वास प्रणाली तथा फुफ्फुस शोथ हो जाते हैं।
१२. त्याग शीघ्र होता है।	१२. त्याग शनैः शनैः होता है।
१३. गन्ध अधिक काल तक नहीं रहता।	१३ शरीर में गन्ध अधिक काल तक रहता है।
१४. हृदय क्षीणता में मृत्यु की सम्भावना अधिक होती है।	१४ मृत्यु की सम्भावना बहुत कम होती है।
१५ ६ वर्ष के अन्दर की अवस्थाओं में तथा ६० वर्ष के ऊपर की अवस्थाओं में भी यह व्यवहृत होता है।	१५ ६ वर्ष के नीचे तथा ६० वर्ष के ऊपर के अवस्था वाले रोगियों में इसका व्यवहार नहीं करना चाहिये।

स्थानिक सञ्ज्ञानाश

इथिल क्लोराइड (Ethyl Chloride) के फौहारे को अभिलषित स्थान पर छिड़कते हैं, जब वह स्थान बिल्कुल श्वेत हो जाता है तब समझे कि सञ्ज्ञाहीन हो गया। यह छोटे छोटे शल्यकर्म में व्यवहृत होता है।

प्रान्तीय सञ्ज्ञानाश—

जिस प्रांत की संज्ञा का नाश करना होता है, उस प्रान्त के प्रधान संज्ञावाही नाड़ी में कोकेन (Cocaine) तथा नोवोकेन (Novocaine) आदि संज्ञाहारक द्रव्यों को सूचीवेध द्वारा प्रविष्ट कर देते हैं। इससे यह परिणाम होता है, कि उस नाड़ी से सम्बन्धि सम्पूर्ण क्षेत्र की संज्ञा नष्ट हो जाती। इस विधि से बड़े बड़े शल्यकर्म भी किये जाते हैं।

सौषुम्निक संज्ञानाश (Spinal Anaesthesia) के दोष

१ पूर्ण सफलता नहीं मिलती।
२. संक्रमण का सर्वदा भय रहता है, जो मृत्यु का कारण होता है।
३ यह सर्वदा वेदनाहीन नहीं होता।
४ तीव्र शिरःशूल तथा रक्तचाप न्यूनता इसके दुष्परिणाम हैं।
५ नाड़ीजन्य अनुगामी व्याधियाँ (Sequellae) उत्पन्न हो जाती है।

विकृति-परीक्षा

मूत्र-परीक्षा

विभिन्न समय के मूत्र में शरीर से विभिन्न वस्तुयें त्यक्त होती हैं, अतः यह नितान्त आवश्यक होता है, कि यदि हो सके तो मूत्र-परीक्षा के लिये २४ घण्टे में जितना मूत्र त्याग हो उन सबको मिलाकर व्यवहार में लाये। किन्तु २४ घंटे का मूत्र मिलाना असम्भव होता है; अतः साधारणतया भोजन करने के ३ घण्टे पश्चात् का मूत्र लेते हैं; क्योंकि इस मूत्र में अस्वाभाविक द्रव्य उपस्थित रहते हैं। मूत्र को एक स्वच्छ सीसे के बर्तन में बद रखना चाहिये।

मूत्र परीक्षा के प्रकार—

१. भौतिक परीक्षा (Physical Examination)
२ रासायनिक परीक्षा (Chemical examination)
३ सूक्ष्म वीक्षणीय परीक्षा (Microscopical Examination)

भौतिक परीक्षा

मात्रा—एक स्वस्थ युवा पुरुष २४ घण्टे में स्वाभाविकतया २५ छटांक (५० औंस) मूत्रत्याग करता है। एक स्वस्थ स्त्री २४ घण्टे में इससे कुछ कम मूत्रत्याग करती है। शिशु अपने शारीरिक भार की अपेक्षा अधिक मूत्र त्याग करते हैं; जिनकी अवस्थानुसार नीचे तालिका दी गई है।

अवस्था	त्यक्त मूत्रराशि
प्रथम २४ घण्टे की अवस्था में	० से २ औंस तक
द्वितीय " " " "	½ से ३ " "
३ रे से ४ थे दिन की अवस्था में	३ से ८ " "
प्रथम सप्ताह से २ रे मास तक	५ से १३ " "
२ रे से ६ वें मास तक	७ से १४ " "
६ वें मास से २ रे वर्ष तक	८ से २० " "
२ रे वर्ष से ५ वें " "	१६ से २६ " "
५ वें से ८ वें " "	२६ से ४० " "
८ वें से १४ वें " "	३२ से ४८ " "

जब उपरोक्त वर्णित मूत्र राशियों में वृद्धि तथा ह्रास हो जाती है, तब व्याधि की उपस्थिति समझनी चाहिये।

मूत्रराशि में वृद्धि की अवस्थायें—

१ अत्यधिक द्रव पदार्थ का भोजन में व्यवहार।
२ सर्दी से।
३ चिरकालिक वृक्क शोथ (Interstitial Nephitis)
४ उदकमेह तथा इक्षुमेह।
५ योषापस्मार (Hysteria)

मूत्रराशि के ह्रास की अवस्थायें

१. अत्यधिक गरमी से।
२ स्वेदाधिक्य के कारण।
३. तीव्र वृक्क शोथ।
४ हृदय रोग।
५ ज्वर।
६ अतिसार तथा वमनाधिक्य

वर्ण तथा पारदर्शकता—स्वाभाविक मूत्र का वर्ण (रंग) भूसे के रंग सदृश होता है। अम्लिक मूत्र वर्ण, क्षारीय मूत्र के वर्ण की अपेक्षा गम्भीर होता है।

यकृत के कार्य में व्यवधान उपस्थित होने पर यूरोविलीन (Urobiline) मूत्र रंजक पदार्थ की अधिकता हो जाती है; अतः मूत्र का वर्ण नारंगी के वर्ण का हो जाता है। उस मूत्र को यदि कुछ काल तक रखा जाय तो कृष्णवर्ण का हो जायेगा।

मूत्र की पारदर्शकता मूत्र में उपस्थित वस्तुओं पर निर्भर है। यदि मूत्र में

अत्यधिक अस्वाभाविक द्रव्य उपस्थित होंगे; तो मूत्र गाढ़ा होगा अन्यथा तनु रहता है।

मूत्र का स्वरूप—स्वस्थावस्था में मूत्र जल सदृश होता है। यदि मूत्र में शर्करा या पित्त (Bile) अत्यधिक मात्रा में उपस्थित होंगे तब मूत्र गाढ़ा होता है। श्वेत-सार (Albumin) तथा पित्त की उपस्थिति में मूत्र में अत्यधिक झाग उठते हैं, जो अधिक समय तक स्थिर रहते हैं। पूय युक्त मूत्र से तार सदृश रचना बनती है।

गंध—स्वस्थावस्था में मूत्र का गंध नौसादर के गंध सदृश होता है। व्याधियों में मूत्राशय का सम्बंध आंत्रों से हो जाने पर मूत्र में मल का गंध आने लगता है। एसीटोन (Acetone) की उपस्थिति में मूत्र का गंध फलवत (Fruity) हो जाता है। इनके अतिरिक्त कुछ ओषधियाँ ऐसी होती हैं, कि उनके सेवन से उनके गंध सदृश गंध आने लगती हैं।

आपेक्षिक घनत्व (Density)-स्वस्थावस्था में मूत्र का घनत्व १०१५ से १०२५ होता है। कभी काल जब कि मूत्र अत्यधिक गाढ़ा होता है तब घनत्व १०२५ तक भी होता है। यह घनत्व विभिन्न अवस्थाओं में भिन्न होता है।

अवस्था।	घनत्व
प्रथम मास में	१००१ से १००५
द्वितीय वर्ष में	१०२६ से १०३०
युवावस्था में	१०१५ से १०२५

उपरोक्त अवस्थाओं के अतिरिक्त निम्न दशाओं में भी घनत्व में ह्रास और वृद्धि होती है—

ह्रास की अवस्थायें—

१. उदक मेह (Diabetes Insipidus)

२ वृक्क की चिरकालिक व्याधियाँ।

वृद्धि की अवस्थायें—१ शर्करा मेह (Diabetes mellitus)। यह घनत्व, घनत्व मापकयंत्र (Urinometer) से नापा जाता है।

घनत्वमापक यंत्र के व्यवहार की विधि—मूत्र को शीतल कर एक गहरे तथा चौड़े सीसे के पात्र में लेना चाहिये, ताकि यंत्र पात्र के पार्श्वों को छूये बिना स्वतंत्रता के साथ मूत्र में गति कर सके। मूत्र के ऊपर के सम्पूर्ण बुलबुले को नष्ट करके यंत्र को साफ कर मूत्र के बीच में डालना चाहिये। यंत्र के जिस अंक पर मूत्र का धरातल पहुँचे उसको पढ़ लेवे। यही मूत्र का आपेक्षिक घनत्व होता है।

मूत्र की ठोस वस्तुओं के ज्ञान की विधि—१५0° पर के मूत्र के आपेक्षिक घनत्व के अन्तिम दो अङ्कों में २·३३ का गुणा करने पर उपस्थित ठोस वस्तुओं की मात्रा आती है। यह मात्रा १ लिटर मूत्र की होती है। जैसे—यदि घनत्व १०२० है तो २० × २·३३ = ४६·६ ग्राम। इस मूत्र में ४६·६ ग्रा० श० ठोस पदार्थ उपस्थित है।

विभिन्न प्रक्षेपों (Deposits) का स्वरूप

फास्फेट (Phosphate)—कैल्शियम तथा मग्नेसियम फास्फेट क्षारीयमूत्र (Alkaline) में उपस्थित रहते हैं। ये रंग हीन होते हैं, इनमें यदि एक नलिका (Pippet) द्वारा एसीटिक एसिड (Acetic Acid) का हल्का (Dilute) घोल मिला दिया जाय तो ये गल जाते हैं। यही इनकी विशिष्ट पहिचान है।

यूरेट्स (Urates)—सोडियम (Sodium), पोटेशियम (Potassium) और अमोनियम (Ammonium) के यूरेटस तीव्र आम्लिक (Highly Acid) मूत्र में पाये जाते हैं। ये स्वस्थावस्था में भी जब मूत्र को ठण्डा कर रखते हैं, पाये जाते हैं। ये लाल रंग के या ईंटे के चूर्ण के सदृश रंग में होते हैं। यूरेट्स युक्त मूत्र को शनैः शनैः गरम करने पर ये गल जाते हैं। ये शुद्ध नाइट्रिक एसिड (Strong Nitric acid) में घुलनशील होते हैं। इन पर एसीटिक एसिड का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

यूरिक एसिड (Uric Acid)—ये गम्भीर भूरे रंग के कण के रूप में पात्र के सतह में पाये जाते हैं। इनका प्रक्षेप बहुत ही अल्प होता है।

मूत्र की रासायनिक परीक्षा

प्रतिक्रिया (Reaction)—प्रतिक्रिया लिटमस पत्रक (Litmus Paper) से देखी जाती है। क्षारीय मूत्र में लाल लिटमस पत्रक डालने से नीला (Blue) हो जाता है, तथा अम्लिक मूत्र में नीला लिटमस पेपर डालने से लाल हो जाता है।

क्लोराइड परीक्षा (Chloride Examination)—मूत्र में साधारणतया स्वस्थावस्था में प्रतिदिन लगभग १२ ग्राम क्लोराइड (chloride) त्यक्त होता है। यह विषमज्वर (Malaria) के अतिरिक्त सभी ज्वरों में राशि में कम त्यक्त होता है। विषमज्वर की ज्वरावस्था में इस की राशि में वृद्धि हो जाती है। खण्ड फुफ्फुस प्रदाह (Lobar Pneumonia) में यह राशि में अत्यधिक कम या लुप्त हो जाता है।

परीक्षाविधि—मूत्र को छानकर स्वच्छ कर लेना चाहिये। यदि मूत्र में अल्ब्युमिन (Albumin) की उपस्थिति हो तो उसे उबाल कर पृथक कर लेना चाहिये। एक परीक्षा नलिका (Test tube) में मूत्र को ½ इञ्च के परिमाण में लेकर उसमें शुद्ध नाइट्रिक एसिड (Pure Nitric acid free from Hcl) के कुछ बूंद मिलाना चाहिये। फिर मूत्र के बराबर सिलवर नाइट्रट घोल (Silver nitrate Solution)

३% प्र० शत की शक्ति में मिलाते हैं। यदि क्लोराइड स्वाभाविक मात्रा में उपस्थित होगा तब मूत्र शीघ्र ही दधि सदृश हो जायेगा। यदि क्लोराइड की राशि कम होगी तब घोल केवल दुग्ध सदृश होगा। यदि क्लोराइड की राशि केवल नाम की होगी तब वर्ण गदला होगा और जब क्लोराइड बिलकुल अनुपस्थित होगा तब घोल बिलकुल स्वच्छ रहता है।

फास्फेट परीक्षा (Phopshate Examination)—मूत्र में साधारणतया स्वस्थावस्था मे १ से १½ ग्राम की मात्रा में नित्यप्रति फास्फेट (Phospbate) त्यक्त होता है। पृथक रोगों में इसकी मात्रा में ह्रास हो जाता है। यह क्षारीयमूत्र में उपस्थित रहता है।

परीक्षाविधि—एक परीक्षा नलिका में ¾ भाग में मूत्र लेकर उसके उर्ध्व भाग को गरम करे। फास्फेट की उपस्थिति में नलिका में बादल सदृश सघन रचना बन जाती है। इसमें एसिटिक एसिड (Acetic Acid) के कुछ बूंद को डालते हैं जब इसके डालने से यह रचना लुप्त हो जाय, तब फास्फेट की उपस्थिति माननी चाहिये।

मूत्र में अमोनिया (Ammonia) मिलाने पर जब श्वेत वर्ण का कण के रूप में प्रक्षेप बन जाय जो रखने पर और भी बढता हो तब केल्शियम तथा मैग्नैशियम फास्फेट (Cal and Mag Phosphate) की उपस्थिति जानी जाती है। सोडियम और पोटेशियम के फास्फेट घोल के रूप में ही उस्थित रहते हैं।

अल्ब्युमीन परीक्षा (Albumin Test)—

१ एक परीक्षा नली (Test tube) में ⅔ मूत्र डाले फिर इसके उर्ध्व १ इञ्च भाग को खौलावे। खौलाने पर यदि ऊर्ध्व भाग धुंधला हो जाय तो उसमें एसीटिक एसिड (Acetic Acid) के ३% प्र० शत घोल के कुछ बूंद को डाले यदि यह धुंधलापन और गाढा हो जाय तब अल्ब्युमिन की उपस्थिति मानते हैं और यदि धुंधलापन एसिड मिलाने से लुप्त हो जाय तब अल्ब्युमिन की अनुपस्थिति समझते है।

२ एक परीक्षा नलिका में ३ सी० सी० की मात्रा में मूत्र लेते हैं। फिर इस मूत्र में शुद्ध सैलिसिकसल्फोनिक एसिड (Salicylsulphonic Acid Pure) के कुछ बूंदों को मिलाते है। इसके मिलाने से नलिका में यदि श्वेत प्रक्षेप उपस्थित हो गया तब अल्ब्युमिन की उपस्थिति मानते हैं।

३ एक परीक्षा नलिका में ½ इञ्च की मात्रा में शुद्ध नाइट्रिक एसिड (Pure Nitric Acid) लेते है। इस नलिका में अब एक नलिका (Pipette) द्वारा मूत्र धीरे धीरे मिलाते है। १ मिनट के पश्चात् यदि एसिड तथा मूत्र के सगम स्थान पर श्वेत मुद्रिका सदृश रचना बन जाय तब तो अल्ब्युमिन की उपस्थिति

मानते हैं अन्यथा अल्ब्युमिन की अनुपस्थिति जानते हैं।

अल्ब्युमिन की मात्रा का निर्णय (Quantitative Test of Albumin)

अल्ब्युमिन के मात्रा का निर्णय हैरोवर (Harrower's) के अल्ब्युमिनोमीटर (Albuminometer) से भली भाँति किया जा सकता है। इस परीक्षा में कुछ ही मिनट लगते हैं।

विधि—अल्ब्युमिनोमीटर (Albuminometer) में R (आर) के चिह्न तक २४ घण्टे के लिये हुए मूत्र में से मूत्र ले भलीभाँति मिलाते हैं, जब श्वेत बादल सी रचना व्यक्त हो गयी तब यन्त्र पर अंकित अक को पढ़ लेते हैं। यही अल्ब्युमिन की मात्रा होती है, जो ग्राम में अंकित है। यह मात्रा प्रत्येक १०० सी० सी० मूत्र की होती है।

रीएजेण्ट (Reagent) भरते हैं। अब इसको

हैरोवर का रीएजेण्ट (Harrower's Reagent)

R/

फास्फो टयुंजस्टीक एसिड	(Pospho Tungstic Acid)	१६ ग्राम
हाइड्रोक्लोरिक प्योर	(Hcl Concentrated)	५ "
आब्सोल्यूट अलकोहल	(Absolute Alcohol)	१०० सी० सी०

शर्करा परीक्षा (Sugar Test)

एक परीक्षा नालिका में फेहलिंग सोलुशन न० १ (Fehling's Solution N 1) तथा फेहलिंग सोलुमन न० २ (Fehling's Solution N. 2) समान मात्रा में ले गरम कर तथा इसमें बूंद बूंद करके मूत्र मिलावे तथा प्रत्येक बूंद पर गरम करते जाय। जब मूत्र में शर्करा उपस्थित होगी तब पीत या रक्त वर्ण का प्रक्षेप उपस्थित हो जायगा। जब मूत्र में शर्करा नहीं होगी तब मूत्र स्वाभाविक वर्ण का रहेगा।

नोटः—क्षारीय तथा अल्ब्युमिन युक्त मूत्र में शर्करा की परीक्षा भलीभाँति नहीं की जा सकती; अतः शर्करा परीक्षा के पूर्व मूत्र में एक या दो बूंद एसिटिक एसिड (Acetic Acid) मिलाकर गरम कर छान लेना चाहिये।

यदि मूत्र में १ प्र० शत शर्करा होगी तब घोल में मूत्र मिलाते ही वर्ण लाल या पीले रंग का हो जायगा। ½ प्र० शत पर कुछ हरे रंग का होता है।

फेहलिंग (Fehling's Solution) निर्माण

नं० १

R/

कापर सल्फेट क्रिस्टल (Crystallised Copper Sulphate) ६९.२७८ ग्राम कुछ जल में घोल कर १ लीटर जल मिला देते हैं।

नं० २

R/

रसिल साल्ट	(Rochelle Salt)	३४६ ग्राम	गरम जल में घुलावें।
गरम जल	(Hot Water)	काफी	
कास्टिक सोडा	(Caustic Soda)	१४२ ग्राम	जल में घुलावें।
जल	(Water)	काफी	

दोनों को मिला कर शीतल करते हैं। शीतल होने पर इतना जल मिलाते है, कि १ लिटर मात्रा हो जाय।

शर्करा की मात्रा परीक्षा की साधारण विधि

एक परीक्षा नलिका में फेहलिग घोल (Fehling's Solution) को ३० बूद की मात्रा मे ले गरम करे। फिर मूत्र को एक नलिका (Pipette) द्वारा बूद बूद करके मिलावे। जब नीला रग लुप्त हो जाय तब मूत्र की बूदों की संख्या का गणना कर ले। अब चार्ट पर अंकित संख्या को देखकर उस अक से एक रेखा अनुप्रस्थ दिशा में ऊपर की ओर खींचकर तोरण (Curve) को मिलावे। इस प्रकार मिलने वाला अक श र्करा के प्रतिशत का निर्देशक होता है। यह १ औंस मूत्र में शर्करा की मात्रा को सख्या में प्रदर्शित करता है।

शर्करामापक यत्र द्वारा मात्रा निर्धारण

इस यन्त्र में ३ पृथक् पृथक् शःशे के यन्त्र होते हैं। नं० १ यन्त्र सबसे बड़ा प्रतिशत के अङ्कों से अङ्कित दो मुख का होता है। एक मुख नोकीला तथा झुका हुआ और दूसरा मुख थोड़ा बड़ा होता है। इस पर एक अंक यू (U) होता है जहाँ तक मूत्र को डाला जाता है तथा दूसरा अक डी, यू (D, U) है जहाँ तक जल भरा जाता है। जल भरने के पश्चात् यन्त्र के बड़े मुख को अगुठे से दबा कई वार हिला मूत्र तथा जल को परस्पर मिला देते हैं। नं० २ के यन्त्र पर जो सब से छोटा होता है, अंक अकित होते हैं। इसके प्रथम अक तक फेहलिग विलयन नं० १ तथा दूसरे अक यफ (F) तक फेहलिग विलयन नं० २ डालते हैं। फिर अक डी (D) तक जल मिला देते हैं; किन्तु यह कोई आवश्यक नहीं है, कि जल मिलाया ही जाय। इनको मिला कर यन्त्र नं० ३ में डाल देते है। अब नं० ३ को स्पिरिट लैम्प (Lamp) पर गरम करते हैं तथा इसमें यन्त्र नं० १ में स्थित मूत्र के एक एक बूद को मिलाते जाते हैं तथा गरम करते और साथ ही साथ हिलाते जाते हैं। जब नं० ३ में स्थित द्रव का रग नीला से पीला या इष्टिका वर्ण का हो गया तथा नोली आभा पूर्ण रूप से

नष्ट हो जाय तब मूत्र डालना बन्द कर दें तथा नं० १ यन्त्र में स्थित मूत्र के धरातल को पढ़ लेवें। यही अंक शर्करा की मात्रा का निर्देशक है।

पित्तलवण की परीक्षा (Test for Bile Salts)

(१) शीतल मूत्र में गन्धक का चूर्ण (Powdered Sulphur) छोड़े। जब गन्धक चूर्ण तली में बैठ जाय तब पित्तलवण को उपस्थिति जानते हैं अन्यथा अनुपस्थिति।

(२) एक पोर्सलेन के (Porcelain) की सफेद तश्तरी में मूत्र के कुछ बूंद को रख नाइट्रिक एसिड के तीव्र घोल के कुछ बूंद को भी मूत्र के पार्श्व में रख परस्पर मिलावे। यदि पित्त लवण उपस्थित होंगे तो नाना प्रकार के रंग जैसे हरा, नीला, लाल तथा पीला आदि दिखलाई देंगे अन्यथा नहीं।

एसीटोन परीक्षा (Acetone Test)

लीगाल की विधि (Legal's Test)—मूत्र में मूत्र परिमाण (मात्रा) के बराबर कास्टिक पोटाश (Caustic Potash) २०% प्र० शत घोल को मिलावे फिर इसी में सोडियम नाइट्रोप्रूसाइड (Sodium Nitro Prusside) के १० में १ (1 in 10) की शक्ति के घोल को मिलाते हैं। इस प्रकार से इस घोल का रंग लाल हो जायगा। अब इसमें एसिटिक एसिड (Acetic Acid) के तीव्र (Strong) घोल को मिलाते हैं। इसके मिलाने से रंग यदि गहरा हो जाय या रंग लुप्त न हो तो एसिटोन की उपस्थिति मानते हैं। रंग के लुप्त होने पर एसीटोन की अनुपस्थिति मानते हैं।

नोट—नाइट्रोप्रूसाइड (Nitroprusside) का घोल सर्वदा ताजा लेना चाहिये।

यूरिया परीक्षा (Urea Test)

स्वस्थावस्था में २० से ३९ ग्राम नित्यप्रति यूरिया (Urea) का त्याग मूत्र द्वारा होता है। किन्तु जब प्रोटीन का सेवन अत्यधिक मात्रा में किया जाता है तब यूरिया की मात्रा में वृद्धि हो जाती है, इसके अतिरिक्त ज्वर, प्रमेह फासफरस (Phosphorus) या संखिया विष में भी वृद्धि हो जाती है। यह वृक्क के कुछ व्याधियों में कम हो जाती है।

परीक्षा—एक काँच पट्टिका पर एक या दो बूंद मूत्र तथा एक बूंद नाइट्रिक एसिड मिला सावधानी से गरम करे। अब यदि मूत्र में यूरिया उपस्थित होगी तो उसके बहुकोणीय कण (Hexagonal crystal) काँच पट्टिका पर स्थिर रह जावेंगे। तथा जलीयांश वाष्प बनकर उड़ जायगा।

मात्रा परीक्षा—

आपेक्षिक घनत्व द्वारा निर्णय—आपेक्षिकघनत्व के अन्तिम दोनों अङ्कों में १० का

भाग देने से जो अंक प्राप्त होता है वही प्रतिशत का द्योतक होता है जैसे यदि घनत्व १०२५ है तो १० का भाग २५ में दीजिये तब २·५ प्र० शत हुआ।

नोट—(१) इस विधि का महत्त्व अब कम हो गया।

(२) शर्करा (Sugar) या श्वेतसार (Albumin) की उपस्थिति में ठीक नहीं होता।

यूरिया मापक यंत्र द्वारा (Ureameter)

यह यन्त्र मूत्र में सोडियम हाइपोब्रोमाइड (Sodium Hypobromide) डालने से यूरिया से जो नाइट्रोजन (Nitrogen) निकलता है उसके परिमाण को बतलाता है। इससे यूरिया (Urea) की मात्रा का ज्ञान होता है। साधारणतया १ ग्राम यूरिया (Urea) से ३७२ सी० सी० नाइट्रोजन (Nitrogen) निकलता है।

यूरिया कसेंस्ट्रेशन परीक्षा (Urea Concentration)

मूत्राशय को पूर्ण रूप से रिक्त कराने के पश्चात् रोगी को १०० सी० सी० जल में १५ ग्राम यूरिया (Urea) घोलकर पिलाते हैं। पान के दूसरे घण्टे के बाद जो मूत्र त्याग होता है उसमें यूरिया (Urea) का त्याग अधिक होता है। इस मूत्र में साधारणतया २·४ प्र० शत यूरिया निकलती है। १ प्र० शत से नीचे निकलने पर मूत्र संस्थान की स्वास्थ्य स्थिति अत्यधिक बुरी होती है। २ प्र० शत का त्याग असन्तोषजनक है।

अणु वीक्षणीय परीक्षा (Microscopical Examination)

१ रक्त के लाल कण की परीक्षा

२ श्वेत कणों की परीक्षा

३. श्लैष्मिक कलायें।

४. ठोस पदार्थ (Casts)

५ शुक्राणु

६. अर्बुदों के टुकड़े

७. जीवाणु

ये वस्तुयें मूत्र में अणुवीक्षणीय यन्त्र द्वारा देखी जाती है।

मूत्र के रासायनिक प्रक्षेप की तालिका

आम्लिक मूत्र	क्षारीय मूत्र
१ यूरिक एसिड (Uric Acid)	१ फास्फेट (Phosphates)
२. यूरेट्स (Urates)	२ केल्शियम कार्बोनेट (Calcium Carbonate)
३ कैल्शियम आक्जलेट (Calcium Oxalate)	३ अमोनियम यूरेट्स (Ammonium Urates)
४. सिस्टीन (Cystine)	
५ ल्युसीन (Lucine) टायरोसीन (Tyrosine)	

रक्त-परीक्षा

(Blood-Test)

विषमज्वरीय पराश्रयी (Malarial Parasites)

फिल्म निर्माण (To Make Films)—सर्वप्रथम स्वच्छ तथा स्निग्धताहीन काँच पट्टिका (Slides) लेना चाहिये। फिर एक पट्टिका के ऊर्ध्व $\frac{1}{3}$ तथा अधः $\frac{2}{3}$ के संगम स्थान पर बायें कर (हाथ) के अनामिकांगुली में से एक विसंक्रमित सूची चूभो रक्त का प्रथम बूंद फेंक द्वितीय बूंद को लेना चाहिये। अंगुली से रक्त बूंद लेते समय अगुली को पूर्ण रूप से स्पिरिट (Spirit) द्वारा विसंक्रमित कर लेना चाहिये तथा रक्त निकालने के पश्चात् भी रक्त के स्थान पर स्पिरिट (Spirit) का फोया रख दबा कर रक्तस्राव को बंद कर देना चाहिये। अब रक्त युक्त पट्टिका (Side) को चिकने टेबुल पर रख उसके ऊपर के शिरे को वाम कर के तर्जनी (Index) तथा अङ्गुष्ठ के बीच पकड़ रखना चाहिये तथा दूसरी काच पट्टिका के एक शिरे को रक्तयुक्त काँच पट्टिका के रक्त बूँद पर इस प्रकार ४५° का कोण बनाते रखे कि रक्त बूद इस दूसरी पट्टिका के शिरे के किनारे पर पूरा पूरा फैल जाय जब रक्त बूद पूर्ण रूप से फैल जाय तब दूसरी पट्टिका को प्रथम पट्टिका पर नीचे की ओर धीरे धीरे इस प्रकार खींचे की रक्त बूद प्रथम पट्टिका के पूरी लम्बाई में फैल जाय। खीचते समय काँच पट्टिकाओं (Slides) पर दवाव नहीं देना चाहिये। अब रक्तबूद को फलाने के पश्चात् प्रथम काँच पट्टिका को वायु में हिलाकर सुखा लेना चाहिये।

रंजन (Staining)

लीसमैन की विधि (Leishman's Stain)—फिल्म को लीसमैन (Leishman's) के रंग से भली भाँति ढक देना चाहिये। एक मिनट के पश्चात् रंग से दुगुना परिमाण में परिस्रुत जल सावधानी के साथ इस रग युक्त फिल्म पर छोड़ना चाहिए। अब जल तथा रग को काच नलिका (Pepette) द्वारा परस्पर मिला देना चाहिए। सात मिनट पश्चात् इस घोल को फेंक देना चाहिए तथा पुनः फिल्म को २ मिनट तक परिस्रुत जल में रख छोड़ना चाहिये। अब इसको जल द्वारा धो कर स्वच्छ शोषक पत्र (Blotting Paper) द्वारा फिल्म को सावधानी से सुखा लेना चाहिये। अब फिल्म रंग गई।

परीक्षा—अब फिल्म को सूक्ष्म दर्शक यन्त्र (Microscope) के नीचे रखकर उस पर एक बूंद सीडरउड आयल (Sedarwood Oil) डाल $\frac{1}{12}$ शक्ति वाले वस्तुयी भाग (Objective) जो आयल इमर्शन (Oil immersion) कहलाता है—

के नीचे रखकर देखते हैं। विषमज्वरोत्पादक जीवाणु लाल रक्त कण में दिखलाई देते हैं। ये काले धब्बे सदृश दृष्टिगोचर होते हैं। इसी शक्ति से देखने पर श्वेत कणों की गणना भली भाँति की जाती है।

लीसमैन स्टेन निर्माण (Leishman's Stain)

मीथेलीन ब्ल्यू (Methylene blue), युसिन (Eosin) और ग्रूबर्स चूर्ण (Grubler's Powder) को ⅕ प्र० श० की शक्ति में शुद्ध मिथिल अल्कोहल (Pure Methyl alcohol) में घुलाकर बनाते हैं।

कालाजार परीक्षा (Kala-azar Test)

शिरा (Vein) में से ५ सी. सी. रक्त निकाल चालक यंत्र (Certri fugal Machine) पर घुमा रक्त सीरम निकाल लेते हैं। इस सीरम में यूरिया स्टेबेमीन (Urea Stibamine) ब्रह्मचारी कम्पनी का मिला कर ½ घंटे तक रखते हैं। रखने के बाद जब श्वेत प्रक्षेप उपस्थित हो जाय तब कालाजार (Kala-azar) की उपस्थिति मानते हैं।

नोट—शिरा से रक्त निकालते समय ध्यान रहे कि शिरा स्थान तथा पिचकारी पूर्ण विसंक्रमित हो। पिचकारी को नारमल सेलाइन से विसंक्रमित करना चाहिये अन्यथा पिचकारी में रक्त स्कन्दन का भय रहता है।

लाल रक्तकणों की गणना

(Enumaration of Red Blood Carpuscles)

विभिन्न अवस्थाओं में तथा पुरुष और स्त्रियों में लाल रक्त कणों की संख्या भिन्न भिन्न होती है। जन्म के समय ५२०००० से ५६०००० प्रति क्यूबिक मिलिमिटर (C mm) होती है। जन्म के पश्चात् प्रथम सप्ताह में इनकी संख्या ४०००००० से ५०००००० प्र० घन मिलिमिटर (Per C. mm) हो जाती है।

युवावस्था में एक पुरुष में लाल रक्त कणों की संख्या साधारणतया ५४२८००० प्रति घन मिलिमिटर (Per C mm.) तथा स्त्रियों में ५०१२००० प्रतिघन मिलिमिटर (Per C. mm.) होती है।

गणनाविधि थाम-जीज हीमोसाइटोमीटर

(Thoma-Zeiss Haemocytometer)

यंत्र नामावली—

१. अंकों से अंकित मिश्रण नलिका (Gratuated mixing pipette)

२ गणना की काँच पट्टिका (Counting Slide)

प्रयोग विधि—रुग्ण व्यक्ति के कर्ण-चुचक (Ear lobe) को ईथर या स्पिरिट

से विसंक्रमित कर शुष्क कर लेना चाहिये। एक साधारण सूची द्वारा कर्ण चुचूक की अधःधारा में एकाएक सूची चुभा (Suden Stab) कर स्वतन्त्रता पूर्वक रक्त निकालना चाहिये न कि चुचूक को निचोड़ कर रक्त निकाले। निचोड़ कर निकालने से तन्तु स्थित लसिका निकल आती है, जिससे रक्त लसिका युक्त हो जाता है। जब रक्त निकलने लगे तब नलिका के नोकिले शिरे को रक्त बूंद पर रखकर रबर वाले भाग को मुह में डाल धीरे धीरे रक्त को चूषण कर ०.५ या १ अङ्क तक खींचते हैं। यदि इन अङ्कों से किंचित मात्र भी रक्त अधिक हो जाय तो उसे फूंक कर निकाल उचित अङ्क तक रखते हैं। अब नलिका के शिरे को स्वच्छ वस्त्र से साफ कर प्रसारित मुख वाले बोतल में रखे हुए विलयन (Diluting fluid) में डाल विलयन को १०१ के अङ्क तक खींचते हैं। खींचने के पश्चात् नलिका के शिरों को अंगुष्ठ तथा अंगुलियों के मध्य दृढता पूर्वक पकड़ करीब १ मिनट तक भलीभाँति हिलाकर रक्त तथा विलयन को परस्पर मिला देते हैं।

यदि रक्त ०.५ अङ्क तक लेकर विलयन से मिलाया जाय तो रक्त की तनुता (Dilution) २०० में १ (1 in 200) होता है, तथा १ अङ्क के रक्त में विलयन मिलाने से तनुता (dilution) १०० में १ (1 in 100) होता है। अधिकतर प्रथम तनुता (dilution) का ही उपयोग होता है।

अब भलीभाँति मिलित घोल के कुछ बूंद को नीचे गिराने के पश्चात् एक बूंद घोल को गणना की काच पट्टिका (Counting Slide) के प्लेट फार्म के मध्य में रखते हैं। अब इस बूंद को आवरण पत्रक (Cover Glass) द्वारा ढक देते हैं। ढकते समय ध्यान रखना चाहिये कि आवरण के नीचे वायु के बुल बुले न रहे या रक्त बूंद ही आवरण के किनारों से बाहर निकले। यदि आवरण पत्रक के नीचे मुद्रिका (Ring) वत रचना दिखलाई देती हो तो इसे २ मिनट तक उसी स्थिति में छोड़ देना चाहिये ताकि कण (Corpuscles) भलीभाँति स्थिर हो जायँ। अब इसे सूक्ष्म दर्शक यन्त्र के नीचे रख प्रथम अल्प शक्ति से तत्पश्चात् तीव्र शक्ति से जिसमें नेत्रीय भाग नं० २ (Eye piece N 2) तथा वस्तुयी भाग (Objective $\frac{1}{6}$ in) $\frac{1}{6}$ इञ्च लगा है, रक्तकणों की गणना करते हैं।

लाल रक्त कणों की गणना करते समय प्लेटफार्म पर स्थित वर्ग के अन्दर के ही रक्त कणों को गिनते हैं। इस प्रकार ४ श्रेणियों में स्थित १६, १६ वर्गों के अन्दर स्थित कणों की ही गणना करते हैं। केवल उन कणों को जो वर्गों को पृथक् करने वाली रेखा के ऊपर तथा वाम पार्श्व की रेखा के बाहर स्थित हैं, नहीं गिनते हैं। सम्भवतया प्रत्येक श्रेणी के वर्गों में संख्या बराबर होती है। मान लिजिये कि ६४ वर्गों में कुल ३८४ रक्त कण हैं तो एक वर्ग में ६ रक्तकण हुये। किन्तु एक वर्ग

का घनफल $\frac{१}{४००} \times \frac{१}{१०} = \frac{१}{४०००}$ घन मीलीमीटर (C. mm) होता है। अतः एक वर्ग में रक्तकण की संख्या ६×४०००=२४००० प्र० घन मीलीमीटर (Per C. mm) हुई या यदि रक्त की तनुता (dilution) २०० में १ है तो शुद्ध रक्त में रक्तकणों की संख्या २४०००×२००=४८००००० प्र० घन मीलीमीटर (Per C. mm) हुई।

कॉच पट्टिका का वर्णन (Counting Slide)

कॉच पट्टिका पर एक प्लेट फार्म (Plateform) होता है जो चारों ओर से नाली (Trench) द्वारा सीमित होता है। इस प्लेटफार्म पर $\frac{१}{४००}$ वर्ग मिलीमीटर (Sq. mm) क्षेत्रफल के वर्ग बने होते हैं। इनको आवृत करने के लिये कॉँच पत्रक (Cover glasses) मिलाते हैं। इस प्लेटफार्म तथा पत्रक के बीच $\frac{१}{१०}$ मीलीमीटर (mm.) गहरा रिक्त स्थान रह जाता है इसी रिक्त स्थान में रक्त बूंद रखते हैं।

तनुकारक विलयन (Diluting fluid)

सोडा सल्फेट	(Sodium Sulphate)	१०४ ग्रेन
एसिटिक एसिड	(Acetic Acid)	१ ड्राम
डिस्टिल्ड वाटर	(Distilled Water)	६ औंस

श्वेत रक्तकणों की गणना
(Enumeration of Leucocytes)

यन्त्र—लाल रक्तकण में प्रयुक्त होने वाले यन्त्र। किन्तु इसकी मिश्रण नलिका कुछ मोटे आकार की होती है जिस पर ०.५ और ११ के अंक अंकित होते हैं। इसके मौखिक भाग पर जिसको मुख में डाल रक्त चूषा जाता है श्वेत रंग की सेलुलाइट की बनी नलिका लगी होती है। यह यन्त्र भी थाम जीज (Thoma Zeiss) के नाम से ही मिलता है।

तनुकारक घोल (Diluting fluid)—

ग्लेसियल एसिटिक एसिड	(Glacial Acetic Acid)	१ सी० सी०
जल	(Water)	१०० सी० सी०
मीथिल ग्रीन या जेंशियन वायलेट का जलीय घोल	(Watery Solution of methylgreen or gentian Violet)	काफी मात्रा

घोल की उपयोगिता—

१. सम्पूर्ण लाल रक्तकणों को घुला देता है।

२ श्वेत रक्तकणों की केन्द्र कणिकाओं को रंग देता है जिससे पहचान में सुगमता होती है।

विधि—लाल रक्तकण वत ही इसमें भी रक्त को नलिका के ०.५ अंक तक खींचते हैं तथा नलिका के शिरे को वस्त्र से साफ कर तनुकारक घोल को ११ अंक तक भली भाँति मिला लेते हैं। अब रक्त की तनुता २० मे १ (1 in 20) हो जाती है। पूर्व की भाँति इसमें भी रक्त के एक बूंद को पट्टिका पर रख आवृत कर सूक्ष्म दर्शक यंत्र के नीचे देखते है। इसमें १६ श्रेणियों के वर्गों में स्थित कणों को गिनते हैं अर्थात् २५६ वर्ग (Squares) को गिनते हैं। इनकी गणना भी लाल रक्त कणवत की जाती है।

एक स्वस्थ युवा व्यक्ति के शरीर में करीब ६००० प्रति मीलीमीटर संख्या में होते हैं।

विष-विज्ञान

(Toxicology)

परिभाषा—द्रव्यों के वे प्राकृतिक अंश (Substance) जो शरीर के लिये हानिकर हों विष कहलाते हैं।

उत्पत्ति—देवता तथा राक्षसगण ने जब समुद्र मंथन किया था; उस समय अन्य रत्नों के साथ साथ विष भी समुद्र से उत्पन्न हुआ था, जिसको ब्रह्मा जी ने स्थावर तथा जगम नामक दोनों सृष्टियों में स्थापित कर दिया है। "स्थावरं जंगमं चैव द्विविधं विषमुच्यते।"

भेद—

१. स्थावर।
२. जंगम।

स्थावर विष के १० अधिष्ठान—

मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीरं सार एव च।
निर्यासो धातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृतः॥

१. जड़ (Roots) २. पत्ता (Leaves) ३. फल (Fruits)
४ पुष्प (Flowers) ५ छाल (Cortex) ६ दूध (Milk)
७. सार (Extract) ८. गोंद (Gums) ९. धातु
१०. कन्द

कन्द विषों की नामावली—

१. कालकूट, २. वत्सनाभ, ३ सर्षप, ४. पालक, ५ कर्दमक, ६. वैराट, ७. मुस्तक, ८ शृंगी, ९ प्रपौण्डरीक, १०, मूलक, ११. हालाहल, १२. महाविष १३. कर्कट।

कन्द विषों के उपद्रव—

१ कालकूट—स्पर्श ज्ञान नाश, कम्प तथा शरीरस्तम्भ होते हैं।

२. वत्सनाभ—मल, मूत्र तथा नेत्र पीत वर्ण के हो जाते हैं और ग्रीवास्तम्भ हो जाता है।

३ सर्षप—आध्मान तथा तालु शोष और शरीर ग्रंथि युक्त हो जाता है।

४. पालक—शब्द क्षीण तथा ग्रीवा पतली हो जाती है।

५. कर्दम—नेत्र पीला तथा अतिसार होते हैं।

६. वैराट—सम्पूर्ण शरीर में वेदना उत्पन्न करता है।

७ मुस्तक—कम्प तथा शरीर में अकड़न उत्पन्न करता है।

८ शृंगी—आध्मान, दाह तथा शरीर शिथिल हो जाते हैं।

९ प्रपौण्डरीक—आध्मान तथा नेत्र रक्त वर्ण के होते हैं।

१० मूलक—वमन, हिक्का, शोथ, स्तब्धता तथा विवर्णता होती है।

११ हलाहल—शरीर कृष्ण वर्ण का होता है तथा श्वास रुक रुक कर आता है।

१२ महाविष—हृदय में ग्रंथि तथा भयानक शूलों का उत्पादक है।

१३ कर्कटक—रोगी उछलता तथा हंस हंस कर ओठ चबाता है।

स्थावर विष के सामान्य कार्य—

१ ज्वर २ दन्त हर्ष ३. हिचकी (हिक्का) ४. गलग्रह
५ मुख से झागोत्पन्न होना।
६. अरुचि ७ श्वास ८. मूर्च्छा

स्थावर विष के वेग—

विष के वेगों को उनकी चिकित्सा के लिये जानना नितान्त आवश्यक है; क्योंकि विभिन्न वेगों में विभिन्न चिकित्सायें होती हैं। विभिन्न वेग में विष का शरीर पर विभिन्न कार्य होता है।

१ प्रथम वेग—

(क) जिह्वा काली तथा कठोर हो जाती है।
(ख) श्वास उथला तथा तीव्र चलता है।
(ग) मूर्च्छा हो जाती है।

२. द्वितीय वेग—

(क) शारीरिक कम्प
(ख) स्वेदाधिक्य (पसीना)
(ग) दाहाधिक्य
(घ) कण्डु।

३. तृतीय वेग—

(क) तालु शुष्क हो जाता है।
(ख) आमाशय में दारुण शूल होता है।
(ग) नेत्र हरे तथा शोथ युक्त हो जाते हैं।

४. चतुर्थ वेग—

शिर भारी होकर झुक जाता है।

५. पंचम वेग—

(क) पक्काशय शूल
(ख) मुख से झागोत्पत्ति
(ग) शरीर का विवर्ण होना
(घ) सन्धि वेदना।

६ षष्ठ वेग—

(क) बुद्धि नाश।
(ख) अतिसार।

७ सप्तम वेग—

(क) कमर, पीठ तथा कन्धे झुक जाते हैं।
(ख) श्वासावरोध हो जाता है।

नोट.—प्रथम ३ वेगों में विष आमाशय में रहता है तथा अन्तिम ४ वेगों में विष पक्काशय में चला जाता है।

स्थावर विषों की सामान्य चिकित्सा—

१. वमन कराना।
२ मधु तथा घृत के साथ विष नाशक औषधियों का व्यवहार।
३. लक्षणों की चिकित्सा करना।

जंगम विष

जंगम विष के अधिष्ठान—

१ दृष्टि (Eye)
२ श्वास (Expiration)
३ दन्त (Teeth)
४ नख (Nails)
५ मूत्र (Urine)
६ मल (Faeces)
७. वीर्य (Semen)
८. आर्तव (Meneses)
९ लार (Sāliva)
१० डंक (Sting)

जंगम विष के सामान्य कार्य—

निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं सम्पाकं लोमहर्षणम् ।
शोथं चैवातिसारं च कुरुते जंगमं विषम् ॥

१. निद्रा	२. तन्द्रा	३. ग्लानि (उदासीनता)
४. दाह	५. पाक	६. रोमाञ्च
७. सूजन	८. अतिसार	

विभिन्न जानवरों के विषों में विभिन्न लक्षण तथा वेग होते है, जिनका वर्णन आगे किया जायगा।

सम्पूर्ण प्रकार के विषों के गुण

रूक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायि च ।
विकाशि विषदश्चैव लध्वपाकि च तन्मतम् ॥

१. रूक्ष	२. उष्ण	३. सूक्ष्म
४ शीघ्रगामी (आशु)	५. व्यवायी	६. विकाशी
७. विषद	८. लघु	९. तीक्ष्ण
१०. अपाकी (जिसका पचन न हो)		

गुणानुसार विष का कार्य—

१. रूक्ष—रूक्ष होने के कारण वायु को कुपित करता है।
२. उष्ण—उष्ण गुण सम्पन्न होने से पित्त तथा रक्त को कुपित करता है।
३. सूक्ष्म—सूक्ष्मता के कारण शरीर के सूक्ष्माति सूक्ष्म अवयवों में प्रविष्ट हो उपद्रवों को करता है।
४. आशु—शीघ्रगामी होने से शरीर में अत्यन्त शीघ्रता के साथ फैल जाता है और शरीर को प्रभावित कर देता है।
५. व्यवायी—व्यवायी होने से शरीर में सर्वप्रथम प्रसार करता है, तत्पश्चात् पाक को प्राप्त हो शारीरिक प्रकृति को स्वानुरूप कर देता है।
६ विकाशी—इस गुण के कारण दोष, धातु तथा मल नाशक होता है।
७ विषद—इससे ये शरीर को शक्तिहीन कर देता है।
८. लघु—लघुत्व गुण के कारण चिकित्सा में कठिनाई होती है तथा यह शीघ्र ही असाध्य हो जाता है।
९ तीक्ष्ण—तीक्ष्णत्व गुण के कारण बुद्धि नाशक, मूर्च्छादायक, तथा शरीर शैथिल्य कारक होता है।

१०. अपार्का—चूंकि यह पाक को नहीं प्राप्त होता अतः बहुत काल तक दुख देता है।

विषों की सामान्य चिकित्सा—

१. दंश स्थान से ऊपर बंधन बांधना।
२. दंश स्थान को तीव्र धार युक्त शस्त्र से चीरना।

३ दबाना।	४ रक्तमोक्षण।	५. अग्निकर्म।
६. परिषेक।	७. अवगाहन।	८ वमन।
९. विरेचन।	१०. अंजन।	११. नस्य।
१२ लेह।	१३ प्रतिविष सेवन	१४ संज्ञास्थापन।

१५. औषधि सेवन।

पाश्चात्यमतानुसार विष की श्रेणियां—

पाश्चात्य शास्त्र में विष के शरीर में उत्पन्न प्रभाव के लक्षणों के आधार पर विषों का वर्गीकरण किया गया है जो अधोलिखित है:—

१ दाहक विष (Corrosive poisons)—तीव्राम्ल तथा क्षार (Strong Acids- and Alkalies).

२. क्षोभक विष (Irritants poisons)

(क) निरीन्द्रिय विष (Inorganic poisons)

(ख) सेन्द्रिय विष (Organic poisons)

(ग) यांत्रिक (Mechanichal)

निरीन्द्रिय विष नामावली—

१. अधातु (Nonmetallic)—फास्फरस (Phosphorus), क्लोरीन (Chlorine), ब्रोमीन (Bromine) तथा आयोडीन (Iodine)

२ धातु विष (metallic)—संखिया (Arsenic), (Antimony) पारद (Mercury), ताम्र (Copper), सीस (Lead), जिंक (Zinc), रजत (Silver)

सेन्द्रिय विष नामावली

१. वानस्पतिक (Vegetable)—एरण्ड बीज (Castor oil Seeds), जैपाल तैल (Croton Oil), मदार (Madar), मुसब्बर (Aloes) आदि।

२. जान्तव (Animal)—तीक्ष्ण विरेचक (Cantharides), सर्प (Snake), दंश (Insects bites) आदि।

यांत्रिक (Mechanical).—हीरक चूर्ण (Diamonds dust), सीसा चूर्ण (Powdered glass), बाल (Hais) आदि।

३. वातल विष (Neurotic Poisons)

१ मस्तिष्क पर प्रभाव डालने वाले—

(क) निद्रालु (Somniferous)—अहिफेन तथा इसके योग (Opium and its alkaloids)

(ख) मादक (Inhebiant)—अलकोहल (Alcohol), ईथर (Ether) क्लोरोफार्म (Chloroform)

(ग) प्रलापक (Delirıant)—धतुरा (Dhatura), वेलाडोना (Belladonna), हायोसाइमस (Hyoscyamus), गाँजा (Cannabis Indica)

२ सौषुम्निक (Spinal)—नक्स वोमिका (Nux Vomica), जेल्शिमीयम (Gelsimium)

३ हार्दिक (Cardiac)—एकोनाइट (Aconite), डिजिटेलिस (Digitalis), तम्बाकू (Tobacco), हाइड्रोसायनिक एसिड (Hydrocyanic Acid)

४. फुफ्फुस को प्रभावित करने वाला (Asphyxiants)—कार्बन डाइ आक्साइड (Carbon di Oxide), कार्बन मानो आक्साइड (Carbon mon oxide), कोलगैस (Coalgass)

५ वाहनाडी मण्डल (Peripheral)—कोनियम (Conium), क्यूरा (Crura) आदि।

विष प्रविष्ट करने की प्रणालियाँ—

१ मुख द्वारा (By the mouth)

२ वायु प्रणाली द्वार (Air passages) सूंघाना।

३ चर्म तथा श्लैष्मिक कलाओं द्वारा शोषित होकर (Skin and Mucous Membrane)

४. त्वचागत सूचीवेध द्वारा (By Hypodermic injection)

५ शिरागत सूचीवेध द्वारा (By Intra Venous ,,)

६ क्षत द्वारा (By Wound)

७. गुदा (Rectum), योनि (Vagina), मूत्रप्रणाली (Urethra), कर्ण (ears) आदि।

शरीर से विष त्याग के साधन—

१. मूत्र (Urine) २ पित्त (Bile) ३. दुग्ध (Milk)
४ लाला (Saliva) ५ स्वेद (Perspiration)

विषमयता का निदान (Diagnosis of Poisoning)

विषमयता का निदान जीवित तथा मृतावस्थाओं में करना आवश्यकीय होता है। अतः यहाँ पर दोनों का पृथक् २ वर्णन किया जाता है।

जीवितावस्था में निदान

लक्षण	विष	व्याधियाँ
१. शूल (Colic)	१. सीसा (Lead), ताम्र (Copper), संखिया (arsenic)	१. आन्त्रावरोध (Intestinal Obstruction) (Volvulus)
२. अवसाद (Collapse)	२. दाहक (Corrosives), संखिया (arsenic), एन्टीमनी (Antimony), वत्सनाभ (Aconite), तम्बाकू (Tobacco) लोबेलिया (Lobelia), एन्टीपायरीन (Antipyrin)	२. रोहिणी (Diphtheria), विसूचिका (Cholera), ज्वर (Fever).
३. मूर्छा (Coma)	३. अहिफेन (Opium), मार्फीन (Morphine), क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate) वेरोनाल (Veronal), ट्राओनाल (Trional), सल्फोनाल (Sulphonal), पैरेल्डीहाइड (Paraldehyde), अल्कोहल (Alcohol), कम्फर (Camphor), क्लोरोफार्म (Chloroform), कार्बोलिक एसिड (Carbolic Acid), एट्रोपीन (Atropine), हायोसीन (Hyoscine), सायनाइड (Cyanides), कार्बन मानोआक्साइड (Corbon manooxide) कार्बन डाइआक्साइड (Corbon dioxide).	३. मूत्रविषता (Uraemia) मेह (diabetes), गर्भाक्षेपक (Eclampsia), अपस्मार (epilepsy), मस्तिष्क आघात (Brain injury), मस्तिष्क रक्तस्राव (Apoplexy) तथा अन्य मस्तिष्क व्याधियां।

लक्षण	विष	व्याधियाँ
४. कनीनक संकोच (Contracted Pupils)	४. अहिफेन, मार्फीन, क्लोरल हाइड्रेट, कार्बोलिक एसिड, पीलोकार्पीन (Pilocarpine), म्युस्केरीन (Muscarine),	४. तृतीय नाडी क्षोभ (Irritation), सावेदनिक नाडी घात- (Paralysis of Sympathetic Nerve), टेब्सडार्सिलिस (Tabes Dorsalis)
५. ऐंठन (Cramps)	५. संखिया, शीश	५ विसूचिका (Cholera), प्रवाहिका (Diarrhoea).
६. आक्षेप (Convulsions)	६ नक्स वोमिका, नक्स वोमिका के योग (Alkaloids), कर्पूर (Camphor), साइनाइड, (Cyanides), सैण्टोनीन (Santonin), मखिया, एण्टीमनी	६ धनुस्तम्भ (Tetanus), योषापस्मार (Hysteria), अपस्मार (Epilepsy), मस्तिष्कावरण शोथ (Meningitis), गर्भाविक्षेपक (Eclampsia), मूत्रविषता (Uraemia) तथा दन्तोद्गम (Dentition).
७. नीलिमा (Cyanosis)	७. एनिलिन (Aniline), एण्टीफेब्रीन (Antifebrine), अहिफेन, नाइट्रोबेंजीन (Nitrobenzene)	७. हृदय कपाटज व्याधियाँ तथा फुफ्फुसीय व्याधियाँ।
८ प्रलाप (Dilirium)	८. धतूरा, बेलाडोना, हायोसाइमस, गाँजा, मद्य, कर्पूर, कोकीन (Co-caine)	८. फुफ्फुस प्रदाह (Pneumonia), राजयक्ष्मा (Phthisis), मस्तिष्कावरण शोथ (Meningitis), ज्वर (Fever), वृक्कशोथ (Nephritis), अपस्मार, उन्माद (Insanity).

लक्षण	विष	व्याधियाँ
९. प्रवाहिका (Diarrhoea)	९ क्षोभक विष, डिजिटेलिस (Digitalis), कालिशकम (Colchicum).	९. अतिसार (Dysentary), विसूचिका (Cholera), आन्त्रिक ज्वर (Typhoid), क्षय
१०. कनीनक प्रसार (Dilated pupil)	१०. बेलाडोना, हायोसायमस, स्ट्रैमोनियम (Stramonium) धतूरा, वत्सनाभ, जेल्शिमियम, अल्कोहल, क्लोरोफार्म, कोकीन, निकोटिन (Nicotine).	१०. तृतीयनाडी घात, सावेदनिक नाडी क्षोभ।
११ शुष्क चर्म (Dry Skin)	११. बेलाडोना, हायोसायमस, धतूरा।	११ ज्वर, फुफ्फुस प्रदाह।
१२. आर्द्र चर्म (Moist Skin)	१२. अहिफेन, वत्सनाभ, एण्टीमनी, तम्बाकू लोबेलिया (Lobilia), मद्य।	१२ तीव्र आमवात (Acute Rheumatism)
१३ घात (Paralysis)	१३. वत्सनाभ (Aconite), जेल्शिमियम फिजोस्टिग्मीन (Physostigmin), संखिया शीश।	१३. मस्तिष्क या सुषुम्ना का आघात, मस्तिष्कगत रक्तस्राव, योषापस्मार।
१४. वमन (Vomiting)	१४. दाहक तथा क्षोभक विष।	१४. आमाशयिक व्रण (Gastric Ulcer), तीव्र आमाशय शोथ (Acute gastritis), विसूचिका, आम्लितया (Acidosis).

मृतावस्था में निदान—

१. शव परीक्षा (Post mortem appearances)

२ रासायनिक परीक्षा (Chemical Examination)

३ जान्तव परीक्षा (Experiments on Animals)

शव परीक्षा बाह्य (External Examination)

१. शव को खोलने पर कुछ विषों की गन्ध निकलती है।

२. शव के शरीर या वस्त्र पर वमित द्रव्य, मल तथा स्वयं विष का धब्बा या निशान मिलता है।

३. चर्म का वर्ण विषानुसार हो जाता है; जैसे फास्फरस से पीला।

४. मुख, नासिका, गुदा तथा योनि में स्वयं विष या उसके चिह्न की उपस्थिति मिलती है।

आभ्यन्तरिक (Internal Examination)—

क्षोभक तथा दाहक विषों का पचन संस्थान पर प्रभावः—

१ रक्ताधिक्य (Hyperaemia)

२. मृदुता (Softening)

३. व्रण (Ulceration)

४ छिद्र (Perforation)

१ रक्ताधिक्य—क्षोभक विष जन्य रक्ताधिक्यता आमाशय के हार्दिक शिखर तथा बृहत्तोरण (Greater curvature) पर बहुधा अधिक होता है। यह रक्ताधिक्यता खण्डों (Patches) में पायी जाती है। व्याधिजन्य रक्ताधिक्यता आमाशय के सम्पूर्ण भागों में समभाव से होती है।

२ मृदुता—दाहक विषों के कारण मुख, गला (Throat) अन्न प्रणाली (Oesophagus) तथा आमाशय के हार्दिक शिखर (Cadiac end) और बृहत्तोरण के श्लैष्मिक कलायें मृदु होकर टूट जाती हैं। यह मृदुता प्रदाह क्षेत्र (Inflamed area) से घिरा होता है। व्याधियों में केवल आमाशय की ही सम्पूर्ण पर्त मृदु होती है, किन्तु टूटती नहीं, विशेषतया यह मृदुता हार्दिक शिखर पर ही होती है।

३ व्रणीभवन (Ulceration):—आमाशय के बृहत्तोरण पर ही दाहक तथा क्षोभक विषजन्य व्रण बनते हैं तथा पक्वाशय और क्षुद्रांत्र लालवर्ण के हो जाते हैं। आमाशयिक व्रण जो अन्य किसी कारण से होता है, वह लघुतोरण (Lesser Curvature) पर ही स्थित होता है, जिसका किनारा तीक्ष्ण तथा नीचे को धंसा होता है।

४ छिद्रनिर्माण (Perforation)—विष मे कम सम्भावना होती है। जब कभी होता भी है, तो छिद्र बड़ा तथा अनियमित किनारे का होता है।

रासायनिक परीक्षा—रासायनिक परीक्षा द्वारा भी विषों का पूर्ण ज्ञान नहीं होता। बंगाल प्रान्त के रासायनिक परीक्षक का कहना है, कि विष द्वारा हुई मृत्यु में भी ६०.२७ प्रतिशत व्यक्तियों में ही रासायनिक परीक्षा द्वारा विष का ज्ञान हो पाता है। अतः पूर्ण रूप से रासायनिक परीक्षा पर निर्भर न रहकर लक्षणों तथा अन्य उपायों का विष निर्णय में आश्रय लेना अत्यावश्यक होता है। प्रत्येक

चिकित्सक रासायनिक परीक्षा नहीं कर सकता अतः विष के सन्देहात्मक व्यक्तियों के आशयों को रासायनिक परीक्षक के पास ही परीक्षा करने के लिये भेज देना उचित होता है।

जान्तव परीक्षा—सन्दिग्ध विष भोज्य पदार्थ वा विष को जानवरों को पिलाते हैं तथा उनसे होने वाले लक्षणों और परिवर्तनों को देखकर विष का निर्णय करते है, किन्तु यह विधि भी अपूर्ण है, क्योंकि कुछ पशु ऐसे होते हैं जिनको विषसात्म्य होता है। कुछ जन्तु ऐसे होते हैं कि जिनमें विना विष के भी विष सदृश लक्षण व्यक्त होने लगता है। कुत्ते और बिल्लियों पर विष का प्रभाव मनुष्यवत् ही होता है। अतः इन्हीं पर प्रयोग कर विष का निर्णय करते हैं।

सामान्यचिकित्सा—

१ अशोषित विष का शरीर से त्याग कराना।

२. प्रतिविष का व्यवहार (Antidotes)

३. लक्षणों की चिकित्सा।

अशोषित विष का शरीर से त्याग विधि—

१. दंश जन्य विष में दंश स्थान से ऊपर बंधन बाँध दंशस्थान को चीर रक्त मोक्षण करना चाहिये। अथवा उस स्थान को तप्त लौह से दग्ध कर देना चाहिये।

२. यदि विष वायु प्रणाली द्वारा सुंघाकर प्रविष्ट किया गया हो तो निम्नांकित मिश्रण को सुंघाना चाहिये। सुंघाने की विधि क्लोरोफार्म प्रवेश करने की भाँति होनी चाहिये।

प्राणवायु	(Oxigen)	९५ प्र० श०
कार्बन डाई आक्साइड	(Carbon di Oxide)	५% प्र० श०

यह मिश्रण श्वास केन्द्र को तीव्रता के साथ उत्तेजित करता है।

३ अगर विष खिलाया गया हो तो उसे आमाशय प्रक्षालन, वमन, विरेचन आदि विधियों द्वारा बाहर निकाल दें।

आमाशय प्रक्षालन—एक ½ इंच व्यास की मोटी तथा ५ फीट लम्बी रबर (Rubber) नलिका लेते हैं, जिसके एक शिरे पर शीशे की फनेल (Funnel) लगी होती है। नलिका के दूसरे शिरे से २० इंच के दूरी पर एक चिह्न लगा देना चाहिये। नलिका को गरम कर उस पर मीठा तेल स्निग्ध करने के लिये लगा देना चाहिये। इस स्निग्ध नलिका के स्वतन्त्र शिरे को ग्रसनिका (Pharynx) में प्रविष्ट कर आमाशय तक ले जाते हैं। ग्रसनिका में प्रविष्ट करते समय जिह्वा के अन्तिम शिरे को अंगुलियों से दबा देते है। जब नलिका पर अंकित चिह्न ग्रसनिका तक पहुँच जाता है तब समझ जाते हैं, कि नलिका आमाशय तक पहुँच गई। अब फनेल (Funnel) को रोगी के शिर से ऊँचा कर एक या दो पाइण्ट (Pint)

गरम जल या पोटाश परमाग्नेट (Potash Permangnate) का घोल फनेल द्वारा आमाशय में प्रविष्ट करें। जब सम्पूर्ण तरल आमाशय में पहुँच जाय तथा फनेल रिक्त हो जाय तब फनेल के नीचे की नलिका को अँगुलियों के बीच दबा फनेल को आमाशय के धरातल से नीचे कर नलिका को छोड़ दें। नलिका को छोड़ते ही साइफन (Syphon) की विधि द्वारा आमाशय के अन्दर की वस्तुयें नलिका में होकर बाहर निकल आएगी। इस क्रिया को कई बार करना चाहिये। जब केवल प्रविष्ट किया हुआ तरल मात्र ही निकलने लगे तब प्रक्षालन बंद कर देना चाहिये।

जब भोज्य पदार्थ तथा विष के बड़े बड़े टुकड़े आमाशय में रहे जाय तथा आमाशय प्रक्षालन के पूर्व वामक द्रव्यों का व्यवहार करें अन्यथा उन टुकड़ों से नलिका के द्वार के बंद होने का भय रहेगा।

वामक द्रव्य—

१. अत्यधिक मात्रा में गरम जल पिलाना।
२. १० छटांक पानी में १ चम्मच सर्षप चूर्ण या २ चम्मच साधारण नमक मिला कर पिलाना।
३ ½ ड्राम जिंक सल्फेट (Zinc Sulphate) को ½ छटाँक गरम जल में घोल १५, १५ मिनट पर पिलाना।
४. अमोनियम कार्बोनेट (Ammonium Corbonate) की १२ से ३० ग्रेन की मात्रा को जल में घुलाकर पिलाना।
५ इपीकाक चूर्ण (Ipecac Powder) २० से ३० ग्रेन की मात्रा में देना।
६. एपोमार्फीन हाइड्रोक्लोराइड (Apomorphine Hydrochloride) $\frac{1}{10}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत (Hypodermically) प्रविष्ट करने से ३,४ मिनट के अंदर वमन प्रारम्भ हो जाता है। यह अत्यधिक क्षीणता उत्पन्न कर देता है। अतः इसका व्यवहार सावधानी के साथ करना चाहिये।

प्रतिविष- (Antidotes)—इसका वर्णन विभिन्न विषों के साथ सविस्तार किया जायगा।

लक्षणों की चिकित्सा—

१. तीव्र आमाशयिक वेदना को शान्त करने के लिये मार्फीन को ¼ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत प्रविष्ट करे।
२. स्तब्धता (Shock) तथा अवसाद (Collapse) को दूर करने के लिये शरीर को गरम जल के बोतलों से गरम रखें तथा स्ट्रिक्नीन (Strychnine), डिजिटेलिस (Digitalis), सल्फ्यूरिक ईथर (Sulphuric Ether) या कैफीन (Caffein) को त्वचा में प्रविष्ट करें। ये उत्तेजक होते हैं।
३. वमनाधिक्य या अतिसाराधिक्य में सोडियम क्लोराइड (Sodium Chloride)

को ४० ग्रेन की मात्रा में १० छटाँक जल में घोल थोड़ा ग्लुकोज (Glucose) डाल बारम्बार पीने को देवें। जब तरल आमाशय में स्थिर नहीं रह पावे तब गुदा मार्ग से या शिरामार्ग से समवललवणोदक (Normal Saline) को प्रविष्ट करें। ये विष के त्याग में सहायक होते हैं।

४. श्वासावरोध में एट्रोपीन (Atropine) या स्ट्रिक्नीन (Strychnine) त्वचागत् प्रविष्ट करें तथा साथ ही कृत्रिम श्वास कर्म करते रहे और आक्सीजन तथा कार्बन डाइ आक्साइड एकत्र सुघाते रहे।

५. मूर्च्छा (Coma) में स्ट्रिक्नीन $\frac{1}{30}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत तथा कोरामीन (Coramine) २५% प्र० श० घोल को ५ से १५ सी० सी० की मात्रा में शिरा; मांसगत प्रविष्ट करें।

६. आक्षेप (Convulsion) में क्लोरोफार्म वा बार्बिच्युरिक एसिड (Barbituric Acid) के श्रेणी के औषधियों को प्रविष्ट करें।

दाहक विष (Corrosive Poisons)

खनिजाम्ल (Mineral Acids)

खनिजाम्लों का प्रभाव केवल स्थानिक ही होता है। जिस तंतु के सम्पर्क में ये अम्ल आते हैं उसको नष्ट कर देते हैं। इनके विषैले लक्षण निम्न लिखित होते हैं—

सामान्य लक्षण (General Symptoms)—

१. पीने पर मुख, गला, अन्न प्रणाली तथा आमाशय में तीव्र दाह होता है।
२. तीव्र कष्टदायक वेदना होती है।
३. भूरा, काला रक्त तथा श्लेष्मिक कला से पूर्ण वमन होता है।
४ वमित द्रव्यों की प्रतिक्रिया तीव्र आम्लिक होती है; जिनका दाग सम्पर्क में आने वाले वस्त्र पर पड़ जाता है।
५. अत्यधिक मात्रा में पान करने पर आमाशयिक कलायें दग्ध हो जाती हैं, जिससे वमनादिक नहीं होता।
६. तीव्र प्यास लगती है।
७. निगलने में तीव्र वेदना तथा कठिनाई होती है।
८. निरन्तर लालास्राव होता है, जिससे ओष्ठ तथा मुख कोण पर छोटी छोटी फुंसियाँ पाई जाती हैं।
९. शब्द विकृत (मोटा) हो जाता है तथा बोलने में कष्ट होता है।
१०. श्वास में कठिनाई होती है।
११. कोष्ठबद्धता हो जाती है।
१२. मूत्राघात हो जाता है। मूत्र त्याग में कष्ट होता है।

१३ बहुधा कनिनक (Pupil) प्रसारित हो जाती है।
१४ नेत्र विस्फारित तथा धंसा हुआ होता है।
१५. चर्म शीतल तथा स्वेद युक्त होता है।
१६ नाड़ी मंद तथा क्षीण होती है।
१७ मृत्यु २४ घण्टे के अंदर हो जाती है।
यदि २४ घण्टे के अंदर मृत्यु नहीं हुई तो प्रतिक्रियायें उत्पन्न हो जाती हैं।

प्रतिक्रियायें (Reaction)—

१. ताप उच्च हो जाता है।
२ नाडी भरी हुई चलने लगती है।
३. मृदु तंतु (Slough) पृथक होने लगते हैं तथा रोहण प्रारम्भ हो जाता है।
४. विषमयता से सप्ताहान्त में मृत्यु हो जाती है या क्षीणता तथा दुष्पोषण से महीनों वा वर्षों बाद मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा (Treatments)—

१ दस छटाँक जल या दुग्ध में ४ विस्मच कैल्शियम (Calcium), मैग्नेशियम आक्साइड (Magnesium Oxide) या कैल्शाइण्ड मैग्नेशियम (Calcined Magnesium) मिलाकर पिलाना।
२. तैल साबुन घोल (Soap Solution), सुधा जल (Limewater), कोयला जल में मिला कर पिलाना। इन्हें विषपान के तुरन्त बाद पिलाने से विष शोषण नहीं होता है।
३. बार्ली वाटर (Barley water), अलसी चाय (Linseed Tea) पिलाना चाहिये।
४ तृषा शान्ति के लिये बर्फ चुसाना चाहिये।
५ वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) को त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।
६ पोषक बस्ति (enema) को त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।
७ फफोलों की चिकित्सा दग्धवत करनी चाहिये।
८ श्वासकष्ट होने पर श्वासनलिका छेदन (Tracheotomy) करना चाहिये।

चेतावनी—

१ आमाशय प्रक्षालन तथा वामक द्रव्य प्रवेश सर्वदा निषिद्ध है।
२ अल्कलाइन कार्बोनेट या बाई कार्बोनेट (Alkaline Carbonate या Bicarbonates) सर्वदा निषिद्ध है। ये कष्ट में वृद्धि करते हैं।

नोटः—विशिष्ट लक्षण तथा चिकित्सा का वर्णन विभिन्न विषों के साथ किया जायगा। उपरोक्त सामान्य लक्षण सम्पूर्ण दाहक विषों में पाये जायेंगे।

गंधकाम्ल (Sulphuric Acid)

पर्याय—विट्रियोल तैल (Oil of Vitriol) H_2SO_4

गुणधर्म—शुद्धअम्ल रंगहीन, भारी, तैलवत् तरल, वायु के सम्पर्क में आने पर धूम्र नहीं छोड़ता। जल के सम्पर्क में आने पर इसमें गरमी निकलती है। यह चर्म वस्त्र तथा सेन्द्रिय वस्तुओं को दग्ध कर देता है। इसमें जब अन्य वस्तुएं और मिला दी जाती है तब इसके वर्ण में परिवर्तन हो जाता है।

मारक मात्रा (Fatal Dose)—१ ड्राम।

मारक काल (Fatal period)—१८ से २४ घण्टे तक।

इस मात्रा तथा काल से अम्ल की तीव्रता तथा मात्रा पर भी मृत्यु निर्भर करती है। कुछ लोग मारक मात्रा से अधिक मात्रा सेवन करने पर भी बच जाया करते हैं तथा कुछ लोग शीघ्र तथा कुछ लोग वर्णित काल के पश्चात् वर्षों मे मृत्यु को प्राप्त होते हैं। अतः यहाँ मात्रा तथा काल का औसत बतलाया गया है।

विशिष्ट लक्षण (Special Symptoms)—

१. जिह्वा सूज कर भूरे रंग की हो जाती है। तीव्राम्ल के व्यवहृत होने पर दग्ध हो स्वरूपहीन हो जाती है।
२ दंत बिलकुल श्वेत वर्ण के हो जाते हैं इन पर का आवरण (Polish) नष्ट हो जाता है।
३ ओष्ठ भूरे वा कृष्णवर्ण के सूजन तथा फफोले युक्त हो जाते हैं।
४ दूसरे वा तीसरे दिन लालास्रावाधिक्य हो जाता है।
५ सलफेट आफ इण्डिगो (Sulphate of Indigo) का व्यवहार करने से मुख, वमितद्रव्य तथा मूत्र नीले वर्ण के हो जाते हैं।
६ शरीर के बाह्य पृष्ठ के सम्पर्क में आने पर यह पृष्ठ को दग्ध कर देता है।

चिकित्सा—पहले बतलाई जा चुकी है।

शोरकाम्ल (Nitric Acid)

पर्याय—एक्वा फोर्टिस (Aqua Fortis), रेडस्पिरिट आफ नाइट्र (Red spirit of Nitre), HNO_3

गुणधर्म—शुद्ध शोरकाम्ल स्वच्छ, रंगहीन तरल होता है। वायु के सम्पर्क में आने पर इससे रंगहीन धूम्र निकलता है। यह विशिष्ट तथा श्वास रोधक गंध युक्त (Choaking odour) होता है। यह तीव्र दाहक होता है, जो स्वर्ण तथा प्लैटिनम (Platinum) को छोड़ सभी धातुओं को गला देता है। बाजार में यह पीले या गम्भीर लाल रंग का मिलता है; क्योंकि इसमें अन्य वस्तुयें भी मिश्रित कर दी जाती है।

मारक मात्रा—१ ड्राम से २ ड्राम।

मारक काल—१२ से १४ घंटे।

विशिष्ट लक्षण—

१. ओष्ठ, जिह्वा तथा मुख की श्लैष्मिक कला मृदु हो जाती है; यह अंग प्रारम्भ में श्वेत रंग के होते हैं, किन्तु थोड़े समय के पश्चात् तीव्र पीले रंग के हो जाते हैं।

२. दन्त भी पीले हो जाते हैं।

३. दन्तावरण नष्ट हो जाता है।

४ सम्पर्क में आने वाले वस्त्र तथा चर्म पीले रंग के हो जाते हैं।

५. वमित द्रव्य में निकलनेवाला रक्त पीताभ रंग का हो जाता है।

६ उदर प्रसारित तथा स्पर्शासहत्व गुण युक्त हो जाता है।

७. हनुस्तम्भ (Lock-jaw) हो जाता है।

८. संज्ञानाश हो जाती है।

९ कास तथा श्वास कष्ट होता है।

१०. श्वासावरोध या फुफ्फुस प्रदाह से मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा—पूर्व वर्णित।

लवणाम्ल (Hydrochloric Acid)

पर्याय—स्पिरिट आफ साल्ट (Spirit of Salt), म्युरियटिक एसिड (Muriatic Acid), हाईड्रोक्लोरिक एसिड (Hcl)

गुणधर्म—शुद्धअम्ल तीव्र क्षोभक गन्धयुक्त, रंगहीन गैस होता है। बाजार में जो लवणाम्ल मिलता है वह जल में घुला कर बनाया जाता है। जिसमें ३५% प्र० श० से अधिक हाइड्रोक्लोरिक एसिड (Hydrochloric Acid) नहीं मिला होता। जल में घुलाने पर यह पीले रंग का हो जाता है। गर्म स्थान में रखने से इससे तीव्र धूम्र निकलता है।

मारक मात्रा—तीव्र घोल में व्यवहृत करने पर १ से ४ ड्राम की मात्रा से मृत्यु हो जाती है।

मारक काल—१८ से ३० घण्टा।

विशिष्ट लक्षण

१. उपरोक्त दोनों अम्लों से यह सौम्य होता है।

२. लालास्रावाधिक्य। ३ आक्षेप। ४ प्रलाप। ५. शाखाओं का घात।

लवणाम्ल के धूम्र का प्रभाव

इस अम्ल के धूम्र के सम्पर्क मे जो व्यक्ति आता है उसमें निम्न लक्षण व्यक्त होते हैं:—

१. नाशा शोथ। २ नेत्राभिष्यन्द (Conjunctivitis)
३ असनिका शोथ (Pharyngitis) ४ कास।
५ हृल्लास। ६ वमन।
७ हृदयाधरिक वेदना। ८. दन्तवेष्ट शोथ। ९ दन्त शैथिल्य।

चिकित्सा—पूर्ववत्

हाइड्रोफ्ल्योरिक एसिड (Hydro fluoric Acid) HF

गुण धर्म—यह रंग हीन गैस (Gas) के रूप में होता है जो जल में घुलाने पर झाग छोड़ता है। यह गटापार्चा (Gutta-percha) की बोतल में रखा जाता है।

मारक मात्रा—इसके घोल की मारक मात्रा करीब ½ औंस है।

मारक काल—½ से २ घण्टे तक।

विशिष्ट लक्षण

१ गैस के सूंघने पर वर्त्म मण्डल, नाशिका, दन्तवेष्ट में शोथ तथा व्रण हो जाता है।

२. स्वरयन्त्र प्रदाह (Laryngitis) तथा श्वास नलिका प्रदाह के कारण तीव्र कास आती है।

३ तीव्र वमन होता है। ४ अवसाद (Collapse) होता है।

अम्ल के पीने पर उत्पन्न होने वाले लक्षण—

१ वमन। २ उदर में तीव्र वेदना। ३ प्रवाहिका।
४ मांस पेशियों में ऐंठन। ५. शीखाओं की तीव्र अकड़न। ६ नीलिमा(Cyanosis)
७. कनीनक प्रसार। ८ अवसाद। ९. मृत्यु।

१० शरीर के बाह्य भाग के सम्पर्क में आने पर उस भाग को दग्ध कर देता है जिससे भरने में कठिनाई होती है।

चिकित्सा—

१. हाइड्रोफ्ल्योरिकाम्ल के धूम्र के विष में अमोनिया (Ammonia) के वाष्प को देते है यह अम्ल के विष को नष्ट करता है।

२ क्षार (Alklies) का व्यवहार करते हैं।

३. दुग्ध पान कराना। ४ एरण्ड तैल विरेचनार्थ पिलाना।

५. आमाशय प्रक्षालन करना। इसके लिये सुधा जल (Lime Water) व्यवहृत करते हैं।

६. कैल्शियम (Calcium) को शिरागत प्रविष्ट करते हैं।

७. दान्तों को स्वच्छ रखते हैं।

सेन्द्रिय-अम्ल (Organic Acid)
शर्कराम्ल (Acid of Sugar)

पर्याय—आक्जेलिक एसिड (Oxalic Acid), $C_2 H_2 O_4$.

शर्कराम्ल, नाट्रिक एसिड (Nitric Acid) द्वारा बनाया जाता है।

गुणधर्म—यह रंगहीन, पारदर्शक तथा त्रिकोणाकार कण के रूप में होता है। इसका क्रिस्टल (कण) मैग्नेसियम (Magnesium) तथा जिंक (Zinc Sulphate) के क्रिस्टल (कण) से मिलता जुलता है। यह दश गुने शीतल जल में घुलन शील होता है।

मारक मात्रा—४ ड्राम। मारक काल—१० मिनट से २ घण्टे।

लक्षण (Symptoms)

१. क्षोभक तथा दाहक होता है।
२ व्रण में लगाने से विषैला प्रभाव खिलाता है।
३. तृषा। ४ मुख में वेदना तथा दाहोत्पादक है।
५. गला, आमाशय तथा आंतो में भी वेदना तथा दाह उत्पन्न करता है।
६ शीघ्र ही वमन प्रारम्भ हो जाता है। ७ अवसाद होने लगता है।
८ अवसाद के पश्चात् मूर्छा हो जाती है। ९ ऐंठन, आक्षेप।
१०. हनुस्तम्भ (Lock jaw) ११. प्रलाप (Delirium)
१२. मृत्यु (Death)

चिकित्सा—

१. खरिया मिट्टी (Chalk) या दीवाल की सफेदी को अल्प मात्रा में ले जल या दुग्ध में घोल कर पिलावे।
२. सैकेरेटेड सोलुशन आफ लाइम (Saccharated Solution of lime) पिलाना। यह सर्वोत्तम चिकित्सा है।
३. वामक औषधि देना। ४ एरण्ड तैल पिला दस्त कराना।
५ ग्लुकोज का हाइपरटानिक सोलुशन (Hypertonic Solution of glucose) देना।

निषेध—

१. अत्यधिक जल।
२ क्षार तथा उनके कार्बोनेट (Alkaloid and their Carbonates)
३ आमाशय प्रक्षालन।

कार्बोलिक एसिड (Carbolic Acid)

पर्याय—फेनल (Phenol), फेनिल अल्कोहल (Phenyl Alcohol) या फेनिक एसिड (Phenic Acid)

गुण धर्म—शुद्ध कार्बोलिक एसिड रंग हीन, त्रिकोणाकार, नोकीला कणमय (Crystal) होता है। यह प्रकाश के संसर्ग में आने पर लाल (Pink) रंग का हो जाता है। यह आम्लिक प्रतिक्रिया हीन होता है। यह गरम जल, अल्कोहल (Alcohol 90%, ईथर, क्लोरोफार्म, ग्लिसरीन तथा तैलों मे पूर्ण रूप से घुल जाता है। इसका गन्ध विशिष्ट प्रकार का होता है। स्वाद मीठा तथा चोभक होता है।

मारक मात्रा—१ से ४ ड्राम।

मारक काल—२ से ४ घण्टों के अन्दर।

लक्षण—

१ तीव्र घोल को पीते ही मुख, गला तथा आमाशय में तीव्र दाह उत्पन्न होता है।

२. ओष्ठ तथा मुख की श्लैष्मिक कलायें कठिन और श्वेत हो जाती है।

३. भ्रम। ४ सज्ञानाश।

५ मूर्च्छा (Coma)

६ मुखमण्डल पीताभ या नीला हो जाता है।

७. कनीनक संकुचित होती है।

८. ताप स्वाभाविक से भी कम हो जाता है।

९. चर्म शीतल तथा चिपकने वाले स्वेद युक्त होता है।

१०. नाड़ी क्षुद्र तथा पतली।

११ श्वास प्रश्वास मन्द तथा कष्ट पूर्ण होता है।

१२. श्वास में एसिड की तीव्र गन्ध निकलती है।

१३. आक्षेप। १४ हनुस्तम्भ।

१५ अल्प मूत्र या मूत्राघात। यदि मूत्र त्यक्त होता है तो उसका दाग वस्त्र पर पड़ता है।

१६. श्वास तथा हृदय केन्द्र के घात (Paralysis) से मृत्यु।

चिकित्सा—

१ सावधानी के साथ सीरप कैल्शियम (Syrup Calcis) या सोडियम सल्फेट (Sodium Sulphate) युक्त जल से आमाशय प्रक्षालन करना चाहिये। जब तक एसिड का गन्ध लुप्त न हो तब तक प्रक्षालन करे।

२ सोडियम सल्फेट के तीव्र घोल का व्यवहार करना। यह विष नाशक है।

३ आमाशय प्रक्षालन में लिक्विड पैराफीन (Liquid Paraffin) का व्यवहार करना उत्तम है।

४. अल्कोहल (Alcohol) के ९०% घोल का व्यवहार करना चाहिये। यह अम्ल के क्रिया को मन्द करता है तथा तन्तु नाश को बन्द करता है।

५. अण्डे की सफेदी और दुग्ध पिलाना चाहिये।
६. एट्रोपीन सल्फ (Atropine Sulph) को त्वचा गत प्रविष्ट करना चाहिये।
७ कैफीन (Caffeine) स्ट्रोफैंथीन (Strophanthin) तथा स्ट्रीक्नीन (Strychnine) आदि उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार एट्रोपीन के बाद करना चाहिये।
८ विष के प्रभाव को कम करने के लिये नार्मल सेलाइन (Normal Saline) को शिरागत प्रविष्ट करे।
९. आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना चाहिये।
१०. आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास क्रिया करनी चहिये।
११ अम्ल द्वारा दग्ध चर्म को अल्कोहल (Alcohol) या साबुन से धोकर उस पर एरण्ड तैल या लिक्विड पैराफीन (Liquid Paraffin) लगाना चाहिये।

क्रियोजोट (Creosote)

गुण धर्म—यह जब ताजा रहता है तब यह रंग हीन या पीले रंग का होता है। प्रकाश के सम्पर्क में भूरे रंग का हो जाता है। यह तैल सदृश तरल में मिलता है। इसका व्यवहार दन्तशूल तथा क्षय में होता है। अल्कोहल, क्लोरोफार्म, ईथर तथा तैलों में घुलनशील होता है।

मारक मात्रा—३६ बूंद से २ ड्राम

मारक काल—१८ से ३६ घण्टे।

लक्षण—

१ ओष्ठ, जिह्वा तथा मुख की श्लैष्मिक कलायें दग्ध हो जाती हैं।
२. आमाशय में दाहयुक्त वेदना होती है।
३. हृल्लास। ४. वमन। ५. प्रवाहिका।
६ कनीनक संकुचित हो जाती है। ७ मूर्च्छा।
८. घरघराहट के साथ श्वास चलती है।
९. मूत्र में अम्ल का गन्ध आना। १० मृत्यु।

चिकित्सा—कार्बोलिक एसिड सदृश।

थाइमाल (Thymol)

गुण धर्म—रंगहीन कणमय होता है। इसका गन्ध तथा स्वाद विशिष्ट प्रकार का होता है। यह अल्कोहल, क्लोरोफार्म, ईथर तथा दाहक क्षार में घुलनशील है। यह तीव्र जीवाणु नाशक है; किन्तु इसका विशेष व्यवहार कृमि नाशन के लिये किया जाता है।

मारक मात्रा—४० ग्रेन से २ ड्राम।

मारक काल—१ से ४ दिन।

लक्षण—

१. आमाशय में दाह। २. हृल्लास। ३ वमन।
४ अतिसार। ५. कर्णनाद। ६ शिरःशूल।
७. भ्रम। ८ अवसाद। ९ मृत्यु।
१० गर्भवतियों में गर्भपात कराता है।
११. मूत्र हरे रंग का व्यक्त होता है।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २ लाक्षणिक चिकित्सा।

निषेध—

१. मद्य २ तैल। ३ चर्बी

पिक्रिक एसिड (Picric Acid)

पर्याय—कार्बेजोटिक एसिड (Carbazotic Acid); ट्रिनिट्रोफेनाल (Trinitrophenol), ट्रिनिट्रोफेन (Trinitrophen), $C_6H_2(NO_2)_3OH$.

गुणधर्म—जब नाइट्रिक तथा सल्फुरिक एसिडों का कार्य कार्बोलिक एसिड पर होता है, तब पिक्रिक एसिड (Picric Acid) बनता है। यह पीले रंग का त्रिकोणाकार कण रूप में पाया जाता है। गरमी से यह आवाज करता है। यह गन्धहीन तथा खट्टे स्वाद का होता है। यह स्थानिक सड़न उत्पन्न करता है।

मारक मात्रा—१ ड्राम।

मारक काल—४ दिन के अन्दर।

लक्षण—

१ उदर में वेदना। २ पीत रंग का वमन।
३ प्रवाहिका जिसमें मल पीले रंग का निकलता है।
४. वर्त्म (Conjunctiva) तथा चर्म तीव्र पीले वर्ण का हो जाता है।
५. कनीनक प्रसारित हो जाती है।
६. कण्डू और पामा (Eczema) उत्पन्न हो जाता है।
७. मूत्र लाल वर्ण का हो जाता है।
८ मूत्राघात उत्पन्न हो जाता है। ९ नाड़ी द्रुत हो जाती है।
१०. मांस पेशियों में एंठन होती है। ११. आक्षेप होता है।
१२. उदासीनता हो जाती है। १३ प्रलाप होता है।
१४. मूकता हो जाती है।
१५. अन्त में अवसाद के लक्षण व्यक्त हो जाते हैं।

चिकित्सा—
१. आमाशय प्रक्षालन।
२ मूत्रल तथा विरेचक ओषधियों का प्रयोग।
३ वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) देना चाहिये।
४ कच्चा अण्डा और दूध विष नाशक है।
५ डेक्स्ट्रोज (Dextrose) को बड़ी मात्रा में व्यवहृत करना।

सैलिसिलिक एसिड (Salicylic Acid)

गुणधर्म—यह गन्धहीन तथा ठोस कण के रूप में होता है। यह मीठे स्वाद का होता है। यह गरम जल, अल्कोहल, ईथर और क्लोरोफार्म में शीघ्र ही घुल जाता है।

जब सैलिसिलिक एसिड सोडियम कार्बोनेट (Sodium Carbonate) के साथ मिलता है तब सोडियम सैलिसिलेट (Sodium Salicylate) तैयार होता है। यह गन्धहीन होता है। यह श्वेत रंग का छिलका (Scale) या चमकते हुए लम्बे कण के रूप में मिलता है। इसका स्वाद मीठा तथा अरुचिकर होता है। यह जल, अल्कोहल और ग्लीसरीन में घुलन शील है।

मारक मात्रा—सैलिसिलिक एसिड १ औंस
सोडियम सैलिसिलेट ३४ ग्राम

मारक काल—४ दिन।

लक्षण—
१. गले तथा आमाशय में दाह युक्त वेदना।
२. निगलने में कष्ट। ३ तृषा। ४. हृल्लास। ५ वमन।
६. अतिसार। ७ शिरःशूल। ८ कर्णनाद। ९ भ्रम।
१० मुखमण्डल का फूलना। ११ स्वेदाधिक्य। १२. आर्द्र तथा शीतल चर्म।
१३. मंद, क्षीण तथा अनियमित नाड़ी। १४ घबराहट। १५ प्रलाप।
१६ सञ्ज्ञानाश। १७ मूर्च्छा १८. नाशा रक्त स्राव (Epistaxis)
१९. दंतवेष्ट से रक्तस्राव।
२०. कृष्णमण्डल (Retina) में रक्तस्राव के कारण अन्धता।
२१. रक्तमेह (Haematuria)। २२ गर्भाशय से रक्तस्राव।
२३ हृदय या श्वास कार्य के बंद होने से मृत्यु।

चिकित्सा—
१. वामक द्रव्यों का व्यवहार।
२. सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb), मैग्नेसियम आक्साइड (Magnesium Oxide) का प्रयोग।

३ कच्चा अण्डा। ४ दुग्ध पान। ५ उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार।

एस्पिरीन (Aspirin)

पर्याय—एसिटिलसेलिसिलिक एसिड (Acetylsalicylic Acid).

गुणधर्म—यह श्वेत, गंधहीन, कणीय चूर्ण के रूप में होता है। आम्लिक स्वाद युक्त होता है। यह ईथर में स्वतन्त्रता के साथ घुलता है। यह ताप तथा वेदना हारक होता है।

मारक मात्रा—१०० से ६०० ग्रेन।

मारक काल—१२ घण्टा।

लक्षण—

१ शिरःशूल। २ चक्कर। ३. कर्णनाद।
४. तृषा। ५. आमाशयिक वेदना। ६ हृल्लास।
७. वमन। ८ लाल तथा सूजन युक्त मुखमण्डल।
९ क्षीण तथा द्रुत नाड़ी। १० तीव्र श्वास प्रश्वास।
११. कायिक स्वेदाधिक्य। १२ क्षीणता।
१३. उदासीनता। १४. मूर्च्छा।
१५. प्रलाप। १६. चर्म पिडिका।
१७. गर्भपात। १८ हृदय वा श्वास के कार्य के बंद होने से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २. विरेचनार्थं मैगसल्फ (Magsulph)

३ सोडियमबाईकार्बोनेट के ४ प्र० श० घोल को सूची वेध द्वारा शिरा में प्रविष्ट करना अति ही लाभदायक है।

४. वमन शान्त के पश्चात् नं० ३ की औषधि मौखिक भी प्रयुक्त होती है।

५. हृदयोत्तेजक ओषधियों का आवश्यकतानुसार व्यवहार।

६ घातक रोगियों में कटिवेधन (Lumbar puncture) लाभदायक होता है।

एसिटिक एसिड (Acetic Acid)

गुणधर्म—यह स्वच्छ, रंगहीन, तीव्र गन्ध युक्त तरल रूप में पाया जाता है। सिरका (Vinger) में भी यह ४, ५ प्र० शत की मात्रा में पाया जाता है।

मारक मात्रा—१ ड्राम से १ औंस।

मारक काल—कुछ घण्टों से १५ दिनों तक।

लक्षण—

१. सम्पर्क में आने वाली श्लैष्मिक कलायें मृदु तथा भूरे रंग की हो जाती है।

२. मुख से आमाशय तक तीव्र वेदना होती है।

३. वमन। ४ निगलने में कष्ट। ५ आक्षेप।
६ क्षोभक कास। ७. अवसाद। ८ श्वास कष्ट (Suffocation)
९ मूत्र वर्ण लाल रंग का हो जाता है।

चिकित्सा—

१. सर्व प्रथम मैग्निसिया (Magnesia) देकर विष के शक्ति को उदासीन कर देना चाहिये।
२ वामक द्रव्य का व्यवहार कर विष को बाहर निकाल देना चाहिये।
३ शोधन करना चाहिये।
४ वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) को त्वचागतप्रविष्ट करना चाहिये।
५ श्वासावरोध में श्वास प्रणाली छेदन (Tracheotomy) आवश्यकतानुसार करना।
६ ग्रीवा पर वर्फ का सेंक करना चाहिये तथा वर्फ चूसने को देना चाहिये।

टार्टरिक एसिड (Tartric Acid)

गुणधर्म—यह वनस्पतियों तथा कुछ फलों में विशेष कर इमली में पायी जाती है। यह रंग हीन कण या श्वेत चूर्ण के रूप से गन्धहीन होती है। सामान्य मात्रा में यह विषैला प्रभाव नहीं दिखलाती।

मारक मात्रा—१ औंस।

मारक काल—७ से ६ दिन।

लक्षण—

१ गले और आमाशय मे दाह।
२. वमन। ३. अतिसार। ४ आक्षेप। ५ क्षीणता से मृत्यु।

चिकित्सा—

१ कैल्शियम या मैगनीसियम हाइड्राक्साइड (Cal Hydroxide or Mag Hydroxide) को जल मे घुलाकर विष को उदासीन करने के लिये देते हैं।
२ पश्चात् सोडियमबाइकार्ब के घोल से आमाशय प्रक्षालन।
३. एरण्ड तेल द्वारा विरेचन कराना।
४. वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) देना।

क्षार (Alkalies)

अम्लों के सदृश क्षार भी तीव्र घोल मे व्यवहृत होने पर दाहक विष के सदृश कार्य करते हैं तथा तनु घोल में क्षोभक विष का कार्य करते हैं।

अमोनिया (Ammonia)

जब अमोनिया गैस को जल में घुला देते हैं तब अमोनिया का तीव्र घोल बन

जाता है; जिसे लाइकर अमोनियाफोर्टिस (Liquor Ammoina Fortis) कहते हैं। इस घोल में ३२३ प्र० श० अमोनिया होता है।

गुण धर्म—यह रंग हीन, क्षोभक गन्ध युक्त तरल होता है। इसकी प्रतिक्रिया तीव्र क्षारीय होती है। इसका घोल वस्त्रों पर के तैलीय धब्बे तथा गर्द को दूर करने के लिये व्यवहृत होता है।

पोटेशियम हाइड्राक्साइड (Potassium Hydroxide)

पर्याय—पोटेशियम हाइड्रेट (Potassium Hydrate), दाहक पोटाश (Caustic Potash),

गुण धर्म - यह कठोर, श्वेत रंग का पेंसिल के रूप में होता है। यह वायु से कार्बन डाइआक्साइड (Carbondioxide) को शीघ्र ही शोषित कर लेता है। जल में घुलनशील है। इसके घोल को लाइकर पोटाश (Liqr. Potash) कहते हैं।

सोडियम हाइड्राक्साइड (Sodium Hydroxide)

पर्याय—सोडियम हाइड्रेट (Sodium Hydrate), दाहक सोडा (Caustic Soda),

गुण धर्म—पोटेशियम हाइड्राक्साइड के सदृश यह भी श्वेत रंग का घन या पेंसिल के रूप में होता है। यह तीव्र दाहक होता है। इसके घोल को लाइकर सोडा (Liq Soda) कहते हैं।

अमन कार्बोनेट (Ammon Carbonate)

गुण धर्म—यह पारभासक, कठोर, कण के रूप में होता है। इसका गन्ध तीव्र नौसादर वत होता है। वायु के सम्पर्क से यह श्वेत चूर्ण में परिणत हो जाता है।

जवाखार (Potassium Carbonate)

पर्याय—पर्लऐश (Pearl Ash), साल्ट आफ टार्टर (Salt of Tartar)

गुण धर्म—यह श्वेत, कणीय चूर्ण में होता है। इसका स्वाद तीव्र क्षारीय होता है। यह जल में घुलन शील होता है। इसका व्यवहार प्रक्षालन कार्य में होता है।

सज्जीखार (Sodium Carbonate)

पर्याय—सोडा, वाशिंग सोडा (Washing Soda),

गुण धर्म—पारदर्शक, बड़े बड़े कण के रूप में होता है। वायु के सम्पर्क में आने पर श्वेत हो जाता है। यह जल में घुलन शील होता है।

घातक मात्रा—अमोनिया, कास्टिक पोटाश तथा कास्टिक सोडा	½ औंस
लाइकर अमन फोर्ट (Liqr Ammon Fort)	१ ड्राम
पोटाश कार्बोनेट (Potash Carbonate)	½ औंस

घातक काल—२४ घण्टे के अन्दर ।

लक्षण—

१. वमन, इसमें रक्त तथा श्लैष्मिक कलायें भी आसकती हैं ।

२ अतिसार, रक्तमिश्रित मल निकलता है । ३ तीव्र वेदना ।

४. ग्रीवा तथा आमाशय में गरमी तथा दाह युक्त वेदना ।

अमोनिया गैस के लक्षण—

१. नेत्र में रक्ताधिक्य तथा जल स्रावाधिक्य होता है ।

२ नाक से जल गिरने लगता है ।

३ गले में गरमी के साथ साथ श्वास कष्ट होता है ।

४ अन्धता । ५ श्वासावरोध से मृत्यु ।

चिकित्सा—

१. सिरका तथा नीबू और नारंगी रस जल के साथ पिलाना चाहिये ।

२. जैतून तेल देना चाहिये । ३. दूध, मक्खन देना चाहिये ।

४. अण्डा की सफेदी देना चाहिये ।

५. अमोनियां के गैस-विष में आक्सीजन सुघांना चाहिये ।

निषेध—

१. आमाशय प्रक्षालन । २. वामक औषधियां ।

क्षोभक विष (Irritant Poisons)

परिभाषा—आमाशय तथा आंत्र में प्रदाह उत्पन्न करने वाले विषों को क्षोभक विष कहते है ।

सामान्य लक्षण—

१. ग्रीवा तथा अन्न प्रणाली (Oesophagus) का संकोच मालूम देना ।

२. निगलने में कष्ट तथा कठिनाई होना ।

३. आमाशय में तीव्र वेदना । ४. तृषाधिक्य ।

५ हृल्लास । ६. तीव्र तथा सतत वमन ।

७ वमित द्रव्य प्रथम भोज्य पदर्थ, फिर पित्त तथा अन्त में रक्त मिश्रित होता है ।

८. वेदना तथा मरोड़ युक्त अतिसार । ९ उदर प्रान्त पर स्पर्शासहत्व ।

१० अवसाद । ११ अधः शाखा में ऐंठन ।

१२. एक से ४ दिनों के अन्दर स्तब्धता या क्षीणता से मृत्यु हो जाती है ।

निदान (Diagnosis)—

१. विसूचिका । २ तीव्र आंत्र शोथ ।

३ तीव्र आमाशय तथा आंत्र प्रदाह । ४ उदरावरण शोथ ।

५. शूल । ६. आमाशय विदार (Rupture of the Stomach),

अधातु विष (Non-Metallic Poisons)

फास्फरस (Phosphorus)

भेद—१. पीत (Yellow)　　　२. रक्त (Red)

पीत फास्फरस—यह मोम सदृश, अर्धपारदर्शक पेन्सिल के रूप में होता है। यह जल तथा कार्बन बाई सल्फाइड (Carbon bisulphide) में घुलनशील होता है। वायु के सम्पर्क में आने पर यह जलने लगता है तथा इससे श्वेत रंग का धूम्र निकलता है। इससे अन्धेरे में प्रकाश भी होता है। जलनशील होने के कारण इसे सर्वदा जल में रखते हैं। यह तीव्र विषैला होता है। इसका व्यवहार चूहे आदि को मारने के लिये तैल, आटा, तथा चीनी के साथ किया जाता है। इससे बारूदादि भी बनाया जाता है। सलाई के निर्माण में भी इसका व्यवहार होता है।

रक्त फास्फरस—यह पीत फास्फरस से ही बनाया जाता है। यह गन्ध, स्वाद तथा दग्ध हीन होता है।

घातक मात्रा—$\frac{1}{2}$ से २ ग्रेन।

घातक काल—४ घण्टे से ७ दिनों तक।

लक्षण—

१. गले तथा आमाशय में दाह युक्त वेदना।

२. तीव्र तृषा।　३ हृल्लास।　४ हिक्का।　५ वमन।

६. श्वास दुर्गन्धित।　७ कामला।　८ उदर प्रसार।

९. यकृत तथा प्लीहा बढ़ जाती है तथा स्पर्श करने से वेदना मालूम होती है।

१०. तीव्र अतिसार।

११. नाक, योनि, गर्भाशय तथा मूत्र प्रणाली से रक्त स्राव।　१२ गर्भपात।

१३ मूत्र अल्प तथा नाना प्रकार के प्रक्षेप से युक्त।

१४. अग्रशिरः शूल।　१५ व्यग्रता।　१६ कर्ण क्ष्वेड।　१७ बाधिर्य

१८. अन्धता।　१९ ऐंठन।　२० घात।　२१ ज्वर।

२२ प्रलाप तथा आक्षेप के साथ मृत्यु।

चिकित्सा—

१ पोटेशियम परमाग्नेट (Potassium Permangnate) के १० से १५ ग्रेन की मात्रा को १० छटांक जल में घुला आमाशय-प्रक्षालन करना चाहिये। यह फास्फरस को दग्ध कर उदासीन कर देता है।

२ प्रक्षालन के बाद चारकोल (Charcoal) को बड़ी मात्रा में प्रविष्ट करना चाहिये।

३. इसके बाद कापर सल्फेट (Copper Sulphate) को २ से ३ ग्रेन की मात्रा में

प्रत्येक ५, ५ मिनट के बाद वमन प्रारम्भ होने तक देना चाहिये। यह प्रतिविष है।

४. मैगसल्फ (Magsulph) विरेचनार्थ देना चाहिये।

५ वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) को त्वचागत प्रविष्ट कराना चाहिये।

६. यकृत के रक्षार्थ डेक्स्ट्रोज़ (Dextrose) तथा क्षार का व्यवहार करना चाहिये।

७ स्तब्धता (Shock) दूर करने के लिये नार्मल सेलाइन शिरागत प्रविष्ट करना चाहिये।

क्लोरीन (Chlorine)

गुण धर्म—यह भूरा (Greenish-yellow) रंग का गैस होता है। इसका गन्ध अरुचिकर तथा क्षोभक होता है। इसका व्यवहार विसंक्रमता तथा प्रक्षालन के लिये किया जाता है।

घातक मात्रा—अनिश्चित।

घातक काल—४८ घण्टा।

लक्षण—

सौम्य—

१. वेदना के साथ साथ कास होता है।

२. शुष्क या हरे रंग का चिपकने वाला कफ निकलता है।

३. शिरः शूल। ४ नेत्र शूल। ५. उदर शूल। ६. तीव्र श्वास प्रश्वास।

तीव्र—

१. नीलिमा। २ कष्ट के साथ श्वास प्रश्वास। ३ शिरः शूल।

४. ज्वर ५. अवसाद।

घातक—

१ गला शुष्क तथा लाल। २ जिह्वा फटी हुई तथा अंकुरयुक्त।

३ शीघ्र नीलिमा। ४ फुफ्फुस शोथ (Oedema)

५ नाड़ी प्रति मिनट ८० बार। ६ श्वास प्रति मिनट ३० बार।

७ मूर्च्छा ८ मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना।

२. सौम्य विषमयता में एट्रोपीन (Atropine) देना चाहिये। यह श्वास प्रणाली को ढीला करता है तथा कफस्राव को कम करता है।

३ केम्फर (Camphor) तथा कोरामीन (Coramine) त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।

४. वेदना शान्ति के लिए मार्फीन (Morphine) देना चाहिये।

ब्रोमाइन (Bromine)

गुणधर्म—यह गम्भीर रक्त वर्ण का तरल होता है। साधारण तापक्रम पर इसमें शोथक तथा अरुचिकर गन्धयुक्त धूम निकलता है।

योग (Compounds)

१. अमोनियम ब्रोमाइड (Ammonium Bromide)
२. सोडियम " (Sodium ")
३. पोटेशियम " (Potassium ")

घातक मात्रा—ब्रोमाइन–१ औंस तीव्र घोल में।
तीनों ब्रोमाइड–१०० ग्राम।

घातक काल—ब्रोमाइन–७½ घण्टे।
ब्रोमाइड–५ से ७ दिन।

लक्षण—

ब्रोमाइनः—

१. मुख, गला, आमाशय तथा उदर में दाहयुक्त तीव्र वेदना होती है।
२. निगलने में कष्ट होता है। ३. वमन। ४ डकार (Eructation)
५. अतिसार। ६. प्यासाधिक्य। ७ मूर्च्छा। ८ अवसाद।

गैस का प्रभाव—

१. वायु प्रणाली की श्लैष्मिक कलाओं में तीव्र शोथ हो जाता है।
२. कास। ३ रक्तष्ठीवन। ४ उपजिह्वा का शोथ (Oedema)
५. श्वासावरोध। ६ मृत्यु।

वाह्य लक्षण—

शरीर के वाह्य भाग के सम्पर्क में आने पर व्रणोत्पन्न कर देता है।

ब्रोमाइडों का प्रभाव—

विषैले मात्रा में प्रविष्ट करने पर निम्नलक्षण उत्पन्न होते हैं:—

१. चर्म पर लाल रंग की पिडिकायें (Papules) निकल आती हैं।
२ मुख मण्डल तथा पीठ पर पूययुक्त पिडिकायें होती हैं।
३. क्षुधानाश। ४ अजीर्ण। ५ श्वास से दुर्गन्ध निकलना।
६ मांसल क्षीणता। ७ लड़खड़ाकर चलना।
८. उदासीनता। ९ निद्रा प्रतीत होना।
१०. चर्म की संज्ञा कम हो जाती है। ११. नेत्राभिष्यन्द।
१२. नासा स्राव होने लगता है। १३ कफ अधिक निकलता है।
१४. मैथुन शक्ति नाश।

चिकित्सा—

१. एपोमार्फीन (Apomorphine) त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये या अन्य वामक ओषधि देना चाहिये ।

२ स्टार्च (Starch) या अल्ब्युमिन (Albumin) देना चाहिये ।

३. सोडियम क्लोराइड (Sodium Chloride) का व्यवहार ब्रोमाइड त्याग के लिये करना चाहिये

४ ब्रोमाइन गैस विष में अमोनिया वाष्प (Amonium Vapour) सुंघाते हैं ।

आयोडीन (Iodine)

गुणधर्म—नीले रंग का मृदु कण में चमकता हुआ होता है। इसका स्वाद अरुचिकर होता है। गरम करने से रंगीन वाष्प निकलता है। यह अल्कोहल, ईथर, क्लोरोफार्म, ग्लिसरीन, कार्बन बाईसल्फाइड या आयोडाइड (Iodide) के जलीय घोल में स्वतन्त्रता पूर्वक घुल जाता है।

घातक मात्रा—आयोडीन—२० से ४० ग्रेन ।

टि० आयोडीन—१ ड्राम ।

घातक काल—२४ घण्टा ।

लक्षण तीव्र—

१ मुख, अन्न प्रणाली तथा आमाशय में दाहयुक्त वेदना ।

२. तीव्रतृषा ।

३ लालास्रावाधिक्य ।

४ वमन ।

५ अतिसार ।

६ वमित द्रव्य तथा मल काला, पीला या नीले रंग के होते हैं; जिनमें आयोडीन की गन्ध निकलती है ।

७. ओष्ठ तथा मुख कोण पीले हो जाते हैं ।

८ मूत्राल्पता या मूत्राघात ।

९ मूत्र कृष्ण वर्ण का तथा आयोडीन को गन्ध से युक्त होता है ।

१० स्पर्श शीतल तथा स्निग्ध ।

११ अवसाद ।

चिरकालिक—

१ अग्रमस्तक में तीव्र वेदना जो नासिका की ओर जाती है ।

२ नासास्राव ।

३ लालास्रावाधिक्य ।

४ हृल्लास ।

५ वमन ।

६. अतिसार ।

७ क्षीणता ।

८. स्तन, अण्ड तथा अन्य ग्रंथियों का नाश ।

९ चर्म पर चकत्ते होना ।

चिकित्सा—

१. वामक द्रव्यों द्वारा आमाशय को रिक्त कर देना चाहिये ।

सोडियम थायोसल्फेट (Sodium thio Sulphate) के ५ प्र० श० घोल से आमाशय प्रक्षालन करना चाहिये।

२ आरारोट (Arrowroot) देना चाहिये।

३. वार्ली वाटर (Barley Water) देना चाहिये।

४. पाट० आयोडाइड (Pot Iodide) के विष मे आयोडाइड का व्यवहार बन्द कर देवे। सोडा वाई कार्व (Soda Bicarb) को वड़ी मात्रा में व्यवहृत करे।

बोरिक एसिड (Boric Acid)

गुणधर्म—यह चूर्ण या श्वेत रंग के क्रिस्टल के रूप में पाया जाता है। स्पर्श में चिकना होता है। तिगुने गरम जल में घुलन शील है।

बोरेक्स (Borax)

पर्याय—सोहागा या टंकणक्षार, सोडियम वाइबोरेट (Sodium Biborate).

गुणधर्म—यह पारदर्शक, रंगहीन कण के रूप में पाया जाता है। यह ग्लीसरीन मे घुलन शील होता है।

घातक मात्रा—अनिश्चित।

घातक काल—३ से ४ दिन।

लक्षण—

१. क्षुधानाश। २ हृदयाधरिक प्रदेश में वेदना।
३ हृल्लास। ४. वमन। ५. अतिसार।
६. मूत्राल्पता तथा मूत्राघात। ७ चर्म पर चकत्ते की उत्पत्ति।
८ अवसाद। ९ हृदय के घात (Paralysis) से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन।

२. विरेचक द्रव्य प्रयोग विशेष कर मैगसल्फ (Mag sulph)

धातु विष (Metallic Poisons)

संखिया (Arsenic)

गुणधर्म—संखिया जव वायु के सम्पर्क में आता है तव यह विषैला हो जाता है अन्यथा यह विषैला नहीं होता; क्योंकि यह जल मे अघुलन शील होता है। आमाशय में यह दुग्ध होने लगता है, जिससे विषैला प्रभाव दिखलाता है। संखिया के शुष्क चूर्ण को चर्म पर मलने से भी विषैले लक्षण उत्पन्न होते हैं। गरम करने पर इससे जो वाष्प निकलता है वह भी घातक होता है। संखिया श्वेत, लाल, पीला और काला ४ रंग का होता है। किन्तु श्वेत संखिया ही अधिकतर मिलता है।

घातक मात्रा—३ ग्रेन तथा ½ औंस लाइकर आर्सनिकलिस (Liqr. Arsenicalis)

घातक काल—कुछ घण्टे से ४८ घण्टे तक।

लक्षण—

१. मूर्च्छा व्यक्त होना। २. किंकर्तव्य विमूढता (Depression)

३. हृल्लास।

४. गले तथा आमाशय में तीव्र दाह युक्त वेदना जो दबाने से बढ़ती है।

५. तृषाधिक्य।

६. भयानक वमन। वमन में प्रारम्भ में भोज्य पदार्थ फिर रक्त निकलता है। वमन का रंग काला, पीला तथा हरा होता है।

७. लालास्रावाधिक्य। ८. मरोड़ वेदना तथा क्षोभ के साथ अतिसार।

९. मल अनैच्छिकरूप से, काले रंग का रक्तमय व्यक्त होता है। कुछ समय बाद मल रंगहीन, गंधहीन तथा पतला होने लगता है।

१० मूत्राल्पता; रक्तयुक्त या मूत्राघात हो जाता है।

११. वेदना युक्त मूत्र त्याग।

१२. पिण्डलियों की मांस पेशियों (Calf muscles) में ऐंठन।

१३. बेचैनी। १४. अवसाद। १५. नेत्र धँसा हुआ।

१६. नाड़ी क्षीण, अनियमित तथा कभी कभी व्यक्त होती है।

१७. कष्ट के साथ श्वास प्रश्वास का होना। १८ आक्षेप।

१९. मूर्च्छा। २०. मृत्यु। २१. ज्ञान शक्ति अन्त तक बनी रहती है।

२२ अत्यधिक मात्रा में सेवन करने पर बिना उपरोक्त लक्षणों के व्यक्त हुये ही स्तब्धता (Shock) से मृत्यु हो जाती है।

२३ कभी कभी शाखाओं का पूर्णघात (Paralysis) हो जाता है।

२४. मांस पेशियों को स्पर्श करने में वेदना व्यक्त होती है।

२५. प्रलाप होता है। २६ हनुस्तम्भ (Lock Jaw)

२७. तापाधिक्य। २८. प्रकाश असह्यता २९. मूकता ३०. तीव्र शिरःशूल।

निदान (Diagnosis)—संखिया को विसूचिका (Cholera) से पृथक करते हैं; क्योंकि दोनों के लक्षण लगभग समान होते हैं। दोनों के विभेदक लक्षणों को नीचे लिखा जाता है।

विभेदक तालिका—

लक्षण	संखिया विष	विसूचिका
१. गले के अंदर वेदना	वमन के पूर्व।	वेदना नहीं होती।

२. अतिसार	वमन के बाद	वमन के पूर्व
३ वमित द्रव्य	श्लेष्मिककला, पित्त तथा रक्तयुक्त मरोड के साथ	जल या माड (Whey) सदृश तरल
४ मल	गम्भीर रंग का रक्तमिश्रित तथा दुर्गंधित।	श्वेताभ्र जो अनैच्छिक रूप से बराबर त्यक्त होता रहता है।
५ शब्द (Voice)	अविकृत।	मोटा तथा सुरीला।
६. नेत्र वर्त्समण्डल	शोथ युक्त	अविकृत

चिकित्सा—

१. विष भक्षण करते ही वमन द्वारा तुरन्त विष को निकाल देना चाहिये। वमन के लिये निम्न ओषधि प्रयुक्त करनी चाहिये :—

(क) पिप्पली, मुलेठी, शहद, चीनी तथा ईख के रस को पिलाकर वमन कराना चाहिये।

(ख) करेले के रस को पिलावे जिससे वमन के द्वारा संखिया विष नष्ट हो जाता है।

(ग) पीपरी खैर जल में घोलकर पिला उदर में पहुंचते ही संखिया के कार्य को रोक कर वमन लाता है।

(घ) कच्चे बेल का गूदा पेट भर खिला वमन करावे। वह गूदा खिलाने से संखिया विष गूदे में मिल जाता है; जिससे उसका कार्य शरीर पर नहीं हो पाता।

२. गाय का घी और दूध एकत्र मिलाकर पिलाने से संखिया विष नष्ट होता है।

३. घी के साथ सुहागा पीस कर पिलावे।

४ कड़वे नीम के पत्तों का रस पिलावे।

५. कपूर १ माशा लेकर ४ तोले गुलाब जल में खरल कर पिलाने से संखिया विष नष्ट होता है।

६. नीबू के शर्बत में बर्फ मिला कर पिलाने से जलन शान्त होती है।

७ एरण्डतैल पिलावे। यह आंत्रों में विष के शोषण को रोकता है तथा दस्त लाकर विष को बाहर निकालता है।

८. संगसफ देना चाहिये। इसका भी कार्य एरण्ड तैलवत् होता है।

९. वेदना शान्ति के हेतु मार्फिन (Morphine) को त्वचा में प्रविष्ट कराना चाहिये।

१०. तीव्र अतिसार में ५ या ६ प्र० शत ग्लुकोज (Glucose) को शिरागत प्रविष्ट करावें।

११. सोडियम सल्फेट (Sodium Sulphate) के ७½ ग्रेन मात्रा को १० प्र० शत शिरामें (Intravenous) प्रविष्ट कराना लाभ दायक है।

१२. फेरी हाइड्रोक्साइड कम मैग्नीसीयम आक्साइड (Ferri Hydroxide cum Magnesium oxide) पिलाना चाहिये। यह प्रतिविष है। इसे ४ औंस की मात्रा में पिलावे।
१३. आर्सेनिक एण्टीडोट (Arsenic Antidote B P. C.) को ४ औंस की मात्रा में पिलाना चाहिये। आवश्यकतानुसार एक मात्रा पुनः दी जा सकती है।
१४. प्यास शान्ति के लिये बर्फ चूसना चाहिये।
१५. ऐंठन को दूर करने के लिये मर्दन करना चाहिये।
१६ स्ट्रिक्नीन (Strychnine) आदि हृदयोत्तेजक ओषधियों का आवश्यकतानुसार अवसाद को दूर करने के लिये त्वचा में प्रविष्ट कराना चाहिये।
१७ शरीर की गरमी को बनाये रखने के लिये गरम सेंक या गरम बोतलों का व्यवहार करना चाहिये।

आर्सेनिक के योग—

१. आर्सेनिक आक्साइड (Arsenic Oxide) या एसिड आर्सेनिक (Acid Arsenic)
२ पोटेशियम और सोडियम आर्सेनाइट (Potassium & Sodium Arsenite)
३. कापर आर्सेनाइट (Copper Arsenite)। रंगने के काम में आता है।
४. आर्सेनेट्स (Arsenates)
५. आर्सेनिक सल्फाइड (Arsenic Sulphide) मैंसिल।
६. ” ट्राइक्लोराइड (Arsenic Trichloride)
७. ” आयोडाइड (” Iodide)

संखिया जन्य चिरकालिक विषमयता—

यह संखिया के कारखानों में काम करने वालों में, इससे रंजित मकान में रहने वालों में तथा इसको अधिककाल तक ओषधि के रूप में सेवन करने वालों में होता है।

लक्षण—

प्रथमावस्था—

१. क्षुधानाश। २ लालास्रावाधिक्य।
३. शूलवत् वेदना। ४ कोष्ठबद्धता।
५. कभी कभी पित्त रंजित अतिसार तथा वमन होता है।
६ दन्तवेष्ट (Gums) लाल तथा मृदु हो जाते हैं।
७. जिह्वा श्वेत रंग के अङ्कुरों से व्याप्त हो जाती है।
८ ताप १०२° से १०३° F तक हो जाता है।

द्वितीयावस्था—

१. चर्म पर अंकुर उत्पन्न हो जाते हैं।
२. स्वरयन्त्र तथा श्वास प्रणालियों में शोथ।
३. मुखगुहा तथा स्वरयन्त्र में शुष्कता तथा कण्डू।
४. शब्द विकृत हो जाता है। (गला बैठ जाता है)
५. नेत्र लाल हो जाते हैं।
६. नासास्रावाधिक्य हो जाता है।
७ कष्ट पूर्ण कास आती है।
८. रक्तरंजित कफ निकलता है।
६. चर्म पर पामा, कण्डू तथा पूययुक्त पिडिकायें उत्पन्न हो जाती हैं, विशेषतः कुक्षि तथा अण्डकोष पर।
१०. नख भगुर और शिथिल हो जाते हैं।
११. चर्म से खुरण्ड उतरने लगते हैं।
१२ बाल शुष्क होकर गिरने लगते हैं।

तृतीयावस्था—

१ शिरःशूल।
२. झुनझुनी तथा त्वगीय संज्ञानाश।
३. स्वेदाधिक्य।
४. शाखाओं की मांसपेशियों को छूने पर वेदना।
५ जानु-प्रत्यावर्त्तन (Knee jerk) लुप्त हो जाता है।
६. मैथुन शक्ति हीनता।

चतुर्थावस्था—

१. मांस पेशियाँ क्षीण हो जाती हैं।
२. चलने में लड़खड़ाहट।
३. शाखाओं की प्रसारण पेशियाँ सूख जाती हैं।
४. मांस पेशियों का वात हो जाता है।
५. हृदय के मांस पेशियों के क्षय से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. विषैले स्थान से रोगी को पृथक् करना।
२. पाट० आयोडाइड (Pot. Iodide) को ५ ग्रेन की मात्रा में खिलाना।
३. सोडियम थायोसल्फेट (Sodium Thiosulphate) को प्रतिदिन शिरा में प्रविष्ट कराना।
४. साधारण स्वास्थ्य वृद्धि के लिये लौह तथा स्ट्रिक्नीन का व्यवहार करना।

संखियां के सेन्द्रिय योग
(Organic Compounds of Arsenic)

(१) कैकोडिलिक एसिड (Cacodylic Acid)—यह श्वेत रंग का कण के रूप में मिलता है, जो जल तथा अल्कोहल में शीघ्र ही घुल जाता है। इसमें ५४·२ प्र० शत संखिया होती है।

(२) सोडियमकैकोडिलेट (Sodımn Cacodylate)—पूर्ववत् गुण युक्त । इसमें ३९ प्र० शत संखिया होती है ।

(३) एटाक्सील (Atoxyl)—इसे सोयामीन (Soamın) भी कहते हैं । यह उपरोक्तगुण युक्त होता है । इसमें २४ से २५·६ प्र० शत संखिया मिलती है।

(४) स्टोवार्सोल (Stovarsol)—उपरोक्त गुण युक्त होता है । इसमें २७ प्र०शत संखिया होती है ।

(५) ट्रिपार्समाइड (Tryparsamıde)—पूर्व गुण सम्पन्न । इसमें २५ से २५½% संखिया है ।

(६) सालवर्सन (Salvarsan) या ६०६—यह पीताभ रंग का, गन्धहीन, कणीय चूर्ण में होता है । यह ग्लीसरीन में घुलन शील होता है । इसमें ३० से ३४% संखिया होती है ।

(७) न्यूसालवर्सन (Neosalvarsan) 914—यह पीत वर्ण का चूर्ण होता है जो जल में घुलन शील होता है । और वायु के सम्पर्क में आने पर तीव्र विषैला हो जाता है । इसमें २०% संखिया होती है ।

(८) सिल्वर सालवर्सन (Silveısalvarsan)—यह भूरे रंग का चूर्ण होता है जो जल में घुलन शील है । इसमें १८ से २०% सखिया तथा १२ से १३% सिल्वर (Sılver) होता है ।

(९) सल्फार्सेनाल (Sulpharsenol)—यह पीतरंग का चूर्ण होता है, जो जल में घुलन शील है । इसमें २० प्र० शत संखिया होती है ।

घातक मात्रा—सालवर्सन को १०·५ ग्राम ।
न्यूसालवर्सन का ०·६ ग्राम ।

घातक काल—१२ से २५ घण्टा ।

लक्षण—

१. मुखमण्डल का लाल हो जाना ।
२. जिह्वा या पलक (Lıds) का फूलजाना या नेत्रनाड़ी के क्षय से अन्धता हो जाना ।
३. हृल्लास ।
४ भ्रम ।
५. शिरः शूल ।
६. शीत पूर्ण कुछ तापाधिक्य ।
७. वक्ष तथा सन्धियों में वेदना ।
८. श्वासकष्ट ।
९. कास ।
१० चर्म पर मण्डलोत्पत्ति ।
११. अतिसार रक्तमिश्रित ।
१२ मुखपाक (Stomatıtıs)
१३ उदरस्थ वेदना ।
१४. वमन ।
१५. कामला ।
१६ तीव्रताप ।

१७ कनीनक प्रसार।
१८. मूत्राघात।
१९. एँठन।
२०. आक्षेप।
२१. मूर्च्छा।
२२ अवसाद।
२३. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. प्रवेश के पूर्व या पश्चात् एड्रेनलीनहाइड्रोक्लोर (Adrenaline Hydrochlore) को त्वचा में प्रविष्ट कराना चाहिये।

२. शिरामार्ग या गुदा मार्ग से नार्मल या हाइपरटानिक (Normal or Hyper-tonic) सेलाइन रक्त की क्षारीय प्रतिक्रिया को बनाये रखने तथा आशयों द्वारा संखिया के त्याग के लिये प्रविष्ट कराना चाहिये।

३. सोडियम थायोसल्फेट (Sodium Thiosulphate) के ०·४५, ०·६, तथा ०·९ ग्राम की मात्रा को ५ सी० सी० जल में घुलाकर तीसरे दिन शिरा मार्ग द्वारा प्रविष्ट कराना चाहिये।

४. डेक्स्ट्रोज (Dextrose) के २५% प्र० शत घोल को त्वचा शोथ को नष्ट करने के लिये थायोसल्फेट (Thiosulphate) के दूसरे दिन प्रविष्ट कराना चाहिये।

५. लिवर एक्स्ट्रैट (Liver Extract) और स्कार्बिक एसिड (Ascorbic Acid) देते हैं।

६. कामला (Jaundice) नाशनार्थ ग्लुकोज को २५% प्र० श० के घोल में शिरागत प्रविष्ट करावें।

७. संखिया के यकृत पर होने वाले विषैले प्रभाव को नष्ट करने के लिये सोडियम डीहाइड्रोकोलेट (Sodium Dehydrocholate) के ५ प्र० श० शक्ति के घोल को १० सी० सी की मात्रा में न्यूसालवर्सन के साथ शिरा में प्रविष्ट कराना चाहिये।

एण्टीमनी (Antimony)

एण्टीमनी के योग—

(१) एण्टीमनीटार्टरेटम (Antimony Tartaratum)—यह रंगहीन, पारदर्शक कण के रूप में या श्वेत, कणीय चूर्ण के रूप में पाया जाता है; जिसमें ३५ प्र० शत धात्वीय एण्टीमनी होता है। यह गरम जल में घुलन शील है।

(२) एण्टीमनी ट्राइआक्साइड (Antimony Trioxide)—यह स्वाद तथा गंध रहित भूरे रंग के चूर्ण में होता है। यह हाइड्रोक्लोरिक एसिड (Hydrochloric Acid) में घुलन शील है।

(३) एण्टीमनी ट्राइक्लोराइड (Antimony Trichloride)—यह रंगहीन कण के रूप में होता है। और जल में घुलन शील है। गरम करने से पीत वर्ण के तरल रूप में हो जाता है।

(४) एण्टीमनीट्राइसल्फाइड (Antimony Trisulphide) या ब्लैक एण्टीमनी (Black Antimony)—इसे हिन्दी में सुरमा कहते हैं।

(५) एण्टीमनी हाइड्राइड (Antimony Hydride)—रंग हीन, दुर्गन्धि, विषैला गैस है।

सेन्द्रिय योग—

१. स्टिबेनील (Stibanyl)
२. स्टिबेमीन (Stibamine)
३. यूरियास्टेबेमीन (Urea Stibamine)
४. स्टिबोसान (Stibosan)
५. न्यूस्टिबोसान (Neostibosan)
६. स्टिबोफेन (Stibophen)

आधुनिक काल में इनका उपयोग कालाजार (kala arzar) में किया जाता है।

घातक मात्रा—१० से १५ ग्रेन।

घातक काल—२४ घण्टे के अन्दर।

लक्षण—

तीव्र (Acute)

१ मुख तथा अन्न प्रणाली के दाह के साथ साथ गले का संकुचित होना।
२ हृल्लास।
३. आमाशय तथा उदर में वेदना के साथ साथ लगातार वमन।
४ वमित द्रव्य प्रथम भोज्य पदार्थ, फिर पित्त तथा अन्त में रक्तमय होता है।
५. तृषाधिक्य।
६. ओष्ठ, मुख तथा गला फूल जाता है; जिससे निगलने में कष्ट होता है।
७. लालास्रावाधिक्य।   ८. रक्तमिश्रित तीव्र अतिसार।   ९ मूत्राघात।
१०. नाड़ी सूक्ष्म, तीव्र तथा अव्यक्त हो जाती है।
११. श्वास प्रश्वास क्षुद्र तथा वेदना युक्त हो जाता है।
१३. अधः शाखाओं में ऐंठन।   १४ चर्म शीतल तथा स्निग्ध।
१५. क्षीणता।   १६. मूर्च्छा।   १७. मृत्यु।

शिरागत प्रविष्ट करने पर होने वाले विष के लक्षण—

१. दौरे के साथ कास होता है।   २. श्रम।   ३. हृल्लास   ४. वमन।
५. अतिसार।   ६. संधियों में वेदना।   ७. क्षीण, तीव्र तथा अनियमितनाड़ी।
८. अवसाद।   ९. चर्म पर पूय युक्त पिड़िकाओं की उपस्थिति।

चिकित्सा—

१. सर्षप चूर्ण या अत्यधिक जल पिलाकर वमन कराना।

या

२ आमाशय प्रक्षालन।
३ प्रतिविष के रूप में टैनिक एसिड (Tannic Acid) को १ ड्राम की मात्रा में देवें।

४. तीव्र उष्ण चाय तथा काफी (Coffee) पिलाना चाहिये ।
५ दूध, तैल, गोंद, अल्ब्युमिन जल तथा अलसी की चाय देवें ।
६. वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) देवें ।
७. वमन शान्ति के लिये बरफ चूसावे ।
८ हृदयावरोध को दूर करने के लिये हृदयोत्तेजक ओषधियाँ जैसे केफीन (Caffeine), स्ट्रिक्नीन, कैम्फर (Camphor), अल्कोहल तथा ईथर देवें ।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१. श्रम ।	२. शिरःशूल	३ हृल्लास ।	४ स्थाई वमन
५. जल सदृश अत्यधिक मलत्याग ।		६ दूषित जिह्वा ।	७. मूकता ।
८ क्षीणता तथा तीव्र नाड़ी ।	९ शीतल तथा स्निग्ध चर्म ।		१० तीव्र क्षीणता ।
११. भोजन की अनिच्छा ।	१२. ऐंठन ।		१३ मृत्यु ।

चिकित्सा—पोटेशियम आयोडाइड (Potassium Iodide) का व्यवहार ।

पारद (Mercury)

गुणधर्म—चमकता हुआ श्वेत रंग का चपल तरल होता है । चाक (Chalk) चीनी (Sugar) के साथ मिलाने पर कुछ भूरे रंग का हो जाता है । इस विधि को मारण कहते हैं । यह सल्फुरिक तथा नाइट्रिक (Sulphuric & Nitric) एसिड के तीव्र (Strong) घोल में पूर्ण रूप से घुल जाता है ।

योग (Compounds)—

(१) मरक्यूरिक आक्साइड (Mecuric Oxide)—इसे भारतीय भाषा में सिंगरफ कहते हैं, जो लाल वर्ण का कणीय चूर्ण में पाया जाता है । यह लाल तथा पीला दो प्रकार का होता है । इन्हें क्रम से हाइड्रार्जीरी आक्साइडम रुब्रम तथा फ्लेवम (Hydrargyri oxidum rubrum and flavum) कहते हैं ।

२ मरक्यूरिक क्लोराइड (Mercuric Chloride)—इसे कोरोजिव सब्लिमेट (Corrosive sublimate) भी कहते हैं । यह रंगहीन त्रिपार्श्वाकार कण के या श्वेत रंग के कणीय चूर्ण में पाया जाता है । यह अल्कोहल, ईथर और ग्लीसरीन में घुलनशील है ।

३. मरक्यूरिक आयोडाइड (Mercuric Iodide)—इसे बिनायोडाइड आफ मर्करी या रेड आयोडाइड आफ मर्करी (Biniodide of mercury or Red Iodide of mercury) भी कहते हैं । यह ईथर (Ether), नाइट्रिक एसिड तथा पोटेशियम आयोडाइड (Potassium Iodide) के घोल में स्वतन्त्रता के साथ घुलता है ।

४ मरक्यूरिक सल्फाइड (Mercuric Sulphide)—इसे हिंगुल, रससिंदूर आदि नामों से भी पुकारते है ।

५. मरक्यूरस क्लोराइड (Mecurous Chloride or caloml)—यह रसकपूर के नाम से भी पुकारा जाता है।

६. नोवासुराल (Novasural)—यह श्वेत रंग का कणीय चूर्ण है। यह जल में घुलनशील होता है। यह तीव्र मूत्रल है।

७. मर्सेलीलम (Marsalelum)—श्वेत रंग का गंध हीन चूर्ण होता है। यह जल, अल्कोहल ६०% तथा मिथिल अल्कोहल (Methyl Alcohol) में घुलनशील है।

८ मरक्यूरोक्रोम (Mercurochrome)—जल में घुलनशील होता है।

घातक मात्रा—०.०६ ग्राम की मात्रा शिरागत प्रविष्ट करने से मृत्यु हो जाती है।
३ ग्रेन से २० ग्रेन।

घातक काल—३ से ५ दिन।

लक्षण—

तीव्र (Acute)

१. दम घुटना। २. शब्द का मोटा होना। ३. श्वास में कष्ट।
४. मुख, जिह्वा फूल जाती है।
५ मुख, आमाशय तथा उदर में जलन युक्त वेदना होती है।
६. हृल्लास। ७. वमन।
८. वमित द्रव्य रक्त तथा श्लैष्मिक कला युक्त होता है।
९. मरोड़ के साथ रक्त मिश्रित अतिसार।
१० मूत्राल्पता या मूत्राघात। मूत्राल्पता में मूत्र में रक्त तथा श्वेतसार निकलता है।
११. नाड़ी तीव्र, क्षुद्र तथा अनियमित हो जाती है।
१२. अवसाद। १३ ऐंठन। १४. आक्षेप। १५. मूर्च्छा।

पारद के बाष्प का विषैला प्रभाव—

१ लालास्रावाधिक्य। २ दन्तवेष्ट शोथ (Gingivitis)
३. दन्त शैथिल्य। ४ दुर्गन्धित श्वास।

शिरा-गत सूचीवेध का विषैला प्रभाव—

१. श्वासकष्ट। २ नीलिमा। ३ आक्षेप।
४ स्तब्धता। ५. मृत्यु।

निदान (Diagnosis)—संखिया विष से पृथक् करना पड़ता है। पारद विष में लक्षण शीघ्र प्रारम्भ होते हैं। गल संकोच, वमन तथा अतिसार में रक्त निकलना तथा वृक्क क्षोभ पारद विष के प्रधान विभेदक लक्षण हैं।

चिकित्सा—

१ जवासा को जल के साथ पीस रस निकाल पिलाना। विष नाशक है।
२ एरण्ड तेल गोदुग्ध के साथ पिलाना। विष नाशक है।

३. शुद्ध गन्धक का सेवन। ४. घी दूध पिलाना। ५. वमन कराना।

६. मैग्नेसीयम कार्ब (Magnesium Carb) को गरम जल में घोल आमाशय प्रक्षालन करे।

७. अण्डे की सफेदी खिलावे।

८. चारकोल (Charcoal) को जल के साथ घोल शीघ्रता के साथ पिलावे; क्योंकि यह पारद का शोषण कर लेता है, फिर मैगसल्फ (Magsulph) देकर विरेचन द्वारा त्याग करावे।

९. सोडियम थायोसल्फेट (Sodium Thiosulphate) के १० प्र० श० घोल को शिर में देवें।

१०. २५ प्र० शत ग्लुकोज (Glucose) के घोल को २० से ४० सी० सी० की मात्रा में शिरा में देवें।

११. सोडियम फर्मल्डिहाइड सल्फाक्जीलेट (Sodium Formaldehyde Sulphoxylate) का व्यवहार प्रतिविष के रूप में किया जाता है।

चिरकालिक विष के लक्षण—

यह उन व्यक्तियों में होता है, जो पारद कम्पनी में कार्य करते हैं तथा जो इसके योगों का अधिक समय तक सेवन करते हैं।

१. हृल्लास। २ पाचन की विकृति।

३. आमाशय शूल तथा वमन। ४ लालाधिक्य।

५. दुर्गन्धित श्वास। ६ लालाग्रंथियों का शोथ।

७. दन्तवेष्ट शोथ तथा व्रण।

८. दन्तवेष्ट तथा दन्त के संगम स्थान पर नीली रेखा की उत्पत्ति।

९. दन्त शैथिल्य तथा कोटरोत्पत्ति। १०. हनुक्रोथ। ११. अतिसार।

१२. कायिक क्षीणता। १३ पाण्डु तथा चर्म पर पिडिकोत्पत्ति।

१४. मांस पेशी आक्षेप तथा घात। १५ कास।

१६ रक्तमिश्रित कफ स्राव। १७. मिथ्याभास। १८. उन्माद।

चिकित्सा—

१. पारद के संसर्ग से रोगी को दूर रखना। २ अत्यधिक दुग्ध पान।

३. बोरेक्स (Borax) या पोटेशियम क्लोरेट (Potassium Chlorate) से गण्डूष कराना।

४ विरेचक द्रव्य का व्यवहार। ५. उष्ण स्नान।

६. सोडियम थायोसल्फेट (Sodium Thiosulphate) की सूची शिरागत प्रविष्ट कराना।

यह लालास्रावाधिक्य को नष्ट करती है।

७. पोटेशियम आयोडाइड (Potassium Iodide) का छोटी मात्रा में व्यवहार करना।

ताम्बा (कापर Copper)

योग—

१ कापर सल्फेट (Copper Sulphate)—इसे नीला तूतिया कहते हैं।

२. कापर सबएसीटेट (Copper Subacetate)—इसे हिन्दी में जंगाल (Zangal) कहते हैं।

घातक मात्रा—½ से १ औंस।

घातक काल—१ से ३ दिनों तक।

लक्षण—

तीव्र (Acute)—

१. आमाशय में दग्धवत् वेदना। २ तृषा। ३. हृल्लास।
४. डकार। ५. बारम्बार वमन।
६ वमित द्रव्य नीला या हरा होता है। ७. वेदना पूर्ण अतिसार।
८. मूत्राल्पता या मूत्राघात। मूत्र में रक्त आता है।
९ कामला। १०. पैर में ऐंठन। ११. आक्षेप।
१२ अग्रिम शिरःशूल। १३. अवसाद।
१४ शाखाओं का घात। १५. मूर्च्छा। १६. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. पोटेशियम फेरोसाइनाइड (Potassium Ferrocyanide) को जल में घुला उससे आमाशय प्रक्षालन करना।
२. अण्डे की सफेदी या दुग्ध प्रतिविष के रूप में देना।
३. घी आदि स्निग्ध पदार्थ देना।
४. वेदना शान्ति के लिये मार्फीन त्वचा में प्रविष्ट कराना।
५ एरण्ड तैल मिला आन्त्र स्थित विष का त्याग कराना।
६ उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार।

निषेध—वामक ओषधियाँ।

चिरकालिक विष के लक्षण—

यह ताम्र के कारखानों में कार्य करने तथा ताम्र के गंदे पात्र में रखे हुये पदार्थ को खाने से होता है।

लक्षण—

१. दन्तवेष्ट (Gums) पर हरी रेखा हो जाना।

२. श्रम । ३. शिरःशूल । ४. अग्निमांद्य ।
५. वमन । ६. अतिसार । ७ शूलवत वेदना ।
८ स्वरयंत्र शोथ । ९. कास । १०. पाण्डु ।
११. घात । १२. चर्म पीला ।
१३ बाल, मूत्र, स्वेद हरा हो जाता है ।

चिकित्सा—

१. कारण को दूर करना ।
२. मालिश तथा उष्णस्नान ।
३. स्वच्छ वायु में रखना ।
४ पोषक पदार्थ खिलाना ।
५. अग्निमांद्य को नष्ट करना ।

निषेध—ताम्र पात्र ।

शीशा (लेड Lead)

योग—१. लेड कार्बोनेट (Lead Carbonate)—सफेदा । यह श्वेत वर्ण के कणीय चूर्ण में होता है, जो तन्वम्ल (Dilute acids) में घुलनशील है ।

२. लेट सल्फाइड (Lead Sulphide)—सुरमा । इसका व्यवहार नेत्र रोगों में होता है । यह चूर्ण के रूप में मिलता है ।

३. लेड टेट्राक्साइड (Lead Tetroxide)—सिन्दूर । नीला रंग का भी होता है ।

४. लेड मानोआक्साइड (Lead monoxide)—इसे मुर्दासंग भी कहते हैं ।

घातक मात्रा—२०० ग्रेन ।

घातक काल—२ से ३ दिन ।

लक्षण—

तीव्र—

१. गले में दाह तथा शुष्कता । २ वमन ।
३ वमित द्रव्य श्वेत या रक्त रंजित होता है ।
४ दौरे के साथ शूल । यह दबाने से बंद होता है ।
५ उदर भित्ति संकुचित तथा स्पर्शासहत्व गुणयुक्त होती है ।
६ कोष्ठ बद्धता । ७ मूत्राल्पता । ८ मलयुक्त जिह्वा ।
९ दुर्गन्धित श्वास । १० शीतल तथा स्निग्ध चर्म ।
११. नाड़ी तीव्र तथा क्षीण । १२ मन्दता ।
१३ शिरःशूल । १४ श्रम ।
१५ मांस पेशियों में ऐंठन । १६ आक्षेप ।
१७ अधः शाखाओं का घात । १८ मृत्यु ।

सौम्य प्रकार के लक्षण—

१ दन्तवेष्ट पर नीली रेखा की उत्पत्ति ।

२. वमन। ३. कोष्ठबद्धता। ४. मूत्राल्पता। ५ भ्रम।
६ उरु में चुभाने सदृश वेदना। ७. शून्यता। ८. उरु में ऐंठन।
९ अधः शाखा का घात। १०. आक्षेप। ११. मूर्च्छा।

चिकित्सा—

१ सोडियम या मैग्नीसियम सल्फेट (Sodium or Magnesium Sulphate) को १ औंस की मात्रा में जल में घोल पिलाना चाहिये।
२. जल से आमाशय प्रक्षालन करना चाहिये।
३ प्रक्षालन के अभाव में साधारण वामक द्रव्यों का व्यवहार करना चाहिये।
४ वार्लीवाटर, दुग्ध तथा अण्डे की सफेदी देना चाहिये।
५ शूल शान्ति के लिये मार्फीन तथा एट्रोपीन (Atropine) देना चाहिये।
६ केल्शियम ब्रोमाइड भी वेदना शान्ति के लिये दिया जाता है।
७ विरेचन देना चाहिये।
८. केल्शियम (Calcium) का व्यवहार करना चाहिये।
९ शाक तथा आलू का व्यवहार करना चाहिये।
१० सोडियम थायोसल्फेट (Sodium Thiosulphate) को शिरा में प्रविष्ट कराना चाहिये।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१ नाभि के चारों ओर शूलवत् वेदना होती है, जो दबाने से शान्त हो जाती है।
२ उदर की मांस पेशियाँ संकुचित हो जाती हैं।
३ पूर्ण कोष्ठबद्धता हो जाती है।
४ अस्थियों तथा संधियों में तीव्र वेदना।
५. तीव्र शिरःशूल। ६ मूर्च्छा। ७ संज्ञानाश। ८ नेत्र नाड़ी शोथ।
९ आक्षेप। १० मिथ्याभास। ११ प्रलाप। १२ उन्माद।
१३ गर्भपात। १४ मैथुन शक्ति हीनता १५ घात (Paralysis).

चिकित्सा—

१ रोगी को विष-द्रव्यों से पृथक करना।
२ पोटेशियम या सोडियम आयोडाइड (Potassium or Sodium Iodide) का व्यवहार।
३ पराथायरायड (Parathyroid) या पैराथारमोन (Parathormone) का व्यवहार।
४ सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) का व्यवहार।
५ विरेचन का व्यवहार।
६ घात के लिये स्ट्रिक्नीन हाइड्रोक्लोराइड (Strychnine Hydrochloride) को त्वचा में प्रविष्ट करावें।

यशद (जिंक Zinc)

योग—

१. जिंक सल्फेट (Zinc Sulphate)—सफेद तूतिया। यह रंगहीन, कणीय चूर्ण में होता है। जल में पूर्ण रूप से घुलन शील है।

२. जिंक आक्साइड (Zinc oxide)—यशदभस्म। यह मृदु, श्वेत रंग का, स्वादहीन, गंधहीन चूर्ण में मिलता है। यह एसिड में घुलन शील होता है।

घातक मात्रा—६ ग्रेन से ½ औंस। घातक काल—२ घण्टे से ५ दिन।

लक्षण—तीव्र (Acute)

१. लाला स्रावाधिक्य। २ वमन। ३. उदर तथा आमाशय में वेदना।
४. तीव्र अतिसार। ५. आक्षेप। ६. अवसाद।
७. मृत्यु। ८. मूकता।

चिकित्सा—

१. गरम जल वा गरम दूध पिलाना। २ अण्डा देना।
३. जिंक क्लोराइड के अतिरिक्त अन्य विष में उदर प्रक्षालन करना चाहिये।
४. लाक्षणिक चिकित्सा।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१. अग्निमांद्य। २. शूल। ३. कोष्ठबद्धता। ४. पाण्डु।
५. नाड़ीशोथ। ६ घात।

विस्मथ (Bismuth)

योग—

१. विस्मथ कार्बोनेट (Bismuth Carbonate)
२. विस्मथ सबनाइट्रेट (Bismuth Subnitrate)
३. विस्मथ सैलिसिलेट (Bismuth Salicylate)

घातक मात्रा—२ ड्राम।

घातक काल—९ दिन में। शिरागत सूची द्वारा ९ मिनट में।

लक्षण—

१. लाला स्रावाधिक्य। २ गला और उदर में वेदना।
३ वमन। ४. अतिसार भूरे रंग का।
५. दन्तवेष्ट पर कृष्णवर्ण की रेखा बन जाती है।
६. दन्तवेष्ट शोथ तथा व्रणयुक्त हो जाता है।
७. श्वास में विस्मथ का गंध निकलता है।
८. नाड़ी क्षीण। ९. हृदय प्रदेश में वेदना। १०. मूत्राल्पता या घात।
११. अवसाद। १२. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. अमाशय प्रक्षालन। २ वामक द्रव्य प्रयोग।

३ सोडियम थायोसल्फेट (Sodium Thiosulphate) ०.५ ग्राम की मात्रा में शिरा में प्रविष्ट करना चाहिये।

४ वमन शान्ति के लिये वर्फ चूसना।

५ वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) देना।

६ विरेचक द्रव्य देना। ७ वस्तिकर्म करना।

चाँदी (सिल्वर Silver)

योग—

१ सिल्वर नाइट्रेट (Silver nitrate) २. आर्जिराल (Argyrol)

३. प्रोटार्गल (Protargol or Silver Protein)

४ कोलार्गाल (Collargol)

घातक मात्रा—३० ग्रेन। घातक काल—३ दिन।

लक्षण—तीव्र (Acute)

१ गला तथा आमाशय में तीव्र वेदना। २ वमन। ३. अतिसार।

४ ऐंठन। ५ आक्षेप। ६ अवसाद। ७. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. सोडियम क्लोराइड (Sodium Chloride) के घोल से आमाशय प्रक्षालन करना।

२. सोडियम क्लोराइड को ½ औंस की मात्रा में दूध के साथ पिलाना। यह प्रतिविष है।

३. एपोमार्फीन हाइड्रोक्लोराइड (Apomorphine Hydrochloride) का त्वचागत सूची वेधकर वमन कराना।

४. अण्डा का व्यवहार। ५ मार्फीन का व्यवहार।

६ उत्तेजकौषधियों का प्रयोग।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१. दन्तवेष्ट पर काली रेखा मिलती है। २ चर्म विवर्ण हो जाता है।

३ प्रसारक पेशियों का घात।

चिकित्सा—हेक्जामीथाइलेमीन (Hexamethylamine) को ५ ग्रेन की मात्रा में ३ वार देने से चर्म की विवर्णता ठीक होती है।

लोह (आयरन Iron)

योग—

१ फेरससल्फेट (Ferrous Sulphate)—कसीस। यह जल में पूर्ण रूप से घुलन शील है।

२ फेरिकक्लोराइड (Ferric chloride)—जल में घुलन शील है।
घातक मात्रा—१½ औंस। घातक काल—५ सप्ताह।

लक्षण—

१. आमाशय तथा उदर में तीव्र वेदना। २ वमन।
३ कृष्णवर्ण का अतिसार। ४ मूत्राघात। ५ अवसाद।
६ मृत्यु। ७ कभी कभी आक्षेप। ८ घात।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २. वामक द्रव्यव्यवहार।
३. सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) युक्त जल पिलाना।
४. दुग्ध पिलाना। ५. अहिफेन का व्यवहार।
६ आवश्यकतानुसार उत्तेजक औषधियों का व्यवहार।

मैंगनीज (Manganese)

योग—

१. पोटेशियम परमाग्नेट (Potassium Permangnate)
२. मैंगनीज डाइआक्साइड (Manganese dioxide)
घातक मात्रा —२ से १० ग्रेन घातक काल —½ घंटेसे २ दिन।

लक्षण—तीव्र (Acute)

१. मुख, गला आमाशय और उदर मे दाह युक्त वेदना। २. तीव्र प्यास।
३. निगलने में कष्ट। ४ सतत वमन। ५ श्वास कष्ट।
६ जिह्वा तथा ग्रसनिका दग्ध हो जाती है।
७. हृदय के घात (Paralysis) से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. चारकोल (Charcol) को सावधानी के साथ देना चाहिये।
२. अण्डे की सफेदी और दुग्ध का व्यवहार करना चाहिये।
३ कैल्शियम ब्रोमाइड (Calcium Bromide) को शिरा में प्रविष्ट कराना चाहिये।
४. कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium Gluconate) को मांसमें प्रविष्ट करना चाहिये।
५. लक्षण की चिकित्सा करनी चाहिये।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१ अकड़न के साथ साथ मांस पेशियों की क्षीणता।
२ चलने मे कठिनाई होती है।
३. पादस्थ मांस पेशियों मे आक्षेप के साथ ऐंठन।
४ कण्डराओं की प्रतिक्रिया वृद्धि (Tendon reflex) ५. निद्रानाश।

६ मुखमण्डल सकुंचित तथा विकृत। ७ अकारण चिल्लाना तथा हंसना।
८ स्मरणशक्ति हीनता। ९ मैथुन शक्ति की हीनता। १०. वात।

चिकित्सा—

१. मैंगनीज के खानों तथा कारखानों से रोगी को पृथक् रखना।
२. शुद्ध वातावरण में रखना।

कलई (टिन Tin)

इसका स्टेनस (Stannous) तथा स्टेनिकक्लोराइड (Stannic Chloride) नामकलवण ही विषैले होते हैं।

घातक मात्रा—½ ड्राम। घातक काल—अनिश्चित।

लक्षण—

१ हृल्लास। २ वमन। ३. उदर में वेदना। ४. अतिसार।
५ क्षीण तथा अनियमित नाड़ी। ६. नीलिमा। ७. शिरः शूल।
८. क्षीणताधिक्य। ९. अवसाद। १०. चेतना हीनता।

चिकित्सा—

१. वामक द्रव्य व्यवहार। २ आमाशय प्रक्षालन। ३ अण्डा।
४. दुग्ध, घी आदि का व्यवहार। ५ उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार।
६. वेदना नाशक ओषधियों का व्यवहार।

पोटेशियम (Potasium)

लक्षण—

१. पोटेशियम नाइट्रेट (Potassium Nitrate)—कलमी शोरा। जल में घुलनशील है

घातक मात्रा—१ औंस। घातक काल—१२ घंटा।

लक्षण—

१. हृल्लास। २. आमाशय तथा हृदयाधरिक प्रदेश में वेदना।
३ वमन। ४ अतिसार ५. रक्तमेह। ६. श्वासकष्ट।
७. क्षीण तथा अनियमित नाड़ी। ८. आक्षेप। ९ अवसाद। १०. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २ त्वचागत स्ट्रिक्नीन (Strychnine) का व्यवहार।
३. हृदयाधरिक प्रदेश पर राजिका लेप। ४. शरीर को गरम करना।
५. दुग्ध तथा घृत पिलाना। ६ लाक्षणिक चिकित्सा।

पोटेशियम क्लोरेट—(Potassium Chlorate)—रंगहीन, कण के रूप मे होता है; जो तिगुने गरम जल में घुलता है।

घातक मात्रा—२ ड्राम । घातक काल—१२ घंटे से ३ सप्ताह ।

लक्षण—

१. आमाशय तथा उदर में वेदना । २ तीव्रवमन । ३. अतिसार ।
४. श्रम । ५ शिरः शूल । ६ मांसल क्षीणता । ७ उरु में वेदना ।
८. मूत्र में रक्तरंजनपदार्थ की अधिकता । ९ नीलिमा । १० कामला ।
११. प्रलाप । १२. सन्यास । १३ मृत्यु ।

चिकित्सा—

१. वामकौषधि देना । २ आमाशय प्रक्षालन ।
३. पिलोकार्पीन (Pilocarpine) को त्वचा में प्रविष्ट करना । यह लालास्राव को बढाती है । ४ आक्सीजन सुंघाना । ५ उत्तेजकौषधि व्यवहार ।
६ रक्त प्रदान । ७ नारमलसेलाइन (Normal Saline) का व्यवहार ।

स्वर्ण (Gold)

योग—

१ गोल्ड क्लोराइड (Gold chloride)
२. गोल्ड एण्ड सोडियम क्लोराइड (Gold and Sodium Chloride)
३. सोडियम आरोथायोसलफेट (Sodium Aurothiosulphate) या सैनोक्रायसीन (Sanocrysin)

घातक मात्रा—अनिश्चित । घातक काल—८ दिन ।

लक्षण—

१ ओष्ठ, जिह्वा, दन्त तथा कपोल के अन्दर का भाग गुलाबी रंग का हो जाता है।
२ हृदयाधरिक प्रदेश में स्पर्शासहत्व । ३ लालास्रावाधिक्यता ।
४ लगातार वमन । ५ अतिसार । ६ ज्वर । ७ मूत्र में श्वेतसाराधिक्य ।
८. अवसाद । ९ चर्मपिडिका । १० मुखपाक । ११. कामला
१२ हृदय की मांस पेशियों की शिथिलता । १३ फुफ्फुस में सूजन (Oedema)
१४ पाण्डु ।

चिकित्सा—

१. कैल्शियमग्लुकोनेट (Calcium Gluconate) के १०% प्र० शत घोल को १० सी० सी० की मात्रा में प्रविष्ट करना चाहिये ।
२ अण्डा, दूध आदि देना चाहिये ।
३. सोडियमथायोसलफेट (Sodium Thiosulphate) को शिरागत या मुखद्वारा देना चाहिये ।
४ B. A L. का व्यवहार प्रभावशाली होता है

फिटकिरी (Aluminum)

गुणधर्म—यह पारदर्शक, रंगहीन, अष्टकोणीयकण के रूप में मिलता है। यह जल तथा ग्लीसरीन में घुलनशील होता है। इसका व्यवहार रंगने में तथा जल के निस्यन्दन मे होता है।

घातक मात्रा—½ से १ औंस। घातक काल—२४ घण्टा।

लक्षण—

१ मुख, गला और आमाशय में दाहयुक्त वेदना। २. रक्तमिश्रित वमन।
३ श्वासकष्ट। ४ अस्वभाविक नाडी। ५ स्वभाविक से कम ताप।
६. आक्षेप। ७. मृत्यु।

चिकित्सा—

१ वामक द्रव्यों का व्यवहार। २ सुधा जल का व्यवहार।
३. दुग्ध में सोडा कार्ब (Sodium Carbonate) मिलाकर पिलाना।

क्षोभक विष (Irritant Organic poisons)

वानस्पतिक विष (Vegetable poisons)

एरण्ड (रिसिनस कमुनिस Recinus Communis)

गुणधर्म—एरण्ड के बीज मे एक रिसीन (Ricin) नामक पादार्थ होता है, जो तीव्र क्षोभक विष है। यह रक्त के लाल कणों को नष्ट कर देता है। इसका तैल, औषधि में प्रयुक्त होता है। यह अल्कोहल (९०%) मे घुलन शील होता है। एरण्ड की खली अत्यधिक विषैली होती है।

घातक मात्रा—१० बीज। घातक काल—२ से ६ दिन।

लक्षण—

१. गले में दाहयुक्त वेदना। २ हृल्लास। ३ तीव्र वमन
४ तृषा। ५ श्रम। ६ उदर शूल।
७ क्षीण तथा तीव्र नाड़ी गति। ८ शीतल, स्निग्ध चर्म। ९ ऐंठन।
१० क्षीणता। ११. अवसाद (Collapse) १२ मृत्यु।
१३. अतिसार होता है वा नहीं भी होता है।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २ उत्तेजक औषधि व्यवहार।
३ त्वचागत मार्फीन (Morphine) देना चाहिये।
४. शरीर को गरम रखना चाहिये।

जमाल गोटा (क्रोटन टिग्लियम Croton Tiglium)

गुणधर्म—इसका तैल अधिक व्यवहार में आता है। यह तीव्र विरेचक होता है। इसका तैल अल्कोहल, ईथर, क्लोराफार्म या ओलिव आयल में घुलन शील है। जब तैल चर्म के सम्पर्क मे आता है, तब दाह, शक्तिया और फफोला उत्पन्न हो जाता है।

घातक मात्रा—४ बीज। तैल की–२० से ३० बूंद।

घातक काल—४ घण्टे से ३ दिन।

लक्षण—

१ मुख, गला तथा उदर में गरमी तथा दाहयुक्त वेदना।

२ लाला स्रावाधिक्य। ३. वमन।

४. तीव्र मरोड़ के साथ रक्त मिश्रित अतिसार।

५ भ्रम। ६ क्षीणता। ७ अवसाद। ८. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २. घी मिश्रित दुग्धपान।

३ वेदना के लिये मार्फीन।

४ अवसाद के लिये स्प्रिट कैम्फर (Spirit Camphor) तथा अन्य उत्तेजकौषधि व्यवहार।

५. धनियां, मिश्री तथा दही एकत्र मिलाकर खिलाना।

घुमची या रत्ती (Indian Liquorice)

गुणधर्म—इसका पौदा लता में होता है। बीज अण्डावत लाल रंग का होता है; जिसके एक शिरे पर काले रग का दाग होता है। यह लाल तथा श्वेत दो प्रकार का होता है। इसके बीज में विषैला प्रोटीन (Protein) स्थित होता है। इसमें एब्रीन (Abrin) नामक विषैला पदार्थ रहता है, जो शीतल जल तथा ग्लीसरीन मे घुलन शील है।

घातक मात्रा—१½ से २ ग्रेन। घातक काल—३ से ५ दिन।

लक्षण—घुमची के एक्स्ट्रैक्ट को त्वचा में प्रविष्ट करने पर निम्न लक्षण व्यक्त होते हैं:—

१. स्थानिक वेदना, शोथ तथा नीलिमा।

२. शोथ शीघ्रता के साथ कोथ में परिणित हो जाता है।

३. मूर्छा। ४. भ्रम। ५. वमन। ६. श्वासकष्ट।

७. क्षीणता। ८ शीतलता तथा स्निग्ध चर्म। ९. सूक्ष्म तथा अनियमित नाड़ी।

१०. आक्षेप। ११. हृदय के घात से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. शस्त्र कर्म द्वारा विष को स्थान से निकालना।

२. एण्टी एब्रीन (Anti-Abrin) नामक पदार्थ को छोटी मात्रा से प्रारम्भ कर उत्तरोत्तर बढ़ाते हुये प्रविष्ट करना।

नोट—रत्ती को आँग्ल भाषा में एब्रस प्रीकेटोरियश (Abrus precatorius) कहते हैं।

इन्द्रायण (कोलोसिंथ Colocynth)

घातक मात्रा—१५ से ३० ग्रेन। घातक काल—२४ घण्टा।

लक्षण—

१. उदर में तीव्र वेदना। २. पीत वर्ण का वमन।
३. पीत वर्ण का पतला मल त्याग। ४. अनियमित नाड़ी।
५. अवसाद। ६. कभी कभी मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन।

२. वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) का व्यवहार करना।

३. घी मिश्रित दुग्ध या बार्ली देना।

४. उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार करना।

अर्गट (Ergot)

घातक मात्रा—३० ग्रेन। घातक काल—अनिश्चित।

लक्षण—तीव्र (Acute)

१. गले में क्षोभ तथा शुष्कता। २. तृषा। ३ हृल्लास।
४. वमन। ५. आमाशय में दाहयुक्त वेदना।
६. शूल। ७ भ्रम। ८. कुछ अतिसार। ९. दृष्टि में व्यवधान।
१०. क्षीण तथा तीव्र नाड़ी। ११ श्वास कष्ट। १२. मांस क्षीणता।
१३. वेदना युक्त ऐंठन। १४. आक्षेप।
१५. स्वाभाविक से कम तापक्रम। १६. मूत्राघात। १७. प्रलाप। १८. मूकता।
१९. सन्यास। २०. नाशा से रक्तस्राव। २१. रक्तष्ठीवन।
२२. रक्तमेह। २३. गर्भपात जन्य गर्भाशयिक रक्तस्राव। २४. मृत्यु।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१. कण्डू। २. शरीर पर कीड़े रेंगने जैसा ज्ञात होना।

३ हाथ तथा पाँव की शून्यता, जो थोड़े काल के पश्चात् सर्व शरीर में फैल जाती है।

४. शाखाओं की मांसपेशियों में वेदना युक्त तीव्र संकोच।

५. दृष्टि की मंदता। ६. बाधिर्य। ७. खालित्य।

८. आक्षेप तथा उन्माद। ९. श्वासावरोध से मृत्यु।

१०. अंग फूल जाते हैं।

११. चर्म पर चकत्ते तथा फफोले बनकर कोथ उत्पन्न कर देते हैं।

१२. कोथ शुष्क प्रकार का होता है, जो सर्व प्रथम अंगुलियों और अंगुष्ठ से प्रारम्भ हो कर ऊपर कुहनी तथा जानु सन्धि तक फैल जाता है।

१३ कभी कभी नासा, कर्ण तथा आभ्यन्तरिक अंगों में भी कोथ प्रारम्भ हो जाते है।

चिकित्सा—

१. वामक द्रव्य का व्यवहार। २. आमाशय प्रक्षालन।

३ विरेचन या वस्ति कर्म करना। ४ शरीर को गरम रखना।

५ उत्तेजकौषधि व्यवहार।

६ एमाइल नाइट्राइट (Amyl nitrite) सुंघाना।

७ चिरकालिक विष में कारण को नष्ट करना।

भिलावा (Marking-Nut-Tree)

घातक मात्रा—९ माशा। घातक काल—अनिश्चित

लक्षण—बाह्य

१. भिलावे के रस को चर्म पर लगाने से चर्म सूज जाता है तथा चर्म पर वेदनायुक्त फफोले उत्पन्न हो जाते हैं।

२ व्रण बन जाता है। ३ कोथ उत्पन्न हो जाता है। ४. मृत्यु।

आभ्यन्तरिक—

१ जिह्वा तथा गले में फफोले बन जाते हैं। २ ज्वर।

३ वमन तथा अतिसार। ४ वेदना के साथ रक्त मिश्रित मूत्र त्याग।

चिकित्सा—

१. इमली के पत्ते का रस पिलाना। यह कण्डू तथा शोथ नाशक है।

२ चिरौंजी और तिल भैंस के दूध में पीस खिलाना। यह भी कण्डू तथा शोथ नाशक है।

३ कसौंदी के पत्ते को पीस कर लगाना चाहिये।

४ काली तिल पीस कर सिरका तथा मक्खन में मिला कर लेप करने से भिलावे के धूम्र से उत्पन्न शोथ नष्ट होता है।

५ घी का मालिश करना।

६ दही, मिश्री एक साथ खाने गरमी शान्त होती है।

मदार (Madar or Calotropis Gisantea)

घातक मात्रा—अनिश्चित। घातक काल—½ से ८ घण्टा।

लक्षण—

१ गले तथा आमाशय में दाह युक्त वेदना। २. लालास्रावाधिक्य।
३. मुखपाक। ४ वमन। ५ अतिसार। ६ प्रसारित कनीनक।
७. आक्षेप। ८ प्रलाप। ९ अवसाद। १०. मृत्यु।
११. जहां इसका दूध लगता है, वहां लालिमा, शोथ तथा फफोला हो जाता है।

चिकित्सा—

१ पलाश का क्वाथ पिलाना।
२ व्रण पर पलाश के सूखे छाल का चूर्ण बुरकना तथा क्वाथ से व्रण धोना।
३ घी मिश्रित दुग्ध पिलाना।
४ आक्षेप तथा वेदना शान्ति के लिये मार्फीन त्वचा में प्रविष्ट करना।
५ अवसाद को दूर करने के लिये उत्तेजक औषधि का व्यवहार करना चाहिये।

काल्शिकम (Colchicum)

घातक मात्रा—

१ ग्रेन। $\frac{1}{20}$ ग्रेन त्वचागत। ३½ ड्राम वाइनमकाल्शिकम (Vinum Colchicum)

घातक काल—२० घण्टा।

लक्षण—

१ मुख, गला, अन्नप्रणाली तथा आमाशय में दाह युक्त वेदना।
२ मुख तथा गला शुष्क होता है; जिससे निगलने में कष्ट होता है।
३ तृषाधिक्य। ४ हृल्लास। ५. वमन।
६ वेदना के साथ रक्त तथा श्लैष्मिक कला युक्त पतला दस्त। ७ भ्रम।
८ चर्म शीतल। ९ मुखमण्डल भेक वर्ण या नीलिमा युक्त।
१०. नाड़ी सूक्ष्म, अनियमित तथा अव्यक्त।
११ श्वासप्रश्वास मन्द तथा कठिनता के साथ होता है।
१२ कनीनक प्रसारित। १३ आक्षेप।
१४. मूत्राल्पता। मूत्र में रक्त निकलना।
१५ अवसाद। १६ मृत्यु।

चिकित्सा—

१. टेनिक एसिड (Tannic Acid) मिश्रित जल से आमाशय प्रक्षालन। यह प्रतिविष है।
२. वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) सूची।
३. घृत मिश्रित दुग्ध पिलाना।

४. अवसाद में नार्मल सेलाइन और ग्लुकोज मिलकार शिरा में प्रविष्ट करना। स्ट्रिकनीन और एट्रोपीन त्वचागत देना।
५. शरीर को गरम रखना।
६. आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास-क्रिया करना।

काली कुटकी (Helleborus niger)

घातक मात्रा—३१ ग्रेन। घातक काल—२ से ८ घण्टा।

लक्षण—

१. वमन। २. उदर में वेदना। ३ अतिसार। ४. स्वेदाधिक्य।
५. आक्षेप। ६. संज्ञानाश। ७. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन।
२. उत्तेजक तथा शामक औषधियों का व्यवहार।

रेवन्द चीनी (Gamboge)

घातक मात्रा—१ ड्राम घातक काल—अनिश्चित

लक्षण—

१. गम्भीर पीले रंग का वमन तथा अतिसार।
२. उदरस्थ वेदना। ३. अत्यधिक क्षीणता।
४ अवसाद। ५. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २ घृत मिश्रित दुग्धपान।
३ वेदना शान्ति के लिये मार्फीन का व्यवहार।
४ अतिसार बंद करने के लिये अहिफेन का व्यवहार।
५ अवसाद नाशन के हेतु उत्तेजकौषधि का व्यवहार।

आकाश वेल (Cuscuta Reflexa)

इसका व्यवहार पंजाब में गर्भपात के लिये किया जाता है।

लक्षण—

१ हृल्लास। २ वमन। ३ क्षीणता।

मुसव्बर (Aloes)

घातक मात्रा—२ ड्राम। घातक काल—१२ घण्टा।

लक्षण—

१. उदर में शूल।

२. मरोड़ के साथ अतिसार जिसमें रक्त भी निकलता है।

३. अत्यधिक क्षीणता। ४ मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २ लाक्षणिक।

जंगली प्याज (Urginea Indica)

इसे अंग्रेजी भाषा में अर्जिनिया स्किल (Urginea Scille or Squill) कहते हैं।

घातक मात्रा—२४ ग्रेन। घातक काल—२ दिन।

लक्षण—

१. हल्लास। २. वमन। ३. अतिसार। ४ रक्त युक्त मूत्र त्याग।

५. हृदयावसाद।

चिकित्सा—

१ वामकौषधि देना। २ आमाशय प्रक्षालन। ३ लाक्षणिक चिकित्सा।

कलिहारी (Gloriosa superba)

घातक मात्रा—२ तोला। घातक काल—४ से १२ घण्टा।

लक्षण—

१. हल्लास। २ तीव्र वमन। ३ अतिसार। ४ ऐंठन। ५. आक्षेप।

६. संज्ञाधिक्य। ७ अवसाद। ८. मृत्यु।

चिकित्सा—

१ वामक द्रव्य व्यवहार। २. आमाशय प्रक्षालन।

३. दही का पानी निकाल अवशिष्ट भाग मिश्री के साथ खिलाना।

४ हृदयोत्तेजक औषधियों का व्यवहार।

नागदवन (Asiaticum)

घातक मात्रा—२ तोला। घातक काल—अनिश्चित।

लक्षण—

१ चर्म पर लगाने से फफोले बन जाते हैं।

२. हल्लास। ३. वमन। ४. अतिसार। ५. अवसाद। ६ मृत्यु।

चिकित्सा—

१. वमन कराना। २. आमाशय प्रक्षालन। ३ लाक्षणिक।

काकफल (Cocculus Subrosus)

घातक मात्रा—पिक्रोटाक्सीन (Picrotoxin) का ३ ग्रेन।

घातक काल—३० मिनट से ३ घण्टे।

लक्षण—

१ अन्नप्रणाली तथा आमाशय में दाहयुक्त वेदना।

२ लालास्रावाधिक्य। ३. हृल्लास। ४. वमन।

५ अतिसार। ६ स्वेदाधिक्य। ७ भ्रम। ८. संज्ञाहीनता।

९ मांस पेशियों में ऐंठन तथा शिथिलता। १० श्वासावरोध से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. ऐंठन को नष्ट करने के लिये वार्बिचुरेट (Barbiturate) को शिरा में प्रविष्ट करें।

२ आमाशय प्रक्षालन।

३. २५% प्र० श० ग्लुकोज (Glucose) को शिरा में प्रविष्ट करें।

४. आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वासकर्म करना।

निषेध—क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate) या क्लोरोफार्म (Chloroform)

जान्तव विष (Animal Poisons)

सर्प (Snakes)

सर्प के दो भेद—

१ विषैला (Poisonous) २ निर्विष (Non Poisonous)

सर्पविष स्वरूप (Charateristics of Snake Venom) सद्यः (ताजा) विष स्वच्छ तथा पारदर्शक तरल रूप में होता है। यह धूप या सल्फुरिक एसिड (Sulphuric Acid) के सम्पर्क में आने पर पीले रंग के कण के रूप में परिणित हो जाता है। सूखने पर विष का चूर्ण किया जाता है। यह जल मे शीघ्रता के साथ घुल जाता है।

घातक मात्रा—१५ से ४० मिलीग्राम (Milligrammes)

घातक काल—२० मिनट से ३० घण्टा।

लक्षण—विभिन्न प्रकार के सर्पों के काटने से विभिन्न प्रकार के लक्षण व्यक्त होते हैं।

कोबरा या करइत के दंश लक्षण—

१. स्थानिक दाह, वेदना, लालिमा, सूजन तथा क्षोभ। २ भ्रम।

३ मांसक्षीणता (Muscular Weakness) ४ नशा मालूम होना।

५ हृल्लास। ६ वमन। ७ अधः शाखाओं का वात (लकवा)।

८ घात, धड़ तथा शिर तक पहुच जाता है, जिससे शिर झूल जाता है।

९. ओष्ठ, जिह्वा तथा गले की पेशियों का भी घात हो जाता है जिससे शब्दोच्चारण तथा निगलने में कठिनाई होती है।
१०. मुख में लाला एकत्रित हो जाता है।
११. श्वास मन्द तथा कष्ट के साथ चलते चलते बन्द हो जाता है।
१२ कभी कभी आक्षेप हो जाता है।

धोबिया के दंश का लक्षण—

१. स्थानिक वेदना, सूजन तथा विवर्णता हो जाती है।
२. दंश स्थान से रक्तस्राव होता है। ३ हृल्लास। ४ वमन।
५ चर्म शीतल तथा स्निग्ध। ६ सूक्ष्म तथा तन्तुवत्, अव्यक्त नाड़ी।
७. कनीनक प्रसारित होती है, जिस पर प्रकाश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
८ पूर्ण संज्ञानाश। ९ श्लैष्मिक कलाओं से रक्तस्राव।
१० दंश स्थान कोथ युक्त हो जाता है। ११ विषमयता से मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा—

१ शाखाओं के दंश स्थान से थोड़ा ऊपर कसकर बाँध देना चाहिये। यह बन्धन आधे घण्टे से अधिक नहीं रहना चाहिये।
२. अस्थि तथा बडी रक्त प्रणाली को बचाते हुये दंश स्थान पर गम्भीर चीरा लगाना चाहिये।
३ क्षत को पोटेशियम परमाग्नेट (Potassium Permangnate) के घोल से प्रक्षालित करना चाहिये।
४ दंश स्थान के पास गोल्ड क्लोराइड (Gold Chloride) को १५ ग्रेन की मात्रा में जल मे घुलाकर त्वचा में प्रविष्ट करना चाहिये।
५. धोबिया के विष में हीपरीन (Heparin) को शिरा मे प्रविष्ट कराना चाहिये। यह विष का शोषण कर लेता है।
६. पालीवैलेण्ट एण्टी-स्नेक वेनम (Polyvalent Anti-Snake Venom) सीरम को तत्काल २० मिल की मात्रा मे शिरा मे प्रविष्ट करावें। इसको दो घण्टे बाद पुनः देवे। घातक रोगियों में लक्षणों के पूर्ण रूप में अव्यक्त होने तक प्रत्येक ६, ६ घण्टे पर प्रविष्ट करावें। स्थानिक कोथ को रोकने के लिये सीरम (Serum) को दंश स्थान पर भी प्रविष्ट करावे।
७ सीरम की अनुपस्थिति में एण्टीवेनीन (Antivenene) को शीघ्रता के साथ ४० सी० सी० की मात्रा मे शिरा मे प्रविष्ट करना चाहिये। आवश्यकतानुसार इस मात्रा को दुहरायी भी जा सकती है।
८ स्ट्रिक्नीन, पिच्युट्रीन (Pituitrin) या एड्रेनलीन क्लोराइड (Adrenaline Chloride) को त्वचा में प्रविष्ट करना चाहिये।

९ शरीर को गरम रखना चाहिये।
१० उष्ण उष्ण काफी या चाय पिलाना चाहिये।
११ शिरागत नारमल सेलाइन (Normal Saline) प्रविष्ट करना चाहिये।
१२. आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास क्रिया करानी चाहिये।
१३ पीपर ३ माशा। अदरख ३ माशा
काली मिर्च ,, ,, सेंधानमक ,, ,,
एकत्र पीस, कपडछान चूर्ण कर घी, मधु तथा मक्खन में एकत्र मिला खिलाना। विष नाशन में श्रेष्ट है।
१४ परवल के जड़ का नस्य देना। यह विष नाशक है।
१५ राई, लहसुन तथा प्याज अधिक मात्रा मे खिलाना।
१६ ३ माशा नौसादर का चूर्ण शीतल जल से घोल कर पिलाना तथा अमोनिया (Ammonia) सुंघाना। यह भी विष नाशक है।
१७. फिटकिरी पीस जल में घोल पिलाना।

बिच्छू विष

लक्षण—

१ दंश स्थान पर दाह।
२ विष का संचार ऊपर को होता है, जिससे शरीर तोड़ने सदृश वेदना होती है।
३. वेदना। ४ कम्प तथा आक्षेप होता है। ५. सूजन।
६ स्वेदाधिक्य। ७ काला रक्त निकलना।
८ जिह्वा सूज जाती है। वमन तथा अतिसार होता है।
९. निगलने में कष्ट। १० ज्वर। ११. स्तब्धता।
१२. बेहोशी। १३ मृत्यु।

चिकित्सा—

१ दंश स्थान से ऊपर शीघ्रता के साथ कसकर बाँधना।
२. दंश स्थान को चीर कर रक्त निकालना।
३. चीरे में पोटेशियम परमाग्नेट (Potassium Permangnate) लगाना।
४. दंश स्थान को दग्ध करना। ५ गरम गरम दूध पिलाना।
६ लहसुन रस ३ तोला मधु ३ तोला
एकत्र मिला कर रोगी को पिलाना। विषनष्ट होता है।
७ मूली तथा नमक पीस कर दंश स्थान पर लगाने से विष नष्ट होता है।
८ नौसादर ३ तोला सुहागा ३ तोला कली का चूना ३ तोला
इन्हें एकत्र मिला कर रोगी को कई बार सुंघावे। अवश्य आराम होता है।

९. अपामार्ग (चिरचिडी) के जड़ को जल के साथ पीस कर दंश स्थान पर लगाना चाहिये। साथ ही जड़ को चिवाना तथा रस चूसना चाहिये। विष तत्काल नष्ट होता है।

१० अस्तब्धता को दूर करने के लिये कैफीन (Caffein) तथा एट्रोपीन सल्फेट (Atropine Sulphate) को त्वचा में प्रविष्ट कराना चाहिये।

११. कोकेन (Cocaine) का ५% प्र० श० घोल क्षत के चारों ओर लगाना चाहिये।

बर्र तथा मधु-मक्खी आदि का विष

लक्षण—

१. स्थानिक क्षोभ तथा दाह युक्त वेदना।
२ सूजन।
३ मुखमण्डल की उदासीनता।
४ बेचैनी।
५ अनैच्छिक मल मूत्र त्याग।
६ चर्म शीतल तथा स्निग्ध।
७ स्तब्धता से मृत्यु।

चिकित्सा—

१ चाकू आदि से आर (Sting) को निकालना।
२ दंश स्थान को अमोनिया (Ammonia) घोल में डूबाना।
३ वेदना शान्ति के लिये उष्ण सेंक करना।
४ वर्र दंश पर सिरका लगाना।
५ मुसब्बर के चूर्ण को ६०% प्र० श० ईथिल अल्कोहल (Ethyl Alcohol) में घुलाकर २०% प्र० श० शक्ति का घोल बनाकर दंश स्थान पर लगाना। इससे वेदना तुरन्त बन्द हो जाती है तथा सूजन नहीं होती यदि सूजन रहती है। तो अत्यधिक कम हो जाती।
६. कपूर तथा सिरका एकत्र मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

अहिफेन (Opium)

अहिफेन पोस्ते के कच्चे ढोढ के रस से तैयार होता है।

घातक मात्रा—४ ग्रेन से २० ग्रेन। घातक काल—८ से १२ घण्टा।

लक्षण—अहिफेन के विष का लक्षण ३ अवस्थाओं मे व्यक्त होता है।

उत्तेजना की अवस्था (Stage of excitement)—

१ मस्तिष्क क्रिया की वृद्धि।
२ व्यग्रता (Restlessness).
३ मिथ्याभास (Hallucinations)
४ मुखमण्डल का लाल हो जाना।
५ हृदय के कार्य की वृद्धि।
६ शिशुओं में आक्षेप।

निद्रा की अवस्था (Stage of Stupar)—

१ शिरःशूल। २ भ्रम। ३ निद्राधिक्य। ४ संकुचित कनीनक।
५. मुखमण्डल तथा ओष्ठ का नीला हो जाना। ६. चर्म पर कण्डू मालूम होना।

सन्यासावस्था (Stage of narcosis)

१ गम्भीर सन्यास। रोगी सन्यास से जगाया नहीं जा सकता।
२. मांस पेशियां शिथिल हो जाती हैं।
३ परावर्तित क्रियायें नष्ट हो जाती हैं।
४ सम्पूर्ण स्राव पूर्ण रूप से रुक जाते हैं।
५ मुखमण्ड धुंधला हो जाता है। ६ अधोहनु शिथिल हो जाता है।
७ कनीनक संकुचित हो सूची मुखवत हो जाती है तथा प्रकाश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
८. वर्त्मंमण्डल (Conjunctiva) लाल हो जाता है।
९ नाड़ी मंद तथा क्षुद्र हो जाती है।
१० श्वास प्रश्वास मद, कष्टप्रद तथा शब्द युक्त हो जाता है।
११ श्वासावरोध से मृत्यु।

अस्वाभाविक लक्षण (Un-usual Symptoms)—

१ वमन। २ अतिसार। ३ आक्षेप। ४ तापाधिक्य।
५. मांस पेशियों की दृढ़ता। ६ तीव्र प्रलाप। ७ श्वासप्रश्वास की क्षीणता।

निदान (Diagnosis)—अहिफेन विष के लक्षणों का पार्थक्य निम्न व्याधियों के लक्षणों से किया जाता है:—

१ मस्तिष्कगत रक्तस्राव (Apoplexy)
२ मूत्र विषता जन्य सन्यास (Uraemic coma)
३ मधुमेहज सन्यास (Diabetic Coma)
४. अपस्मार जन्य सन्यास (Epileptic Coma)
५. योषापस्मारजन्य सन्यास (Hysterical Coma)
६ मदात्यय जन्य विषमयता (Acute alcoholic Poisoning)
७. कार्बोलिक एसिड विषता (Carbolic acid Poisoning)
८. मस्तिष्क पीडन (Compression of the Brain)

मस्तिष्कगत रक्तस्राव—इसमें निम्न लक्षण मिलते हैं।

१ मेदस्वी तथा वृद्ध व्यक्तियों में होता है। २ अचानक तथा धीरे धीरे होता है।
३ नाडी मद तथा भरी हुई चलती है। ४ अर्द्धांग घात (Hemiplegia)
५ कनीनक प्रसारित होता है। ६ तापक्रम उच्च होता हैं।

मूत्र विषजन्य सन्यास—

१. वृक्क रोगों का पूर्वकालिक इतिवृत्त।
२. मूत्र में श्वेतसार तथा अक्षेप की उपस्थिति।
३ सम्पूर्ण शरीर फूला (Anasarca) होता है। ४ आक्षेप। ५ सन्यास।

मधुमेहज सन्यास—

१ श्वास प्रश्वास मंद होता है।

२ श्वास मे एसीटोन (Acetone) की मधुर गध निकलती है।

३· मूत्र मे शर्करा मिलती है।

अपस्मारजन्य सन्यास—

१ आक्षेप होता है।

२ मुखमण्डल तथा ओष्ठ श्वेत हो जाते है।

३ कनीनक प्रसारित होती है।

४ सन्यास अल्प होता है।

योषापस्मारजन्य सन्यास—

१· यह स्त्रियों में बहुधा होता है।

२ जिह्वा कटी नहीं होती।

३ मुख से लालास्राव होता है।

४ परावर्तित क्रियाये नही बदलती।

५ सन्यास शीघ्र ही अच्छा हो जाता है।

मदात्ययजन्य विषमयता—

१· मुखमण्डल लाल। २ नेत्र रक्तवर्ण। ३ कनीनक प्रसारित।

४· श्वास में मद्य का गंध निकलना। ५ शब्दपूर्ण श्वास प्रश्वास।

६ जोर से हिलाकर या बुलाकर उठाया जा सकता है। ७ घात नही होता।

कार्बोलिक एसिड विष—

१ मुख तथा ओष्ठ पर श्वेत रंग के चकत्ते दिखलाई देते हैं।

२· श्वास में दुर्गन्ध आती है। ३· हरे रंग का मूत्र त्यक्त होता है।

मस्तिष्क पीडन—

१· आघात का इतिहास। २ शिरोऽस्थि का भग्न।

३ असमान या प्रसारित कनीनक। ४ वर्त्माधः (Subconjunctival) रक्तस्राव।

चिकित्सा—

१ आमाशय प्रक्षालन। इस (आ० प्रक्षालन) के लिये पोटाश परमाग्नेट को १५ ग्रेन की मात्रा में १० छटांक जल से घोलकर व्यवहृत करना चाहिये।

२ वामक ओषधियों का व्यवहार। ३ विरेचन देना।

४ आवश्यकतानुसार शलाका द्वारा मूत्र निकालना।

५ रोगी पर शीतल जल का सिंचन करना; ताकि वह सोने न पावे।

६· एट्रोपीन (Atropine) को $\frac{1}{40}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये; इसको कनीनक प्रसारण तक बारम्बार प्रविष्ट करना चाहिये। यह ध्यान रहे कि इससे सुषुम्नाशीर्षक का घात होकर मृत्यु हो जाती है; अतः सावधानी से व्यवहार करना चाहिये।

७ शरीर को गरम रखना चाहिये।

८. कैफीन, स्ट्रिक्नीन आदि को त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।
९. हृदय तथा श्वास प्रश्वास को उत्तेजित करने के लिये २५% प्र० श० कोरामीन (Coramine) का ५ से १५ सी० सी० की मात्रा में शिरा या मांसगत प्रविष्ट करना चाहिये।
१० जब रोगी नीला पड जाय तथा नाडी गति क्षीण हो जाय तब शिराच्छेदन कर १५ औंस रक्त निकाल २५% प्र० श० ग्लुकोज घोल (Glucose Solution) शिरागत प्रविष्ट करना चाहिये। रक्त चाप की न्यूनता को दूर करने के लिये एड्रेनलीन क्लोराइड (Adrenaline Chloride) प्रविष्ट करना चाहिये।
११. दो माशा हींग ३ बार में खाने से अफीम विष नष्ट होता है।
१२ घी मिश्रित गाय का ताजा दूध पीने से अफीम विष नष्ट होता है।
१३ फिटकिरी और बिनौले का चूर्ण मिलाकर खिलाने से यह विष नष्ट होता है।

मद्य (Alcohol) ९९ व ९५ प्र० श०

प्रति शत के अनुसार मद्य का विवेचन—

१. ह्विस्की (whisky) ३२ से ४० प्र० श० २. रम (Rum) ४० प्र० शत।
३. जिन (Gin) ३३ से ४० प्र० श०
४ लाइकर्स (Liquors) १३ से ५४ प्र० श०
५ ब्राण्डी (Brandy या Spirit vini Gallici) ४० प्र० शत
६. पोर्ट (Port) १६ से २४ प्र० श०
७. शेरी एण्ड मैडेरा (Sherry and Madeira) १६ से २४ प्र० श०
८. चैम्पेन (Champagne) १० से १३ प्र० शत
९. एले (Ale) ३ से ५ प्र० श० या अधिक।
१०. बीयर एण्ड पोर्टर (Beer and Porter) ३ से ५ प्र० शत या अधिक।
११ काउमिस (Koumiss) १ से ३ प्र० शत।

घातक मात्रा—मद्य की तीव्रता तथा रोगी की अवस्था पर निर्भर है। एब्सोल्यूट मद्य (Absolute Alcohol) की ५ औंस की मात्रा घातक है।

घातक काल—१२ से २४ घण्टा।

लक्षण, तीव्र (Acute)—

१. विचार शक्ति की अस्थिरता। २. मांसल असहयोग (Inco-ordination)
३ भ्रम। ४. लड़खड़ा कर चलना।
५. मुखमण्डल का नीला तथा फूला होना। ६. अस्पष्ट वाणी।
७. मूकता। ८. हृल्लास। ९. वमन। १०. निद्रा।
११. तीव्र शिरःशूल। १२. सन्यास। १३. मंद तथा शब्द युक्त श्वास प्रश्वास।

१४. पूर्ण तथा तीव्र नाड़ी। १५. श्वास में मद्य का गंध निकलना।
१६. कनीनक प्रसारित। १७. तापक्रम स्वाभाविक से न्यून। १८. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. वामक ओषधि या आमाशय नलिका द्वारा आमाशय को रिक्त करना।
२ शिर पर वर्फ रखना। ३ शरीर को गरम रखना।
४. ग्लुकोज के साथ काफी (Coffee) पिलाना।
५. नारमल सेलाइन (Normal Saline) की वस्ति देना।
६. स्ट्रिक्नीन और कैम्फर (Strychnine and Camphor) को त्वचागत प्रविष्ट करना।
७. आक्सीजन तथा कार्बन डाइ आक्साइड (Carbon dioxide) सुंघाना।
८. धनियाँ पीसकर शक्कर के साथ खिलाना।
९ इमली के जल में गुड़ मिला कर खिलाना।

चिरकालिक (Chronic) विष के लक्षण—

१. क्षुधानाश। २. हृल्लास। ३. वमन, विशेषतः प्रातः काल।
४. अतिसार। ५ कामला। ६. जिह्वा तथा हाथों में कम्पन।
७. स्मरण शक्ति का नष्ट हो जाना। ८ अस्थिरता। ९ सर्वांग शोथ।
१० नाड़ी शूल। ११ सन्यास से मृत्यु। १२. मिथ्याभास मुख्य लक्षण हैं।
१३ आत्म हत्या, पर हत्या या वस्तुओं को तोड़ना।

चिकित्सा—

१ ग्लुकोज (Glucose) के साथ वार्लीवाटर (Barley Water) पिलाना।
२. सेलाइन (Saline) की नित्यप्रति वस्ति देना।
३ ३० या अधिक बूंद की मात्रा में पैरेल्डीहाइड (Paraldehyde) देना।
४. $\frac{1}{200}$ ग्रेन की मात्रा मे हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड (Hyoscine Hydrobromide) को त्वचागत प्रविष्ट करना।

मिथिल अल्कोहल (Methyl Alcohol)

स्वरुप—यह रंगहीन, गति शील तथा विशिष्टगंध युक्त तरल होता है। यह रंग तथा वार्निस में व्यवहृत होता है।

घातक मात्रा—१ से २ औंस। घातक काल—२४ से ३६ घण्टा।

लक्षण—

१ श्रम। २ क्षीणता। ३ शिरः शूल। ४ हृल्लास। ५. वमन।
६ उदरस्थ वेदना। ७ प्रसारित तथा स्थिर कनीनक।
८ आंशिक या पूर्ण अन्धता। ९. श्वासकष्ट। १०. नीलिमा। ११ प्रलाप।
१२. आक्षेप। १३ तीव्र तथा स्थाई सन्यास। १४ मृत्यु।

चिकित्सा—

१ उष्ण जल से आमाशय प्रक्षालन ।
२ कैम्फर, कैफीन तथा स्ट्रिक्नीन को सूची वेध द्वारा प्रविष्ट करना ।
३ वेदना शान्ति के लिये मार्फीन देना ।
४ सोडाबाई कार्ब (Soda Bicarb) मुख द्वारा खिलाना ।
६ नारमल सेलाइन (Normal Saline) को शिरागत प्रविष्ट करना ।

एमिल नाट्राइट (Amyl Nitrite)

यह नाइट्रस एसिड (Nitrous Acid) तथा एमिल अल्कोहल (Amyl Alcohol) से बनता है। यह पीले रंग का तीव्र गन्ध युक्त तरल होता है। यह रक्त प्रणाली प्रसारक होता है।

घातक मात्रा—अनिश्चित । घातक काल—अनिश्चित ।

लक्षण—

भक्षण का लक्षण—

१ आमाशय में दाह युक्त वेदना । २ हृल्लास । ३ वमन । ४ नीलिमा ।
५ सूत्रवत् नाड़ी । ६ आक्षेप । ७ सन्यास ।
८ मृत्यु जो श्वासावरोध से होती है ।

वाष्प सूंघने पर उत्पन्न होने वाले लक्षण—

१ धमनी प्रसार । २ मुखमण्डल का फूल जाना । ३ शिर का भारी होना ।

चिकित्सा—

१ आमाशय प्रक्षालन ।
२ एड्रेनलीन (Adrenaline) या इफेड्रीन (Ephedrine) को त्वचागत प्रविष्ट करना ।
३ आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना ।
४ आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास कर्म करना ।

फर्मेल्डीहाइड (Formaldehyde)

यह एक रंग हीन तीव्र गन्ध युक्त गैस होता है। यह जल में घुलन शील है। यह अङ्गो को सुरक्षित रूप में रखने के काम में व्यवहृत होता है। यह जीवाणु नाशक है, जो गृह आदि के प्रक्षालन में व्यवहृत होता है।

घातक मात्रा—१ से ३ औंस । घातक काल—४ से १८ घण्टा ।

लक्षण—

वाष्प (Vapour)

१. नेत्रों तथा वायु प्रणालियों में क्षोभोत्पन्न करती है ।
२ चर्म के सम्पर्क में आने पर वेदना पूर्ण क्षोभोत्पन्न करती है ।

भक्षण—

१ मुख, गला तथा उदर में दाह युक्त वेदना।

२ रक्त तथा श्लेष्मा मिश्रित वमन। ३ कनीनक संकुचित हो जाती है।

४ मुखमण्डल फूल जाता है। ५ वेदना पूर्ण मलत्याग होता है।

६ वमन तथा मल में फर्मेल्डीहाइड (Formaldehyde) का गन्ध निकलता है।

७ मूत्राघात। ८ श्वासकष्ट। ९ शब्द युक्त श्वास प्रश्वास।

१० संज्ञानाश। ११ हृदयावसाद से मृत्यु।

चिकित्सा—

१ आमाशय प्रक्षालन।

२ लाइकर अमन एसिटेटिस (Liqi-Ammon Acetatis) के हल्के (तनु) घोल को प्रतिविष के रुप में देना।

३ स्ट्रिक्नीन (Strychnine) को त्वचागत प्रविष्ट करना।

४ आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वासक्रिया कराना।

ईथर (Ether)

यह इथिल अल्कोहल (Ethyl Alcohol), तीव्र सल्फुरिक एसिड (Concentrated Sulphuric Acid) से बनता है, जो रंगहीन, तीव्र गन्धयुक्त, मीठे स्वादु का तरल होता है। यह अल्कोहल (Alcohol), क्लोरोफार्म (Chloroform) तथा तैलों में स्वतन्त्रता के साथ घुल जाता है।

घातक मात्रा—१ औंस। घातक काल—अनिश्चित।

भक्षण में लक्षण—

१. गला तथा उदर मे दाह युक्त वेदना। २ हृल्लास। ३ वमन।

४ हस्त कम्पन। ५. मांसल क्षीणता। ६. ऐंठन। ७ शिरः शूल।

८. हृदय स्पन्दाधिक्य। ९ कर्णक्ष्वेण।

वाष्प ग्रहण (Inhalation)—

१. श्वास प्रणाली में अत्यधिक क्षोभ। २ श्लेष्मा तथा लालास्रावाधिक्य।

३ नाड़ी तथा श्वास प्रश्वास मन्द हो जाती है। ४. संज्ञानाश।

५ आक्षेप। ६ श्वास केन्द्र का घात।

चिकित्सा—

१ आमाशय प्रक्षालन।

२. हृदय तथा श्वास केन्द्र को उत्तेजित करने वाली औषधियों का व्यवहार।

बाष्प की चिकित्सा—

१. विशुद्ध वायु देना। २. अमोनिया (Ammonia) सुंघाना।

३. कृत्रिम श्वास कर्म कराना ।

४. कार्बडाइ आक्साइड (Carbondioxide) मिश्रित आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना ।

५. संज्ञानाश के समय हृदयावरोध वा श्वासावरोध में स्ट्रिक्नीन (Strychnine) को त्वचागत देना ।

६. आक्षेप दूर करने के लिये सोडियम एमिटाल (Sodium Amytal) और ग्लुकोज को सेलाइन (Saline) में मिश्रित कर प्रविष्ट कराना चाहिये ।

क्लोरोफार्म (Chloroform)

यह इथिल अल्कोहल (Ethyl alcohol), मेथिलेटेड स्पिरिट (Methylated Spirit) या एसीटोन (Acetone) को ब्लीचिंग पाउडर (Bleaching Powder) के साथ निस्यन्दित करने से तैयार होता है। यह रंग हीन, तीव्र तथा मीठा गन्ध युक्त तरल होता है। यह एब्सोल्यूट अल्कोहल (Absolute Alcohol), ईथर (Ether), बेञ्जीन (Benzene) आदि में घुलन शील है ।

घातक मात्रा—४ से ६ ड्राम । घातक काल—५ या ६ घण्टा ।

सुंघाने का घातक मात्रा—१५ या २० बूंद । घातक काल—१० मिनट से कम ।

लक्षण, भक्षण—

१ गला, मुख तथा आमाशय में दाहयुक्त वेदना ।

२ वमन । ३ अतिसार ।

४. वमन से क्लोरोफार्म का गंध तथा रक्त आता है ।

५. संज्ञानाश । ६ सन्यास । ७. कनीनक प्रसारित ।

८ नीलिमा । ९. शीतल तथा स्वेदयुक्त चर्म ।

१० अनियमित तथा क्षीण नाडी । ११. मंद तथा शब्दयुक्त श्वास-प्रश्वास ।

१२. कामला । १३ यकृत् वृद्धि । १४. हृदय या फुफ्फुस के घात से मृत्यु ।

चिकित्सा—

१. गरम जल तथा दुग्ध से आमाशय प्रक्षालन ।

२ वार्लीवाटर, घृत मिश्रित दुग्ध आदि पिलाना ।

३ त्वचागत निम्न औषधियों को प्रविष्ट करना चाहिये :—

(क) स्ट्रिक्नीन (Strychnine) (ख) डिजिटेलिस (Digitalis)

(ग) कैफीन (Caffeine) (घ) एट्रोपीन (Atropine)

(ङ) ईथर (Ether)

४. ह्विस्की (Whisky) युक्त वस्ति देना ।

५ शरीर को गरम रखना । ६. कृत्रिम श्वास कर्म करना ।

७. विद्युत का व्यवहार करना ।

वाष्प ग्रहण—

इसके लक्षण वर्णन की सुविधा के लिये तीन अवस्थाओं में विभक्त हैं।

१. उत्तेजनावस्था (Stage of Excitemant)

२. संज्ञानाशावस्था (Stege of Anaesthesia)

३. घातावस्था (Stage of Paralysis)

उत्तेजनावस्था—यह अवस्था ४ मिनट तक रहती है।

१. गले और मुख में क्षोभ ज्ञात होता है। २. नेत्र में जलन होती है।

३ मुखमण्डल फूल जाता है।

४ सम्पूर्ण शरीर में गरमी व्यक्त होती है तथा कुछ रेंगता हुआ सा प्रतीत होता है।

५. श्रवण तथा नेत्र के अतिरिक्त सम्पूर्ण ज्ञान शक्तियाँ मंद हो जाती है।

६. मस्तिष्क अस्थिर हो जाता है।

७. रोगी गाता है, हंसता है, चिल्लाता है, गालियाँ देता है या बकता है।

८. कभी भागता है।

९ कनीनक प्रथम प्रसारित होती है, जो शीघ्र ही संकुचित हो जाती है।

१०. वमन मालूम होने लगता है। ११. नाड़ी थताश्वासकी गति तीव्र हो जाती है।

संज्ञानाशावस्था—

१ पूर्ण संज्ञाहीन हो जाता है।

२. कृष्णमण्डलीय (Corneal) तथा अल्प परावर्तित क्रियायें नष्ट हो जाती हैं।

३. नाड़ी तथा श्वास मंद तथा क्षीण हो जाती है।

४ कनीनक संकुचित हो जाती है।

५ ताप स्वाभाविक से न्यून हो जाता है।

घातावस्था—संज्ञानाश के पश्चात् भी यदि क्लोरोफार्म सूंघाते जाते हैं तब घातावस्था उपस्थित हो जाती है; जिसके लक्षण अधोलिखित है:—

१. मांस पेशियों की शक्ति नष्ट हो जाती है; जिससे वे शिथिल हो जाती हैं।

२ अनैच्छिक रूप से मल-मूत्र त्यक्त हो जाता है।

३ ओष्ठ नीला हो जाता है।

४ शरीर नीला तथा शीतल स्वेद से आक्रान्त हो जाता है।

५. कनीनक पूर्ण प्रसारित हो जाती है।

६. श्वास-प्रश्वास मंद, अनियमित तथा रुक रुक कर चलने लगता है।

७ नाड़ी क्षीण तथा अनियमित होती है।

८. हृदयावरोध या श्वासावरोध से मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा—

१. क्लोरोफार्म का सूंघाना बंद कर देना चाहिये।

२. शिर को नीचा कर जिह्वा को संदंश या हाथ द्वारा बाहर निकाल देना चाहिये।
३. कृत्रिम श्वास क्रिया करनी चाहिये।
४ आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना चाहिये।
५. स्ट्रिक्नीन, कैफीन या ईथर को त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।
६ एड्रेनलीन (Adrenaline) को सीधे हृदय की मांसपेशी मे प्रविष्ट करने से बहुधा रोगी पुनः स्वस्थ हो जाता है।
७. क्लोरोफार्म सुंघाने के ४, ५ घंटे पूर्व शर्करा (Sugar) तथा कार्बोहाइड्रेट (Carbohydrate) खिलाने से विषैला प्रभाव नहीं होता।

डी० डी० टी० (D. D. T.)—

इसका पूरा नाम डाइक्लोरो-डाइपेनिल-ट्राइक्लोरोथेन (Dichloro-Dipenyl-Trichloroethane) है। यह श्वेत, घन कण के रूप मे पाया जाता है, जो क्लोरोफार्म, वेंजीन (Benzene) तथा (किरासीन Kerosene) मिट्टी तेल में घुलनशील होता है। यह मच्छर नाशक होता है। इसका मिट्टी के तेल में ५% प्र० श० शक्ति में बना हुआ घोल खटमल (Bed-bugs) तथा जूँ नाशक है।

घातक मात्रा—कण—½ औंस। घोल—½ गैलन। घातक काल—१ घण्टा।

लक्षण—

१ हृल्लास। २ वमन। ३. कास। ४. उत्तेजना।
५ मांसल कम्पन। ६ आक्षेप। ७. अंगों का असहयोग (Inco ordination)
८ पाद का घात। ९ संज्ञानाश। १०. सन्यास। ११. श्वासावरोध से मृत्यु।

चिकित्सा—

१ आमाशय प्रक्षालन। २ लाक्षणिक चिकित्सा।
३. एट्रोपीन (Atropine) को त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।
४ कृत्रिम श्वासकर्म।

ब्रोमोफार्म (Bromoform)

गुणधर्म—यह रंगहीन, उडनशील, मधुर, स्वादु युक्त तरल होता है। यह अल्कोहल मे घुलनशील होता है। इसका व्यवहार कुकर कास (Whooping-congh) में होता है। इसको सर्वदा पूर्ण रूप से घोलकर ग्रहण करे।

घातक मात्रा—शिशुओं मे ३६ बूंद। घातक काल—५ घंटा।

लक्षण—

१. श्रम। २. निद्रितावस्था। ३. मांसल शिथिलता।
४ संकुचित कनीनक। ५ संज्ञाहीनता। ६. घर्घराहटयुक्त श्वास।
७. क्षीण तथा अनियमित नाड़ी। ८. अवसाद तथा मृत्यु।

चिकित्सा —

१. सोडियम कार्बोनेट (Sodium Carbonate) के घोल से आमाशय प्रक्षालन करना।

२. ईथर तथा स्ट्रिक्नीन नामक ओषधियों को त्वचागत प्रविष्ट करना।

३. कृत्रिम श्वास कर्म।

आयडोफार्म (Iodoform)

यह नीबू के वर्ण का तीव्र गंधयुक्त चमकता हुआ कण के रूप में पाया जाता है। गंध अरुचिकर या स्थायी होता है। यह अल्कोहल, ईथर, क्लोरोफार्म तथा तैलों में घुलनशील होता है।

घातक मात्रा— ३० ग्रेन। २ ड्राम व्रण में प्रविष्ट करने से। घातक काल—१ से कई दिन।

लक्षण—

१. चक्कर। २. हृल्लास। ३. वमन। ४. उदर शूल। ५. त्वगांकुर। ६. तापाधिक्य। ७. प्रसारित कनीनक। ८. अचेतना। ९. तीव्र नाड़ी। १०. घर्घराहट युक्त श्वास। ११. सन्यास। १२. मृत्यु। १३. आक्षेप। १४. मिथ्याभास। १५. प्रलाप।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन।

२. सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) को बड़ी मात्रा में प्रविष्ट करना।

३. उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार।

४. प्रलापनाशनार्थ ब्रोमाइड देना चाहिये।

५. क्षत का प्रक्षालन करना चाहिये। ६. लाक्षणिक चिकित्सा।

७. अन्तशीरीय या त्वगीय नार्मल सेलाइन (Normal Saline) प्रवेश।

क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate)

यह रंगहीन विशिष्ट गन्ध युक्त कण होता है, जो ८९° F पर पिघलने लगता है। यह जल, अल्कोहल, क्लोरोफार्म तथा ईथर में घुलनशील होता है। समान प्रमाण से कर्पूर के साथ रगड़ने पर यह तरल हो जाता है।

घातक काल—५० से ७० ग्रेन। घातक मात्रा—८ से १२ घण्टा।

लक्षण—

तीव्र (Acute)

१ निद्रा सदृश ज्ञात होना। २ अचेतना (Unconsciousness)

३. परावर्तित क्रियाओं का नाश।

४. गम्भीर निद्रा जो सन्यास में परिणत हो जाती है।

५ मुखमण्डल नीला। ६ क्षीण तथा अनियमित नाड़ी।

७. शब्दयुक्त श्वास । ८ शीतल चर्म ।
९. स्वाभाविक से न्यून ताप । १०. संकुचित कनीनक ।
११ चर्म पर चकत्ते वा आकुरों की उत्पत्ति ।
१२ श्वास केन्द्र के घात से मृत्यु ।

चिरकालिक विष के लक्षण—ये लक्षण अधिक काल तक बराबर ओषधि रूप में सेवन करने से होते हैं ।

१ हल्लास । २. वमन । ३. अतिसार ।
४ चर्म पर चकत्तों तथा अंकुरों की उत्पत्ति । ५. कायिक क्षीणता ।
६. निद्रानाश । ७ श्वास कष्ट । ८. उन्माद । ९ बुद्धि हीनता ।

चिकित्सा—

१ वामक द्रव्य प्रवेश या उष्ण जल से आमाशय प्रक्षालन ।
२. पोटास साइट्रास (Potash Citras) तथा सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) खिलाना ।
३ शरीर को गरम रखना । ४ रोगी को बराबर जगाये रखना ।
५ स्ट्रिक्नीन आदि को त्वचागत प्रविष्ट कराना ।
६ कृत्रिम श्वास क्रिया ।
७ कार्बन डाइ आक्साइड के साथ आक्सीजन सुंघाना ।
८ चिरकालिक विष में द्रव्य को बन्द कर देना चाहिये ।
९. शक्ति वर्धक ओषधियों का व्यवहार ।
१० उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार करना चाहिये ।

सल्फोनाल (Sulphonol)

यह वर्णहीन, गन्धहीन, स्वादुहीन तथा कण या चूर्ण के रूप में पाया जाता हैं । यह १५ गुने गरम जल तथा तीगुने क्लोरोफार्म में घुलनशील होता है । यह निद्राल ओषधि है ।

घातक मात्रा—७५ ग्रेन । घातक काल—३ दिन ।

लक्षण—

तीव्र—

१ चक्कर । २ शिरःशूल । ३ अस्थिर बुद्धि ।
४. लड़खड़ा कर चलना । ५. स्थूल उच्चारण । ६. उदासी ।
७ संज्ञाहीनता । ८ आक्षेप । ९ सूक्ष्मनाड़ी ।
१० घर्घराहट पूर्ण श्वास । ११ उच्च वा निम्नताप । १२. नीलिमा ।
१३. सन्यास । १४. त्वगांकुर । १५ मूत्राघात ।

चिरकालिक लक्षण—

१. आमाशय प्रदेश में वेदना। २ वमन। ३. कोष्ठबद्धता।
४ त्वगांकुर। ५. शिरःशूल। ६. मांसल क्षीणता।
७. लड़खड़ाना। ८. मिथ्याभास।
९. मूत्र लाल वर्ण का त्यक्त होता है।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन।
२. सोडा बाईकार्ब (Soda Bicarb) के तनु घोल का व्यवहार।
३. उत्तेजक औषधियों का व्यवहार।
४. नार्मल सेलाइन (Normal Saline) प्रविष्ट करना।

नोटः—ट्रायोनाल (Trional) तथा टेट्रोनाल (Tetronal) का भी सल्फोनाल (Sulphonol) वत ही लक्षण तथा चिकित्सा होती है।

वेरोनाल (Veronal)

यह श्वेत रंग का कणीय चूर्ण होता है, जो गरम जल मे घुलनशील है।

घातक मात्रा—१५ से ५९ ग्रेन। घातक काल—४½ से २० घण्टा।

लक्षण

१. हृल्लास। २. वमन। ३. शिरःशूल। ४. निद्राधिक्य।
५. गति वैचित्र्य (लड़खड़ाना)। ६. सन्यास।
७. घरघराहट युक्त श्वास। ८. तापाधिक्य।
९. चर्म पर त्वगांकुर की उत्पत्ति। १०. मुखमण्डल नीला।
११. मूत्राल्पता या मूत्राघात। १२. कनीनक संकुचित होती है।
१३. प्रकाश का कोई प्रभाव कनीनक पर नही होता।
१५. रक्त चाप की न्यूनता।

चिकित्सा—

१. गरम जल से आमाशय प्रक्षालन।
२. एरण्ड तैल तथा गरम काफी (Coffee) पिलाना।
३. स्ट्रिक्नीन, कैम्फर, कैफीन तथा डिजिटेलिस को हृदयोत्तेजनार्थ त्वचागत प्रविष्ट कराना।
४. ग्लुकोज (Glucose) को शिरागत प्रविष्ट करना।
५. कोरामीन (Coramine) २५% प्र० श० के घोल में ५५ सी० सी० की मात्रा में शिरागत प्रविष्ट किया जाता है। यह बहुत ही प्रभाव शाली है। इसके बाद इसे मांसगत देना चाहिये।

६. अल्कोहल (Alcohol) को ३० प्र० श० शक्ति की मात्रा में शिरागत प्रविष्ट करावे। यह प्रतिविष (Antidote) का कार्य करता है।
७. श्वासावरोध को दूर करने के लिये लोबेलीन (Lobeline) को शिरागत प्रविष्ट करावे।
८. आक्सीजन (Oxygen) कार्बन डाइआक्साइड (Carbon Dioxide) के साथ सुंघावें।

नोटः—इस श्रेणी के सभी द्रव्यों के समान लक्षण तथा चिकित्सा होती हैं।

'एण्टीफेब्रीन, एण्टीपायरीन तथा फेनासीटीन'
(Antifebrine, Antipyrin and Phenacetin)

इन ओषधियों का व्यवहार ताप तथा वेदना नाशक के रूप में होता है। ये शामक ओषधियाँ हैं। बड़ी मात्रा में व्यवहृत होने पर ये लाल रक्तकण को नष्ट कर देती है।

घातक मात्र—१८ से २० ग्रेन। घातक काल—कुछ घण्टे से कुछ दिन तक।

लक्षण—

१. हृल्लास। २. वमन। ३. भ्रम। ४. नीलिमा।
५. तीव्र क्षीणता। ६. श्वास गति मन्द हो जाती है।
७. तीव्र, अनियमित तथा अव्यक्त नाड़ी। ८. शीतल तथा स्निग्ध चर्म।
९. स्वाभाविक से न्यून तापक्रम। १०. अवसाद।
११. त्वगांकुर या चर्म पर चकत्तों की उत्पत्ति। १२. श्वास कष्ट।
१३. पाण्डु। १४. कृष्ण वर्ण का मूत्र त्याग।
१५. अत्यधिक रूप से मल मूत्र का त्याग। १६. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन।
२. डिजिटेलिस (Digitalis) तथा कैम्फर (Camphor) आदि उत्तेजकौषधियों का व्यवहार।

सिंकोफेन (Cnichophen)

यह श्वेत या पीले रंग का चूर्ण या कण के रूप में पाया जाता है।

योग—आटोफेन (Atophan), क्विनोफेन (Quinophan), एजोटेन (Agotan), तथा फेनोक्विन (Phenoquin) आदि।

घातक मात्र—२७½ ग्रेन। घातक काल—५ दिन।

लक्षण—

१. शीत। २. शिरःशूल। ३. वमन। ४. अतिसार।

५, कामला । ६, त्वगांकुर । ७, हृदय स्पन्दनाधिक्य ।
८, नीलिमा । ९, कृष्ण वर्ण का श्वेतग्सार युक्त मूत्र १०, यकृत् का क्षय ।

चिकित्सा—

१, सिंकोफेन (Cinchophen) का व्यवहार बन्द कर देना चाहिये ।
२, डेक्स्ट्रोज (Dextrose) तथा इन्सुलीन (Insulin) प्रविष्ट करना चाहिये ।
३, सिकोफेन प्रविष्ट करते समय कुछ काल तक प्रवेश बन्द कर पुनः, प्रवेश करना चाहिये ।

सल्फेनिलेमाइड (Sulphanilamide)

य ग—प्रोण्टोशील (Prontosil), प्रोण्टोशील एल्बम (Prontosil Album) प्रोसेप्टेसीन (Proseptasine), सालुसेप्टेसीन (Soluseptasine), सल्फापायरीडिन (Sulphapyridine or Md B 693), सल्फाथाएजोल (Sulphathiazole), सल्फामिथिलिथयोजोल (Sulphamethylthiozole), बैक्टीरेमाइड (Bacteramide), स्ट्रेप्टोसाइड (Streptocide), सल्फोनेमाइड पी (Sulphonamide P) आदि ।

घातक मात्रा—अत्यधिक दिनों तक लगातार सेवन करने से । अनिश्चित ।

घातक काल—अनिश्चित ।

लक्षण—सौम्य (Mild)—

१, शिरःशूल । २, क्षुधानाश (Anorexia) ३, भ्रम ।
४ हृल्लास । ५, दृष्टि व्यवधान । ६, कुछ नीलिमा । ७, श्वास कष्ट ।

घातक (Sever)—

१, उदर वेदना । २, अतिसार । ३, हाथ तथा पाँव की शून्यता ।
४, त्वगांकुर । ५, ज्वर । ६, आम्लीयता (Acidosis)
७, नीलिमा ।

चिकित्सा—

१, आम्लीयता को नष्ट करने के लिये सोडियम बाइकार्बोनेट (Sodium Bicarbonate) का व्यवहार करना चाहिये ।
२, नीलिमा को नष्ट करने के लिये मीथेलीन ब्ल्यू (Methylene-blue) को शिरागत प्रविष्ट करना चाहिये ।
३, जल का अत्यधिक व्यवहार करना चाहिये ।
४, पेंतुक्लियोटाइड (Pentuncleotide) को शिरागत प्रविष्ट करना चाहिये ।
५, लिक्विड पैराफीन (Liquid Paraffin) का आंत्र को साफ रखने के लिये नित्य प्रति व्यवहार कराना चाहिये ।

निषेध—मैगसल्फ या सोडासल्फ ।

नाइट्रोग्लीसरीन (Nitroglycerin)

यह रंग तथा गन्धहीन तैलवत तरल होता है। यह क्लोरोफार्म, ईथर तथा तैल में घुलनशील है।

घातक मात्रा—१० से ३० बूंद। घातक काल—२ से ६ घण्टा।

लक्षण—

१, गले में दाह। २, हल्लास। ३, वमन। ४, उदर शूल। ५, अतिसार। ६, शरीर के धमनियों से वेदना पूर्ण स्पन्दन। ७, तीव्र शिरःशूल। ८, भ्रम। ९, मुखमण्डल का शोथ। १० स्वेदाधिक्य। ११, हृदय में वेदना। १२, तीव्र तथा कठिनाई के साथ श्वास प्रश्वास। १३, नीलिमा। १४, घात। १५, चेतनाहीनता। १६, प्रलाप। १७, मृत्यु।

चिकित्सा—

१, आमाशय प्रक्षालन।

२, अर्गट (Ergot) या एट्रोपीन (Atropine) त्वचागत प्रविष्ट करना।

३, शीतल जल या बर्फ शिर पर रखना। ४, कृत्रिम श्वास कर्म।

पेट्रोलियम (Petroleum)

यह पृथ्वी से निकाला जाता है। जो तैलवत तरल होता है। इसी को जब छान कर साफ करते है तब उसे किरासन तैल (Kerosene oil) कहते है।

घातक मात्रा—$\frac{1}{2}$ औंस। घातक काल—४ घण्टा।

लक्षण—धूम्र के सुंघने पर उत्पन्न होने वाले लक्षणः—

१, शिरःशूल। २, हल्लास। ३, वमन। ४, कास। ५, वक्ष में दाह। ६, मिथ्याभास। ७, गति में असमर्थता। ८, नीलिमा। ९, आक्षेप। १०, हृदयावरोध वा श्वासावरोध से मृत्यु।

भक्षण के लक्षण—

१, गले में दाहयुक्त वेदना। २, आमाशय में गरमी मालूम देना। ३, तृषा। ४, हल्लास। ५, वमन। ६, शूल। ७, अतिसार। ८, भ्रम। ९, मुखमण्डल का नीला होना। १०, निद्राधिक्य जो सन्यास में परिणित हो जाता है। ११, आक्षेप। १२, वमन, श्वास तथा मूत्र में गन्ध आना।

चिकित्सा—

१, स्वच्छ वायुमण्डल में लाकर कृत्रिम श्वास कर्म करना।

२, शरीर को गरम रखना।

३, भक्षण करने पर वामक द्रव्यों का व्यवहार करना चाहिये।
४, सोडा वाईकार्ब मिश्रित गरम जल से आमाशय प्रक्षालन।
५, विरेचक द्रव्य का व्यवहार।
६, उत्तेजक औषधियों का व्यवहार।

तारपीन तैल (Oil of Turpentine)

घातक मात्रा—४ से ६ औंस। घातक काल—१२ घण्टा।

लक्षण—

१, मुख काला तथा आमाशय में दाहयुक्त वेदना।
२, तृषा। ३, वमन। ४, अतिसार। ५, कनीनक संकोच।
६, भ्रम। ७, निद्राधिक्य। ८, शीतल चर्म। ९, आक्षेप।
१०, कटिशूल। ११, मूत्र त्याग में कठिनाई।
१२, चर्म पर लगाने से लालिमा या फफोला उत्पन्न हो जाता है।

वाष्प काल क्षण—

१, नेत्र में क्षोभ। २, शिरःशूल। ३, भ्रम।
४, फुफ्फु शोथ ५, सन्यास। ६, मृत्यु।

चिकित्सा—

१, वामक द्रव्य व्यवहार या आमाशय प्रक्षालन।
२, दूध या घृत मिश्रित दुग्ध का पान।
३, अतिसार की अनुपस्थिति में मैगसल्फ (Mag Sulph) का व्यवहार करना।
४, शरीर को गरम रखना। ५, कटि प्रान्त मे उष्ण सेक।
६, वेदना शान्ति के लिये मार्फीन (Morphine) को $\frac{1}{4}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत प्रविष्ट कराना।

'यूकेलिप्टस आयल' (Rucalyptns Oil)

यह यूकेलिप्टस नामक वृक्ष के हरी पत्तियों से बनाया जाता है, जो रंगहीन या हल्के पीले रंग का उड़नशील होता है। यह अल्कोहल में घुलनशील है।

घातक मात्रा—६ ड्राम। घातक काल—४० घण्टा।

लक्षण—चर्म पर लगाने से लालिमा, फफोला तथा पुययुक्त पिड़िका उत्पन्न होती है।

भक्षण के लक्षण—

१, हृल्लास। २, वमन। ३, अतिसार। ४, उदर शूल।
५, शिरःशूल। ६, झागोत्पत्ति। ७, नीलिमा। ८, कनीनक संकोच।

९. शीतल तथा स्निग्ध चर्म। १० ऐंठन। ११. तीव्रनाड़ी।
१२. मंद तथा शब्द युक्त श्वास। १३. मूत्र में रक्त आना।
१४. चेतना हीनता। १५. सन्यास। १६. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २. स्ट्रिक्नीन तथा कैफीन आदि का व्यवहार।
३. आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना।

जायफल (Nutmeg)

घातक मात्रा—१ से ४ ड्राम। घातक काल—अनिश्चित।

लक्षण—

१. भ्रम। २. शिरःशूल। ३. कनीनक प्रसार। ४. वमन।
५. तृषा। ६. उदरस्थ वेदना। ७. प्रलाप। ८. मिथ्याभास।
९. सन्यास। १०. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. वामक द्रव्य व्यवहार। २. विरेचक ओषधि प्रयोग।
३. उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार करना चाहिये।

प्रलायक विष (Deliriant Posions)

धतूरा (Datura Fastuosa)

प्रकार—

१. श्वेत धतूरा (Datnra Alba) २. कृष्ण धतूरा (Datura Nigra)
घातक मात्रा—२० ग्रेन बीज का चूर्ण। घातक काल—२४ घंटा।

लक्षण—

१. वमन। २. मुख तथा गले की शुष्कता। ३. आमाशय में दाहयुक्त वेदना।
४. ग्रासकष्ट। ५. चक्कर। ६. लड़खड़ा कर चलना।
७. मांस पेशियों का असहयोग (Inco-ordination)
८. मुखमण्डल का फूलना। ९. शुष्क तथा गरम चर्म। १०. तापाधिक्य।
११. नाडी क्षीण तथा अनियमित हो जाती है। १२. बेचैनी।
१३. प्रलाप। १४. पलंग से उठ भागना। १५. पलंग के वस्त्रों को पकड़ना।
१६. अंगुलियों के शिखरों से अवास्तविक (Imaginary) सूत्रों को खींचने का प्रयत्न करना।
१७. आक्षेप। १८. सन्यास।
१९. हृदय या फुफ्फुस के घात से मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा—

१. वासक ओषधि का व्यवहार करना। या
२. पोटेटेशियम परमाग्नेट (Potassium Permanganate) के तनु घोल से आमाशय प्रक्षालन करना।
३. पिलोकार्पीन नाइट्रेट (Pilocarpine Nitate) को $\frac{1}{2}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत प्रतिविष के रूप में व्यवहृत करें।
४. मार्फीन को भी $\frac{1}{4}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत प्रतिविष के रूप में व्यवहृत करें किन्तु यह श्वास केंद्र को मद करता है, अतः इसका व्यवहार सावधानी के साथ करना चाहिये।
५. प्रलाप शान्ति के लिये क्लोरोफार्म सुंघाना चाहिये।
६. शिर पर शीतल जल या बर्फ रखना।
७. कैफीन (Caffeine) को त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।
८. उष्ण वस्ति देनी चाहिये। ९. आक्सीजन सुंघावे।
१०. शंखाहुली की जड जल में पीस कर पिलाना।
११ बैंगन या इसके पत्तों तथा जड को पीस जल में छान पिलाना।
१२. नमक जल में घोल कर पिलाना। १३. घी खिलाना चाहिये।
१४. दूध तथा मिश्री एकत्र मिलाकर पिलाना चाहिये।

खुरासानी अजवाइन (Hyoscyamus Niger)

घातक मात्रा—२ ग्रेन। घातक काल—२४ घण्टा।

लक्षण—

१. धतूरावत् किन्तु प्रलाप इसमें कम होता है।
२. निद्राधिक्य। ३. संज्ञाहीनता। ४. नाडी संस्थान का घात।
५. हृल्लास। ६. वमन। ७. अतिसार। ८. मांस पेशियों में तीव्र संकोच।
९. मिथ्याभास।

चिकित्सा—

धतूरावत्।

कैनेबिस इण्डिका (Caunabis Indica)

भारतवर्ष में इसके व्यवहार के रूपान्तर :—

१. भांग—यह शुष्क पत्तियाँ तथा फलयुक्त टहनियाँ होती हैं।
२. माजूम—भांग को शक्कर, आदी आदि से मिलाने पर बनता है।
३. गाँजा—पुष्पित या फल युक्त शिखर होता है।
४. चरस—गोंद होता है।

घातक मात्रा—अनिश्चित । घातककाल—१२ घंटा ।

तीव्र विष के लक्षण—

१. अश्रुस्रावाधिक्य के साथ साथ उत्तेजनाधिक्य ।
२. अत्यधिक हँसना । ३. अत्यधिक बोलना ।
४. अकारण पेशियों में गति । ५. समय तथा स्थान का ज्ञान स्वाभाविक
६. भयानक मिथ्याभास । ७. अत्यधिक प्रलाप ।
८. हत्या करने पर आरूढ होना । ९. निद्राधिक्य ।
१०. मांस क्षीणता । ११. प्रसारित कनीनक ।
१२. संज्ञाहीनता ।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१. क्षुधानाश । २. कायिक क्षीणता । ३. दुर्बलता । ४. कम्प ।
५. मैथुन शक्ति का नाश । ६. उन्माद । ७. मिथ्याभास ।

चिकित्स—

१. आमाशय को रिक्त करना । २. शिर पर शीतल जल या बर्फ रखना ।
३. स्ट्रिक्नीन (Strychnine) को त्वचागत प्रविष्ट करना ।
४. कृत्रिम श्वासकर्म ।
५. रोगी को भाँग के नशा में दही या मठा पिलावे ।
६. खटाई खिलाना ।

कोकेन (Cocaine)

यह रंगहीन, गंधहीन, कटु स्वाद युक्त कण रूप मे पाया जाता है । यह अल्कोहल, ईथर, कोरोफार्म तथा बेंजीन (Benzene) में घुलनशील होता है। इसका व्यवहार संज्ञानाश के लिये होता है ।

योग—

१. एलीपिन (Alypin) २. बेटायूकेन (Beta-eucaine)
३. नोवोकेन (Novocaine) ४. आर्थोकेन (Orthocaine)
५. पेण्टोकेन (Pantocaine) ६. परकेन (Percaine)
७. स्टोवेन (Stovaine) ८. ट्यूरोकेन (Turocaine)

घातक मात्रा—$\frac{1}{3}$ ग्रेन त्वचागत । १० से १५ ग्रेन मुख द्वारा ।

घातक काल—१ घण्टा ।

तीव्र विष के लक्षण—

१. मुख तथा गले की शुष्कता । २. ग्रास कठिनता (Dysphagia)
३. जिह्वा शून्यता ।
४. हाथ और पाँव में शून्यता तथा झुंझुनी मालूम होना ।

५. हृल्लास। ६. आमाशय में ऐंठन। ७. शिरःशूल। ८. भ्रम।
९. मूर्च्छा। १०. अत्यधिक नीलिमा। ११. कनीनक प्रसारित।
१२. तीव्र, अनियमित तथा अव्यक्त नाडी गति।
१३. उथली तथा कठिनता के साथ श्वास प्रश्वास।
१४. स्वेदाधिक्य। १५. आक्षेप। १६. घात। १७. प्रलाप। १८. मिथ्याभास।

चिकित्सा—

१. वामक ओषधि का व्यवहार।
२. चार कोल (Charcoal) या पोटाश परमाग्नेट के गरम घोल से आमाशय प्रक्षालन।
३. उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार। ४. क्लोरोफार्म प्रविष्ट करना।
५. एमिल नाइट्राइट (Amyl Nitrite) का प्रतिविष के रूप में व्यवहार। इसे सूंघावे।
६. लुमिनाल (Luminol), कोकेन (Cocaine) विष में बहुत ही प्रभावशाली है। निषेध—मार्फीन (Morphine) का व्यवहार नहीं करना चाहिए।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१. मुख मण्डल का पीला होना। २. नेत्रों का धंस जाना।
३. निद्राधिक्य। ४. क्षुधानाश। ५. क्षीणता।
६. कम्पन। ७. तीव्रनाड़ी। ८. नपुंसकता।
९. स्मरण शक्ति विकृत हो जाती है। १०. ज्ञानेन्द्रियाँ विकृत हो जाती है।
११. दृष्टिविकार। १२. चर्म पर कीड़े रेंगने सदृश ज्ञात होना।
१३. दन्त तथा जिह्वा काली हो जाती है।

चिकित्सा—

१. कोकेन (Cocaine) सेवन बन्द कर देना चाहिये।
२. लाक्षणिक चिकित्सा करनी चाहिये।

सैण्टोनीन (Santonin)

यह चिपटा, चमकता हुआ त्रिपार्श्वाकार कण में होता है। यह स्वादहीन या किंचित् कटु होता है। यह रंगहीन होता है; किन्तु धूप में आने पर पीला हो जाता है। यह उष्ण जल, अल्कोहल, ईथर क्लोरोफार्म तथा क्षारों में घुलनशील है।

घातक मात्रा—२ से ५ ग्रेन। घातक काल—१२ घण्टे से ३ दिन।

लक्षण—

१. शिरः शूल। २. भ्रम। ३. कर्ण में ध्वनि होना।
४. आमाशय में वेदना। ५. हृल्लास। ६. वमन।
७. पीला दिखलाई देना। ८. कनीनक प्रसार।

९ शीतल तथा स्वेदाच्छादित चर्म।
१०. क्षीण तथा मन्द नाड़ी तथा श्वास प्रश्वास। ११. आक्षेप।
१२. प्रलाप। १३ मूत्र राशि में वृद्धि तथा रक्त निकलना।
१४. सन्यास। १५. हृदयावरोध या श्वासावरोध से मृत्यु।

चिकित्सा—
१ वामक द्रव्य व्यवहार। २. आमाशय प्रक्षालन।
३. कैलोमल (Calomel) विरेचनार्थ प्रविष्ट करना। ४. दुग्धपान कराना।
५ आक्षेप नष्ट करने के लिये पोटेशियम ब्रोमाइड (Potassium Bromide) तथा क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate) का व्यवहार।
६. उत्तेजकौषधियों का व्यवहार करना।

कपूर (Camphor)

यह क्लोरोफार्म, ईथर, अल्कोहल, दुग्ध तथा तैल में घुलनशील है। यह तीव्र जलन शील होता है। क्लोरल हाइड्रेट, मेंथल (Menthol), फेनल (Phenol) या थाइमाल (Thymol) के सम्पर्क में आने पर यह तरल रूप हो जाता है।

घातक मात्रा—१९२ ग्रेन। घातक काल —१८ घण्टा।

लक्षण—
१. मुख तथा आमाशय में दाहयुक्त वेदना। २ हृल्लास।
३. वमन। ४. मुख का फूल जाना। ५ ओष्ठ का नीला होना।
६. कनीनक प्रसार। ७ भ्रम। ८. आक्षेप।
९ प्रलाप। १० चेतना हीनता। ११. सन्यास।
१२ श्वास, मूत्र तथा वमन में कर्पूर का गन्ध आना। १३. मृत्यु।

चिकित्सा—
१ आमाशय को रिक्त करना। २. शरीर को गरम रखना।
३. शिर पर शीतल जल या बरफ रखना। ४ विरेचन देना।
५ अमोनिया सुंघाना।
६ डिजिटेलिस या सोडियम बेंजोएट (Sodium Benzoate) त्वचागत प्रविष्ट करना।
७. आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास कर्म कराना।

सौषुम्निक विष (Spinal Poisons)

कुचिला (Strychnos Nux Vomica)

घातक मात्रा— { स्ट्रिक्नीन (Strychnine)-½ से १ ग्रेन। कुचला (Nux Vomica)-३० ग्रेन।

घातक काल—१ से २ घण्टा।

लक्षण—

१. गला पीड़न (Choking) सदृश ज्ञात होना।
२. सम्पूर्ण मांस पेशियों में एक साथ आक्षेप होना।
३. मुख मण्डल नीला हो जाता है। ४ नेत्र गोलक बाहर निकल आता है।
५ कनीनक प्रसारित हो जाती है। ६. मुख से झाग निकलने लगता है।
७ शरीर पीछे को झुककर धनुषाकार हो जाता है।
८. महाप्राचीरा पेशी (Diaphragm) सकुचित हो जाती है।
९. हृदयाधरिक प्रदेश में वेदना होती है। १०. श्वासावरोध होता है।
११ कभी कभी शरीर आगे या पार्श्व में धनुषवत् झुक जाता है।
१२ परावर्तित क्रिया अति तीव्र होती है। १३. स्थाई वमन होता है।

निदान—इस विष को हनुस्तम्भ (Tetanus) नामक व्याधि से पृथक् करते हैं। इनकी तालिका नीचे दी जाती है।

कुचिला विष	हनुस्तम्भ
१. अचानक प्रारम्भ होता है।	१ शनैः शनैः प्रारम्भ होता है।
२ एक साथ ही सम्पूर्ण मांस पेशियां प्रभावित होती हैं।	२. सर्व प्रथम ग्रीवा तथा अधोहनु की मांस पेशियाँ प्रभावित होती हैं।
३. अवकाश के समय मांस पेशियाँ ढीली हो जाती हैं।	३. अवकाश के समय मांस पेशियाँ दृढ़ हो जाती हैं।
४. मृत्यु कुछ घण्टों में हो जाती है। जब ६ घण्टे के अन्दर मृत्यु नहीं होती तब बचने की संभावना रहती है।	४ २४ घण्टे से लेकर कई दिन तक मृत्यु की सम्भावना रहती है।

चिकित्सा—

१ ऐंठन को दूर करने के लिये क्लोरोफार्म देना चाहिये।
२ पोटेशियम परमाग्नेट के गरम घोल से आमाशय प्रक्षालन करना चाहिये।
३ प्रक्षालक नलिका के अभाव में एपोमार्फीन हाइड्रोक्लोराइड (Apomorphine Hydiochloride) को १/१० से १/५ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत प्रविष्ट कर आमाशय को रिक्त करना चहिये।
४ सोडियम फेनाबार्बीटोन (Sodium Phenobarbitone), पेण्टोबार्बीटाल सोडियम (Pentobarbital Sodium) तथा सोडियम एमीटाल (Sodium Amytal) को शिरागत प्रतिविष के रूप में व्यवहृत करें। यह आक्षेप को बन्द कर निद्राजनक है।
५ पोटाश ब्रोमाइड तथा क्लोरल हाइड्रेट का आभ्यन्तरिक प्रयोग करना चाहिये।

६ यूरेथेन (Urethane) का व्यवहार आक्षेप नष्ट करने के लिये उपयोगी है।
७ अंधेरे तथा शान्त कमरे में रखना।
८. आक्सीजन या एमील नाइट्राइट सुंघाना।

ईजरीन (Eserine or Physostigmine)

यह श्वेत रंग के कण के रूप में होती है। जब वायु तथा प्रकाश के सम्पर्क में आती है तब यह पीले रंग की हो जाती है यह स्वाद में कडुई होती है इसकी प्रतिक्रिया क्षारीय है। यह अल्कोहल, क्लोरोफार्म तथा ईथर में पूर्ण रूप से घुलनशील है।

घातक मात्रा—२ ग्रेन। घातक काल—अनिश्चित।

लक्षण—

१. भ्रम। २. लालास्रावाधिक्य। ३. तृषा।
४. आमाशय में वेदना। ५. वमन। ६. अतिसार।
७. मन्द, क्षीण तथा अनियमित नाड़ी। ८. कष्टप्रद श्वास प्रश्वास।
९. शीतल तथा स्निग्ध चर्म। १०. कनीनक संकोच।
११. ऐच्छिक मांस पेशियों का घात। १२. श्वास प्रश्वास केन्द्र के घात से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. वामक ओषधि का व्यवहार।
२. कोयला या टेनिक एसिड (Tannic Acid) को जल में मिला आमाशय प्रक्षालन करना।
३. एट्रोपीन (Atropine) तथा क्लोरल हाइड्रेट (Chloral Hydrate) का प्रति-विष के रूप में व्यवहार करना।
४. उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार करना। ५. आक्सीजन सुंघाना।
६. कृत्रिम श्वास क्रिया करना।

हार्दिक विष (Cardiac Poisons)

तम्बाकू (Nicotiana Tabocum)

तम्बाकू में निकोटिन (Nicotine) तथा निकोटिएनिन (Nicotianine) नामक दो मुख्य वस्तुयें पाई जाती है। तम्बाकू के पत्तों का प्रयोग भारत वर्ष में सूंघने में खाने के लिये पान में तथा चुरुट में किया जाता है।

घातक मात्रा—
- निकोटीन(Nicotine)—२ से ४ बूंद।
- तम्बाकू—½ से १ औंस।
- पत्ती—३० ग्रेन पत्ती के चूर्ण का शीत कषाय वस्ति में प्रयुक्त करने से

लक्षण—

१. मुख तथा गले में दाह मालूम होना।
२ अन्न प्रणाली तथा आमाशय में दाह युक्त वेदना।
३. लालास्रावाधिक्य। ४. हल्लास। ५ वमन।
६. कभी कभी अतिसार। ७ भ्रम। ८. मूर्च्छा। ९. शून्यता।
१०. मांस क्षीणता। ११ कम्प। १२. शीतल स्निग्ध चर्म।
१३. आंशिक या पूर्ण चेतना हीनता।
१४. प्रथम कनीनक संकोच जो पुनः प्रसारित हो जाती है। १५. नाड़ी तीव्र।
१६. प्रारम्भ में श्वास तीव्र तथा कष्ट पूर्ण जो पुनः मद हो जाता है।
१७. प्रलाप। १८. आक्षेप। १९. श्वासकेन्द्र के घात से मृत्यु।

चिरकालिक विष के लक्षण—

१. कास। २. क्षुधानाश। ३ वमन। ४. अतिसार। ५. पाण्डु।
६ मूर्च्छा। ७ हृदय की क्षीणता। ८. तीव्र तथा अनियमित नाड़ी।
९ कम्प। १०. स्मरणशक्ति की विकृति। ११. अन्धता।

चिकित्सा—

१. टेनिन (Tannin) मिश्रित गरम जल से आमाशय प्रक्षालन।
२. शरीर को गरम रखना।
३. शिर पर शीतल जल में भिगा वस्त्र या बर्फ रखना।
४. एट्रोपीन (Atropine) तथा स्ट्रिक्नीन त्वचागत प्रविष्ट करना।
५ आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना। ६. कृत्रिम श्वास कर्म।
७ विद्युत का व्यवहार।

धवल (Lobelia Nicotianae)

इसमें लोबेलीन (Lobeline) तथा लोबेलिक एसिड (Lobelic Acid) नामक पदार्थ मिलते हैं। लोबेलीन उडनशील तैलवत पीले रंग का तरल होता है। इसका गंध तम्बाकू सदृश होता है। यह ईथर में स्वतन्त्रता पूर्वक घुलन शील होता है।

घातक मात्रा— शुष्क पत्ती चूर्ण १ ड्राम। घातक काल—½ से ३६ घण्टे के अन्दर।

लक्षण—

१. गला, अन्न प्रणाली तथा आमाशय मे दाहयुक्त वेदना।
२ वमन। ३. कष्टप्रद हल्लास। ४ शिरः शूल। ५. भ्रम।
६. तीव्र नाड़ी। ७ कनीनक सकोच। इसपर प्रकाश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
८. मांसल ऐंठन। ९ चेतना हीनता। १० अवसाद। ११. अतिसार।
१२. कष्टप्रद मूत्र त्याग। १३. सन्यास। १४ मृत्यु।

चिकित्सा—

१. यदि वमन प्रारम्भ न हो तो वमन कराना।

२. आमाशय प्रक्षालन। ३. शरीर को गरम रखना।

४. स्ट्रिक्नीन (Strychnine) को त्वचा गत प्रविष्ट करना।

पिलोकार्पीन (Pilocarpine)

घातक मात्रा—अनिश्चित। घातक काल—अनिश्चित।

१. चर्म का नीला होना। २. लालास्रावाधिक्य। ३. अश्रुस्रावाधिक्य।
४. स्वेदाधिक्य। ५. कनीनक संकोच। ६. हृदयावसाद। ७. तृषा।
८. हृल्लास। ९. वमन। १०. अतिसार। ११ उदरस्थ वेदना।
१२. श्वास कष्ट। १३ आक्षेप। १४ अवसाद।
१५. श्वासकेंद्र के घात से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय को रिक्त करना।

२. एट्रोपीन सल्फेट (Atropine Sulphate) को $\frac{1}{100}$ ग्रेन की मात्रा में त्वचागत प्रतिविष के रूप में प्रविष्ट करना।

३ स्ट्रिक्नीन आदि उत्तेजक औषधि का व्यवहार करना।

डिजिटेलिस (Digitalis)

घातक मात्रा—चूर्ण ३८ ग्रेन। टिंचर—१ ड्राम।

घातक काल—४५ मिनट से २४ घंटा।

लक्षण—

१ तृषा। २. हृल्लास। ३. उदर में तीव्र वेदना के साथ साथ वमन।
४. अतिसार। ५ भ्रम। ६. तीव्र शिरःशूल। ७. मूर्च्छा।
८. हृदयाधरिक प्रदेश में कष्ट। ९. नाड़ीगति २५ वार प्रति मिनट।
१०. श्वास प्रश्वास मंद। ११. कनीनक प्रसार। १२. दृष्टि की कमी।
१३ प्रलाप। १४. आक्षेप। १५. मूत्राघात।
१६. निद्राधिक्य। १७. सन्यास।

चिकित्सा—

१ आमाशय प्रक्षालन। २. चाय या काफी पिलाना। ३. रोगी को गरम रखना।

४. एट्रोपीन (Atropine) तथा स्ट्रिक्नीन आदि का व्यवहार करना।

कीनीन (Quinine)

घातक मात्रा—६० ग्रेन से १२० ग्रेन। घातक काल—$\frac{1}{2}$ घण्टे से २ घण्टे तक।

लक्षण—

१. भ्रम। २. शिरःशूल। ३. कर्ण घवेड तथा आंशिक वाधिर्य।
४ नासा रक्तस्राव (Epitaxis)। ५. दृष्टि में व्यवधान।
६. उच्चारण में कठिनाई। ७ उदर में वेदना।
८. वमन। ९ अतिसार। १० बुद्धि हीनता। ११ मांस क्षीणता।
१२. कण्डु। १३ त्वगांकुरोत्पत्ति या चकत्ते की उत्पत्ति।
१४ शीतल स्निग्धचर्म। १५ मूत्र का लालवर्ण होना। १६. श्वास कष्ट।
१७. मंद तथा अव्यक्त नाड़ी। १८. अवसाद। १९. नीलिमा।
२०. प्रलाप। २१. आक्षेप। २२. श्वासावरोध से मृत्यु।

चिकित्सा—

१ वामक द्रव्य व्यवहार या आमाशय प्रक्षालन।
२. स्ट्रिक्नीन, कैम्फर तथा डिजिटेलिस आदि का व्यवहार।
३ गरम दुग्धपान। ४ शरीर को गरम रखना।
५. आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास क्रिया करना।

कनेर (Nerium Odorum)

घातक मात्रा—१ तोला (१८० ग्रेन)। घातक काल—३ से २४ घण्टा।

लक्षण—

१. निगलने में कष्ट होना। २ उच्चारण में कठिनाई। ३. उदर में वेदना।
४. वमन। ५. झाग निकलना। ६ अतिसार।
७ नाड़ी तीव्र तथा क्षीण। ८. श्वास प्रश्वास तीव्र। ९. कनीनक प्रसारित।
१०. मांसल अकड़न। ११. निद्राधिक्य। १२. चेतना-हीनता।
१३. हनुस्तम्भ। १४ सन्यास। १५. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. आमाशय प्रक्षालन। २. ईथर आदि उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार।
३ लाक्षणिक चिकित्सा। ४ दुग्ध तथा मक्खन खिलाना।
५. शिर पर शीतल जल या वर्फ रखना।

स्ट्रोफैंथस (Strophanthus)

इसका प्रभाव डिजिटेलिस (Digitalis) के सदृश होता है। चिकित्सा भी डिजिटेलिस सदृश ही है।

वत्सनाभ या मीठा विष (Aconi

घातक मात्रा—२० से ३० ग्रेन। घातक काल—१ से ५ घण्टा

लक्षण—

१. ओष्ठ, जिह्वा, मुख तथा गले में दाह होती है, जो शून्यता तथा सञ्ज्ञाहीनता में परिणत हो जाती है।

२. हृल्लास। ३. लालास्रावाधिक्य। ४. उदर में वेदना। ५. वमन।

६. सम्पूर्ण शरीर में चुभोने सदृश वेदना होती है।

७. बेचैनी। ८ कनीनक बारी बारी से संकुचित तथा प्रसारित होती रहती है।

९. दृष्टि विकृत हो जाती है। १०. भ्रम। ११. तीव्र क्षीणता।

१२. मांस दुर्बलता तथा वेदना। १३. मांस पेशियों की अकड़न।

१४. मंद, क्षीण तथा अनियमित नाड़ी गति।

१५. श्वास प्रश्वास मंद, उथला तथा कष्ट के साथ चलता है।

१६. चर्म शीतल तथा आर्द्र होता है।

१७. तापक्रम स्वाभाविक से न्यून होता है।

१८. प्रलाप। १९. श्वासावरोध से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. वामक द्रव्यों का व्यवहार करना।

२. टेनिक एसिड (Tannic Acid) युक्त जल से आमाशय प्रक्षालन करना।

३. एमील नाइट्राइट (Amyl Nitrite) सुघाना।

४. एट्रोपीन (Atropine) त्वचागत प्रविष्ट करना।

५. डिजिटेलिस, स्ट्रिक्नीन और ईथर आदि उत्तेजक ओषधियों को त्वचागत प्रविष्ट कराना।

६. शरीर को गरम रखना। ७. आवश्यकतानुसार कृत्रिम श्वास क्रिया कराना।

८. अवसाद को दूर करने के लिये हाइपरटानिक सेलाइन (Hypertonic Saline) को शिरागत प्रविष्ट करना।

९. घृतपान। १०. सोंठ का सेवन विष नाशक है।

११. अर्जुन वृक्ष के छाल का चूर्ण असमान घृत तथा मधु के साथ सेवन करने से विष शान्त होता है।

१२. घी के साथ सुहागा का व्यवहार करना। यह भी विष नाशन में श्रेष्ठ है।

१३. दूध के साथ निर्विषी पिलाना चाहिये।

हाइड्रोसायनिक एसिड (Hydrocyanic Acid)

यह पोटेशियम सायनाइड (Potassium Cyanide) या पोटेशियम फेरोसाइनाइड (Potassium Ferrocyanide) तथा डायलूट सल्फुरिक एसिड (Dilute Sulphuric Acid) से तैयार किया जाता है। शुद्ध हाइड्रोसायनिक एसिड रंगहीन उड़नशील तरल होता है। इसका गंध कड़वे बदाम सदृश होता है। यह जल,

अल्कोहल, ईथर में घुलनशील होता है। यह तीव्र विष होता है। इसका व्यवहार चूहे और चूहियों को नष्ट करने के लिये धूम्र रूप में होता है।

घातक मात्रा—½ ड्राम। घातक काल—२ से १० मिनट।

लक्षण—

१. श्वास से हाइड्रोसायनिक एसिड का गंध निकलना।
२. मांसल शक्ति का ह्रास। ३. भ्रम।
४. नेत्र खुले हुये तथा चमकते हुये होते हैं।
५. कनीनक प्रसारित होती है तथा उस पर प्रकाश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
६. चेतना शक्ति नष्ट हो जाती है।
७. श्वास प्रश्वास मंद तथा शब्द युक्त होता है।
८. हनु कठोर हो जाता है।
९. नाड़ी प्रारम्भ में तीव्र तथा क्षीण होती है, जो बाद में अव्यक्त हो जाती है।
१०. नीलिमा। ११. शीतल, स्निग्ध चर्म।
१२. संकोचक पेशियों की शिथिलता।

अल्पमात्रा के लक्षण—

१. गला का संकुचित होना। २. लालास्रावाधिक्यता।
३. भ्रम। ४. हृल्लास। ५. शिरःशूल।
६. वक्ष में कष्ट का अनुभव होना। ७. मांसल शक्ति का ह्रास।
८. मुखमण्डल पर चकत्ता (धब्बा) का पाया जाना।
९. मुख से झागोत्पत्ति। १०. नेत्र स्निग्ध तथा निकले हुये होते हैं।
११. कनीनक विस्फारित होती है।
१२. अंगुलियों के नख नीले वा गुलाबी रंग के हो जाते हैं।
१३. आक्षेप। १४. अनैच्छिक रूप से मल मूत्र का त्याग।

पोटेशियम साइनाइड (Potaossium Cyanide)

लक्षण—

१. मुख, गला तथा आमाशय दग्ध हो जाता है।
२. हृदयाधरिक प्रदेश में वेदना होती है। ३. वमन।
४. मुखमण्डल, ग्रीवा तथा हाथ नीले हो जाते हैं।
५. ओष्ठ पर श्वेत झाग आते हैं। ६. कनीनक प्रसारित हो जाती है।
७. अव्यक्त नाड़ी। ८. उथला तथा मंद श्वास प्रश्वास।
९. बराबर मूत्र त्याग होते रहना। १०. सन्यास। ११. मृत्यु।

चिरकालिक विष के लक्षण—यह चित्रकार (Photographers) तथा इसमें काम करने वालों में होता है।

१. शिरः शूल। २ भ्रम। ३. क्षुधानाश। ४ हृल्लास।
५. कोष्ठवद्धता। ६. दुर्गन्धित श्वास। ७ श्वासकष्ट। ८. पाण्डु।

नोटः—यह सम्पूर्ण विषों से शीघ्रगामी विष होता है; अतः बड़ी मात्रा में व्यवहृत करने पर इसका लक्षण कुछ सेकेण्ड के अन्दर ही प्रारम्भ होकर २ मिनट के अन्दर मार देता है; अतः चिकित्सा के लिये समय का अभाव होता है। यदि हलके मात्रा में व्यवहृत किया जाय तब तक कुछ समय चिकित्सा के लिये मिल जाता है।

जब रोगी १ घण्टे तक जीवित रह जाता है तब उसके बच जाने की पूरी सम्भावना रहती है।

चिकित्सा—

१. पोटेशियम परमाग्नेट के तनु घोल से आमाशय प्रक्षालन करना चाहिये।
२. पोटेशियम सायनाइड विष मे प्रक्षालक द्रव में सिरका भी मिला देना चाहिये।
३. प्रक्षालक नलिका के अभाव में एपोमार्फिन हाइड्रोक्लोराइड (Apomorphine Hydrochloride) को त्वचा गत प्रविष्ट कर वमन कराना चाहिये।
४. शिर पर बर्फ रखना चाहिये। ५. अमोनिया सुंघाना चाहिये।
६. एट्रोपीन तथा स्ट्रिक्नीन आदि का सूचीवेध त्वचागत प्रविष्ट करना चाहिये।
७. कृत्रिम श्वास कर्म करना।
८. कार्बनडाइ आक्साइड मिश्रितआक्सीजन सुंघाना चाहिये।
९. पोटेसियम कार्बोनेट (Potassium Carbonate) के साथ फेरस (Ferrous) या फेरिक सल्फेट (Ferric sulphate) को मिलाकर प्रतिविष के रुप में व्यवहार करें।
१० सोडियम थायोसल्फेट (Sodium thiosulphate) को शिरागत १ सी० सी० की मात्रा में १०% प्र० श० घोल को प्रविष्ट करावें। यह विष नाशक है।
११. ग्लुकोज तथा इन्सुलीन (Insuline) को शिरागत प्रविष्ट करना लाभ दायक है।
१२. पोटेशियम सायनाइड विष में मीथायलीनब्ल्यू (Methylene blue) को ५० सी० सी० की मात्रा में प्रतिविषके रुप में शिरागत प्रविष्ट कराते हैं।
१३. १०% प्र० शत शक्तिके घोल को १० से २० सी० सी० की मात्रा में सोडियम थायोसल्फेट तथा १½ ग्रेन की मात्रा में एमीलनाइट्राइट (Amyl Nitrite) को सायनाइड विष में शिरागत प्रविष्ट करने से अत्यधिकलाभ होता है।
१४. गैस विष में घातक रोगियों में कोरामीन (Coramine) को शिरागत प्रविष्ट करने से अधिक लाभ होता है।

श्वासावरोधक गैस (Asphyxiant Gases)

कार्बनडाइआक्साइड (Carbon Dioxide)

यह रंगहीन तथा भारी होता है। इसको सुंघाने से निम्नलिखित लक्षण व्यक्त होते हैं।

लक्षण—

१. शिर का भारी होना।

२. शंखिक धमनी (Temporal arteries) में स्पन्दन। ३. भ्रम।

४. कर्णक्ष्वेड। ५. मांसक्षीणता। ६. निद्राधिक्यता। ७. सन्यास।

८. शब्दयुक्त श्वास प्रश्वास। ९. आक्षेप। १० प्रलाप। ११ श्वासावरोध से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. स्वच्छ वायु में रोगी को रखना।

२. आक्सीजन सुंघाने के साथ साथ कृत्रिम श्वास क्रिया कराना।

३. श्वास आने पर शरीर को गरम रखना तथा गरम गरम दूध और ब्राण्डी (Brandy) पिलाना।

कार्बन मानो आक्साइड (Carbon Monoxide)

यह रंगहीन, स्वाद हीन तथा गंधहीन गैस होता है। यह तीव्रविष होता है। यह लाल रक्त कणों को निर्बल बनाता है।

लक्षण—

१. तीव्र रूप में व्यवहार करने पर अकस्मात् संज्ञाहीनता उत्पन्न हो जाती है।

२. सन्यास। ३ मृत्यु।

हल्के रूप में सुंघने पर उत्पन्न होने वाले लक्षणः—

१. भ्रम। २. शिरः शूल। ३. कर्णनाद। ४ हृल्लास।

५. कभी कभी वमन। ६. मांसक्षीणता। ७. निद्राधिक्य।

८. कनीनकप्रसार। ९. श्वासावरोध। १०. सन्यास। ११ आक्षेप।

१२. कम्पन। १३. मृत्यु।

चिकित्सा—

१. स्वच्छ वायुमण्डल में रखना।

२. कृत्रिम श्वासकर्म के साथ साथ आक्सीजन सुंघाना।

३. एड्रेनलीन (Adraneline) को त्वचागत प्रविष्ट कराना।

४. कोरामीन (Coramine) शिरागत प्रविष्ट कराना।

५. शरीर को गरम रखना। ६. गरम गरम दूध पिलाना।

नाइट्रस आक्साइड (Nitrous Oxide)

इसे लाफिंग गैस (Laughing Gas) भी कहते है। यह रंगहीन गैस होता है।

लक्षण—

१. प्रविष्ट कराने पर प्रथम रोगी खूब हंसता है। २. पुनः सञ्ज्ञाहीन हो जाता है।
३. नीलिमा। ४. शीतल तथा स्निग्ध चर्म।
५. घरघराहट के साथ कष्टपूर्ण श्वास प्रश्वास। ६. श्वास प्रश्वास के घात से मृत्यु।

चिकित्सा—

१. कार्बन डाईआक्साइड (Carbon Dioxide) और आक्सीजन (Oxygen) सुंघाना। २. कृत्रिम श्वास कर्म कराना।
३. उत्तेजक ओषधियों का व्यवहार करना।

युद्ध गैस (War Gases)

युद्ध काल में निम्नांकित विषैले गैसों का व्यवहार शत्रुओं के विनाशार्थ किया जाता है:—

१. फफोलोत्पादक गैस (Vesicants Gases)
२. श्वासावरोधक गैस (Asphyxiants „)
३. अश्रु गैस (Lacrymatus or Tear Gases)
४. नाशा क्षोभक (Nasal irritants)
५. घातोत्पादक (Paralysants Gases)

चिकित्सा—

१. फफोलोत्पादक गैस—

(क) रोगी के सम्पूर्ण वस्त्र को शीघ्रता के साथ पृथक् करना।
(ख) शरीर को साबुन तथा जल से भली भाँति स्वच्छ करना।
(ग) नेत्र को गरम जल या नार्मल सेलाइन से प्रक्षालित करना।
(घ) नेत्र में १ प्र० शत एट्रोपीन (Atropine) घोल युक्त एरण्ड तैल (Castor oil) को एक वा दो बूंद की मात्रा में डालना।
(ङ) नाशिका को सोडा बाई कार्ब (Soda Bicarb) के ५% प्र० शत घोल से धोना।
(च) टैनिक एसिड (Tannic Acid) घोल को शरीर पर मलना।
(छ) श्वासप्रश्वास ग्राहक (Respirator) को पहनना।
(ज) आर्सेनिकल गैस में B. A. L. (British Anti Lewisite) को मांसगत प्रविष्ट करना।

२. श्वासावरोधक गैस—

(क) पूर्ण विश्राम देना। (ख) आक्सीजन सुंघाना।
(ग) शिरामोक्षण (शिरा से रक्त निकालना)।

(घ) कासनाशनार्थ कोडीन (Codeine) का व्यवहार करना।

(ङ) कैल्शियम ग्लुकोनेट (Calcium Gluconate) को फुफ्फुस शोथ (Oedema) से रक्षा के लिये मांसगत प्रविष्ट करना।

३. अश्रुगैस—

(क) नारमल सेलाइन के गरम घोल से नेत्र प्रक्षालन।

(ख) स्वच्छ वायु मण्डल में रोगी को रखना।

(ग) श्वासप्रश्वास ग्राहक (Respirator) का व्यवहार करना।

४. नासा क्षोभक गैस—

(क) स्वच्छ वायु में रखना।

(ख) सोडा बाई कार्ब के घोल से नासाप्रक्षालन करना।

(ग) वेदनाधिक्य में क्लोरोफार्म सुंघाना।

५. घातोत्पादक गैस—इनका व्यवहार नहीं होता।



व्यवहारायुर्वेद

(JURISPRUDENCE)

व्याख्या—जो शास्त्र व्यक्तियों के नागरिक या सामाजिक अधिकारों तथा आघातों (Injuries) से सम्बध रखता है तथा चिकित्सक को विधान (Law) के सम्पर्क में लाता है; वह व्यवहारायुर्वेद कहलाता है।

मृत्यु (Death)

प्रकार—

१. स्थूल मृत्यु (Somatic or Systemic)   २. सूक्ष्म (Molecular)

स्थूल मृत्यु—जीवन तथा स्वास्थ्य को बनाये रखने वाले मस्तिष्क हृदय तथा फुफुसों के कार्यों के पूर्ण रूप से बंद हो जाने को स्थूल मृत्यु कहते हैं। मस्तिष्क, हृदय, फुफ्फुसों को जीवन का त्रिपाद कहते हैं।

सूक्ष्म मृत्यु—शरीर के तंतुओं और कोषाणुओं के मृत्यु को कहते हैं, जो स्थूलमृत्यु के कुछ काल पश्चात् होता है। इसमें शरीर शीतल हो जाता है।

मृत्यु के साधन (Modes of Death)

प्राकृतिक वा आकस्मिक सभी प्रकार के मृत्यु के साधारणतया ३ साधन हैं:—

१. सन्यास (Coma)   २. मूर्च्छा (Syncope)   ३. श्वासावरोध (Asphyxia)

सन्यास (Coma)

व्याख्या—मस्तिष्क के कार्य के नष्ट हो जाने के कारण संज्ञाहीनता होकर होने वाली मृत्यु को सन्यास जन्य मृत्यु कहते हैं।

कारण—

१. मस्तिष्क पर दबाव पड़ने से:—

(क) आघात।   (ख) मस्तिष्क वा मस्तिष्कावरण की व्याधियाँ।

(ग) शोथ (Inflammation)   (घ) विद्रधि।   (ङ) अर्बुद।

(च) अन्तः शल्यता (Embolism)

(छ) धमनी में रक्त स्कन्दन (Thrombosis)

२. विष जो मस्तिष्क और नाड़ी संस्थान पर कार्य करते हैं—

(क) अहिफेन (Opium)   (ख) मद्य (Alcohol)

(ग) कार्बोलिक एसिड (Carbolic Acid)

३ यकृत् और वृक्क के व्याधि जन्य विषों से।

लक्षण—

१. पूर्ण संज्ञाहीनता। २. परावर्तित क्रियाओं का नष्ट हो जाना।
३ सङ्कोचक पेशियों की शिथिलता। ४ कनीनक प्रसार या सकोच।
५. कनीनक का प्रकाश से उदासीन (अप्रभावित) होना।
६. शीतल स्वेद से आच्छादित चर्म। ७ ताप स्वाभाविक से न्यून।
८. श्वास मन्द, अनियमित तथा शब्दयुक्त।
९. श्वास मार्ग में श्लेष्मा का एकत्रित हो जाना।
१० नाड़ी भरी हुई किन्तु मन्द चलती है।

मूर्च्छा (Syncope)

व्याख्या—हृदय के कार्य को बन्द होने से होने वाली मृत्यु को मूर्च्छा कहते हैं।

कारण—

१ सम्पूर्ण प्रकार के रक्तस्राव (Haemorrhage) से होने वाला पाण्डु (Anaemia) २ हृदय की व्याधि जन्य शक्ति हीनता।
३ स्तब्धता के कारण हृदय का कार्यावरोध। ४. औपसर्गिक व्याधियाँ।

लक्षण—

१. ओष्ठ तथा मुखमण्डल का पीला होना। २ दृष्टि की कमी।
३. कनीनक प्रसार। ४ शीतल स्वेदाधिक्य। ५ बेचैनी।
६ श्वास प्रश्वास की कमी। ७ कानों में शब्द होना। ८ मिचली।
९. वमन। १०. कुछ प्रलाप। ११. संज्ञाहीनता।
१२ आक्षेप। १३ मृत्यु।

श्वासावरोध (Asphyxia)

व्याख्या—हृदय कार्यावरोध के पूर्व ही जब फुफ्फुसों का कार्य बन्द हो जाता है; तब उसे श्वासावरोध कहते हैं।

कारण—

१ किसी भी प्रकार से वायु प्रणाली मे अवरोध होना।
२ वायु मण्डल मे आक्सीजन (Oxygen) के मात्रा की कमी।
३ श्वास प्रश्वास के मांस पेशियों में गति का किसी भी कारण से बन्द हो जाना।
४ फुफ्फुसों में रक्तसवहन का अवरोध।
५ आघात या व्याधियों के कारण फुफ्फुस का संकुचित (Collapse) हो जाना।

लक्षण—लक्षण ३ अवस्थाओं में उत्पन्न होते हैं:—

प्रथमावस्था—

१. शिर का भारी होना। २. कानों में शब्द होना।

३. ओष्ठ का नीला होना। ४. नेत्रों का निकल आना।
५. श्वास प्रश्वास गम्भीर, शीघ्रता के साथ कष्ट पूर्ण होता है।
६. रक्त-चाप अधिक हो जाता है। ७. नाड़ी तीव्र हो जाती है।

द्वितीयावस्था—

१. आक्षेप। २. मुखमण्डल तथा हाथ, पैर गम्भीर नीले रंग के हो जाते हैं।
३. चेतना शक्ति विकृत हो जाती है। ४. संकोचक पेशियाँ शिथिल हो जाती हैं।

तृतीयावस्था—

१. मांस पेशियाँ शिथिल हो जाती हैं। २. पूर्ण संज्ञा नष्ट हो जाती है।
३. परावर्तित क्रियाओं का नाश हो जाता है।
४ कनीनक पूर्ण प्रसारित हो जाती है। ५. रक्तचाप अत्यधिक न्यून हो जाता है।
६. श्वास प्रश्वास रुक रुक कर देर में आता है।
७. नाड़ी कठिनाई से व्यक्त की जाती है। ८. मृत्यु।

ये तीनों अवस्थायें ५ मिनट के अन्दर ही समाप्त हो जाती हैं। कभी कभी १५, २० मिनट लगता है।

आकस्मिक मृत्यु (Sudden Death)

कारण—

१. आघात (Violence) २. विष (poisons)
३. हृदय तथा हृदयावरण की व्याधियाँ।
४. रक्त प्रणालियों की व्याधियाँ जैसे धमनीप्रसार, अन्तःशल्यता तथा शिरागुच्छादि।
५. मस्तिष्कगत रक्तस्राव।
६. भय, क्रोध तथा अन्य उत्तेजनाओं से।
७ श्वास-प्रश्वास अंगों की व्याधियों के फल स्वरूप।
८. आमाशयिक तथा पक्वाशयिक व्रणों के विदारण से।
९. गर्भित गर्भाशय के विदार से। १०. गर्भाशयोत्तर गर्भ के फलस्वरूप।
११. अत्यधिक प्रसारित मूत्राशय तथा प्लीहा के विदार के फलस्वरूप।
१२ शरीर से अकस्मात् अत्यधिक द्रव, जैसे जलोदर से जल निकालने के परिणाम स्वरुप।
१३. विसूचिका, इन्फ्लयूएंजा (श्लैष्मिक ज्वर) आदि के फलस्वरूप।

मृत्यु के चिह्न (Signs of Death)

१. रक्तसंवहन तथा श्वास प्रश्वास का पूर्ण रूप से निरन्तर बन्द हो जाना।
२. कृष्णमण्डल (Cornea) का धुंधला, अपारदर्शक तथा प्रतिक्रियाहीन हो जाना।

३. शरीर के चर्म का भूरे रंग का, स्थितिस्थापकत्वगुण हीन हो जाना।
४. शरीर का शीतल हो जाना; किन्तु निम्न व्याधियों में कुछ रासायनिक परिवर्तन के कारण मृत्यूत्तर ताप की वृद्धि भी होती है:—
(क) विसुचिका (Cholera) (ख) मसुरिका (Small Pox)
(ग) पीतज्वर (Yellow Fever)
(घ) आमवात ज्वर (Rheumatism)
(ङ) मस्तिष्क सौषुम्निक ज्वर (Cerebrospinal Meningitis)
(च) यकृत् विद्रधि (Liver Abscess)
(छ) उदरावरण शोथ (Peritonitis)
(ज) वृक्क शोथ (Nephritis) (झ) नाड़ी संस्थान का आघात।
(ञ) मद्य तथा कुचिला के विष में।
(ट) हनुस्तम्भ (Tetanus) नामक व्याधि में।
५ मृत्यूत्तर मांसपेशी जन्य अकड़न। ६. सड़न (कोथ) (Putrefaction)
७. शरीर से दुर्गन्ध निकलना। ८. कृमियों का बाहुल्य।
९ शरीर का शुष्क हो जाना।

आघात (Injuries)

प्रकार—

१. कुचलना (Bruises) २. खुरचन (Abrasions)
३ क्षत (Wounds)

कुचलना (Bruises)

व्याख्या—चर्म के विना विदीर्ण हुए ही चर्माधः तन्तुओं (Subcutaneos tissues) का फट जाना तथा चर्म के अधः वेदना पूर्ण शोथोत्पत्ति को कुचलना कहते हैं। यह सूजन (Swelling) चर्म के अधः के रक्त प्रणालियों के फट जाने के फल स्वरूप एकत्रित रक्त के कारण होती है।

साधन—कुन्द हथियार, जैसे लाठी, लोह छड़, पत्थर आदि के आघात से या अन्य किसी भारी वस्तु से दब जाने के फल स्वरूप होता है।

परिणाम—ये साधारण आघात हैं। इनसे मृत्यु की सम्भावना बहुत कम होती है। जब आभ्यन्तरिक अंग इस आघात से फटता है, तब मृत्यु देखी गई है। वा तंतु बुरी तरह से कुचल गये हैं; जिनके फल स्वरूप उस भाग में पूय तथा कोथ उत्पन्न हो गया है। तब भी मृत्यु हो जाती है।

उदाहरणार्थ—सन् १९१० ई० के जून मास में बल्लू नामक एक स्त्री, (जिसकी

अवस्था १३ वर्ष की थी) को उसके पति तथा श्वसुर ने गृहकार्य को भली भाँति सम्पादन न करने के अपराध में इतना मारा कि वह मर गई। शवपरीक्षा से व्यक्त हुआ कि उसकी मृत्यु स्तब्धता के कारण हुई है, जो उसके शरीर के विभिन्न भागों पर स्थित २९ साधारण कुचलन (Bruises) से उत्पन्न था।

अवस्था—इस आघात की अवस्था का ज्ञान इसके वर्ण परिवर्तनों से किया जाता है, जो उपस्थित रक्ताधिक्य के शोषण के समय होता रहता है। वर्ण परिवर्तन के समय की तालिका नीचे दी जाती है।

वर्ण (Colour)	समय (Duration)
लाल	आघात लगने के एक वा दो घण्टे बाद।
नीला, काला, भूरा या भेक वर्ण।	३ दिन पश्चात्।
हरा (Greenish)	५ वें से ६ वें दिन से।
पीला (Yellow)	७ वें से १२ वें दिन से।
स्वाभाविक वर्ण	१४ वें या १५ दिन।

ये परिवर्तन आघात की तीव्रता तथा व्यक्ति के स्वास्थ पर भी निर्भर करते हैं। स्वस्थ व्यक्तियों में तथा साधारण आघात में परिवर्तन शीघ्र होते हैं; जबकि क्षीण व्यक्तियों में तथा तीव्र आघात में ये परिवर्तन अधिक समय में होते हैं।

गम्भीर तन्तुओं में रक्ताधिक्यता (Ecchymosis) होने पर चर्मगत उपरोक्त परिवर्तन नहीं होते। वर्त्मंमण्डल के नीचे (Subconjunctival) रक्ताधिक्य होने पर उतने परिवर्तन नहीं होते; बल्कि प्रारम्भ में गम्भीर लाल रंग का होता है तथा फिर पीले रंग का होकर लुप्त हो जाता है।

आकस्मिक, परकृत तथा स्वकृत कुचलन में विभिन्नता
(Difference between Accidental, Homicidal and Self inflicted Bruises)

आकस्मिक	परकृत	स्वकृत
आघात के आस पास धूलि, कीचड़ या कंकड़ आदि का चिह्न मिलना।	हथियार के अनुसार आघात का स्वरूप होता है। यदि लाठी, ईंटे या बन्दूक के कुंदे से आघात लगा होगा, तब उसका आकार गोला होगा। छड़ी से मारने पर लम्बा तथा अनियमित होता है। बेत या कोड़े से मारने पर लम्बा तथा उनके आयाम के बराबर आयाम में होता है।	बहुधा नहीं होता।

मृत्यु से पूर्व तथा पश्चात् के कुचलन में विभिन्नता

मृत्यु–प्राक्	मृत्यूत्तर
१. जीवितावस्था के आघात में सूजन तथा वर्ण परिवर्तन उपस्थित होता है।	१ अनुपस्थित होता है।
२. अधस्त्वक् के तंतुओं में तथा मांससूत्रों में रक्त एकत्रित हो जाता है।	२. अनुपस्थित होता है।

खरोंच (Abrasions)

व्याख्या—जिस आघात में चर्म का ऊपरी पर्त छिल जाता है; उसे खरोंच कहते हैं।

कारण—१ खुरदुरे स्थान पर गिरने से। २. नाखून से खुरचने से।
३. दांतों से काटने से।

लक्षण—

१. गिरने से जो आघात बनता है; वह आघात मुख्यतया अस्थि वाले भाग पर पाया जाता है।
२. आघात का स्थान धूलि आदि से लिप्त होता है।
३. नाखून का आघात मुख मण्डल, ग्रीवा, अग्रबाहु तथा हाथों पर स्थित होता है।
४ आघात धनुषाकार होता है।
५ स्थानिक ततुओं में रक्ताधिक्य हो जाता है।
६ दांतों से उत्पन्न आघात गोलाकार तथा दोनों पार्श्वों में दन्तचिन्हयुक्त होता है।
७. दांतों के चिन्हों के बीच के स्थान में रक्ताधिकता हो जाती है।

मृत्यु से पूर्व तथा पश्चात् के खरोंच में विभिन्नता

मृत्यु–प्राक्	मृत्यूत्तर
१. रक्त स्राव युक्त पृष्ठ होता है।	१ व्रण कृष्ण वर्ण का होता है।
२. भूरे रंग के खुरण्ड से ढका रहता है।	२. रक्त स्राव नहीं होता।
३ १० से १५ दिनों में बिना व्रण वस्तु के ही भर जाते हैं।	३ व्रण के अधः तंतुओं में रक्ताधिक्य नहीं होता।

क्षत (Wounds)

व्याख्या—चर्म या श्लैष्मिक कलाओं के साथ साथ शरीर के कोमल तन्तुओं के पर्त्त को शक्तिपूर्वक नष्ट कर देने को क्षत (Wounds) कहते हैं।

प्रकार—

१ छिन्न क्षत (Incised Wound) ३. पिच्चितक्षत (Punctured Wound)
२. विद्धक्षत (Lacerated Wound) ४. गोली का क्षत (Gun Shot „)

छिन्न क्षत (Incise Wound)

व्याख्या—तीक्ष्ण धार युक्त शस्त्र से जो क्षत बनता है; उसे छिन्न क्षत कहते हैं।

स्वरूप—

१. शस्त्र के किनारे से क्षत चौड़ा होता है; क्योंकि छिन्न तन्तु सिकुड़ जाते हैं।
२. क्षत अधः की अपेक्षा ऊपर अधिक चौड़ा होता है।
३. क्षत के किनारे चिकने, स्पष्ट, नियमित तथा मुड़े हुये होते हैं।
४. प्रारम्भ में क्षत गम्भीर तथा अन्त में उथला होता है।
५. रक्तस्रावाधिक्य।
६. अत्यधिक भार युक्त शस्त्र से होने वाला क्षत पिच्चित क्षत सदृश होता है तथा उनके अधः की गम्भीर रचनायें भी बुरी तरह से प्रभावित हो जाती है।

विद्ध क्षत (Punctured Wounds)

व्याख्या—नोकीले शस्त्रों के चुभाने से जो क्षत बनता है;उसे विद्ध क्षत कहते हैं।

लक्षण—

१. क्षत की गहराई; लम्बाई तथा चौड़ाई से अधिक होती है।
२. बाह्य रक्तस्राव आभ्यन्तरिक रक्तस्राव की अपेक्षा बहुत ही कम होता है।
३. विद्धक्षत का प्रवेश क्षत, निर्गम क्षत (Exit Wound) की अपेक्षा बड़ा होता है तथा प्रवेश (Entery Wound) क्षत का किनारा नीचे की ओर तथा निर्गम क्षत का किनारा बाहर की ओर मुड़ा होता है।
४. जब शस्त्र को प्रविष्ट करने के पश्चात् थोड़ा पीछे खींच कर पुनः प्रविष्ट किया जाता है, तब दो या अधिक क्षत अन्दर में निर्मित हो जाता है।

पिच्चित क्षत (Lacerated Wound)

व्याख्या—जो क्षत मशीन, रेलगाड़ी, गाड़ी के पहिये, जानवरों के पंजे, दांत, सींग तथा नखों से होते हैं उन्हें पिच्चित क्षत कहते हैं।

लक्षण—

१. क्षत के किनारे फटे हुये, अनियमित तथा सूजे हुये होते हैं।
२. क्षतस्थान के तन्तु तथा अस्थियां भी टूट जाती हैं।
३. क्षत में धूलि, मशीन का तेल, बाल तथा वस्त्रादि बहुधा पाये जाते हैं।
४. रक्तस्राव अधिक नहीं होता।

गोली का क्षत (Gun Shot Wounds)

लक्षण—

१. प्रवेश तथा निर्गम नामक दो क्षत होते हैं। जब एक ही क्षत उपस्थित रहता है; तब यह समझना चाहिये, कि गोली बाहर न निकल कर शरीर में ही स्थित है।

२. प्रवेश क्षत निर्गम क्षत की अपेक्षा छोटा होता है।
३. गोली जब समकोण पर लगती है; तब क्षत गोल होता है तथा जब तिरछे लगती है, तब अण्डावत क्षत बनता है।
४ क्षत के किनारे नीचे को मुड़े हुये तथा नीले होते हैं।
५ क्षत में कपड़े आदि के टुकड़े पाये जाते हैं।
६ क्षत के किनारे झुलस जाते हैं तथा मसाले लग जाते हैं।
७. निर्गम क्षत के किनारे बाहर की ओर मुड़े होते हैं।
८. जब गोली अस्थि से टकराती है; तब पुनः प्रवेश मार्ग से ही निकल आती है; ऐसी स्थिति में एक ही क्षत पाया जाता है।

तीव्रतानुसार आघात के प्रकार—

१. साधारण (Simple)   २. घातक (Grievious)

साधारण आघात—जो आघात बहुत प्रसारित नहीं होता तथा भयानक नहीं होता और शीघ्रता के साथ बिना किसी विकृति के पूरा हो जाता है; उसे साधारण आघात कहते हैं।

घातक आघात—

१. नपुसकता उत्पन्न करने वाला (Emasculation)
२ किसी भी नेत्र को फोड़ देने वाला।   ३. बाधिर्य उत्पन्न करने वाला।
४ सन्धियों को या अस्थियों को नष्ट करने वाला।
५. शिर या मुख मण्डल को स्थाई रूप से विकृत करने वाला।
६. दांतों को तोड़ने वाला।
७ वह आघात जो २० दिनों तक रोगी को तीव्र शारीरिक कष्ट दे या जिसके कारण वह अपना नित्य प्रति का साधारण कार्य इस अवधि तक न कर सके।

आघात के समय का निर्धारण—

१. कुचलने के समय का निर्धारण उसमें होने वाले वर्ण परिवर्तन के आधार पर होता है, जो आघात के १८ से २४ घण्टे बाद से प्रारम्भ होता है।
२. उत्तान भाग (Superficial) का क्षत १० से २४ घण्टे में भर जाता है तथा खुरण्ड युक्त हो जाता है।
३. क्षत में रक्ताधिक्य तथा शोथ ४८ घण्टे के भीतर उत्पन्न होता है।
४. गन्दे तथा उपेक्षित क्षत में करीब ३६ से ४८ घण्टे में पूय दिखलाई देने लगता है।
५. छोटे क्षतों के किनारे ४८ घण्टे के अंदर स्रवित सीरम द्वारा परस्पर मिल जाते हैं। इसी समय इनका भरना प्रारम्भ हो जाता है तथा ४ से ७ दिनों में पूर्ण रूप में भर जाते हैं।

६. जो क्षत रोहण तन्तुओं द्वारा भरते हैं उनमें रोहण तन्तु बहुधा एक सप्ताह के पश्चात् उत्पन्न होते हैं।

७. पूययुक्त क्षत कई दिनों वा सप्ताहों तक नहीं भरते।

८. अस्थि भग्न में भग्न के आस पास के तंतुओं में शोथ तथा रक्ताधिक्य प्रथम से तीसरे दिन तक देखा जाता है। तीसरे दिन से १४ वें दिन तक शोथ धीरे धीरे कम होने लगता है और अस्थि निर्मापक ततु बनने लगते हैं; जो ५ से ८ सप्ताह के अंदर अस्थि का रूप धारण कर लेते हैं और भग्न ठीक हो जाता है।

९ दन्त भग्न में २४ घण्टे के अंदर रक्तस्राव बंद हो जाता है।

क्षत से मृत्यु का कारण

१. तत्काल मृत्यु के कारण (Immediate Causes)

(क) रक्तस्रावाधिक्य—चाहे रक्तस्राव आभ्यन्तरिक हो वा बाह्य दोनों ही दशायें घातक हैं। बाह्य रक्तस्राव में यदि एक युवा व्यक्ति के शरीर से ४ सेर के मात्रा में रक्त निकल जाय तो मृत्यु हो जाती है, किन्तु आभ्यन्तरिक रक्तस्राव में थोड़े रक्तस्राव से भी मृत्यु हो जाती है।

(ख) प्रमुख अंगों का घात—मस्तिष्क, हृदय तथा फुफ्फुस आदि पर तीव्र आघात पहुँचने से तत्काल मृत्यु हो जाती है।

(ग) स्तब्धता—वक्ष पर, आमाशय प्रदेश पर या मस्तिष्क पर आघात लगने से स्तब्धता द्वारा मृत्यु हो जाती है।

२. कालान्तरिक मृत्यु के कारण—

(क) आघात के फलस्वरूप आभ्यन्तरिक अंगों का शोथ, जैसे हृदयावरण शोथ, फुफ्फुसावरण शोथ, उदरावरणशोथ आदि।

(ख) संक्रमित क्षत के फलस्वरूप जीवाणुमयता, पूयमयता आदि।

(ग) क्षत के कारण कोथ (Gangrene) उत्पन्न हो जाना।

(घ) विसर्प तथा धनुस्तम्भ (Tetanus) आदि व्याधियों का उपस्थित हो जाना।

(ङ) क्षत के रोगी के परिचर्या में उपेक्षा करना।

मृत्यु के पूर्व तथा मृत्यु के पश्चात् के क्षतों में विभिन्नता—

मृत्यु के पूर्व	मृत्यूत्तर
१. रक्तस्रावाधिक्य जो मुख्यतः धमनी से होता है।	१. रक्तस्राव किंचित मात्र या बिलकुल नहीं होता। यदि होता है, तो शिरा द्वारा रक्त निकलता है।
२. रक्तस्राव तीव्रता के साथ होता है।	२. रक्तस्राव धीरे धीरे होता है।

मृत्यु के पूर्व	मृत्यूत्तर
३. रक्त थक्के में होता है।	३. रक्त थक्काहीन होता है।
४. क्षत के किनारे से रक्त धोकर साफ नहीं किया जा सकता।	४. रक्त पूर्ण रूप से घुल जाता है।
५. क्षत के किनारों में अवकाश (gape) होता है।	५. अवकाश नहीं होता।
६. शोथ तथा पुनर्निर्माण क्रिया उपस्थित रहती है।	६. इनका अभाव होता है।

स्वकृत, परकृत तथा आकस्मिक क्षतों में अन्तर—

स्वकृत (Suicidal)	परकृत (Homicidal)	आकस्मिक (Accidantal)
१. क्षत बहुधा शरीर के सम्मुख तथा पार्श्व भाग में छिन्न, भिन्न तथा गोली के होते हैं। विशेषकर ग्रीवा या वक्ष पर उपस्थित रहते हैं। क्षत पिच्चित प्रकारके नहीं होते।	१. शरीर के किसी भाग पर पाये जा सकते हैं। नाशा, कर्ण तथा जननेन्द्रिय के क्षत सर्वदा परकृत होते हैं। पिच्चित क्षत बहुधा परकृत होता है, जिसके साथ साथ शरीर के अन्य अंग भी प्रभावित होंगे।	१ क्षत पिच्चित (Lacerated) प्रकार का शरीर के खुले भाग पर होता है। जो एक ही पार्श्व में होते हैं।
२. क्षत बहुधा संख्या में एक होता है, जो ग्रीवा के सम्मुख में कण्ठास्थि के ऊपर या नीचे या पार्श्व में पाया जाता है।	२. शरीर पर क्षत की संख्या एक से अधिक होती है।	
३ क्षत ग्रीवा में तिरछा होता है।	३. क्षत अनुप्रस्थ दिशा में मिलता है।	
४ कभी कभी उत्तान प्रान्त में नियमबद्ध कई क्षत उपस्थित रहते हैं।	४ क्षत गम्भीर तथा कई दिशाओं में होते हैं।	

आघात से पीड़ित व्यक्ति की परीक्षा का फार्म—

१	२	३	४	५	६	७
आघात प्रकार जैसे— क्षत, कुचलना, दग्धादि	प्रत्येक आघात का इंचों में लम्बाई, चौड़ाई तथा गहराई	शरीर के किस भाग पर स्थित है।	साधारण, घातक या भयानक।	किस शस्त्र से उत्पन्न है।	शस्त्र भयानक था या नहीं।	टिप्पणी

घातक शस्त्र (Dangerous weapon)

व्याख्या—ऐसे शस्त्र जो अपराध (Offence) करने के लिये व्यवहृत होते हैं, घातक शस्त्र कहलाते हैं। या काटने, छेदने (Stabbing) या गोली मारने वाले शस्त्र घातक कहलाते हैं।

मरणासन्न व्यक्ति का वक्तव्य (Dying declaration)

मुमूर्षु का बयान सहायक सर्जन (Assistant Surgeon) को डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार या आनरेरी मजिस्ट्रेट की अनुपस्थिति में स्वयं लेने का अधिकार है। पुलिस को बयान लेने का कोई अधिकार नहीं है। यह उसका कर्तव्य है, कि वह चिकित्सक को सूचित करे तथा उनके आने के सम्पूर्ण साधनों को उपस्थित रखे। यदि मरणासन्न व्यक्ति अपना बयान स्वयं न लिख सके तब उसके ही शब्द में बिना उसमें कुछ जोड़ तोड़ किये किसी अन्य व्यक्ति से लिखवाना चाहिये। बयान समाप्त होने पर मरणासन्न व्यक्ति को उसी समय पढ़ कर सुना देना चाहिये। सुनाने के पश्चात् उस पत्र पर लिखनेवाले का हस्ताक्षर करा कर फिर मरणासन्न व्यक्ति का तथा दो साक्षी का हस्ताक्षर करा लेना चाहिये। यदि मुमूर्षु व्यक्ति लिखना न जानता हो तो उसके अगूठे का निशान ले लेना चाहिये। अब इस पत्र को मुहरबंद लिफाफे में मजिस्ट्रेट के पास उसी समय भेज देना चाहिये।

मृत्यु का प्रमाणपत्र (Death Certificate)

प्रमाणपत्र में मरनेवाले का पूरा नाम, मृत्यु का ठीक कारण, समय, तिथि तथा स्थान को लिखना चाहिये। चिकित्सक को बिना शव को देखे प्रमाण-पत्र नहीं देना चाहिये; चाहे मरनेवाला व्यक्ति मृत्युपर्यन्त चिकित्सक के चिकित्सा में ही क्यों न रहा हो।

आकस्मिक, अचानक तथा सदेहात्मक मृत्यु में मृत्यु के वास्तविक कारण को बिना जाने हुए कभी भी प्रमाण पत्र नहीं देना चाहिये।

युवा व्यक्ति के अंगों का साधारण भार तथा माप

मस्तिष्क (Brain) भार—पुरुष—४९½ औंस । स्त्री—४४ औंस ।

हृदय (Heart) भार-पुरुष—११ औंस । स्त्री—९ औंस ।

माप (Measurements)—लम्बाई—५ इंच । चौड़ाई ३ इञ्च ।

मोटाई—२½ इञ्च । यह मोटाई सबसे अधिक मोटे भाग की है ।

वृक्क (Kidney) भार—५ औंस

माप—लम्बाई – ४¾ इञ्च । चौड़ाई—२½ इञ्च । मोटाई—१½ ।

यकृत (Liver) भार—४५ से ६० औंस । (पु० ६०, स्त्रियों ४१) ।

माप—दक्षिण से वाम—७ से १० इञ्च । सम्मुख से पश्चात्—२ से ६ इञ्च ।

उपर से अधः—६ से ७ इञ्च । यह दक्षिण खण्ड को सबसे स्थूल भाग की माप है ।

फुफ्फुस (Lungs) भार—

पु०—दक्षिण फुफ्फुस—२० औंस । स्त्रियों में-१५ औंस ।

वाम „ २० „ „ १२ „

आमाशय (Stomach) भार—४½ औंस । आयाम—५ पाइण्ट ।

माप—लम्बाई—१ इञ्च । चौड़ाई—४ से ५ इञ्च ।

प्लीहा (Spleen) भार—५ से ७ औंस ।

माप—लम्बाई—५ से ६ इञ्च । चौड़ाई—३ से ४ इञ्च । मोटाई—१ से १½ इञ्च ।

अग्न्याशय (Pancreas) भार—३ औंस ।

माप—लम्बाई—६ से ८ इञ्च । चौड़ाई—१½ इञ्च मोटाई—½ से १ इञ्च

सन्दिग्ध वस्तुओं को रासायनिक परीक्षक के पास भेजने का नियम

साधारण नियम (General Rules)

सन्दिग्ध वस्तुओं को भेजने वाले चिकित्सक को निम्न विषयों का ध्यान रखना चाहियेः—

१. १० सेर भार वाले वस्तु को रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेजना चाहिये ।

२ दस सेर से ऊपर भार वाले वस्तु को पैसेंजरगाडी द्वारा भाड़ा चुकता कर भेजना चाहिये । रेलवे रसीद को पत्र के साथ नत्थीकर भेजना चाहिये ।

३. प्रत्येक दशाओं में भेजे हुये वस्तुओं के विषय में एक पत्र पोस्ट द्वारा परीक्षक के पास भेज देना चाहिये । इस पत्र की तिथि तथा संख्या पार्सल के बहिर्भाग पर लिख देना चाहिये ।

४ वस्तुओं को परीक्षक के पास भेजते समय बहुत ही सावधानी से पार्सल में बंद करना चाहिये, ताकि उनका पोस्ट आदि के या रेलवे के कर्मचारियों पर कोई भयानक प्रभाव न हो सके अन्यथा प्रेषक पर धारा ६१ पोस्टाफिस कानून के अनुसार न्यायालय में मुकदमा चलाया जा सकता है ।

५. सम्पूर्ण दशाओं में पार्सल चिकित्सक के समक्ष ही बंद तथा मुहर किया जाता है। भाड़ा तथा पार्सल सम्बन्धी सम्पूर्ण व्यय न्यायाधीश (Megistrate) के फुटकर व्यय तालिका (Contigent bill) में से ले लेना चाहिये।
६. व्यक्तियों की भिन्न भिन्न वस्तुयें बक्स या पार्सल में भेजना चाहिये।
७. विष का सन्देह होने पर मजिस्ट्रेट की आज्ञा लेकर आशय (Viscera) के टुकड़ों को तत्काल रासायनिक परीक्षक के पास भेज देना चाहिये।
८. परीक्षा के पश्चात् रासायनिक परीक्षक को आशयों के अवशिष्ट भागों को ६ मास तक सुरक्षित रखना चाहिये।
९. पार्सल के अन्दर के वस्तुओं को पोस्ट या रेलवे के आफिसर को नहीं बतलाना चाहिये।

आशय तथा अन्यवस्तुओं को सुरक्षित रखने तथा बंद करने की विधियां (Direction for Preserving and Packing Viscera and other Articles)

१. आशय तथा वस्तुओं को रासायनिक परीक्षक द्वारा भेजे हुये शीशियों तथा बक्सों में रख कर बद करना चाहिये। बोतलों तथा उनके ढक्नों और बक्सों पर क्रम संख्या अंकित रहती है। जब ये बोतलें परीक्षक के पास से आती हैं, तब स्पिरिट से भरी रहती हैं।
२. परीक्षक चिकित्सक द्वारा प्रेषित बक्स में से बोतलों को निकाल कर उनके स्थान पर दूसरे रिक्त बोतलों को भर बक्स को पैसिंजर ट्रेन द्वारा पुनः लौटा देता है।
३. बोतलों में आशयों तथा अन्य परीक्षा वाली वस्तुओं को भरने के पश्चात् ढक्न लगाते समय ढक्न तथा बोतलों के बीच वैसलीन या मोटर ग्रीज लगाकर बद करना चाहिये ताकि ढक्न बोतल से सुगमता पूर्वक खोला जा सके।
४. ढक्न को फीता या रस्सी से भली भांति दृढ़ता के साथ बांधने के पश्चात् उसके उपर चमड़ा या रबर का टुकड़ा फैलाकर भलीभांति उचितस्थिति में बांध देना चाहिये।
५ आशयों को रेक्टीफाइड स्पिरिट या लवण के तीव्र घोल में रखना चाहिये।
६. प्रत्येक बोतलों पर वस्तु तथा रोगी का नाम लिखा होना चाहिये।
७ बोतल में आशय और स्पिरिट की मात्रा बोतल के $\frac{2}{3}$ भाग तक ही होनी चाहिये। जिससे गैस बनने पर बोतल फटने न पावे।
८ आशयों को छोटे छोटे टुकड़ों में काट कर भेजना चाहिये, ताकि स्पिरिट भली भांति प्रविष्ट कर जाय।
९. मद्य विष में रोगी के आशयों को लवण के तीव्र घोल में रखकर भेजना चाहिये। लवण के घोल को भरने के पूर्व बोतल को भली भांति प्रक्षालित कर लेना

चाहिये, ताकि स्पिरिट लेशमात्र भी न रह जाय। परीक्षक के पास जानेवाले पत्र में यह उल्लेख कर देना चाहिये कि आशय, लवण के तीव्र घाल में सुरक्षित हैं

१०. गदे या विकृतवर्ण के स्पिरिट का व्यवहार निषिद्ध है ।

११. बोतलों को बद करने के पश्चात् तथा भेजने के पूर्व एक लकड़ी के बक्स में रखते हैं, जो रासायनिक परीक्षक के पास से आया रहता है। बक्स पर भी बोतलों पर की अंकित संख्या लिखी होनी चाहिये।

१२. बक्स के पार्श्वों से सम्बन्धित फीता बक्स के ढक्कन के ऊपर लाकर मुहर द्वारा स्थिर कर देना चाहिये। फीते में ग्रंथि नही देनी चाहिये।

१३ दरवाजे के अँकुरे (Hinge) के पास से बक्स के एक शिरे के अन्दर से एक चौड़े निवार का टुकड़ा लगा होना चाहिये। जब इस बक्स को एक दूसरे बड़े बक्स में रखने लगे तो ध्यान रहे कि निवार का फीता छोटे बक्स को चारों ओर से घेर ले। ताकि इस फीते की सहायता से छोटे बक्स को सुगमता के साथ बड़े बक्स से पृथक् किया जा सके।

१४. बक्स में ताला बंद कर मुहर लगा देना चाहिये तथा ताली चिकित्सक को अपने पास ही रख लेनी चाहिये। पत्र में ताली का नम्बर लिखकर परीक्षक के पास भेज देना चाहिये। दूसरी ताली परीक्षक के पास भी होती है।

१५ बक्स पर पता का पत्र (Label) इस प्रकार से चिपकना चाहिये कि ताले की छिद्र पत्र से बद हो जाय। इस पत्र पर भेजे हुये पत्र (Letter) की तिथि तथा संख्या लिख देनी चाहिये ताकि परीक्षक को पहिचानने में कठिनाई न हो।

'परीक्षार्थ भेजी जाने वाली वस्तुयें—

१ आमाशय तथा उसमें पाई जाने वाली वस्तुयें।

२ यकृत का एक भाग जो १६ औंस से कम न हो। कम होने पर पूरा यकृत भेजते हैं।

३ प्लीहा। ४ एक वृक्क।

५. क्षुद्रान्त्र का ऊर्ध्व भाग तथा उसमें पाई जाने वाली वस्तुयें।

६. हृदय तथा मस्तिष्क का एक भाग।

७ गैस, मद्य तथा क्लोरोफार्म विष में फुफ्फुस तथा हृदय के रक्त को भेजते हैं।

८. त्वचा द्वारा प्रविष्ट किये हुये विष के सन्देह में त्वचा तथा त्वचा के नीचे के ततुओं के कुछ भाग को भेजना चाहिये।

९ संखिया तथा एण्टीमनी विष मे लम्बी अस्थियों के कुछ भाग को भेजते हैं।

१०. खनिज विषों में शिर के बालों को भेजते हैं क्योंकि उनसे उनका त्याग होता है।

११. मूत्र तथा मल यह संखिया विष मे भेजा जाता है।

१२. रक्त तथा शुक्र रंजित वस्त्र। १३ वमित द्रव्य।

१४. प्रजनन मार्ग में विजातीय द्रव्य प्रविष्ट कराकर हत्या करने पर वस्तु तथा वह अंग ही भेजा जाता है।

१५. विषयुक्त संदेहात्मक भोज्य पदार्थ।

व्यक्तिगत-पहिचान (Personal Identity)

कभी कभी जीवित व्यक्ति तथा मृत व्यक्ति दोनों के पहिचान की आवश्यकता पड़ जाती है। जीवित व्यक्ति पहिचान की आवश्यकता फौजदारी के अपराध में तथा शव की परीक्षा आकस्मिक मृत्यु में जैसे रेल से कटने आदि में होती है। अतः पहिचानार्थ निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिये—

जाति (Race)

जाति की आवश्यकता उस समय व्यक्त होती है जब कि शव रेलवे के किनारे सड़क के किनारे, गांव के आस पास खेतों में, कुओं, तालाबों, तथा नदियों आदि में लावारिश पाया जाता है।

हिन्दू और मुसलमान में विभेदक लक्षण

पुरुष	मुसलमान	हिन्दू
१. शिश्न	खतना—प्रायः १०—११ वर्ष की आयु तक हो जाता है।	खतना—नहीं होता।
२. कान	कानों में छेद नहीं होते—यदि हुआ तो एक कान में।	प्राय. दोनों कानों में छेद होता है।
३. चोटी	सिर पर चोटी नही होती।	सिर पर चोटी होती है।
४. ढट्टे	नमाज पढने के कारण माथे और घुटनोंपर ढट्टे पड जाते है।	ढट्टे नही होते।
५. हाथ	हथेली और अगुंनियों के नखों पर मेंहदी लगाते है।	मेहदी नही लगाते या कम लगाते हैं।
६. जनेऊ	नहीं पहनते।	वायें कन्धे पर द्विज लोग पहनते हैं।
७. वस्त्र	अंगरखा या मिरजई छाती के वायें तरफ खुलती है। सलवार शेरवानी, पैजामा, सुथन्ना, टर्की टोपी—पहनते हैं।	कुर्ता, कोट, साफा, टोपी पहनते हैं।
८. सुर्मा	ज्यादा लगाते है।	कम लगाते हे।

स्त्री	मुसलमान	हिन्दू
१. गोदने के चिह्न	नहीं गुदातीं—केवल वेश्याएँ गुदातीं हैं।	भ्रुकुटी के मध्य में, वक्ष पर और कुहनी के नीचे अन्दर की ओर नीच कौमों मे गुदना गुदातीं हैं—(देवताओं की तस्वीर राम आदि)
२. कान	वाली पहनने के लिये वहुत से छिद्र होते हैं।	थोडे से छिद्र होते हैं।
३. सिर	माग मे सिन्दूर के चिह्न नहीं होते।	माग में सिन्दूर या उसके चिह्न होंगे। और सिर पर गहने होंगे।
४. नाक	वाली पहनने के लिये नाक के वीच के पर्दे (Septum) में प्रायः छिद्र होते हैं।	वाली पहनने के लिये वायें नथुने और वीच के पर्दे में छिद्र होते हैं।
५. हाथ	विवाहित स्त्रिया काच की चूडियां या लोहे के छल्ले नहीं पहनतीं।	विवाहित वगाली स्त्रिया लोहे का छल्ला, यू० पी० में दोनों हाथों में काँच, लाख, सोना आदि की चूड़ियाँ पहनती हैं।
६. वस्त्र	सुथन्नी, सलवार और ओढनी ज्यादा पहनती हैं।	साडी, लँहगा और धोती अधिक पहनती हैं।
७. विधवा	×	हिन्दू विधवा स्त्री के सिन्दूर और चूडी का अभाव होता है।

पारसी	पुरुष	स्त्री
१. वस्त्र	कमर मे कश्ती बाधते है और मलमल का कुर्ता अधिक पहनते है।	सिर पर सफेद कपडा बाधती हैं।

लिंग-परिचय

पुरुष	स्त्री
१. अण्ड, पौरुष ग्रंथि, शुक्रवाहिनी तथा शिश्न आदि की उपस्थिति ।	१. डिम्बग्रंथि गर्भाशय, डिम्बप्रणाली तथा योनि की उपस्थिति ।
२. शरीर बहुधा बड़ा होता है ।	२. शरीर बहुधा छोटा होता है ।
३. नितम्ब से स्कन्ध चौड़ा होता है ।	३ नितम्ब स्कन्ध से चौड़ा होता है ।
४. स्तन प्रगल्भ नहीं होता ।	४. स्तन प्रगल्भ होता है ।
५. पुरुषों में जिनका व्याधि के कारण उदर प्रसार नहीं हुआ है उनमें (किकिस) विदारण चिन्ह (Leneae Albicantis) नही पाया जाता।	५ स्त्रियों के उदर, स्तनों, नितम्बों तथा उरुओं पर पूर्व गर्भ के कारण विदारण चिन्ह (किकिस) पाया जाता है ।
६. भग प्रान्त के बाल सघन तथा ऊपर नाभि तक उगे होते हैं ।	६. भग प्रान्त के बाल अनुप्रस्थ दिशा में तथा केवल भगपीठ पर ही उगे होते हैं ।
७ मुख मण्डल तथा वक्ष पर बाल उगे होते हैं ।	७ मुख मण्डल तथा वक्ष बालहीन होते हैं ।

कोथयुक्त शव में जिसमें लिंग विभेदक बाह्य लक्षण लुप्त हो गये हों उनमें पौरुष ग्रंथि तथा गर्भाशय को देखना चाहिये; क्यों कि ये दोनों अंग बहुत समय तक नहीं सड़ते । पौरुष ग्रन्थि की उपस्थिति पुरुष जाति का तथा गर्भाशय की उपस्थिति स्त्री जाति का द्योतक है ।

१. अवस्था से शव की पहिचान की जाती है ।

२. मुख मण्डल तथा शारीरिक संगठन से । ३ बालों से ।

४. पदचिह्नों से पहिचान चोरी तथा कत्ल के अपराधों में होती है ।

५. अंग की विकृति से । ६. व्रण के चिह्नों से ।

७. शरीर पर गुदने के चिह्नों (Tattoo marks) से ।

८. व्यवसाय के कारण शरीर पर स्थित चिह्नों से जैसे पालकी ढोने वाले व्यक्ति के स्कन्ध मोटे घट्टे युक्त होते हैं ।

९. हस्तलिपी । १० वस्त्र तथा आभूषण से ।

११. बोल चाल से । १२. चाल (Gait) ।

मृत्यु-काल निर्धारण

मृत्यूत्तर परिवर्तन	काल
१ मृत्यूत्तर सकोच का प्रारम्भ	१. दो घंटे पश्चात्।
२ मृत्यूत्तर सकोच की अवधि	२ १९ घण्टे।
३. मृत्यूत्तर विवर्णता	३ १४ घण्टे ३० मिनट।
४. कृमि बाहुल्य	४ २१ से ४० घण्टे।
५ फफोलोत्पत्ति ६. गैसोत्पत्ति	५. ५० घण्टे। ६. १९ घण्टे।
७ शरीर पर हरे वर्ण की उत्पत्ति तथा मुख और नासिका से रक्तमिश्रित झागोत्पत्ति।	७ मृत्यु के ३ से ५ दिन पश्चात्।
८. गैस से उदर प्रसार, नेत्र का बैठ जाना, सकोचक पेशियों की शिथिलता तथा नखों की दृढ़ता।	८ मृत्यु के ८ से १० दिन पश्चात्।
९ सम्पूर्ण शरीर पर फफोलोत्पत्ति, चर्म का उतरना, मुखमण्डल का पहिचान में न आना, अण्डकोष प्रसार, शरीर का फूलना, कृमिबाहुल्य, नख तथा लोमों की शिथिलता वत्त सुगमता से पृथक् हो जाना।	९. मृत्यु के १४ से २० दिन पश्चात्।
१०. कोमल भाग स्थूल, अर्धतरल तथा कृष्ण वर्ण में परिणत हो जाते हैं, शिर, वक्ष तथा उदर विदीर्ण हो जाते है अस्थियाँ नग्न हो जाती हैं, तथा नेत्रगुहा रिक्त हो जाती है।	१० मृत्यु के २ से ५ मास पश्चात्।

आभ्यन्तरिक अंगों के कोथ का क्रम

शीघ्र कोथित होने वाले अंग	कालान्तर में कोथित होनेवाले अंग
१. स्वरयन्त्र तथा श्वास प्रणाली।	१. हृदय।
२. शिशु का मस्तिष्क।	२. फुफ्फुस।
३. आमाशय। ४ आंत्र।	३ वृक्क। ४ मूत्राशय।
५. प्लीहा।	५ अन्न नलिका।
६ वपा तथा आंत्र बन्धन।	६ अग्न्याशय।
७ यकृत्।	७. महाप्राचीरा।
८. युवा व्यक्ति का मस्तिष्क।	८ रक्त प्रणालियाँ।
	९. पौरुष ग्रंथि तथा गर्भाशय।

साक्षी देने का नियम

१. विषय की सम्पूर्ण शाखा प्रशाखाओं (Branches) पर तैयार रहना चाहिये ।
२. अपने ऊपर पूर्ण अधिकार रख विपक्षी के साथ सहृदयता पूर्वक साक्षी देना चाहिये । किसी भी प्रश्न पर उत्तेजित नहीं होना चाहिये ।
३. धीरे धीरे तथा स्पष्ट बोलना चाहिये । भाषा में साधारण शब्दों का ही व्यवहार करना चाहिये । जो शब्द न्याय-कर्ताओं के समझ में न आवें उसकी व्याख्या करके समझा देना चाहिये ।
४. समय, स्थान, तिथि तथा माप को निश्चित रूप से बतलाना चाहिये । अपने उत्तर को ठीक ठीक तथा तुले हुये अल्प शब्दों में देना चाहिये ।
५. असावधानीवश या अन्य किसी कारण से अपने विषय को छोड़ अन्य विषय का अवलम्बन नहीं कर लेना चाहिये ।
६. प्रश्न को भली भाँति समझ लेने पर ही उत्तर देना चाहिये ।
७. विपक्षी द्वारा अनुचित प्रश्न के पूछे जाने पर न्यायाधीश से प्रश्न के विषय में नम्रता पूर्वक कहना चाहिये ।
८. कभी कभी विपक्षी या न्यायाधीश निरर्थक प्रश्न भी पूछ बैठते हैं; जिनका उत्तर तत्काल देना कठिन होता है; अतः ऐसे प्रश्नों के पूछे जाने पर विषय परिवर्तन कर देना चाहिये, क्योंकि न्यायाधीश विज्ञान में अधिक ज्ञान नहीं रखते । उदाहरणार्थ—यदि प्रश्न मेरुदण्ड (Spine) के विषय में है, तो आप पूछिये कि क्या आपका प्रश्न मेरुदण्ड के विषय में है या सुषुम्ना काण्ड के विषय में ? वे दोनों में विभिन्नता नहीं समझते अतः प्रश्न वहीं छोड़ देंगे ।
९. न्यायालय में किसी भी प्रकार की पुस्तक या नोट (लेख) विषय की पुष्टि के लिये नहीं ले जाना चाहिये । सम्पूर्ण साक्षी मौखिक ही देनी चाहिये ।
१०. विपक्षी यदि उदाहरणार्थ किसी पुस्तक के कुछ अंश को आपके सम्मुख रखे तो आप उस अंश को भलीभाँति पूरा पढ़ कर तथा समझ कर ही उसके विषय में अपनी सम्मति हाँ, या ना, में दीजिये ।
११. गोपनीय विषय (Professional secret) को न्यायाधीश के पूछने पर ही व्यक्त करना चाहिये अन्यथा नहीं । न्यायाधीश के कहने पर भी यदि व्यक्त नहीं करते तब आप दण्ड के भागी होंगे और आप पर न्यायालय की अवहेलना का अपराध लगाया जायगा ।

मृत्यूत्तर शव परीक्षा (Post-Mortum examination)

ध्येय—१. अज्ञात व्यक्ति को पहिचानने के लिये ।
२. मृत्युकाल को निश्चित करने के लिये ।
३. मृत्यु के कारण को जानने के लिये ।

नियम—

१ पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट या जिलाधीश की बिना लिखित आज्ञा के शव परीक्षा नहीं करनी चाहिये।

२ शव को नग्न करने के पूर्व चिकित्सक को शव के स्वरूप तथा स्थिति के विषय में पुलिस द्वारा की गई रिपोर्ट को भली भाँति पढ़ लेना चाहिये।

३ परीक्षा दिन में ही भली भाँति तथा पूर्ण रूप से करनी चाहिये। कृत्रिम प्रकाश में परीक्षा नहीं करनी चाहिये।

४ मस्तिष्क, वक्षगुहा तथा उदर गुहा के सम्पूर्ण अंगों को भली-भाँति सावधानी के साथ परीक्षा करनी चाहिये; क्योंकि मृत्यु का कारण एक से अधिक अंगों में मिल सकता है।

५. परीक्षा की रिपोर्ट परीक्षा के स्थान पर ही परीक्षा के साथ साथ ही स्वयं चिकित्सक को लिख लेना चाहिये; क्योंकि ऐसा करने से एक बात भी नहीं छूट सकती।

६. शव परीक्षा के समय बाहरी व्यक्तियों को नहीं रखना चाहिये।

७ परीक्षा-भवन में शव के पहुंचने का समय तथा तिथि को अंकित कर लेना चाहिये।

८ परीक्षा की तिथि तथा समय को अंकित करलेना चाहिए।

९. परीक्षा के स्थान का नाम अंकित करना चाहिये।

यदि चिकित्सक को जहाँ शव पड़ा है, वहाँ बुलाया जाय तो निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये:—

१ शव के स्थान तथा वहाँ के भूमि की स्थिति को अंकित कर लेना चाहिये।

२. शव के हाथ, पाँव तथा वस्त्र की स्थिति को भी अंकित कर लेना चाहिये।

३. आघात के कारण हुई मृत्यु में शव के आस पास पड़े हुये शस्त्र आदि वा पत्थर आदि जिनसे आघात उत्पन्न हो सकता है तथा उन पर रक्त के धब्बे आदि को अंकित कर लेना चाहिये।

४ शव के आस पास पद चिह्न तथा लड़ाई झगड़े के चिह्नों को सावधानी के साथ पता लगाना चाहिये।

५ विष से मृत्यु होने के सदेह में वमित द्रव्यों के स्वरूप को अंकित कर लेना चाहिये जो शव के आस पास पड़ा हो।

रिपोर्ट लिखने की विधि

शव का नाम…… - ……………

स्थान …… - ……तिथि…… ………समय… ………

पुलिस के सिपाही का नाम …नं०…… तथा चौकीदार…………

सम्भावित अवस्था……………सम्भावित मृत्युकाल… … ……

बाह्य परीक्षा—

१. शरीर की स्थिति, जैसे-स्थूल या दुबला, मृत्यूत्तर संकोच तथा कोथ।
२. अज्ञात शव में पहिचानने के लिये चिह्न। ३. नेत्र।
४. कर्ण, नासिका, मुख, गुदा, मूत्रमार्ग तथा योनि की स्थिति।
५. आघात का स्वरूप, स्थिति, दिशा सहित माप।
६. अस्थियाँ और सन्धियाँ। ७ बाह्य प्रजनन अंग। ८. अन्य महत्व की बातें।

आभ्यन्तरिक परीक्षा

शिर और ग्रीवा—
१. मूर्धा तथा शिरोऽस्थि के रक्ताधिक्य तथा भग्न को देखना।
२. मस्तिष्कावरण। ३ मस्तिष्क। ४ कशेरुका।
५. सुषुम्ना काण्ड। ६. अन्य महत्व पूर्ण विषय।

वक्षगुहा—
१. भित्ती, पर्शुका तथा उपपर्शुका। २ फुफ्फुसावरण।
३. स्वरयन्त्र, क्लोम तथा श्वास प्रणालियाँ। ४. दोनों फुफ्फुस।
५. हृदयावरण। ६. हृदय मय भार के।
७. बड़ी बड़ी रक्तप्रणालियाँ। ८ अन्य महत्व पूर्ण विषय।

उदरगुहा—
१. भित्तियाँ। २. उदरावरण।
३. मुख गुहा, दन्त, जिह्वा तथा ग्रसनिका। ४. अन्नप्रणाली।
५. आमाशय तथा उसमें स्थित वस्तुयें। ६ क्षुद्रान्त्र तथा उसमें स्थित द्रव्य।
७. बृहदान्त्र तथा उसके द्रव्य।
८ यकृत तथा पित्ताशय-यकृत का भार भी देखा जाता है।
९ अग्न्याशय। १०. प्लीहा; इसका भी भार देखा जाता है।
११. वृक्क ,, ,, ,, ,, ।
१२. मूत्राशय। १३. प्रजनन अंग। १४ अन्य महत्व पूर्ण विषय।

विष जन्य मृत्यु में—
१. लक्षणों के प्रारम्भ होने की तिथि तथा समय।
२. मृत्यु की तिथि तथा समय।

मृत्यु के कारण तथा विधि के विषय में मत

स्थान.................... समय.................

चिकित्सक का हस्ताक्षर..................

आवश्यकीय शस्त्र

१ वेधस पत्र (Scalpel)
२ काटने की बड़ी चाकू (Large Section Knife)
३ साधारण सदंश (Dissecting forceps)
४. तीक्ष्णाग्र कर्तरी (A pair of Sharp pointed Scissors)
५. वेधस पत्र (Saw)
६. पर्शुका छेदक (Costotome)
७. आन्त्र छेदक (Enterotome)
८ कुन्द शलाका (Blunt Prob)
९. प्रधमन नीलिका (Blow Pipe)
१० लौह अंकुश के जोड़े (A pair of iron hooks)
११ सरल तथा तीर्यक सूचियाँ (Striaght and Curved needles)
१२ दृढ तागे (Strong twine)
१३. मापक फीता (A Measuring Tape)
१४ शीशे का मापक पात्र (Measuring and graduated glass Contanners)
१५. तस्तरी (China Plates)
१६ जल रखने का प्याला (Basine Contaning water)
१७. प्रोंछक (Sponges)
१८. रबर का हस्तत्राण (A pair of thick India rubber gloves with gauntlets or photographic gloves)
१९. अंगों को तोलने का यन्त्र (Weighing Machine for Organs)
२०. कम से कम शीशे के ढक्कन युक्त दो चौड़े मुख वाली शीशे की बोतलें; जिसमें एक लीटर द्रव रखा जा सके (At least two wide mouthed, White glass bottles (With glass Stoppers) of about one litre Capacity, to Contain Viscera)

चिकित्सक का कर्तव्य

१ रोगियों की दत्त चित्त होकर सावधानी के साथ चिकित्सा करनी चाहिये।
२ स्वच्छ तथा उचित शस्त्र तथा अन्य आवश्यकीय वस्तुओं का व्यवहार करना चाहिये।
३ रोगी को अच्छी ओषधि देनी चाहिये।
४ व्यवस्थापत्र में साधारणतया प्रचलित शब्दों का ही व्यवहार करना चाहिये; जिसे ओषधि देने वाला (Chemist) भली भाँति समझ सके।
५ व्यवस्थापत्र साफ तथा पढ़े जाने योग्य लिखना चाहिये।
६. ओषधि सेवन विधि मात्रा, काल तथा पथ्य को साधारण भाषा में रोगी या उसके परिचारक को भलीभाँति समझा देनी चाहिये।

७. रोगी की गोपनीय बातों को कभी भी किसी से व्यक्त नहीं करना चाहिये।
८. रोगी की चिकित्सा तथा परीक्षा तब तक करनी चाहिये जब तक आवश्यक हो।
९ एक चिकित्सक को दूसरे चिकित्सक की तथा उसके बच्चे, स्त्री और चिकित्सा शास्त्र के पढ़ने वाले विद्यार्थियों की निःशुल्क चिकित्सा करनी चाहिये।
१०. सेना की आवश्यकता के अतिरिक्त पुलिस वा अन्य कोई भी आफिसर चिकित्सक को बिना उसके रजामन्दी के किसी रोगी को देखने के लिये बाध्य नहीं कर सकता या आज्ञा नहीं दे सकता।
११. जब कोई रोगी चिकित्सक को उपहार में कोई बहुमूल्य वस्तु दे या अपने, सम्पत्ति का एक भाग लिखने को तैयार हो तो चिकित्सक को चाहिये कि उसके इस अभिप्राय को रोगी के उत्तराधिकारी या कानूनी सलाहकार को शीघ्र ही सूचित कर दे; ताकि चिकित्सक पर नाजायज दबाव डालकर सम्पत्ति लेने का अपराध न लगाया जा सके।
१२ चिकित्सक को औपसर्गिक व्याधियों को, अवैधानिक प्रसव तथा मृत्यु को नहीं छिपाना चाहिये।

नाड़ी-विज्ञान

नाडी—प्राणियों के शारीरिक सुख, दुख को प्रकाशित करने वाले साधान को नाड़ी कहते हैं।

सुख, दुःख प्रकाशन विधि—

देहिनां हृदयं देहे सुखदुःख प्रकाशकम्।
तत्संकोचं विकासं च स्वतः कुर्यात् पुनः पुनः॥
संकोचेन वहिर्याति वायुरन्तर्विकासतः।
ततो नाड्यश्चलन्त्यस्रधरायाः स्पन्दनं ततः॥

देह धारियों में हृदय शारीरिक सुख तथा दुख को प्रकाशित करता है। वह बारम्बार स्वयं संकोच तथा विस्फार करता है। संकोच के समय वायु बाहर निकलती है तथा विस्फार के समय अन्दर जाती है। इसी कारण रक्त को धारण करने वाली नाड़ी चलती है; जिसमें स्पन्दन होता है। इसी स्पन्दन से, जो हृदय के स्पन्दन का कारण भूत है, सुख दुःख का ज्ञान होता है।

नाड़ी परीक्षा के स्थान—

अङ्गुष्ठमूले करयोः पादयोर्गुल्फदेशके।
कपालपार्श्वयोः षड्भ्यो नाड़ीभ्यो व्याधिनिर्णयः॥

उपरोक्त श्लोकानुसार ६ स्थानों में नाड़ी परीक्षा करते है।

१ अङ्गुष्ठ मूल मे। २ पैर के गुल्फ देश में।

३ कपाल के पार्श्व देश अर्थात् शंख प्रदेश मे।

ये एक पार्श्व देश की है इसी प्रकार इन स्थानों पर दूसरे पार्श्व में भी देखते हैं। इस प्रकार दोनों पार्श्व को मिलाकर ६ स्थान होते है।

इन ६ स्थानों के अतिरिक्त और भी स्थान हैं जहाँ पर नाड़ी देखी जाती है।

पाणिपादकण्ठनासाक्षिकर्णजिह्वांतमेढ्रगाः।
वामदक्षिणतो लक्ष्याः षोडश प्राणबोधकाः॥

करतल, पाद, कण्ठ, नाशा, अक्षि, कर्ण, जिह्वा, लिंग आदि स्थानों में नाडी को देखना चाहिये; क्योंकि ये प्राण को बतलाने वाले है। इन स्थानों के दोनों पार्श्वों में नाड़ी देखते है।

इस प्रकार से नाड़ी परीक्षा के स्थानों में विभिन्न मत है; किन्तु विशेतः प्रचलित मत शार्ङ्गधर का है।

करस्यागुंष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी।
तच्चेष्टया सुखं दुखं ज्ञेयं कायस्य पण्डितैः॥

करतल के अङ्गुष्ठमूल में जो धमनी स्थित है वही जीवात्मा की साक्षी है। उसी से काय शास्त्र के पण्डित शरीर के सुख तथा दुख को उसकी गति से जानते हैं।

नाडी स्थल माप—किस स्थान पर कितनी अङ्गुलियों से नाडी परीक्षा करनी चाहिये इसके लिये विभिन्न स्थान की नाड़ियों का माप दिया गया है।

हस्तयोस्तत्प्रकोष्ठते मणिबन्धेङ्गुलित्रयम्।
पादयोर्नाडिकास्थाने गुल्फस्याधोङ्गुलिद्वयम्॥
नासामूलेङ्गुलिद्वन्द्वं कर्णमूलेङ्गुलित्रयम्।
कण्ठमूलेङ्गुलिद्वन्द्वं नासायामङ्गुलिद्वयम्॥

हाथ को प्रकोष्ठ के अन्त में मणिबन्ध स्थान पर तीन अङ्गुलियों से, पैर के नाडी स्थान में गुल्फ के नीचे दो अङ्गुलियों से, नासा मूल मे दो अङ्गुलियों से, कर्ण मूल में तीन अङ्गुलियों से, कण्ठमूल में दो अङ्गुलियों से तथा नासा में दो अङ्गुलियों से नाड़ी को देखते हैं।

स्त्री पुरुष भेद से नाड़ी दर्शन—

वामे भागे स्त्रिया योज्या नाड़ीपुंसस्तु दक्षिणे।
इति प्रोक्तो मया देवि सर्वदेहेषु देहिनाम्॥

स्त्रियों के वाम भाग तथा पुरुषों के दक्षिण भाग की नाड़ी देखनी चाहिये। यह विधान सम्पूर्ण प्राणियों के लिये है।

स्त्रीणां भिषग् वामहस्ते वामपादे च यत्नतः।
पुंसां दक्षिणभागे च नाड़ी विद्याद्विचक्षणः॥

चिकित्सक को स्त्रियों के वाम हस्त तथा वाम पैर की और पुरुषों के दक्षिण हाथ तथा दक्षिण पैर की नाड़ी देखनी चाहिये।

कारण—प्रायः स्फुटा भवति वामकरे वधूनाम्।
पुंसां तु दक्षिणकरे तदियं परीक्ष्या॥

स्त्रियों में बहुधा बायें हाथ में नाड़ी स्पष्ट स्पन्दन करती है तथा पुरुषों में दक्षिण हाथ में इसलिये स्त्रियों के वाम हाथ की तथा पुरुषों के दक्षिण हाथ की नाड़ी देखते हैं।

नाडी महत्व—प्राचीन आचार्य विभिन्न स्थान की नाड़ियों से शरीर के विभिन्न सुख दुःख का अनुभव करते थे। जैसे—

हस्तनाड़ी—यथा वीणाकरी तन्त्री सर्वान् रागान् प्रभाषते।
तथा हस्तगता नाडी सर्वान् रोगान् प्रकाशते॥

हस्त की नाड़ी शरीर के सम्पूर्ण रोगों को उसी प्रकार प्रकट करती है, जिस प्रकार वीणा का तार सम्पूर्ण स्वरों को उत्पन्न करता है।

अजीर्णं ह्यामदोषं च ज्वरस्यागमनं क्षुधम्।
वातपित्तकफान्दुष्टान् हस्तनाडी निदर्शयेत्॥

अजीर्ण, आमदोष, ज्वर, क्षुधा तथा दुष्ट वातपित्त और कफ को हाथ की नाड़ी बतलाती है।

कण्ठ नाड़ी—आगन्तुकं ज्वरं तृष्णामायामं मैथुनं क्रमात्।
भयं कोपं च शोकञ्च कण्ठनाडी विनिर्दिशेत्॥

कण्ठ की नाड़ी क्रमशः आगन्तुक ज्वर, तृष्णा, मैथुन, भय, क्रोध तथा शोक को बतलाती है।

नासा नाड़ी—मरणं जीवनं कामं कण्ठरोगं शिरोरुजम्।
श्रवणानिलजान् रोगान्नासानाड़ी प्रकाशयेत्॥

नासा की नाड़ी मृत्यु, जीवन, काम, कण्ठरोग, शिरोरोग, श्रवणरोग तथा वातजरोगों को बतलाती है।

पाद नाड़ी—अजीर्णे रक्तपित्ते च पादनाडीपरीक्षणम्॥

पैर की नाड़ी अजीर्ण तथा रक्तपित्त को बतलाती है।

कर्ण नाड़ी—चक्षुरोगे कर्णरोगे प्रमेहे पाद-पीडने।
क्रमेण बुद्धिमान् वैद्यः कर्णनाडीं परीक्षयेत् ॥

नेत्ररोग, कर्णरोग, प्रमेह तथा पैर की वेदना को कर्ण नाड़ी बतलाती है; अतः बुद्धिमान वैद्य को इस नाड़ी की उन व्याधियों में परीक्षा करनी चाहिये।

वर्तमान समय में विभिन्न नाड़ियों की परीक्षा विधि लुप्त प्राय है। केवल अंगुष्ठ मूल से ही नाड़ी की परीक्षा की जाती है।

नाड़ी देखने की विधि—नाड़ी द्वारा सुख दुख का ज्ञान करने के लिये नाडी को निम्न क्रम से स्पर्श करते हैं।

१ नाड़ी को स्पर्शमात्र दबाना।
२ जितने दबाव से नाडी का स्पन्दन बन्द हो जाय उसका चतुर्थांश दबाव डालना।
३. जितने दबाव से नाड़ी स्पन्दन का लोप होता है उसका अर्धांश दबाना।
४. जितने दबाव से नाड़ी स्पन्दन बंद होता हो उसका तीन चतुर्थांश दबाना।
५ पूर्णरूप से दबाना।

इस प्रकार क्रमशः उत्तरोत्तर दबाव डालकर नाड़ी द्वारा शारीरिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। जैसा श्लोक में वर्णित है।

स्पर्शनात्पीडनाद् घाताद्वेधनान्मर्दनादपि।
तासु जीवस्य सञ्चारं प्रयत्नेन विशोधयेत् ॥

अँगुलि रखने का स्थान—

एकांगुलं परित्यज्य मणिबन्धे परीक्षयेत्।
अधः करेण निष्पीड्य त्रिभिरंगुलिभिर्मुहुः ॥

मणि बन्ध से एक अङ्गुल छोड़ नीचे की ओर तीन अङ्गुलियों से नाड़ी देखनी चाहिये।

प्रगृह्य सव्यहस्तेन मिलितांगुलिपूर्वकम्।
वीक्षेत रोगिणो हस्तमंकुशाकृतिकांगुलिः ॥

रोगी के दक्षिण हाथ को वाम से पकड़ दक्षिण हाथ की तीनो संयुक्त तथा अंकुशाकार अङ्गुलियों से रोगी की नाड़ी को देखते हैं। अर्थात् जिन अङ्गुलियों से परीक्षा करते है उनको परस्पर एक में मिला अंकुश सदृश टेढ़ी कर लेते है।

दक्षिण हाथ से देखने का प्रमाण—

ज्ञानार्थं रोगिणो वैद्यो निजदक्षिणपाणिना।
करस्यांगुष्ठमूलेऽधः स्पृशेद्दक्षिणगे करे ॥

रोगियों के दक्षिण हाथ के अंगुष्ठमूल के नीचे अपने दक्षिण हाथ से नाड़ी को देखना चाहिये।

नाड़ी परीक्षा विधि—"नाड़ीं प्रभातसमये सततं परीक्षेत्।"

रोगी के नाड़ी की परीक्षा सर्वदा प्रातः काल करनी चाहिये।

प्रातः कृतसमाचारं कृताचारपरिग्रहम्।
सुखासीनः सुखासीनं परीक्षार्थमुपाचरेत्॥

प्रातःकाल शौचादि नित्य कर्मों से रोगी तथा चिकित्सक दोनों निवृत्त हो सुख से वैठ नाड़ी की परीक्षा करें।

नाड़ी परीक्षा विधि—

वारत्रयं धृत्वा धृत्वा विमुच्य च।
विमृश्य बहुधा बुद्ध्या रोगव्यक्तिं ततो दिशेत्॥

रोगी परीक्षा के समय नाडी को तीन वार दवाना तथा छोड़ना चाहिये। इस प्रकार नाड़ी की बुद्धि पूर्वक परीक्षा करनी चाहिये।

परीक्षा में त्याज्य अवस्थायें—

सद्यः स्नातस्य भुक्तस्य क्षुतृष्णातपशीलिनः।
व्यायामश्रान्तदेहस्य सम्यङ्नाडी न बुद्ध्यते॥

निम्न अवस्थाओं में नाडी भलीभाँति व्यक्त नहीं होती—

१. तत्काल स्नान करने पर। २ भोजन करने पर।
३. भूख तथा प्यास से पीड़ित होने पर। ४. धूप में घूमकर आने पर।
५. व्यायाम करने के पश्चात्। ६. थकावट के वाद।

तैलाभ्यक्ते च सुप्ते च तथैव भोजनान्तरे।
तथा न ज्ञायते नाडी यथा दुर्गतमा नदी॥

तैल मर्दन के पश्चात्, सोते समय, भोजन के पश्चात् उसी प्रकार नाडी व्यक्त नहीं होती जिस प्रकार से विशाल पर्वतों मे नदियाँ व्यक्त नहीं होतीं।

तैलाभ्यक्ते रतेरन्ते भोजनान्ते तथैव च।
उद्वेगादिषु नाडी च न सम्यगवबुद्ध्यते॥

तैल मर्दन के पश्चात्, मैथुन के पश्चात् तथा उद्विग्नता के समय नाडी भली भाँति नहीं व्यक्त होती।

नाडी परीक्षा योग्य चिकित्सकः—

स्थिरचित्तो निरोगश्च सुखासीनो विचक्षणः।
अपीतमादकोऽकामी ह्यलोभक्रोधमोहवान्॥
तथा मूत्रादिवेगश्च योग्यो नाडी परीक्षणे।

जो चिकित्सक धैर्यशील तथा व्यग्रताहीन हो, स्वस्थ हो, आराम से बैठा हो तथा बुद्धिमान हो, मद्य न पीता हो, कामी न हो, लोभ क्रोध, मोह तथा मूत्रादि के वेग का त्याग कर चुका हो वही नाडी परीक्षा भली भाँति कर सकता है।

त्याज्य चिकित्सक—

पीतमद्यश्चञ्चलात्मा मलमूत्रादिवेगयुक्।
नाडीज्ञानेऽसमर्थः स्याल्लोभाक्रान्तश्च कामुकः ॥

१ मद्यपान करने वाला। २. चञ्चल चित्त वाला।
३ मलमूत्र के वेग को धारण किये हुये। ४ अत्यन्त लोभी।
५ कामी अर्थात् मैथुन में निरन्तर रत रहने वाला।

ये ५ प्रकार के चिकित्सक त्याज्य है; क्योंकि ये नाडी विज्ञान में असमर्थ होते हैं।

योग्य रोगी—

त्यक्तमूत्रपुरीषस्य सुखासीनस्य रोगिणः।
अन्तर्जानुकरस्थापि नाडीं सम्यक् परीक्षयेत् ॥

जो रोगी मलमूत्र का त्याग कर आराम से बैठा हो तथा हाथ को जानु के अंदर कर भलीभाँति नाड़ी की परीक्षा करावे, वह रोगी कहलाता है।

नाडी द्वारा त्रिदोष ज्ञान—

अग्रे वातवहा नाडी मध्ये वहति पित्तला।
अन्ते श्लेष्मविकारेण नाडी ज्ञेया बुधैः सदा ॥

सबसे आगे वातवह नाडी, मध्य में पित्तवह तथा सबसे पीछे कफवह नाडी रहती है। ऐसा विद्वानों का मत है।

कई विद्वानों का मत उपरोक्त वर्णन के विपरीत भी है। यथा—

आदौ च वहते पित्तं मध्ये श्लेष्मा तथैव च।
अन्ते प्रभंजनो ज्ञेयः सर्वशास्त्रविशारदाः ॥

सबसे आगे पित्त वहन करता है, मध्य में कफ तथा अन्त में वात वहन करता है ऐसा विद्वानों का मत है—

तीसरा मत निम्नांकित है—

वाताधिका वहेन्मध्ये त्वग्रे वहति पित्तला।
अन्ते श्लेष्मवती ज्ञेया मिश्रिते मिश्रिता भवेत् ॥

सबसे आगे पित्त का वहन होता है, मध्य में वात का तथा अन्त में कफ का वहन होता है, मिश्रित दोष मिश्रित स्थानों में वहन करते हैं। जिनका वर्णन आगे किया जायगा।

इन उपरोक्त मत वैषम्य का आदि कारण अभी तक ज्ञात नहीं हो सका, किन्तु शिवोक्त नाडीविज्ञान नामक ग्रंथ के निम्न श्लोकों में वर्णन से कुछ स्पष्टता व्यक्त होती है।

> श्लैष्मिकायाः पतिर्विष्णुः शुद्धसत्वमयश्च सः।
> अतश्चाग्रे कफो नाड्यां कृते सत्वमये स्थितः॥
> तदा मध्यगतो वायुः पित्तमन्ते स्थित प्रिये ?

शिवजी पार्वती से कहते हैं कि हे प्रिये ? सतयुग में सत्वगुण प्रधान है तथा इस युग के स्वामी विष्णु भी सत्वगुणी हैं। इसी कारण सत्वगुणी कफ दोष ही सब दोषों में प्रधान और अग्रगामी होता है। कफ से पीछे वायु और अन्त में पित्त रहता है।

> वातिकायाः पतिर्ब्रह्मा रजोगुणमयश्च सः।
> रजोगुणमयस्त्रेतायुगोऽतो.वायुरग्रगः॥
> धमन्यां मध्यगः श्लेष्मा पित्तमन्ते तदा स्थितम्।

त्रेतायुग रजोगुणात्मक है जिसके पति ब्रह्मा है। वायु भी रजोगुणात्मक है। इस कारण इस युग में नाडी में सर्वप्रथम वायु मध्य में कफ तथा अन्त में पित्त रहता है।

> युगो वै द्वापरो मिश्रस्ततो नाडी त्रिधैव ही।
> व्यवस्थानं प्रवक्ष्यामि तां क्रमेण वरानने।
> वातपित्तकफास्त्वादौ मध्ये पित्तं कफो महत्।
> कफः पित्तञ्च वातश्च युगस्यान्ते क्रमात् स्थिताः॥

हे प्रिये ! द्वापर युग मिश्रित है तथा इस पर किसी एक का प्रभुत्व नहीं है। यदि द्वापर युग के तीन भाग किये जायँ तो प्रथम भाग में वात, पित्त, कफ, दूसरे में पित्त, कफ, वायु और तीसरे में कफ, पित्त, वायु क्रमशः स्थित रहते हैं।

> पित्तनाडीपतिश्चाहं त्रिगुणात्मा तमोऽधिकः।
> तमस्तु रजसो न्यूनं सत्वमल्पं ततः कलौ॥
> अतः पित्तप्रधानत्वात्पित्तमग्रे भविष्यति।
> वायुर्मध्ये कफश्चान्ते धरायामेव निश्चितम्॥

कलियुग में त्रिगुणात्मा होने पर भी तमोगुण प्रधान है। मैं इसका स्वामी हूं। इस युग में तमोगुणात्मक पित्त की प्रधानता होती है। तम से रज न्यून होता है तथा सत्व अल्प होता है। इसलिये पित्त प्रधान होने के कारण आगे रहता है, वायु मध्य में तथा कफ अन्त में रहता है।

कलेरन्ते धमन्यान्तु सन्निपातो भविष्यति।
तदा लोको मरिष्यन्ति कालेनाल्पेन पार्वति।

हे पार्वती! कलियुग के अन्त में सन्निपात की नाडी होगी जिससे थोड़े ही समय मे लोक का संहार होगा।

उपरोक्त शिव पार्वती सम्वाद से नाडी की वैषम्यता का स्पष्टीकरण हो जाता है। अब यहाँ किंचित मात्र भी सन्देह नहीं रहता।

अंगुल्यानुसार दोष निर्णय—

वातेऽधिके भवेन्नाडी प्रव्यक्ता तर्जनीतले।
पित्ते व्यक्ता मध्यमायां तृतीयायां कफोऽङ्गुलौ॥

तर्जनी अँगुली के नीचे वाताधिक्य नाडी, मध्यमा के नीचे पित्ताधिक्य तथा अनामिका के नीचे कफाधिक्य नाडी व्यक्त होती है। इसी को वैद्यभूषण ने निम्न श्लोक मे प्रदर्शित किया है।

तर्जन्यग्रेण पवनं मध्यमाग्रेण चानलम्।
कफं त्वनामिकाग्रेण स्पृष्ट्वा पश्येद् गुणागुणौ॥

द्विदोष का ज्ञान—तर्जनीमध्यमामध्ये वातपित्तेऽधिके स्फुटे।
अनामिकायां तर्जन्यां व्यक्ते वातकफे स्मृते॥
मध्यमानामिकामध्ये स्फुटे पित्तकफेऽधिके।

तर्जनी और मध्यमा के बीच में वात-पित्त, अनामिका और तर्जनी के बीच वात-कफ तथा मध्यमा और अनामिका के मध्य मे पित्त-कफ स्पष्ट होते है।

नाड़ी की विशिष्ट गति—

वातेन नाडी वक्रा स्यात् पित्तेनात्यन्तचंचला।
श्लेष्मणा तु स्थिरा मन्दा द्विदोषा मिश्रलक्षणा॥

वात की नाडी वक्र होती है, पित्त की अत्यन्त चंचल तथा कफ की नाडी मन्द तथा स्थिर होती है। द्विदोषज नाडी दो दोषों से परिपूर्ण होती है। जिनका वर्णन आगे किया जायगा।

नाडी धत्ते मरुत्कोपे जलौकासर्पयोर्गतिम्।
कुलिंगकाकमण्डूकगतिं पितस्य कोपतः॥
हंसपारावतगति धत्ते श्लेष्मप्रकोपतः।

वात नाड़ी जोंक तथा सर्प के चाल सदृश, पित्त की नाडी कुलिंग, कौवा, मेढक

की चाल सदृश तथा कफ की नाड़ी हंस, और पारावत की गति सदृश चलती है।

द्विदोषज नाड़ी—चञ्चला तरला स्थूला कठिना वातपित्तजा।
ईषच्च दृश्यते तूष्णा मन्दास्यात् श्लेष्मवातला॥
निरन्तरा खरा रूक्षा मन्दा श्लेष्मातिवातला।
रूक्षवाते भवेत्तस्य नाड़ी स्यात्पित्तसन्निभा॥
सूक्ष्मा शीता स्थिरा नाडी पित्तश्लेष्मसमुद्भवा।

जो नाडी चंचल, जल के प्रवाह की तरह बहती हुई स्थूल तथा कठोर व्यक्त होती है उसे वातपित्त दोष युक्त नाडी कहते हैं। जो नाडी कुछ उष्ण तथा मन्द चाल से चलती है उसे कफवात दोष युक्त नाडी कहते है। जिस नाडी की चाल निरन्तर कठिन, रूक्ष तथा मन्द होती है उस नाडी में कफाधिक्य वात दोष होता है। जिस नाडी में पित्त तथा वात दोष होता है, वह रूखी तथा पित्त के लक्षणों से युक्त चलती है। जो नाडी सूक्ष्म, शीतल तथा स्थिर चलती है उसे पित्तश्लेष्म दोष युक्त नाड़ी कहते है।

या हि वक्रा च तीव्रा च मध्यमातर्जनीतले।
स्फुटा भवति सा नाडी वातपित्तगदोद्भवा॥
स्फुटा वक्रा च मन्दा च मध्यमानामिकातले।
या भवेत्सा हि विज्ञेया वातश्लेष्मगदोद्भवा॥
या च मन्दा तथा तीव्रानामिकातर्जनीतले।
स्फुटा स्यात्सा धरा ज्ञेया कफपित्तसमुद्भवा॥

जो नाडी वक्र गति से तीव्र चलती है तथा मध्यमा और तर्जनी अङ्गुलियों के नीचे स्पष्ट व्यक्त होती है उसे वात-पित्त दोष की नाडी कहते है। जो नाडी वक्र गति से मन्द चलती हुई मध्यमा तथा अनामिकाँगुलियों के नीचे स्पष्ट व्यक्त होती है उसे वात-कफ दोष की नाडी कहते है। जो नाडी मन्द होते हुई भी द्रुतगामिनी होती है तथा अनामिका और तर्जनी अङ्गुलियों के नीचे स्पष्ट व्यक्त होती है उसे कफ-पित्त दोष की नाड़ी कहते हैं।

वातपित्ताकुला नाडी व्याल वायसगामिनी।
वातश्लेष्माकुला नाडी तिर्यक् हंसगतिर्भवेत्॥
पित्तश्लेष्माकुला नाडी काककुक्कुटगामिनी।

वात तथा पित्त से व्याप्त नाडी सर्प तथा कौवे के चाल सदृश चलती है। वात

तथा कफ से व्याप्त नाड़ी तीर्छे तथा हंस के चाल सदृश चलती है। पित्त तथा कफ से व्याप्त नाड़ी कौवा, मुर्गा आदि के चाल सदृश चलती है।

मुहुः सर्पगतिं नाडी मुहुर्भेकगतिं तथा।
वातपित्तद्वयोद्भूतां प्रवदन्ति मनीषिणः॥
भुजगादिगति नाडीं राजहंसगति तथा।
वातश्लेष्मविकारेण आपन्ते तद्विदो जनाः॥
मण्डूकादिगतिं नाडीं मयूरादिगतिं तथा।
पित्तश्लेष्मसमुद्भूतां प्रवदन्ति महाधिपः॥

वात-पित्त दोष से परिपूर्ण नाड़ी कभी सर्प की गति से तथा कभी मेढक के गति से चलती है। वात-कफ दोष परिपूर्ण नाडी सर्पादि की गति से तथा कभी राजहंस की गति से चलती है। पित्त-कफ दोष से परिपूर्ण नाड़ी कभी मेढकादि की गति से तथा कभी मोरादि की गति से चलती है।

सन्निपातिक नाड़ी—

सर्वांगुलितले या च स्यान्नानागतिभिर्धरा।
स्फुटा वै सा च विज्ञेया सन्निपातगदोद्भवा॥

जो नाड़ी नाना प्रकार की गतियों से तीनों अङ्गुलियों के नीचे स्पन्द करती है उसे सन्निपातिक नाड़ी कहते हैं।

क्षणे वक्रा च तीव्रा च मन्दा च यत्र कुत्रचित्।
नानागतिधरा सा स्यात्सन्निपातगतोद्भवा॥

जो नाड़ी क्षण में वक्र तथा तीव्र और क्षण मन्द होकर नाना प्रकार के गति से चलती है उसे सन्निपातिक नाडी कहते हैं।

लावातित्तिरवर्त्तीरगमनं सन्निपाततः।
कलविकगतिर्याति सन्निपातेन सत्वरा॥

सन्निपात में नाड़ी लावा, तीतर, कलविक के गति सदृश तीव्र गामी होती है।

स्वस्थनाड़ी के लक्षण—

अँगुष्ठादूर्ध्वसंलग्ना समा च वहते यदि।
निर्दोषा सा च विज्ञेया नाड़ी लक्षणकोविदैः॥

अँगूठे की ओर उपरी भाग में जो नाडी समान चाल से चलती है उस नाड़ी को स्वस्थ नाड़ी कहते हैं।

भूलतागमनप्राया स्वस्था स्वास्थ्यमयी शिरा ।
सुखितस्य स्थिरा ज्ञेया तथा वलवती मता ॥

पृथ्वी पर शनैः शनैः फैलने वाली लता के समान जो नाडी स्थिर और वलवती चलती है उसे स्वस्थ पुरुष की नाडी कहते हैं ।

प्रातः स्निग्धतमा नाडी मध्यान्हे तूष्णतान्विता ।
सायान्हे धावमाना च चिराद्रोगविवर्जिता ॥

स्वस्थ नाडी प्रातः काल कोमल, दोपहर को कुछ गरम तथा शायंकाल लम्बी तथा गति से चलती है ।

शारीरिक स्थिति पर नाडी गति—

उद्वेगक्रोधयोस्तीव्रा भयचिन्ताश्रमेषु च ।
भवेत क्षीणगतिर्नाडी ॥

उद्वेग तथा क्रोध में तीव्र और भय, चिन्ता तथा श्रम में नाडी गति क्षीण होती है ।

दीप्ताग्नेर्वेगिनी लघ्वी कामक्रोधाच्च वेगयुक् ।
गुर्वी कोष्णास्रदोषेण क्षीणा चिन्ताभयाप्लुता ॥

अग्नि के दीप्त रहने पर नाडी तीव्र तथा क्षुद्र चलती है । काम और क्रोध से व्याप्त व्यक्तियों में नाडी की गति तीव्र होती है । रक्त दोष में भारी तथा उष्ण और चिन्तित और भय से युक्त व्यक्तियो में नाडी क्षीण चलती है ।

लघ्वी वहति दीप्ताग्नेः तथा वेगवतीस्मृता ।
चपला क्षुधितस्यापि स्थिरा तृप्तस्य सा भवेत् ॥

अग्नि के दीप्त होने पर नाडी लघु तथा वेगयुक्त होती है । क्षुधित व्यक्तियों की चंचल तथा अक्षुधित व्यक्ति की स्थिर चलती है ।

"प्रसन्ना च द्रुता शीघ्रा क्षुधा नाडी प्रवर्तते ।"

क्षुधा में नाडी जल्दी जल्दी, वेगयुक्त तथा स्पष्ट चलती है ।

"उपवासाद्भवेत् क्षीणा नाडी च द्रुतगामिनी ।"

उपवास में नाडी द्रुत गति से तथा क्षीण चलती है ।

आहारानुसार नाडी गति—

द्रवेऽति कठिना नाडी कोमला कठिनेऽपि च ।
द्रवद्रव्यस्य काठिन्ये कोमला कठिनापि वा ॥
लघौ पृथक् ग्रन्थिलेत्र पुष्ट पुष्टेव जायते ।

द्रव भोजन में नाडी कठिन और कठिन भोजन में नाडी कोमल तथा द्रव में द्रव और कठिन चलती है। लघु भोजन मे नाडी गाँठ दार और पुष्ट भोजन में नाडी पुष्ट चलती है।

केकिवन्मधुराहारे तिक्ते स्थूलाहिगा भवेत्।
अम्ले भेकगति, कोष्णा कटुके भ्रमरोपमा ॥
कषाये कठिना म्लाना लवणे सरला द्रुता।
एवं द्वित्रिचतुर्योगे नाडी नानागतिर्भवेत् ॥

मीठे भोजन मे मोर की गति से, तीते भोजन में मोटे सर्प की गति जैसे खट्टे भोजन मे मेढक की गति जैसी, उष्ण तथा कटु भोजन मे भँवरे की गति सदृश, कषैले भोजन में कठिन, नमकीन भोजन से साधी और तीव्र गति से नाडी चलती है। इस प्रकार से कई आहार के योग मे नाडी भी नाना प्रकार की चलती हैं।

क्षीरे स्तिमितवेगा च तथा शीता बलीयसी।
पिष्टकैर्गुडदुग्धैश्च पृथुकभ्रष्टद्रव्यकैः ॥
स्थिरा मन्दतरा पुष्टा गुडतैलेन धावती।
कूष्माण्डमूलकैर्मन्दा मापेण लगुडाकृतिः ॥
शाकैश्च कदलीभिश्च रक्तपूर्णेव नाडिका।

दुग्ध पीने से नाडी मन्दवेग वाली, शीतल तथा बलवान होती है। पिठी की वस्तुओं से, गुड़ तथा दुग्ध से, चिडडा तथा भूंजे हुये अन्न खाने से नाडी पुष्ट, स्थिर तथा मन्द चलती है। गुड़ तथा तैल के सेवन से नाडी दौडती हुई चलती है। कोहडा और मूली को खाने से नाडी मन्द चलती है उडद के खाने से नाड़ी दण्डा-सदृश कठोर तथा तनी हुई चलती है। अधिक शाक तथा केला खाने से नाडी रक्त से भरी हुई चलती है।

गर्भवती की नाडी—"गुर्वी वातवहां नाडीं गर्भेण सह लक्षयेत्।"

गर्भ की दशा मे नाडी भारी तथा चंचल होती है।

असाध्य नाडी लक्षण—

स्थित्वा स्थित्वा चलति या सास्मृता प्राणनाशिनी।
अतिक्षीणा च शान्ता च जीवितं हंत्यसंशयम् ॥

जो नाडी थोडी थोडी देर रुक रुक कर चलती है तथा जो नाडी अतिक्षीण और शान्त सी चलती है वह निश्चय ही प्राण को नष्ट करती है।

पाश्चात्य मतानुसार नाडी की गति—

अवस्था	प्रतिमिनट गति
गर्भाशय में	१४० से १५० तक
जन्म के समय	१३० से १४० ,,
१ वर्ष की आयु में	१२० से १४० ,,
२ ,, ,,	११५ तक
३ ,, ,,	१०१ ,,
४ ,, ,,	९४ ,,
५ ,, ,,	९४ से ९० तक
१० ,, ,,	९९ तक
१० से १५ वर्ष की आयु मे	८० ,,
१५ ५० ,, ,,	८०–७५ तक
६० ,, ,,	७४ तक
८० ,, ,,	७९ ,,
८० से ऊपर ,,	८० ,,

एलोपैथिक ढंग पर प्रयुक्त होने वाली आयुर्वेदिक ओषधियाँ

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट आधाटोडा
(Liquid Extract Adhatoda)

हिन्दी नाम—अरूसा। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहार विधि—१ औंस जल के साथ, दिन मे ३ बार।

गुण—१. कफनिस्सारक। २ मूत्रल। ३ अकड़न नाशक है।

४ यह कफ को ढीला कर कास को दूर करता है। यह फफ्फुसीय तथा श्वासप्रणाली जन्य श्वास के आक्रमण में भी लाभप्रद है।

५. आमवात के सन्धिशोथ पर मर्दन करने पर वेदना को नष्ट करता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अपामार्ग (Liquid Extract Apamarga)

हिन्दीनाम—अपामार्ग, चिरचिरी। मात्रा—½ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—१ औंस जल के साथ दिन मे ३ बार।

गुण—१ संकोचक (शोषक) है। २. मूत्रल है।

३. ज्वर नाशक है। ४ योगवाही है।

५. यह वृक्कजन्य शोथ में बहुत ही उपयोगी है।

६ यह सर्पदंश में बहुत ही गुणदायक सिद्ध हुआ है। विषैले कीडों तथा कुत्ते के काटने में भी लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

७ इसका व्यवहार अर्श में, आभ्यन्तरिक अंग शोथ मे, ग्रंथि प्रसार तथा ज्वर में सफलता के साथ किया जाता है।

८ बडी मात्रा मे प्रसव कालिक वेदना को उत्पन्न कर प्रसव या गर्भस्राव कराती है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अनन्तमूल
(Liquid Extract Anantamoola)

हिन्दी नाम—अनन्तमूल। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहार विधि—१ औंस जल या दुग्ध के साथ भोजन के बाद। दिन में ३ बार।

गुण—१ शक्ति वर्धक तथा स्निग्ध कारक। २. स्वेदल। ३ मूत्रल।

४ यह कायिक क्षीणता, चिरकालिक आमवात, चर्मरोग, फिरंगजव्रण, अजीर्ण तथा क्षुधा नाश में प्रभावशाली ओषधि है।

नोट—आवश्यकतानुसार इसके व्यवहार काल में सारक ओषधि का उपयोग करना चाहिये; ताकि आंत्र साफ रहें।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अर्जुन (Liquid Extract Arjuna)

हिन्दी—अर्जुन। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहार विधि—जल के साथ। दिन मे ३ बार।

गुण—१ संकोचक। २ पित्तनाशक। ३. शक्ति दायक।

४ हृदय की क्षीणता मे हृदय को शक्ति देने के लिये विशेष व्यवहृत होता है।

५. कष्टप्रद कास तथा रक्तष्ठीवन में विशेष लाभप्रद है।

६ राजयक्ष्मा मे व्यवहार किया जाता है।

७ प्रवाहिका, अतिसार तथा संग्रहणी में दस्त बंद करने के लिये यह बहुत ही लाभदायक है।

८ पैत्तिक रोगों मे भी लाभदायक होता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अश्वगंध

हिन्दी—असगध। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—दूध के साथ। दिन में ३ बार।

गुण—१ मूत्रल। २. शक्तिवर्धक। ३ योगवाही है।

४. राजयक्ष्मा, बच्चों की क्षीणता, वृद्धावस्था की शक्ति हीनता, आमवात, नाडी-

अन्य क्षीणता, स्मरणशक्ति ह्रास, मांसल शक्ति नाश, शुक्रमेह आदि व्याधियों में अत्युत्तम प्रभाव दिखलाता है।

५ गर्भवती स्त्री में पोषण तथा स्वास्थ्य वर्धन के लिये व्यवहृत होता है।

६. सीरप के साथ मिलाकर कटिशूल मे सफलता के साथ व्यवहृत करते हैं।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अर्कमूल (Liquid Extract Arkamoola)

हिन्दी: - सदार।

मात्रा—५ से १० बूंद।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।

गुण—१. स्वेदल। २ वामक। ३ विरेचक।

४. कास, आध्मान तथा अतिसार में गुणदायक है।

५ यह चर्मरोग, श्लीपद, उदरस्थ अंगों के प्रसार, जलोदर तथा सर्वांगशोथ (Anasarca) में भी लाभप्रद है।

६. वमन के लिये ½ से १ ड्राम की मात्रा में व्यवहृत करते हैं।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अशोक (Liquid Extract Ashoka)

हिन्दी अशोक। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।

गुण—१. संकोचक। २ गर्भाशयिक मांस पेशी शामक।

३ गर्भाशय के अन्तरावरण तथा डिम्बग्रंथि के तंतुओं पर उत्तेजक प्रभावकारी है।

४ गर्भाशय के सम्पूर्ण संक्रमणों को दूर करता है, विशेषतः रक्त प्रदर को।

५ अर्श तथा अतिसार के रक्तस्राव को वंद करता है।

सूचना—मासिकधर्म के चौथे दिन से प्रारम्भ कर रक्त के वंद होने तक पिलाते हैं।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट बावची (Liquid Extract Bavachi)

हिन्दी - बाकुची। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहार विधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।

गुण—१ सारक। २ उत्तेजक। ३ पैत्तिक व्याधियों में लाभदायक है।

४ कुष्ठ तथा चर्म रोगों में पीने को दिया जाता है तथा साथ साथ चालमूग्रा तेल के साथ मलहम बनाकर स्थानिक व्यवहार भी करते है।

५. श्वेत कुष्ठ पर निम्न ओषधि लाभप्रद है।

अलकोहलिक ओलियो रेजिनस लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट	१० बूंद
वैसलीन	१ औंस

इसके व्यवहार से स्थानिक फफोला या लालिमा उत्पन्न हो जाती है। इनको योहीं छोड़ देते हैं, जो स्वयं सूख कर कृष्ण वर्ण का धब्बा छोड़ देते हैं। यह

धब्बा पुनः बदल कर चर्म के वर्ण का हो जाता है और सफेदी सदा के लिये लुप्त हो जाती है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अतिविष (Liquid Extract Ativisha)

हिन्दी—अतीस, सीताश्रृंगी। मात्रा—२ से ५ बूंद।

व्यवहार विधि—जल के साथ। दिन में २ वार।

गुण—१ यह शक्तिवर्धक है। २. संकोचक।
३. आमाशय को शक्तिदायक। ४ ज्वर नाशक।
५. ज्वर के पश्चात् की तथा अन्य क्षीणता मे शक्ति वर्धक है।
६. प्रवाहिका, अतिसार, कास तथा अग्निमान्द्य मे उत्तम है।
७ प्रवाहिकायुक्त ज्वर मे निम्न विधि से व्यवहृत करते है—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अतिविष	३ बूंद
टिंचर जिंजिबेरिस	५ ”
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट कुर्ची	१० ”
” ” गुल्वेल	५ ”
जल	१ औंस

३ वार।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ब्रह्मदण्डी (Liquid Extract Brahmadandi)

हिन्दी—ब्रह्मदण्डी। मात्रा · १ से २ ड्राम।

व्यवहार विधि—दुग्ध के साथ। दिन मे ३ वार।

गुण—१. वायु निस्सारक। २ नाडी (Nerve) को शक्तिदायक।
३. मूत्रल। ४ बच्चों के कष्टप्रद कास मे अत्यधिक गुणदायक है।
५ अन्य शक्तिदायक औषधियों के साथ शुक्र-क्षीणता, नपुंसकता तथा योषापस्मार मे व्यवहृत होता है।
६. अग्निमान्द्य, गलगण्ड, फिरंग तथा ज्वरों मे भी लाभदायक है।

सूचना—बच्चों के लिये १० से ३० बूंद की मात्रा में मधु के साथ दिन मे तीन वार देते हैं।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट बिल्व (Liquid Extract Bilva)

हिन्दी—बेल। मात्रा— १ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार भोजन के समय।

गुण—१ उत्तेजक। २ ज्वरनाशक। ३. रक्तदोषान्तक।

४. प्रवाहिका और अतिसार के लिये सर्वोत्तम है । इसका प्रभाव निम्न प्रकार से व्यवहृत करने पर वढ जाता है—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट विल्व	१ ड्राम
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट कुर्ची	१ ,,
जल	१ औंस

३ वार ।

पथ्य— लघु तथा सुपाच्य भोज्य पदार्थ ।

यह छोटे बच्चों के चिरकालिक प्रवाहिका तथा अतिसार की वहुत उपयोगी ओषधि है ।

(५) चिरकालिक पूयमेह (Gonorrhoea) में निम्न योग अति ही लाभप्रद होता है :—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट विल्व	१ ड्राम
टिंचर क्यूबेब	२० बूंद
जल	१ औंस

३ वार ।

यह मूत्रल तथा सकोचक प्रभाव युक्त है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट वेल एट इन्द्रजव कम्पोजिटा
(Liquid Extract Bella et Indrajava Comp.)

हिन्दी—वेल, इन्द्रजव । मात्रा—१ से २ ड्राम ।

व्यवहारविधि—जल से प्रत्येक ४ घण्टे पर ।

गुण— अतिसार और प्रवाहिका की अच्छी ओषधि है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट चिरेता (Liquid Extract Chiretta)

हिन्दी— चिरायता । मात्रा—½ से १ ड्राम ।

व्यवहारविधि—१ औंस जल के साथ । दिन में २ वार ।

गुण—१ अग्निमांद्य में क्षुधा वढ़ाने के लिये ।

२ ज्वर नाशक है । ३. पित्त नाशक है । ४- कृमि नाशक है ।

५. यकृत् के कार्य हीनता में उपयोगी है ।

६. आम्लीयतानाशक है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ब्राह्मी (Liquid Extract Brahmi)

हिन्दी—ब्राह्मी । मात्रा- १० से २० बूंद ।

व्यवहारविधि—दुग्ध या मधु के साथ । दिन में ३ वार ।

गुण—१ नाड़ी को शक्तिप्रद है । २. मूत्रल ।

३ इसका प्रधान व्यवहार उन्माद, अपस्मार, पित्त विकार, तथा स्वरभंग में होता है।

४ स्मरणशक्ति हीनता, उन्माद तथा शुक्रक्षय में अल्प मात्रा में दूध के साथ देते हैं।

सूचना—बच्चों को ५ से १० बूंद की मात्रा में मधु के साथ दिन ३ वार देते हैं।

लिकिड एक्स्ट्रैक्ट धमासा (Liquid Extract Dhamasa)

हिन्दी—धमासा। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। भोजनोत्तर दिन में २ वार।

गुण—१. शक्तिवर्धक। २ मूत्रल। ३ संकोचक।

४. जल मे मिश्रित कर मुखपाक में गण्डूष कराते हैं।

५. त्वक क्षोभ तथा त्वक की तीव्र कण्डू में जल में मिश्रित कर स्नान करते हैं। यह बहुत ही लाभप्रद है।

लिकिड एक्स्ट्रैक्ट दशमूल (Liquid Extract Dashmoola)

मात्रा—½ से १ ड्राम। व्यवहारविधि—दुग्ध के साथ। दिन में ३ वार।

गुण—१ सतत ज्वर में, प्रसूति ज्वर में, वक्ष के शोथजन्य संक्रमण मे तथा मस्तिष्क संक्रमण में लाभदायक है। २ प्रसवोत्तर बहुत लाभप्रद है।

दशमूल ओषधियों की नामावली

१ पृश्नपर्णी	१ Uraria Lagopodiodes (यूरेरिया लैगोपोडिओडीस)
२. सालपर्णी	२ Desmedium Gangenticum (डेस्मेडियम गैंजिण्टिकम)
३ कण्टकारी	३ Solanum Jacqinii (सोलेनम जैक्विनी)
४. बृहती	४. Solanum Indicum (सोलेनम इण्डिकम)
५. गोखरू	५ Tribulus Terrestris (ट्रिब्युलस टेरीस्ट्रिस)
६. वेल	६ Aegle Marmelos (एजिलमारमीलस)
७ स्योनाक	७ Colosanthes Indica (कोलोसैंथिस इण्डिका)
८. पाटला	८ Stereospermum Suvanceleus (स्टेरिओस्पर्मम सुवेंसीलीयस)
९. अरणी	९ Premna Spinoza (प्रिम्ना स्पाइनोजा)
१०. गम्भारी	११ Gmelina Arborea (जेलिना आर्बोरिया)

लिकिड एक्स्ट्रैक्ट गोखरू (Liquid Extract Gokharu)

हिन्दी—गुलखुर, इक्षुगंधा। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार भोजनोपरान्त।

गुण—१ तीव्र मूत्रल। २ उत्तेजक।

३ शोथ (Dropsy), आमवात, वातरक्त, मूत्रसंस्थान गत व्याधियों में, नाडी क्षीणता तथा सम्पूर्ण प्रकार की शक्तिहीनता में सफलता के साथ व्यवहृत होता है ।

४ तीव्र तथा चिरकालिक पूयमेह में, मूत्रकृच्छ्र तथा मैथुन कर्म क्षीणता में व्यवहृत होता है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ग्लिसराइझा
(Liquid Extract Glycerrhiza)

हिन्दी—जेठीमधु । मात्रा—½ से १ ड्राम ।

व्यवहारविधि—१ औंस जल के साथ । दिन में ३ वार ।

गुण—१. स्निग्धकारक । २ सौम्य कफनिस्सारक ।

३. यह क्षोभक ओषधियों के स्वाद को लुप्त करता है तथा सौम्य सारक है ।

४. तृषा नाशक है । ५. ज्वर, वेदना, कास तथा श्वासकष्ट को दूर करता है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट गुल्वेल (Liquid Extract Gulvel)

हिन्दी—अमृतवल्ली, गुडूच । मात्रा—१ से २ ड्राम ।

व्यवहारविधि—जल के साथ । दिन मे ३ वार भोजन के समय ।

गुण—१ आमाशय को शक्तिदायक । २ सम्पूर्ण शरीर को शक्तिदायक ।

३ ज्वर नाशक । ४. कुछ मूत्रल । ५. स्निग्ध कारक ।

६ साधारण तथा मैथुन जन्य क्षीणता में लाभदायक है ।

७ ज्वर, कामला, यकृत दोष, चर्मरोग, फिरंग की द्वितीयावस्था, आमवात, मूत्र की आम्लीयता, मूत्राशय सम्बन्धी विकार, अग्निमान्द्य, प्लैहिक विकार, चिरकालिक पूयमेह, श्वेतप्रदर आदि व्याधियों मे लाभदायक है ।

८ क्विनीन के साथ देने पर विषम ज्वर में बहुत ही गुणदायक है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट गुल्वेल कम्पोजिटा
(Liquid Extract Gulvel Comp.)

मात्रा—१ से २ ड्राम ।

व्यवहारविधि—जल के साथ । दिन मे २ वार ।

गुण—१ ज्वर के प्रधान कारण को नष्ट कर यकृत या प्लीहा के आकार को कम करता है ।

२ कामला तथा शोथ (Dropsy) को दूर करता है ।

३ दस्त साफ ला क्षुधा की वृद्धि करता है ।

४ रक्त शोधक तथा रक्त वर्धक है । पाण्डु को नष्ट करता है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट गोरखमुण्डी
(Liquid Extract Gorkhmundi)

हिन्दी—गोरखमुण्डी। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।

गुण—१. पाचक। २. शक्तिदायक। ३ कृमिनाशक।
४ वक्ष को शक्तिदायक। ५ रक्त शोधक। ६ उत्तेजक।
७ ग्रीवा के ग्रंथि शोथ (Swelling), मूत्रमार्ग स्राव तथा कामला नाशक है।
८ पित्ताशयिक व्याधियों को दूर करता है।
९ विभिन्न प्रकार के कृमियों को नष्ट करता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट कचूर (Liquid Extract Kachura)

हिन्दी – कचूर। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहारविधि– जल या मधु के साथ। दिन मे ३ वार।

गुण—१. उत्तेजक। २ वायुनिस्सारक। ३ कफनिस्सारक।
४ स्निग्धकारक। ५. मूत्रल। ६. फफोलोत्पादक।
७. आध्मान तथा अग्निमान्द्य में लाभप्रद है।
८ विरेचनों के कार्य को ठीक करता है। ९. गले को साफ करता है।
१०. मुखगह्वर तथा श्वास प्रणाली के उर्ध्व भाग के क्षोभ को दूर करता है।
११ जुकाम तथा ज्वर, कास तथा श्वास प्रणाली शोथ में निम्न प्रकार देते हैं:—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट कचूर	½ ड्राम
टिंचर कार्मिनेटिव	१ ”
एक्स्ट्रैक्ट ग्लिसराइझा लिक्विड	½ ”
जल	१ औंस

३ वार।

१२. रक्त के दोष जन्य चिरकालिक चर्म रोगों मे शरीर के बाह्य भाग पर लगाया जाता है।
१३ श्वेतप्रदर या पूयमेह के स्राव को दूर करता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट कण्टकारी
(Liquid Extract Kantakari)

हिन्दी—भटकटैया, कटेरी। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन मे ३ वार।

गुण—१ श्वास, कास, प्रतिश्याय जन्य ज्वर, वक्ष की वेदना तथा राजयक्ष्मा मे लाभप्रद है।

२ यकृत तथा प्लीहा वृद्धि के साथ साथ क्षीणता में भी उपयोगी है।

लिक्विड एक्सट्रैक्ट कालमेघ
(Liquid Extract Kalmegh)

हिन्दी—किरात। मात्रा - १० से ३० बूंद।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ बार।

गुण—१ शक्ति वर्धक है।

२ ज्वर, आध्मान, अजीर्ण में अच्छा लाभ दिखलाता है।

३ विषम ज्वर तथा श्लेष्मिक ज्वर (Influenza) को रोकता है।

४ संखिया के साथ व्यवहार करने पर कीनीन से उत्तम है।

५. नवसादर के साथ यकृत दोषों में लाभप्रद है।

६ यह आन्त्र को साफ रखता है। क्षुधा की वृद्धि करता है।

७ रक्ताल्पता को दूर करता है। ८ आन्त्रिक कृमि नाशक है।

सूचना—बच्चों को २ से १० बूंद की मात्रा में देते हैं।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट जाम्बुल (Liquid Extract Jambul)

हिन्दी—जामुन। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन मे ३ वार।

गुण—१ मधु मेह मे मूत्र की शर्करा को कम करता है।

२ मधुमेही के तृषा को शान्त करता है।

३. संकोचक है; जिससे प्रवाहिका और अतिसार मे लाभप्रद है।

लिक्विड एक्ट्रैक्ट कपूरकचली
(Liquid Extract Kapurkachali)

हिन्दी—कपूर कचरी। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन मे दो वार।

गुण—१. आमाशय को शक्तिदायक। २ वायुनिस्सारक।

३ शक्तिदायक। ४ उत्तेजक। ५ अग्निमांद्य में लाभप्रद है।

६ बालों की वृद्धि करता है; अतः तेलों में मिलाकर व्यवहृत होता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट कूट (Liquid Extract Kutha)

हिन्दी—कूठ। पोखरमूल। मात्रा—५ से १५ बूंद।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन मे ३ वार।

गुण—१ कफनिस्सारक है जिससे श्वास रोग में उत्तम गुण दिखलाता है।

२. उत्तेजक तथा कटु है। ३. वायुशामक है। ४. दाह नाशक है।

५ ज्वर, कास, क्षुधा नाश, पार्श्वशूल, कामला तथा शोथ (Dropsy) नाशक है ।

६. व्रण तथा चर्म रोग पर स्थानिक व्यवहार होता है ।

७ कास, श्वास, चिरकालिक आमवात, चर्मरोग, ज्वर और अग्निमांद्य में टिंचर कार्ड० को० के साथ व्यवहृत होता है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट कुर्ची (Liquid Extract Kurchi)

हिन्दी—कुटज, कुर्ची ।

मात्रा—तीव्र रोगियों मे १ से २ ड्राम । चिरकालिक रोगों में १ ड्राम ।

व्यवहारविधि—तीव्र रोगों में प्रत्येक दो घण्टे पर । जल के साथ ।
चिरकालिक रोगों मे दिन में ३ वार । जल के साथ ।

गुण—१ आमाशय को शक्तिदायक । २ संकोचक ।

३ अतिसार नाशक । अतिसार तथा प्रवाहिका नाशन मे सर्वोत्तम ओषधि है ।

४ ज्वर नाशक तथा कृमि नाशक है । ५ क्षुधा की वृद्धि करता है ।

६ यह इपीकाक से उत्तम है; क्योंकि न यह विषैला है, न हृदयावसादक है तथा न तो वामक है ।

सूचना—बच्चों को अवस्थानुसार छोटी बडी मात्रा में व्यवहृत करते हैं ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट लोध्र (Liquid Extract Lodhra)

हिन्दी—लोध्र । मात्रा—½ से १ ड्राम ।

व्यवहारविधि—जल के साथ । दिन मे ३ वार ।

गुण—१ सौम्य संकोचक । २ शीतल ।

३ प्रवाहिका, अतिसार आदि आंत्रिक व्याधियों मे लाभप्रद है । इसका व्यवहार लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट बेल तथा कुर्ची के साथ किया जाता है ।

४ गर्भाशयिक तन्तुओं की शिथिलताजन्य रक्तस्राव मे लाभप्रद है ।

५ पिष्टमेह (Chyluria) मे आधुनिक काल मे सफलता के साथ व्यवहृत होता है ।

६ दन्तवेष्ट को दृढ करने के लिये दतवेष्टगत रक्तस्राव तथा व्रण मे जल में मिला कुल्ला कराते है ।

७ पिडिकाओं पर उनको पकने के लिये लगाते है ।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट निम्ब बार्क (Liquid Extract Nimba Bark)

हिन्दी—नीम छाल । मात्रा—½ से १ ड्राम ।

व्यवहारविधि—जल के साथ । दिन में ३ वार ।

गुण- १. संकोचक। २ शक्तिवर्धक। ३ ज्वर नाशक।

४. यह ज्वर, क्षीणता, ज्वरोत्तर क्षीणता तथा क्षुधानाश में व्यवहृत होता है।

५ विषम ज्वर में टिंचर कार्मिनेटिव के साथ यह कोनीन से भी उत्तम है।

६. ज्वरों में प्यास, हृल्लास तथा वमन को दूर करता है।

७ श्वेतप्रदर में निम्न भाँति व्यवहृत करने पर लाभप्रद है :—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट निम्ब बार्क	½ ड्राम
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट अशोक	½ ,,
जल	१ औंस

३ बार।

८ ज्वरों में निम्न भाँति व्यवहृत करते हैं :—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट निम्ब बार्क	½ ड्राम
टिंचर जिंजर	१५ बूंद
टिंचर चिरायता	२० ,,
जल	१ औंस

३ बार।

सूचना इसके व्यवहार काल में बैंगन तथा तैल का व्यवहार वर्ज्य है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट निम्ब लीव्स
(Liquid Extract Nimb Leaves)

हिन्दी- नीम। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ बार।

गुण—१. शोधक तथा कृमिनाशक है।

२ दूषित व्रणों पर, पिडिकाओं पर तथा ग्रंथि शोथ पर बराबर मधु के साथ मिलाकर लगाते हैं। यह जीवाणुनाशक है।

३. आंत्रिक कृमियों को नष्ट करने के लिये एरण्ड तैल के साथ व्यवहृत होता है।

४ कामला में मधु के साथ व्यवहृत करते हैं।

५ चर्मरोग जैसे पिडिका, पामा, कण्डू आदि में हरितक्यासव के साथ पिलाते हैं।

६ शीतला में निम्न विधि से व्यवहृत करने पर आशा से अधिक लाभ देखा गया है :—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट निम्ब लीव्स	½ ड्राम
लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ग्लिसराइझा	½ ,,
जल	१ औंस

३ बार।

७ यकृत् शोथ पूर्ण ज्वर में बहुत ही लाभप्रद होता है।

८. यह जीवाणु नाशन तथा क्षत रोहण के लिये निम्न भाँति से व्यवहृत होता है :—

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट निम्ब लीव्स	१ ड्राम
जल	१ औंस

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट मंजिष्ठा
(Liquid Extract Manjistha)

हिन्दी—मंजीठ। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ बार।

गुण—१. घात (लकवा) को दूर करता है।

२ कामला नाशक है। ३ मूत्र प्रणाली अवरोध को दूर करता है।

४ नष्टार्तव को दूर करता है।

५ प्रसवोत्तर स्राव (Lochia) की वृद्धि करता है।

६ चर्म की विवर्णता पर मधु के साथ लगाया जाता है। इसके अतिरिक्त शोथ, व्रण तथा सम्पूर्ण चर्म रोगों में व्यवहृत होता है।

७ लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट ग्लिसराइझा तथा चावल के आटे में मिला अस्थि भग्न पर लगाते हैं जो शोथ तथा सूजन को कम करता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट पुनर्नवा
(Liquid Extract Punarnva)

हिन्दी—गदहपुर्ना। मात्रा—१ से २ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।

गुण—१ विरेचक। २. कृमिनाशक। ३. ज्वरशामक। ४ तीव्रमूत्रल।

५. वृक्क की सम्पूर्ण व्याधियों में सफलता के साथ व्यवहृत होता है।

६. वृक्करोगजन्य, हृदयरोगजन्य तथा यकृत रोगजन्य जलोदर में सफलता के साथ व्यवहृत करते हैं।

७ यह मूत्र स्राव के मात्रा की वृद्धि करता है, अतः उरस्तोय, हृदयावरण की तरलाधिक्यतादि में सफलता के साथ व्यवहृत करते है।

८ शोथ, पूयमेह आदि मे सफलता के साथ व्यवहृत करते हैं।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट पित्पापड़ा
(Liquid Extract Pitpapda)

हिन्दी—पित्पापड़ा। मात्रा—½ से १ ड्राम।

व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन मे ३ वार।

गुण—१. हाथ, पैर में जलन युक्त ज्वर में लाभप्रद है ।
२ कामला में लाभप्रद है ।
३ मू त्रको राशि में वृद्धि करता है तथा वर्ण को हलका करता है ।

लिकिड एक्स्ट्रैक्ट सप्तपर्ण
(Liquid Extract Saptaparna)

हिन्दी—छतिवन । मात्रा—½ से १ ड्राम ।
व्यवहारविधि—जल के साथ । दिन में ३ वार ।
गुण—१. उत्तेजक । २ वायुनिस्सारक ।
३ आमाशय को शक्तिदायक । ४ शक्तिवर्धक ।
५ संकोचक । ५ कफनिस्सारक ।
७ ज्वर नाशक । यह कीनीनम्र सल्फ से अति उत्तम तथा दोष रहित है ।
८ ज्वरोपरान्त चीणता नाशक है ।

लिकिड एक्स्ट्रैक्ट शंखपुष्पी
(Liquid Dxtract Shankhapushpi)

हिन्दी—शंखपुप्पी । मात्रा—२० से ३० बूंद ।
व्यवहारविधि—जल या दुग्ध के साथ । दिन में २ वार ।
गुण—१ शक्तिवर्धक । २ ज्वर तथा कृमि नाशक ।
३. नाड़ी चीणता नाशक है ।
४ स्मरण शक्ति हीनता, उन्माद, अपस्मार, तथा गलगण्ड में सफलता के साथ व्यवहृत करते हैं ।

लिकिड एक्स्ट्रैक्ट सर्पगन्धा
(Liquid Extract Sarpagandha)

हिन्दी—चन्द्रिका । मात्रा—१ से २ ड्राम ।
व्यवहारविधि—जल के साथ । भोजन के १ घण्टे वाद, दिन में २ वार ।
गुण—१ उन्माद तथा मध्य नाड़ी सस्थान के चोभ में शामक है ।
२ रक्तचापाधिक्य को स्वाभाविक वनाता है ।
३ निद्रानाश, योषापस्मार, अनियमित आर्तवस्राव तथा अपस्मार में लाभदायक है ।

लिकिड एक्स्ट्रैक्ट शरपुंखा
(Liquid Extract Sharpunkha)

हिन्दी—सरपोक । मात्रा—½ से १ ड्राम ।
व्यवहारविधि—जल के साथ । दिन में २ वार ।

गुण—१. मूत्रल है। २. कास तथा वक्ष के जकड़न में लाभप्रद।
३ पैत्तिक ज्वर, यकृत के अवरोध, प्लीहा तथा वृक्क के रोगों में सफलता के साथ व्यवहृत होता है।
४ रक्तशोधक है। ५ पिड़िका तथा फफोले में व्यवहृत होता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट तुलसी (Liquid Extract Tulsi)

हिन्दी—तुलसी (काली)। मात्रा—१ से २ ड्राम।
व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।
गुण—१. स्निग्धकारक। २ ज्वर नाशक। ३ स्वेदोत्पादक।
४ फुफुस प्रदाह, तथा विषम ज्वर में लाभदायक है।
५ वच्चों के आमाशयिक तथा यकृतीय व्याधियों में लाभदायक है।
६ प्रातःकाल सेवन करने से चिरकालिक ज्वर, रक्तस्रावाधिक्य, अतिसार, अग्निमान्द्य, को नष्ट करता है।
७ आंत्रिकज्वर में संक्रमण के प्रसार को रोकता तथा ज्वर को कम करता है।
८ चूने के साथ मिलाकर मच्छर संदंश तथा दद्रु पर सफलता के साथ व्यवहृत करते हैं।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट शतावरी (Liquid Extract Shatavari)

हिन्दी—शतावर। मात्रा—१ से २ ड्राम।
व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।
गुण—१ पोषक है। २ शक्तिवर्धक। ३. स्निग्ध कारक।
४ ऐंठन नाशक। ५ शुक्रस्राव वर्धक।
६ स्त्रियों के प्रजनन अंगों की विकृति को दूर करता है।
७ दुग्ध के साथ अग्निमांद्य को दूर कर क्षुधा की वृद्धि करता है।

लिक्विड एक्स्ट्रैक्ट वावडिंग (Liquid Extract Vavidong)

हिन्दी—भाभीरंग। मात्रा—१ से ४ ड्राम।
व्यवहारविधि—जल के साथ। दिन में ३ वार।
गुण—१ वायुनिस्सारक। २ कृमिनाशक। ३ उत्तेजक।
४ यह स्फीत कृमि को आंत्र से वाहर निकालता है। इस कार्य के लिये इसे वरावर मात्रा में मधु के साथ दिन में दो वार खिलाते हैं और रात्रि में एरण्ड तैल को १ मात्रा पिलाते है। इससे कृमि वाहर आ जाती है।
५ आध्मान नाशक है, अतः अग्निमांद्य में व्यवहृत होता है।

सूचना—वच्चों को ½ से १ ड्राम की मात्रा में मधु के साथ दिन में २ वार देना चाहिये।

वैद्यकीय परिभाषाएँ

पञ्चविधि कषाय—द्रवो रसः स्वरसः प्रोक्तः कल्कोद्दपदि पेषितः।
कथितस्तु शृतः शीतः शर्वरीमुषितो मतः॥
क्षिप्तोष्णतोये मृदितः फाण्ट इत्यभिधीयते।
पञ्चैताश्च समुद्दिष्टाः कषायाणां प्रकल्पनाः॥

उपरोक्त श्लोकों में पञ्चविध कषाय नामावली तथा उनकी परिभाषा का वर्णन है।

१. स्वरस—द्रव्य के निजी रस को जब अलग कर लेते हैं, तो उस रस को स्वरस कहते हैं।

२. कल्क या लुगदी—द्रव्य को सिल पर पीस लेने से ही कल्क हो जाता है।

३. क्वाथ—द्रव्य को जल में औटा कर छान लेते हैं। इस छने हुये जल को क्वाथ कहते हैं।

४. शीत कषाय—द्रव्य को जल के साथ रात भर भिगो कर प्रातः छान लेना। इस छने जल को शीतकषाय कहते हैं।

५. फाण्ट—द्रव्य को गरम जल में डाल मसल छान लेवे। यह छना जल फाण्ट है।

स्वरस निर्माण—सद्यः क्षुराणार्द्र द्रव्यस्य वस्त्रयन्त्रादिपीड़नात्।
यो रसस्त्वभिनिर्याति स्वरसः स परिकीर्त्तितः॥

तत्काल की कुटी हुई हरी (गीली) वनोषधि को वस्त्र या यन्त्र में निचोड़ कर रस निकाला जाता है वही स्वरस है।

शुष्क द्रव्य का स्वरस निर्माण—

कुड़वं चूर्णितं द्रव्यं क्षिप्तं तद् द्विगुणे जले।
अहोरात्रं स्थितं तस्मात् भवेद्वा रस उत्तमः॥

शुष्क द्रव्य को एक कुड़व के परिमाण में ले चूर्ण बनावे, फिर इस चूर्ण को दुगुने जल में डालकर एक रात दिन रखे रहे। अब इसे मसल कपड़े से छान लेवे। यह उत्तम स्वरस है।

दूसरी विधि—आदाय शुष्कं द्रव्यं वा स्वरसानामसम्भवे।
जलेऽष्टगुणिते साध्यं पादशिष्टन्तु गृह्यते॥

शुष्क द्रव्य को ले, आठगुने जल में पकावे। जब चौथाई जल शेष रह जाय तब छान ले। यह भी स्वरस है।

पुटपाक विधि से स्वरस निर्माण—

द्रव्यमापोथितं जम्बू-वटपत्रादि सम्पुटे ।
वेष्टयित्वा ततो बद्ध्वा दृढं रज्जवादिना तथा ॥
मृल्लेपं द्व्यंगुल कुर्यादयवांगुलिमात्रकम् ।
दहेत पुटान्तरादग्नौ यावल्लेपस्य रक्तता ॥

द्रव्य को जल के साथ पीस लुगदी बनावे। फिर इस कल्क को जामुन या वट के पत्ते में लपेट रस्सी वा डोरे आदि से भलीभांति बांध दे। अब इस पर आवश्यकतानुसार दो अंगुल वा एक अगुल (द्रव्य के कम में दो अंगुल, द्रव्य की अधिकता में एक अगुल) मोटा मिट्टी का लेप कर अग्नि में तब तक रखते हैं जब तक लेप लाल न हो। लाल होने पर पुट पाक को बाहर निकाल द्रव्य का रस निचोड़ लेते हैं।

कल्क निर्माण—द्रव्यमात्रं शिलापिष्टं शुष्क वा जल मिश्रितम् ।
तदेव सूरिभिः पूर्वैः कल्क इत्यभिधीयते ॥

गीला द्रव्य वा जल मिश्रित शुष्क द्रव्य को सिल पर पीस लेने को कल्क कते हैं।

पर्य्याय—"आवापस्त्वथ प्रक्षेपस्तस्य पर्य्याय उच्यते ।"

आवाप और प्रक्षेप कल्क के पर्य्याय है।

कल्क में द्रव्य मिश्रण—कल्के मधु घृतं तैलं देयं द्विगुणमात्रया ।
सितां गुडं समं दद्यात् द्रवा देयाश्चतुर्गुणाः ॥

शहद, घी तथा तैल दुगुना, चीनी, गुड़ कल्क के समान (बराबर) तथा द्रव पदार्थ मिलाना हो तो चौगुना मिलाना चाहिये।

क्वाथ निर्माण—पानीय षोडशगुणं क्षुण्णे द्रव्यपले क्षिपेत् ।
मृत्पात्रे क्वाथयेद् ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥

द्रव्य को कूट एक पल की मात्रा ले एक मिट्टी के पात्र में इसके साथ सोलहगुना जल डाल पकावे अष्टमांश जल शेष रहने पर उतार कर छान ले। यही क्वाथ है कहीं कहीं चतूर्थांश जल शेष भी लिखा है।

पर्य्याय—"शृत· क्वाथः कषायश्च निर्य्यूहः स निगद्यते ।"

शृत, क्वाथ, कषाय तथा निर्यूह पर्य्याय है।

क्वाथ में द्रव्य मिश्रण—

क्वाथे क्षिपेत् सितामंशैश्चतुरष्टकषोड़शैः ।
वातपित्तकफातङ्के विपरीत मधु स्मृतम् ॥

काढ़े में चीनी वात विकार में चौथाई, पित्त विकार में अष्टमांश तथा कफ विकार मे सोलहवां भाग मिलाते हैं। मधु मिलाना हो तो इसके विपरीत आचरण करते हैं

अर्थात् वातविकार में सोलहवां भाग, पित्तविकार में आठवां भाग तथा कफ विकार में चौथाई भाग।

शीत कषाय—क्षुण्णं द्रव्यपलं सम्यक् षड्भिर्जलपलैः प्लुतम्।
शर्वरीमुषितं सम्यक् ज्ञेयः शीतकषायकः॥

कूटा हुआ द्रव्य एक पल की मात्रा में ले छः पल जल में मिला रात भर रखे। फिर प्रातः काल मसल कर छान ले। यही शीत कषाय है।

तण्डुलोदक—तण्डुलं कणशः कृत्वा फलं ग्राह्यं हि तण्डुलात्।
चतुर्गुणं जलं देयं तण्डुलोदक कर्म्मणि॥

चावलों को जो कुट कर एक पल की मात्रा में ले चौगुने जल में भिगोवे। कुछ घण्टों पश्चात् मसल कर छान ले। इसे तण्डुलोदक कहते हैं।

अन्य विधि—"शीतकषायमानेन तण्डुलोदक कल्पना।"

शीत कषाय के अनुसार अर्थात् छः गुने जल में रात भर भिगो कर मसल छान लेना तण्डुलोदक कहलाता है।

फाण्ट निर्माण—क्षुण्णे द्रव्यपले सम्यग् जलमुष्णं विनिक्षिपेत्।
पात्रे चतुः पलमितं ततस्तु स्रावयेज्जलम्॥
सोऽयं पूतो द्रवः फाण्टो भिषग्भिरभिधीयते॥

कूटे हुये द्रव्य को एकपल की मात्रा में ले एक पात्र में रख चार पल गरम जल डाले जब सब द्रव्य अत्यन्त गरम हो जाय तो कुछ देर बाद छान ले। यही छना हुआ जल फाण्ट कहलाता है।

उष्णोदक—अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धकेन वा।
अथवा क्वथनेनैव सिद्धमुष्णोदक वदेत्॥

जल को अग्नि पर उबालते हैं जब उसका आठवाँ भाग, चौथा भाग या आधा भाग शेष रह जाय तो छान ले या केवल एक उबाल आने पर ही छान ले तो यह उष्णोदक कहलाता है।

अवलेह निर्माण—क्वाथादेर्यद् पुनः पाकाद्घनत्वं सा रसक्रिया।
अवलेहश्च लेहश्च प्राश इत्युच्यते बुधैः॥

क्वाथादि को फिर से पकाकर गाढ़ा रस के रूप में जब कर लिया जाता है तब उसे अवलेह कहते हैं। इसे लेह तथा प्राश भी कहते हैं।

यवागू निर्माण—क्वाथ्यद्रव्याञ्जलिं क्षुण्णं श्रावयित्वा जलाढके।
पादावशेषे तेनाथ यवाग्वाद्युपकल्पयेत्॥

क्वाथ का द्रव्य ४ पल लेकर कूट ले फिर उसमें एक आढ़क याने ६४ पल लेकर

पकावे। चौथाई शेष रहने पर उतार कर छान लेवे। फिर इसी क्वाथ से यवागू आदि का पाक करते हैं।

अन्नादि साधन में जल परिमाण—

अन्नं पञ्चगुणे साध्यं विलेपी च चतुर्गुणे।
मण्डश्चतुर्दशगुणे यवागूः षड्गुणेऽम्भसि॥

अन्न पाक करने के लिये पाँचगुना जल, विलेपी के लिये चौगुना, मण्ड के लिये चौदहगुना तथा यवागू के लिये छः गुना जल लेकर पकाते हैं।

मण्ड का लक्षण—"सिक्थकै रहितो मण्डः।"

चावल के कण से हीन द्रव मण्ड कहलाता है।

पेया लक्षण—"पेयासिक्थसमन्विता।"

जिस द्रव में सामान्य कण हों उसे पेया कहते हैं।

यवागू लक्षण—"यवागुर्बहुसिक्था स्याद्।"

यवागू में बहुत कण होते हैं।

विलेपी लक्षण—"विलेपी विरलद्रवा।"

जिसमें तरल अंश कम होता है और वह लिपटने वाला होता है उसे विलेपी कहते हैं।

कृशरा (खिचड़ी) निर्माण—

यवागू षड्गुणे तोये सिद्धास्यात् कृशरा घना।
तण्डुलैर्मुद्गमाषैश्च तिलैर्वा साधिताहिसा॥

छः गुने जल में चावल तथा मूंग, उड़द अथवा तिल की जो यवागू गाढ़ी गाढी पकाई जाती है, उसे कृशरा कहते है।

विलेपी निर्माण—"विलेपी च घना सिक्थैः सिद्धा नीरे चतुर्गुणे।"

चौगुने जल से पकायी हुई कण से परिपूर्ण गाढा गाढ़ा विलेपी कहलाती है।

पेया निर्माण—द्रवाधिका घना सिक्था चतुर्दशगुणे जले।
सिद्धापेया बुधैर्ज्ञेया यूषः किञ्चिद्घनः स्मृतः॥

चौदहगुने जल में पकाया हुआ थोड़े कण युक्त पेया कहलाती है। इससे कुछ गाढ़ा यूष होता है।

मण्ड निर्माण—जले चतुर्दशगुणे तण्डुलानां चतुःपलम्।
विपचेत् स्रावयेन्मण्डः स भक्तो मधुरोलघुः॥

चार पल चावल ले चौदह गुने जल मे पकावे जब चावल भलीभाँति पक जावे तब माड को निथार लेवे।

मांसरस निर्माण—द्रव्यतो द्विगुणं मांसं सर्वतो द्विगुणं पयः ।
पादस्थं संस्कृतं चाज्ये षडंगो यूप उच्यते ॥

द्रव्य अर्थात् अन्नादि से दुगुना मांस लेवे तथा उसका अठगुना जल डालकर पकावे जब चौथाई जल शेष रह जाय तो उतार कर छान ले। यह षडंग मांस यूष कहलाता है।

वेशवार—निरस्थि पिशितं पिष्टं स्विन्नं गुडघृतान्वितम् ।
कृष्णा मरिचसंयुक्तं वेशवार इति स्मृतः ॥

मांस से अस्थि निकाल, मांस को पीस गुड़ घी मिलाकर पकावे, इसमें थोड़ा पीपर और मिर्च मिलाते हैं। इसे वेशवार कहते हैं।

सीधु, आसव—"शीधुरिक्षुरसैः पक्वैरपक्वैरासवो भवेत् ।"

ईख के रस को पकाकर जो मद्य बनता है, उसे सीधु कहते हैं। जो मद्य ईख के रस को बिना पकाये बनता है, उसे आसव कहते हैं।

मैरेय—"मैरेयं धातकीपुष्पं गुडधान्याम्लसंहितम् ।"

धाय के फूल, धान्याम्ल तथा गुड़ मिलाकर जो मद्य बनता है उसे मैरेय कहते है।

काजी—आरनालन्तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषी कृतैः ।
पक्वैर्वा सन्धितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥

छिलके रहित गेहूँ को पकाकर या कच्चे ही जल के साथ जो सन्धान किया जाता है, उसे कांजा (आरनाल) कहते हैं। यह सौवीर के गुणवत होता है।

दूसरा प्रकार—आशुधानं क्षोदितञ्च बालमूलन्तु खण्डशः ।
कृतं प्रस्थमितं पात्रे जलं तत्राढकं क्षिपेत् ॥
तावत् सन्धीय संरक्षेत् यावत् अम्लत्वमागतम् ।
कांजिकं तत्तु विज्ञेयमेतत् सर्वत्र पूजितम् ॥

शीघ्र पकने वाले धान्य आदि को कूट कर कोमल कोमल मूलियों के छोटे छोटे टुकड़े के साथ एक प्रस्थ की मात्रा में किसी पात्र में रख, उसमें एक आढ़क जल भर देवें। अब मुंह बंद कर खट्टे होने के पर्यन्त तक रखे। यह सर्वोत्तम कांजी है जो सभी जगह व्यवहृत होती है।

आसव—"यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।"

बिना पकाये हुये ओषधियों के संयोग से जो मद्य तैयार किया जाता है उसे आसव कहते हैं।

अरिष्ट—"अरिष्टः क्वाथसिद्धः स्यात् सम्पक्वो मधुरद्रवैः ।"

ओषधियों के क्वाथ में मीठा पदार्थ डाल पका जो मद्य तैयार होता है उसे अरिष्ट कहते हैं।

वारुणी—"यत्तालखर्ज्जुररसैः सन्धिता सैव वारुणी।"

ताल तथा खजूर के रस से जो मद्य तैयार किया जाता है, उसे वारुणी कहते हैं।

सुराप्रकार—सुरामण्डः प्रसन्ना स्यात् ततः कादम्बरी घना।
तदधो जगलो ज्ञेयो मेदको जगलाद्घनः॥
परिपक्वान्नसंधानसमुत्पन्नां सुरां जगुः।
वृक्कसो हृतसारः स्यात् सुराबीजञ्च किण्वकम्॥

सुरा के ऊपर का स्वच्छ जल सदृश भाग प्रसन्ना कहलाती है। सुरा के नीचे का घन भाग 'कादम्बरी' और कादम्बरी के नीचे जो और घन भाग होता है उसे 'जगल' कहते हैं।

जगल के नीचे जो और घना भाग होता है, उसे मेदक कहते हैं। अन्न को पकाकर अग्नि के संयोग से यंत्र द्वारा जो मद्य खींचा जाता है उसे सुरा कहते हैं। सुरा उतार लेने पर यंत्र में जो पदार्थ बच जाता है उसे वृक्कस कहते हैं। सुरा बीज (सुरा निर्मापक वस्तु) को किण्वक कहते है।

भावना—द्रवेण यावता द्रव्यमेकीभूयार्द्रतां व्रजेत।
तावत् प्रमाणं कर्त्तव्यं भिषग्भिर्भावनाविधौ॥

जितने द्रव से द्रव्य का चूर्ण एक होकर आर्द्र हो जाय उसे भावना कहते हैं।

क्षीरपाक—द्रव्यादष्टगुणं क्षीरं क्षीरात्तोयं चतुर्गुणम्।
क्षीरावशेषः कर्त्तव्यः क्षीरपाके त्वयंविधिः॥

दुग्ध पाक में द्रव्य से अठगुना दूध तथा दूध से चौगुना जल डालकर मन्दाग्नि पर पाक करते है जब जल जलकर दुग्धमात्र शेष रहता है तब उतार कर छान लेते हैं। यही क्षीर पाक है।

पाकलक्षण—यदादर्व्याप्रलेपः स्यात् यदा वा तन्तुली भवेत्।
तोयपूर्णे च पात्रे तु क्षिप्तो न प्लवते गुडः॥
क्षिप्तस्तु निश्चलस्तिष्ठेत् पतितस्तु न शीर्य्यति।
एष पाको गुडादीनां सर्वेषां परिकीर्तितः॥

जब गुड़ कलछुले में लिपटने अथवा उससे तार निकलने लगे या जल भरे पात्र में चासनी डालने से डूब जाय तथा जाकर स्थिर रहे फैले न तब सब प्रकार गुड़ आदि के पाक को सिद्ध जानते है।

वटी निर्माण—लेहवत्साधयेत वह्नौ गुड़ो वा शर्कराऽथवा।
गुग्गुलं वा क्षिपेत्तत्र चूर्णं तन्निर्मिता वटी॥

गुड़ वा शर्करा को अग्नि पर रख चासनी बनावे फिर इसमें गुग्गुल वा चूर्ण डाल गोली बना लेवे।

वटी में वस्तुप्रमाण—सिता चतुर्गुणा देया वटीषु द्विगुणो गुडः।
चूर्णाच्चूर्णसमः कार्यो गुग्गुलुर्मधु तत्समम्॥

वटी निर्माण में मिश्री चूर्ण के चौगुने प्रमाण में गुड़ दूगने प्रमाण में, तथा गुग्गुलु और मधु समान भाग में डालते हैं।

पर्याय—वटिकाश्चापि कथ्यन्ते तन्नाम गुटिका वटी।
मोदको वटिका पिंडी गुंडी वर्तिस्तथोच्यते॥

वटिका, गुटिका, वटी, मोदक, पिण्डी, गुडी तथा वर्ती गोली के नाम हैं।

घृत तैल साधन—कल्काच्चतुर्गुणीकृत्य घृतं वा तैलमेव च।
चतुर्गुणद्रवे साध्यं ॥
निक्षिप्य क्वाथयेत्तोयं क्वाथद्रव्याच्चतुर्गुणं।
पादशिष्टं गृहीत्वा तु स्नेहस्तेनेव साधयेत्॥

कल्क द्रव्य से चौगुना घृत वा तैल लेते हैं फिर इस कल्क युक्त स्नेह में स्नेह से चौगुना क्वाथ डालते हैं। क्वाथ के लिये द्रव्य से चौगुना जल लेकर क्वाथ करते हैं जब चौथाई जल शेष रहता है तब छान कर यही क्वाथ स्नेह के चौगुने परिमाण में स्नेह में डालते हैं।

द्रव्य विशेष में जल मात्रा—चतुर्गुणं मृदुद्रव्ये कठिनेऽष्टगुणं जल।
अत्यन्तकठिने द्रव्ये नीरं षोडशिकं मतं॥

कोमल द्रव्यों में चौगुना, कठिन द्रव्य में अठगुना तथा अत्यन्त कठिन द्रव्य में सोलहगुना जल मिलाकर क्वाथ करते हैं।

सिद्ध स्नेह लक्षण—वर्तिवत्स्नेहकल्कः स्याद्यदांगुल्या विवर्त्तितः।
शब्दहीनोऽग्नि निःक्षिप्तः स्नेहः सिद्धो भवेत्तदा॥
यदाफेनोद्गमस्तैले फेनशान्तिश्च सर्पिषि।
वर्णगंधरसोत्पत्तिः स्नेहः सिद्धोभवेत्तदा॥

जब स्नेह का कल्क अंगुलि से वटने में वत्ती बाधने लगे तथा अग्नि में डालने पर शब्दोत्पन्न न हों तब स्नेह को सिद्ध (पक्का) जानना चाहिये।

जब तैल पर फेन आवे तथा घी का फेन शान्त हो तथा उसमें वर्ण, रस, तथा गंधादि उत्पन्न हो जाय तब उसे सिद्ध समझते हैं।

मान-परिभाषा

मान की आवश्यकता—न मानेन विना युक्तिर्द्रव्याणां जायते क्वचित् ।
अतः प्रयोगकार्य्यार्थं मानमत्रोच्यते मया ॥

विना मान (तौल) के द्रव्यों को युक्ति प्रमाण में नही लिया जा सकता अतः द्रव्यों के प्रयोग के लिये मान के मात्रा की आवश्यकता होती है । जिसको आगे कहा जायगा ।

मानापेक्षितमाचार्य्या भेषजानां प्रकल्पनम् ।
मेनिरे यत्ततो मानमुच्यते पारिभाषिकम् ॥

चिकित्सकों ने औषधियों का निर्माण तथा प्रयोग मान के अधीन रखा है, क्योंकि विना मान के ओषधियां निश्चित नहीं की जा सकतीं । इस लिये मान की परिभाषा कही जाती है ।

मान का आयुर्वेदीय प्रकार—"तस्माच्च द्विविधं मानं कलिङ्गं मागधं तथा ।"

(१) कलिंग मान । (२) मागध मान ।

श्रेष्ठता—"कलिङ्गान्मागधं श्रेष्ठमेवं मानविदो विदुः ।"

कलिंगमान से मागधमान उत्तम है ।

मागध मान—

सूर्य के किरणों में रहने वाली धूलि कण को ध्वशी कहते हैं ।

६ ध्वंशी	१ मरीची	६ मरीचि	१ राजिका
३ राई	१ सरसों	८ सरसों	१ जौ
४ जौ	१ गुंजा या रत्ती	६ रत्ती	१ माशा, हेम, धामक धान्य
४ माशा	१ शाण	१ शाण	२४ रत्ती (३ माशा या धरण, टक, चवन्नी)
२ टंक	१ कोल या अट्ठन्नी	२ कोल	१ कर्ष (तोला)
२ कर्ष	½ पल (शुक्ति)	२ शुक्ति	१ पल
२ पल	१ प्रसृत	२ प्रसृत	१ अञ्जलि (कुड़व, ½ शराव)
२ शराव	१ प्रस्थ	४ प्रस्थ	१ आढक, कंस, ६४ पल ।
४ आढक	१ द्रोण, कलश, घट, राशि	२ द्रोण	१ शूर्प या कुम्भ, ६४ शराव
२ शूर्प	१ द्रोणी	४ द्रोणी	१ खारी
४ खारी	३०९६ पल	२००० पल	१ भार
१०० पल	१ तुला		

कालिंग मान—

३० परमाणु	१ त्रसरेणु, वंशी, ध्वंसी	६ ध्वंसी	१ मरीचि
६ मरीचि	१ सरसों	६ सरसों	१ यव
३ यव	१ गुञ्जा, रत्ती,	८ या ७ रत्ती	१ मासा, हेम, धामक
४ मासा	१ शाण, निष्क, टंक	१० मासा	१ कर्ष
२ शाण	१ कोल, ½ कर्ष	२ कोल	१ कर्ष, १६ माशा
४ कर्ष	१ पल	२ पल	१ प्रसृत
२ प्रसृत	१ कुडव	२ कुडव	१ मानिका, शराव
२ मानिका	१ प्रस्थ, १६ पल	४ प्रस्थ	१ आढक
१ आढक	६४ पल	४ आढक	१ द्रोण
१ द्रोण	२५६ पल	२ द्रोण	१ शूर्प
२ शूर्प	१ द्रोणी	४ द्रोणी	१ खारी
१०० पल	१ तुला	२० तुला	१ भार

"शुष्कद्रव्ये तु या मात्रा चार्द्रस्य द्विगुणा हि सा।"

उपरोक्त परिभाषायें शुष्क द्रव्य की हैं। अतः आर्द्र द्रव्य इनसे दूगना लेते हैं।

वर्तमान प्रचलित भारतीय मान—

८ खसखस	१ चावल	८ चावल	१ गुंजा, रत्ती
८ रत्ती	१ माशा	१२ माशा	१ तोला
५ तोला	१ छटाँक	१६ छटाँक	१ सेर
४० सेर	१ मन	२७ २ मन	१ टन

मेट्रिक सिस्टम

आँग्ल मान—

भार—१ मिलीग्राम (Mg)	$\frac{1}{1000}$ ग्राम (G)
१ ग्राम (G)	" किलोग्राम (Kg)
१ सेण्टीग्राम (Cg)	$\frac{1}{100}$ ग्राम (G)
१ डेसीग्राम (Dg)	$\frac{1}{10}$ ग्राम (G)

आयतन—१ सेंटीमिल (Cl)	१ सेण्टी ग्राम (Cg)	जल के ४°	पर के	आयतन	के
१ डेसीमिल (Dl)	१ डेसाग्राम	"	"	"	"
१ मिलीमीटर (Ml)	१ ग्राम	"	"	"	"
१ लीटर (Lit)	१ किलोग्राम	"	"	"	"

लम्बाई का माप—

१ माइक्रोन (μ) $\frac{1}{1000}$ मिलीमीटर (M. M.)

१ मीलीमीटर (M. M.)	$\frac{१}{१०००}$	मीटर	(M.)
१ सेण्टीमीटर (C. M.)	$\frac{१}{१००}$	”	”
१ डेसीमीटर (D. M.)	$\frac{१}{१०}$	”	”
१ मीटर (M.)	१.० मीटर	”	”

इम्पीरियल सिस्टम

भार—१ ग्रेन (Gr) १ औंस (Oz) = ४३७.५ ग्रेन

१ पौण्ड (Lb) = ७०४०.० ग्रेन

आयतन—१ बूंद (Min)

” फ्ल्यूइड ड्राम (Fldr.) = ६० बूंद (Min)

” फ्ल्यूइड औंस (Fl. oz) = ८ फ्ल्यूइड ड्राम (Fl. dr.)

” पाइण्ट (Pint) = २० औंस (Fl. oz)

आयतन और भार का सम्बन्ध (इम्पीरियल)

१ मिनिम (Minum) = ० ९११४५८३ ग्रेन जल के ६२० F पर के आयतन के

” ड्राम (Fl dr) = ५४ ६८७५ ग्रेन ” ” ”

” औंस (Fl oz) = १ औंस oz(I) ” ” ”

१०६.७१४३ बूंद (Minims) = १०० ग्रेन ” ” ”

मेट्रिक तथा इम्पीरियल माप का सम्बन्ध

भार—१ मिलीग्राम (Mg) = ० ०१५ ग्रेन के लगभग

” सेंटीग्राम (Cg) = ०.१५४ ” ”

” डेसी ग्राम (Dg) = १.५४३ ” ”

” ग्राम (G) = १५.४३२३५६४ ग्रेन के लगभग

” किलोग्राम (Kg) = १५४३२.३५६४ ” ”

या ३५ २७४ औंस वा २.२०४६ पौण्ड

” ग्रेन (Gr) = ०.०६४८ ग्राम के लगभग

” औंस (Oz) = २८ ३५० ” ”

” पौण्ड (Lb) = ४५३.५९ ” ”

आयतन—१ सेंटीमिल (Cl) = ०.१६९ मिनिम के लगभग

” डेसीमिल (Dl) = १.६९ ” ”

” मिलीलीटर (Ml) = १६.९ मिनिम के लगभग

” लीटर (Lit) = १.७५९८० पाइण्ट के ”

या ३५.१९६ फ्ल्यूइड औंस के

” मीनिम (Min) = ०.०५९२ मिल के लगभग

1 ड्राम (Fl dr) = ३·५५१९ मिल के लगभग
" औंस (Fl oz) = २८·४१२३ " "
" पाइण्ट (Pint) = ५६८·२४२४ लिटर
या ०·२६८२ "

लम्बाई—१ माइक्रोन (μ) = ०·००००३९३७ इञ्च
" मिलीमीटर (M. M) = ०·०३९३७० इञ्च
" सेंटीमीटर (Cm) = ०·३९३७० इञ्च
" डेसी मीटर (Dm) = ३·९३७० इञ्च
" मीटर (M) = ३९·३७०११३ "
" इञ्च (In) = २५·३९९९ मिलीमीटर

इम्पीरियल तथा मेट्रिक मापों की समानता

इम्पीरियल	मेट्रिक	१/२५	२·५
ग्रेन	मिलिग्राम	१/२०	३
१/२००	०·३	१/१६	४
१/१००	०·६	१/१०	६
१/६४	१	१/८	८
१/४०	१·५	१/५	१२
१/३२	२	१/४	१६
		१/२	३०
ग्रेन	सेण्टीग्राम	ग्रेन	डेसीग्राम
१	६	८	५
२	१२	१०	६
३	२०	१५	१०
४	२५	२०	१२
५	३०	३०	२०
८	५०	६०	४०
१०	६०	ग्रेन	ग्राम
ग्रेन	डेसीग्राम	१५	१
३	२	३०	२
९	६	४८०	३२

आयतन

मिनिम	सेंटीमिल्स	मिनिम	मिल्स
१/२	३	१५	१
१	६	३०	२
२	१२	४५	३
३	१८	५०	४
५	३०	६०	६
८	५०		

मिनिम	डेसिमिल	फ्ल्यूड ड्राम	मिल्स
५	३	१/२	२
१०	६	१	४
१५	१०	२	८
२०	१२	६	२४
३०	१८	औंस	मिल्स
६०	३६	१/२	१५
		१	३०
		२	६०
		४	१२०

ग्राम	ग्रेन	ग्रेन	ग्राम
१	१	१	०·०६
२	३०	२	०·१२
४	६०	४	०·२५
८	१२०	५	०·३
१०	१५०		

१६ ड्राम	=	१ औंस	६० मिनिम	=	१ ड्राम
१६ औंस	=	१ पौण्ड	८ ड्राम	=	१ औंस
२८ पौण्ड	=	१ क्वार्टर	२० औंस	=	१ पिण्ट
४ क्वार्टर	=	१ हन्डर वेट	२ पाइण्ट	=	१ क्वार्टर
२० हण्डर वेट	=	१ टन	४ क्वार्टर	=	१ गैलन
२० ग्रेन	=	१ स्क्रुपल	१ चाय का चमच	=	१ ड्राम
३ स्क्रुपल	=	१ ड्राम	१ डेजर्ट ”	=	२ ”
८ ड्राम	=	१ औंस	१ टेबुल ”	=	४ ”

१६ औंस	=	१ पौण्ड	½ वाइन ग्लास	=	१ औंस
१ ग्रेन	=	½ रत्ती	१ छोटा वाइन ग्लास	=	२ ,,
१ पौण्ड	=	½ सेर	१ चाय कप भर	=	५ ,,
			१ ब्रेकफास्ट कप भर	=	८ ,,

प्रतिशत

१ औंस तरल में ४½ ग्रेन ओषधि घोलने पर = १% प्र० श०
१ ,, ,, ९ ,, ,, ,, = २% प्र० श०
१ ,, ,, १३½ ,, ,, ,, = ३% ,, ,,
१ ,, ,, १८ ,, ,, ,, = ४% ,, ,,
1 in 10 या १० में १ = १ औंस तरल में ५० ग्रेन ओषधि डालने पर
1 in 100 या १०० में १ = १ ,, ,, ५ ,, ,, ,,
1 in 500 या ५०० में १ = १ ,, ,, १ ,, ,, ,,
1 in 1000 या १००० में १ = १ ,, ,, १/२ ,, ,, ,,
1 in 10000 या १०००० में १ = १ ,, ,, १/२० ,, ,, ,,
1 in 100000 या १००००० में १ = १ ,, ,, १/२०० ,, ,,
1 in 500000 या ५००००० में १ = १ ,, ,, १/१००० ,, ,,

समाप्त।



अनुक्रमणिका



INDEX

—oo;o;oo—

शालाक्यतन्त्र (निमितन्त्र)

रचयिता—'सौश्रुती' के यशस्वी लेखक—

श्री पण्डित रमानाथ द्विवेदी ए० एम० एस० एम० ए०

अध्यापक, आयुर्वेद महाविद्यालय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पुस्तक की भूमिका में ऐतिहासिक दृष्टि से विषय के विकास का विवेचन किया गया है। फिर पूरी पुस्तक को पांच भागों में विभक्त किया गया है। जिनमें क्रमशः नासिका, शिर, कान मुंह और आंखों के रोगों के हेतु, निदान सम्प्राप्ति आदि की विस्तृत विवेचना की गई है। विवेचना करते समय आधुनिक विज्ञान सम्मत निदान और चिकित्सा आदि के साथ प्राचीन ग्रन्थों में प्राप्त इन्हीं विषयों से तुलना की गई है और मत भेदों तथा उनके कारणों पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है। इस बात का ध्यान रखा गया है कि विषय से सम्बन्धित कोई विषय छूट न जाय। इसका फल यह हुआ है कि पुस्तक आयुर्वेद के विद्यार्थियों के लिये बड़ा अत्यधिक उपयोगी हो गई है वहीं आधुनिक चिकित्सा के मर्मज्ञों के लिये विशेष अध्ययन मनन की वस्तु भी बन गई है। भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है एवं आवश्यक स्थलों पर पाद टिप्पणियों में मूल संहिता के वचन भी उद्धृत कर दिये गये हैं। जिससे विद्यार्थी तथा शोध प्रेमी विद्वान् दोनों के लिये पुस्तक अत्यन्त उपादेय हो गई है।

लेखक के विवेचन का ढंग बहुत ही वैज्ञानिक है। अधिष्ठान भेद से रोगों का अवस्थान, दोष प्राबल्य, वैज्ञानिक नामकरण, प्राचीन पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय आदि देकर पुस्तक को सब प्रकार से उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है। चिकित्सकों की सुविधा के लिये बहुत से अनुभूत योगों और सद्यः लाभप्रद ओषधियों का यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है। साथ ही अन्त में वर्तमान चिकित्सा में व्यवहृत होने वाले योगों का बृहत् संग्रह भी जोड़ रखा है।

इस प्रकार यह पुस्तक आयुर्वेद में एक अत्यन्त महत्त्व पूर्ण प्रकाशन है। यह आयुर्वेद के विद्यार्थियों, चिकित्सकों, आधुनिक ढंग के चिकित्सा प्रेमियों और प्राचीन शास्त्रीय पद्धति के जिज्ञासुओं के लिये समानभाव से उपयोगी बनी है।

पुस्तक नवीन चमकते टाईप में बहुत सुन्दर छपी है। शीघ्र मंगवावें अन्यथा द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा करनी पडेगी। मूल्य लागत मात्र ८)

प्राप्तिस्थान—**चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, बनारस-१**